श्रीगणेशाय नमः

भावप्रकाश पूर्वखण्ड सटीक

जिसमें

वैद्यक विद्याके लक्षण, निरुक्ति, दक्ष अश्विनीकुमार चरक और धन्वंतरि आदिकी प्रकटता, सृष्टिका क्रम, सम्पूर्ण औषधों के लक्षण गुण, मांस, मछली, सम्पूर्ण अन्न, जल, दूध, दही, घी इत्यादि के गुण, पारा, रसकपूर, हरताल, मैनासिल और विषोंके शोधने की विधि इत्यादि अनेकों विषय वर्णित हैं ॥

जिसको

भाव मिश्रने ललित श्लोकों में रचना किया था

उसीको

भार्गव वंशावतंस मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) ने अपने खर्च से आगरा पुर पीपलमंडी निवासि चौरासिया गौड़वंशावतंस लखनऊ केनिङ्गकालेज के संस्कृताध्यापक पण्डित कालीचरण जी से प्रत्यक्षर का भाषा टीका रचना कराया है ॥

पहलीवार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपी - दिसम्बर सन् १८९४ ई०

इस मतबेमें जितने प्रकारकी वैद्यककी पुस्तकें छपींहैं उनमेंसे कुछ नीचे लिखी हैं जिस किसी अवलोकन करनेवालेकी कांक्षाहोवै छापेखानेके पुस्तकालयसे अपनी दरख्वास्त भेजके फ़हरिस्त किताबोंकी मँगाकर अवलोकन करसक्ते हैं ॥

सुश्रुतसंहिता भाषा

जिसमें वैद्यक विद्याकी विस्तारसे उत्पत्ति,शिष्योंको जनेऊ और शिक्षादेनेकी विधि, शिष्यों के पढ़ानेकी विधि और ग्रन्थके सब अध्यायोंकी सूची, गुरुदेवजीका विद्यार्थी को अच्छी विधिसे पढ़ाना यह उचित धर्महै तिसका वर्णन, फोड़ाके चीरनेके पीछे वैद्यका रोगीकी रक्षा पढ़ना, ऋतुचर्या अर्थात् जिस ऋतुमें जिस प्रकारसे उपाय करना चाहिये तिसका बर्णन,चीरने फाड़नेके हथियारों का वर्णन, चीरने फाड़नेके हथियारोंके भेद, और उनके ग्रहण करनेका उपाय और शस्त्रोंकी रक्षा का उपाय वर्णन, वैद्यका शिष्यको चीरना फारना सिखाना,शिष्यका गुरुदेवजीसे वैद्यकविद्यापढ़के राजाके यहां परीक्षा देकर राजाकी आज्ञासे शुद्धचित्तहोकर चिकित्सा करना,क्षारपाकविधि और अग्निकर्म विधिका वर्णन, जोंक, सींगी और तुम्बीलगाने की विधि, रक्तकीविधि और यत्नसे रक्षा दोषधातु मलके क्षय और वृद्धिके जानने का वर्णन,बालकके कान छेदने की विधि, फोड़ा आदिके चीरने का वर्णन,घावके लेपन और बन्धकी विधि,घाव वाले पुरुषको जिसप्रकार से रहना चाहिये तिसका वर्णन,पथ्यापथ्य वस्तुओं का वर्णन, घावके प्रश्न विषयके अध्यायका वर्णन, घावके स्थानोंका वर्णन कृत्य और अकृत्य और व्याधिभेद का विषय,आठप्रकारके शस्त्र कर्मकरनेवाले अध्यायका व्याख्यान, प्रणष्टशल्यनाम फोड़े के जानने का लक्षण, शल्यनामक फोड़े के निकालने का वर्णन, विपरीताविपरीत नामक घावके जाननेका वर्णन, दूतकोवैद्यके बुलानेके समय में और वैद्यकोभी रोगी के यहां जानेमें शुभ अशुभ शकुन और रोगीके शुभ अशुभ स्वप्नों के द्वारा शुभ अशुभ फलका वर्णन, रोगीको अपनीही छाया जिसप्रकार की दिखलाई दे उसके शुभाशुभका फल,रोगीके स्वभाव के उलटा होजानेका फल,रोगीको जिसजिस लक्षणवाले रोगमार डालतेहैं उनका वर्णन, सेनायुक्त और शत्रुओं को जीतने की इच्छावाले राजाकी वैद्यको रक्षाकरनी योग्यहै वैद्यको रोगी के आयुकी परीक्षा, फोड़ोंके लेपइत्यादि औषधों का वर्णन, वैद्यका औषधके योग्य भूमिकी परीक्षाकरना, औषधों के समूहों के गुणवर्णन, जो औषध वमन और जो जुलाब से रोगोंको हरनेवाली हैं उनका वर्णन, औषध और रसोंके गुणवीर्य और विपाक के जाननेका वर्णन, रसविशेषोंके जानने का वर्णन, वमनद्रव्यों और जुलाब की द्रव्योंका वर्णन, जलवर्ग, दूधवर्ग, दहीवर्ग, माठावर्ग, तैलवर्ग, शहदवर्ग, ईखवर्ग, मदिराकांजी और मूत्रवर्ग का वर्णन, अन्नपान विधिका वर्णन, बातव्याधि बवासीर, पथरी, भगंदर, कुष्ठ, प्रमेह, उदररोग, मूढगर्भ, विद्रधिरोग, विसर्प, नाड़ीरोग, स्तनरोग, ग्रंथि, अपची, अर्बुद, गलगंड, वृद्धि, आतशक, फीलपांव, छोटे २ रोग, शूकदोष, भग्नरोग, और मुख रोगों के निदान का वर्णन, सर्वभूत चिंता शारीर, शुक्रशोणित शुद्धि

श्रीगणेशाय नमः

भावप्रकाश मध्यखण्ड प्रथम व द्वितीयभाग सटीक

जिसमें

सम्पूर्ण ज्वर, अतीसार, संग्रहणी, बवासीर, अजीर्ण, कृमिरोग, पांडु, कामला, हलीमक, रक्तपित्त, अम्लपित्त, क्षयी, खांसी, हिचकी, दमा, स्वरभेद, अरुचि, वमन, प्यास, मूर्च्छा, मदात्यय, दाह, उन्माद, मृगी, वातव्याधि, उरुस्तम्भ, आमवात, पित्तव्याधि, कफव्याधि और वातरक्त इत्यादि रोगों के लक्षण और अत्युत्तम औषधें वर्णित हैं ॥

जिसको

भाव मिश्रने ललित श्लोकों में रचना किया था

उसीको

भार्गव वंशावतंस मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) ने अपने ख़र्च से आगरा पुर पीपलमंडी निवासि चौरासिया गौडवंशावतंस लखनऊ केनिङ्गकालेज के संस्कृताध्यापक पण्डित कालीचरण जीसे प्रत्यक्षर का भाषा टीका रचना कराया है ॥

पहलीबार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपी—दिसम्बर सन् १८९५ ई०

इस मतबेमें जितने प्रकारकी वैद्यककी पुस्तकें छपीहैं उनमेंसे कुछ नीचे लिखी हैं जिस किसी अवलोकन करनेवालेकी कांक्षाहोवे छापेख़ानेके पुस्तकालयसे अपनी दरख्वास्त भेजके फ़ेहरिस्त किताबोंकी मँगाकर अवलोकन करसक्ते हैं ॥

सुश्रुतसंहिता भाषा

जिसमें वैद्यक विद्याकी विस्तारसे उत्पत्ति,शिष्योंको जनेऊ और शिक्षादेनेकी विधि, शिष्यों के पढ़ानेकी विधि और ग्रन्थके सब अध्यायोंकी सूची, गुरुदेवजीका विद्यार्थी को अच्छी विधिसे पढ़ाना यह उचित धर्महै तिसका वर्णन, फोड़ाके चीरनेके पीछे वैद्यका रोगीकी रक्षा पढ़ना, ऋतुचर्या अर्थात् जिस ऋतुमें जिस प्रकारसे उपाय करना चाहिये तिसका बर्णन,चीरने फाड़नेके हथियारों का वर्णन, चीरने फाड़नेके हथियारोंके भेद, और उनके ग्रहण करनेका उपाय और शस्त्रोंकी रक्षा का उपाय वर्णन, वैद्यका शिष्यको चीरना फारना सिखाना,शिष्यका गुरुदेवजीसे वैद्यकविद्यापढ़के राजाके यहां परीक्षा देकर राजाकी आज्ञासे शुद्धचित्तहोकर चिकित्सा करना,क्षारपाकविधि और अग्निकर्म विधिका वर्णन, जोंक, सींगी और तुम्बीलगाने की विधि, रक्तकीविधि और यत्नसे रक्षा दोषधातु मलके क्षय और वृद्धिके जानने का वर्णन,बालकके कान छेदने की विधि, फोड़ा आदिके चीरने का वर्णन,घावके लेपन और बन्धकी विधि,घाव वाले पुरुषको जिसप्रकार से रहना चाहिये तिसका वर्णन, पथ्यापथ्य वस्तुओं का वर्णन, घावके प्रश्न विषयके अध्यायका वर्णन, घावके स्थानोंका वर्णन कृत्य और अकृत्य और व्याधिभेद का विषय,आठप्रकारके शस्त्र कर्मकरनेवाले अध्यायका व्याख्यान, प्रणष्टशल्यनाम फोड़े के जानने का लक्षण, शल्यनामक फोड़े के निकालने का बर्णन, विपरीताविपरीत नामक घावके जाननेका बर्णन, दूतकोवैद्यके बुलानेके समय में और वैद्य कोभी रोगी के यहां जानेमें शुभ अशुभ शकुन और रोगीके शुभ अशुभ स्वप्नों के द्वारा शुभ अशुभ फलका बर्णन, रोगीको अपनीही छाया जिसप्रकार की दिखलाई दे उसके शुभाशुभका फल,रोगी के स्वभाव के उलटा होजानेका फल,रोगीको जिसजिस लक्षणवाले रोगमार डालतेहैं उनका वर्णन, सेनायुक्त और शत्रुओं को जीतने की इच्छावाले राजाकी वैद्यको रक्षाकरनी योग्यहै वैद्यको, रोगी के आयुकी परीक्षा, फोड़ोंके लेपइत्यादि औषधों का वर्णन, वैद्यका औषधके योग्य भूमिकी परीक्षाकरना, औषधों के समूहों के गुणवर्णन, जो औषध वमन और जो जुलाब से रोगोंको हरनेवाली हैं उनका वर्णन, औषध और रसोंके गुणवीर्य और विपाक के जाननेका वर्णन, रसविशेषोंके जानने का वर्णन, वमनद्रव्यों और जुलाब की द्रव्योंका वर्णन, जलवर्ग, दूधवर्ग, दहीवर्ग, माठावर्ग, तेलवर्ग, शहदवर्ग, ईषवर्ग, मदिराकांजी और मूत्रवर्ग का वर्णन, अन्नपान विधिका वर्णन, बातव्याधि बवासीर, पथरी, भगंदर, कुष्ठ, प्रमेह, उदररोग, मूढ़गर्भ, विद्रधिरोग, विसर्प, नाड़ीरोग, स्तनरोग, ग्रंथि, अपची, अर्बुद, गलगंड, वृद्धि, आतशक, फीलपांव, छोटे २ रोग, शूकदोष, भग्नरोग, और मुख रोगों के निदान का वर्णन, सर्वभूत चिंता शारीर, शुक्रशोणित शुद्धि

भावप्रकाश सटीक के मध्यखण्ड के प्रथम भाग का सूचीपत्र ॥

मध्यखण्ड ॥ द्वितीयोभागः ॥

भावप्रकाशे मध्यखण्डः ॥

तत्रादौज्वराधिकारमाह ॥

यतःसमस्तरोगाणांज्वरोराजेतिविश्रुतः। अतोज्वराधिकारोऽत्र प्रथमंलिख्यतेमया ॥ १ ॥

भावप्रकाश मध्यखण्ड ॥

ज्वराधिकार ॥

ज्वर सम्पूर्ण रोगों का राजा कहागया है इसलिये मैं प्रथम ज्वराधिकार को लिखताहूं ॥ १ ॥

तत्रज्वरस्यप्रथममुत्पत्तिमाहसुश्रुतः ॥

दक्षापमानसंक्रुद्धरुद्रनिःश्वाससम्भवः। ज्वरोऽष्टधापृथग्द्वन्द्वसङ्घातागन्तुजःस्मृतः ॥ अस्यायमर्थः। दक्षकर्तृकोयोऽपमानस्तेनसंक्रुद्धोयोरुद्रस्तस्ययोनिःश्वासस्तस्मात्संभव उत्पत्तिर्यस्यसज्वरः। क्रुद्धरुद्रनिःश्वाससम्भूतत्वेनज्वरःस्वभावात्पैत्तिकइतिबोध्यते। यतउक्तंचरकेण। क्रोधात्पित्तमित्यादितेनसर्वज्वरेषुपित्तोपशमनकारिणीचिकित्साकर्त्तव्या अतएववाग्भटः। ऊष्मापित्तादृतेनास्तिज्वरोनास्त्युष्मणाविना। तस्मात्पित्तविरुद्धानि त्यजेत्पित्ताधिकेऽधिकम् ॥ २ ॥

सुश्रुतकी कही हुई ज्वरकी उत्पत्ति ॥

दक्षके अपमानसे क्रुद्ध होकर श्रीशिवजी महाराज ने जो श्वास छोड़ाहै उससे ज्वर उत्पन्न हुआ है वह ज्वर पृथक् द्वन्द्व सन्निपात और आगन्तुक भेदसे आठ प्रकार का है क्रोध युक्त शिवजीके श्वास के द्वारा उत्पन्न होनेके कारण ज्वर स्वभावही से पैत्तिक होताहै क्योंकि चरक ने भी कहाहै कि क्रोध से पित्त उत्पन्न होताहै इत्यादि इसलिये सम्पूर्ण ज्वरों में पित्तके शान्त करने वाली चिकित्साकरनी चाहिये इसी से वाग्भट ने भी कहाहै कि पित्तके बिना ऊष्मा नहीं होती और ऊष्माके बिना ज्वर नहीं होता इसलिये संपूर्ण ज्वरों में पित्त बिरुद्धबस्तुओं को त्यागकरदे और अधिक पित्त वाले ज्वर में अधिक त्याग करदे ॥ २ ॥

अधिकमिति। रुद्रसभूतत्वेनज्वरस्यदेवतात्मकत्वात्पूजार्हत्वंचोपदर्शितम् अतएव वयदेहः। ज्वरःसंपूजनैर्वापिसहसैवोपशाम्यतीति ॥ ३ ॥

ज्वर शिवजीसे उत्पन्न हुआहै इसलिये देवतात्मकहै इसीसे पूजन के योग्य कहा गयाहै वैदेह ने भी कहाहै कि ज्वर पूजनके द्वारा शघ्रि शान्त होजाता है ॥ ३ ॥

मूर्तिरप्यस्योक्तासुश्रुतेन।

रुद्रकोपाग्निसम्भूतःसर्वभूतप्रतापनः। त्रिपाद्भस्मप्रहरणस्त्रिशिराःसुमहोदरःव्याघ्रचर्म्मवसनःकपिलोमाल्यविग्रहः॥ पिङ्गेक्षणोह्रस्वजङ्घोवीभत्स्योबलवान्महान् ॥ पुरुषो लोकनाशार्थमसौज्वरइतिस्थितः। तैस्तैर्नामभिरन्येषांसत्वानांपरिकीर्त्यते ॥ जन्मादौ निधनेचैवप्रायेविशतिदेहिनाम्। ऋतेदेवमनुष्याभ्यांनान्योविसहतेहितम् ॥ ४ ॥

सुश्रुतमें कही हुई ज्वरकी मूर्त्ति ॥

शिवजी की क्रोधाग्नि से उत्पन्न हुआ ज्वर सब प्राणियों को संताप देनेवालाहै ज्वरके तीन पैर तीन शिर बड़ाउदर व्याघ्र के चर्मका ओढ़ना कपिल वर्ण मालाधारी पिंगलबर्ण नेत्र और छोटी पिंडली होती हैं बुरी आकृति वाला बड़ाबलवान् पुरुष लोक के नाश करने के लिये स्थित रहता है यह ज्वर अन्य अन्य प्राणियों के शरिरमें प्रविष्टहुआ अन्य २ नामों से कहा जाताहै जैसे हाथियों का पालक घोड़ोंका अभिताप इत्यादि जन्मके आदिमें और मृत्युके समय ज्वर प्रायःप्राणियोंके शरीर में प्रविष्ट होताहै देवता और मनुष्यों को छोड़कर औरं कोईप्राणी ज्वरको नहीं सहसक्ताहै ४॥

तस्यज्वरस्यसंख्यारूपांसम्प्राप्तिमाह ॥

ज्वरोऽष्टधेतिअष्टत्वंविवृणोति पृथगितिवातिकःपैत्तिकःश्लैष्मिकश्चेतित्रयः द्वन्द्वजाश्चत्रयःवातपैत्तिकःवातश्लेष्मिकःपित्तश्लेष्मिकश्चेतिसंघातजःसान्निपातिकएकः। द्युल्वणैकोल्वणैः षट्स्युर्हीनमध्याधिकैश्चषट्। समश्चैकोविकारास्तेसन्निपातास्त्रयोदश ॥ इतिचरके॥ त्रयोदशसन्निपाता उक्तास्तेयथावातोल्वणःपित्तोल्वण। कफोल्वणः। वात पित्तोल्वणः। वातश्लेष्मोल्वणः। पित्तश्लेष्मोल्वणः। एवंषट्। अधिकवातोमध्यपित्तोहीनकफः। अधिकवातोमध्यकफोहीनपित्तः। अधिककफोमध्यपित्तोहीनवात अधिककफोमध्यवातोहीनकफःअधिकपित्तो मध्यकफोहीनवातःअधिकपित्तोमध्यवातोहीनकफश्चेतिषट्। उल्वणएकःएवंत्रयोदश। अत्रतुत्रिदोषजत्वेनसाम्यात्सान्निपातिकएकःएवंगणितः ॥ ५ ॥ ज्वरकी संख्यारूप संप्राप्ति कही जाती है ॥

ज्वर आठ प्रकारका है जैसे पृथक् अर्थात् बातका पित्तका और कफका इन तीन प्रकारकाहै द्वंद्वजतीन प्रकार का है जैसे वात पित्तका वात कफका और पित्तकफका एक सन्निपातका चरकने कहा है कि दो दोष उल्वण (बढ़ेहुए) तथा एकदोष उल्वण होने से छः प्रकार काहै दोषोंकी हीनता मध्यता और अधिकता से छःप्रकार काहै और दोषें की समतासे एक प्रकारकाहै इस प्रकार सन्निपात तेरह प्रकार का है जैसे वातोल्वण पित्तोल्वण कफोल्वण वात पित्तोल्वण बातश्लेष्मोल्वण तथा पित्तश्लेष्मोल्वण इन छः प्रकारोंका होताहै और अधिक वात मध्यपित्त हीन कफ अधिक बात

मध्य कफहीन पित्त अधिक कफ मध्यपित्तहीन बात अधिक कफ मध्य बातहीन पित्त अधिक पित्त मध्य कफ हीन वात अधिक पित्त मध्य बात हीन कफ इन छःप्रकारोंका होताहै और तीनों दोषोंकी वृद्धि वाला एक इस प्रकार से तेरह सन्निपात होते हैं परन्तु यहाँ तो सन्निपात त्रिदोष से उत्पन्न होताहै इस समता को लेकर एकही गिनागयाहै ॥ ५ ॥

आगन्तुजइति । अत्रागन्तुशब्देनाभिघातादयोहेतवउच्यन्ते कुत्रचिद्व्याधयः कार्य्यकारणयोरभेदोपचारात् आगन्तुजाअभिघाताद्यनेककारणयोगादनेकेभवन्ति । तथाप्यागन्तुजत्वेनसाम्यादागन्तुकोऽप्यत्रैकएवगणितः । नत्वागन्तुजेऽपिज्वरेवातादिलक्षणदर्शनादागन्तुजःकथंदोषजाद्भिन्नः । उच्यते,उत्तरकालंदोषोत्पत्तेतथाचचरके । आगन्तुर्हिव्यथापूर्व्वंजायतेपश्चाद्भिन्नैर्दोषैरनुबध्यतइति ॥ ६ ॥

यहां आगन्तु शब्द से चोट आदिक कारण लिये जाते हैं और कहींपर कार्य्य कारण के अभेदको माननेसे व्याधिभी आगन्तु कहीजाती हैं आगन्तुज ज्वर चोट आदिक अनेक कारणोंके होनेसे अनेक होते हैं परन्तु आगन्तुजपने की समतासे आगन्तुक ज्वर भी यहां एकही गिनागयाहै अब यह सन्देह होता है कि आगन्तुक ज्वरमें भी वातादिकों के लक्षण दिखाई देते हैं तो आगन्तुज दोषजसे कैसे अलग होसक्ता है इसका उत्तर यहहै कि आगन्तुक रोगमें दोषों का कोपपीछे होता है और ऐसाही चरक में भी कहा है कि आगन्तुज ज्वर पहले चोट आदिकों से उत्पन्न होता है और पीछेसे भिन्न २ दोषों करके युक्त होता है ॥ ६ ॥

अथज्वरस्यविप्रकृष्टकारणकथनपूर्विकांसम्प्राप्तिमाह ॥

मिथ्याहारविहाराभ्यांदोषाह्यामाशयाश्रयाः । बहिर्निरस्यकोष्टाग्निंज्वरदाःस्युरसानुगाः ॥ मिथ्याहारविहाराभ्यां अनुचिताहारचेष्टाभ्यां हेतुभूताभ्यांदोषः वातपित्तकफाः आमाशयाश्रयाःआमाशयंगतारसानुगाःरसदूषकाः बहिर्निरस्यकोष्टाग्निंकोष्टगताग्नेरूष्माणं । नतुसमस्तमग्निंतदादोषपाकासम्भवःस्यात् । बहिःप्रक्षिप्यज्वरदाःस्यु ज्वरकारिणोभवेयुरित्यर्थः ७ ॥

ज्वर के समीपी कारण के कथन पूर्व्वक संप्राप्तिको कहते हैं

अनुचित आहार बिहार के द्वारा आमाशयमें गयेहुए वातपित्त कफ रसको दूषितकरतेहुए कोष्ठाग्नि को बाहर निकालके (कोष्ठमें प्राप्त अग्नि की ऊष्मा को न कि सम्पूर्ण अग्निको क्योंकि सम्पूर्ण अग्नि के निकलने से दोषों का परिपाक होना असम्भव होजायगा) ज्वरको उत्पन्न करते हैं ॥ ७ ॥

अथज्वरस्यसामान्यविशिष्टंचपूर्वरूपमाह ।

श्रमोऽरतिर्विवर्णत्वंवैरस्यंनयनप्लवः । इच्छाद्वेषौमुहुश्चापिशीतवातातपादिषु ॥ जृम्भांगमर्दोगुरुतारोमहर्षोऽरुचिस्तमः । अप्रहर्षश्चशीतञ्चभवन्त्युत्पत्स्यतिज्वरे ॥ सामान्यतोविशेषात्तुजृम्भात्यर्थंसमीरणात् । पित्तान्नयनयोर्दाहःकफान्नान्नाभिनन्दनम् ॥ श्रमोऽव्यापारंविनैवअरतिरस्वस्थचित्तत्वंविवर्णत्वंम्लानगात्रता । वैरस्यंमुखस्याऽप्रकृतरसता । नयनप्लवःनयनयोरश्रुपूर्णत्वम् । शीतवातातपादिषुमुहुरिच्छाद्वेषौआदिशब्दाज्ज्वलनेज

लेच। यतउक्तंचरकेण। ज्वलनातपवातेषुभक्तिद्वेषावनिश्चिताविति। शयनादिष्वित्यन्ये अंगमर्देऽगमोटनम्। गुरुतागात्रस्य। रोमहर्षःरोमाञ्चताअरुचिर्भोज्ये। तमःतमोम ग्नस्येवज्ञानम्। अप्रहर्षःहर्षाभावः। शीतंलगतिचकाराद्बलहानिः। उपदेशद्वेषादयो ऽपिभवन्ति। तृतीयश्लोकस्थमसामान्य इतिपूर्वश्लोकाभ्यांसम्बन्धनीयः। तेनसामा न्यतोज्वरेउत्पत्स्यतिभविष्यतिश्रमादयः पूर्वमेवभवंतीत्यर्थः। उत्पत्स्यतीत्यात्मनेपदिमो पिशतृङ्भावआर्षत्वात्विशेषात्उच्यते। समीरणात्ज्वरेउत्पत्स्यतिअतिशयेनजृम्भाभ वंति। पित्तज्वरेउत्पत्स्यतिअत्यर्थनयनयोर्दाहोभवति। कफज्वरेउत्पत्स्यतिअत्यर्थेनना न्नाभिनन्दनमन्नाकाङ्क्षानभवति। जृम्भादयोभवन्तियतःसामान्यधर्माक्रांतोविशिष्टो धर्मोभवति ८॥

ज्वरका सामान्य और बिशिष्ट पूर्वरूप॥

परिश्रम के बिना कियेहुये श्रम मालूम होना चित्तकी व्यग्रता का होना अंगों का मलिन होना मुखका बिरस होना नेत्रोंसे आंशूबहना शीत बायु तथा आतप आदिकमें (आदि शब्द से अग्नि और जल लेना चाहिये क्योंकि चरक में कहाहुआ है कि अग्नि धूप तथा बायु में कभी इच्छा होय कभी अनिच्छा और कोई कहते हैं कि आदि शब्द से शयन आदिकोंका ग्रहण होता है) बारम्बार इच्छा तथा अनिच्छा का होना अंगों में पीड़ा शरीरमें भारीपन जमुहाई रोमांच भोजन में अरुचि अन्धेरे मेंदबाह आसा मालूम होना हर्षकानहोना निर्मलता उपदेश न मानना और जाड़ा लगना सामान्यता से यह सम्पूर्ण लक्षण जब ज्वर उत्पन्न होनेवाला होताहै तब होते हैं बहुत जमुहाइयों के द्वारा बातज अत्यन्त नेत्रों में दाह होने से पित्तज और अन्न में अत्यन्त अरुचि से कफ ज्वर उत्पन्न होने वाला है यह जानलेना चाहिये यह बिशेष लक्षण हैं॥ ८॥

द्वन्द्वजपूर्वरूपमाह॥

रूपैरन्यतराभ्यांतुसंसृष्टैर्द्वन्द्वजंविदुः।अन्यतराभ्यांजृम्भानेत्रदाहाभ्याम्। जृम्भान्ना रुचिभ्यांनेत्रदाहान्नारुचिभ्यांवासंसृष्टैरूपैःश्रमादिभिःद्वन्द्वजंद्विदोषजंपूर्वरूपंविदुः९॥

द्वन्द्वज का पूर्वरूप॥

दो दोषों के मिलेहुये लक्षणों से द्वन्द्वज ज्वर का पूर्व्व रूप जानना चाहिये श्रम आदिक सामा न्य पूर्व्व रूपों करके सहित जमुहाई तथा नेत्रों में दाह के द्वारा बात पित्तज जमुहाई तथा अन्न में अरुचि के द्वारा बात कफज और नेत्रोंमें दाह तथा अन्न में अरुचि के द्वारा पित्तकफ ज्वर होने वाला जानना चाहिये॥ ९॥

त्रिदोषजपूर्व्वरूपमाह।

सर्वलिंगसमवायःसर्व्वदोषप्रकोपजे। सर्व्वरूपजेसर्व्वरूपेसर्व्वलिङ्गसमवायः अतिशयितजृम्भानेत्रदाहान्नारुचिसहितानांश्रमादीनांसमवायोभवति॥ १०॥

त्रिदोष ज्वर का पूर्वरूप

अत्यन्त जमुहाई नेत्रोंमें दाह तथा अन्नमें अरुचि इन बिशेष लक्षणोंसे युक्त श्रम आदिक सब सामान्य लक्षणों के होनेपर त्रिदोष ज्वर का पूर्व्वरूप जानना चाहिये॥ १०॥

अथज्वरस्यसामान्यलक्षणमाह ।

स्वेदावरोधःसन्तापःसर्वांगग्रहणन्तथा । युगपद्यत्ररोगेतुसज्वरोव्युपदिश्यते ॥ तापइतिवक्तव्येसन्तापाभिधानंदेहेन्द्रियमनसांसन्तापबोधनार्थं । यतउक्तंचरकेणज्वर विशेषणंदेहेन्द्रियमनस्तापीति । तत्रदेहसन्तापोदेहेन्द्रियोष्णता । इन्द्रियसन्तापइन्द्रि यतापवैकृत्यंमनःसन्तापवैचित्यलक्षणम् । यतउक्तं । इन्द्रियाणांतुवैकृत्यंयत्रसन्तापल क्षणम् । वैचित्यमरतिर्ग्लानिर्मनःसन्तापलक्षणमिति ॥ सर्व्वांगग्रहणम् । सर्वेषामं गानांवेदनयाग्रहणंसर्वाण्यङ्गानिस्तम्भनगृहीतानीवभवन्तियुगपदिति । मिलितमे तल्लक्षणम् । प्रत्येकस्यव्यभिचारात् । यथास्वेदावरोधः । कुष्ठपूर्वरूपे । तथासंतापो दाहव्याधौ । तथासर्व्वांगग्रहणंसर्व्वांगरोगाख्यवातव्याधौ ११ ॥

ज्वरका सामान्य लक्षण ॥

जिस रोगमें पसीनेका रुकना संताप सबशरीर में पीड़ा यह सब लक्षण इकट्ठे होतेहें उसको ज्वर कहते हैं यहाँ तापके स्थान में संताप कहने से देहइन्द्री तथा मनका ताप ग्रहण किया जाता है क्योंकि चरकने देह इन्द्री तथा मनमें तापवाला यह ज्वरकाविशेषण कहाहै देह सन्ताप अर्थात् देह की इन्द्रियोंकी उष्णता इन्द्रिय सन्ताप अर्थात् इन्द्रियोंमें तापरूप विकार और मनका संताप अर्थात् चित्तकी विकलता और ऐसाही कहाभीहै कि इन्द्रियोंके विकारको इन्द्रिय संताप और असावधानता किसी बातमें चित्तका न लगना तथा ग्लानिको मनका संताप कहतेहैं यह सब लक्षण इकट्ठे होंय न कि अलग अलग होने से अन्यरोगों के लक्षण होते हैं जैसे पसीनेका रुकना कुष्ठके पूर्व्वरूप में संताप दाह रोगमें और संपूर्ण अंगमें पीड़ा सर्वांग नाम वातरोगमें होतीहै ॥ ११ ॥

प्रस्वेदानिर्गमनपक्षेकारणमाह ॥

रुणद्धिचाप्यपांधातून्यस्मात्तस्माज्ज्वरातुरः । भवत्यत्युष्णगात्रश्चस्विद्यतेनचस र्वशः ॥ यस्माज्ज्वरोऽत्रभवतिसर्वशःस्विद्यतेचन १२ ॥

पसीनेके न निकलनेका कारण ॥

ज्वरातुर मनुष्यकी जल संबंधी धातुओंके रुकनेसे शरीर अत्यन्त उष्ण होजाताहै और सब शरीरमें पसीना नहीं निकलताहै ज्वर होनेके कारणसेही स्वेदका रुकना होता है ॥ १२ ॥

अथसामान्यतोज्वरस्यचिकित्सामाह ॥

अंशांशंयत्रदोषाणांविवक्तुंनैवशक्नुयात् । साधारणींक्रियांतत्रविदधातुचिकित्सकः ॥ सामान्यतोज्वरीपूर्वंनिर्वातेनिलयेवसेत् । निर्वातमायुषोवृद्धिमारोग्यंकुरुतेयतः ॥ व्यज नस्थानिलस्तृष्णास्वेदमूर्च्छाश्रमापहः । तालवेत्रभवोवातस्त्रिदोषशमनोमतः ॥ वंशव्य जनजःसोष्णोरक्तपित्तप्रकोपनः । चामरोवस्त्रसम्भूतोमायूरोवेत्रजस्तथा ॥ एतेदोषाजि तावाताःस्निग्धाहृद्याःसुपूजिताः । नवज्वरीभवेद्यत्नाद्गुरूष्णावसनावृतः ॥ यथर्तुपक्कपा नीयंपिबेत्तुकिञ्चिन्निवारयन् १३ ॥

ज्वरकी सामान्य चिकित्सा ॥

जहाँ वातादिक दोषोंके अंश अलग २ न किये जासकें तहाँ वैद्यको साधारण चिकित्सा करना चाहिये सामान्यतासे ज्वरवाला मनुष्य प्रथम वायु रहित स्थान में रहै क्योंकि वायु रहित स्थान आयुवर्द्धक और आरोग्यकारी होताहै पंखेकी वायु तृषा स्वेद मूर्च्छा तथा श्रम नाशक ताड़के पंखे की वायु त्रिदोष नाशक बांसके पंखेकी वायु उष्ण तथा रक्तपित्तकारी चमर वस्त्र मोरके पंख तथा बेंतके पंखेकी वायु त्रिदोष नाशक स्निग्ध हृदयकोहित और अत्यन्त उपकारी होती है नवीनज्वर वाला मनुष्य भारी तथा गरम बस्त्रको ओढ़ेरहै और जिसऋतुमें जैसे लिखाहो उसीप्रकार परिपाकहुए जलको कुछ ठहर २ कर थोड़ा २ पिये ॥ १३ ॥

विनापिभेषजैर्व्याधिः पथ्यादेवनिवर्त्तते ॥ नतुपथ्यविहीनस्यभेषजानांशतैरपि । ततो ज्वरेवर्ज्जनीयान्याहसुश्रुतः ॥ परिषेकान्प्रदेहांश्चस्नेहान्संशोधनानिच । दिवास्वप्नं व्यवायञ्चव्यायामंशिशिरंजलम् ॥ क्रोधप्रवातभोज्यांश्चवर्ज्जयेत्तरुणज्वरी । परिषेकः स्नानादिः, प्रदेहोऽनुलेपनाभ्यङ्गादिः ॥ स्नेहान् । पानैर्निषिद्धानि ॥ १४ ॥

औषधोंके विना केवल पथ्यहीसे रोग निवृत्त होजाताहै परन्तु पथ्यके विना सैकड़ों औषधोंसेभी रोग नहीं निवृत्त होता है इसलिये सुश्रुतमें कहेहुये नवीनज्वरमें त्यागकरनेके योग्य वस्तु वर्णनकी जातीहै तरुणज्वरमें स्नानादिक लेप तथा तैल मर्दनादिक पीनेमें निषिद्ध स्नेह शोधक औषधकदिन में निद्रा मैथुन व्यायाम शीतलजल क्रोध अत्यन्त वायु और भोजन करनेके पदार्थ इन सबको त्याग करदे ॥ १४ ॥

निषेधाद्दोषमाह ॥

शोषंछर्द्दिमदंमूर्च्छांभ्रमंतृष्णामरोचकम् । प्राप्नोत्युपद्रवानेतान्परिषेकादिसेवनात्॥ आदिशब्देनप्रदेहादयोगृह्यन्ते । हारीतेनप्रत्येकदूषणमुक्तञ्च ॥ व्यायामाज्ज्वरसंवृद्धिर्व्यवायात्स्तम्भमूर्च्छनम् । मृतिश्चस्नेहपानाद्यैर्मूर्च्छाच्छर्दिर्म्मदोऽरुचिः॥ गुर्वन्न भोजनात्स्वप्नाद्विष्टम्भोदोषकोपनम् । अग्निसादःखरत्वञ्चस्रोतसांचप्रवर्त्तनम्॥ स्मृतिरितिव्यवायादित्यत्रसम्बध्यते । स्वप्नात्दिवास्वापात् ॥ १५ ॥

इनके सेवनकरने में दोष ॥

स्नानादिकों के सेवनसे शोष छर्दि मद मूर्च्छा भ्रम तृषा तथा अरुचि यह संपूर्ण उपद्रव पैदा होतेहैं आदि शब्द से लेपादिकों का ग्रहण कियाजाताहै हारीतने इन सबके अलग अलग दोषवर्णन कियेहैं व्यायामसे ज्वरकी वृद्धि मैथुनसे स्तंभ मूर्च्छा तथा मृत्यु स्नेह पान करनेसे मूर्च्छा छर्दि मद तथा अरुचि होतीहै और भारी अन्न के भोजन तथा दिन के सोने से विष्टंभ दोषोंका कोप मंदाग्नि शरीर में कठोरता और श्रोतोंका रुकना होताहै ॥ १५ ॥

अन्यच्चवर्ज्जयेत् । सज्वरोज्वरमुक्तोवाविदाहीनिगुरूणिच ॥ असात्म्यान्नानिपानानिविरुद्धाध्यशनानिच । व्यायाममतिचेष्टांवाऽभ्यङ्गंस्नानंचवर्ज्जयेत् ॥ तेनज्वरःशमं यातिशान्तश्चनपुनर्भवेत् ॥ १६ ॥

ज्वरयुक्त अथवा ज्वर से छुटाहुआ मनुष्य विदाहीतथा भारी वस्तु अहित अन्न तथा पान विरुद्ध

भोजन व्यायाम बहुत कामकरना तैलमर्दन और स्नान इनसबको त्यागदे इससे ज्वर शान्त होता है और शान्तहुआ ज्वर फिर नहीं होता है ॥ १६ ॥

ज्वरीलङ्घनंकुर्य्यादित्याहचरकोवाग्भटश्च । आमाशयस्थोहत्वाग्निसामोमार्गान्पिधापयन् ॥ विदधातिज्वरंदोषस्तस्माल्लङ्घनमाचरेत् । यथा । ज्वरादौलङ्घनंप्रोक्तंज्वरमध्येतुपाचनम् ॥ ज्वरान्तेभेषजंदद्याज्ज्वरमुक्तेविरेचनम् । त्रिविधंत्रिविधेदोषेतत्समीक्ष्यप्रयोजयेत् ॥ दोषेऽपिलङ्घनंपथ्यं मध्येलङ्घनपाचनम् । प्रभूतेशोधनंतद्धिमूलादुन्मूलयेन्मलान् ॥ चक्रदत्तश्च । तरुणंतुज्वरंपूर्वंलङ्घनेनक्षयंनयेत् ॥ आमदोषमलिंगाद्वालङ्घयेन्नंयथाविधि ॥ १७ ॥

ज्वरमें लंघन करनाचाहिये यह चरक और वाग्भटने कहाहै जैसे कि आम सहितदोष आमाशय में स्थित हुआ अग्नि को मन्द करके श्रोतों को ढककर ज्वर को उत्पन्न करताहै इसलिये लंघन करना चाहिये ज्वर के आदिमें लंघन मध्य में पाचन और अन्त में औषध ज्वरके छूटजाने पर विरेचन देना चाहिये तीन प्रकार के दोषों में यह सब तीन प्रकार से विचार करना चाहिये दोषके कम होने पर लंघन मध्यदोषमें लंघन तथा पाचन और बहुत बढ़ेहुए दोषमें शोधन करना चाहिये क्योंकि शोधन के द्वारा दोष जड़ से नष्टहोजातेहैं चक्र दत्तने कहा है कि नवीन ज्वर में लंघन देकर आम दोषकोनष्टकरना चाहिये और जो उसके लक्षणनमालूम पड़ेंतौभी विधिपूर्वक लंघनदेनाचाहिये १७॥

अन्यच्च ॥

वातःपचातिसप्ताहात्पित्तंतुदशभिर्दिनैः । श्लेष्मद्वादशभिर्घस्रैःपच्यतेवदतांवर ॥ लङ्घनंलङ्घनीयस्तुकुर्य्याद्दोषानुरूपतः । त्रिरात्रमेकरात्रं चाऽहोरात्रमथवाज्वरे ॥ निर्वातसेवनात्स्वेदाल्लङ्घनादुष्णवारिणः । पानादामज्वरेक्षीणेपश्चादौषधमाचरेत् ॥ १८ ॥

अन्यप्रकार ॥

सातादिनमें वायु दश दिनमें पित्त और बारह दिनमें कफ परिपाक को प्राप्त होताहै लंघनके योग्य मनुष्य दोषों के अनुसार ज्वर में तीन रात्रि एकरात्रि अथवा एक रात्रि दिन लंघनकरे वायु रहित स्थान में रहनेसे स्वेद से लंघन से और उष्ण जल के पान से आमज्वर के क्षीण होने पर पीछे से औषधि देनी चाहिये ॥ १८ ॥

(आत्रेयेणोक्तम्) ज्वरादौलङ्घनंप्रोक्तंज्वरममध्येतुपाचनम् । ज्वरान्तेभेषजंदद्याज्ज्वरमुक्तेविरेचनम् ॥ दोषशेषस्यपाकार्थमग्नेःसन्धुक्षणायच । लङ्घितश्चाप्यदोषश्चेद्यवागूपानमाचरेत् ॥ शालिषष्टिकमुद्गानांयूषंवांशस्तमाचरेत् । पञ्चकोलेनसंसिद्धांयवागूंमध्यलङ्घने ॥ अत्यर्थंलङ्घितंदृष्ट्वातस्यसंतर्पणंहितम् । द्राक्षादाडिमखर्ज्जूरपियालैःसपरूषकैः ॥ तर्पणार्हस्यकर्त्तव्यन्तर्पणंज्वरशान्तये ॥ १९ ॥

आत्रेयजीने कहाहै कि ज्वरके आदि में लंघन ज्वरके मध्यमें पाचन ज्वरके अन्तमें औषध और ज्वरके छूटजाने पर विरेचन देनाचाहिये लंघनकिये हुए मनुष्यको शेष दोषों के परिपाक के लिये और अग्निको प्रज्वलितकरने केलिये शालि तथा साठीके चांवलोंकी यवागू अथवा मूंगका यूष पिलावे मध्यमलंघन युक्त पुरुषको पंचकोलसे बनीहुई यवागूपानकरावे और अत्यन्त लंघनयुक्त पुरुषको

संतपर्ण हितकारीहै दाख अनार खजूर चिरौंजी और फालसे के द्वारा संतर्पण के योग्य पुरुषको ज्वर की शांतिके लिये संतर्पण देनाचाहिये ॥ १६ ॥

अत्रलङ्घनशब्देनानशनमुच्यते । (यतआहसुश्रुतः) आनद्धस्तिमितैर्दोषैर्यावन्तं कालमातुरः । तावत्वनशनंकुर्य्यात्ततःसंसर्गमाचरेत् ॥ आनद्धस्तिमितैर्दोषैःसम्बद्धः(संसर्गऔषधान्नादिप्रसङ्गम् (यतआहचरकः) चतुःप्रकारा संशुद्धिःपिपासामारुतातपौ । पाचनान्युपवासश्चव्यायामश्चेतिलङ्घनम् ॥ चतुःप्रकाराःसंशुद्धिर्वमनञ्चविरेचनम् । निरूहवस्तिशिरोविरेचनानि । नत्वनुवासनंतस्यबृंहणत्वात् । अत्रलङ्घनंकर्षणमित्यर्थः। (तथाचसुश्रुतः) शरीरलाघवकरंयद्द्रव्यंकर्म्मवापुनः । तंलङ्घनमितिज्ञेयंबृंहणंतुपृथग्विधम् ॥ लङ्घनकर्षणादन्यत्शरीरपोषकमित्यर्थः ॥ २० ॥

यहाँ लंघन शब्द से अनाहार लेनाचाहिये क्योंकि सुश्रुत में कहाहैकि जबतक रोगी संबद्धदोषों से युक्तरहै तबतक उपवासकराना चाहिये पीछे औषध और आहारका सेवनकरे चरकने कहाहै किचार प्रकार की संशुद्धि तृषा वायु धूप पाचन उपवासऔर व्यायाम इनसबको लंघन (कृशकरना) कहते हैं चारप्रकारकी संशुद्धि अर्थात् वमन विरेचन निरूहवस्ति और शिरका विरेचन यहाँ अनुवासन का ग्रहण नहीं होताक्योंकि वह धातुवर्द्धक है और ऐसाही सुश्रुतने कहा है कि जो द्रव्य अथवा कार्य्य शरीरको हलकाकरने वाला होता है उसको लंघनकहते हैं और बृंहण इस्से पृथक् अर्थात् कर्षणसे विपरीत शरीरका पुष्टकरने वाला होताहै ॥ २० ॥

ननुआनद्धस्तिमितैर्दोषैरित्यादिपूर्वोक्तसुश्रुतवचनात्सामान्यतोज्वरिणोयथा ऽनशनरूपंलङ्घनंक्रियते । तथाचतुःप्रकारासंशुद्धिःइत्यादिचरकवचनाद्वमनादिरूपंलङ्घनंसर्व्वैर्ज्वरिभिःकथंनक्रियते । तत्रोच्यतेवमनादिकमवस्थाविशेषेषुक्रियतेनतुसर्व्वज्वरेषु (तथाचसुश्रुतः) सोत्क्लेशेबलिनेदेयंवमनंश्लैष्मिकज्वरे । पित्तप्रायेविरेकस्तुकार्य्यःप्रशिथिलाशये ॥ सरुजेऽनिरुजेकार्य्यंसौदावर्त्तेनिरूहणम् । कफाभिपन्नेशिरसिकार्य्यमूर्ध्वविरेचनं ॥ २१ ॥

अबयह सन्देह होताहै कि [आनद्धस्तिमितै र्दोषैः]इत्यादि पूर्वोक्त सुश्रुत के वचनकेद्वारा सामान्यतासे ज्वरयुक्त मनुष्य जैसे उपवासरूप लंघन करतेहैं उसी प्रकार[चतुःप्रकारा संशुद्धिः] इत्यादि चरकके वचनसे व मनादिरूप लंघन संपूर्ण ज्वरवाले क्योंनहीं करते इसकाउत्तर यहहै कि व मनादिक अवस्था के अनुसार दियेजातेहैं संपूर्ण ज्वरवालोंको नहीं और ऐसाही सुश्रुत ने कहाहै कि मतली युक्त बलवान् मनुष्य को कफ ज्वर में वमन पित्तकी अधिकता तथा आशयकी शिथिलतामें विरेचन पीडायुक्त अथवा पीडा रहित उदावर्त्त समेत ज्वरमें निरूहण और शिरमें कफ भरेहोने पर शिरका विरेचन देनाचाहिये ॥ २१ ॥

अपिच । सर्व्वज्वरिभिःपिपासाविग्रहश्चनकार्य्यः(यतआहहारीतः)तृष्णागरीयसी घोरासद्यःप्राणविनाशिनी । तस्माद्देयंतृषार्त्तायपानीयंप्राणधारणम् ॥ अतोऽवस्थाविशेषेएवपिपासासहनंज्वरिभिमारुतसेवनंचकार्य्यं । सुश्रुतेनप्रवातसेवनस्यसर्व्वथानिषिद्ध

त्वात् । अतोमारुतसेवनमप्यवस्थाविशेषएवउक्तम् । आतपसेवनंचावस्थाविशेषएव युक्तम् ॥ २२ ॥

संपूर्णज्वरोंमें तृषाका रोकना अनुचितहै क्योंकि हारीतने कहाहै कितृषा अत्यन्तभयंकर और शीघ्रही प्राणोंकी नाशकरने वाली होतीहै इसलिये तृषासे व्याकुल मनुष्य को प्राणों के धारण करने के लिये जल देना चाहिये इसीसे अवस्था के अनुसार तृषा का रोकना और वायुका सेवन ज्वर वालों को उचितहै क्योंकि सुश्रुत ने वायुके सेवनका सब प्रकारसे निषेध किया है इसीलिये वायुका सेवन अवस्था विशेषमेंही कहा गयाहै और धूप का सेवनभी अवस्था विशेषही में योग्यहै ॥ २२ ॥

लङ्घनाम्बुयवागूभिर्य्यदादोषोनपच्यते । तदातुमुखवैरस्यं तृष्णारोचकनाशनैः । ज्वरघ्नैःपाचनैर्हृद्यैःकषायैःसमुपाचरेत् ॥ इत्यत्रलङ्घनपाचनयोःस्फुटएवभेदः । व्यायामोऽपिनकार्य्यस्तस्यातिनिषिद्धत्वात् । अवस्थाविशेषेपुनःपार्श्वपरिवर्त्तनादिरूपःसोऽपिकर्त्तव्यःतस्माच्चतुःप्रकाराःसंशुद्धिरित्यादिश्लोकेलङ्घनपदंकर्षणपर्य्यायमितिनिर्णीतं॥ २३॥

लंघन जल तथा यवागू के द्वारा दोष का परिपाक न होय तो मुखकी विरसता तृषा तथा अरुचि नाशक ज्वरघ्न पाचन और हृदयको हित कषायों के द्वारा वैद्यको चिकित्सा करनी चाहिये। यहां लंघन और पाचन का भेद स्फुट (प्रकट) है ज्वर में व्यायाम भी न करने चाहिये क्योंकि इसका अत्यन्त निषेधहै परन्तु अवस्था विशेष में करवट लेना आदिक व्यायाम करना चाहिये इससे (चतुः प्रकारा संशुद्धिः) इत्यादि श्लोक में लंघन शब्द कर्षणवाची है यह निश्चय हुआ ॥ २३ ॥

अनशनरूपस्यलङ्घनस्यफलमाह ॥

लङ्घनेनक्षयंनीतेदोषेसन्धुक्षितेऽनले । विज्वरत्वंलघुत्वंचक्षुच्चैवास्योपजायते ॥ लङ्घनेनअनशनेनदोषेप्रवृद्धेक्षयंनीते । यतआह । आहारंपचतिशिखीदोषाहारवर्जितःपचतीतिसन्धुक्षितेऽनलेआच्छादकदोषेक्षीणे ऽग्नौप्रदीप्तेयथोक्तसम्प्राप्तिसामग्रीविघटनात् विज्वरत्वंशरीरस्यगौरवाभावेनलघुत्वम् । क्षुत्बुभुक्षाचजायतेइत्यर्थः ॥ २४ ॥

अनाहाररूप लंघन का फल ॥

लंघन के द्वारा दोषों के क्षय होनेपर और अग्नि के दीप्त होनेपर ज्वर का नाश शरीर में हलकापन और क्षुधाहोतीहै और ऐसाही कहागयाहै कि अग्नि आहारको परिपाक करतीहै और आहार के अभाव में दोषों का परिपाक करती है अर्थात् अग्नि के द्वारा इसके ढकने वाले दोषों के क्षीण होजाने से अग्नि दीप्त होनेपर पहली कहीहुयी सम्प्राप्ति की सामिग्री का नाश होताहै इसीसे ज्वर चलाजाता है शरीर में हलकापन और क्षुधा उत्पन्न होती है ॥ २४ ॥

अन्यच्चाहसुश्रुतः । अनवस्थितदोषाग्नेर्लङ्घनंदोषपाचनम् । ज्वरघ्नंदीपनंकांक्षारुचिलाघवकारकम् ॥ अनवस्थितदोषाग्नेःस्वस्थानादितस्ततोगतोदोषोअग्निश्चयस्यज्वरिणः काङ्क्षाअन्नाभिलाषःरुचिःलङ्घनेनामपाकान्मुखशोषादिनाशेमुखस्ययत्प्रकृतत्वंसैवरुचिःशोभारुचिःस्त्रीदीप्तिशोभायामभीष्टार्थाभिलाषयोरितिमेदिनीकारः ॥ २५ ॥

सुश्रुतने और भी कहाहै कि जिसके दोष तथा अग्नि अपने स्थानसे इधर उधर चले जातह

उस ज्वरवाले को लंघनदोषों का पचाने वाला ज्वरघ्न अन्नमें रुचि आमके परि पाक होने से मुखके सूखने आदिको नाशकरके शोभा करने वाला और शरीरको हलका करने वाला होताहै ॥ २५ ॥

सम्यक्कृतस्यलंघनस्यलक्षणमाह ॥

वातमूत्रपुरीषाणांविसर्गेगात्रलाघवे । हृदयोद्गारकण्ठास्यशुद्धौतन्द्राक्लमेगते ॥ स्वेदेजातेऽरुचौचापिक्षुत्पिपासासहोदये । कृतंलंघनमादेश्यं निर्व्यथेचान्तरात्मनि ॥ हृदयस्यशुद्धिरनवरोधः । उद्गारशुद्धिःसधूमाम्लोद्गाराभावः कण्ठस्यप्रकृतरसत्वम् । तंद्राक्लमे तंद्राचक्लमश्चतस्मिंस्तंद्रानिद्राक्लमेऽत्रग्लानिःक्षुत्पिपासासहोदये । क्षुत्पिपासयोःसहयुगपदुदये । अन्तरात्मनिमनसि । एतानिलक्षणानिमिलितान्येवसम्यक्कृतलङ्घनंबोधयन्ति । नतुप्रत्येकम् ॥ २६ ॥ अच्छे प्रकारसे किये हुए लंघनके लक्षण ॥

अच्छे प्रकार लंघन किये जानेपर आगे कहेहुए संपूर्ण लक्षण इकट्ठे होते हैं वात मूत्र तथामल का निकला शरीर में हलकापन हृदय की शुद्धता (हृदयका नरुकना) डकारकी शुद्धता (मधुर और खट्टी डकारका न आना) कंठकी शुद्धता (कंठमें कफलिपा हुआसानहोना) मुखकी शुद्धता (मुखमें स्वाभाविक रसका होना) तन्द्रा तथा ग्लानिका नाश क्षुधा और तृषाकी साथही उत्पत्ति स्वेद निकलना रुचिहोना और मनका प्रसन्न होना ॥ २६ ॥

हीनस्य लंघनस्यलक्षणमाह ॥

कफोत्क्लेशःसहृल्लासःष्ठीवनंचमुहुर्मुहुः । कण्ठस्यहृदयाशुद्धिस्तंद्रास्याद्धीनलंघने ॥ उपस्थितवमनत्वमिवकफोत्क्लेशः कफस्यवमनायोपस्थितिः । हृल्लासःष्ठीवनं हृदयात्कफनिर्गमः ॥ २७ ॥ हीन लंघन के लक्षण ॥

कफका उत्क्लेश (मानोंवमनहोना चाहतीहै) हृल्लास (मतली) बार बार हृदयसे कफकानिकलना कंठ तथा हृदयकी अशुद्धता और तन्द्रा यह हीनलंघनके लक्षणहैं ॥ २७ ॥

अतिशयितस्यलंघनस्यलक्षणमाह ॥

पर्वभेदोऽङ्गमर्दश्चकासःशोषोमुखस्यच । क्षुत्प्रणाशोऽरुचिस्तृष्णादौर्बल्यंश्रोत्रनेत्रयोः॥मनसःसंभ्रमोऽभीक्ष्णमूर्ध्ववातास्तमोहृदि।देहाग्निर्बलहानिश्चलंघनेऽतिकृतेभवेत्॥ अरतिर्बलहानिश्चलंघनेऽतिकृतेभवेत् । कर्णनेत्रयोःस्वंविषयग्रहणासामर्थ्यम् ॥ मनसःसंभ्रमःभ्रांतिः । ऊर्ध्ववातःउद्गारबाहुल्यम् ॥ हृदितमःअंधकारप्रविष्टस्यैवज्ञानम् ॥ २८ ॥

लंघनकी अधिकताके लक्षण ॥

लंघनकी अधिकता में आगे कहे हुए लक्षण होते हैं संधियोंका टूटना शरीरमें पीड़ा खांसी मुख का सूखना क्षुधा न लगना अरुचि तृषा कानतथा नेत्रों की शक्तिका घटना भ्रान्ति बारंवार डकार आना अंधकारमें घिराहुआसा मालूम होना और देह तथा अग्निके बलका नाश अथवा ग्लानितथा बलका नाश ॥ २८ ॥

बलरक्षणं लङ्घनंकारयेदित्याह ॥

बलाविरोधिनाचैनंलंघनेनोपपादयेत् । बलाधिष्ठानमारोग्यंयदर्थोऽयंक्रियाक्रमः ॥

अयमर्थः। एवंरोगिणंबलाविरोधिनाअनतिबलक्षयकारिणालंघनेनउपपादयेत्उपचरेत् कुतइतिचेत्तत्राह। यदर्थमस्मैआरोग्यायअयंक्रियाक्रमः॥ चिकित्सोपक्रमः। ततःआरोग्यंबलाधिष्ठानंबलाश्रयामित्यर्थः॥ २९॥

बल रक्षक लंघन कराना चाहिये इसको कहते हैं॥

रोगीको जिस्से बहुत बलका क्षय न होय ऐसा लंघन कराके चिकित्सा करनी चाहिये क्योंकि चिकित्सा आरोग्य के लिये हुआ करती है और आरोग्यका आशय बलहै॥ २९॥

केषाञ्चिदनशनस्यनिषेधमाहसुश्रुतः। तद्विमारुततृष्णाक्षुत्मुखशोषभ्रमान्वितैः॥ न कार्य्यंगुर्व्विणीबालवृद्धदुर्बलभीरुभिः॥नक्षयाध्वश्रमक्रोधकामशोषचिरज्वरी। तत्रअनशनं। उल्बणमारुतयुक्तेनज्वरिणानकार्य्यमारुतेऽत्रनिरामोबोद्धव्यः॥ सामेमारुतेलंघनं कार्यमेव। यतआहतंत्रान्तरे। अवश्यवेवकुर्वीतज्वरीसामेसमीरणे॥ लंघनंह्यामपाकार्थं नतदूर्ध्वंयथाकफे॥ तदूर्ध्वंआमपाकादूर्ध्वम्। अतएवोक्तम्। कफपित्तेद्रवेधातूसहेतेलंघनंबहु। आमक्षयादूर्ध्वमपिवायुर्नसहतेक्षणम्। लाघवात्॥ ३०॥

कुछेक रोगियोंके लंघनका निषेध सुश्रुत ने कहाहै॥

अधिक वायु तृषा क्षुधा मुखका सूखना तथा भ्रमसे युक्त गार्भिणी स्त्री बालक वृद्ध दुर्बल भयभीत और क्षय मार्गका श्रम क्रोध खांसी शोष तथा जीर्णज्वरसे युक्त इन सबको लंघन नहीं कराना चाहिये यहाँ वायु शब्द से आम रहित वायु लेनी चाहिये क्योंकि आमयुक्त वात में लंघन कराना उचितहै ऐसाहीतंत्रान्तरमें कहागयाहै कि ज्वरवाला आमयुक्त वातमें आमके परिपाकके लियेलंघन करे परन्तु कफके समान आमके परिपाक के उपरान्त लंघन न करे इसीसे कहागया है कि कफ और पित्त पतलीं धातुहैं यह आमके परिपाकके उपरान्त भी बहुत लंघनको सहसके हैं परन्तु वायु आमके परिपाकके उपरान्त क्षण भरभी लंघनको नहीं सहसक्ती॥ ३०॥

आमस्यलक्षणमाह॥

आहारस्यरसःसारोयोनपक्वोऽग्निनाचसः। आमसंज्ञाञ्चलभतेबहुव्याधिसमाश्रयः॥ तन्त्रान्तरेतु। आममन्नरसंकेचित्केचित्तुमलसञ्चयम्। प्रथमंदोषदुष्टिंवाकेचिदामंप्रचक्षते॥ अविपक्वमसंशक्तंदुर्गंधंबहुपिच्छिलं। सादनंसर्वगात्राणामामइत्यामशब्दितः॥ तेनामेनसमायुक्ता दोषादूष्याश्चतादृशाः। तदुद्भवाआमयाश्चसामइति बुधैःस्मृताः॥ ३१॥

आमकालक्षण॥

आहारका सारांश रस जोकि अग्निके हलके पनेसे परिपाकको नहीं प्राप्तहोताहै वह आमकहलाता है इससे बहुतसे रोग होतेहैं तन्त्रान्तरमें कहागयाहै कि कोई २ पंडित अन्न के रसको कोई २ संचित मलको और कोई २ दोष के प्रथम विकारको आमकते हैं परिपाक को नहीं प्राप्तहुआ विना मिला हुआ दुर्गन्धि युक्त बहुत चिकना और संपूर्ण शरीरको पीड़ा देनेवाला आमकहलाताहै आमयुक्त दोष (वात पित्त कफ) तथा दूष्य (रस रुधिर मांस मेद अस्थि मज्जा और वीर्य) और आमजनित रोग साम कहलातेहैं॥३१॥

तत्रसामस्यवातस्यलक्षणमाह ॥

वायुःसामोविबन्धाग्निःसादतंद्रांत्रकूजनैः । वेदनाशोथनिस्तोदैःक्रमशोऽङ्गानिपीडयेत् ॥ विचरेद्युगपच्चापिगृह्णातिकुपितोभृशम् । स्नेहाद्यैर्वृद्धिमायातिमेघःसूर्य्योदयेनिशि ॥ विचरेदयुगपत्वायुरामश्चैककालंविचरेत्तुकुपितःसामोवायुः । भृशमतिशयेनगृह्णात्यङ्गानीत्यर्थः ॥ ३२ ॥

आमयुक्त वातके लक्षण ॥

आम युक्त वात विबन्ध मंदाग्नि तन्द्रा आंतोंमें गुड़गुड़ाशब्द सूजन और सुईगडने के समान क्रमसे संपूर्ण शरीरमें पीड़ाकरती है कुपित आमयुक्त वात आमके साथ इकट्ठी संपूर्णशरीरमें विचरती हुई सर्वांगोंको ग्रहण करती है और स्नेहादिकों से मे घोंके आगमन में सूर्य्य के उदयमें तथा रात्रिमें वृद्धिको प्राप्तहोती है ॥ ३२ ॥

वातस्यतस्यैवनिरामस्यलक्षणमाह ॥

निरामोविशदोरूक्षोनिर्गन्धोऽत्यल्पवेदनः।विपरीतगुणैःशांतिःस्निग्धैर्जातिविशेषतः ३३

आमरहित वात के लक्षण ॥

आमरहित वात विशद रूखी गन्धरहित और थोड़ी पीड़ावाली होती है और विपरीत गुणोंसे और विशेषकरके स्निग्ध वस्तुओं से इसकी शान्ति होतीहै ॥ ३३ ॥

अथप्रसङ्गात्सामस्यपित्तस्यलक्षणमाह ।

पित्तंसामंभवेदम्लंदुर्गंधंहरितंगुरु । अम्लिकाकण्ठहृद्दाहकरंश्यावंतथास्थिरम् ॥ अम्लिकाअम्बिलस्तुचुकीतिलोके ॥ ३४ ॥

प्रसंग से आम सहित पित्तके लक्षण ॥

आम सहित पित्त खट्टा दुर्गन्धियुक्त हरा भारी खट्टीडकार लाने वाला कण्ठ तथा हृदयमें दाह करने वाला धूसरवर्ण और स्थिर होता है ॥ ३४ ॥

पित्तस्यतस्यनिरामस्यलक्षणमाह ।

निरामंपित्तमाताम्रमत्युष्णंकटुकंसरम् । दुर्गन्धिरुचिकृद्वह्निबलवर्द्धनमीरितम् ३५ ॥

आमरहित पित्तके लक्षण ॥

आमरहित पित्त ताम्रवर्ण अत्यन्तऊष्ण कटुदस्तावर दुर्गन्धियुक्त रुचिकारक और अग्निके बलका बढ़ाने वाला होताहै ॥ ३५ ॥

अथ सामकफस्यलक्षणमाह ॥

आलस्यतन्द्राहृदयाविशुद्धिर्दोषाप्रवृत्त्याविलमूत्रताभिः । गुरूदरत्वारुचिसुप्ततामिरामान्वितंव्याधिमुदाहरन्ति ॥ आमज्ञयेल्लङ्घनकोष्णपेयालघ्वन्नसूपोदनतिक्तयूषैः । विरूक्षणस्वेदनपाचनैश्चसंशोधनैरुर्द्ध्वमधस्तथैव।तद्धिमारुतततृष्णायांलङ्घनंकार्य्यमेवच । तथामुखशोषभ्रमावपिनिरामावेवविवक्षितौसामयोस्तुतयोर्ल्लङ्घनंकार्य्यमेवगुर्विणीबालवृद्धादिभिरपिनिरामैरेवनैवलङ्घनंकार्य्यंसामैःपुनस्तैरपिलङ्घनंकार्य्यमेत्र।क्षयेधातुक्षयेराजयक्ष्माचवातजेज्वरे ॥ ३६ ॥

आमसहित कफ के लक्षण ॥

आमसहित कफ से आलस्य तन्द्रा हृदय में शुद्धता का न होना दोषों न निकलना गँदला मूत्र होना उदरका भारी होना अरुचि और निद्रा अधिकहोतीहै लंघन कुछ उष्णपेया हलकाअन्न दाल भात तिक्तयूष रूखास्वेद पाचन और ऊपर तथा नीचे का शोधन इनसबसे आम का नाश करना चाहिये मुखका सूखना और श्रम यहजब आमरहित मनुष्य में होयँ तो लंघन न करावे और जो आम सहित होंय तो करावे गर्भिणीस्त्री बालक और वृद्धादिक जो आमरहित होंतो लंघन न करें और आम सहित होयँ तो यह भी लंघन करें ॥३६॥

लङ्घनंनकार्य्यंज्वरीलङ्घनेऽपिजलंपिवेदित्याहसुश्रुतः । तृषितोमोहमायातिमोहात्प्राणान्विमुञ्चति । अतःसर्व्वास्ववस्थासुनक्वचिद्वारिवर्ज्जयेत् । हारीतेनोक्तम् । तृष्णागरीयसीघोरासद्यःप्राणविनाशिनी।तस्माद्देयंतृषार्त्तायपानीयंप्राणधारणम्। अवश्यंपेयमपिजलंज्वरीकिञ्चिद्वारयन्पिवेत् । यतआहसुश्रुतएव । जीविनांजीवनंजीवोजगत्सर्वन्तुतन्मयम् । अतोऽत्यन्तनिषेधेननक्वचिद्वारिवारयेत् ॥ जीवनंजलंकिंचित्तुवारयेदेव । तथाच ज्वरेनेत्रामयेकुष्ठेमन्देऽग्नावुदरेतथा। अरोचकेप्रतिश्यायेप्रसेकेश्वयथौक्षये ॥ व्रणेचमधुमेहेचपानीयंमन्दमाचरेत् । मुखप्रसेकेअल्पंपिवेत् मन्दमाचरेत्पिवेत् ॥ यतआह । अतियोगेनसलिलंतृषितोऽपि प्रयोजितम्प्रयातिश्लेष्मपित्तत्वंज्वरितस्यविशेषतः ॥ ३७॥

ज्वरवाला लंघन में भी जलपिये यह सुश्रुतने कहाहै कि प्यासा जल न मिलनेसे मोह को प्राप्त होताहै और मोह से प्राणों को त्याग करताहै इसलिये किसी अवस्थामें भी जलपान निषेध नहीं है हारीतने कहाहै कि तृषा अत्यन्त भयंकर और शीघ्रही प्राणकी नाश करनेवाली होती है इसलिये प्राणों के धारण करने के निमित्त प्यासे को जल देना चाहिये यद्यपि जलपीना अवश्य है तथापि ज्वर वाला कुछ रुक रुक कर जल पिये क्योंकि सुश्रुत ने हीं कहाहै कि जल जीवों काजीवनहै और संपूर्ण संसार जलमयहै इसलिये जलका अत्यन्त निषेध कहींभी न करना चाहिये अर्थात् कुछनिषेध करना चाहिये और ऐसा कहागयाहै कि ज्वर नेत्ररोग कुष्ठ मंदाग्नि उदर अरुचि जुकाम मुखसेपानी छूटना सूजन क्षय घाव और मधुप्रमेह इनरोगों में बहुत थोडा जलपीना चाहिये तृषा लगनेपर भी बहुत पिया हुआजल कफ और पित्त रूपहोजाताहै और विशेष करके ज्वरवाले को ॥ ३७॥

तच्चजलंनवज्वरीशीतलंनपिवेदित्याहसुश्रुतः । नवज्वरेप्रतिश्यायेपार्श्वशूलेगलग्रहे। सद्यःशुद्धौतथाध्मानेव्याधौवातकफोद्भवे ॥ अरुचिग्रहणीगुल्मश्वासकासेषुविद्रधौ । हिक्कायांस्नेहपानेचशीतंवारिविवर्ज्जयेत् (अन्यच्चसएव) सेव्यमानेनशीतेनज्वरस्तोयेनवर्द्धते। अत्रशीतंजलंअक्कथितंनिषिद्धम् । तथासतिक्कथितमायातम् ॥ ३८ ॥

नवीन ज्वरवाला शीतल जल न पिये यह सुश्रुत ने कहाहै कि नवीन ज्वर जुकाम पसली की पीड़ा गलेका रोग जिसको शीघ्रही वमन बिरेचनादि दिये गयेहों आध्मान (अफरा) बात तथा कफके रोग अरुचि ग्रहणी गुल्म श्वास खांसी विद्रधि हिचकी और स्नेहपान इन संपूर्ण बातों में शीतलजल बर्ज्जित हैं और भी सुश्रुतहीने कहाहै कि शीतल जल पीनेसे ज्वर बढ़ताहै यहां शीतल जल बिन औटाया हुआ निषिद्धहै न कि औटायाहुआ ॥ ३८ ॥

तत्रक्वथितस्यविधिर्गुणश्च ॥

क्वाथ्यमानंतुनिर्वेगंनिष्फेनंनिर्म्मलंचयत्। तत्तोयंक्वथितंज्ञेयंदोषघ्नंपाचनंलघु॥ ३९ ॥

जलके क्वाथकीबिधि और गुण ॥

अग्निमें धीरे२ औटायागया फेना रहित निर्मल जलको क्वाथ किया हुआ जल कहतेहैं यह दोषघ्न पाचक और हलका होताहै ॥ ३९ ॥

निर्वेगंशनैःक्वथितस्यविधानमाहसुश्रुतः ॥

वातश्लेष्मज्वरार्त्तायहितमुष्णाम्बुतृप्यते । दीपनंस्यात्तुकफजेवातपित्तानुलोमनम् ॥ तद्धिमार्दवकृद्दोषःस्रोतसांशीतमन्यथा । वाग्भटश्चतृष्णायांप्राप्तमुष्णाम्बुपिवेद्वातकफ ज्वरे। तत्कफंविलयंनीत्वातृष्णामाशुनिवर्त्तयेत् ॥ उद्दीप्यचाग्निस्रोतांसिमृदूकृत्यविशोध येत्। वातपित्तकफस्वेदशकृण्मूत्राणिसारयेत् ॥ ४० ॥

क्वाथकियेहुए जलकी बिधि सुश्रुतने कहीहै ॥

बात कफ ज्वर और कफ ज्वरमें गरम जल हितकारी दीपन तृप्तिकारी बात पित्तको ठीक करने वाला और दोष तथा श्रोतोंको कोमल करने वाला होता है और शीतल जल इससे विपरीतगुण वालाहै और बाग्भटने कहा है कि बात कफ ज्वर में प्यास लगने से गरम जल पिये उस्से कफका नाश होकर शीघ्रही तृषा निवृत्त होतीहै अग्नि दीप्त होकर श्रोत कोमल होकर शुद्ध होजातेहैं और बात पित्त कफ स्वेद मल तथामूत्र यहसब निकलजातेहैं ॥ ४० ॥

अथोष्णोदकस्यलक्षणंगुणाच ॥

क्वाथ्यमानन्तुनिर्वेगंनिष्फेणंनिर्म्मलंतथा । अर्द्धावशिष्टंयत्तोयंतदुष्णोदकमुच्यते ॥ ज्वरकासकफश्वासपित्तवातामभेदसाम् । नाशनंपाचनञ्चैवपथ्यमुष्णोदकंसदा ॥ ४१ ॥

उष्ण जल के लक्षण और गुण ॥

जो जलमन्द अग्निमें धीरे२गरम करनेसे आधा बाकीरहै और फेनारहित तथा निर्मलहो उसको उष्ण जल कहते हैं यह ज्वर खांसी कफ श्वास पित्त बात आम तथा मेद नाशक पाचक और सदैव पथ्य होता है ॥ ४१ ॥

अथर्त्तुभेदेजलस्यपाकभेदः ॥

त्रिपादशेषंसलिलंग्रीष्मेशरदिशस्यते (अन्येतु) निदाघेत्वर्द्धपादोनंपादहीनंतुशा रदम्। हिमेऽर्द्धशेषंशिशिरेतथावर्षावसन्तयोः॥ शिशिरेचवसंतेचाहिमेचार्द्धावशेषितम् । अष्टमांशावशेषंतुवारिवर्षासुशस्यते ॥ इतिकेचिद्बुधाःप्रावृड्वर्ज्येष्वागमदर्शनात् (के चित्)पक्षयोस्त्रिषुवेदेषुबाणेष्वंगेषुवस्तुषु। एषुभागावशेषंस्यादम्बुवर्षादिषुक्रमात्॥४२॥

ऋतुके भेद से जलके पाककरने का भेद ॥

शरद तथा ग्रीष्म ऋतुमें तिहाई जलाहुआ जल और हेमन्त शिशिर बर्षातथा वसन्त में आधा जलाहुआ जल श्रेष्ठ होता है और कोई कहतेहैं कि गीष्म ऋतुमें अष्टमांश जलाहुआ शरद ऋतु में चौथाइ जलाहुआ शिशिर बसन्त तथा हेमन्त ऋतुमें आधाजला हुआ और बर्षा ऋतुमें अष्ट मांश

बचाहुआ जल श्रेष्ठ होताहै कोई पंडित तो शास्त्रोंको देखकर ऐसा कहतेहैं कि वर्षा ऋतुमें आधाबचाहुआ शरद ऋतुमें तिहाई बचाहुआ हेमन्त ऋतुमें चौथाई बसन्त में पंचमांश ग्रीष्म ऋतुमें षष्ठांश और प्रावृट ऋतुमें सप्तमांश बचाहुआ जल श्रेष्ठ होताहै॥ ४२ ॥

अत्रदोषाणांयथोल्वणताहीनतावातथाऽव्यवस्थाकल्पनीया। तत्पादहीनंपित्तघ्नमर्द्धहीनंतुवातनुत्। त्रिपादहीनंश्लेष्मघ्नंसंग्राहचग्निप्रदीपनम्॥ गुणाश्चत्रिपादहीनस्यतंत्रांतरे। आरोग्याम्बुसंज्ञातस्यलक्षणं। पादशेषंतुयत्तोयमारोग्यांबुतदुच्यते। आरोग्यांबुसदापथ्यंकासश्वासकफापहम्। सद्योज्वरहरंग्राहिदीपनंपाचनंलघु। आनाहपाण्डुशूलार्शोगुल्मशोथोदरापहम् ४३॥

यहां दोषोंकी वृद्धि तथा हीनता के अनुसार व्यवस्था करनी चाहिये चौथाई जलाहुआ जल पित्त नाशक आधाजलाहुआ वात नाशक और चौथाई बचाहुआ जल कफ नाशक ग्राही और दीपन होता है चौथाई बचेहुए जलको तन्त्रान्तर में आरोग्य जल कहाहै इसके लक्षण और गुण कहे जातेहैं औटाने से चौथाई बचाहुआ जल आरोग्य कहाताहै यह सदैव पथ्य शीघ्र ज्वर नाशक ग्राही दीपन पाचक हलका और खांसी श्वास कफ आनाह पांडु शूल बवासीर गुल्म सूजन तथा उदरनाशक होताहै४३॥

अथऋतुभेदेजलस्यग्रहणायदेशभेदः॥

वारिवर्गेबोधव्यं हेमंतेशिशिरेचांबुसारसंवातड़ागजम्। वसंतग्रीष्मयोःकौप्यंवाप्यंवानैर्भ्फरंहितम्॥ नादेयंवारिनादेयंवसन्तग्रीष्मयोर्बुधैः। विषवत्पत्रपुष्पादिदुष्टनिर्भ्फरयोगतः॥ औद्भिदंचान्तरीक्षंवाकौप्यंवाप्रावृषिस्मृतम्। शस्तंशरदिनादेयंनीरसमशूदकंपरम्॥दिवारविकरैरूष्णंनिशिशीतकरांशुभिः ज्ञेयमंशूदकंनामस्निग्धंदोषत्रयापहम्॥ अनभिष्यन्दिनिर्दोषंचान्तरीक्षजलोपमम्।बल्यंरसायनंमेध्यशीतलघुसुधासमम् (अन्यच्च) शरद्यगस्त्यैरुदयादखिलंसलिलंहितम् (वृद्धसुश्रुतः) कार्त्तिकेमार्गशीर्षेचजलमात्रंप्रशस्यते॥ अथर्त्तुपक्रमपिजलंविषयविशेषेशीतलंपिवेदित्याहसुश्रुतः। दाहातीसारपित्तास्रमूर्च्छामद्यविषार्त्तिषु॥मूत्रकृच्छ्रेपाण्डुरोगेतृष्णाच्छर्दिश्रमेषुच। मद्यपानसमुद्भूतेरोगेपित्तोत्थितेतथा॥ सन्निपातसमुत्थेषुशृतशीतंप्रशस्यते॥ ४४॥

ऋतु भेदसे जलके लेनेके लिये देश भेद॥

हेमन्त तथा शिशिर ऋतुमें सरोवर तथा तड़ागका जल बसन्त तथा ग्रीष्मऋतु में कूपका बावड़ीका तथा झरनेका जल ग्रहण करना चाहिये और वसंत तथा ग्रीष्मऋतुमें नदीका जल नहीं ग्रहण करना चाहिये क्योंकि पत्र पुष्पादिकों के द्वारा दूषित झरनोंके योगसे वह विषके तुल्यहोजाताहै वर्षाऋतुमें उद्भिज अन्तरिक्ष तथा कुएँका जल श्रेष्ठहै शरदऋतु में नदीका जल और अंशूदक अत्यन्त श्रेष्ठ है (दिनभर सूर्य्यकी किरणों से तपाहुआ और रात्रिभर चन्द्रमा की किरणोंसे शीतल हुआ जल अंशूदक कहाताहै) यह स्निग्ध दोषनाशक अभिष्यन्द रहित अन्तरिक्ष जलके समाननिर्दोष बलकारक रसायन मेधाको हित शीतल हलका और अमृतके समान गुणकारी होताहै औरभीकहा गयाहै कि शरदऋतुमें अगस्त्यके उदयहोनेसे संपूर्ण जल हितकारी होतेहैं वृद्ध सुश्रुतने कहाहै कि

कार्तिक और अगहनमें संपूर्ण जल श्रेष्ठ होतेहैं ऋतुके अनुसार औटाया हुआ जल अवस्था विशेष में शीतल करके पीना चाहिये ऐसाही सुश्रुतने कहाहै कि दाह अतीसार रक्तपित्त मूर्च्छा मद्य तथा विषसे पीड़ित मूत्रकृच्छ्र पांडुरोग तृषा छर्दि श्रम मद्यपानसे हुए रोग पित्तरोग और त्रिदोष जनित रोग युक्त मनुष्यको औटाया हुआ जल शीतल करके पीना चाहिये ॥ ४४ ॥

अथ क्वथितस्यजलस्यशीतलीकृत विशेषमाहसुश्रुतः ॥

शृताम्बुतत्त्रिदोषघ्नंयदन्तर्वाशीतलम् । अरूक्षमनभिष्यन्दिकृमितृट्ज्वरहल्लघु ॥ धारापातेनविष्टम्भिर्दुर्ज्जरंपवनाहतम् । भिनत्तिश्लेष्मसंघातंमारुतञ्चापकर्षति ॥ अजीर्णंजरयत्याशुपीतमुष्णोदकंनिशि । अन्तर्वाष्यशीतलम्पिहितमेवशीतलम् ॥ ४५ ॥

औटायेहुये जलके शीतल करने में विशेषता ॥

सुश्रुत ने कहाहै कि औटाय करके ढकाहुआ जो जल शीतल होताहै वह त्रिदोष नाशक रूक्षता और अभिष्यन्द रहित और कृमि तृषा तथा ज्वर नाशकहोताहैधार डाल डाल कर जो जल शीतल कियाजाताहै वह विष्टंभी और देरमें पचने वाला होताहै बायुके द्वारा जो जल शीतल कियाजाता है वह मिले हुए कफ का भेदक और बात नाशक होताहै रात्रिमें पियाहुआ उष्ण जल शीघ्रहीअजीर्णको नाश करताहै ॥ ४५ ॥

अत्रापरेऽपिविशेषाः ॥

दिवाशृतंपयोरात्रौगुरुतामधिगच्छति । रात्रौशृतंदिवापीतंगुरुत्वमधिगच्छति ॥ तत्तु पर्य्युषितंवह्निगुणोत्सृष्टंत्रिदोषकृत्गुर्वम्लपाकंविष्टम्भिसर्वरोगेषुनिन्दितम् । शृतंशीतं पुनस्तप्तंतोयंविषसमंभवेत् ॥ निर्यूहोऽपितथाशीतःपुनस्तप्तोविषोपमः ॥ ४६ ॥

इसमें औरभी विशेषताकहीजाती है ॥

रात्रिका औटाया हुआ जल दिन में और दिन का औटाया हुआ जल रात्रि में भारी होजाता है और औटायाहुआ बासी जल अग्नि के गुणों को त्याग करके त्रिदोषकारी भारी पाकमें खट्टा विष्टंभी और संपूर्ण रोगोंमें निन्दित होताहै औटाया हुआ जल और क्वाथ शीतल होनेसे फिर गरम करने पर बिष तुल्य होजाताहै ॥ ४६ ॥

रात्रौतूष्णोदकस्यलक्षणमन्यदाह । अष्टमांशानांशेषेणचतुर्थेनद्धिकेनवा । अथवा क्वथनेनैवसिद्धमुष्णोदकंवदेत् ॥ अथतस्यगुणाः श्लेष्मानिलाममेदोघ्नंदीपनंवस्तिशोधनम् । श्वासकासज्वरहरंपीतमुष्णोदकंनिशि ॥ ४७ ॥

रात्रिमें उष्ण जलका अन्य लक्षण कहाजाताहैं जैसे किअष्टमांश बचाहुआ चौथाई बचाहुआ और आधा बचाहुआ अथवा केवल औटाया हुआ जल उष्णोदक कहाताहै रात्रिमें उष्ण जल पीनेसे कफ बातआमदोषमेद श्वास खांसी तथा ज्वरका नाश अग्निकी दीप्तिऔरमूत्राशयकीशुद्धता होती है ४७॥

रात्रौचउष्णमेवाम्बुतप्तमेवपिवेदित्याह ॥

उष्णंतदग्निजननंलघवच्छंवस्तिशोधनम् । पार्श्वरुक्पीनसाध्मानंहिक्कानिलकफापहम् ॥ शस्तंतट्श्वासशूलेषुसद्यःशुद्धौनवज्वरे ॥ ४८ ॥

रात्रिमें औटाया हुआ जल गरम पीना चाहिये यह कहते हैं ॥

औटाया हुआ गरम जल दीपन हलका निर्मल मूत्राशय का शोधक और पसली की पीड़ा पीनस आध्मान हिचकी वात तथा कफकानाशक और तृषा श्वास शूल शीघ्र हुई वमनादिक शुद्धता और नवीन ज्वरमें हितकरी है ॥ ४८ ॥

विषयविशेषेत्वाममेवजलंशीतलंपिबेदित्याहसुश्रुतः । मूर्च्छापित्तोष्णदाहेषुविषेरक्ते मदात्यये। भ्रमश्रमपरीतेषुतमकेश्वयथौतथा। धूमोद्गारेऽविदग्धेऽन्नेशोषेचमुखकण्ठयोः। ऊर्ध्वगेरक्तपित्तेचशीतलाम्बुप्रशस्यते ॥ शीतलंजलम् आममेवनतुक्वथितमक्वथितन्तु शीतंदाहादिषुयदुक्तं । तत्सज्वरेषुविज्वरेषुनदाहादिष्वामंशीतंप्रशस्यतइतिभेदः ॥४९॥

विशेष अवस्थाओंमें कच्चाही शीतलजल पीनाचाहिये यह सुश्रुतने कहाहै कि मूर्छा पित्त उष्ण दाह विषदोष रक्त दोष मदात्यय भ्रम श्रम तमक श्वास सूजन धुमेली डकार विदग्धअन्न मुखका सूखना कंठका सूखना और ऊर्ध्वगत रक्त पित्तमें शीतल जलश्रेष्ठ है यहाँ कच्चाशीतल जल न कि औटाया शीतल जल और औटाया हुआ शीतलजल जोदाहादिकमें कहागयाहै वह ज्वरवालों के लिये है और ज्वर रहित दाहादिकोंमेंतो कच्चाहीशीतल जल श्रेष्ठहै यही भेदहै ॥ ४९ ॥

आमादिजलानांजठराग्नीनांपाककालावधिमाह ॥

आमंजलंपाकमुपैतियामंपक्वंपुनःशीतलमर्द्धयामम् । पक्वंकटूष्णञ्चततोऽर्द्धकालास्त्र यःसुपीतेतुजलस्यपाके ॥ ५० ॥

कच्चे आदिजलकी उदरमें परिपाक होनेकी अवधि ॥

कच्चाजल एकपहर में औटायाहुआ शीतलजल आधेपहरमें और औटायाहुआ कुछ गरमजल चौथाई पहरमें परिपाकको प्राप्तहोताहै नियमके अनुसार पियेहुए जलके यहतीनकाल परिपाकहोनेकेहैं ५०॥

रोगविशेषेजलसंस्कारमाह ॥

पित्तमद्यविषार्त्तेषुतिक्तकैःश्रृतशीतलम् । जलंहितमितिशेषःतिक्तानिबहुलानितेभ्यो निश्चित्ययोगमाहसुश्रुतः ॥ मुस्तपर्पटकोदीच्यच्छत्राख्योशीरचन्दनैः । शृतंशीतंज लंदद्यात्तृड्दाहज्वरशान्तये (छत्राऽत्रधान्याकः) यतआहनिघण्टौधन्वन्तरिः । कुस्तु म्बुरुःस्वर्णिकाचछत्राधान्यंवितुन्नकम् ॥ इत्यादितद्गुणाश्च धान्यकंदीपनंरुच्यंपाचनं स्वादुपाकिच । दोषत्रयतृषादाहश्वासकासज्वरप्रणुदित्यादि ॥ ५१ ॥

रोगविशेष में जलके संस्कार कहतेहैं ॥

पित्त मद्य तथा विषसे पीड़ित मनुष्य को तिक्त द्रव्यों के द्वारा औटाया हुआ शीतल जल श्रेष्ठहै तिक्त वस्तु बहुतसीहैं उनमें सें सुश्रुत का कहाहुआ योग कहाजाताहै मोथा पित्त पापड़ा सुगन्ध वाला छत्रा खस और चन्दन इनके साथ परिपाक कियेगये और शीतल कियेहुए जलको तृषा दाह तथा ज्वर की शान्तिके लिये दे यहां छत्रा का अर्थ धनियां क्योंकि निघंटु में धन्वन्तरिने कहाहै कि कुस्तुंबुरु स्वर्णिका छत्रा धान्य और वितुन्नक यहधनियेंके नामहैं धनियेंकेगुण धनियां दीपन रुचि-कारी पाचन पाकमें मधुर और त्रिदोष तृषा दाह श्वास खांसी तथा ज्वरनाशक होताहै ॥ ५१ ॥

चक्रदत्तवङ्गसेनवृन्दादयश्छत्रास्थाने नागरंपठन्तितदुक्तंयथामुस्तपर्पटकोशीरचन्द

नोदीच्यनागरैः।नागरम्कटुकमपिनात्रपित्तजनकंमधुरपाकित्वादितितेषामभिप्रायः। नागरंमुस्तकमितिकेचित्क्वचिदेकदेशेनसमुदायोऽवगम्यते। यथाभीमोभीमसेनइतिचन्दनैरित्यत्रसहार्थेतृतीयातेनमुस्तादिभिः षड्भिरामैवक्षुण्णैःसहितंजलम् शृतंजलमेवकेवलंयथर्तुपक्वंपश्चात्तच्छीतलीकृतंदद्यात् ॥ ५२ ॥

चक्रदत्त बंगसेन और वृन्दादिक छत्राके स्थानमें नागर (सोंठ) कहते हैं क्योंकि सोंठ कटुभी पाकमें मधुर होनेसे पित्तकारक नहीं होती यह उनका अभिप्रायहै कोई२ कहतेहैं कि नागर शब्दसे नागरमोथे का ग्रहण होताहै क्योंकि कहीं एकदेश कहनेसे समुदाय भरका ग्रहण होता है जैसे भीम कहनेसे भीमसेन का बोध होताहै यहां चन्दन शब्दमें तृतीया विभक्ति सहार्थ में हैं इस्से मोथा आदिक छः वस्तुओं को कच्ची कूटकर ऋतुओं के अनुसार पारेपाक किये हुए जलमें मिलायके शीतल करे और पिये ॥ ५२ ॥ तथाचवङ्गसेनः ॥

यदप्सुशृतशीतासुषडङ्गादिप्रयुज्यते । कर्षमात्रंततोद्रव्यंग्राहयेत्प्रास्थिकेऽम्भसि ॥ अस्यायमर्थः यद्धेतोरप्सुजलेशृतशीतासुशृतासुकेवलास्वेवयथर्त्तुपक्वासुशीतासुशीतलीकृतासुषडङ्गादिद्रव्यं प्रयुज्यते आममेवसंक्षुद्यजलेस्थाप्यते ततःप्रक्षेप्यत्वात्कर्षमात्रं द्रव्यंसमुचितंषडङ्गादिप्रास्थिकेऽम्भसि। प्रस्थमात्रेक्वथितशीतलेजलेक्षेप्तुंग्राहयेत् अतएवषडङ्गमभिधायषडङ्गपानीयमितिवङ्गसेनादिभिरुक्तम् अस्मिन्पक्षेचन्दनंश्वेतमेवग्राह्यंनतुरक्तंतत्कषायलेपयोरवश्ययोक्तुम्यत आह । कषायलेपयोःप्रायोयुज्यतेरक्तचन्दनमिति ॥ षडङ्गपानीयमिदं ॥ ५३ ॥

ऐसाही बंगसेनने कहाहै ॥

जिसकारण से ऋतुके अनुसार औटाये हुए जलको शीतल करके षड़ंगादि बस्तु कच्ची कूटकर छोडीजाती हैं इसलिये चौंसठ तोले जलमें एक तोले औषध छोड़नी चाहिये इसीसे षड़ंग कहकर षड़ंग जल बंगसेनादि में कहाहै यहां चन्दन कहनेसे श्वेतचन्दन लेनाचाहिये लाल न लेना चाहिये क्योंकि लालचन्दन कषाय और लेपमें डालाजाताहै इसीलिये कहा गयाहै कि प्रायः कषाय और लेपमें लालचन्दन छोड़नाचाहिये यह षड़ंग जलकहलाताहै ॥ ५३ ॥

षडङ्गादेःपानेऽनुविधातव्येप्रक्रियाविहितामहाबंगसेनेन ॥

कर्षमात्रंतथाद्रव्यंग्राहयेत्प्रास्थिकेऽम्भसि । अर्द्धशृतंप्रयोक्तव्यंपानेपेयादिसंविधौ ॥ आदिशब्देनयूषयवागूविलेपीभक्तानिगृह्यन्तेपानप्रक्रियांशार्ङ्गधरोऽप्येतामेवाह। क्षुण्णंद्रव्यंपलंसाध्यंचतुःषष्टिपलेजले। अर्द्धशिष्टंतुतद्देयंपानेपेयादिसंविधौ ॥ पानप्रयोगञ्चषडंगमुक्तवान् । अस्मिन्पक्षेचन्दनंरक्तंग्राह्यम् । कषायलेपयोःप्रायोयुज्यतेरक्तचन्दनम् । इतिवचनात् ॥ ५४ ॥

षड़ंगादिके पीनेकी बिधि यह आगे कहीहुई प्रक्रिया महाबंगसेनने कहीहै ॥

चौंसठ तोले जलमें एक तोले औषध डालकर औटावे जब आधा रहजाय तबपीनेके लिये और पेया यूषयवागू बिलेपी तथा भातमें काममें लावे शार्ङ्गधरने भी यही पान करनेकी प्रक्रिया कहीहै

कि चौंसठ पल जलमें एक पल कुटीहुई औषध छोड़कर औटानेसे जब आधा रहजाय तब पीने के लिये और पेयादिकों में प्रयोगकरै और पानका प्रयोग षड़ंग कहाहै यहां चन्दन कहने से लालचन्दन ग्रहणकरनाचाहिये क्योंकि ऐसा कहागयाहै कि कषाय और लेपमें लालचन्दन प्रायःछोड़ाजाताहै ५४ ॥

तथारक्तचन्दनस्यगुणः ॥

रक्तंहिमंस्वादुपाकंछर्दितृष्णास्रपित्तजित्।तिक्तंनेत्रहितंवृष्यंज्वरव्रणविषापहम्॥५५॥

लाल चन्दन के गुण ॥

लाल चन्दन शीतल पाकमें मधुर तिक्त नेत्रोंको हित वीर्यवर्द्धक और छर्दि तृषा रक्तपित्त ज्वर घाव तथा विषनाशक होताहै॥ ५५ ॥

षड़ंगादिप्रयुज्यतइत्यादिशब्देनवक्ष्यमाणादयोयोगाउच्यंतेयथा । श्रीपर्णीचंदनो शीरसमधूकपरूषकं । श्रीपर्णीपरूषकयोःफलंग्राह्यंमधुकस्यतुपुष्पकम् । पानंपित्तज्वरं हन्यात्शारिवाद्यंसशर्करम् । अन्यच्च । हन्यात्सयष्टिमधुकंतथैवोत्पलपूर्वकम् । पानेशृ तंकिंवासोत्पलंशर्करायुतम् । हन्यात्पित्तज्वरमितिशेषःउत्पलमत्रकमलमित्यादि ५६॥

षड़ंग आदिका प्रयोग करना चाहिये यहाँ आदिशब्दसे आगे कहेजाने वाले योग लक्षित होतेहैं जैसे बेर लालचन्दन खस महुएके फूल और फालसा इनसबका पूर्वोक्त रीतिसे बनाहुआ जलपित्त ज्वरको नष्ट करता है और शारिवादि गणके द्वारा बनाहुआ जल शक्कर सहित पित्तज्वरको नाश करता है और भी कहागयाहै कि कमलकाफूल और मुलहठी इनका पूर्वोक्त रीतिसे बनाहुआ जल अथवा कमल डालकर औटाया हुआ जल शक्कर सहित पीनेसे पित्तज्वरको नाश करताहै ॥ ५६ ॥

दिवास्वापंनकुर्वीतयतोऽसौस्यात्कफावहः । ग्रीष्मवर्ज्जेषुकालेषुदिवास्वापोनिषिध्य ते ॥ उचितोहिदिवास्वापो नित्यंयेषांशरीरिणाम् । वातादयःप्रकुप्यंति तेषामस्वपतां दिवा ॥ ५७ ॥

दिनको न सोवे क्योंकि इस्से कफ बढ़ताहै परन्तु ग्रीषम ऋतुको छोड़कर अन्य ऋतुओंमेंदिन का सोना निषेधहै जिन मनुष्योंको दिनका सोना नित्य उचितहै उनके दिनमें न सोनेसे वातादिकों का कोप होता है ॥ ५७॥ येषांदिवास्वप्नमुचितंतानाह ॥

व्यायामप्रमदाध्ववाहनरतक्लान्तानतीसारिणः शूलश्वासवमीतृषापरिगतांहिक्काम रुत्पीड़ितान् । क्षीणांक्षीणकफान्शिशून्मदहतान्वृद्धान्तथाजीर्णिनो रात्रौजागरिता न्नरान्निरसनान्कामंदिवास्वापयेत् ॥ ५८ ॥

जिनको दिनमें सोना उचितहै उनको कहतेहैं ॥

व्यायाम स्त्रीप्रसंग मार्गगमन सवारीपर चढ़नेकी थकावट ग्लानि अतीसार शूल श्वास छर्दि तृषा हिचकी वात अजीर्ण क्षीणता कफकी क्षीणता तथा रात्रिमें जागरण इनसे युक्त बालक मदसे व्याकुल वृद्ध और उपवास करने वाले इनमनुष्योंको दिनमें यथेष्ट सोना चाहिये ॥ ५८ ॥

अथवातिकज्वराणांपाकावधिमाह ॥

वातिकःसप्तरात्रेणदशरात्रेणपैत्तिकः । श्लैष्मिकोद्वादशाहेनज्वरःपाकमुपैतिहि ॥ रसस्यामत्वेऽवधिमतिक्रम्यापिज्वरस्तिष्ठति । यतआहसुश्रुतः । बहुदोषस्यमन्दाग्नेः

सप्तरात्रात्परंज्वरे । लङ्घनाम्बुयवागूभिर्य्यदादोषोनपच्यते ॥ तदातन्मुखवैरस्यतृष्णारोचकनाशनैः । कषायपाचनैर्हृद्यैर्ज्वरघ्नैःसमुपाचरेदिति ॥ ५९ ॥

वातजआदि ज्वरोंके परिपाककीअवधि ॥

वातज्वर सातरात्रि में पित्तज्वर दशरात्रि में और कफज्वर बारहरात्रिमें परिपाकको प्राप्तहोता है इसके आम होनेपर अवधिसे अधिक भी ज्वर रहताहै क्योंकि सुश्रुतने कहाहै कि बहुत दोष युक्त और मन्दाग्निवाले मनुष्यका लंघन षडंगजल और यवागूके सेवनसे दोष जो परिपाक को न प्राप्त होयं तो मुखकी विरसता तृषा तथा अरुचि नाशक हृदय को हित पाचन और ज्वरघ्न क्वाथों के द्वारा उसकी चिकित्सा करे ॥ ५९ ॥ ज्वरस्यतारुण्यंमध्यावस्थाजीर्णतावधि ॥

आसप्तरात्रात्तरुणंज्वरमाहुर्मनीषिणः । द्वादशाहमभिव्याप्यमध्यंजीर्णंततःपरम् ॥ आसप्तरात्रादितिअत्ररात्रिपदादयंरात्रिशब्दोदिवसस्योपलक्षकः । तेनसप्तमदिवसादर्वाग्ज्वरस्तरुणइत्यर्थः । (तथाचोक्तंतन्त्रान्तरे) ज्वरेऽव्यतीतेषड्हेजीर्णइत्युच्यतेबुधैरिति । द्वादशाहात्परंजीर्णमाहुरन्येमनीषिणः ॥ (अतएवजातूकर्णः) जीर्णस्त्रयोदशेदिवसइति ६० ॥ ज्वरकी तरुणता मध्यावस्था और जीर्णावस्था की अवधि ॥

पण्डित लोग ज्वरको आरंभसे सातरात्रि पर्य्यन्त तरुण बारह रात्रितक मध्य और इसके उपरांत जीर्ण कहते हैं यहाँ रात्रिशब्द दिनका जनाने वालाहै इससे सात दिन पर्य्यन्त ज्वर तरुण रहताहै इत्यादि जानना चाहिये और तन्त्रान्तर में कहा गयाहै कि छःदिनके उपरान्त ज्वर जीर्ण होजाता है यह कोई२ पण्डित कहते हैं और कोई २ कहते हैं कि बारह दिनके उपरान्त ज्वरजीर्ण कहलाता है इसी से जातू कर्ण ने कहाहै कि तेरहवें दिन ज्वर जीर्ण होजाताहै ॥ ६० ॥

अथज्वरेयुंजीतभेषजम् ॥

वातिकेसप्तरात्रेतुदशरात्रेणपैत्तिके । श्लैष्मिकेद्वादशाहेनज्वरेयुंजीतभेषजम् ॥ सप्तरात्रात्परंरात्रिशब्दोदिवसस्योपलक्षकःअतएवोक्तम् । पाययेदातुरंसाऽममौषधंसप्तमेदिने । शमनेनाथवादृष्ट्वानिराममन्तमुपाचरेदिति ॥ शार्ङ्गधरेणोक्तम् । गुडूचीपिप्पलीमूलनागरैःपाचनंश्रुतम् । वातज्वरेतथापेयंकालिंगसप्तमेऽह्ननीति ॥ हारितेनोक्तम् । एतांक्रियांप्रयुंजीतषड्रात्रंसप्तमेऽहनि । पिबेत्कषायसंयोगात्पेयांज्वरविनाशिनीम् ॥ एतांक्रियांलङ्घनादिरूपांकषायसंयोगात्कषायेणसाधितांपेयामित्यर्थः (खरनादेनाप्युक्तम्) इतिषड्रात्रिकःप्रोक्तोनवज्वरहरोविधिः । ततःपरंपाचनीयंशमनीयंज्वरेहितम् ॥ ततोज्वरमध्येकरणीयमित्यर्थः॥६१॥ ज्वरमें औषध देनेका समय ॥

वातज्वर में सातवें दिन पित्तज्वर में दशवें दिन और कफज्वरमें बारहवें दिन औषध देनी चाहिये आमयुक्त रोगीको सातवें दिन औषध पिलावे अथवा आम रहित देखकर शमन औषधियों के द्वारा चिकित्सा करे शार्ङ्गधरने कहाहै कि वात ज्वरमें गिलोय पीपलामूल और सोंठ इनसे पाचन औषध बनाके अथवा इन्द्रजौंका काढ़ा सातवें दिन पिलावे हारीतने कहाहै कि यह लंघनादिरूप चिकित्सा छः दिनतक करनी चाहिये और सातवें दिन क्वाथके द्वारा बनीहुई ज्वरनाशक पेया पान

करे खरनादने भी कहाहै कि नवीन ज्वरनाशक यह विधि छःदिनकेलिये कहीगईहै फिर ज्वरकेमध्य में पाचक और शमन औषध करनीचाहिये ॥ ६१ ॥

वाग्भटश्च । सप्ताहाद्दोषधंकेचिदाहुरन्येदशाहतः । लङ्घनेभोजितेकेचिद्देयमामोल्व णेनतु ॥ सप्ताहात्सप्ताहमारभ्येत्यर्थःअत्रल्यब्लोपेकर्मणिपञ्चमीअतएवसुश्रुतः । दश रात्रात्परंसर्वैर्दातव्यमितिनिश्चितमितिअतएवदशरात्रेद्वादशाहेवेतिलङ्घनवताव्यतीते नइत्यर्थः(अत्रचरकस्त्वेवमाह) ज्वरितंषडहेऽतीतेलघ्वन्नप्रतिभोजितम् । पाचनंपाययेद्वैद्योनिरामंसप्तमेऽहनि ॥ सप्तमेऽहनिलघ्वन्नन्दत्त्वा।अष्टमेदिनेकषायंपाययेदित्यर्थः ६२

बाग्भटने कहाहै कि किसीके मतमें सातवें दिनसे किसीके मतमें दशवें दिनसे और किसीकेमत में लंघनके उपरान्त कुछ हलका अन्न भोजन करायके औषध देनीचाहिये परन्तु जो आमका दोष अधिक वर्त्तमानहो तो औषध नदेवे इसीसे सुश्रुतने कहाहै कि दश रात्रिके उपरान्त औषध देनी चाहिये यह सबका निश्चयहै यहां चरक ने तो ऐसा कहाहै कि ज्वरवाले को छः दिनके व्यतीत होजाने पर सातवें दिन आमसे रहित होजाने पर हलका अन्न भोजन करायके आठवें दिन क्वाथ पिलावे ॥ ६२ ॥

तथाचसुश्रुतः । सप्तरात्रात्परंकेचिन्मन्यंतेदेयमौषधमिति । सप्तरात्रात्परम् अष्टमेऽहनीत्यर्थः । केचिच्चरकादयः । चक्रदत्तेऽपि । सप्तरात्रेणपच्यन्तेसप्तधातुगतामलाः । निरामस्तुततःप्रोक्तोज्वरप्रायोऽष्टमेदिने ॥ एवंसतिकषायदानेसप्तमाष्टमयोर्दिवसयोर्विकल्पः । तत्रापिवयोबलाग्निर्दोषःदेशकालोचितंकुर्यात् ६३ ॥

ऐसाही सुश्रुतने भी कहाहै कि सात दिनके उपरान्त आठवें दिन कोई २ चरकादिक औषधदेना कहतेहैं चक्रदत्तने भी कहाहै कि सातों धातुओंके दोष सात दिनमें परिपाक होजातेहैं इस लिये प्रायः आठवें दिन ज्वर आमरहित होजाताहै इस प्रकारसे सातवें और आठवें दिनमें क्वाथ देनेका विकल्प अर्थात् मतभेद पायागयाहै ऐसा होनेपरभी अवस्था बलअग्नि दोष देश और कालके अनुसार चिकित्सा करनीचाहिये ॥ ६३ ॥

भेषजमन्नञ्चदोषपाकंदृष्ट्वादद्यादित्याहसुश्रुतः। पातिकेचज्वरेदेयमल्पकालसमुत्थित । अचिरेज्वरितस्यापिभैषज्यंदोषपाकतइति ॥ अस्यायमर्थः । अल्पकालसमुत्थितेपैत्तिकेज्वरेदोषपाकंदृष्ट्वाभैषज्यं देयंनतुतत्रदशरात्रापेक्षातथाअचिरज्वरितस्यापिपैत्तिकेतरनवज्वरयुक्तस्यापिदोषपाकंदृष्ट्वाभैषज्यंदेयमित्यर्थः ६४ ॥

औषधि और भोजन दोषोंके परिपाकको देखकर देनेचाहिये यह सुश्रुतने कहाहै थोड़े समय से होनेवाले पित्तज्वरमें औषध देनीचाहिये यहां दश दिन व्यतीत होनेकी प्रतीक्षा न करे और दोषके परिपाकको देखकर पित्तज्वरके सिवाय अन्य नवीनज्वरोंमें भी औषधदेनीचाहिये ॥ ६४ ॥

दोषपाकलक्षणमाहसुश्रुतः ॥

मृदौज्वरेलघौदेहेप्रचलेषुमलेषुच । पक्कंदोषंविजानीयाज्ज्वरेदेयंतदौषधमिति ॥ ज्वरेमृदौस्वल्पाभूते । मलेषुवातपित्तकफमूत्रपुरीषेषुप्रचलेषुस्वमार्गसञ्चारिषु । पक्कंनिरा

मं दोषप्रकृतिवैकृत्यादेतेषांपक्वलक्षणम् । दोषाणांदुष्टवातपित्तकफानांप्रकृतिः ज्वरस्य तदुपद्रवाणांचोत्पादनम् । तस्याःवैकृत्यंवैपरीत्यंतस्माद्दोषपाकज्ञानंकेषांमते । क्षुत्क्षामत्वंलघुत्वञ्चगात्राणांज्वरमार्दवम् । दोषप्रकृतिरुत्साहोनिरामज्वरलक्षणम् ॥ दोषःप्रकृतिःदोषाणांस्वमार्गसंचारः ६५ ॥

सुश्रुतका कहाहुआ दोषोंके परिपाकका लक्षण ॥

ज्वरकी स्वल्पता शरीरका हलकापन और वातपित्त कफ मल तथा मूत्र इनको अपने २ मार्गसे चलनेपर दोषोंका परिपाक हुआ जानकर ज्वरवालेको औषध देनी चाहिये और दोषयुक्त वात पित्त और कफकी ज्वर और ज्वरके उपद्रवोंका उत्पन्न करना यह प्रकृतिहै उसका विपरीत होनाभी दोषों के परिपाक होनेका लक्षणहै किसी२ का यह मतहै कि क्षुधासे क्षीणहोना शरीरका हलकापन ज्वर की कमी होनी दोषोंका अपने मार्गसे चलना और उत्साह यह आमरहित ज्वरकेलक्षणहैं ॥ ६५ ॥

ज्ञेयापञ्चविधःकालोभैषज्यग्रहणेनृणाम् । तत्रानुक्तेप्रभातंस्यात्कषायेषुविशेषतः ६६॥

मनुष्यों के औषध सेवन करने के पांच समय हैं उनमें से जहाँ कोई समय न कहाहो वहाँ प्रातः काल देना चाहिये और क्वाथतो विशेषकर के प्रातःकालही पीनाचाहिये ॥ ६६ ॥

मुख्यभैषज्यसम्बन्धोनिषिद्धस्तरुणज्वरे । तोयपेयादिसंस्कारेत्वदोषंतत्रभेषजम् ॥ मुख्यभेषजंक्वाथःतस्यसम्बन्धःपानम् । यतआह । नकषायंप्रशंसंतिनराणांतरुणेज्वरे । कषायेनाकुलीभूतादोषाजेतुंसुदुस्तराः ॥ आकुलीभूताःप्रवृद्धाःस्वमार्गंपरित्यज्यइतस्ततोगताः । अत्रकषायशब्देनक्वाथोगृह्यते ६७ ॥

नवीन ज्वर में क्वाथ पीना निषिद्धहै परन्तु जल अथवा पेय आदिकोंके संस्कार के लिये जोऔषध दीजाती है वह निर्दोष है क्योंकि कहागया है कि मनुष्यों को तरुण ज्वरमें कषाय हितकारी नहीं है क्यों कि कषाय के द्वारा बढ़ेहुए वातादिकदोष अपने २ मार्ग को छोड़कर इधर उधर गयेहुए फिर शान्तकरने के लिये अत्यन्त दुस्तर होजातेहैं यहाँ कषाय शब्दका अर्थ क्वाथलेनाचाहिये ६७ ॥

उक्ताश्चक्वाथस्यपर्य्यायाः ॥

शृतंक्वाथकषायञ्चनिर्यूहःसनिगद्यतइति । तोयपेयादिसंस्कारेनिर्दोषंतत्रभेषजमिति । तत्रतरुणज्वरेभेषजंमुख्यभेषजंक्वाथरूपंनतुकल्पनमुद्दिश्यकषायः प्रतिषिध्यतइतिकल्पनंतोयपेययवाग्वादिकम् ६८ ॥

क्वाथ के नाम ॥

श्रितक्वाथ कषाय और निर्यूह यह क्वाथके नामहैं यहाँ तरुणज्वर में क्वाथ पीना निषिद्ध है परन्तु पेया आदिके बनाने में क्वाथका निषेध नहीं है ॥ ६८ ॥

नतुस्वरसश्चतथाकल्कःक्वाथश्चहिमफाण्टकौ । ज्ञेयाकषायाःपञ्चैतेलाघवःस्युर्यथोत्तरम् ॥ इतिवचनात्स्वरसादयोऽपिकथन्ननिषिध्यतेतत्राह । तन्नयस्तुकषायःस्यात्सवर्ज्यास्तरुणज्वरेइति । चतुर्थभागावशेषकरणेनाष्टमभागशेषकरणेच । कषावर्णःकषायरसश्चस्यात् । सकषायःक्वाथःसतरुणज्वरेनिषिद्धः ६९ ॥

अब यह सन्देह होता है कि स्वरस कल्क क्वाथ हिम और फांट यह पांच प्रकारके कषाय एक से

एक क्रमसे हलके होते हैं इसबचन के अनुसार स्वरस आदिक पांचों कषायों का निषेध क्यों नहीं किया जाताहै इसकाउत्तर यहहै कि तरुण ज्वरमें पांचों कषायोंका निषेधनहीं है चतुर्थांश बचाहुआ अथवा अष्टमांश बचाहुआ जो कषायवर्ण क्काथ नाम कषाय बनताहै वहीतरुणज्वरमें निषिद्धहै ६९ ॥

क्काथस्यलक्षणमाह ॥

पादशिष्टकषायःस्यात् । अतःषडङ्गादिस्तरुणज्वरेननिषिद्धः । पाकादूर्ध्वपाकेचोक्त लक्षणभावेनकषायत्वाभावात् ॥ ७० ॥

क्काथ के लक्षण ॥

सोलह गुने पानी में औषध छोड़कर औटानेसे चौथाई बचनेपर कषाय कहलाताहै इसीसे नवीन ज्वरमें षडंग आदिक जल निषिद्ध नहीं हैं क्योंकि उनमें परि पाक नहोने से अथवा अर्द्धान्श वचने से ऊपर कहेहुए लक्षण के न मिलने के कारण कषाय पना नहीं है ॥ ७० ॥

अथ तरुणज्वरेकषायदोषमाह ॥

दोषाद्बद्धाःकषायेणस्तम्भितास्तरुणज्वरे । स्तभ्यन्तेनविपच्यंतेकुर्व्वंतिविषमज्वरम् ॥ कषायेणस्तम्भिताप्रवृत्तयेनिवारिताः । यतआह । कषायरसगुणान् । कषायःकषायस्तम्भनःशीतोरूक्षःपित्तःकफापहःइत्यादि । स्तभ्यन्ते । आध्मानंकुर्वन्तिनविपच्यंते । सुखेननविपच्यंते । दुःखंदत्वाविलम्वेनविपच्यंतेइतियावत् ॥ ७१ ॥

नवीन ज्वर में कषाय का दोष ॥

नवीन ज्वरमें कषाय देने से दोष बढ़कर अपने २ मार्ग से निवृत्तहोजाते हैं आध्मान को उत्पन्न करते हैं अत्यन्त कष्ट पूर्वक बहुत देर में परिपाकको प्राप्त होते और विषम ज्वर को उत्पन्न करते हैं क्यों कि कषाय के गुण यह कहेगये हैं कि कषाय स्तंभन शीतल रूखा और कफ पित्त नाशक होता है ॥ ७१ ॥

(अन्यच्च) नतरुणेनपच्यन्तेकषायैःस्तम्भितामला । तिर्य्यग्विमार्गगावातेघोरंकुर्य्युःनवज्वरम् ॥ ७२ ॥

और भी कहागया है कि नवीन ज्वर में कषाय देने से दोष जकड़ कर न निकलते हैं और न परिपाकको प्राप्तहोतेहैं अथवा दोष तिरछेहोकर मार्गसे रहितहो के अत्यन्त घोर नवीन ज्वर को उत्पन्न करतेहैं ॥ ७२ ॥

अनवस्थितदोषाणांवमनंतरुणेज्वरे । हृद्रोगंश्वासमानाहंमोहंचकुरुतेभृशम् ॥ अयमर्थः। कफादिदोदोषोपस्थितौस्वयमेवचेद्भवतिवमनंनतद्दोषाय।अनवस्थितदोषाणांतरुणज्वरेवमनंयत्नकृतंहृद्रोगादीन्करोतीत्यर्थः ॥ एतेनवचनेनतरुणज्वरेयत्नाद्वमनंनिषिद्धम् । अवस्थाविशेषेतदपिकर्तव्यमित्याह । सद्योभुक्तस्यवाजातेज्वरेसंतर्पणोत्थिते । वमनंवमनार्हस्यशस्तमित्याहवाग्भटः ॥ वमनंचेतिविकल्पोलंघनापेक्षया । वमनार्हस्येत्यनेनगर्भिण्यतिकृशातिवृद्धादिनिषेधः ॥ ७३ ॥

दोषोंके बिना उपस्थित हुए नवीनज्वरमें वमन करानेसे हृदयके रोग श्वास अफरा और मोह उत्पन्न होतेहैं इसका यह आशयहै कि कफादि दोषोंके उपस्थित होनेपर जो स्वयं वमन होजाय

तो कोई दोष नहीं है परन्तु दोषों के उपस्थित हुएबिना नवीन ज्वर में यत्नपूर्वक बमन कराने से हृदयके रोगादिक उत्पन्न होतेहैं इस बचनके द्वारा नवीनज्वरमें यत्न पूर्वक बमन कराना निषिद्ध है यहसिद्धहुआ परन्तु अवस्था विशेषमें बमन करानाभी चाहिये क्योंकि वाग्भटने कहाहै कि भोजन करनेके उपरान्त जो शीघ्रही ज्वर आजाय अथवा संतर्पण क्रियासे ज्वरआवे तो बमन योग्य (गर्भिणी कृश और वृद्ध आदिक बमनके अयोग्य हैं)मनुष्योंको बमन करावे ॥ ७३ ॥

अत्रवृद्धवाग्भटः। वमितंलंघयेत्प्राज्ञोलंघितंनतुवामयेत् । वमनंक्लेशबाहुल्याद्धन्यालंघनकर्षितम् ॥ नकार्य्यंगुर्विणीबालवृद्धदुर्बलभीरुभिः । अनशनमितिशेषः अनेनानशनवचनेनगुर्विण्यादीनामनशननिषेधः । ज्वरेसामेपाचनंनिरामेशमनपथ्यान्नमण्डादिकञ्चदद्यात् । पाचनलक्षणंपश्चात्गुणप्रस्तावेबोधव्यम् ॥ ७४ ॥

यहांपर वृद्ध वाग्भटने कहा है कि बमन कियेहुये को लंघन करावे परन्तु लंघन कियेहुएको बमन न करावे क्योंकि लंघनकेद्वारा क्षीणमनुष्य को बमन कराने से बहुत क्लेशके कारण उसका नाशभी होसकाहै गर्भवती बालक वृद्ध भयभीत और दुर्बलको लंघन न करावे इस बचनसे गर्भिणीआदिकोंको लंघनका निषेध कियागया इसलियेइनको आमसहित ज्वर में पाचन और आमरहित ज्वर में शमन औषध और पथ्य अन्न मण्डादिक देने चाहिये पाचन और शमन के लक्षण पीछे गुणों के बर्णन में कहेगये हैं ॥ ७४ ॥

पाययेदातुरंसामंपाचनंसप्तमेदिने । शमनेनाथवादृष्ट्वानिरामंतमुपाचरेत् ॥ (अन्यच्च) कृशंचैवाल्पदोषञ्चशमनीयैरुपाचरेत् ॥ ७५ ॥

आम सहित ज्वरवाले को सातवें दिन पाचन औषध पिलावे और आमके परिपाक को देखकर शमन औषध के द्वारा चिकित्सा करे औरभी कहागयाहै कि कृश तथा अल्पदोषवाले की चिकित्सा शमन औषध से करना चाहिये ॥ ७५ ॥

(ननु) लालाप्रसेकौहृल्लासोहृदयाशुद्ध्यरोचकौ ॥ तन्द्रालस्याविपाकास्यवैरस्यं गुरुगात्रता । क्षुन्नाशोबहुमूत्रत्वंस्तब्धताबलवान्ज्वरः ॥ आमज्वरस्यलिंगानिनदद्यात्तत्रभेषजम् । भेषजंह्यामदोषस्यभूयोजनयतिज्वरम् ॥ भूयोबाहुल्येन ॥ ७६ ॥

अबयह सन्देह होताहै कि लारकाबहना मतली हृदयका शुद्ध न होना अरुचि तन्द्रा आलस्य परिपाकका नहोना मुखकी बिरसता शरीर का भारीपन क्षुधाकानाश मूत्रकी अधिकता शरीर का जकड़ना और बहुत ज्वर यह आमज्वर के लक्षण हैं इसमें औषध न देनीचाहिये क्योंकि आमदोषवाले को औषध देने से ज्वर बहुत बढ़जाता है ॥ ७६ ॥

(अन्यच्च) पाययेद्दोषहरणंमोहादामज्वरेतुयः । सप्तमंकृष्णसर्पन्तुकराग्रेणपरामृशेत् ॥ इतिवचनादामज्वरेभेषजनिषेधात्कथंसामेज्वरेवापाचनंदेयम् । उच्यते । निरुपद्रवेसामज्वरेपाचनंदेयम् । सोपद्रवेतुसामेभेषजंनिषिद्धम् । तथाचवाग्भटः ॥ सप्ताहात्परतोऽदुष्टेसामेस्यात्पाचनंज्वरे । निरामेशमनंस्तब्धेसामेनौषधमाचरेत् ॥ अदुष्टेनिरुपद्रवे स्तब्धेसोपद्रवे ॥ ७७ ॥

औरभी कहागयाहै कि जो वैद्य अज्ञानता से आमज्वरमें दोषनाशक औषध पिलाताहै वह सोयेहुए

कालेसर्पको हाथसे पकड़ताहै इनवचनोंकेद्वारा आमसहित ज्वरमें औषध का निषेधहोनेसे आमज्वर में पाचन औषध किस प्रकार देनी चाहिये इसका उत्तरयहहै कि उपद्रव रहित आम ज्वर में पाचन औषध देनी चाहिये और उपद्रवसहित आमज्वर में तो औषधका निषेध है ऐसाही वाग्भटनेभी कहा है कि सातदिन के उपरान्त दोष रहित आम ज्वर में पाचन देना चाहिये आमरहित ज्वर में शमन देनाचाहिये और उपद्रव सहित आम ज्वरमें औषध देना निषिद्ध है ॥ ७७ ॥

अथ सामान्यज्वरेपाचन कषायमाहसुश्रुतः ॥

नागरंदेवकाष्ठञ्चध्यामकंवृहतीद्वयम् । दद्यात्पाचनकंपूर्वंज्वरितेभ्योज्वरापहम् ॥ ध्यामकंरोहिषंतदलाभादुशीरंदद्यात् । वृहतीद्वयवृहत्फलासूक्ष्मफलावृहतीक्षुद्रावृहतीचेति कण्टकारीद्वयंवादद्यात् ॥ कण्टकारीद्वयंशुण्ठीध्यामकंसुरदारुचेतिशार्ङ्गधरेणोक्तत्वात् नागरादिःक्वाथःसर्व्वज्वरेषु ॥ ७८ ॥

सुश्रुतका कहाहुआ सामान्य ज्वर में पाचन कषाय ॥

सोंठ देवदारु रोहिष (सुगन्धिततृण) और दोनों भटकटैया इनका क्वाथ करके ज्वर वालों को ज्वरके नाशके लिये देवे और जो रोहिष न मिलै तो खसडाले यह सम्पूर्ण ज्वरोंपर नागरादि नाम क्वाथ है ॥ ७८ ॥

सामान्यतःसंशमनीयान्याह सुश्रुतः ॥

अथसंशमनीयाणिकषायाणिनिबोधमे । सर्वज्वरेषुदेयानियानिवैद्येनजानता ॥ वृश्चीवोबिल्ववर्षाभूःपयःसोदकमेवच । पचेत्क्षीरावशेषन्तत्पेयंसर्वज्वरापहम् ॥ वृश्चीवःश्वेतपुनर्नवावर्षाभूःरक्तपुनर्नवा । तथाचमदनपालः । पुनर्नवःश्वेतमूलोवृश्चीवोदीर्घपत्रकः । पुनर्नवाऽपरारक्तावर्षाभूरक्तपुष्पकः ॥ ७९ ॥

सुश्रुत के कहेहुए सामान्य शमन कषाय ॥

अब शमन कारक कषाय मैं कहताहूं जिनको कि ज्ञानवान् वैद्य सम्पूर्ण ज्वरों में देसक्ता है वृश्चीरवेल बर्षाभू दूध और जल यह सबपाक करके जब केवल दूधबाकी रहजाय तब सम्पूर्ण ज्वरों के शान्त करने के लिये वृश्चीर अर्थात् श्वेत गदहा पूरना वर्षाभू अर्थात् लाल गदहा पूरना ऐसाही मदनपालने कहा है कि श्वेत जड़वाली लम्बेपत्तेवाली को वृश्चीर और लाल पुष्पवाली लाल गदहा पूरना को वर्षाभू कहते हैं ॥ ७९ ॥

पाकप्रकारमाह ॥

क्षीरमष्टगुणंद्रव्यात्क्षीराच्चीरंचतुर्गुणम् । क्षीरावशेषंपातव्यंक्षीरपाकेत्वयंविधिः ॥ द्रव्यात्पलपरिमितात् (अन्यच्च) उदकाद्विगुणंक्षीरंशिंशिपोशीरमेवच ॥ तत्क्षीरशेषक्वथितंपेयंसर्वज्वरापहम् ॥ ८० ॥

क्षीर पाककी बिधि ॥

औषध से अठगुना दूध और दूधका चौगुना जल इनको मिलाकर औटाने से जब केवल दूध बाकी रहजाय तब उतारले यह क्षीरपाककी विधि है यहां औषध चार तोले होनी चाहिये दूसरा प्रकार पानी से दूना दूध मिलाकर उसमें शीशम और खस छोड़कर पाककरने से जब केवल दूध बाकी रहै तब पिये इससे सम्पूर्ण ज्वरों का नाशहोता है ॥ ८० ॥

गुडूचीधान्यकारिष्टंपद्मकंरक्तचन्दनम्। एषांक्वाथःसुप्रसिद्धःसर्वज्वरहरःस्मृतः॥ दीपनोदाहहल्लासतृष्णाच्छर्द्यऽरुचिंहरेत्। गुडूच्यादिक्वाथःसंशोधनंतरुणज्वरेनिषिद्धम्। तदाहसुश्रुतः छर्दिमूर्च्छामदश्वासभ्रमतड्विषमज्वरान्॥संशोधनस्यपानेनप्राप्नोतितरुणज्वरी॥ ८१॥

गिलोय धनियां नींव पद्माक और लालचन्दन इनसबका क्वाथ सम्पूर्ण ज्वरोंका नाशक प्रसिद्धहै यह दीपन और दाह मतली तृषा छर्दि तथा अरुचि नाशक होता है यह गुडूच्यादि क्वाथ संशोधन होने के कारण नवीन ज्वर में निषिद्ध है ऐसाही सुश्रुतने भी कहा है कि नबीन ज्वर में संशोधन औषध पीने से छर्दि मूर्च्छा मद श्वास भ्रम तृषा तथा विषम ज्वर उत्पन्न होता है॥ ८१॥

निषिद्धमपिसंशोधनमवस्थाविशेषेदेयम्। (यतआह) रोगेशोधनसाध्येतुयंविद्याद्दोषदुर्बलम्॥ तंसमीक्ष्यभिषक्कुर्यादोषप्रच्यवनंमृदु। दोषदुर्बलमृदोषैरुपाचितैर्दुर्बलं नतूपवासादिकृशमत्रएवसमीक्ष्येति॥ ८२॥

निषिद्ध भी संशोधन अवस्था बिशेष में देना चाहिये क्योंकि कहागया है कि इकट्ठे हुए दोषोंके द्वारा दुर्बल जिस रोगी के शोधन साध्यरोगहोवे वैद्य उसको देखकर कोमलतासे दोष निकालने वाली औषध देवे॥ ८२॥

शोधनसाध्य रोगमाह॥

सद्योज्वरेविषेऽजीर्णेमन्देऽग्नावुदरेतथा। स्तन्यरोगेचहृद्रोगेकासश्वासेषुवामयेत्॥ जीर्णज्वरगरच्छर्दिगुल्मप्लीहोदरेषुच। शूलेशोथेमूत्रघातेकृमिरोगेविरेचयेत्॥(अन्यच्च) चलेदोषेमृदौकोष्ठेनेक्षेत्तत्रबलंनृणाम्। अव्यापददुर्बलस्यापिशोधनंहितदाभवेत्॥ कुतोबलंनापेक्षणीयमित्याशङ्कायामाहतदातस्यामवस्थायांशोधनंदुर्बलस्यापिदोषदुर्बलस्यापिअव्यापद्भवेत्। छर्द्यादिव्याधिकृन्नभवतीत्यर्थः॥ ८३॥

शोधनसे साध्यरोग॥

नवीनज्वर विष अजीर्ण मंदाग्नि उदर दुग्धरोग हृदयकेरोग खांसी और श्वासमें बमन कराना चाहिये जीर्णज्वर गरदोष छर्दि गुल्म प्लीहोदर शूल सूजन मूत्राघात और कृमिरोगमें विरेचन देना चाहिये औरभी कहा गयाहै कि दोषोंके चलायमान होनेपर और कोष्ठके मृदु होनेपर मनुष्योंके बल को बिना देखे दुर्बल मनुष्यकोभी संशोधन देनेसे कोई दोष नहीं होता बलका बिचार क्यों नहीं करना चाहिये इस सन्देह के दूर करने को कहतेहैं कि ऐसी अवस्थामें दोषोंके द्वारा दुर्बल मनुष्यको शोधन औषध देने से छर्दि आदिक दोष नहीं उत्पन्न होतेहैं॥ ८३॥

बलवतःपुरुषस्यपक्वस्यदोषस्यस्वस्थानस्थितस्यशोधनाविधानेदोषमाहसुश्रुतः॥ पक्वोऽप्यनिर्हृतोदोषोदेहेतिष्ठन्महात्ययम्। विषमंवाज्वरंकुर्याद्बलव्यापदमेववा॥ पक्वःलङ्घनाम्बुपानपेयादिभिःअनिर्हृत ःअधोमार्गेणानुत्सृष्टःमहात्ययंविषमंज्वरंचातुर्थिकंतस्यैवमहात्ययत्वादितिगदाधरः (गम्भीरमितिकार्त्तिकः) महात्ययंमहाकष्टंवाबलव्यापदं बलक्षयम्॥ ८४॥

बलवान् पुरुषके अपने स्थान में स्थित परिपक्व दोषोंके शोधन न करने में सुश्रुतने दोष कहा है जैसे कि विरेचनादिके द्वारा नहीं त्याग किया गया लंघन जलपान तथा पेया आदिकों से परिपाक को प्राप्तहुआ दोष शरीर में स्थित होकर अत्यन्त कृच्छ्रसाध्य विषमज्वर और बलक्षयको करता है यहाँ अत्यन्त कृच्छ्र विषमज्वरका अर्थ गदाधरने चौथिया कियाहै क्योंकि यहीज्वर अत्यन्त कृच्छ्रसाध्य है और कार्तिक ने गंभीरज्वर अथवा अत्यन्त कष्टदायक ज्वर यहअर्थ कियाहै ॥ ८४ ॥

संशोधनमाह ॥

आरग्वधग्रन्थिकमुस्ततिक्ताहरीतकीभिःक्वथितःकषायः । सामेसशूलेकफवातपित्ते ज्वरेहितोदीपनपाचनश्च ॥ इतिआरग्वधादिःक्वाथः (अन्यच्च) पथ्यारग्वधतिक्तात्रिवृदामलकैःश्रृतंतोयम् । पाचनसारकमुक्तंमुनिभिर्जीर्णज्वरेसामे । इतिआरोग्यपञ्चकद्वयम् ॥ ८५ ॥

संशोधनका वर्णन ॥

अमलतास पीपलामूल मोथा कुटकी और हड़ इनसबका क्काथकरके आम तथा शूलयुक्त कफ बात तथा पित्तके ज्वर में देना चाहिये यह दीपन और पाचकहै यह आरग्वधादि क्काथ कहलाताहै और भी कहागया है कि हड़ अमलतास कुटकी निशोथ और आंवला इनके द्वारा औटायाहुआ जल पाचन और दस्तावर कहागयाहै यह आम सहित जीर्णज्वर में देना चाहिये यहदो आरोग्य पंचक कहलाते हैं ॥ ८५ ॥

अनन्ताबालकंमुस्तनागरंकटुरोहिणी । पिष्ट्वासुखाम्बुनाकल्कंपाययेदक्षसंमितम् ॥ कल्कःस्वल्पेनकालेनहन्यात्सर्व्वज्वरामयान् । विदध्यात्कोष्ठसंशुद्धिंदाययेच्चहुताशनम् ॥ अनन्तासारिवासारिवादिकल्कः ॥ ८६ ॥

सारिवा सुगन्ध बाला मोथा सोंठ और कुटकी इनसबको पीसकर कुछ गरमजल के साथ तोले भर कल्क पिलावै यह थोड़ेही कालमें संपूर्ण ज्वरोंका नाशकरताहै और कोष्टको शुद्ध करके अग्निको दीप्त करता है इति सारिवादि कल्क ॥ ८६ ॥

संशोधनंसंशमनंचयेषांनिषिद्धंतानाह ॥

पीताम्बुर्लङ्घनक्षीणोजीर्णोभुक्तःपिपासितः । नपिबेदौषधंजन्तुःसंशोधनमथेतरत् ॥ पीताम्बुःपीततिक्ताम्बुःभुक्तोभुक्तवानित्यर्थः । अत्राध्यवसितादित्वात्कर्त्तरिक्तप्रत्ययः इतरत्संशमनं ॥ ८७ ॥

जिनको शोधन और शमनका निषेधहै उनका वर्णन ॥

तिक्त जल पिये हुए लंघन किये हुए क्षीण अजीर्णवाला भोजनकिया हुआ और प्यासा इनसब को शोधन और शमन औषधका निषेधहै ॥ ८७ ॥

त्रिफलारजनीयुग्मंकण्टकारीयुगंशटी । त्रिकटुग्रन्थिकंमूर्वागुडूचीधन्वयासकः ॥ कटुकापर्पटोमुस्तंत्रायमाणाचबालकम् । निम्बःपुष्करमूलञ्चमधुयष्टीचवत्सकः ॥ यवानीन्द्रयवोभार्गीशिग्रुवीजंसुराष्ट्रजा । वचात्वक्पद्मकोशीरचन्दनातिविषाबलाः ॥ शालिपर्णीपृष्ठिपर्णीविडङ्गन्तगरंतथा । चित्रकंदेवकाष्ठञ्चचव्यंपत्रंपटोलजं ॥ जीवकर्षभकोचै

वलवङ्गंवंशलोचनम् । पुण्डरीकञ्चकाकोलीपत्रकंजातिपत्रकम् ॥ तालीसंपत्रमेतानिसम भागानिचूर्णयत । अर्द्धांशंसर्व्वचूर्णस्यकिरातंप्रक्षिपेत्सुधीः ॥ एतत्सुदर्शनंनामचूर्णंदोष त्रयापहम् । ज्वरांश्चनिखिलान्हन्तिनात्रकार्य्याविचारणा ॥ दोषजागन्तुकांश्चापिधातु स्थानविषमज्वरान् । सन्निपातोद्भवांश्चापिमानसानपिनाशयेत् ॥ शीतादीनपिदाहादी न्मोहंतन्द्रांभ्रमंतृषाम् । कासंश्वासञ्चपाण्डुञ्चहृद्रोगंकामलामपि ॥ त्रिकपृष्ठकटीजानु पार्श्वशूलंनिवारयेत् । शीताम्बुनापिवेदेतत्सर्व्वज्वरनिवृत्तये ॥ सुदर्शनंयथाचक्रंदानवा नांविनाशनम् । तथाज्वराणांसर्वेषांचूर्णमेतत्प्रणाशनम् । पुष्करमूलाभावेतुकुष्ठमपिदद्या त्भार्गभावेकण्टकारीमूलम् । सौराष्ट्राभावेस्फटिकांदद्यात् । तगरालाभेकुष्ठंदेयंजीवक र्षभकयोरलाभेबिदारीकन्दस्यभागद्वयंदद्यात् पुण्डरीकंश्वेतकमलंकाकोल्यभावेअश्वग न्धामूलंतालीसपत्रकाभावेस्वर्णतालीसप्रदीयतइति । अथवाकण्टकारीजटादेया (इ तिसुदर्शनचूर्णम्) ॥ ८८ ॥

हड़ बहेड़ा आमला हल्दी दारुहल्दी दोनों भटकटैया कचूर सोंठ मिर्च पपिल पीपलामूल मरोरफली गिलोय धमासा कुटकी पित्तपापड़ा मोथा त्रायमाण सुगन्धवाला नींबकीछाल पुष्करमूल मुलहठी कुरैया अजवाइन इन्द्रयव भारंगी सहजनके बीज सोरठीमट्टी बच दालचीनी पद्माक खस चन्दन अतीस बरियारा शालिपर्णी पृष्ठपर्णी वायविडंग तगर चीता देवदारु चव्य परवलकेपत्ते जीवक ऋष भक लौंग बंशलोचन श्वेतकमल काकोली तेजपात जावित्री और तालीस इनसबको समभाग लेकर चूर्णकरे फिर सब चूर्णका आधा चिरायता मिलावे यह सुदर्शननाम चूर्ण त्रिदोषनाशक और संपूर्ण ज्वरोंका मूल नाशकहै यह दोष जनित आगन्तुक धातुओं में स्थित बिषमज्वर सन्निपातज्वर मानसज्वर शीत अथवा दाहादिकेज्वरोंका नाशक और प्रमेह तन्द्रा भ्रम तृषा खांसी श्वास पांडु हृदय के रोग कामला त्रिकशूल पीठकी पीड़ा कमरकी पीड़ा घुटनोंकी पीड़ा और पसलीकी पीड़ाको नाशकरता है संपूर्ण ज्वरोंके नाशकरनेके लिये शीतल जलके साथ इसका पान करना चाहिये जैसे सुदर्शन चक्र दैत्योंका नाश करताहै इसीप्रकार यह सुदर्शन चूर्णभी संपूर्ण ज्वरोंको नाशकरता है इसचूर्णमें पुष्करमूलके अभावमें कूट भारंगीके अभाव में भटकटैयाकी जड़ सोरठीमिट्टी के अभावमें फिटकरी तगरके अभावमें कूट जीवकऋषभकके अभावमें विदारीकन्दके दोभाग काकोलीकेअभाव में असगंध की जड़ तालीसके अभावमें स्वर्ण तालीस अथवा भटकटैयाकी जड़ देनी चाहिये इति सुदर्शन चर्णम् ॥ ८८ ॥

निम्बपत्रवराव्योषजवानीलवणत्रयम् । क्षारोदग्वह्निरामेषुत्रिनेत्रक्रमशोंऽशकान् ॥ सर्वमेकीकृतंचूर्णंप्रत्यूषेभक्षयेन्नरः । एकाहिकंद्व्याहिकञ्चतथात्रिदिवसज्वरम् ॥ चातु र्थकंमहाघोरांसततंसन्ततंदिवा । धातुस्थञ्चत्रिदोषोत्थंज्वरंहन्तिनसंशयः ॥ निम्बा दिचूर्णम् ॥ ८९ ॥

नींबकी पत्ती १० भाग हड़ बहेड़ा आमला तीनभाग सोंठ मिर्च पीपल ३ भाग अजवाइन ५ भा० सेंधा काला तथा विटनोन ३भा० और सज्जी तथा जवाखार २ भाग इनसबकोचूर्ण करके प्रातःकाल

खाय यह एकाहिक द्वयाहिक त्र्याहिक अत्यन्तघोर चातुर्थिक सतत संतत धातुस्थ और त्रिदोषजनित ज्वरको नाशकरताहै इति निंबादिचूर्णम् ॥ ८९ ॥

शटीनिशाद्वयंदारुशुण्ठीपुष्करमूलकम् । एलागुडूचीकटुकापर्पटश्चयवासकः ॥ शृंगीकिराततिक्तञ्चदशमूलीतथैवच । क्वाथमेषांपिवेत्कोष्णंसिन्धुचूर्णयुतन्नरः ॥ ज्वरान्सर्वान्द्रुतंहन्तिनात्रकार्याविचारणा (इतिशट्यादिक्वाथः) अनुभूतमिदम् ९० ॥

शट्यादि क्वाथ ॥

कचूर हल्दी दारुहल्दी देवदारु सोंठ पुष्करमूल इलायची गिलोय कुटकी पित्तपापड़ा धमासा काकड़ासिंगी चिरायता और दशमूल इनसबका क्वाथ सेंधानोन डालकर कुछ गरम २ पिये यह संपूर्ण ज्वरोंको नाशकरताहै इसमें किसी प्रकारका भी संदेह नहींहै यह अनुभव किया हुआ है ॥ ९० ॥

हरीतकीत्रिवृद्दन्तीदारकाणांपृथग्भवेत् । पलद्वयंकणाशुण्ठीगुडूचीगोक्षुरीवरी ॥ सहदेवीविडंगंचप्रत्येकंस्यात्पलसम्मितम् । मधुनावटिकांकृत्वाखादेज्ज्वरमपोहति ॥ कासंश्वासंमलस्तम्भवह्निमान्द्यंनियच्छति (इतिहरीतक्यादिगुटी) अनुभूतम् ९१ ॥

हरीतक्यादि गोली ॥

हड़ निसोथ और विधारा यह सब दो२ पल पीपल सोंठ गिलोय गोखुरू शतावर सहदेई और बायबिड़ंग यहसब एक२ पल इन संपूर्ण औषधियोंको पीसकर सहतकेसंग गोली बनावे इसके खाने से ज्वर खांसी श्वास मलका रुकना और मंदाग्निका नाशहोताहै यह अनुभव कियाहुआहै ॥ ९१ ॥

लाक्षादशाक्षात्वरुणाषड़क्षासचन्दनंलोहितचन्दनंच । त्वक्पत्रकंवारिसुरासमुस्ताप्रत्येकमेतानिपलोन्मितानि ॥ किराततिक्ताखिवृतासतिक्ताऽमृताकणापर्पटकण्टकार्या । विड़ङ्गविश्वामलकानिवासारसानिशावीरणसिन्दुवाराः ॥ एतानिदेयानिपृथक्पलार्द्धमानानिसर्व्वाणिचभेषजानि । कल्कानमीषांविदधीतगव्यदुग्धेनवैसार्द्धतुलामितेन । तैलंतिलानान्तुतुलानुमानं तेनैवकल्केनशनैःपचेच्च ॥ हन्याज्ज्वरांस्तैलमिदंसमस्तान् कुर्य्याद्बलंवीर्यमतीवपुष्टिम् । विमर्दनादाशुपरिश्रमंभ्रमंशमंनयेत्संजनयेत्द्युतिंतनोः ॥ तथाव्यथामस्थिसमुद्भवामपिप्रहत्यानिद्रांसमुपार्जयेत्सुखम् ॥ अरुणामञ्जिष्ठावारिवालंरसारास्ना । इतिलाक्षादितैलम् ९२ ॥

लाक्षादि तैल ॥

लाख १० तो० मजीठ ६तो० सफेद चन्दन लाल चन्दन दालचीनी तेजपात सुगन्धबाला मरोड़फली और मोथा यहसब चार २ तोले चिरायता निशोथ कुटकी गिलोय पीपल पित्तपापड़ा भटकटैया बायबिडंग सोंठ आंवला बांसा रासना हल्दी खस और संभालू यहसब दो २ तोले इन संपूर्णऔषधियोंकाकल्क दोसौ तोले गौकादूध और चारसौ तोले तिलका तेल इनसबको विधिपूर्वक धीरे २ पाककरके सेवन करे यह तैल संपूर्ण ज्वरोंकानाशक बलवीर्य्य अत्यन्त पुष्टता और शरीरमें कान्तिकारी होताहै इसके मर्दनकरने से परिश्रम भ्रम और हड्डियोंकी पीड़ाका नाश होकर सुखपूर्वक निद्रा आती है ॥ ९२ ॥

लाक्षारससमंतैलंतैलान्मस्तुचतुर्गुणम् । अश्वगन्धानिशादारुकौन्तीकुष्ठाब्दचन्दनैः ॥ समूर्व्वारोहिणीरास्नाशताह्वामधुकैःसमैः । सिद्धंलाक्षादिकंनामतैलमभ्यञ्जनादिना॥सर्व्वज्वरक्षयोन्मादश्वासापस्मारवातनुत्।यक्षराक्षसभूतघ्नंगर्भिणीनांचशस्यते।मस्तु दधिजलं।कौन्तीरेणुका चन्दनमत्रश्वेतमेवनतुरक्तम्।रोहिणीकटुका।इतिलाक्षादि ९३ ॥

दूसरा लाक्षादि तेल ॥

लाखके रसके समान तिलोंका तेल और उसका चौगुना दहीका तोड़ इनमें असगंध हल्दी देवदारु रेणुका कूट नागरमोथा श्वेतचन्दन मरोड़फड़ी कुटकी रासना शतावर और मुलहठी इन सब समभाग औषधियों का कल्क छोड़कर बिधिपूर्वक परिपाक करने से लाक्षादिनाम तैल बनताहै यह मर्दनादिकों से सब प्रकार के ज्वर क्षय उन्माद श्वास मृगी बात यक्ष राक्षस तथा भूतोंको नाश करताहै और गर्भिणी स्त्रियोंको अत्यन्त हितकारीहै ॥ ९३ ॥

लाक्षाहरिद्रामाञ्जिष्ठाफेनिलंमधुकंबला । लामज्जकंचन्दनंचचम्पकंनीलमुत्पलम् ॥ प्रत्येकमेषांषट्मुष्टीःपक्त्वातोयेचतुर्गुणे । चतुर्भागावशेषेतुगर्भेचैतत्समावपेत् ॥ रेणुका पद्मकञ्चैववाजिगन्धातथैवच।वेतसञ्चोरकंकुष्ठंदेवदारुनखंत्वचम् ॥ शतपुष्पापुण्डरीकं मांसीमधुकमेवच । एभिरक्षमितैःकल्कैःकषायेणैवपेषितैः ॥ मस्तुशुक्तारनालानामाढ़कांशंसमापयेत् । क्षीराढ़कसमायुक्तंतैलप्रस्थंविपाचयेत् ॥ अभ्यंगात्तैलमेतद्धिशीघ्रंदाहमपोहति । व्यपोहतितथावातपित्तश्लेष्मभवज्वरम् ॥ सप्रलापंसतृष्णञ्चतालुशोषभ्रमान्वितम् । ग्रहोपसृष्टायेबालारक्षसःदूषिताश्चये ॥ तेषांकष्टंप्रशमयेत्तैलंलाक्षादिकंमहत् । फेनिलंवदरी॥ लामज्जकमुशीरवत्पीतछवितृणविशेषः॥लामज्जकंयदानस्याद्उशीरन्दीयतेतदा । चम्पकमित्यस्यस्थानेकुत्रापिगैरिकमितिपाठः ॥ नीलोत्पलस्यालाभेतु कुमुदंदेयमिष्यते । समावपेत्प्रक्षिपेदित्यर्थः ॥ चोरकग्रन्थिपर्णस्यभेदोभटिउरइतिनेपालदेशेभवतितदलाभेग्रन्थिपर्णदेयम् । पुण्डरीकंश्वेतकमलम् ॥ मस्तुदधिजलम् ॥ शुक्तंसन्धानभेदः ॥ आरनालःसोऽपिसन्धानभेदः । इतिमहालाक्षादितैलम् ॥ ९४ ।

महालाक्षादि तैल ॥

लाख हल्दी मजीठ बेर महुआ बरियारा लामज्जक (खसके समान पीला तृण विशेष इसके अभावमें खस डाली जातीहै) चन्दन चम्पा असगंधा गेरू और नीलकमल (इसके अभावमें कोकाबेली छोड़ीजाती है) इन सब औषधियोंको चौबीस२ तोले लेकर चौगुने जल में पाक करे जब चौथाई रहजाय तब उतारले फिर इसमें रेणुका पद्माक असगंध बेत चोरक (यह कुकुरोंधेका भेद भटे उरनामसेनेपालमें प्रसिद्धहै इसके अभावमें कुकुरोंधा लेना चाहिये) कूट देवदारु नख दालचीनी सौंफ श्वेत कमल जटामासी और मुलहठी इन सब तोले२औषधियोंका कषायके द्वारा पिसा हुआ कल्क दहीका तोड़ दोसौ छप्पन तोले सिरका दोसौ छप्पन तोले आरनाल दोसौछप्पन तोले दूध दोसौ छप्पनतोले और तिलका तेल चौंसठ तोले मिलाके पाककरे इसतेलके लगानेसे शीघ्रही दाहका नाश होताहै और प्रलापतृषा तालूका सूखना तथा भ्रम सहित बात पित्त कफसे उत्पन्न ज्वर

नाशको प्राप्त होताहै यह महा लाक्षादि तैल ग्रहोंसे दूषित बालक और राक्षसों से पीड़ित होनेवालेके कष्टको दूरकरता है ॥ ९४ ॥

अथ नवज्वरेरसाः ॥

सूतोगन्धष्टङ्कणःशोषणश्चसर्वैस्तुल्याशर्करामत्स्यपित्तः। भूयोभूयोमर्दयेत्तत्त्रिरात्रं वल्लोदेयःशृङ्गवेरद्रवेण॥ तापेशीतंव्यञ्जनैस्तक्रभक्तंवृन्ताकाढ्यंपथ्यमेतत्प्रदिष्टम्। अह्ने वोग्रंहन्तिसद्योज्वरन्तुपित्ताधिक्येमूर्ध्नितोयंचदद्यात् ॥ अस्यप्रक्रियापाराशुद्धभाग १ गन्धकभाग १ सोहागाभृष्टभाग १ मरिचभाग १ शर्कराभाग ४ रोहितमत्स्यपित्तभाग ४ प्रतिदिनसर्वंदिनत्रयंमर्दयेत्। रसमिमंरक्तिकात्रयमितमार्द्रकरसेनदद्यात्। ओदनं तक्रंवृन्ताकफलंभोक्तुंदद्यात् ।व्यञ्जनाद्यैःशीतलमुपचारंकुर्य्यात्। उदकमञ्जरीरसो नवज्वरेषुरसरत्नप्रदीपे ॥ ९५ ॥

नवीन ज्वरपररस ॥

शुद्धपारा १ भाग गन्धक १ भाग सुहागा १ भाग मिर्च १ भाग और शक्कर ४ भाग इनसब औषधियों को चारभाग मछली के पित्तेके द्वारा तीन दिनतक बारंबार घोटे फिर तीनरत्ती यहरस अदरक के रसके साथ सेवन करने को देवे मट्ठा भात और बैंगन का पथ्यदेवे दाहमें व्यजन आदिकेद्वारा शीतल उपचार करे और पित्तकी अधिकतामें शिरपर जलछोड़े उसके सेवनसे एकहीदिनमें नवीन उग्रज्वर का नाश होताहै इति उदकमंजरी रस ॥ ९५ ॥

अद्यात्समंसूतसमुद्रफेणंहिंगुंसगन्धंपरिमृद्ययामम् । नवज्वरेवल्लयुगंत्रिघस्रमार्द्राम्भसाऽयंज्वरधूमकेतुः (अथप्रक्रिया) पाराशुद्ध गन्धक शुद्ध हिंगुलशुद्धसमुद्रफेणस मभागंसर्वंयाममेकमार्द्रकरसेनसंमर्द्य रक्तिकाषट्कमितमार्द्रकरसेनदिनत्रयं नवज्वरीभक्षयेत् दिनत्रयान्नवज्वरोनश्येत् इतिज्वरधूमकेतुः ॥ रसेन्द्रचिंतामणौ ॥ ९६ ॥

रसेन्द्रचिन्तामणिमें कहाहुआ ज्वर धूमकेतुरस ॥

शुद्धपारा शुद्धगन्धक शुद्धसिंदरक और शुद्धसमुद्रफेन इन सबको समभाग लेकर अदरकके रसमें एक पहर घोटे फिर अदरक के रसकेसाथ छः रत्ती रस तीनदिनतक खाय तो इस धूमकेतु रससे नवीनज्वर का नाश होता है ॥ ९६ ॥

शुद्धसूतोविषंगंधःप्रत्येकंशाणसंमितः। धूर्त्तबीजंत्रिशाणंस्यात्सर्वेभ्योद्विगुणाभवेत् ॥ हेमाह्वाकारयेदेषांसूक्ष्मंचूर्णंप्रयत्नतः । जम्बीरबीजकैर्देयंचूर्णंगुञ्जाद्वयोन्मितम्। आर्द्रकस्यरसेनापिज्वरंहंतित्रिदोषजम् । एकाहिकंद्व्याहिकञ्चत्र्याहिकञ्चचतुर्थकम् ॥ विषमञ्चज्वरंहन्यान्नवंजीर्णञ्चसर्व्वथा । महाज्वरांकुशोनाम्नारसोऽयंसर्व्वसम्मतः ॥ प्रक्रिया, शुद्धपाराशुद्धगन्धकशुद्धविष प्रत्येकंटङ्क १ धत्तूरबीजटङ्क ३ चोकटङ्क १२ सर्व्वेषांचूर्णमतिसूक्ष्मंकर्त्तव्यम् (इतिमहांज्वरांकुशःसर्व्वज्वरेषुशार्ङ्गधरे) ॥ ९७ ॥

शार्ङ्गधरमें कहाहुआ संपूर्ण ज्वरोंपर महाज्वरांकुशरस ॥

शुद्धपारा शुद्धबिष शुद्धगन्धक यहसब चार२ मासे धतूरेके बीज बारह मासे और चोक चारतोले इनसब औषधियोंका सुक्ष्म चूर्णकरे फिर दोरत्ती रस जंभीरी नींबूके रसके साथ तथा अदरकके रस

के साथ सेवन करनेसे त्रिदोषज एकाहिक द्व्याहिक त्र्याहिक चातुर्थिक विषमज्वर और जीर्णज्वर का नाश होता है यह महाज्वरांकुश रस सर्वसंमतहै ॥ ९७ ॥

एकोभागोरसाच्छुद्धाच्छैलेयःपिप्पलीशिवा।आकारकरभोगन्धःकटुतैलेनसाधितः॥ फलानिचेन्द्रवारुण्याश्चतुर्भागमिताअमी । एकत्रमर्दयेच्चूर्णमिन्द्रवारुणिकारसैः॥ माषोन्मितांवटींकृत्वादद्यात्सद्योज्वरेवुधः । छिन्नारसानुपानेनज्वरघ्नीवटिकामता ॥ शैलेयः छरइतिलोकेशिवाहरीतकी । आकारकरभःअकरकराइतिलोके । चतुर्भागमिताअमीशैलेयादयः । षट्समुदिताभागचतुष्टयमिताः ॥ ज्वरघ्नीवटिकाशार्ङ्गधरे ॥ ९८ ॥

शार्ङ्गधरमें कहीहुई ज्वरनाशक गोली ॥

शुद्धपारा १ भा० छर पीपल हड़ अकरकरा कटुतेल में शोधी हुई गन्धक और इन्द्रायणके फल यह सब चारभाग इनसब औषधियोंको चूर्ण करके इन्द्रायण के रस में खरल करे और उर्द के बराबर गोली बांधे इस गोली को गिलोयके रसके साथ सेवन करनेसे नवीन ज्वरका नाशहोताहै९८॥

रसगन्धञ्चदरदंजैपालंक्रमवर्द्धितम् । दन्तीरसेनसंपिष्यवटीगुञ्जामिताभवेत् ॥ प्रभातेसितयासार्द्धमसिताशीतवारिणा । एकेनदिवसेनैषानवज्वरहरीभवेत ॥ (इति ज्वरघ्नीवटिकारसरत्नप्रदीपे ॥ ९९ ॥

रसरत्नप्रदीप में कहीहुई ज्वरनाशक गोली ॥

पारा १ भाग गंधक २ भाग सिंदरफ ३ भागजमालगोटा ४ भाग इन सबको जमालगोटे के रस में पीसकर एक रत्ती की गोली बनावे फिर प्रातःकाल शक्कर के साथ अथवा शक्कर न होतो शीतल जलके साथ इसका सेवन करनेसे एकही दिनमें नवीन ज्वरका नाशहोताहै ॥ ९९ ॥

रसगन्धोविषंशुण्ठीपिप्पलीमरिचानिच । पथ्याविभीतकंधात्रीदन्तीबीजंचशोधितम् ॥ चूर्णमेषांसमांशानांद्रोणपुष्पीरसैःपुटेत् । वटींमाषनिभांकुर्य्याद्भक्षयेन्नूतनेज्वरे ॥ नवज्वरहरीवटी ॥ १०० ॥ नवनि ज्वर नाशकगोली ॥

शुद्धपारा शुद्धगन्धक शुद्धसींगिया सोंठ पीपल मिर्च हड बहेड़ा आंवला और शुद्ध जमालगोटा इन सबको समभाग लेकर चूर्णकर गूमाके रसमें खरलकरके पुटपाककरे फिरउर्दके समान गोली बनाय कर नवीन ज्वर में सेवनकरे ॥ १०० ॥

एकभागोरसोभागद्वयंशुद्धश्चगन्धकम् ।गरलस्यत्रयोभागाचतुर्भागाहिमावती ॥ जैपालकःपञ्चभागोनिम्बुद्रवविमर्दितः । कृमिघ्नप्रमितावत्यःकार्यासर्वज्वरच्छिदः ॥ शृङ्गवेरेण दातव्या वटिकैकादिनेदिने । जीर्णज्वरेतथाऽजीर्णेसमेवाविषमेतथा ॥ ज्वरंसर्वंनिहन्तासौ दावोवनमिवानलः ॥ नवज्वरेरसः ॥ १०१ ॥

नवीन ज्वर पर रस ॥

पारा १ भाग शुद्धगन्धक २ भाग विष ३ भाग मकोय ४ भाग और जमालगोटा ५ भाग इनसबको नींबूकेरसमें घोटकर बायबिड़ंगके समान गोली बनावे फिर अदरकके रस के साथ एक गोली रोज खानेसे जीर्ण ज्वर आम सहित ज्वर और सम तथा विषम आदिक संपूर्ण ज्वरोंका नाशहोताहै जैसे दावाग्नि से बनका नाश होताहै उसी प्रकार यह भी संपूर्ण ज्वरों का नाशकरताहै ॥ १०१ ॥

अथसामान्यज्वरेरसाः ॥

शुद्धंसूतंविषंगन्धंधूर्त्तवीजंत्रिभिःसमम् । चतुर्णांद्विगुणंव्योषचूर्णंगुञ्जाद्वयोन्मितम् ॥ आर्द्रकस्यरसैःकिंवाजम्बीरस्यरसैर्युतम् । महाज्वरांकुशोनाम्नासर्वज्वरविनाशनः ॥ एकाहिकंद्व्याहिकञ्चत्र्याहिकञ्चचतुर्थकम् । विषमंवात्रिदोषंवाज्वरंहन्तिनसंशयः ॥ प्रक्रियाशुद्धपारदटङ्क १ शुद्धविषटङ्क १ शुद्धगन्धकटङ्क १ धत्तूरवीजटङ्क ३ त्रिकुटाप्रत्येक टङ्क ४ सर्वेषांचूर्णमतिसूक्ष्मंकर्तव्यम् । इतिमहाज्वराङ्कुशःसर्वज्वरेषु ॥ १०२ ॥

सामान्य ज्वर पर रस महाज्वरांकुश रस ॥

शुद्धपारा शुद्धबिष शुद्धगन्धक यह सब एक २ भाग धतूरेके बीज ३ भाग और इनचारोंका दूना त्रिकटु का चूर्ण इन सब औषधियोंको चूर्ण करके अदरकके रस अथवा जंभीरी नींबूके रसके साथ दो रत्ती इस महाज्वरांकुश रस के सेवन करनेसे एकाहिक द्व्याहिक त्र्याहिक तथा चातुर्थिक विषम ज्वर और त्रिदोषज यह सब प्रकारके ज्वर निस्सन्देह नाशको प्राप्त होतेहैं ॥ १०२ ॥

सूतंगन्धंविषंचैवटङ्कणंचमनःशिलाम् । एतानिटङ्कमात्राणिमरिचंत्वष्टटङ्ककम् ॥ कटुत्रयंटङ्कषट्कंखल्लेक्षिप्त्वाविचूर्णयेत् । रसःश्वासकुठारोऽयंसर्वज्वरहरःपरः ॥ इति श्वासकुठारोरसः श्वासेसर्वज्वरेरसरत्नाकरे ॥ १०३ ॥

श्वास कुठाररस ॥

शुद्धपारा गन्धक बिषसुहागा और मैनसिल यहसब चार२ मासे मिर्चबत्तिसमासे औरत्रिकुटाचौबीस मासे इन सब औषधियों को एक साथ पीसकर चूर्णकरे इस श्वास कुठार रसके सेवनसे श्वास और सब प्रकारके ज्वरोंका नाश होताहै ॥ १०३ ॥

दारुमूखांशिखिग्रीवांरसकञ्चपृथक्पृथक् । टङ्कत्रयानुमानेनगृहीत्वाकनकद्रवैः ॥ मर्दयेत्त्रिदिनंकार्य्यावटीचणकमात्रया । मरिचैरेकविंशत्वासप्तभिस्तुलसीदलैः ॥ खादे द्वटीद्वयंपथ्यंदुग्धभक्तंसशर्करम् । तरुणंविषमंजीर्णंहन्यात्सर्वज्वरंध्रुवम् ॥ दारुमूखा दारुमूसी शिखिग्रीवातुत्थंरसकङ्खपरिआप्रत्येकंस्यात् । टङ्क ३ धत्तूरपत्रस्यरसेनमर्दये त् ज्वरांकुशःसर्वज्वरेषु ॥ १०४ ॥

सम्पूर्णज्वरोंपर ज्वरांकुश रस ॥

दारुमूसी तूतिया और खपरिया यहसब तोले २ भर लेकर धतूरे के पत्तोंके रसमें तीन दिन तक खरलकरे फिर चनेके बराबर गोली बनाके इक्कीस कालीमिर्च और सात तुलसी दलोंके साथ दो गोली खाय और शक्कर सहित दूध भात का भोजनकरे इस से नवीन विषम तथा जीर्ण यह सब प्रकारके ज्वर निस्संदेह नाश को प्राप्त होते हैं ॥ १०४ ॥

नागरंकर्षमात्रञ्चटङ्कणंकर्षकद्वयम् । मरिचंसार्द्धकर्षस्यात्तावद्दग्धवराटकम् ॥ विषं कर्षचतुर्थांशंसर्वमेकत्रचूर्णयेत् ॥ रसोहुताशनोनाम्नाखाद्योगुञ्जामितोज्वरे । इतिहुता शनोरसः ॥ १०५ ॥

हुताशनरस ॥

सोंठ १ तोला सुहागा २ तोला मिर्च १ तोला कौड़ीकी भस्म १॥ तोला और विष तीनमासे इन

सब औषधियोंको एकसाथ चूर्णकरे यह हुताशन नाम रस ज्वरमें एक रत्ती खानाचाहिये ॥ १०५ ॥

शुद्धजैपालटंकतुकट्वीटंकद्वयोन्मितम् । गैरिकंटंकमेकञ्चकन्यानीरेणमर्द्दयेत् ॥ कला यसदृशीकार्य्यावटिकाताञ्चभक्षयेत् ॥ शीतलेनजलेनैववटीजीर्णज्वरापहा । इतिज्वर घ्नीवटिका ॥ १०६ ॥

ज्वरनाशक गोली ॥

शुद्ध जमालगोटा ४ मासे कुटकी आठ मासे और गेरू ४ मासे इन सबको घीकुआरके रस में घोटकर मटरके समान गोली बनावे इस गोली को शीतल जल के साथ सेवन करने से जीर्णज्वर का नाश होताहै ॥ १०६

द्विभागतालेनहतंचताम्रंरसंचगन्धंचसमीनमायुः । विषंसमंचद्विगुणञ्चताम्रंत्रिः सप्तवारेणदिवाकरांशो॥विमर्द्यचारिष्टरसेनचूर्णंगुञ्जैकदत्तंसितयासमेतम् । ज्वराकुंशोऽयं रविसुन्दराख्योज्वरान्निहन्याष्टविधानसमस्तान् ॥ अस्यप्रक्रियापाराटंक १ गन्धटङ्क १ विषटङ्क १ द्विगुणतालकहतताम्रटङ्क २ रोहूमत्स्यकेपित्तटङ्क १ सर्वमेकत्रचूर्णयित्वानि म्बपत्ररसैर्भावयित्वाउष्णे संशोष्यरत्तिकामात्र १ श्वेतशर्करयाभक्षणीयं सर्व्वज्वरेरवि सुन्दरोरसः १०७॥

सब ज्वरोंपर रविसुन्दर रस ॥

दूनी हरतालके द्वारा माराहुआ तांबा ८ मासे शुद्धपारा गंधक विष और रोहू मछलीका पित्ता यह सब चार ४ मासे इन सब औषधियों को एकसाथ पीसकर नींबके पत्तों के रससे धूपमें सुखा सुखा कर २१ भावनादेवे फिर श्वेत शक्करके साथ एक रत्ती इस रविसुन्दर रसको खाय तो आठों प्रकारके सब ज्वरोंका नाशहोताहै ॥ १०७ ॥

शुद्धंसूतंतथागन्धंखल्वेतावद्विमर्द्दयेत् । सूतनदृश्यतेयावत्किन्तुतत्कज्जलंभवेत् ॥ एषाकज्जलिकाख्याताबृंहणीवीर्य्यवर्द्धिनी।नानानुपानयोगेनसर्वव्याधिविनाशिनी १०८॥

शुद्धपारा और शुद्ध गन्धकको समभाग लेकर तबतक खरलकरे जबतक कि पारा और गन्धक मिलकर कजली न होजाय यह कजली धातु तथा वीर्यवर्द्धक और अनेक प्रकारोंके अनुपानोंके योग से सम्पूर्ण रोगों की नाशक होती है ॥ १०८ ॥

कज्जलिकाविधानंतद्गुणाश्चरसरत्नप्रदीपे ॥

जपापत्ररसेनाथवर्द्धमानरसेनच । भृङ्गराजरसेनापिकाकमाच्यारसेनच ॥ रसंसंशो धयेत्तेनतत्समंशोधयेद्बलिम् । भृङ्गराजरसैःपिष्ट्वाशोषयेदर्करश्मिभिः ॥ सप्तधावात्रिधा वापिपश्चाच्चूर्णन्तुकारयेत् । चूर्णयित्वासमंतेनरसेनसहमर्द्दयेत् ॥ नष्टसूतंयदाचूर्णंभ वेत्कज्जलसन्निभम् । निर्द्धूमबदरांगारेद्रवीकुर्य्यात्प्रयत्नतः ॥ तत्रतंमहिषीविष्ठास्थापि तेकदलीदले । निःक्षिपेत्तदुपर्य्यन्यत्पत्रंदत्वाप्रपीड्येत् ॥ शीतलञ्चततःपत्रात्समुद्धृत्य विचूर्णयेत् । एवंसिद्धाभवेद्व्याधिघातिनीरसपर्पटी ॥ ज्वरादिव्याधिभिर्व्याप्तंविश्वंद ष्ट्वापुराहरः । चकारकृपयायुक्तःसुधावद्रसपर्पटीम् । रत्तिकासंमितातावद्भ्रष्टजीरंकसंयु ताम्॥ गुञ्जार्द्धंभ्रष्टहिंग्वाढ्यांभक्षयेद्रसपर्पटीम् । रोगानुरूपभैषज्यैरर्पितांभक्षयेद्बुधः॥

पिबेत्तदनुपानीयंशीतलञ्चुलुकत्रयम् । प्रत्यहंतस्यचैकैकांरत्तिकांवर्द्धयेद्भिषक् । नाधिकांदशगुञ्जातोभक्षयेत्तांकदाचन ॥ एकादशदिनारम्भात्तांत्वष्टौवापकर्षयेत् । एवमेतांसमश्नीयान्नरोविंशतिवासरान् ॥ शिवंगुरूंस्तथाविप्रान्पूजयित्वाप्रणम्यच । श्रद्धया भक्षयेदेतांक्षीरमांसरसाशनः॥ ज्वरञ्चग्रहणींवापितथातीसारमेवच । कामलांपाण्डुरोगञ्चशूलप्लीहजलोदरम् ॥ एवमादीन्गदान्हत्वाहृष्टःपुष्टश्चवीर्य्यवान् । जीवेद्वर्षशतंसाग्रंबलीपलितवर्ज्जितः ॥ इतिरसपर्पटी ॥ १०९ ॥

रसरत्नप्रदीप में कज्जलीकी विधि और गुण ॥

गुड़हरके पत्तोंका रस रेंड़ीके पत्तोंका रस भंगरेका रस और काकमाचीका रस इनसे पारेको शुद्ध करके पारेके समान गन्धकको शुद्ध करके भंगरेके रससे पीस २ कर सात बार अथवा तीन बार धूप में सुखावे फिर पारे और गन्धककी कज्जली करे और धूम रहित बेरीकी लकड़ीके कोयलोंपर उस कज्जलीको गलाकर भैंसके गोबरपर रक्खे हुए केलेके पत्तेपर डाले फिर उसके ऊपर दूसरा पत्ता डालकर दबादे इसके उपरान्त शीतल होजानेपर उसको पत्तेसे निकालकर पीसले इस प्रकार सम्पूर्ण रोगनाशक रस पर्पटी सिद्ध होतीहै पूर्वकालमें ज्वरादि रोगोंसे सम्पूर्ण संसारको व्याकुल देखकर श्री शिवजीने कृपाकरके यह रस पर्पटी बनाईथी प्रथम दिन एक रत्ती पर्पटी रसको एकरत्ती भुने जीरे और आधी रत्ती भुनी हींगके साथ खाय पंडित लोग रोगके अनुसार औषधियोंके साथ इसको सेवन करें और औषध खानेके उपरान्त तीन चुल्लू जल पियें वैद्यको चाहिये कि इसकी एक २ रत्ती रोज बढ़ाताजाय परन्तु दश रत्तीसे अधिक कभी न बढ़ावे फिर ग्यारहवें दिनसे इसी प्रकार एक २ रत्ती घटाताजाय इस रीतिसे बीस दिन तक रस पर्पटीका सेवन करे श्रीशिवजी गुरू और ब्राह्मणोंको पूजन तथा नमस्कार करके श्रद्धापूर्वक इस रसका सेवन करना चाहिये इसके साथ दूध और मांसके रसका सेवन करे इसके सेवनसे ज्वर ग्रहणी अतीसार कामला पांडु शूल प्लीहा तथा जलंधर आदि रोगोंसे छूटकर झुर्री तथा बालोंकी श्वेततासे रहित होके हृष्टपुष्ट होकर सौबर्षतक जीताहै इतिरस पर्पटी ॥ १०९ ॥

अथ ज्वरिणोऽन्नदानसमयस्तत्रचरकः ॥

क्षुत्सम्भवातिपक्वेषुरसदोषमलेषुच । कालेवायदिवाऽकालेसोऽन्नकालउदाहृतः ॥ (अन्यच्च) आमेपाकंगतेनॄणांयदाभोजनलालसा । भवेत्कालेह्यकालेवासोऽन्नकालउदाहृतः ॥ (तत्रकालमाह) ज्वरस्यपाकावस्थानदानकालः ॥ ११० ॥

ज्वरवालेको अन्नदेनेका समय ॥

इसमें चरकने कहाहै कि रसदोष तथा मलोंके परिपाक होनेपर क्षुधा लगतीहै इसीलिये समय हो अथवा असमयहो वही अन्नका समय कहागयाहै और भी कहागयाहै कि समय अथवा बेसमय पर आमके परिपाक होनेसे मनुष्योंको जब क्षुधालगे वही भोजनका समयहै वह काल यहकहागया है कि ज्वरकेपाक होनेकी अवस्था अन्नदेनेका समयहै ॥ ११० ॥

ज्वरस्यपाककालश्च ॥

वातिकःसप्तरात्रेषुदशरात्रेणपैत्तिकः । श्लैष्मिकोद्वादशाहेनज्वरःपाकमुपैतिहि ॥

ज्वरस्यपाकउपशमः ज्वरपाकेनैवरसपाकोदोषपाकोऽपिकथितः यथादोषपाकंविनाज्वर पाकोनभवतिरसपाकंविनादोषपाकश्चनभवति। ननुयथापैत्तिकज्वरो । दशाहोरात्रेण पाकंयाति। एकादशदिनेऽन्नंदीयते । यथाश्लैष्मिकोज्वरोद्वादशाहोरात्रेणपाकंयाति। त्रयोदशेदिवसेऽन्नंदीयते । तथावातिकोज्वरः सप्ताहोरात्रेणपाकंयातिअष्टमेदिवसेऽन्नं कथंनदीयते। कथंसप्तमएवदिवसेऽन्नंदीयतेइतिउच्यते ॥ १११ ॥

ज्वर के परिपाक होने का समय॥

बातज्वर सात रात्रिमें पित्तज्वर दशरात्रिमें और कफज्वर बारह दिनमें परिपाक अर्थात् शान्ति को प्राप्त होता है यहां ज्वर के परिपाक कहने से रसतथा दोषोंका भी परिपाक कहागया यह जानना चाहिये क्योंकि दोषों के पाक के बिनाज्वर का पाक नहीं होता और रस के पाक हुये बिना दोषों का पाक नहीं होता अबयह सन्देह होता है कि जैसे पित्तज्वर दशरात्रि में पाकको प्राप्त होता है ग्यारहवें दिन अन्न दिया जाताहै और कफ ज्वर बारह रात्रिमें पाकहोकर तेरहवें दिन अन्नदिया जाता है इसी प्रकार बात ज्वर सातरात्रि में परिपाक होताहै तो आठवें दिन अन्नक्यों नहीं दिया जाता सातवें ही दिन क्यों दियाजाता है ॥ १११ ॥

कफपित्तेद्रवेधातूसहेतेलंघनंबहु । आमक्षयादूर्ध्वमपिवायुर्नसहतेक्षणम् ॥ इति वचनादामरसपाकेजातेआहारलाभंविनावायुः क्षणमात्रमपिसोढुंनशक्नोति सआशुकारित्वात् क्षणादाक्षेपकादीन्विकारान्सञ्जनयति । अतोवातिकेज्वरेपाकदिनानामन्तिमे। सप्तमएवदिनेऽन्नंदीयते ॥ ११२ ॥

इसका उत्तर यहहै कि कफ और पित्त यह पतली धातुहैं इसीसे यह बहुत लंघन सहसक्ती हैं परन्तु बात आमके परिपाक होने के उपरान्त क्षण भरभी लंघन को नहीं सहसक्ती है इस बचनसे यह ज्ञात होता हैं कि आमरसके परिपाक के उपरान्त बात क्षण भरभी आहारके बिना नहींरहसक्ती हैं और शीघ्रकारी होने के कारण क्षणभरही में आक्षेपादिक रोगोंको उत्पन्न करती है इसलिये बात ज्वर के परिपाक के दिनों के अन्तके सातवें ही दिनअन्न दियाजाताहै ॥ ११२ ॥

(तथाच धन्वन्तरिः) ज्वराभिभूतःषडहेव्यतीते विपक्वदोषःकृतलङ्घनादिः। योभेषजं खादतिवैद्यवश्योनिःसंशयंहन्त्यचिरात्सरोगान् ॥ ज्वराभिभूतःवातज्वराभिभूः विपक्वदोषःपक्ववातःकृतलङ्घनादिः । आदिशब्दात्कृतपक्वजलपान निर्वातगृहवासगुरूष्णवसनधारणादिः भेषजमित्यन्नस्याप्युपलक्षणम्। (अतएवाह चरकः) ज्वरितंषडहेऽतीते लघ्वन्नंप्रतिभोजितम्। पाचनंशमनीयंवा कषायंपाययेत्तुतम् इति ॥ ज्वरितंवातज्वरिणम्। षडहेऽतीतइत्युपलक्षणम् । पित्तज्वरिणं दशाहेऽतीते । श्लेष्मज्वरिणं द्वादशाहेऽतीते। लघ्वन्नंभोजितंज्वरिणम् ॥ ११३ ॥

और धन्वन्तरि ने कहा हैं कि लंघनादिक (आदिशब्दसे पक्केजलका पीना वायु रहित स्थानमें रहना और भारी तथा उष्ण बस्त्र का धारण करना आदिक लियेजातेहैं) कियेहुए परिपाकहुएबात वाला बातज्वर छःदिनके व्यतीत होजानेपर बैद्यके बशीभूतहोकर जो औषध तथा अन्नादि का सेवन

करताहै वह निस्सन्देह ज्वरका नाश करताहै चरकने कहाहै कि बात ज्वर वाले को छःदिनके उपरान्त पित्त ज्वर वालेको दश दिनके उपरान्त और कफ ज्वर वालेको बारहदिनके उपरान्त हलकाअन्न भोजन कराकर पाचन अथवा शमन कषाय पानकरावै ॥ ११३ ॥

सज्वरंज्वरमुक्तम्वादिनान्तेभोजयेल्लघु । गुर्वभिष्यन्द्यकालेच ज्वरीनाद्यात्कथञ्चन॥ दिनान्तेऽन्तशब्दोऽत्र मध्यवाचीतेनत्रिधा विभक्तस्यदिवसस्यमध्यभागे पित्तस्यप्राधान्यसमये। उक्तञ्च वाग्भटेन॥ तेव्यापिनोऽपिहृन्नाभ्यो रधोमध्योऽर्ध्वसंश्रयाः । वयोऽहोरात्रभुक्तानान्तेऽन्तमध्यादिमाःक्रमात् ॥ तेवातपित्त श्लेष्माणः ॥ ११४ ॥

ज्वर युक्त अथवा ज्वर रहित मनुष्यको दिनके अन्त में हलका भोजन करावे और भारी तथा अभिष्यन्दी वस्तु अथवा अकालमें ज्वर वालेको भोजन न कराना चाहिये यहाँ अंत शब्दका अर्थ मध्य है इसलिये दिनके तीनभाग करके पित्तकी प्रधानता वाले मध्य भागमें भोजन देना चाहिये और बाग्भटने भी कहाहै कि बात पित्त और कफ यह व्यापक होने परभी क्रमसे हृदयतथा नाभि के नीचे मध्यमें तथा ऊपर स्थितरहते हैं और अवस्था दिनरात्रि तथा भोजन के अन्त मध्य और आदिमें प्रबल होते हैं॥ ११४ ॥

पित्तकालोऽपिमध्याह्नादर्वाक् । यतआह ॥ याममध्येनभोक्तव्यं यामयुग्मंनलङ्घयेत् । याममध्येरसोत्पत्तिर्यामयुग्माद्बलक्षयः ॥ एततूसंख्य परमितिचेत्तन्नयत आह । श्लेष्मक्षयेप्रवृद्धोष्मा बलवाननलस्तदा । वेगापायेऽन्यथातद्धि ज्वरवेगाभिवर्द्धनम् ॥ तदापित्तप्राधान्यसमये अन्यथा उक्तसमयादन्यथा वेगापाये जठराग्निवेगनाशे तद्भोजनं ज्वरवेगाभिवर्द्धनं भवतीत्यर्थः ॥ ११५ ॥

पित्तके समयमें भी मध्याह्नसे पहले भोजनकरना चाहिये क्योंकि कहागया हैकि पहले पहरके भीतर और दोपहरके उपरान्त भोजन न करे क्योंकि पहले पहरमें रसकी उत्पत्ति होतीहै और दोपहरके उपरान्त बलका नाशहोताहै यह संख्याके लिये कहागयाहै इसका सन्देह नहीं करना चाहिये क्योंकि कहागया है कि ऊष्माके बढ़नेसे कफका क्षयहोजाने पर अग्नि बलवान्होती है इस्से पित्तकी अधिकताके समय भोजन अवश्य देनाचाहिये नहीं तो जठराग्निके वेगके नाशहोजाने पर भोजनदेने से ज्वरका वेगबढ़ता है ॥ ११५ ॥

अत्र विषमज्वरिणोऽन्नदानकाल विशेषमाह चरकः ॥

सर्वज्वरेषुसप्ताहं मात्रावल्लघुभोजयेत् । वेगापायेऽन्यथा तद्धि ज्वरवेगाभिवर्द्धनम् ॥ सर्वज्वरेषुसर्वविषमज्वरेषुवेगापाये ज्वरवेगापाये भोजयेत् । अन्यथा ज्वरवेगापाये विनातद्भोजनं ज्वरवेगाभिवर्द्धनं भवति ॥ ११६ ॥

विषमज्वरमें अन्नदेनेका विशेषसमयचरकने कहाहै ॥

सब प्रकारके विषम ज्वरमें ज्वरके वेगके शान्तहोजाने पर सातदिनतक मात्राके अनुसार हलका भोजनदेना चाहिये और ज्वरके वेगके शान्तहुए विना भोजनदेने से ज्वरका वेगबढ़ताहै॥ ११६ ॥

अथान्नग्रहणाय स्थानमाह ॥

आहारनिर्हारविहारयोगाः सदैवसद्भिर्विजनेविधेयाः । इति ॥ ११७ ॥

भोजनकरनेका स्थान ॥

सज्जन लोग आहार मलमूत्रका त्याग और विहार सदैव निर्जन स्थानमें करें ॥ ११७ ॥

अत्यबलस्य ज्वरितस्य भोजनायोपवेशनप्रकारमाह सुश्रुतः ॥

ज्वरेप्रमेहोभवतिस्वल्पैरपिविचेष्टितैः । निषण्णंभोजयेत्तस्मान्मूत्रोच्चारौचकारयेत् ॥ निषण्णंयथास्थानस्थितमेव नतुस्थानान्तरं नीतम् ॥ ११८ ॥

अत्यन्तनिर्बलज्वरवालेको सुश्रुतका कहाहुआभोजनकेलिये बैठनेकाप्रकार ॥

ज्वरमें थोड़ीभी चेष्ठाकरनेसे मोह उत्पन्न होताहै इसलिये उसको अन्य स्थानमें न लेजाकर जिस स्थानमें बैठाहो उसी स्थानमें भोजन करावे और मल मूत्रका त्यागभी वहीं करावे ॥ ११८ ॥

अन्नग्रहणसमये प्रथमं ज्वरितेनकवलः कर्त्तव्य इत्याह ॥

यथादोषोचितैर्द्रव्यैः कर्त्तव्यःकवलग्रहः । अरोचकास्यवैरस्य मलपूतिप्रसेकहृत् ॥ भृष्टजीरकचूर्णेन सिंधुजन्मयुतेनच । जिह्वादंतान्मुखस्यान्तर्घृष्ट्वाकवलमाचरेत् ॥ मुखे मलंविगन्धत्वं विरसत्वंचनश्यति । मनःप्रसन्नंभवति भोजनेऽतिरुचिर्भवेत् ॥ ११९ ॥

भोजनके समय ज्वरवालेको प्रथम कवलका ग्रहण करना चाहिये ॥

ज्वरवाला दोषके अनुसार औषधियोंके द्वारा कवलका ग्रहण करे इस्से अरुचि मुखकी विरसता मैल दुर्गन्धि और लार बहना आदिक नष्ट होतेहैं भुनाहुआ जीरा सेंधानोन मिलायके चूर्णकरे उसके द्वारा जिह्वा दांत और मुखके मध्यमें रगड़कर पूर्वोक्त बिधिके अनुसारकवलके ग्रहणकरने से मुखका मल दुर्गन्ध तथा विरसताका नाश और मनकीप्रसन्नता तथा भोजनमें रुचि होतीहै ११९॥

ज्वरितोहितमश्नीयाद्यद्यप्यस्यारुचिर्भवेत् । अन्नकालेऽह्यभुञ्जानःक्षीयतेम्रियतेऽपि च ॥ अयमर्थः। यद्यपिज्वरितस्यहितेभक्ष्येऽरुचिर्भवेत्। तथापिज्वरितोहितमेवाश्नीयादितिनियमः (यतआहसुश्रुतः) गुर्वभिष्यन्दिकालेचज्वरीनाद्यात्कथञ्चन । नतुतस्याहितंभुक्तमायुषेवासुखायच ॥ आनद्धस्तिमितैर्दोषैर्यावन्तंकालमायुषः । तावत्कालंसलघ्वन्नमश्नीयात्सविरक्तवत् ॥ आनद्धःस्तिमितैर्दोषैःअपक्वैर्दोषैर्व्याप्तइत्यर्थः । ननुहितवस्तुनिकथमरुचिःस्यादतआह ॥ सातत्यात्स्वाद्वभावाच्चपथ्यंद्वेषत्वमागतमिति । सातत्यादेकस्यैवभक्ष्यस्यसर्वदोषयोगात्स्वाद्वभावात्भक्ष्यान्तरादपिविस्वादुतः । पथ्यमप्रियंस्यात्तथापितदेवपथ्यम् ॥ कल्पनाविधिभिस्तैस्तैःप्रियत्वंगमयेत्पुनरिति । अथज्वरितोऽन्नकालेऽश्नीयादेवेतिद्वितीयोनियमःकुतइतिचेत्हियतहेतोःअभुञ्जानःक्षीयते ॥ पक्वदोषधातुर्भवतिततःम्रियतेऽपिच ॥ १२० ॥

ज्वरवाला मनुष्य हित भोजनमें अरुचि होनेपरभी हितकारीही भोजन करे अहितकारी न करे यह नियमहै भोजनके समय भोजन न करने से क्षीणता और मृत्युभी होती है सुश्रुतने कहाहै कि देरमें पचनेवाली और अभिष्यन्दी (दहीआदि) बस्तु और अकालमें भोजन ज्वरवाला त्यागकरदे

क्योंकि अहित भोजन आयु और सुखकारी नहींहोताहै रोगी जबतक परिपाक रहित दोषोंसे व्याप्त हो तबतक विरेचन वालेके समान हलका भोजनकरे हितकारी बस्तुमें अरुचि क्यों होती है इस सन्देहके दूरकरनेको कहते हैं कि निरन्तर एक भी वस्तुके खानेसे अथवा स्वादुके न होने से जो पथ्यमें अरुचि होजाय तो अनेक प्रकारकी भोजन बनानेकी बिधियोंसे रोगीको फिर रुचि उत्पन्न करावे ज्वरवालेको भोजनके समय अवश्य भोजन करना चाहिये यह दूसरा नियमहै क्योंकिसमय पर भोजन न करनेसे दोष और धातुओंका परिपाक होकर क्षय होनेसे मृत्युतक होजाती है॥१२०॥

ज्वरितायहितान्यन्नादीन्याह ॥

रक्तशाल्यादयःशस्ताःपुराणाःषष्टिकैःसह। यवाग्वोदनलाजार्थेज्वरितानांज्वरापहाः॥ मुद्गान्मसूरांश्चणकान्कुलत्थान्समकुष्ठकान्। यूषार्थेयूषसात्म्यानांज्वरितानांप्रदापयेत्॥ पटोलपत्रंवार्त्ताकुंकुलकंकारवेल्लकम्। कर्कोटकंपर्पटकंगोजिह्वांबालमूलकम्॥ पत्रंगुडूच्याशाकार्थेज्वरितानांज्वरापहे १२१॥

ज्वरवालेको हितअन्नादिक॥

पुराने लाल धान्यादिक और साठी यह ज्वर नाशक होते हैं इसलिये ज्वर वालेको इनकी यवागू भात और खीलें श्रेष्ठ हैं मूंग मसूर चने कुलथी और मोठ इनका यूष ज्वर वालोंको देवे पर्वल के पत्ते बैंगन पर्वल करेला खिकसा पित्तपापड़ा गोभी कच्ची मूली और गिलोयकी पत्ती इन का शाक ज्वर वाले को ज्वर के नाश करने को देवे॥ १२१॥

लावान्कपिञ्जलानेणान्हरिणान्पृषतान्शशान्। कुरंगान्कालपुच्छांश्चतथैवमृगमातृकान्। मांसार्थेमांससात्म्यानांज्वरितानांप्रदापयेत्॥ सारसक्रौञ्चशिखिनस्तथातित्तिरकुक्कुटान्। गुरूष्णत्वान्नसंशन्तिकेचिदेवंव्यवस्थिताः॥ तित्तिरइत्यन्यकृष्णतित्तिरः॥ १२२॥

मांस के अभ्यास वाले ज्वर रोगी को लवा सफेद तीतर काला हिरन ताम्रवर्ण हिरन चित्र वर्ण हिरन खरगोश कुछताम्र वर्ण के बड़े हिरन काली पूंछ वाले हिरन और मोटे मृग इनसबका मांस देवे सारस कुरर मोर काला तीतर और मुर्गा इनसबका मांस भारीपन और उष्णता से ज्वरवाले को हितकारी नहीं है यह किसी२ का मतहै॥ १२२॥

ज्वरितानांप्रकोपंतुयदायातिसमीरणः। तदैतेऽपिहिशस्यन्तेमात्राकालोपपादिताः॥ निम्बुकंदाड़िमंधात्रीपलमम्लंप्रकांक्षते। प्रदद्यादम्लसात्म्यायकाञ्जिकंवापुरातनम्॥ एतेषांगुणनामानिपूर्वोक्तानि॥ १२३॥

जिस समय ज्वरवाले की बायु कुपितहो उस समय यह संपूर्ण मांस भी समय और मात्राके अनुसार हितकारी हैं खटाईके अभ्यासवाले ज्वर रोगी को निंबू अनार आंवला अथवा पुरानी कांजी देनी चाहिये इनसबके नाम और गुण पहले कहे गये हैं॥ १२३॥

अथान्नसाधनप्रक्रियामाह। तत्रमण्डस्यलक्षणंविधिर्गुणाश्च॥

तण्डुलानांसुसिद्धानांचतुर्दशगुणेजले। रसःसिक्थैर्विरहितोमण्डइत्यभिधीयते॥

शुण्ठीसैन्धवसंयुक्तोदीपनःपाचनश्चसः । अन्नस्यसम्यक्सिद्धान्नज्ञेयामण्डस्यसिद्धता ॥ पेयायूषयवागूनांविलेपीभक्तयोरपि । मण्डोग्राहीलघुःशीतोदीपनोधातुसाम्यकृत् ॥ ज्वरघ्नस्तर्पणोबल्यःपित्तश्लेष्मश्रमापहः ॥ १२४ ॥

श्रन्नबनाने की प्रक्रिया मण्डके लक्षण विधिऔर गुण ॥

चौदह गुने जलमें परिपाक किये गये चावलों के भात रहित रसको मण्ड कहतेहैं सोंठ और सेंधव युक्त मण्ड दीपन और पाचन होताहै मण्ड पेया यूष यवागू बिलेपी और भात इन सबमें अन्न का खूब परिपाक होजानाही सिद्ध होजाने का लक्षण है मण्ड ग्राही हलका शी तलदीपन धातुओंको समकरने वाला ज्वर नाशक तृप्तिकारी बलकारक और पित्त कफ तथा श्रम नाशक होताहै ॥ १२४ ॥

अथ पेयायाविधिर्गुणाश्च ॥

चतुर्दशगुणेनीरेरक्तशाल्यादिभिःकृता । द्रवाधिकास्वल्पसिक्थापेयाप्रोक्ताभिषग्वरैः ॥ सातिलघ्वीग्राहिणीचधातुपुष्टिविधायिनी । तृट्ज्वरानिलदौर्बल्यकुक्षिरोगविनाशिनी ॥ स्वेदाग्निजननीज्ञेयावातवर्चोऽनुलोमनी । शुण्ठीसैन्धवसंयुक्तादीपनीपाचनीचसा ॥ आमशूलहरीरुच्यास्याद्विबन्धविनाशिनी ॥ १२५ ॥

पेयाकीविधि औरगुण ॥

चौदहगुने जलमें परिपाक कियेगये लालधानोंके चावल थोड़ेहों और जलअधिकहो इसको वैद्य लोग पेया कहते हैं पेयाबहुत हलकी ग्राही धातुओंकी पुष्टकरने वाली स्वेद तथा अग्निवर्द्धक बात तथा मलको अपने मार्गमें लेजाने वाली और तृषाज्वर वाय दुर्बलता तथा कोखके रोगकी नाशकरने वाली होतीहै यह सोंठ और सेंधानोनसे युक्त दीपन पाचन रुचिकारक और आमशूल तथा विबन्ध नाशक होती है ॥ १२५ ॥

अथ प्रमथ्यायाविधिर्गुणाश्च ॥

प्रमथ्याप्रोच्यतेद्रव्यपलात्कल्कीकृताच्छृता । तोयेऽष्टगुणितेतस्याःपानमाहुःपलद्वयम् ॥ द्रव्यंपाचद्रव्यंतस्याःपलद्वयशेषायागुणैःप्रमथ्यापेयावत्ततोलघ्वीविशेषतः ॥ १२६ ॥

प्रमथ्याकी विधि औरगुण ॥

चारतोले वस्तुअठगुनेजलमें परिपाक करनेसे जब आठतोलेबाकीरहै तब उतारले इसकोप्रमथ्या कहतेहैं प्रमथ्यामेंपेयाके समान गुणहोतेहैंऔरयहविशेषकरके पेयाकीअपेक्षाहलकीहोतीहै १२६ ॥

अथ यूषस्यविधिर्गुणाश्च ॥

अष्टादशगुणेनीरेशिम्बीधान्यसृतोरसः । विरलोऽन्नोघनःकिञ्चित्पेयातोयूषउच्यते ॥ उक्तःसएवनिर्यूहोरुचिकृच्चविशेषतः ॥ १२७ ॥

यूषकीविधि औरगुण ॥

अठारहगुने जल में शिम्बी धान्य को परिपाक करनेसे पेयाकी अपेक्षा कुछ गाढ़ा और थोड़ेअन्न वालाजो रसतैयार होताहै उसको यूष और निर्यूहभीकहते हैं यह विशेषकरके रुचिकारीहोताहै १२७ ॥

यूषस्यप्रकारान्तरमाह ॥

कल्कद्रव्यपलंशुण्ठीपिप्पलीचार्द्धकार्षिकी । वारिप्रस्थेनविपचेत्तद्द्रवोयूषउच्यते ॥
अयमर्थः । यूषान्तंपलमितंतत्कल्कीकृतम् । शुण्ठीपिप्पलीचसमुदितार्द्धकर्षमितात्क ल्कीकृतात् । उभयमपिप्रस्थमितेनवारिणापचेत् । तद्द्रवोयूषः । यूषोबल्योलघुःपाकेरु च्यःकण्ठ्यःकफापहः ॥ १२८ ॥

यूषकी दूसरीविधि ॥

जिस अन्नका यूष बनानाहो उस अन्नको चार तोले कूटकर छःमासे कुटीहुई सोंठ और पीपल मिलावे फिरचौंसठ तोले जलमें परिपाक करे इसके रसको यूष कहते हैं यूष बलकारी हलका रुचि कारी कंठको हित और कफनाशक होताहै ॥ १२८ ॥

अथ मुद्गयूषविधिः । वृन्दटीकायान्तन्त्रान्तरे ॥

मुद्गानांद्विपलंतोयेश्रृतमर्द्धाढकोन्मिते । पादस्थंमर्दितंपूतंदाड़िमस्यपलेनतत् ॥
युक्तंसैन्धवविश्वाह्वधान्यकैःपादकार्षिकैः । कणाजीरकयोश्चूर्णाश्च्नैःकेनावचूर्णितम् ॥
संस्कृतोमुद्गयूषोऽयंपित्तश्लेष्महरोमतः ॥ (अथमुद्गयूषगुणाः) मुद्गानामुत्तमोयूषो दीपनःशीतलोलघु ॥ व्रणोऽर्द्धजन्तुतृट्दाहकफपित्तज्वरास्रजित् । (अथमुद्गामलकयूष गुणाः) मुद्गामलकयूषस्तुभेदीपित्तानिलापहः ॥ तृट्दाहशमनःशीतोमूर्च्छाश्रममदापहः (अथ मसूरयूषगुणाः) मसूरयूषःसंग्राहीवृंहीस्वादुःप्रमेहनुत् ॥ १२९ ॥

मूंगके यूषकी विधि ॥

आठतोले मूंगको एकसौ चौबीस तोले जलमें पाककरे जब चौथाई जल बाकी रहै तब खूबघोट कर चार तोले अनार का रस सेंधानोन सोंठ धनियां जीरा और पीपल का चूर्ण मिलावे इसप्रकार से सिद्ध हुआ मूंगका यूष कफ पित्त नाशक होता है मूंगका उत्तम यूष दीपन शीतल हलका और घाव हंसली के ऊपर की पिड़ा दाह कफ पित्त ज्वर तथा रक्त पित्त नाशक होताहै और मिलेहुयेमूंग और आंवलेका यूष दस्तावर शीतल और पित्त वात तृषा दाह मूर्च्छा श्रम तथा मदका नाशकहो ता है मसूर का यूष ग्राही धातु बर्द्धक मधुर और प्रमेह नाशकहोता है ॥ १२९ ॥

अथ यवाग्वादिविधिर्गुणाश्च ॥

यवागूःषड्गुणेतोयेसंसिद्धाघनसिक्थका । पृथक्द्रवस्तुविरलैःसंयुक्ताज्वरिणेहि ता ॥ यवागूर्दीपनीलघ्वीतृष्णाघ्नीवस्तिशोधिनी । श्रमग्लानिहरीपथ्याज्वरेचैवाति सारिके ॥ १३० ॥ यवागू आदिकी विधि और गुण ॥

छःगुने जलमें चावलोंको परिपाक करके जब चावल और पानी अलग २ बनारहै तब उतारले यह विधि पूर्वक पीहुई ज्वरवालेको हितकारीहै यवागू दीपन हलकी तृषानाशक मूत्राशयकी शोधक काम तथा ग्लानिकी नाशक ज्वरातीसार में हितकारीहै ॥ १३० ॥

अथ विलेप्याविधिर्गुणाश्च ॥

चतुर्गुणाम्बुसंसिद्धाविलेपीघनसिक्थका । पृथक्द्रवेणरहितास्याताशिथिलभक्ति

का॥ संसिद्धाऽतीवसिद्धाविलेपीगिलहथीइतिलोके । विलेपीदीपनीबल्याहृद्यासंग्राहिणीलघुः । व्रणाक्षिरोगिणांपथ्यातर्पणीतृट्ज्वरापहा ॥१३१॥

विलेपीकी विधि और गुण ॥

चौगुने जलमें चावलोंको बहुत पकायके जब भात अधिक होय जल कमहो और पानी अलगन हो इसको विलेपी और शिथिल भक्तिका (गुलाथी) कहतेहैं विलेपी दीपन बलकारी हृदयकोहित ग्राही हलकी घाव तथा नेत्ररोग वालोंको पथ्य तृप्तिकारी और तृषाज्वर नाशक होती है ॥ १३१ ॥

अथ भक्तस्यविधिर्गुणाश्च ॥

जलेचतुर्दशगुणेतण्डुलानांचतुष्पलम्। विपचेत्स्रावयेन्मण्डतद्भक्तंमधुरंलघु॥(चक्रदत्तस्तु) अन्नम्पञ्चगुणेतोयेयवागूंषड्गुणेपचेत् । तत्रान्नंभक्तंतथाच । भिस्साऽस्त्रीभक्तमथोन्नमोदनोऽस्त्रीसदीदिविरित्यमरः। भक्तंवह्निकरंपथ्यंतर्पणंमूत्रलंलघु॥ सुधौतंप्रस्नुतंचोष्णविशदङ्गुणवत्तरम्। अधौतमस्नुतंशीतंवृष्यङ्गुरुकफप्रदम्॥ अत्युष्णंबलहृद्रूक्षंशीतंशुष्कञ्चदुर्ज्जरम्। अतिक्लिन्नंग्लानिकरंदुर्ज्जरन्तण्डुलान्वितम् ॥ अतिक्रान्तसजलंयत्पर्युषितम्। भृष्टतण्डुलजंरुच्यंसुगन्धिकफहृल्लघु ॥ वातास्थापितमन्दाग्निविविक्तानांप्रशस्यते॥ १३२ ॥

भातकी विधि और गुण ॥

चारपल चावल चौदहगुने जलमें परिपाक करके मांड़ निकालनेसे भातबनताहै यह मधुर और हलका होता है चक्रदत्तने कहाहै कि पचगुने जलमें अन्न और छःगुने जलमें यवागूका पाक करे यहां अन्न शब्दका अर्थ भात है क्योंकि अमरसिंह ने भिस्साभक्त अन्न ओदन और दीदिविभात के नाम कहेहैं भात दीपन पथ्य तृप्तिकारी मूत्रवर्द्धक और हलका होता है अच्छे प्रकार धोयेहुये चावलोंका मांड़ निकालाहुआ कुछ उष्ण निर्म्मल भात अधिक गुणकारी होताहै बिनधोये चावलोंका बिन मांड़ निकाला हुआ ठंढा भात पुष्टिकारक भारी और कफकारक होता है अत्यन्त उष्ण भात बल नाशक शीतल तथा रूखाहुआ भात बहुतदेरमें पचनेवाला बहुत गीला भातग्लानिकारक कुछ कच्चा भात बहुत देरमें पचनेवाला और भूनेहुए चावलोंका भात रुचिकारक सुगन्धित कफनाशक हलका और जिनको वमन विरेचन तथा आस्थापन दियागयाहो तथा मन्दाग्निवालोंको हितकारीहोताहै१३२

अथरसौदनविधिः । वृन्दटीकायान्तन्त्रान्तरे ॥

मांसलंशकथिजंमांसंतथानस्थिचतैत्तिरम्। चतुःपलोन्मितंसूक्ष्मङ्कलिपतंक्षालितञ्जले॥ पिप्पलीपिप्पलीमूलंशुण्ठीजीरकधान्यकैः॥ द्विशाणैःसंयुतेतोयेक्वाथ्यमर्द्धाढकोन्मिते। पादस्थितंजलंतत्रदाड़िमात्कुट्टितांजरेत्। तंरसंमर्दितांहिंगुभृष्टसैन्धवजीरकैः ॥ युक्तंप्रधूपितंपथ्यंशुद्धानांशुद्धिकांक्षिणाम्। (अथरसौदनगुणाः) रसौदनोगुरुर्वृष्योबल्योवातज्वरापहः॥ १३३ ॥ रसोदनकीविधि औरगुण ॥

तीतरकी जांघके अस्थि रहित मोटे सोलह तोले मांसको खूबकाटकर पानीमें धोकर पीपल पीपलामूल सोंठ जीरा और धनियां यह सब आठ २ माशे मिलायके एकसौ चौबीस तोलेजलमें

पाककरे जब चौथाई रहजाय तब उसमें भूनीहींग सेंधानोन और जीरायुक्त अनारकारस मिलावे यह कुछ गरम २ भातकेसाथ खायाहुआ बमन विरेचनादिसे शुद्ध और शुद्धताके चाहने वालोंको पथ्यहै रसोदन भारी वीर्य्यवर्द्धक बलकारी और वातज्वर नाशक होताहै ॥ १३३ ॥

केवलजलसाध्यान्मण्डादीनभिधायौषधसाध्यानांतेषांप्रक्रियामाह ॥

साध्यंचतुःपलंद्रव्यंचतुःषष्टिपलेऽम्बुनि। तत्क्वाथेनार्द्धशिष्टेनमण्डपेयादिसाधयेत् ॥ वृद्धवैद्याःपलंद्रव्यंग्राहयत्याढकेऽम्भसि। भेषजस्यातिबाहुल्यात्कदाचिदरुचिर्भवेत् ॥ यैरन्नैरौषधैर्यैश्चकृतामण्डादयोबुधैः। विचार्य्यतद्गुणानेतांस्तद्गुणानेवनिर्दिशेत् ॥ १३४ ॥

केवलजलकेद्वारा सिद्धहोनेवाले मंडादिकोंकोकहकर औषधसेसिद्धहोनेवालोंकी प्रक्रियाकहतेहैं ॥

चारपल औषधको चौंसठपल जलमें औटायके जब आधा बाकीरहै तब उसीक्वाथसे मांड तथा पेया आदिक बनावे वृद्धवैद्य एकपल औषधको चौंसठपल जलमें काढाबनाना कहते हैं क्योंकि औषधके बहुत होनेसे कभी २ अरुचि होजाती है जिनअन्न और औषधियोंके द्वारा मांड़आदिक बनाये जातेहैं उन औषधियों और अन्नके गुणोंको विचारकर मंडआदिके गुणकहने चाहिये ॥ १३४ ॥

अथौषधसिद्धापेयागुणाः ॥

अन्नकालेहितापेया यथास्वंपाचनैःकृता । दीपनीपाचनीलघ्वी ज्वरार्त्तानांज्वरापहा ॥ यथास्वंपाचनैःकृता यथा दोषंपाचनैःकृता ॥ १३५ ॥

औषधसे सिद्धपेया आदि के गुण ॥

दोषके अनुसार पाचन औषधियोंसे की हुई पेया भोजनके अवसरमें सेवनकीगई दीपन पाचन हलकी और ज्वरवालोंके ज्वरकी नाशक होती है ॥ १३५ ॥

यथा ॥

पञ्चमूल्याःकषायन्तुपाचनंवातिकज्वरे । सक्षौद्रंपैत्तिकेमुस्तकटुकेंद्रयवैःकृतम् ॥ पिप्पल्यादिकषायन्तुपाचनंकफजेज्वरे । लघुनापञ्चमूलेन पिप्पल्यासहधान्यया ॥ महत्यापञ्चमूल्याथ व्याघ्रीदुःस्पर्शगोक्षुरैः । सिद्धानिभिषगन्नानि प्रयुञ्जीतयथाक्रमम् ॥ वातपित्तेश्लेष्मपित्ते कफवातेत्रिदोषजे। अयमर्थः। वातपित्तेषुलघुनापञ्चमूलेन सिद्धान्यन्नानिभिषक्प्रयुञ्जीत ॥ शालिपर्णीपृष्ठिपर्णी कण्टकारीद्वयंतथा । गोक्षुरःपञ्चमःप्रोक्तः पञ्चमूलमिदंलघु ॥ श्लेष्मपित्तेपिप्पल्यासहधान्ययाकफवाते महत्यापञ्चमूल्या ॥ श्रीफलःसर्वतोभद्रापाटलागणिकारिका । श्योनाकःपंचमःप्रोक्तंपंचमूलमिदंमहत् ॥ यवासःत्रिदोषजेव्याघ्रीदुःस्पर्शगोक्षुरैःव्याघ्रीकण्टकारिकादुःस्पर्शः १३६॥

दोषके अनुसार पाचन औषध ॥

वात ज्वरमें पंचमूलका क्वाथ पित्तज्वरमें मोथा कुटकी तथा इन्द्रजौका सहतयुक्त क्वाथ और कफ ज्वरमें पिप्पल्यादि गणका क्वाथ पाचनहोता है वात पित्त ज्वरमें छोटे पंचमूल (शालिपर्णी पृष्ठिपर्णी दोनों भटकटैया यह छोटा पंचमूलहै)के क्वाथसे बनेहुए अन्नदेवे कफपित्त ज्वरमें पीपल तथा धनिये

के क्वाथसे पाक कियेहुए अन्नदेवे कफ वात ज्वरमें बड़े पंचमूल (बेल गम्भारी पाटला अरनी और सोनापाढ़ा यह बड़ा पंचमूलहै) के क्वाथसे पाक कियेहुए अन्नदेवे और त्रिदोष ज्वरमें भटकटैया जवासा तथा गोखुरू के क्वाथसे पाक कियेहुए अन्नदेवे ॥ १३६ ॥

पेयांवारक्तशालीनांवस्तिपार्श्वशिरोरुजि।श्वदंष्ट्राकण्टकारीभ्यांसिद्धांज्वरहरींपिवेत्॥ विवद्धवर्चाःसयवांपिप्पल्यामलकैःशृताम् । सर्पिष्मतींपिवेत्पेयांज्वरीदोषानुलोमिनीम्॥ कासीश्वासीचहिक्कीचपञ्चमूलीशृतांपिवेत् । यवोऽत्रान्तः अत्रपञ्चमूलीबृहतीलघ्वीचहि ता ॥ तथाशृतांपेयांपिवेदित्यर्थः ॥ पेयाभेषजसंयोगाल्लघुत्वाच्चाग्निदीपनी । वातमूत्र पुरीषाणांदोषाणांवानुलोमिकाम् ॥ स्वेदनायचसोष्णत्वाद्द्रवत्वात्तृट्क्षयायच । आहार भावात्प्राणायसरत्वाल्लाघवायच ॥ ज्वरघ्नीहेतुसाम्यत्वात्तस्मात्तांपूर्वमाचरेत् । हेतुसा म्यत्वाद्धेतवःवातपित्तकफास्तेषांसाम्यत्वात् ॥ १३७ ॥

गोखुरू और भटकटैयाके क्वाथसे पाक कीगई लालधानके चावलोंकी ज्वरनाशक पेया मूत्राशय पसली तथा शिरकी पीड़ा में पीनी चाहिये ज्वरवाला मलके रुकजानेपर जौ सहित पीपल और आंवलोंके क्वाथके द्वारा पाककी हुई पेयाको घी डालकरपिये यह दोषोंको अपने २ मार्गपर करदेती है खांसी श्वास तथा हिचकीवाला छोटे अथवा बड़े पंचमूल के क्वाथसे पाक कीहुई पेया को पिये पेया औषधके संयोगसे तथा हलकेपनसे दीपन और बात मूत्र तथा मलकी अपने मार्गके अनुसार करनेवाली होतीहै पेया उष्णताके कारण स्वेदकारक पतलेपनसे तृषानाशक आहार होने से प्राण धारक दस्तावर होने से हलका करनेवाली और वात पित्त तथा कफकी समता करनेके कारण ज्वर नाशकहोती है इसलिये पहले पेया का पान करे ॥ १३७ ॥

पञ्चमुष्टिकयूषः ॥

यवकोलकुलत्थानांमुद्गमूलकशुण्ठयोः । एकैकमुष्टिमादायपचेदष्टगुणेजले ॥ पञ्चमु ष्टिकइत्येषवातपित्तकफापहः । शूलेप्रशस्यतेगुल्मेकासेश्वासेक्षयेज्वरे ॥ १३८ ॥

पंचमुष्टिक यूष ॥

जौ बेर कुलथी मूंग और सूखी मूली इन सबको चार २ तोले लेकर अठगुने जलमें पाककरे यह पंचमुष्टिक नाम यूष बात पित्त तथा कफ नाशक और शूल गुल्म खांसी श्वास क्षय तथाज्वर में श्रेष्ठ होताहै ॥ १३८ ॥

रुद्धमूत्रपुरीषस्यगुदेवर्तिंनिधापयेत् । पिप्पलीपिप्पलीमूलयवानीचव्यसाधिताम् ॥ पाययेत्तुयवागूम्बामारुताद्यनुलोमिनीम् ॥ १३९ ॥

जिसकामल मूत्र रुक गयाहो उसकी गुदा में बत्ती रक्खै अथवा पीपल पीपलामूल अजवा- इन और चव्य इन सब के क्वाथ से पाक की गईवातादिकोंको अपने मार्गमें लेजाने वाली यवागू पिलावे ॥ १३९ ॥

पेयायवाग्वोश्चक्कचिदपवादमाह ॥

मदात्ययेमद्यनित्येग्रीष्मेपित्तकफोत्थिते ॥ ऊर्ध्वगेरक्तपित्तेचयवागूर्नहिताज्वरे १४०॥

पेया और यवागूका कहीं २ निषेध कहाजाता है ॥

मदात्ययरोग में नित्य मद्य पीने वालेको ग्रीष्म ऋतु में पित्त तथा कफसे हुए ज्वर में और ऊपर गयेहुए रक्तपित्त में यवागू हितकारी नहीं है ॥ १४० ॥

दाहच्छर्दिर्दितंक्षामंनिरन्नंतृष्णयान्वितम् । घर्मार्तमद्यपञ्चापितोयालोड़ितशक्तुकम् ॥ शर्करामधुसंयुक्तंपाययेल्लाजतर्पणम् । लाजतर्पणंलाजशक्तुरूपंतर्पणम् ॥ ज्वरापहैः फलरसैर्युक्तमन्नंहितंक्वचित् ॥ १४१ ॥

दाहतथा छर्दिसे पीड़ित क्षीण लंघन कियेहुए प्यासे धूपसे व्याकुल और मद्यपीने वालोंकोशक्कर और सहत युक्त लाजातर्पण (तृप्तिकारी खीलोंके सत्तू) पिलावे और कहीं२ ज्वर नाशक फलोंके रससे युक्त अन्न हितकारी होताहै ॥ १४१ ॥

सन्तर्पणस्वरूपमाहधन्वन्तरिः ॥

द्राक्षादाड़िमखर्जूरमृदिताम्बुसशर्करम् । लाजचूर्णसमध्वाज्यंसन्तर्पणमुदाहृतम् ॥ लाजचूर्णद्राक्षादिजलशर्करामध्वाज्यसहितंतर्पणमुक्तमित्यर्थः ॥ १४२ ॥

धन्वन्तरिका कहाहुआ संतर्पणका स्वरूप ॥

दाख अनार खजूर घी और सहत इनके साथ खीलोंके चूर्णको शक्कर सहित जलमें घोलले यह संतर्पण कहाताहै ॥ १४२ ॥ लाजशक्तुगुणाःगुणाधिकारे ॥

लाजानांशक्तवःक्षौद्र सितायुक्ताविशेषतः । छर्द्यतीसारतृड्दाहाविषमूर्च्छाज्वरापहाः ॥ (चरकस्तु) तत्रतर्पणमेवादौप्रदेयंलाजशक्तुभिः । ज्वरापहैःफलरसैर्युक्तंसमधुशर्करम् ॥ १४३ ॥

गुणाधिकारमें कहेहुए खीलों के सत्तुओंके गुण ॥

सहत और शक्करयुक्त खीलोंके सत्तू विशेष करके छर्दि अतीसार तृषा दाह विष मूर्च्छा तथा ज्वर नाशकहोतेहैं चरकने तो कहाहै कि ज्वरनाशक फलोंके रस सहत और शक्करयुक्त खीलोंके सत्तुओंके द्वारा पहले तर्पण देना चाहिये ॥ १४३ ॥

ज्वरघ्नानिफलान्याहचरकएव ॥

द्राक्षादाड़िमखर्जूरप्रियालैःसपरूषकैः । तर्पणार्हस्यदातव्यंतर्पणंज्वरनाशनम् ॥ प्रियालमत्रपक्कफलंनतन्मज्जागुरुत्वात् । तर्पणार्हस्य । दाहच्छर्दितृषार्त्तस्यलंघितस्यक्षीणस्येत्यर्थः ॥ १४४ ॥ चरकके कहेहुए ज्वरघ्नफल ॥

दाख अनार खजूर चिरौंजी और फालसा इनके द्वारा तर्पणके योग्य (दाह छर्दि तथा तृषा से व्याकुल लंघन कियेहुए और क्षीण) मनुष्योंको तर्पण देना चाहिये इस्से ज्वरका नाशहोताहै यहां चिरौंजी का पक्का फल ग्रहण कियाजाता है उसकी मज्जा नहीं ग्रहण कीजाती है क्योंकि वह भारी होती है ॥ १४४ ॥

श्रमोपवासानिलजेहितंनित्यंरसौदनम् । रसोऽत्रमांसस्यरसः । तेनसिक्तोओदनो रसौदनः । अन्नेनव्यञ्जनमित्यनेनसमासः । मुद्गयूषौदनश्चैवहितंकफसमुत्थिते । सएव

सितयायुक्तःशीतःपित्तज्वरेहिताः ॥ सएवमुद्गयूषौदनमेव । कृशोऽल्पदोषोयःक्षीणकफो जीर्णज्वरान्वितः । विवन्धासृष्टदोषश्चरुक्षपित्तानिलज्वरी ॥ पिपासार्त्तःसदाहश्चपय सासमुखीभवेत् (अन्यच्च) अजादुग्धंगुड़ोपेतपातव्यंज्वरशांतये । तदेवतु१यःपींत तरुणेहन्तिमानवम् ॥ तरुणज्वरे (अन्यच्च) जीर्णज्वरेकफेक्षीणेक्षीरंस्यादमृतोपमम् । तदेवतरुणेपीतंविषवद्धन्तिमानवम् ॥ १४५ ॥

श्रम उपवास तथा बातजनित ज्वरमें मांसके रसके साथ भात खाना सदैव हितहै कफज्वरमें मूंगके यूषकेसाथ भात हितहै और पित्तज्वरमें शक्करयुक्त मूंगके यूषकेसाथ शीतल भात हितहै कृश अल्पदोषवाला क्षीण कफ वाला जीर्णज्वरसे युक्त रुकेहुए दोष वाला रूखा पित्त तथा बातज्वर से युक्त तृषासे व्याकुल और दाह युक्त इन सबको दूध हितहै और कहागयाहै कि गुड़युक्त बकरीका दूध ज्वर के दूर करनेको पीना चाहिये परन्तु वही दूध जो नवीन ज्वर में पियाजावे तो मनुष्य का नाश होताहै और भी कहा गया है कि जीर्णज्वर और कफ की क्षिणता में दूध अमृतके समान होता है परन्तु वहीदूध नवीन ज्वर में पीने से बिषके समान मनुष्य को मारताहै ॥ १४५ ॥

अथज्वरिणोनियमानाह ॥

नद्विरद्यान्नपूर्वाह्णेनाभिष्यन्दिकदाचन । नतीक्ष्णान्नगुरुप्रायंभुञ्जीततरुणज्वरी ॥ नजातुतर्पयेत्प्राज्ञःसहसाज्वरकर्षितम् । तेनसंशमितोऽप्यस्यपुनरेवभवेज्ज्वरः ॥ १४६॥

ज्वरवाले के नियम ॥

नवीन ज्वर वाला दोबार अथवा पूर्वाह्ण में भोजन न करे और अभिष्यन्दी तीक्ष्ण तथा भारी बस्तुओंको न खाय बुद्धिमान् वैद्यज्वरसे कृशमनुष्यको सहसा किसी प्रकारका तर्पण न देवे क्योंकि इस्से शान्तहुआभी ज्वर फिर उत्पन्न होजाताहै ॥ १४६ ॥

अथज्वरविमुक्तेपूर्वरूपमाह ॥

दाहःस्वेदोभ्रमस्तृष्णाकम्पविड्भेदसंज्ञता । कूजनञ्चातिवैगन्ध्यमाकृतिर्ज्वरमोक्षणे॥ विड्भेदोमलप्रवृत्तिरत्रसम्पदादिभ्योभावेक्तिप्कूजनंकुन्थनंअतिवैगन्ध्यंगात्रस्य । ज्वर मुक्तौभविष्यत्यामेतल्लक्षणंभवति ॥ नतुदोषक्षयंविनानव्याधिनिवृत्तिःक्षीणाश्चदोषाःक थमेवंविधंरूपंकरिष्यन्ति । उच्यतेकश्चिक्षीणेऽपिविनाशकालेस्वशक्तिंदर्शयति ॥ यथा निर्वाणावस्थायांदीपोविशेषात्प्रज्वलति ॥ वाग्भटोऽप्याह ॥ धातून्प्रक्षोभयन्दोषोमो क्षकालेविलीयते । ततोनरःश्वसन्कूजन्वमन्स्विद्यन्नचेष्टतइति । नचेष्टतेऽचेष्टः स्यात् । त्रिदोषजेज्वरेह्येतदन्तर्वेगेचधातुगे । लक्षणंमोक्षकालेस्यादन्यस्मिन्स्वेददर्श नम् ॥ एतद्दाहादिकंलक्षणंमोक्षकालेएतेष्वेवज्वरेषुस्यात् । केषुत्रिदोषजेषु अन्तर्वेगेधा तुगेज्वरेअन्यस्मिन्स्वेदमात्रदर्शनंभवति ॥ १४७ ॥

ज्वरछूटनेका पूर्वरूप ॥

दाह स्वेद भ्रम तृषा कंप मलकी प्रवृत्ति संज्ञाका होना अव्यक्त शब्द और शरीरमें बहुत दुर्गन्ध यह सब लक्षण जब ज्वरछूटने वाला होताहै तब होतेहैं अब यह सन्देह होता है कि दोषके नाशके

विनारोग नहीं निवृत्तहोसक्ता तो क्षिणहुए दोष उसप्रकारके लक्षणोंको कैसेकर सकेहैं इसका उत्तर यह है कि जैसे दीपक बुझनेके समय बहुत प्रज्वलित होताहै उसीप्रकार क्षीणहुआ भी कोई कोई दोष नाशके समय अपनी शक्ति को दिखाताहै वाग्भटनेभी कहाहै कि दोष आनेके समय धातुओं को क्षोभित करताहुआ नाशकोप्राप्तहोताहै उसीसे मनुष्य हांफताहुआ खींचता हुआ बमन करता हुआ और स्वेद युक्तहो चेष्टा रहित होजाताहै ऊपर कहेहुये लक्षण त्रिदोष ज्वर भीतर वेगवाले ज्वरतथा धातुओं में स्थित ज्वर के छूटनेकेसमय होतेहैं और अन्यज्वरोंमें केवल पसीनाआताहै ॥ १४७ ॥

अथज्वरमुक्तस्यलक्षणमाह ॥

देहोलघुर्व्यपगतक्लममोहतापःपाकोमुखेकरणसौष्ठवमव्यथत्वम् । स्वेदक्षवःप्रकृतियोगिमनोऽन्नलिप्साकण्डूश्चमूर्द्ध्निविगतज्वरलक्षणानि ॥ (सुश्रुतोऽप्याह) स्वेदोलघुत्वंशिरसःकण्डूपाकोमुखस्यच । क्षवथुश्चान्नकांक्षाचज्वरमुक्तस्यलक्षणम् ॥ १४८ ॥

ज्वरके छूटने के लक्षण ॥

शरीरमें हलकापन ग्लानिकानाश मोह तथा तापका नाश मुखमें फुंसियोंका निकलना इन्द्रियों की प्रसन्नता व्यथाका न होना स्वेद छींक मनका यथावस्थित होना अन्नमें इच्छा और शिरमें खुजली यह ज्वरके छूटने के लक्षणहैं सुश्रुतने भी कहाहै कि स्वेद शरीर में हलकापन शिरमें खुजली मुखमें फुंसी निकलना छींक और अन्नमें इच्छा यह लक्षण होतेहैं ॥ १४८ ॥

अथ ज्वरमुक्तस्यनियमाः ॥

व्यायामञ्चव्यवायञ्चस्नानञ्चंक्रमणानिच । ज्वरमुक्तोनसेवेतयावन्नोबलवान्भवेत् ॥ अन्यच्चव्यव्यापायञ्चप्रवातंशिशिरंजलम् । ज्वरमुक्तोनसेवेतयावन्नोबलवान्भवेत् । जन्तोज्वरविमुक्तस्यस्नानंकुर्यात्पुनर्ज्वरम् । तस्माज्ज्वरविमुक्तोऽपिस्नानंविषमिवत्यजेत् ॥ बलवर्णाग्निवपुषांयावन्नप्रकृतिर्भवेत् । तावज्ज्वरेणमुक्तोऽपिवर्जनीयानिवर्जयेत् ॥ १४९ ॥

ज्वर से छूटेहुए के नियम ॥

जिसका ज्वर छूटगयाहो वह जब तक बलवान् न हो तबतक व्यायाम मैथुन स्नान और भ्रमण इनका सेवन न करे और भी कहागयाहै कि जिसका ज्वर छूटगयाहो वह बलवान् होनेतक व्यायाम मैथुन अधिक बायु और शीतल जलका सेवन न करे ज्वर से छूटेहुए मनुष्यको स्नान करने से फिर ज्वर आजाताहै इसलिये ज्वरके छूटजाने परभी जबतक बल न आवे तबतक स्नान को विषके तुल्य त्याग करदेवे बल वर्ण अग्नि और शरीर जबतक पहलासा न होजावे तबतक ज्वरके छूटजाने परभी निषिद्ध पदार्थोंका सेवन न करे ॥ १४९ ॥

अथ वातज्वराधिकारमाह ।

तत्रवातज्वरस्यविप्रकृष्टसन्निकृष्टकारणकथनपूर्विकांसंप्राप्तिमाह ॥

वातलाहारचेष्टाभ्यांवायुरामाशयाश्रयः। बहिर्निरस्यकोष्ठाग्निंज्वरकृत्स्याद्रसानुगः॥ १५० ॥

बात ज्वरका अधिकार । बात ज्वरके दूरवाले और समीपी कारणों समेत संप्राप्ति का वर्णन ॥

बातकारी आहार और बिहारोंकेद्वाराबायु आमाशयमें प्रविष्ट होकर जठराग्निको बाहर निकालती है और रसको दूषित करके ज्वरको उत्पन्न करतीहै ॥ १५० ॥

अथतस्यपूर्वरूपमाह ॥

जृम्भात्यर्थंसमीरणादितिसमीरणज्वरेउत्पत्स्यतिअत्यर्थंजृम्भास्यात् जृम्भाचश्रमादिपूर्विकाभवति १५१ ॥ बातज्वरका पूर्वरूप ॥

बातज्वरके होनेसेपहले सामान्यज्वर सम्बन्धी पूर्वरूपके श्रमादिक लक्षणोंसमेत बहुत जंभाई आती हैं १५१ ॥ अथवातज्वरस्यलक्षणमाह ॥

वेपथुर्विषमोवेगःकण्ठोष्ठ मुखशोषणम् । निद्रानाशःक्षवःस्तम्भोगात्राणांरौक्ष्यमेव च ॥ शिरोहृद्गात्ररुक्वक्त्रवैरस्यंबद्धविट्कता । शूलाध्मानेजृम्भणञ्चभवत्यनिलजे ज्वरे ॥ एतानिलक्षणानिप्रायोभावित्वेनसुश्रुतेनिर्द्दिष्टानि । चकारादन्यान्यपिचरकनिदानोक्तानिबोद्धव्यानि ॥ तान्येवश्लोकेनप्रदर्शयति । भवन्तिविविधावातवेदनास्यादसुप्तता । पिण्डिकोद्वेष्टनंकर्णस्वनोवक्त्रकषायताः ॥ गात्रसादोहनुस्तम्भोविश्लेषःसन्धिजानुनोः । शुष्ककासोवमिर्लोमदन्तहर्षःश्रमभ्रमौ ॥ अरुणंमूत्रनेत्रादितृट्प्रलापोष्णगात्रता । विषमोवेगः । शरीरोष्णतादिरूपोज्वरवेगो । विषमोभवतीत्यर्थःक्षयस्तम्भः छिकायाःअभावःतथाचवाग्भटः । हर्षोरोमांगदन्तेषुवेपथुःक्षयथुग्रहः । श्रमःप्रलापोघर्मेच्छाविलापश्चानिलज्वरे ॥ इतिचरकोऽपिक्षवथूद्गारविनिग्रहइतिशिरोहृद्गात्ररुक् । गात्रपदेप्रयुक्तेशिरोहृच्छब्दप्रयोगः । तत्रतत्रविशेषेणवेदनाबोधनार्थः १५२ ॥

बातज्वरके लक्षण ॥

बातज्वरमें कंप बिषमबेग (कभीकमकभीअधिक) कंठओष्ठ तथा मुखकासूखना निद्राकानाश छींकका बन्दहोना शरीरमेंसूखापन शिर हृदय तथा अंगोंमेंपीडा मुखकी बिरसता मलकारुकना शूल अफरा और जंभाई यहलक्षण होतेहैं यहलक्षण प्रायःहोते हैं इसलिये सुश्रुतने कहेहैं और चकारसे चरकके कहेहुए अन्यलक्षणभी जानने चाहिये वहीआगे कहे जातेहैं अनेकप्रकारकी बायुकीपीड़ा निद्राकानाश पिंडलियोंमेंऐंठन कानोंमेंशब्द मुखमेंकषैलापन शरीरमेंशिथिलताजाबडेकाजकड़ना संधितथा घुटनों में टूटने की सी पीड़ा सूखी खांसी छर्दि रोमांच दांतोंमें सरसराहट श्रम भ्रम मूत्र तथा नेत्रादिकी ललाई तृषा प्रलाप और शरीमें उष्णता यह बात ज्वरके लक्षणहैं यहां बिषम वेगशब्द से शरीर में उष्णता आदि ज्वर वेगका बिषम होना लियाजाताहै और छींकका रुकना अर्थात् नआना बाग्भटने भी कहाहै कि बात ज्वर में रोमांच शरीर में शिथिलता दांतोंमें सरसराहट कंप छींकका न आना भ्रम प्रलाप धूपकी इच्छा और मिलाप यह लक्षण होते हैं और चरकने भी कहाहै कि बात ज्वर में छींकतथा डकारका नआना औरमस्तक हृदय तथा शरीरमें पीड़ाहोतीहैयहां शरीरमेंपीड़ाकहनेसे शिर और हृदयकाबोध होताहै तो इनके फिर कहनेसे इनमें बिशेष पीड़ा होतीहै यहजानना चाहिये १५२

अथवातज्वरचिकित्सा ॥

आमाशयस्थोहत्वाग्निंसामोमार्गानपिधापयन् । विदधातिज्वरंदोषस्तस्माल्लंघनमाचरेत् ॥ इतिवचनात्सामान्यतोज्वरितगात्रस्ययावदारोग्यदर्शनंलङ्घनाभिधानेवा तज्ज्वरिणोलङ्घनविधानेविशेषमाहचरकः । ज्वरितंषडहेऽतीतेलघ्वन्नंप्रतिभोजितम् ।

पाचनंशमनीयञ्चकषायंपाययेद्भिषक् ॥ सुश्रुतोऽप्याह । वातिकेसप्तरात्रेणदशरात्रेण पैत्तिके । श्लैष्मिकेद्वादशाहेनज्वरेयुंजीतभेषजम् ॥ नन्वन्नंवैप्राणिनांप्राणाइतिश्रुतिः तदन्नंविनाप्राणिभिःकथंस्थातव्यमित्याह । दोषाणामेवसाशक्तिर्लंघनेयासहिष्णुता। नहिदोषक्षयेकश्चित्सहतेलंघनंमहत् ॥ कफपित्तेद्रवेधातुसहेतेलंघनंबहु। आमक्षयादूर्ध्वमपिवायुर्नसहतेक्षणम् १५३ ॥

वातज्वर की चिकित्सा ॥

आमाशयमें स्थित आम सहित दोष अग्निको मंद करके मार्गोंको रोकताहुआ ज्वरको उत्पन्न करताहै इसलिये लंघनकरना चाहिये इस वचन के द्वारा सामान्यता से संपूर्ण ज्वर वालोंको आरोग्य पर्य्यन्त लंघनका विधान कियागया परन्तु वातज्वरवाले को लंघन करानेमें चरकने विशेषता कहीहै जैसेकि ज्वरवालेको छःदिनके उपरान्त हलकाअन्न भोजनकरायके पाचन और शमन कषाय पिलाना चाहिये सुश्रुतनेभी कहाहै कि बातज्वरमें सातवेंदिन पित्तज्वरमें दशवेंदिन और कफज्वरमें बारहवें दिन औषध देनीचाहिये अब यह सन्देह होताहै कि अन्नही प्राणियोंकेप्राणहैं इस श्रुतिके अनुसार अन्न के बिना प्राणी कैसे रहसकेहैं इसका उत्तर यहहै कि रोगी जो लंघनोंको सहताहै यह दोषोंही की शक्तिहै दोषोंके क्षय होजानेपर कोई भी बहुत लंघन नहीं सहसक्ताहै कफ और पित्त यह पतली धातुहैं इसलिये आमके परिपाक होजानेपर भी बहुत लंघन सहसक्तेहैं और बात आमके परिपाक होजानेपर क्षणभरभी लंघनको नहीं सहसक्ती ॥ १५३ ॥

तत्रभेषजमाह ॥

श्रीफलःसर्वतोभद्राकामदूतीचशोणकः । तर्कारीगोक्षुरःक्षुद्राबृहतीकलशीस्थिरा ॥ रास्नाकणाकणामूलंकुष्ठंशुण्ठीकिरातकः । मुस्तावलामृतावालद्राक्षावासःशताह्निका ॥ एषांक्वाथोनिहन्त्येवप्रभञ्जनकृतंज्वरम् । सोपद्रवञ्चयोगोऽयंसर्वयोगवरःस्मृतः ॥ श्रीफलोविल्वःसर्वतोभद्रागम्भारीकामदूतीपाटला । शोणकःशोनापाठाइतिलोकेतर्कारीगणिकारीकलशिपृष्टिपर्णीस्थिराशालिपर्णी बलासुगन्धबालाद्राक्षायासोयवासः । दशमूलादिक्वाथः ॥ १५४ ॥

औषधियोंका वर्णन दशमूलादिक्वाथ ॥

बेल गंभारी पाटला सोनापाठा अरणी गोखुरू छोटी बड़ी भटकटैया पृष्टपर्णी शालिपर्णी रासना पीपल पीपलामूल कूट सोंठ चिरायता मोथा गिलोय सुगन्धबाला बरियारा दाख जवासा और सतावर इन सब औषधियोंका क्वाथ उपद्रव युक्त बात ज्वरको नष्ट करताहै यह योग सम्पूर्ण योगों में श्रेष्ठ है ॥ १५४ ॥

सुश्रुतः। पञ्चमूलीकषायन्तुपाचनंवातिकेज्वरेइति । अत्रपंचमूलीबृहत्पंचमूलीअतएवत्रिशती। श्रीपर्णीतर्कारीश्रीफलटुण्टुकपाटलामूलैः । पाचनमुचितंमारुतजनितज्वरहारिवारिणाक्वथितैः। इतिबृहत्पञ्चमूलीक्वाथः ॥ १५५ ॥

बृहत्पञ्चमूलीक्वाथ ॥

सुश्रुतने कहाहै कि पंचमूलका काढ़ा बातज्वर में दोषका पचानेवाला होताहै यहां पञ्चमूल कहने

से बड़ा पञ्चमूल लेना चाहिये इसीसे त्रिशतीका मतहै कि गम्भारी अरणी बेल सोनापाठा और पाटला इन औषधियोंकी जड़केकाथसे बातज्वरमें ज्वरकेनाशके लिये पाचन देनाचाहिये ॥१५५॥

किरातकाम्रुतोदीच्यबृहतीद्वयगोक्षुरैः। त्रिपर्णीकलशीविल्वैःक्काथोवातज्वरापहः॥ उदीच्यंवालकंत्रिपर्णीशालिपर्णीकलशीपृष्टिपर्णीकिरातादिक्काथः ॥ १५६ ॥

किरातादिकाथ ॥

चिरायता मोथा गिलोय सुगन्धबाला दोनों भटकटैया गोखुरू शालिपर्णी पृष्टपर्णी और बेल इन औषधियोंका क्काथ बातज्वरनाशक होताहै ॥ १५६ ॥

गुडूचीपिप्पलीमूलनागरैःपाचनंश्रुतं। वातज्वरेतथापेयंकालिंगंसप्तमेहनि ॥ कालिंगश्रुतमिन्द्रयवन्तस्यश्रुतंत्रिशती ॥ १५७ ॥

गिलोय पीपलामूल और सोंठ इन औषधियोंकाकाथ अथवा इन्द्रजौका क्काथ बातज्वरमें सातवें दिन पाचनके लिये पीनाचाहिये ॥ १५७ ॥

विश्वामृताग्रंथिकसिद्धतोयमरुज्वरःस्यातिववतःकुतोऽयम्। क्काथोऽथकुस्तुम्बुरदेवदारुक्षुद्रौषधैःपाचनमत्रचारु ॥ इतिविश्वाशुण्ठीक्काथः । औषधंपाचनमितिवेदाःप्रमाणमितिवत् ॥ १५८ ॥

बिश्वादि काथ ॥

सोंठ गिलोय और पीपलामूल इनका काढ़ा पीनेसे बातज्वर नष्टहोताहै धनिया देवदारु और भटकटैया इनका काढ़ा बातज्वरमें पाचन होताहै औषधियोंके द्वारा पाचनहोताहै इसे वेदकेप्रमाण के समान प्रामाणिक समझनाचाहिये ॥ १५८ ॥

पञ्चमूलीवलारास्नाकुलत्थैःसहपौष्करैः । क्काथोहन्याच्छिरःकम्पंपर्वभेदम्मरुज्ज्वरम् ॥ इतिपञ्चमूलीविल्वादिः । बृहत्पञ्चमूल्यादिक्काथः ॥ १५९ ॥

बृहत्पञ्चमूल्यादिक्काथ ॥

बेल सोनापाठा गंभारी पाटला अरणी बरियारा रासना कुलथी और पुष्करमूल इनसब औषधियोंकाकाथ शिरका कांपना और पोरुओंका टूटना इन समेत बातज्वरको नष्ट करताहै ॥ १५९ ॥

कणारसोनामृतवल्लिविश्वानिदग्धिकासिंदुकभूमिनिम्बैः । समुस्तकैराचरितःकषायोहिताशिनांहन्तिगदानिमांस्तु॥ ज्वरम्मरुदष्टसमुद्भवन्तथाबलासजंचानलमन्दताञ्च। कण्ठावरोधंहृदयावरोधंस्वेदञ्चरोम्णाञ्चहिमत्वमोहान् ॥ इतिकणादिक्काथः ॥ १६० ॥

कणादिक्काथ ॥

पीपल लहसन गिलोय सोंठ भटकटैया सेंधानोन चिरायता और मोथा इन औषधियोंकेक्काथके सेवनसे पथ्यकरनेवालोंके आगेकहेहुए रोग नष्टहोते हैं बातज्वर कफज्वर मन्दाग्नि कंठका रुकना हृदयका रुकना स्वेद रोमांच शीतलता और मोह ॥ १६० ॥

शुद्धंशङ्करशुक्रमक्षतुलितंमारारिनारीरजस्तद्दत्तावदुमापतिस्फुटगलालङ्कारवस्तु स्मृतम्॥तावत्येवमनःशिलाचविमलातावत्तथाटङ्कणम्। शुण्ठीद्वयक्षमिताकणाचमरिचं दिक्पालसंख्याक्षकम् ॥ विषादिवस्तूनिशिलोपरिष्टाद्विचूर्णयेद्वासासिशोधयेच्च । ततस्तु

खल्वेरसगन्धकौचचूर्णञ्चतद्यामयुगंविमर्द्य ॥ कल्पतरुर्नामधेयोयथार्थनामारसःश्रेष्ठः। समीरणश्लेष्मगदांहरतेमात्रास्यस्मृतागुञ्जैका ॥ आर्द्रकेणसममेषभक्षितोहन्तिवातकफसम्भवंज्वरम्। श्वासकासमुखसेकशीततावह्निमांद्यविसूचीश्चनाशयेत्॥ नस्यनखेच हरतिशिरोऽर्त्तिंकफवातजां। मोहंमहान्तमपिचप्रलापंक्षयथुग्रहम्॥ कल्पतरुरसः १६१॥

कल्पतरुरस ॥

शुद्धपारा शुद्धगन्धक बिष मैनसिल सोनामक्खी और सुहागा यह सब तोले २ भर सोंठ और पीपल दो२ तोले मिर्चदशतोले विषआदिक बस्तुओंको शिलपर पीसकर बस्त्रमें छानले फिरपारा और गन्धकको खरलमें दोपहरघोटे इसके पीछे सब वस्तुओं को एकमें मिलादे यह कल्पतरु नाम रस यथार्थ नामवाला बहुत श्रेष्ठहै इस्से बात तथा कफ के रोगोंका नाशहोता है इसकी मात्रा एकरत्ती अदरकके रसके साथ सेवन किया हुआ यह रस बात तथा कफ जनित ज्वर श्वास खांसी मुखसे लार बहना शीतलता मंदाग्नि और विशूचिका का नाशकरताहै यह नासलेने से और लेपकरने से कफ वात जनित शिरकी पीड़ा प्रलाप छींककारुकना और अत्यन्त मोह इनसबको नाशकरताहै॥१६१॥

सामान्यज्वरचिकित्सोक्तोमहाज्वरांकुशःप्रदेयोऽत्र ॥ १६२ ॥

सामान्य ज्वरकी चिकित्सामें कहाहुआ महाज्वरांकुशरस भी वातज्वर में देना चाहिये १६२ ॥

विषमहौषधमागधिकोषणद्युमणिरक्तकमार्द्रकमर्द्दितम् । क्रमविवर्द्धितमुद्दलितंज्वरत्रिपुरभैरवएषरसोवरःद्युमणि। मारितंताम्रंतस्यभागाःपञ्चरक्तकंहिंगुलंतस्यभागाःषट्। मात्रास्यरक्तिकार्द्धंत्रिपुरभैरवोरसोज्वरे ॥ १६३ ॥

ज्वरपर त्रिपुरभैरव रस ॥

शुद्ध विष १ भा० सोंठ २ भा० पीपल ३ भा० मिर्च४ भा० तांबेकी भस्म ५ भा० और शुद्धसिंदरफ ६ भा० इनसब औषधियों को अदरक के रसमें घोटकर आधरत्ती सेवनकरे यह ज्वरों के नाश करनेमें बहुत श्रेष्ठहै ॥ १६३ ॥

वातश्लेष्मज्वरेस्वेदंजङ्घापार्श्वास्थिशूलिनि।पीनसश्वासबाधिर्येकारयेत्तद्विधानवित्॥ श्रोतसांमार्द्रवंकृत्वानीत्वापावकमाशयम्। हत्वावातकफःस्तम्भंस्वेदोज्वरमपोहति॥१६४॥

बात कफ ज्वरमें पिंडली पसली तथा हड्डियोंकी पीड़ामें और पीनस श्वास तथा बधिरता में स्वेद देनाचाहिये स्वेद श्रोतोंको कोमलकर के अग्निको उसके स्थानमें ले जाकर और वायु तथा कफकी रुकावट को दूरकर के ज्वरको नाशकरताहै ॥ १६४ ॥

खर्परभृष्टपटस्थितकाञ्जिकसंसिक्तवालुकास्वेदः ॥ शमयतिवातकफामयशूलाङ्गभङ्गादीन्। (बालुकास्वेदः) कम्पेशिरोहृदयगात्रव्यथायांजृम्भायांपादसुप्ततायाम् ॥ पिण्डिकोद्वेष्टनेऽङ्गसादेहनुस्तम्भेचलोमहर्षे ॥ १६५ ॥

खपरेमें बालूको भूनकर कपड़े में रखकर कांजीसे भिजोवे इसके द्वारास्वेद लेनेसे वात तथा कफ जनितरोग कंप मस्तक हृदय और शिरकी पीडा जँभाई पैरोंकी सुन्नता पिंडलियोंकी पीड़ा शरीरकी शिथिलता जावड़ेका जकड़ना और रोमांच इनका नाशहोताहै यह बालुका स्वेद कहलाताहै॥१६५॥

मातुलुङ्गफलकेशरोद्भूतःसिन्धुजन्ममरिचान्वितोमुखे । हन्तिवातकफरोगमास्यगं शोषमाशुजड़तामरोचकम् ॥ (इतिकवलःकण्ठोष्ठमुखशोषे) ॥ १६६ ॥

कंठ ओठ तथा मुख के सूखने पर कवलकी विधि ॥

सैंधानोन और मिर्चयुक्तनीबूके जीरेको मुखमें रखने से वात कफ मुखरोग कंठ ओठ तथा मुख का सूखना जड़ता और अरुचि इनसबका शीघ्र नाशहोताहै ॥ १६६ ॥

अन्यच्च ॥

शर्करादाड़िमाभ्याञ्चद्राक्षादाड़िमयोस्तथा । कल्कंविधारयेदास्येशोषवैरस्यनाशनम् ॥ द्राक्षामलकयोःकल्कंसघृतंवदनेक्षिपेत् । तेनघृष्ट्वामुखस्यान्तःकुर्वीतप्रतिसारणम् । तेनतालुगलान्तस्थःसंशोषश्चैवशाम्यति । सरसंजायतेवक्त्रंरुचिर्भवतिभोजने ॥ १६७ ॥

अन्यप्रकार ॥

शक्करतथा अनार अथवा दाख तथा अनारके कल्कको मुखमें रखने से मुखकी विरसता और मुखके सूखनेका नाशहोताहै दाख और आंवलेके कल्कको घृत सहित मुखमें रक्खे उसको मुखमें घिसके उगलदे इस्से तालु तथा गलेका सूखना नष्टहोताहै मुख सुरसहोजाताहै और भोजन में रुचिहोतीहै ॥ १६७ ॥ निद्रानाशस्य निदानमाह ॥

नावनंलङ्घनंचिन्ताव्यायामःशोकभीरुषः । एभिरेवभवेन्निद्रानाशःश्लेष्मातिसंक्षयात् १६८

निद्राके नाशका निदान ॥

नासलेना लंघन चिन्ता व्यायाम शोक भय क्रोध और कफका अत्यन्त नाश इनकारणों से निद्रा का अत्यन्त नाशहोता है ॥ १६८ ॥

अथ तस्याचिकित्सामाह ॥

भृष्टन्तुविजयाचूर्णंमधुनानिशिभक्षयेत् । निद्रानाशेऽतिसारेचग्रहण्यांपावकक्षये ॥ गुड़ंपिप्पलिमूलस्यचूर्णेनालोड़ितंलिहेत् । चिरादपिचसन्नष्टांनिद्रामाप्नोतिमानवः ॥ वायसजङ्घामूलंबद्धंवाशिरसिकाकमाच्याश्च । विधृतंनिद्राजनकंत्वङ्मूलंवाश्रुतंसगुड़म् ॥ पीतमितिशेषःमूलन्तुकाकमाच्यावद्धंसूत्रेणमस्तकेनियतम् । विदधातिनष्टनिद्रोमाश्वेव सिद्धमिदम् ॥ शीलयेन्मन्दनिद्रस्तुक्षीरमद्यरसान्दधि । अभ्यङ्गोद्वर्त्तनस्नानमूर्द्धकर्णाक्षितर्पणम् ॥ रसंमांसरसम् । कान्ताबाहुलताश्लेष्मोनिर्वृत्तिःकृतकृत्यता ॥ मनोनुकूलाविषयाःकामंनिद्रासुखप्रदा । रसेशाकेचसूपेचसर्पिर्यूषपयःसुच ॥ निद्रांसञ्जनयत्याशुपलाण्डुरुपयोजितः । रसेमांसरसे ॥ ऐक्षवंपोतकीमाषःसुरामांसरसःपयः । गोधूमतिलमत्स्याश्चनिद्रांकुर्वन्तिदेहिनामन्निद्रनाशे ॥ १६९ ॥

निद्रा नाशकी चिकित्सा ॥

भूनी हुई भंगके चूर्णको शहत के साथ रात्रिमें खानेसे निद्राका न आना अतीसार ग्रहणी और मंदाग्नि इनरोगों का नाश होताहै पीपलामूलके चूर्णको गुड़में मिलाकर चाटने से बहुतदिनसे नष्ट हुई भी निद्राको मनुष्य प्राप्त होता है काकजंघाकी जड़ अथवा काकमाचीकी जड़ शिरमें बांधने से

निद्रा आतीहै अथवा ऊपर लिखीहुई औषधोंकी छाल और जड़के क्वाथमें गुड़ मिलाकर पीनेसे निद्राआतीहै यह सिद्धयोग है निद्राकी अल्पता होने पर दुग्ध मद्य मांस रस तथा दहीके सेवनसे तैल मर्द्दन उबटन तथा स्नान करने से और शिर कान तथा नेत्रों को तैलादिके द्वारा पूर्ण करनेसे निद्रा आतीहै उत्तम स्त्रीका आलिङ्गन कफकी उत्पत्ति कृतार्थता और मनके अनुकूल भोगादिक इनसब से सुख पूर्व्वक निद्राआती है मांसरस शाक दाल घी यूष और दूध इनमें प्याजडालकर खानेसे शीघ्र निद्राआती है शक्कर आदिक ईखके पदार्थ पोय उर्द्द सुरा मांसरस दूध गेहूं तिल और मछली इन के सेवनसे निद्रा आती है॥ १६६ ॥

दारुहैमवतीकुष्ठशताह्वाहिङ्गुसैन्धवैः । लिम्पेत्कोष्णैरम्लपिष्टैःशूलाध्मानयुतोदरम् । हैमवतीश्वेतवचादारुषट्कालेपःशूलाध्माने ॥ १७० ॥

शूल तथा अफरा पर दारु षट्कलेप॥

देवदारु श्वेतबच कूट सौंफ हींग इनऔषधियों को काँजी के साथ पीसकर कुछ गरम २ पेटपर लेपकरने से शूल तथा अफरेका नाशहोता है ॥ १७० ॥

कटुतैलंकणाहिङ्गुवचालसुनसाधितम् । उष्णंविनिहितंहन्तिकर्णयोर्निःस्वनंव्यथाम् ॥ तैलंकर्णस्वनेकणासुगन्धिवचयायवान्याचसमन्विता । ताम्बूलसहिताहन्तिशुष्ककासंमुखेधृता इतिशुष्ककासे ॥ १७१ ॥

पीपल हींग बच और लहसन इनको कड़वे तेलमें पाककरे इसतेल को कानमें छोंडने से पीड़ा और कानों के शब्दका नाश होताहै पीपल सुगन्धित बच अजवाइन और पान इनके एकसाथ मुख में रखने से सूखी खांसीका नाश होताहै ॥ १७१ ॥

अथान्न माह ॥

श्रमोपवासानिलजेहितोनित्यंरसौदनः । मुद्गामलकयूषस्तुबद्धविट्कायदीयते ॥ रसो मांसरसः । पेयांवारक्तशालीनांवस्तिपार्श्वशिरोरुजि ॥ श्वदंष्ट्राकण्टकारीभ्यांसिद्धांज्वरहरींपिवेत् । कासीश्वासीचहिक्कीचपञ्चमूलश्रृतंपिवेत् ॥ पेयामितिशेषःइतिवातज्वराधिकारः ॥ १७२ ॥ बातज्वरमें देनें के योग्य अन्न ॥

परिश्रम उपबास तथा बात जनित ज्वरमें मांसके रस के साथ भात खाना सदैव हितकारी है ज्वरमें जो मूत्राशय पसली तथा शिरमें पीड़ाहोय तो गोखुरू और भटकटैया के क्वाथसे बनी हुई लाल धानके चावलों की पेयापिये खांसी श्वास तथा हिचकी आनेपर पंचमूलसे बनीहुई पेया पिये इति बातज्वराधिकार ॥ १७२ ॥

अथ पित्तज्वराधिकारः ॥

तत्रापित्तज्वरस्यविप्रकृष्टसान्निकृष्टकथनपूर्विकांसंप्राप्तिमाह । पित्तलाहारचेष्टाभ्यां पित्तमामाशयाश्रयम् ॥ वह्निर्निरस्यकोष्ठाग्निज्वरकृत्स्याद्रसानुगः । पित्तस्यपङ्गुत्वात्तेन कोष्टाग्नेरुष्मावह्निर्नेतुंनशक्यते ॥ यतश्राह । पित्तंपङ्गुःकफःपङ्गुःपङ्गवोमलधातवः॥ वायुनायत्रनीयन्तेतत्रगच्छन्तिमेघवत् । इतिततोऽत्रपित्तंवातसहायेबोधव्यं॥यत आह ।

द्रव्यमेकरसंनास्तिनरोगोऽप्येकदोषजः । एकस्तुकुपितोदोषइतरानपिकोपयेत्॥१७३॥

पित्तज्वरका अधिकार ॥

पित्तज्वरके दूर और समीपी कारणों सहित संप्राप्ति का वर्णन इसप्रकार करते हैं कि पित्त वर्द्धक आहार बिहारों के द्वारा आमाशयमें गयाहुआ पित्त जठराग्नि को बाहर निकालकर और रस को दूषित करके ज्वरको उत्पन्न करताहै पित्त पंगुहै इसलिये जठराग्नि की गरमी को बाहर नहीं निकाल सक्ताहै क्योंकि कहागया है कि पित्त कफ मल और धातु यहसब पंगु हैं (चलनेमें असमर्थ हैं) मेघोंके समान बायु जहाँ इन्हें लेजातीहै वहाँजाते हैं इसलिये पित्तबायु की सहायता से ऊपर कहे हुए कार्य्य को करताहै क्योंकि कहागयाहै कि कोई द्रव्य एक रसयुक्त नहींहै और एकही दोषसे उत्पन्न हुआ कोई रोगनहीं एकदोष कुपित होकर अन्यदोषोंकोभी कुपित करताहै ॥ १७३ ॥

इतितस्यपूर्वरूपमाह ॥

पित्तान्नयनयोर्दाहइति।पित्तज्वरेउत्पत्स्यतिनेत्रदाहःस्यात्।सचश्रमादिपूर्वकोभवति१७४

पित्तज्वरका पूर्वरूप ॥

पित्तज्वरके उत्पन्नहोनेकेपहले श्रमआदिक सामान्य ज्वरके पूर्वरूप सहित नेत्रोंमें दाह होताहै१७४॥

अथ पित्तज्वरस्य लक्षणमाह ॥

वेगस्तीक्ष्णोऽतिसारश्चनिद्राल्पत्वंतथावमिः । कण्ठौष्ठमुखनासानांपाकःस्वेदश्चजायते ॥ प्रलापोवक्त्रकटुतामूर्च्छादाहोमदस्तृषा । पीतविण्मूत्रनेत्रत्वंपैत्तिकेभ्रमएवच ॥ अतीसारःपित्तस्यतस्यसरत्वात्सद्रवमलप्रवर्त्तिर्नत्वतिसारवत्तस्यज्वरोपद्रवत्वात्वमिः । यदापित्तंकफस्यस्थानंयातितदाबोद्धव्यम् ॥ प्रलापोऽनर्थकंवचः मूर्च्छारूपादेरज्ञानम् । (मदः) पूगकोद्रवधत्तूरभक्षणादिवमत्तता ॥ भ्रमश्चक्रारूढस्येवज्ञानंचकाराद्रक्तकोठादयोबोद्धव्याः ॥ १७५ ॥

पित्तज्वर के लक्षण ॥

पित्तज्वरमें तीक्ष्ण वेग अतिसार निद्राकी अल्पता छर्दि कण्ठ ओठ मुख और नासिकाकापकना स्वेद प्रलाप (अनर्थक वचन) मुखकी कटुता मूर्च्छा दाह मद तृषा मलमूत्र तथा नेत्रोंकी पीतता और भ्रम यह लक्षण होतेहैं यहां अतीसार शब्दसे पित्तके दस्तावर होनेके कारण मलका पतलापन होना चाहिये अतीसाररोग न जाननाचाहिये क्योंकि यह ज्वरका उपद्रव मात्रहै पित्तज्वर में जब पित्तकफ के स्थानमें जाताहै तब छर्दि होतीहै यहां भ्रमशब्दका अर्थ चक्करमें पड़ा हुआसा मालूम होताहै और चकारसे रक्तकोठादिरोग जाननाचाहिये ॥ १७५ ॥

अथ पित्तज्वरस्यचिकित्सा ॥

आमाशयस्थोहत्वाग्निंसामोमार्गान्पिधापयन् । विदधातिज्वरंदोषस्तस्माल्लङ्घनमाचरेत् ॥ इतिवचनात्सामान्यतोज्वरिमात्रस्ययावदारोग्यदर्शनंलङ्घनाभिधानम् । पित्तज्वरिणोलङ्घनविधानेविशेषमाह । सुश्रुतः । पैत्तिकेदशरात्रेणज्वरेयुञ्जीतभेषजमिति । (दशरात्रेणलङ्घनवताव्यतीतेनेत्यर्थः) ॥ १७६ ॥

पित्तज्वरकी चिकित्सा ॥

आम सहित दोष आमाशयमें स्थित हुआ अग्निको मन्दकरके रसके लेचलनेवाली नाड़ियोंको रोककर ज्वरको उत्पन्न करताहै इसलिये लंघन कराना चाहिये इस बचनके द्वारा सम्पूर्ण ज्वर वालोंको सामान्यतासे आरोग्य पर्य्यन्त लंघन देना चाहिये यह सिद्ध होताहै इसमें पित्त ज्वरवाले को लंघन देनेके लिये विशेषता कहीहै जैसे कि पित्तज्वर में दश दिन लंघन कराके ग्यारहवें दिन औषध देनी चाहिये ॥ १७६ ॥

किंतद्भेषजंतदाह ॥

तिक्तामुस्तायवैःपाठाकट्फलाभ्यांसहोदकम् । पक्वंसशर्करंपीतंपाचनंपैत्तिकेज्वरे ॥ (तिक्तादिक्काथः) ॥ १७७ ॥

औषधियोंका वर्णन तिक्तादिक्काथ ॥

कुटकी मोथा जव कायफल पाढ़ा और सुगन्धबाला इन औषधियोंके क्काथमें शकर डालकर पीने से पित्तज्वरमें पाचन होताहै ॥ १७७ ॥

पर्पटोवासकस्तिक्ताकैरातोधन्वयासकः । प्रियंगुश्चकृतःक्काथएषांशर्करयायुतः ॥ पिपासादाहपित्तास्रयुक्तंपित्तज्वरंहरेत् । (पर्पटादिक्काथः) ॥ १७८ ॥

परपटादिक्काथ ॥

पित्तपापड़ा बांसा कुटकी चिरायता जवासा और मालकांगनी इन औषधियोंके क्काथमें शकर डालकर पीनेसे तृषा दाह तथा रक्तपित्तज्वरका नाशहोताहै ॥ १७८ ॥

द्राक्षाहरीतकीमुस्ताकटुकाकृतमालकः । पर्पश्चकृतःक्काथएषांपित्तज्वरापहः ॥ मुखशोषप्रलापार्त्तिदाहमूर्च्छाभ्रमप्रणुत् । पिपासारक्तपित्तानांशमनोभेदनोमतः ॥ (द्राक्षादिक्काथः) ॥ १७९ ॥

द्राक्षादिक्काथ ॥

दाख हड़ मोथाकुटकी अमलतास और पित्तपापड़ा इनऔषधियोंकाक्काथ पीनेसेपित्तज्वर मुखका सूखना प्रलाप अन्तर्दाह मूर्च्छाभ्रम तृषा तथा रक्तपित्तकानाशहोताहै और मलका भेदहोता है१७९

पटोलयवधान्यकमधुकंमधुसंयुतम् (क्काथः) हन्तिपित्तज्वरंदाहंतृष्णाञ्चातिप्रमाथिनीम् ॥ (पटोलादि) ॥ १८० ॥

पटोलादिक्काथ ॥

परवल इन्द्रजौ धनिया और मुलहठी इनको काढ़ा शहत डालकर पीनेसें पित्तज्वर दाह और अ- अत्यन्त तृषाको दूर करताहै ॥ १८० ॥

गुडूच्यामलकैर्युक्तःकेवलोवापिपर्पटः । पित्तज्वरंहरेत्तूर्णंदाहशोषभ्रमान्वितम् ॥ (गुडूच्यादिक्काथः) ॥ १८१ ॥ गुडूच्यादिक्काथ ॥

गिलोय और आंवले समेत पित्तपापड़ेका क्काथ अथवा केवल पितपापड़ेका काथ पानकरनेसे दाह शोष तथा भ्रमसहित पित्तज्वरको शीघ्रनाश करताहै॥ १८१ ॥

एकःपर्पटकःश्रेष्ठःपित्तज्वरविनाशनः । किंपुनर्यदियुञ्जीतचन्दनोशीरवालकैः ॥ १८२ ॥

केवल पित्तपापड़ेकाही क्वाथ पित्तज्वर को नाशकरताहै और चन्दन खस तथा सुगन्धबालाके योगहोने पर तो क्याही कहनाहै ॥ १८२ ॥

ह्रीवेरचन्दनोशीरघनपर्पटसाधितम् । दद्यात्सुशीतलंवारितृट्छर्दिज्वरदाहनुत् ॥ (ह्रीवेरादिक्काथः) १८३ ॥ ह्रीबेरादिक्काथ ॥

सुगन्धबाला लालचन्दन खस मोथा और पित्तपापडेका क्वाथ ठंढा करके पीने से तृषा छर्दि ज्वर तथा दाहका नाशहोताहै ॥ १८३ ॥

भूनिम्बातिविषालोध्रमुस्तकेन्द्रयवामृता । बालकंधान्यकंविल्वंकषायोमाक्षिकान्वितः ॥ विड्भेदश्वासकासांश्चरक्तपित्तज्वरंहरेत् । (भूनिम्बादिक्काथः) ॥ १८४ ॥

भूनिंबादिक्काथ ॥

चिरायता अतीस लोध मोथा इन्द्रजौ गिलोय सुगन्धबाला धनियां और बेल इन औषधियों के काढ़ेमें शहत डालकर पान करनेसे मल भेद श्वाश खांसी रक्त पित्त तथा ज्वर का नाशहोताहै १८४॥

द्राक्षाचन्दनपद्मानिमुस्तातिक्तामृतापिच । धात्रीबालमुशीरंचलोध्रेन्द्रयवपर्पटाः ॥ परूषकंप्रियंगुश्चयवासोवासकस्तथा । मधुकंकुलकञ्चापिकिरातोधान्यकंतथा ॥ एषां क्काथोनिहन्त्येवज्वरंपित्तसमुत्थितम् । तृष्णांदाहंप्रलापञ्चरक्तपित्तंभ्रमंक्लमम् ॥ मूर्च्छां छर्दितथाशूलंमुखशोषमरोचकम् । कासंश्वासञ्चहृल्लासंनाशयेन्नात्रसंशयः ॥ (महाद्राक्षादिक्काथः) ॥ १८५ ॥ महाद्राक्षादि क्काथ ॥

दाख लालचन्दन पद्माक मोथा कुटकी गिलोय आमला सुगन्धबाला खस लोध इन्द्रजौ पित्तपापड़ा फालसा मालकांगनी जवासा बांसा मुलहठी परवल चिरायता और धनियां इनसब औषधियोंका क्वाथ पीनेसे पित्तज्वर तृषा दाह प्रलाप रक्तपित्त भ्रम ग्लानि मूर्च्छा छर्दि शूल मुखकासूखना अरुचि खांसी श्वास तथा मतली का नाशहोताहै ॥ १८५ ॥

ससितोनिशिपर्युषितःप्रातर्धान्याकक्काथः । पीतःशमयत्यचिरादन्तर्दाहज्वरंपित्तम् ॥ (धान्याकक्काथः) ॥ १८६ ॥ धनियेकाक्काथ ॥

धनियेका बासीकाथ शक्कर डालकर प्रातःकाल पीनेसे अत्यन्त शीघ्र अन्तर्दाह सहित पित्तज्वर नाशहोता है ॥ १८६ ॥

अमृतायाहिमःप्रातःससितःपैत्तिकंज्वरम् । वासायाश्चतथाकासरक्तपित्तज्वरान्जयेत् ॥ १८७ ॥

गिलोयको कूटकर सायंकाल में भिजोदे फिर प्रातःकाल उसको छानके शक्करसहित पीने से पित्तज्वर नाशहोता है इसीप्रकार बाँसेके भी कषाय के पानकरने से खांसी रक्तपित्त तथा ज्वरका नाशहोता है ॥ १८७ ॥

गुडूचीभूमिनिम्बश्चबालंवीरणमूलकम् । लघुमुस्तंतथाधात्रीद्राक्षावासाचपर्पटः ॥ एषांक्काथोहरत्येवज्वरंपित्तकृतंद्रुतम् । सोपद्रवमपिप्रातर्निपीतोमधुनासह ॥ गुडूच्यादिक्काथः ॥ १८८ ॥

गडूच्यादिक्वाथ ॥

गिलोय चिरायता सुगन्धबाला खस छोटा मोथा निसोथ आंवला दाख बांसा और पित्तपापड़ा इन औषधियों का क्वाथ सहत डालकर प्रातःकाल पीनेसे उपद्रव सहित पित्त ज्वर का नाश होता है ॥ १८८ ॥

पलाशस्यवदर्य्यावानिम्बस्यमृदुपल्लवैः।अम्लपिष्टैःप्रलेपोऽयंहन्यादाहयुतंज्वरम् १८९ ॥

पलाश (ढाक) बेर अथवा नींबके कोमल पत्तोंको कांजीसे पीसकर लेप करनेसे दाहयुक्त ज्वर का नाश होताहै ॥ १८९ ॥

उत्तानसुप्तस्यगंभीरताम्रकांस्यादिपात्रेनिहितेचनाभौ। शीताम्बुधारावहुलापतन्ती निहन्तिदाहंज्वरितज्वरञ्च॥ १९० ॥

रोगीको चित्तसुलाकर नाभिपर तांबे अथवा कांसे आदिके गहरेपात्रको रखकर उसमें शीतल जलकीधार छोड़नेसे शीघ्रही दाह और ज्वर का नाश होताहै ॥ १९० ॥

पथ्यांतैलघृतंक्षौद्रैर्लिहन्दाहज्वरापहाम् । कासासृक्पित्तवीसर्पश्वासान्हन्तिवमीमपि ॥ (तैलघृतक्षौद्रैरित्यत्रनसमुच्चयस्तेनकेवलेनक्षौद्रेणापिलिह्यात्) ॥ १९१ ॥

हड़को पीसकर तेल घी तथा सहतके साथ चाटनेसे खांसी रक्तपित्त विसर्प श्वास छर्दि दाह तथा ज्वरका नाशहोताहै तेल घी और सहत इनको इकट्ठा न लेकर केवल सहतकेसाथही चाटनेसे रोगोंका नाश होताहै ॥ १९१ ॥

काञ्जिकार्द्रपटेनावगुण्ठनंदाहनाशनम्। अथगोतक्रसंस्विन्नंशीतलीकृतवाससा॥ १९२ ॥

कांजीसे भिगोयेहुए वस्त्रके ओढ़नेसे भी दाहका नाश होताहै अथवा गौके मट्ठेमें भीगेहुए शीतल वस्त्रको लपेटनेसे दाहका नाश होताहै ॥ १९२ ॥

द्राक्षामलककल्केनकवलोऽत्रहितोमतः। पक्वदाडिमबीजैर्वाधानाकल्केनचक्वचित् ॥ (इतिकवलः। धानात्रधान्यकंइतिकल्कः) ॥ १९३ ॥

दाख और आंवलेके कल्कसे पके अनारके बीजोंके कल्कसे अथवा धनियें के कल्ककेद्वारा कवल ग्रहणकरनेसे दाहका नाश होताहै ॥ १९३ ॥

अथान्यमाह ॥

दाहकम्पार्दितंक्षामंनिरन्नंतृष्णयान्वितम् । शर्करामधुसंयुक्तंपाययेल्लाजतर्पणम् ॥ (लाजतर्पणम्लाजशक्तुरूपंतर्पणंसन्तर्पणस्वरूपमुक्तंसामान्यज्वरचिकित्सायां) मुद्गयूषौदनोदेयःसितयापैत्तिकेज्वरे १९४ ॥

पित्तज्वरवालेको अन्न ॥

दाह तथा कंपसे पीड़ित क्षीण लंघनी और प्यासे पित्तज्वरवालेको शक्कर और सहत युक्त खीलोंके सत्तुओंका तर्पण देनाचाहिये अथवा शक्कर सहित मूंगके यूषकेसाथ भातदेनाचाहिये १९४ ॥

हर्म्यैशुभ्राभ्रसङ्काशेशशाङ्ककरशीतले। मलयोदकसंसिक्तेसुप्यात्पित्तज्वरीनरः॥ १९५ ॥

पित्तज्वरवाला शुभ्रमेघोंके समान कांतिवाले चन्द्रमाकी किरणोंसे शीतल और चन्दनसे सिंचे हुए स्थानमें सोवे ॥ १९५ ॥

हारावलीचन्दनशीतलानांसुगन्धपुष्पाम्बरभूषितानाम् । नितम्बिनीनांसुपयोधराणामालिङ्गनान्याशुहरन्तिदाहम् ॥ आह्लादश्चास्यविज्ञायनस्त्रीरपनयेत्पुनः । हितञ्चभोजयेदन्नंनप्रीतिसुरतंमहत् ॥ १९६ ॥

हार तथा चन्दनसे शीतल अंगवाली सुगन्धित पुष्प तथा वस्त्रोंसे आभूषित सुन्दर पयोधरवाली स्त्रियोंके आलिंगनसे शीघ्रही दाहका नाश होताहै इस प्रकार पुरुषको आनन्दित जानकर स्त्रियोंको फिर हटवावे नहीं और हित अन्न भोजन करवावे परन्तु बहुत मैथुन करना हितकारी नहीं है१९६॥

वाप्यःकमलहासिन्योजलयन्त्रगृहाःशुभाः । नार्यश्चन्दनदिग्धाङ्ग्योदाहदैन्यहरामताः ॥ (इतिपित्तज्वराधिकारः) ॥ १९७ ॥

फूलेहुए कमलवाली बावड़ी फव्वारेयुक्तघर और चन्दनलगेहुए अंगवालीस्त्री यह सब दाह और दीनताको नाश करतेहैं इति पित्तज्वराधिकार ॥ १९७ ॥

अथ श्लेष्मज्वराधिकारः (अथश्लेष्मज्वरस्यविप्रकृष्टसन्निकृष्टकारणकथनपूर्विकांसंप्राप्तिमाह) ॥

श्लेष्मलाहारचेष्टाभ्यांकफमामाशयाश्रयः । बहिर्निरस्यकोष्ठाग्निंज्वरकृत्स्याद्रसानुगः ॥ कफस्यकोष्ठाग्नितेजसोबहिर्नयनेनपंगुत्वादाशङ्कायांजातायांपित्तस्येवसिद्धान्तोबोद्धव्यः ॥ १९८ ॥

कफज्वराधिकार कफज्वरके दूर और समीपीकारण सहित संप्राप्तिका वर्णन ॥

कफकारी आहार और बिहारोंके द्वारा आमाशयमें गयाहुआ कफ जठराग्निकी ऊष्माको बाहर निकालकर रसको दूषित करता हुआ ज्वरको उत्पन्न करताहै कफ पंगुहै इसलिये जठराग्निकी ऊष्माको बाहर नहीं निकाल सक्ताहै इस सन्देहके उत्तर में पित्तके समान सिद्धान्त यहां भी जानना चाहिये ॥ १९८ ॥ अथतस्यपूर्वरूपमाह ॥

कफान्नान्नाभिनन्दनमितिकफज्वरेउत्पत्स्यति । अनन्नाभिलाषःस्यात्सचश्रमादिपूर्वकोभवति १९९ ॥ कफज्वरका पूर्वरूप ॥

कफज्वरके उत्पन्न होनेके पहले श्रम आदिक सामान्य ज्वरके पूर्वरूप सहित अन्नमें अनिच्छा होती है ॥ १९९ ॥ अथश्लेष्मज्वरस्यलक्षणमाह ॥

स्तैमित्यंस्तिमितोवेगआलस्यंमधुरास्यता॥शुक्लमूत्रपुरीषत्वंस्तम्भस्तृप्तिरथापिवा॥गौरवंशीतमुत्क्लेदोरोमहर्षोऽतिनिद्रिता । प्रतिश्यायोऽरुचिःकासःकफजेऽक्ष्णोश्चशुक्लता॥ स्तैमित्यमङ्गानांआर्द्रपटावगुण्ठितत्वमिव । स्तिमितोवेगःज्वरस्यमन्दोवेगःआलस्यंसमर्थस्यापिकर्म्मण्यनुत्साहः। क्लेदःवमनोपस्थितमिवस्तम्भःअङ्गानांनघतातृप्तिः ॥ अन्नानभिलाषःसत्यपिभोजनसामर्थ्यात्गौरवंगात्राणाम् । शीतंलगतिउत्क्लेदःवमनोपस्थितिरितिच । अतिनिद्रतानिद्राधिक्यंप्रतिश्यायोनासारोगविशेषः । अरुचिःभोजनानिच्छाचकारात्पिड़िकाशीतामुखप्रसेककण्ठलिप्तताहृदयोपलेपउष्णाभिलाषोवह्निमान्द्यमितिच

तउक्तम्। प्रसेकःपिड़िकाशीतश्छर्दिस्तन्द्रोष्णकामिता। कफेनलिप्तंहृदयंभवेदग्नेश्च मन्दता २०० ॥ कफज्वरके लक्षण ॥

शरीरमें गीलाकपड़ा लिपटाहुआ सामालूम होना ज्वरका वेग मन्द होना आलस्य मुख मधुररहै मूत्र तथा मलका श्वेतहोना शरीरका अकड़ना अन्नमें अनिच्छा शरीरका भारीपन शीतलगना मचली रोमांच निद्राकी अधिकता जुकाम अरुचि खांसी और नेत्रोंकी शुक्लता यह लक्षण कफज्वरमें होतेहैं चकारसे मुख तथा नासिका का बहना फुंसी शीत छर्दि तंद्रा उष्णताकी इच्छा कफसे भराहुआ साहृदय और मन्दाग्नि यह लक्षण होतेहैं ॥ २०० ॥

अथश्लेष्मज्वरस्यचिकित्सा ॥

आमाशयस्थोहत्वाग्निंसामोमार्गांपिधापयन्। विदधातिज्वरंदोषस्तस्माल्लंघनमाचरेत् ॥ इतिवचनात्सामान्यतोज्वरोमात्रस्य यावदारोग्यदर्शनमल्लंघनाभिधानंश्लेष्मज्वरिणोलंघनविधानेविशेषमाहसुश्रुतः। श्लैष्मिकेद्वादशाहेनज्वरेयुंजीतभेषजमिति। द्वादशाहेचलंघनवताव्यतीतेनेत्यर्थः २०१ ॥

कफज्वरकी चिकित्सा ॥

आमाशयमें स्थितदोष अग्निको मन्दकरके स्वेद तथा रसके बहनेवाले श्रोतोंको आच्छादन करता हुआ ज्वरको उत्पन्न करताहै इसलिये लंघनकरना चाहिये इसवचनके द्वारा सामान्यतासे सम्पूर्ण ज्वरवालोंको लंघनकरना रोगकी निवृत्तितक उचितहै इनमें कफज्वरके रोगमें सुश्रुतने विशेषता कहीहै जैसे कि कफज्वरमें बारहदिन लंघन करायके तेरहवें दिन औषध देनी चाहिये ॥ २०१॥

किंतद्भेषजंतदाह ॥

पिप्पल्यादिकषायंतुकफजेपरिपाचनम् (पिप्पल्यादिगणमाह) पिप्पलीपिप्पलीमूलंमरिचंगजपिप्पली। नागरंचित्रकंचव्यंरेणुकैलाजमोदिका ॥ सर्षपोहिंगुभार्गीचपाठेन्द्रयवजीरकाः। महानिम्बवचामूर्वाविषातिक्ताविडंगकम् ॥ पिप्पल्यादिगणोह्येषकफमारुतनाशनः। गुल्मशूलज्वरहरोदीपनस्त्वामपाचनः ॥ पिप्पल्यादिकाथः २०२ ॥

औषधियोंका वर्णन, पिप्पल्यादि क्वाथ ॥

पिप्पल्यादि गणका क्वाथ कफज्वरमें पाचन होताहै पिप्पल्यादिगण पीपल पीपलामूल मिर्च गजपीपल सोंठ चीता चव्य रेणुका इलायची अजवाइन सरसों हींग भारंगी पाढ़ा इन्द्रजौ जीरा महानिंब वच मरोड़फली अतीस कुटकी और वायविड़ंग यहसब पिप्पल्यादि गणकहाते हैं यह कफवात बायगोला शूल तथा ज्वरनाशक दीपन और आमकापचाने वालाहोता है ॥ २०२ ॥

क्षौद्रोपकुल्यासंयोगश्वासकासज्वरापहः। प्लीहानंहन्तिहिक्कांचबालानामपिशस्यते ॥ पिप्पलीत्रिफलाचापिसमभागान्ज्वरीलिहन्। मधुनासर्पिषाचापिकासीश्वासीसुखीभवेत् २०३

सहतके साथ पीपलचाटनेसे श्वास खांसी ज्वर प्लीहा तथा खुशकीका नाश होताहै और यही बालकों कोभी श्रेष्ठहै पीपल और त्रिफला समभाग सहत और घीके साथ चाटनेसे खांसी श्वास तथा ज्वरका नाश होता है ॥ २०३ ॥ चतुर्भद्रिका ॥

कट्फलंपौष्करंशृंगीकृष्णाचमधुनासह। श्वासकासज्वरहरोलेहोऽयंकफनाशनः २०४॥

चतुर्भद्रिका ॥

कायफल पुष्करमूल काकड़ासिंगी और पीपल इनको सहतके साथचाटनेसे खांसी श्वास ज्वर तथा कफका नाश होताहै ॥ २०४ ॥

अष्टांगावलेहः ॥

कट्फलंपौष्करंशृंगीयवानीकारवीतथा। कटुत्रयञ्चसर्वाणिसमभागानिचूर्णयेत्॥आर्द्रकस्यरसैर्लिह्यान्मधुनावाकफज्वरी॥कासश्वासारुचिच्छर्दिहिक्काश्लेष्मानिलापहः २०५

अष्टांगावलेह ॥

कायफल पुष्करमूल काकड़ासिंगी अजवाइन सौंफ सोंठ मिर्च और पीपल इनसब औषधियोंको समभाग लेकर अदरकके रस अथवा सहतके साथचाटने से कफज्वर खांसी श्वास अरुचि छर्दि हिचकी कफ तथा वातका नाश होताहै ॥ २०५ ॥

सिन्दुवारदलक्काथंकणाढ्यंकफजेज्वरे । जङ्घयोश्चबलेक्षीणेकर्णेचपिहितेपिबेत् ॥ यवानींपिप्पलीवासायथाखाखसवल्कलम्। एषांक्काथंपिबेत्कासेश्वासेचकफजेज्वरे २०६॥

कफज्वरमें पिंडलियोंके बलके क्षीण होजाने में और कानोंके बन्दहोजाने में पीपल डालकर निर्गुण्डीके क्काथका पानकरे अजवाइन पीपल बांसा और पोस्तके छिलके इन औषधियोंका क्काथ पीने से श्वास खांसी तथा कफज्वरका नाशहोताहै ॥ २०६ ॥

वासादिक्काथः ॥

वासाक्षुद्रामृताक्काथःक्षौद्रेणज्वरकासहृत ॥ २०७ ॥ (मरिचादि क्काथः) मरिचंपिप्पलीमूलंनागरंकारवीकणा । चित्रकंकट्फलंकुष्ठंससुगन्धिवचाशिवा ॥ कण्टकारीजटाशृङ्गीयवानीपिचमन्दकः । एषांक्काथोहरत्येवज्वरंसोपद्रवंकफात् ॥ २०८ ॥

वांसादि क्काथ ॥

बांसा भटकटैया और गिलोय इनके क्काथमें सहत डालकर पीने से ज्वर तथा खांसीका नाशहोता है २०७ (मरिचादि क्काथ) मिर्च पीपलामूल सोंठ सौंफ पीपल चीता कायफल कूट सुगन्धित वच हड़ भटकटैयाकीजड़ काकड़ासिंगी अजवाइन नींबकीछाल इन औषधियोंका क्काथ पीने से उपद्रव सहित कफज्वरका नाश होताहै ॥ २०८ ॥

कफवातव्याधिहरत्वाद्वाताधिकरोक्तकल्पतरुरसोयोज्यः । सिन्धुत्रिकटुराजीभिरार्द्रकेणकफेहितःकवलइतिशेषः ॥ २०९ ॥

बातज्वराधिकारमें कहाहुआ कल्पतरुनामरस कफज्वरमें देनाचाहिये क्योंकि वह कफ और वातरोगों का नाशकहै सेंधानोन सोंठ मिर्च पीपल और राई इनको अदरकके रसमें मिलाकर ग्रास बनाकर मुखमें रखनेसे कफका नाश होताहै ॥ २०९ ॥

अथान्य माह ॥

मुद्गयूषोदनोदेयो ज्वरे कफसमुत्थिते । (इतिश्लेष्मज्वराधिकारः) ॥ २१० ॥

(कफज्वरमें अन्न) कफज्वरमें मूंगका यूष और भात देना चाहिये इतिकफज्वराधिकार ॥ २१० ॥

अथ वातपित्तज्वराधिकारः ॥

विप्रकृष्टसन्निकृष्टकारणकथनपूर्विकांसंप्राप्तिमाह । (तत्रवातपित्तज्वरस्य) वात पित्तकरैर्वातपित्तेआमाशयाश्रये । वह्निर्निरस्यकोष्टाग्निंरसगेज्वरकारिणी ॥ स्याता मितिशेषः ॥ २११ ॥ (अथ तस्यपूर्वरूपमाह) प्राग्रूपेवातपित्तस्यभवतोवातपैत्तिके ज्वरइतिशेषः ॥ २१२ ॥ वातपित्त ज्वराधिकार ॥

द्वंद्वज ज्वरके दूर और समीपी कारणों समेत संप्राप्ति कही जातीहै इनमें से पहले बात पित्त ज्वर का वर्णन करते हैं बात पित्तवर्द्धक आहार बिहारों के सेवनसे आमाशय में गये हुए बात पित्त जठराग्नि की ऊष्मा को बाहर निकाल कर और रसको दूषित करकेज्वरको उत्पन्न करतेहैं ॥ २११ ॥ (वात पित्त ज्वर का पूर्वरूप) बात पित्त ज्वरके उत्पन्न होनेके पहले वात ज्वर और पित्तज्वर के पूर्व रूप सम्बन्धी मिलेहुये लक्षण होते हैं ॥ २१२ ॥

अथ वातपित्तज्वरलक्षणमाह ॥

तृष्णामूर्च्छाभ्रमोदाहोनिद्रानाशःशिरोरुजा। कण्ठास्यशोषोवमथूरोमहर्षोरुचिस्तमः॥ पर्वभेदश्चजृम्भाचवातपित्तज्वराकृतिःपर्वभेदःपर्वाणिभिद्यन्तइतिसन्धिषुव्यथा॥२१३॥ (अथ वातपित्तज्वरस्यचिकित्सा) वातपित्तज्वरेदेयमौषधंपञ्चमेऽहनि ॥ २१४ ॥

वात पित्तज्वर का लक्षण ॥

तृषा मूर्च्छा भ्रम दाह निद्राका नाश शिरमें पीड़ा कंठतथा मुखका सूखना छर्दि रोमांच अरुचि तम संधियों में पीड़ा और जंभाई यह वात पित्तज्वर के लक्षण हैं ॥ २१३ ॥ (वातपित्त ज्वरकी चिकित्सा) बात पित्त ज्वरमें पांचवें दिन औषध देना चाहिये ॥ २१४ ॥

किराताद्दिक्काथः ॥

किराततिक्तममृताद्राक्षामामलकंशटी । निःक्वाथ्यसगुडंक्काथंवातपित्तज्वरेपिवेत्॥२१५॥

किराताादि क्काथ ॥

चिरायता गिलोय दाख आंवला और कचूर इन औधधियों का क्काथ गुड़ मिलाकर बात पित्त ज्वर में पीना चाहिये ॥ २१५ ॥ पञ्चभद्रक्काथः ॥

गुडूचीपर्पटोमुस्तंकिरातोविश्वभेषजम् । वातपित्तज्वरेदेयंपञ्चभद्रमिमंशुभम् ॥ २१६ ॥

पंच भद्र क्काथ ॥

गिलोय पित्तपापड़ा मोथा चिरायता और सोंठ यह पंचभद्र नाम क्काथ पित्तज्वरमें देनाचाहिये।॥२१६॥

त्रिफलादिक्काथः ॥

त्रिफलाशाल्मलीरास्नाराजवृक्षादरूषकैः।शृतमम्बुहरत्याशुवातपित्तभवंज्वरम्॥२१७॥

त्रिफलादि क्काथ ॥

हड़ बहेड़ा आंवला सेमर रासना अमलतास और बांसा इन औषधियों का क्काथ वात पित्तज्वर को शीघ्रही नाश करताहै ॥ २१७ ॥

मधुकंसारिवाद्राक्षामधूकंचन्दनोत्पलम् । काश्मरीफलकंलोध्रत्रिफलापद्मकेसरम् ॥

परूषकंमृणालञ्चक्षिपेत्संचूर्णयेवारिणि । निशोषितंमिताक्षौद्रलाजयुक्तन्तुतत्पिवेत् ॥ वातपित्तज्वरंदाहंतृष्णांमूर्च्छारुचिभ्रमान् । शमयेद्रक्तपित्तञ्चजीमूतमिवमारुतः ॥ अत्रमधुकादिमृणालान्तसमुदितम् । पलद्वयपरिमितंसंचूर्णयेक्षिपेत् ॥ वारिणिषट्पल परिमितेमधुकादिहिमोदाहे ॥ २१८ ॥

दाह पर मधुकादि हिम ॥

मुलहठी सारिवा दाख महुआ लालचन्दन नीलकमल गंभारीका फल लोध त्रिफला कमल की केशर फालसा और कमल की डंडी यहसब बस्तुमिलाकर आठतोले लेकर चूर्णकरे और इसमें चौबीस तोलेजल छोड़े रातभर भिगोके प्रातःकाल सहत शक्कर और खीलोंका चूर्ण छोड़कर पिये जैसे बायुके द्वारामेघ दूर होजाते हैं उसी प्रकार इसके सेवनसे वात पित्तज्वर दाह तृषा मूर्च्छा अरुचि भ्रम तथा रक्त पित्त यह सब दूरहोते हैं ॥ २१८ ॥

अथान्नमाह ॥

मुद्गामलकयूषस्तुवातपित्तज्वरेहितः । महादाहेप्रदातव्योयूषश्चणकसम्भवः ॥ दाडिमामलकमुद्गसम्भवोयूषउक्तः । इतिवातपैत्तिके ॥ २१९ ॥

बात ज्वरमें अन्न ॥

बात पित्तज्वरमें मूंग तथा आमलेका यूष हितकारीहै और बहुत दाह उत्पन्न होनेपर चनेका यूष देना चाहिये बात पित्तज्वरमें अनार आमला और मूंग का यूष देनाचाहिये ॥ २१९ ॥

कफपित्तहरामुद्गाःकारवेल्यादयस्तथा । प्रायेणनचतेदेयावातपित्तोत्तरेज्वरे ॥ दत्तास्तुज्वरविष्टम्भशूलोदावर्त्तकारिणः । इतिवातपित्तज्वराधिकारः ॥ २२० ॥

मूंग और करेला आदिक कफपित्त नाशक होतेहैं इसलिये बातपित्त ज्वरमें प्रायःयह न देनेचाहिये क्योंकि इनके देनेसे ज्वर बिष्टंभ शूलऔर उदावर्त्त उत्पन्न होताहै इति बातपित्त ज्वराधिकार॥२२०॥

अथ वातश्लेष्मज्वराधिकारः ॥

तत्रतस्यविप्रकृष्टसन्निकृष्टकारणकथनपूर्विकांसंप्राप्तिमाह । वातश्लेष्मकरैर्वातकफावामाशयाश्रयौ । बहिर्निरस्यकोष्टाग्निंरसगौज्वरकारिणौ ॥ २२१ ॥ (पूर्वरूपमाह) प्राग्रूपेवातकफयोःस्यातांवातकफज्वरे ॥ २२२ ॥

बात कफ ज्वराधिकार ॥

बात पित्त के दूर और समीपी कारणों समेत संप्राप्ति कहते हैं बात कफ बर्द्धक आहार बिहारोंके सेवन से आमाशय में गये हुये बातकफ जठराग्नि की ऊष्माको बाहर निकालकर रसको दूषितकरते हुए ज्वरको उपन्न करतेहैं ॥ २२१ ॥ (वातकफ ज्वरका पूर्वरूप) वातकफ ज्वरके होनेसे पहले वात ज्वर और कफज्वर सम्बन्धी पूर्वरूपके लक्षणहोते हैं ॥ २२२ ॥

अथतस्यलक्षणमाह ॥

स्तैमित्यंपर्वणांभेदोनिद्रागौरवमेवच । शिरोग्रहःप्रतिश्यायःकासःस्वेदाप्रवर्त्तनम् ॥ सन्तापोमध्यवेगश्चवातश्लेष्मज्वराकृतिः । स्वेदाप्रवर्त्तनंस्वेदस्यआसमन्ताद्भावेनप्रवृ

त्तिः (तथाचहारीतः) शिरोग्रहःस्वेदभवश्चकासोज्वरस्यलिंगंकफवातजस्येति । स्वेदोभवःस्वेदोत्पत्तिः ॥ २२३ ॥

वात कफ ज्वर के लक्षण ॥

शरीरमें गीला कपड़ा लिपटा हुआसा मालूम देना पोरुओंमें पीड़ा निद्रा शरीरमें भारीपनशिरमें पीड़ा जुकाम खांसी स्वेदाप्रवर्त्तन (बहुत पसीना) संताप और ज्वरका वेग मध्यम यह वात कफ ज्वर के लक्षणहैं यहां स्वेदापवर्त्तन शब्दका अर्थ बहुत पसीनेका निकलनाहै क्योंकि ऐसाही हारीत ने कहाहै कि वात कफ ज्वर में शिरकी पीड़ा पसीना निकलना और खांसी यह लक्षण होतेहैं ॥ २२३ ॥

ननुस्वेदःपित्तस्यधर्मअतएवपित्तज्वरेकण्ठौष्ठमुखनासानांपाकः स्वेदश्चजायतेइत्युक्त । तस्मात्कथंवातश्लेष्मज्वरेस्वेदस्यातिप्रवृत्तिः । उच्यते । विकृतिविषमसमवायारब्धत्वान्नदोषइतिकार्त्तिकः । प्रकृतिसमवायस्यविकृतिविषमसमवायस्यचायमर्थःप्रकृत्याहेतुभूतयासमःकारणानुरूपःसमवायः । कार्य्यकारणभावःसम्बन्धःप्रकृतिसमवायः । कारणानुरूपंकार्य्यमितियावत्यथाप्रकृतैर्यथास्थितैः । शुक्लैस्तन्तुभिसमवायकारणैरारब्धःपटःशुक्लएवभवति । यथाचप्रकृतेनकेवलेनवातेनपित्तेनकफेनवातजनितोज्वरोवाताद्युचितैर्धर्मैर्वेपथुवेगाधिक्यस्तैमित्यादिभिर्युक्तोभवति । विकृतिविषमसमवायस्तुविकृत्याहेतुभूतयाविषमःकारणानुरूपःसमवायःकार्य्यस्यकरणेसम्बन्धः । यथा । संयोगाद्विकृताभ्यांहरिद्राचूर्णाभ्यां हेतुभूताभ्यांविषमःकारणानुरूपो लोहितोवर्णोजायतेतथायोगेन विकृताभ्यांवातश्लेष्माभ्यां हेतुभूताभ्यांविषमःकारणानुरूपो स्वेदस्यातिप्रवृत्तिरितिसिद्धान्तः ॥ २२४ ॥

अब यह सन्देह होताहै कि पसीना निकलना पित्तकाधर्म्महै क्योंकि कहागयाहै कि पित्तज्वरमें कंठ ओष्ठ मुख तथा नासिकाका पकना और पसीना निकलना यह लक्षण होते हैं इसलिये वात कफ ज्वर में पसीना कैसे निकलसक्ताहै इसका उत्तर यहहै कि विकृति विषम समवायारब्धहोनेके कारण कोई दोष नहींहै यह कार्तिकने कहाहै प्रकृति सम समवाय और विकृति विषम समवायका यह अर्थहै कि प्रकृतिका अर्थ हेतु भूत समका अर्थ कारणको अनुरूप और समवायका अर्थ कार्य्य कारण भाव सम्बन्धतो प्रकृति सम समवायका अर्थ हुआ कि कारण के अनुरूप कार्य्य जैसे स्वाभाविक श्वेत तंतुरूपकारणोंसे प्रारंभ किया गया पटरूप कार्य्य श्वेतही होताहै इसी प्रकार हेतु भूत केवल वात पित्त अथवा कफके द्वारा उत्पन्नहुआ ज्वर वातादिकोंके उचित कम्पवेगकी अधिकता अथवा शरीरमें गीलाकपड़ालिपटाहुआसा मालूम होना इत्यादि धर्मों से युक्तहोता है विकृति विषम समवाय अर्थात् हेतु भूत विकृति के द्वारा कारण के अनुरूप कार्य्यका नहोना जैसे कि संयोग के द्वारा विकार को प्राप्त हुये हेतुभूत हल्दी और चूने से विषम अर्थात् कारण के विपरीत रक्तवर्ण उत्पन्नहोता है उसी प्रकार संयोग के द्वारा विकारको प्राप्त हुये हेतुभूत वात कफों से विषम अर्थात् कारण से विपरीत स्वेद की अत्यन्त प्रवृत्ति होतीहै यह सिद्धान्तहै ॥ २२४ ॥

अथवातश्लेष्मज्वरस्यचिकित्सामाह । वातश्लेष्मज्वरेदेयमौषधंनवमेऽहनि ॥ २२५ ॥

पिप्पलीपिप्पलीमूलंचव्यचित्रकनागरैः । दीपनीयःस्मृतोवर्गोवातश्लेष्मज्वरापहः ॥ कोलमात्रोपयोगित्वात्पञ्चकोलमिदंस्मृतम् ॥ तीक्ष्णोपाचनंश्रेष्ठंदीपनंकफदाहनुत् । गुल्मप्लीहोदरानाहशूलघ्नंपित्तकोपनम् २२६ ॥

(बातकफज्वरकी चिकित्सा)बात कफ ज्वर में नवेंदिन औषध देनी चाहिये ॥ २२५ ॥ (पंच कोल)पीपल पीपलामूल चव्य चीता और सोंठ यह वर्गदीपन औरबात कफ ज्वरका नाशकहै यह सब दो २ कोल (तीन २ मासे) प्रयोग की जातीहैं इसलिये इसको पंचकोल कहते हैं यह पंचकोल तीक्ष्ण उष्ण पाचक दीपन और कफबात बायगोला प्लीहा उदर आनाह तथा शूल नाशक है और पित्तको कुपित करता है ॥ २२६ ॥

द्वितीयकिरातादिक्काथः ॥

किरातविश्वामृतवल्लिसिंहिकाव्याघ्रीकणामूलरसोनसिन्दुकैः । कृतःकषायोविनिहन्तिसत्वरंज्वरंसमीरात्सकफात्समुत्थितम् ॥ २२७ ॥

दूसरा किरातादि क्काथ ॥

चिरायता सोंठ गिलोय भटकटैया पीपल पीपलामूल लहसन और संभालू इन औषधियों का क्काथ शीघ्रही बात कफ ज्वर को नाश करता है ॥ २२७ ॥

पिप्पल्यादिक्काथः

पिप्पल्यादिगणक्काथंपिबेद्वातकफज्वरी।नातःपरंकिञ्चिदस्तिज्वरेभेषजमुत्तमम् ॥२२८॥

पिप्पल्यादि क्काथ ॥

पिप्पल्यादि गणका क्काथ वात कफ ज्वर में पीना चाहिये इससे बढ़कर और ज्वर की उत्तम औषध नहीं है ॥ २२८ ॥

वृहत्पिप्पल्यादि क्काथ ॥

पिप्पलीपिप्पलीमूलं चव्यचित्रकनागरम् । वचासातिविषाजाजी पाठावत्सकरेणुका ॥ किराततिक्तकीमूर्वा सर्षपामरिचानिच । कट्फलंपुष्करंभार्गी विडङ्गंकर्कटाह्वयम् ॥ अर्कमूलंवृहत्सिंही श्रेयसीसदुरालभा । दीप्यकश्चाजमोदाच शुकनासासहिंगुका ॥ एतानिसमभागानि गणएकोऽष्टविंशतिः । एषांक्काथोनिपीतःस्याद्वातश्लेष्मज्वरापहः ॥ हन्तिवातंतथाशीतं प्रस्वेदमतिवेपथुम् । प्रलापञ्चातिनिद्रांच रोमहर्षारुचीतथा ॥ महावातेऽपतन्त्रेचशून्यत्वेसर्व्वगात्रजे। पिप्पल्यादिमहाक्काथोज्वरेसर्वत्रपूजितः ॥२२९ ॥

वृहत्पिप्पल्यादि क्काथ ॥

पीपल पीपलामूल चव्य चीता सोंठ वच अतीस कालाजीरा पाढ़ा कुरैया रेणुका चिरायता मरोड़फली सरसों मिर्च कायफल पुष्करमूल भारंगी बायविड़ंग काकड़ासिंगी आक की जड़ बड़ी भटकटैया रास्ना जवासा अजवाइन अजमोद सोनापाढ़ा और हींग इन अट्ठाईस औषधियोंका एक गण इनसब औषधियों को समभाग लेकर क्काथकरके पीनेसे वात कफ ज्वर वात शीत स्वेद अत्यन्त कम्प प्रलाप अति निद्रा रोमांच अरुचि महावात अपतंत्रवात और सर्वांगपीड़ा इनसबका नाश होताहै यह वृहत्पिप्पल्यादिक्काथ संपूर्ण ज्वरोंमें हितकारीहै ॥ २२६ ॥

दशमूलीरसःपीतः कणाढ्यःकफवातजे । ज्वरेविपाकेनिद्रायां पार्श्वरुक्श्वासकास के ॥ दशमूली क्काथः । अत्रश्रेयसीरास्नाः वातश्लेष्मज्वर हरत्वात् ॥ २३० ॥

दशमूलीक्काथ ॥

दशमूल के क्काथमें पीपलका चूर्ण छोड़कर पीनेसे वात कफ ज्वर अपरिपाक अधिकनिद्रा पस-लियोंकी पीड़ा श्वास और खांसी इनसब का नाशहोताहै ॥ २३० ॥

पिप्पलीभिःशृतंतोयमनभिष्यन्दिदीपनम् । वातश्लेष्मज्वरंहन्ति सेवितंप्लीहनाश नम् ॥ (पिप्पली क्काथः) ॥ २३१ ॥

पिप्पली क्काथ ॥

पीपलका क्काथ बनाकर सेवन करनेसे वात कफ ज्वर और प्लीहाका नाशहोताहै यह क्काथ अभि ष्यन्दरहित और दीपनहै ॥ २३१ ॥

सूतकंटङ्कणंभृष्टं गन्धंशुद्धंसमंसमम् । द्विगुणंसूतकाद्देयं जैपालंतुपवर्जितम् ॥ सैंध वंमरिचञ्चिंचा त्वक्क्षारःशर्करापिच । प्रत्येकंसूततुल्यंस्याज्जम्बीरैर्मर्द्दयेद्दिनम् ॥ सू र्यशेखरनामायं रसोगुञ्जाद्वयोन्मितः । भक्षितस्तप्ततोयेन वातश्लेष्मज्वरापहः ॥ सूर्य शेखरीरसो वातश्लेष्मज्वरे शीतज्वरेच रसप्रदीपे ॥ २३२ ॥

रसप्रदीप में कहाहुआ बात कफ और शीतज्वरपर सूर्यशेखरनाम रस ॥

शुद्धपारा भुनासुहागा और शुद्धगन्धक यह समभाग और पारेकादूना छिलाहुआ जमालगोटा सेंधा-नोन मिर्च इमलीकी छालका खार और शक्कर यहसब प्रत्येकपारेके समभागले इनसब औषधियों को जंभीरी नींबूके रसमें एकदिन घोटकर दोरत्ती सेवनकरे और ऊपरसे गरम जलपिये इस्से बात कफ ज्वर का नाशहोता है ॥ २३२ ॥

स्वेदोद्गमेभृष्टकुलत्थचूर्णं निपातनंशस्तमितिब्रुवन्ति । जीर्णशकृद्भोर्लवणस्यभाज नं संचूर्णितंस्वेदहरंसुधूलनात् ॥ २३३ ॥

पसीना निकलनेपर भुनीहुई कुलथी का चूर्ण मलना श्रेष्ठ है पुराने गोबरका चूर्ण और नोनके पात्रका चूर्ण मलने से पसीने का नाशहोता है ॥ २३३ ॥

मरिचंपिप्पलीशुण्ठी पथ्यालोध्रञ्चपौष्करम् । भूनिम्बकटुकाकुष्ठं कर्चूरोलिङ्गिका शटी ॥ एतानिसमभागानि सूक्ष्मचूर्णानिकारयेत् । एतदुद्धूलनंश्रेष्ठं स्रोतोवत्स्वेदनि र्गमे ॥ लिङ्गिकापंचगुरिआइतिलोके। अत्रशटीगंधपलाशी (मरिचाद्युद्धूलनम्)२३४॥

मरिचादि उद्धूलन ॥

मिर्च पीपल सोंठ हड़ लोध पुष्करमूल चिरायता कुटकी कूट कचूर पचगुरिया और गन्धपलाशी इनसब औषधियों को समभाग लेकर महीन पीस धूराकरने से स्रोत के समानभी बहता हुआ पसीना निवृत्त होता है ॥ २३४ ॥

भूनिम्बकारवीतिक्ता वचाकटफलजंरजः । एषामुद्धूलनंश्रेष्ठं सततंस्वेदसंस्रवे ॥ भू निम्बाद्युद्धूलम् ॥ २३५ ॥

भूनिंबादि उद्धूलन ॥

चिरायता अजमोद कुटकी बच और कायफल इन औषधियों को चूर्ण करके धूराकरने से निरन्तर बहताहुआ पसीना नष्टहोता है ॥ २३५ ॥

पूर्व्वोक्तोवालुकास्वेदोऽप्यत्रसमुचितः। यदुक्तम्। पीनसश्वासवाधिर्य्ये जङ्घापार्श्वास्थिशूलिनि। वातश्लेष्मज्वरेदेयं औषधंतद्विधानवित् ॥ मातुलुङ्गफलकेशरोधृतःसिन्धुजन्ममरिचान्वितोमुखे। हन्तिवातकफरोगमास्यगंशोषमाशुजड़तामरोचकम् ॥ २३६ ॥

प्रथम कहाहुआ बालुका स्वेद भी बात कफ ज्वरमें देना चाहिये क्योंकि कहागया है कि पीनस श्वास बधिरता पिंडली पसली तथा हड्डियों की पीड़ा और वात कफ ज्वर में स्वेदकी बिधिका जाननेवाला वैद्य स्वेद दे संधानोन और मिर्च सहित नींबूके जीरे को मुखमें रखनेसे बात कफ जनित रोग मुखका सूखना मुखकी जड़ता और अरुचिका नाशहोता है ॥ २३६ ॥

अथान्नमाह ॥

महत्यापञ्चमूल्यान्नं सम्यक्सिद्धंचिकित्सकः। सप्तमेदिवसेदद्यात् ज्वरेवातबलासजे ॥ इति वातश्लेष्मज्वराधिकारः ॥ २३७ ॥

बात कफ ज्वरमें अन्न ॥

बात कफ ज्वरवालेको पंचमूल के क्काथके द्वारा पकाहुआ अन्न सातवें दिन देवे इति बात कफ ज्वराधिकार ॥ २३७ ॥

अथ पित्तश्लेष्मज्वराधिकारः ॥

तत्रतस्यविप्रकृष्ट सन्निकृष्टकारण कथनपूर्विकां संप्राप्तिमाह ॥ पित्तश्लेष्मकरैःपित्तकफावामाशयाश्रयौ। विहिर्निरस्यकोष्ठाग्निं रसगौज्वरकारिणौ ॥ २३८ ॥

पित्त कफ ज्वराधिकार ॥

पित्त कफ ज्वर के दूर और समीपी कारणों समेत संप्राप्ति का बर्णन करते हैं पित्तकफ बर्द्धक आहार बिहारोंके सेवनसे आमाशयमें प्राप्तहुए पित्त और कफ जठराग्निकी ऊष्मा को बाहर निकाल कर और रसको दूषित करके ज्वर को उत्पन्न करते हैं ॥ २३८ ॥

पूर्व्वरूपमाह ॥

प्राग्रूपेपित्तकफयोः स्यातांपित्तकफज्वरे ॥ २३९ ॥

पित्त कफ ज्वरका पूर्व्वरूप ॥

पित्त कफ ज्वरके होनेसे पहले पित्तज्वर और कफज्वर सम्बन्धी पूर्वरूपके लक्षणहोतेहैं २३९॥

तस्यलक्षणमाह ॥

लिप्ततिक्तास्यतातन्द्रा मोहःकासोऽरुचिस्तृषा। मुहुर्दाहोमुहुश्शीतं पित्तश्लेष्मज्वराकृतिः॥आस्यतिक्तत्वंपित्तेनलिप्तत्वंकफेनतन्द्राअर्द्धोन्मीलितनेत्रत्वंमोहोमूर्च्छा२४०॥

पित्त कफज्वर के लक्षण ॥

पित्त कफ ज्वरमें पित्त से मुखका कडुआपन तथा कफसे मुखका लिपाहुआसा मालूम होना तन्द्रा मूर्च्छा खांसी अरुचि तृषा और कभी शीत कभी दाह यह लक्षण होते हैं ॥ २४० ॥

अथ पित्तश्लेष्मज्वरस्यचिकित्सा ॥

पित्तश्लेष्मज्वरेदेयमौषधंदशमेऽहनि ॥ २४१ ॥

पित्त कफ ज्वरकी चिकित्सा ॥

पित्त कफ ज्वर में दशवें दिन औषध देनी चाहिये ॥ २४१ ॥

गुडूचीनिम्बधान्याकंचन्दनंकटुरोहिणी । गुडूच्यादिरयंक्काथोपाचनोदीपनःस्मृतः ॥ तृष्णादाहारुचिच्छर्दिपित्तश्लेष्मज्वरापहः इतिगुडूच्यादिः ॥ २४२ ॥

गुडूच्यादि क्काथ ॥

गिलोय नींब धनियां लालचन्दन और कुटकी इन संपूर्ण औषधियोंका क्काथ पाचन दपिन और तृषा दाह अरुचि छर्दि तथा पित्त कफज्वर नाशक होताहै ॥ २४२ ॥

अमृताकटुकारिष्टपटोलघनचन्दनम् । नागरेन्द्रयवंचैतदमृताष्टकमीरितम् ॥ क्कथितंसकणाचूर्णंपित्तश्लेष्मज्वरापहम् । हृल्लासारोचकच्छर्दिस्तृष्णादाहनिवारणम् ॥ (अमृताष्टकम्) ॥ २४३ ॥ अमृताष्टक ॥

गिलोय कुटकी नींब पर्वल मोथा लालचन्दन सोंठ और इन्द्रजौ यह अमृताष्टक कहलाता है इन सब औषधियों का क्काथ पीपलका चूर्ण मिलाकर पीने से पित्त कफ ज्वर मतली अरुचि छर्दि तृषा और दाहका नाश होताहै ॥ २४३ ॥

कण्टकार्य्यमृताभार्गीविश्वेंद्रयववासकम् । भूनिम्बचन्दनंमुस्तंपटोलकटुरोहिणी ॥ विपाच्यपाययेत्क्काथंपित्तश्लेष्मज्वरापहम् । दाहतृष्णारुचिच्छर्दिकासशूलनिवारणम् ॥ इतिकण्टकार्यादिक्काथः ॥ २४४ ॥

कंट कार्य्यादि क्काथ ॥

भटकटैया गिलोय भारंगी सोंठ इन्द्रजौ बांसा चिरायता लालचन्दन मोथा पर्वल और कुटकी इन औषधियों के क्काथ के पीने से पित्त कफज्वर दाह तृषा अरुचि छर्दि खांसी और शूल का नाश होता है ॥ २४४ ॥

नागरोशीरबिल्वाब्दधान्यमोचरसाम्बुभिः । कृतःक्काथोभवेद्ग्राहीपित्तश्लेष्मज्वरापहः ॥ नागरादिक्काथः ॥ २४५ ॥

नागरादि क्काथ ॥

सोंठ खस बेल मोथा धनियां मोचरस और सुगन्धबाला इन औषधियों का क्काथ ग्राही और पित्त कफज्वर नाशक होताहै ॥ २४५ ॥

शर्करामक्षमात्रांचकटुकांचोष्णवारिणा । पीत्वाज्वरंजयेत्जन्तुःपित्तश्लेष्मसमुद्भवम् ॥ अत्रकटुकायाःद्वादशमाषाःशर्करयाश्चत्वारोमाषाएवंकर्षःइतिचरकः । वैद्यस्यव्यवहारेकटुकाशर्करयोःसमभागयोरेवकर्षः ॥ (कटुकीकल्कः) ॥ २४६ ॥

कर्ष कटुकी कल्क ॥

एकतोला कुटकी एकतोला शक्कर इनको गरमजलकेसाथ पानकरनेसे पित्त कफज्वरका नाशहो-

ताहै यहां कुटकी बारहमासे और शक्कर चारमासे यह मिलकर चरककेमतमें एककर्ष होताहै परंतु वैद्यलोगोंके व्यवहारमें शक्कर और कुटकीका समभाग एककर्ष होताहै ॥ २४६ ॥

सपत्रपुष्पवासायाःरसःक्षौद्रसितायुतः। पित्तश्लेष्मज्वरंहंतिसाम्लपित्तंसकामलम् ॥ अत्रवासारसोऽर्द्धपलपरिमितोदेयः । मधुसितयोःप्रत्येकंटंकःप्रक्षेप्यः ॥ २४७ ॥

पत्र और पुष्पसहित बांसेका दोतोले रस तीन २ मासे शक्कर और सहत मिलाकर पीनेसे पित्त कफज्वर अम्लपित्त और कामलाका नाशहोताहै ॥ २४७ ॥

अथान्नमाह ॥

कषायःपरिपीतस्तुशृंगवेरपटोलयोः। पित्तश्लेष्मज्वरवमीदाहकण्डुहरोभवेत् ॥(अन्यच्च) पटोलधान्ययोर्यूषःपित्तश्लेष्मज्वरापहः। (इतिपित्तश्लेष्मज्वराधिकारः॥ २४८॥

पित्त कफज्वरमें अन्न ॥

अदरक और पर्व्वलका यूष पित्त कफज्वर छर्द्दि दाह और खुजलीको नष्ट करताहै और यह कहा गयाहै कि पर्व्वल और धनियेका यूष पित्त कफ ज्वरको नाश करताहै इति पित्त कफ ज्वराधिकार॥ २४८॥

अथ सन्निपातज्वराधिकारमाह ॥

तत्रसन्निपातज्वरस्यविप्रकृष्टसन्निकृष्टकारणकथनपूर्विकांसंप्राप्तिमाह । त्रिदोषजनकैर्वातपित्तश्लेष्मामगेहगाः । वह्निर्निरस्यकोष्टाग्निरसगाज्वरकारिणः ॥ २४९ ॥

सन्निपात ज्वराधिकार ॥

सन्निपातज्वरके दूर और समीपीकारण समेत संप्राप्तिका बर्णन करतेहैं त्रिदोषकारी आहार बिहारोंके सेवनसे आमाशयमें गयेहुए बात पित्त और कफ जठराग्निकी ऊष्माको बाहर निकालकर और रसको दूषितकरके ज्वरको उत्पन्न करते हैं ॥ २४९ ॥

पूर्व्वरूपमाह ॥

प्राग्रूपाणित्रिदोषाणांस्युस्त्रिदोषज्वरेनृणाम् ॥ २५० ॥

सन्निपात ज्वरकापूर्वरूप ॥

सन्निपात ज्वरके होनेसे पहले बात कफ और पित्तज्वर संबंधी पूर्व्वरूपोंके लक्षण होतेहैं २५०॥

अथसन्निपातज्वरस्यसामान्यानिलक्षणान्याह ॥

क्षणेदाहःक्षणेशीतमस्थिसंधिशिरोरुजा । सस्रावेकलुषेरक्तेनिर्भुग्नेचापिलोचने ॥ सस्वनौसरुजौकर्णौकण्ठःशूकैरिवावृतः। तन्द्रामोहःप्रलापश्चकासश्वासोरुचिर्भ्रमः ॥ परिदग्धाखरस्पर्शाजिह्वास्रस्ताङ्गतापरा । ष्ठीवनंरक्तपित्तस्यकफेनोन्मिश्रितस्यच ॥ शिरसोलोठनंतृष्णानिद्रानाशोहृदिव्यथा । स्वेदमूत्रपुरीषाणांचिराद्दर्शनमल्पशः ॥ कृशत्वंनातिगात्राणांसततंकण्ठकूजनम्। कोठानांश्यावरक्तानांमण्डलानाञ्चदर्शनम् ॥ मूकत्वंस्रोतसांपाकोगुरुत्वमुदरस्यच । चिरात्पाकश्चदोषाणांसन्निपातज्वराकृतिः ॥ लोचनेसस्रावेसाश्रुणीकलुषेऽस्वच्छेनिर्भुग्नेनिर्गतेकुटिलेच । कण्ठःशुकैरिवावृतःधान्याग्रैरिवावृतः । जिह्वापरिदग्धापरिदग्धेवज्ञायते । अथवापरिदग्धाइवकृष्णादृश्यते

तेस्रस्ताङ्गताशिथिलांगता । ष्ठीवनमित्यादिकफसंयुक्तस्यष्ठीवनंशिरसोलोठनमितस्त तश्चालनंकृशत्वन्नातिगात्राणामितिगात्राणां अतिशयितंकार्श्यनव्याधिप्रभावात्सततं निरन्तरंकोठःवरटीदंष्ट्रसंस्थानंकोटइत्यभिधीयतेश्यावःकपिशोवर्णः । मूकत्वमवचन त्वमल्पवचनत्वंवास्रोतसांकर्णनासादीनाम् ॥ २५१ ॥

सन्निपात ज्वरके सामान्यलक्षण ॥

सन्निपात ज्वर में कभी दाह कभी शीत हड्डी सन्धि तथा मस्तकमें पीड़ा नेत्रोंसे आंसू बहना निर्मल स्वच्छ न रहना रक्तवर्णहोना बाहर निकली हुईसी मालूम होना तथा टेढ़ीहोना कानोंमें पीड़ा तथा अकारण शब्द सुनाईदेना कंठमें कांटे पड़जाना तन्द्रा मोह प्रलाप खांसी श्वास अरुचि भ्रम जिह्वा जली हुईसी अथवा जलेहुएके समानकाली तथा कठोर अंगों में शिथिलता कफसहित रुधिर तथा पित्तका थूकना मस्तकका घुमाना तृषा निद्राकानाश हृदयमें पीड़ा स्वेद मूत्र तथा मलका बहुत देरमें थोड़ा निकलना शरीरका बहुत दुर्बल न होना गलेमें निरन्तर अव्यक्त शब्दहोना त्वचा पर कपिश तथा रक्तवर्ण वर्रों के काटेके समान चकत्तोंका पड़ना वचन कम बोलना अथवा बन्दहोजाना कान तथा नासिका आदिक स्रोतोंका पकना उदरका भारीपन और दोषोंका बहुतदेरमें परिपाकहोना यह लक्षण होतेहैं ॥ २५१ ॥

ननुवातादयःपरस्परविरुद्धगुणास्तेषांसंभूयैकत्रकार्य्यारम्भकत्वंनोपपद्यते । परस्प रोपघातात्दहनसलिलयोरिवतत्कथंवातपित्तकफाः मिलित्वाविकारोत्पादकाः अत्रसमा धानमुक्तंदृढबलेन । विरुद्धैरपिनत्वेतेगुणैर्घ्नन्तिपरस्परम् । दोषाःसहजसाम्यत्वाद्विषंघोर महीनिव ॥ गदाधरस्तुहेत्वन्तरमुक्तवान् । दैवाद्दोषस्वभावाद्वादोषाणांसान्निपातिके । विरुद्धैश्चगुणैस्तैश्चनोपघातःपरस्परमिति ॥ २५२ ॥

यहां यह सन्देह होता हैकि बात पित्त और कफ इनके गुण परस्पर बिरुद्धहैं तो यह परस्पर मिल कर एककार्यको कैसे करसकेहैं जैसे अग्नि और जलदोनोंके मिलने में एकके आघातसे दूसरेका क्षय होताहै उसीप्रकार बात पित्त और कफ परस्पर मिलकर एक दूसरेका आघात न करके रोगको कैसे उत्पन्न करसकेहैं इसका समाधान दृढबलने यह कहाहै कि बात पित्त और कफ परस्पर विरुद्ध गुण वाले होकर के भी एक दूसरे का नाश नहीं करते जैसे दारुण बिष सर्पों को नहीं नाश करता है उसी प्रकार साथ उत्पन्नहोने और समताके कारण परस्पर बिरोधी नहीं होते और गदाधरने दूसरा कारणकहाहै कि भाग्यसे अथवा स्वभावसे बिरुद्ध गुणवाले दोषोंके परस्पर मिलनेपरभी एकके गुण दूसरेका नाशनहीं करते ॥ २५२ ॥

ननुभिन्नचयप्रकोपकालानांवातपित्तकफानांयुगपदुत्पन्नाभावात्कथंसम्भूयसन्निपात ज्वरारम्भकत्वमुत्पद्यतेउच्यते । त्रिदोषजनकनिदानबलेनयुगपदेषांप्रकोपादितिसि द्धान्तः ॥ २५३ ॥

अब यह सन्देह होता है कि बात पित्त और कफके सञ्चय और कोपके समयके अलग २ होने से यह एक साथ उत्पन्न नहीं हो सके तो तीनों मिलकर सन्निपात ज्वरको कैसे उत्पन्न करेंगे इसका उत्तर यहहै कि त्रिदोषकारी निदानोंके बलसे एकसाथ तीनोंदोष कुपितहोतेहैं यहसिद्धान्तहै ॥२५३॥

अथ सामान्यसन्निपातज्वरस्यत्रयोदशविशेषानाह ॥

एकोल्वणस्त्रयस्तेषुद्व्युल्वणश्चतथेतिषट्। त्र्युल्वणश्चभवेदेकोविज्ञेयःसतुसप्तमः॥ प्रवृद्धःमध्यहीनैस्तुवातपित्तकफैश्चषट्। सन्निपातज्वरस्यैवंस्युर्विशेषास्त्रयोदश। तत्रप्रवृद्धवातःमध्यपित्तोहीनकफः १ मध्यवातःप्रवृद्धपित्तोहीनकफः २ हीनवातःप्रवृद्धपित्तो मध्यकफः ३ प्रवृद्धवातःहीनपित्तोमध्यकफः ४ मध्यवातःहीनपित्तःप्रवृद्धकफः ५ हीनवातोमध्यपित्तः प्रवृद्धकफः ६ इतिषट्॥ २५४॥

सामान्य सन्निपात ज्वर के तेरह भेद कहे जाते हैं॥

बढ़ेहुए एकदोष वाले तीन बढ़ेहुए दोदोष वाले तीन इसप्रकार छःहुए बढ़ेहुए तीनोंदोष वाला एक और बातपित्त तथाकफकी अधिकता मध्यता और हीनतासे छःइस प्रकारतेरह सन्निपात ज्वर होतेहैं बातादिकों की अधिकता मध्यता तथा हीनताके द्वाराआगे कहेहुए यह छः प्रकारहोतेहैं अधिक बात मध्यपित्त हीनकफ एक मध्यबात अधिकपित्त हीनकफ दूसरा हीनबात अधिकपित्त मध्यकफ तीसरा अधिक बात हीन पित्त मध्य कफ चौथा मध्य बात हीन पित्त अधिककफ पांचवां हीनबात मध्यपित्त अधिककफ छठा॥ २५४॥

तेषांनामानिक्रमादाह॥

विस्फारकश्चाशुकारीकम्पनोवभ्रसंज्ञकः। शीघ्रकारीतथाभल्लुःसप्तमःकूटपाकलः॥ संमोहकःपालकश्च याम्यःक्रकचइत्यपि। ततःकर्कटकःप्रोक्तस्ततोवैदारिकाभिधः॥ तन्त्रान्तरेविस्फारकइत्यत्रविस्फोरकइतिपाठः। बभ्रस्थानेवभ्रुरितिपाठःकुत्रापिवद्धइति पाठःभल्लुरित्यत्रफल्गुरितिपाठःयाम्यइत्यत्रसंग्रामइतिपाठः कर्कटकइत्यत्रकर्कोटकइति पाठः॥ २५५॥

सन्निपातज्वरोंके क्रम से नाम॥

बिस्फारक आशुकारी कंपन बभ्र शीघ्रकारी भल्लु कूटपाकल संमोहक पालक याम्य क्रकच कर्कटक और बैदारिक किसी२ ग्रंथ में बिस्फारक के स्थानमें बिस्फोरक बभ्रके स्थानमें बभ्रु अथवा कहीं २ वद्ध भल्लुके स्थानमें फल्गु याम्यके स्थानमें संग्राम और कर्कटक के स्थानमें कर्कोटक यह पाठहै २५५॥

तत्रवातोल्वणस्यलक्षणमाह॥

श्वासःकासोत्तमोमूर्च्छाप्रलापोमोहवेपथुः। पार्श्वस्यवेदनाजृम्भाकषायत्वंमुखस्य च॥ वातोल्वणस्यलिङ्गानिसन्निपातस्यलक्षयेत्। एषविस्फारकोनाम्नासन्निपातःसुदारुणः॥ २५६॥

अधिक बातवाले सन्निपात के लक्षण॥

श्वास खांसी भ्रम मूर्च्छा प्रलाप मोह कंपपसलीकीपीड़ा जंभाई और मुखमें कषैलापन यह अधिक बातवाले सन्निपात के लक्षणहैं इसका नाम बिस्फारकहै और अत्यन्त भयानक होताहै॥ २५६॥

अथ पित्तोल्वणस्यलक्षणमाह॥

अतिसारोभ्रमोमूर्च्छामुखपाकस्तथैवच। गात्रेचबिन्दवोरक्तादाहोऽतीवप्रजायते॥ पित्तोल्वणस्यलिङ्गानि सन्निपातस्यलक्षयेत्। भिषग्भिःसन्निपातोऽयमाशुकारीप्रकीर्तितः॥ २५७॥

अधिक पित्तवाले सन्निपात के लक्षण ॥

अतीसार भ्रम मूर्च्छा मुखका पकना शरीर में लाल विन्दु और अत्यन्त दाह यह आशुकारी नाम अधिक पित्तवाले सन्निपात के लक्षणहैं ॥ २५७ ॥

अथ कफोल्वणस्यलक्षणमाह ॥

जड़तागद्गदावाणीरात्रौनिद्राभवत्यपि । प्रस्तब्धेनयनेचैवमुखमाधुर्य्यमेवच ॥ कफोल्वणस्यलिङ्गानिसन्निपातस्यलक्षयेत् । मुनिभिःसन्निपातोऽयमुक्तःकम्पनसंज्ञकः॥२५८॥

अधिक कफ वाले सन्निपात के लक्षण ॥

जड़ता गद्गद बचन रात्रिमें निद्राकाभी होना पथरीली आंखें होना और मुखमें मधुरता यह अधिक कफवाले सन्निपात के लक्षण हैं मुनि लोगोंने इस सन्निपात को कंपन नाम से प्रसिद्ध कियाहै २५८ ॥

अथ वातपित्तोल्वणस्यलक्षणमाह ॥

वातपित्ताधिकोयस्यसन्निपातःप्रकुप्यति । तस्यज्वरोमदस्तृष्णामुखशोषःप्रमीलकः॥ आध्मानारुचितन्द्राचकासश्वासभ्रमश्रमः।मुनिभिर्व्वभ्रुनामायंसन्निपातउदाहृतः २५९

अधिक बातपित्त वाले सन्निपात के लक्षण ॥

मद तृषा मुखका सूखना नेत्रोंको बन्द किये रहना अफरा अरुचि तंद्रा खांसी श्वास भ्रम और श्रम यह अधिक बातपित्त वाले सन्निपात के लक्षणहैं इसका नाम बभ्रुहै ॥ २५९ ॥

अथवातश्लेष्मोल्वणस्यलक्षणमाह ॥

वातश्लेष्माधिकोयस्यसन्निपातःप्रकुप्यति ॥ तस्यशीतज्वरोमूर्च्छाक्षुत्तृष्णापार्श्वनिग्रहः। शूलमस्विद्यमानस्यतंद्राश्वासश्चजायते ॥ असाध्यःसन्निपातोऽयंशीघ्रकारीतिकथ्यते॥नहिजीवत्यहोरात्रमनेनाविष्टविग्रहः २६०॥

अधिक बात कफवाले सन्निपातके लक्षण ॥

शीतज्वर मूर्छा छींक तृषा पसलियों की ऐंठन पसीना न निकलनेपर अधिकपीड़ा तन्द्रा और श्वास यह अधिक बात कफ वाले सन्निपात के लक्षणहैं इस असाध्य सन्निपात को शीघ्रकारीकहते हैं इस सन्निपात में जो ग्रसित होताहै वह एकरात्रि दिनसे अधिकनहीं जीताहै ॥ २६० ॥

अथपित्तश्लेष्मोल्वणस्यलक्षणमाह ॥

पित्तश्लेष्माधिकोयस्यसन्निपातःप्रकुप्यति ॥ अंतर्दाहोवहिःशीतंतस्यतृष्णाप्रवर्द्धते। तुद्यतेदक्षिणेपार्श्वेउरःशीर्षगलग्रहः ॥ ष्ठीवतिश्लेष्मपित्तञ्चकृच्छ्रात्कोठश्चजायते। विड्भेदश्वासहिक्काचवर्द्धन्तेसप्रमीलकाः॥ऋषिभिर्भल्लुनामायंसन्निपातउदाहृतः २६१॥

अधिक पित्तकफवाले सन्निपातके लक्षण ॥

भीतरदाह बाहरशीत अत्यन्ततृषा दहनीपसली हृदय मस्तक तथा गलेमें पीड़ा कष्टसे पित्त तथा कफकाथूकना बरोंके काटनेकेसे चकत्ते मल पतलाहोजाना श्वास हिचकी और नेत्रोंका मूंदना यह अधिक पित्त कफवाले सन्निपातके लक्षणहैं मुनिलोग इससन्निपातको भल्लुनामकहतेहैं ॥ २६१ ॥

अथवातपित्तश्लेष्मोल्वणस्यलक्षणमाह ॥

सर्व्वदोषोल्वणोयस्यसन्निपातःप्रकुप्यति ॥ त्रयाणामपिदोषाणांतस्यरूपाणिलक्ष

येत्। व्याधिभ्योदारुणश्चैववज्रशस्त्राग्निसन्निभः ॥ केवलोच्छ्वासपरमस्तब्धाङ्गस्तब्ध लोचनः। त्रिरात्रात्परमेतस्यजंतोर्हरतिजीवितम् ॥ तदवस्थंतुतदृष्ट्वामूढाव्याहरतेज नः। धर्षितोराक्षसैर्नूनमवेलायांचरंतिये ॥ अम्बयाब्रुवतेकेचिद्यक्षिण्याब्रह्मराक्षसैः। पिशाचैर्गुह्यकैश्चैवतथान्यैर्म्मस्तकेहतम्॥ कुलदेवार्च्चनाहीनंधर्षितंकुलदैवतैः। नक्षत्र पीड़ामपरेगरकर्म्मेतिचापरे ॥ सन्निपातमिमंप्राहुर्भिषजाःकूटपालकम् ॥ २६२ ॥

बात पित्त और कफ इनतीनों की अधिकतासे युक्तसन्निपातके लक्षण ॥

त्रिदोषजसन्निपातमें तीनों दोषों के लक्षणहोतेहैं यह संपूर्ण रोगों में प्रधान भयकारी बज्र शस्त्र तथा अग्नि के समानहोताहै इससे बहुत श्वासलेना शरीर का जकड़ना और नेत्रोंका न बन्दहोना यहलक्षणहोतेहैं यहसन्निपात तीनही रात्रि में मनुष्यके प्राणोंको हरलेताहै इससन्निपातसेयुक्तरोगी को देखकर मूर्ख लोग कहतेहैं कि इसको कुसमय में घूमनेवाले राक्षसोंने घेराहै कोई कहते हैं अंबा देवी ब्रह्मराक्षस यक्षणी पिशाच गुह्यक अथवा अन्य भूतादिक लगेहैं कोई कहतेहैं कि कुलदेवकापूजन न करनेसे कुलदेवोंने आदबायाहै कोई नक्षत्र पीड़ा कहतेहैं और कोई बिषकादोष कहतेहैं इससन्नि- पातको बैद्यलोग कूटपालकनाम कहते हैं॥ २६२ ॥

अथ प्रवृद्धमध्यहीनवातादिजनितसन्निपातज्वराणांलक्षणान्याह ॥

प्रवृद्धमध्यहीनैस्तुवातपित्तकफैश्चयः। तेनरोगास्तएवोक्तायथादोषबलाश्रयाः ॥ प्रलापायाससंमोहकम्पमूर्च्छारतिभ्रमाः। एकपक्षाभिघातश्चतत्राप्येतेविशेषतः ॥ ए षसंमोहकोनाम्नासन्निपातःसुदारुणः। रोगास्तएवोक्ताःउक्ताएवतेरोगाःव्यथावेपथुनि द्रानाशविष्टम्भादयोवातजाः दाहतृष्णोष्णतास्वेदादयःपित्तजाः गौरवाग्निमान्द्योत्काश नासिकामुखप्रसेकादयःकफजाः तत्रापिप्रलापादयःपक्षाघातानांविशेषाद्भवन्ति॥२६३॥

अधिक मध्य और हीनबातादिजनित सन्निपातों के लक्षण ॥

अधिकवात मध्यपित्त और हीनकफके द्वाराजो सन्निपात उत्पन्न होताहै उसमें पहलेकहेहुए बातादि दोषोंके रोगदोषोंके बलके अनुसार होतेहैं अर्थात् बेदना कम्प निद्राका नाश तथा विष्टंभादिक बात- जनित दाह तृषा उष्णता तथास्वेद आदिक पित्तजनितऔर भारीपन मंदाग्नि बमनतथा मुख नासिका आदिका बहना यह कफजनित रोगहै औरइससन्निपातमें प्रलाप श्रम मोह कम्पमूर्च्छा ग्लानि भ्रान्ति और पक्षाघात यह लक्षण विशेष करके होतेहैं इस भयानक सन्निपातको संमोहक कहतेहैं ॥ २६३ ॥

ननुवातःप्रवृद्धःसज्वरंकरिष्यतिपित्तन्तुमध्यसममितियावत्तत्कथंज्वरंकरिष्यतिय तआह। धातवस्तन्मलादोषाःस्युर्नाशायासमास्तनौ। समाःसुखायविज्ञेया बलायोपच यायच ॥ इतिउच्यते। अत्रपित्तंमध्यमपि अप्रकृतमेवयतोऽप्रकृतयोर्वातश्लेष्मणोरपे क्षयामध्यं तेन मध्यकुपितमित्यर्थः। ननु कफक्षीणः सकथं ज्वरं करिष्यति हीनशक्ति त्वात् उच्यते दोषाः क्षीणाअपि व्याधीन कुर्वत्येव यत आह वातक्षयेऽल्पचेष्टत्वं मन्दवाक्त्वंविसंज्ञता। पित्तक्षयेऽधिकःश्लेष्मावह्निर्मन्दःप्रभाक्षयः ॥ शिथिलाःसन्धयो मूर्च्छारौक्ष्यदाहकफक्षयः। इत्याशङ्कासिद्धान्तश्चात्रपरत्रापि ॥ २६४ ॥

अब यह सन्देह होताहै कि अधिक बात ज्वर को उत्पन्न करतीहै यहठीकहै परन्तु मध्य अर्थात् समपित्त कैसे ज्वर उत्पन्न करताहै क्योंकि कहागयाहै कि धातु और धातुओंके मलरूप बातादिक दोष समता रहितहोकर शरीरको नष्टकरतेहैं औरसमहोकर सुखबल तथावृद्धिको करतेहैं इसका उत्तर यह है कि यहां मध्यपित्त भी विकार युक्त लियाजाता है क्योंकि बिकार युक्तबात तथा कफकी अपेक्षा पित्तकी मध्यमताली जाती है इसलिये मध्यपित्तका अर्थ मध्य कुपितपित्त लेनाचाहिये दूसरा संदेह यह होताहै कि हीनकफ हीनशक्ति के द्वारा ज्वरको कैसे उत्पन्न करेगा इसका उत्तर यहहै कि दोष क्षीणहोकरभी रोगों को उत्पन्न करतेहैं क्योंकि कहागयाहै कि वायुके क्षीणहोनेपर चेष्टातथा बाणीकी अल्पता और संज्ञाका न होना यह लक्षण होतेहैं पित्तके क्षयहोनेपर कफकी अधिकता मंदाग्नि और कान्तिका नाशहोताहै और कफके क्षयहोनेपर संधियोंमें शिथिलता मूर्च्छा सूखापन और दाहहोता है यह सिद्धान्तयहां और अन्यअधिक मध्यतथा हीन दोष जनित सन्निपातोंमें जाननाचाहिये २६४॥

मध्यप्रवृद्धहीनैस्तुवातपित्तकफैश्चयः । तेनरोगास्तएवोक्तायथादोषबलाश्रयाः ॥ मोहप्रलापमूर्च्छास्युर्मन्यास्तम्भःशिरोग्रहः । कासःश्वासोभ्रमस्तन्द्रासंज्ञानाशोहृदिव्य था ॥ खेभ्योरक्तंविसृजतिसंरक्तंस्तब्धनेत्रता । तत्राप्येतेविशेषाःस्युर्मृत्युरर्वाक्त्रिवासरा त् ॥ भिषग्भिःसन्निपातोऽयंकथितःपाकलाभिधः ॥ २६५ ॥

मध्यबात अधिकपित्त और हीनकफ जनित सन्निपातमें पूर्व्वोक्त बातादि जनितरोग दोषोंके बलके अनुसार होतेहैं और मोह प्रलाप मूर्च्छा गलेके पीछेकी नसका जकड़ना शिरमेंपीड़ा खांसी श्वास भ्रम तंद्रा संज्ञा कानहोना हृदयमेंपीड़ा शरीरके सम्पूर्ण छिद्रोंसे रुधिरका बहना और नेत्रोंका रक्त वर्ण तथा बन्दनहोना यह सब लक्षण बिशेषकरके होत हैं इस पाकलनाम सन्निपात में तीन दिन के भीतरमृत्युहोती है ॥ २६५ ॥

हीनप्रवृद्धमध्यैस्तुवातपित्तकफैश्चयः॥तेनरोगास्तए॥वोक्तायथारागबलाश्रयाः ।हृदयं दह्यतेचास्ययकृत्प्लीहान्त्रफुफ्फुसाः॥पच्यतेत्यर्थमूर्द्धाधःपूयशोणितनिर्गमः । शीर्णदन्त श्चमृत्युश्चतत्राप्येतद्विशेषतः॥भिषग्भिःसन्निपातोऽयंयाम्योनाम्नाप्रकीर्त्तितः॥२६६॥

हीन बात अधिकपित्त और मध्य कफसे जो सन्निपात उत्पन्न होताहै उसमें पहले कहेहुए बात पित्त और कफकेरोगदोषोंके बलके अनुसार होतेहैं और हृदयमेंदाह यकृत्प्लीहा आंतेंतथाफुफ्फुसका प- कना ऊपर तथा नीचेसे पीबतथारुधिरका निकलना और दांतोंमें शिथिलता होती है यह याम्यनाम सन्निपात है इसमें मृत्युहोतीहै ॥ २६६ ॥

प्रवृद्धहीनमध्यैस्तुवातपित्तकफैश्चयः ॥ तेनरोगास्तएवोक्तायथादोषाबलाश्रयाः । प्र लापायाससम्मोहःकम्पमूर्च्छारतिभ्रमाः ॥ मन्यास्तम्भेनमृत्युःस्यात्तत्राप्येतद्विशेषतः । भिषग्भिःसन्निपातोऽयंककचःसम्प्रकीर्त्तितः ॥ २६७ ॥

अधिक बातहीन पित्त और मध्य कफके द्वारा जो सन्निपात उत्पन्न होताहै उसमें पहले कहेहुए बातादि दोषजनितरोग दोषोंके बलके अनुसार होते हैं और प्रलाप श्रम मोह कंप मूर्च्छा ग्लानि भ्रम और गलेके पीछेकी नसका जकड़ना इन विशेष लक्षणों समेत मृत्यु होती है इस सन्निपातको क्रकच कहतेहैं ॥ २६७ ॥

मध्यहीनप्रवृद्धैस्तुवातपित्तकफैश्चयः । तेनरोगास्तएवोक्तायथादोषबलाश्रयाः॥ अन्तर्दाहोविशेषोऽत्रनचवक्तुंसशक्यते।रक्तमालक्तकेनैवलक्ष्यतेमुखमण्डलम्॥पित्तेनाकर्षितःश्लेष्माहृदयान्नप्रसिच्यते । इषुणेवाहतम्पार्श्वंतुद्यतेखन्यतेहृदि ॥ प्रमीलकःश्वासहिक्कावर्द्धतेतुदिनेदिने। जिह्वादग्धाखरस्पर्शागलःशूकैरिवावृतः॥विसर्गंनाभिजानातिकूजेच्चापिकपोतवत् । अतीवश्लेष्मणापूर्णःशुष्कवक्त्रौष्ठतालुकः ॥तन्द्रानिद्रातियोगार्तोहतवाग्निहतद्युतिः । नरतिंलभतेनित्यंविपरीतानिचेच्छति ॥ आयम्यतेचबहुशोरक्तंष्ठीवतिचाल्पशः । एषकर्कटकोनाम्नासन्निपातःसुदारुणः ॥ २६८ ॥

मध्य बात हीन पित्त और अधिक कफके द्वारा जो सन्निपात होताहै उसमें वातादि जनितरोग दोषोंके बलके अनुसार होतेहैं औरविशेषकरके, अन्तर्दाहकसाहोताहै जो कहा नहीं जाताहै मुखमहावरसे रँगासा होजाताहै पित्तसे खींचाहुआ कफ हृदयके बाहर नहीं निकलता पसलियोंमें बाण लगनेके समान पीड़ा होतीहै और हृदयमें खोदनेके समान पीड़ा होतीहै नेत्रोंका बंदहोना श्वास तथा हिचकी दिनोंदिन बढ़ती हैं जिह्वा जलेहुएकेसमान कठोर होतीहै गलेमें कांटे होजातेहैं मलमूत्रका निकलना मालूम नहीं होता कबूतरके समान शब्द होजाताहै मुख ओष्ठ तथा तालु अत्यन्त कफसे पूर्ण तथा सूखजातेहैं तंद्रा तथा निद्रा अधिक होतीहै बोलनेकी शक्ति तथा कान्तिका नाश होताहै किसी प्रकार चैन नहीं पड़ता विरुद्ध बस्तुओंकी इच्छा होतीहै श्रम बहुत होताहै और थोड़ेसे रुधिरकी बमन होतीहै इस भयंकर सन्निपातको कर्कटक कहते हैं ॥ २६८ ॥

हीनमध्यप्रवृद्धैस्तुवातपित्तकफैश्चयः। तेनरोगास्तएवोक्तायथादोषबलाश्रयाः॥ अल्पशूलंकटितोदोमध्येदाहोरुजाश्रमः । भृशंक्लमःशिरोवस्तिमन्याहृदयवाग्रुजः ॥ प्रमीलकःश्वासकासहिक्काजाड्यंविसंज्ञता । प्रथमोत्पन्नमेनन्तुसाधयंतिकदाचन॥ एतस्मिन्संनिवृत्तेतुकर्णमूलेसुदारुणः । पिडिकाजायतेजन्तोर्यथाकृच्छ्रेणजीवति ॥ सवैदारिकसंज्ञोऽयंसन्निपातःसुदारुणः । त्रिरात्रात्परमेतस्यव्यर्थमौषधकल्पनम् ॥ २६९ ॥

हीन बात मध्य पित्त औरअधिक कफके द्वारा जो सन्निपात होताहै उसमें पहले कहेहुए बातादि जनितरोग दोषोंके बलके अनुसार होतेहैं हड्डी तथा कटिमें पीड़ा अन्तर्दाह पीड़ा श्रम अत्यन्त ग्लानि मस्तक मूत्राशय गलेके पीछेकी नस हृदय तथा बाणीमें रोग नेत्रोंका बंदहोना श्वास खांसी हिचकी जड़ता और संज्ञाका न होना यह लक्षण विशेषकरके होतेहैं यह रोग पहले उत्पन्न होनेपर कदाचित् साध्य होताहै इसके किसी प्रकार निवृत्त होनेपर कानोंके मूलमें भयंकर गांठदार फुड़िया उत्पन्न होतीहै उससे मनुष्य बहुत कष्ट करके बचताहै इस सन्निपातको वैदारिक कहतेहैं इस सन्निपातमें तीनरात्रिके उपरान्त औषध करना व्यर्थहै ॥ २६९ ॥

अथतन्त्रान्तरेवातोल्वणादीनांसन्निपातज्वरविशेषाणांत्रयोदशानांशीताङ्गादीनित्रयोदशनामान्तराणिलक्षणान्तराणिचाह ॥

शीतांगस्त्रिमलोद्भवज्वरगणेतन्द्रीप्रलापीततोरक्तष्ठीवयिताचतत्रगणितःसम्भुग्ननेत्रस्तथा॥साभिन्यासकजिह्वकश्चकथितःप्राक्सन्धिगोथान्तकोरुग्दाहःसहचित्तविभ्रम

इहह्येकर्णकण्ठग्रहौ ॥ तन्द्रीतन्द्रिकःप्रलापीप्रलापकःरक्तष्ठीवयितारक्तष्ठीवीसंभुग्ननेत्रःभुग्ननेत्रः । अभिन्यासकःअभिन्यासः कर्णकण्ठग्रहौकर्णग्रहः कर्णिकःकण्ठग्रहःकण्ठकुब्जकः ॥ २७० ॥

तन्त्रान्तरमें वातोल्वणादि तेरह सन्निपात ज्वरोंके भेदोंके शीतांग आदिक तेरह अन्यनाम लक्षण सहित कहेगये हैं वह आगे वर्णन किये जाते हैं ॥

शीतांग तन्द्रिक प्रलापक रक्तष्ठीवी भुग्ननेत्र अभिन्यास जिह्वक संधिग अन्तक रुग्दाह चित्तविभ्रम कर्णिक और कंठकुब्जक यह तेरह सन्निपात ज्वर होते हैं ॥ २७० ॥

अथतेषांप्रत्येकंलक्षणानि ॥

हिमशिशिरशरीरःसन्निपातज्वरीयः श्वसनकसनहिक्कामोहकम्पप्रलापैः ॥ क्लमबहुकफवातादाहवम्यङ्गपीडास्वरविकृतिभिरार्त्तःशीतगात्रःसउक्तः ॥ २७१ ॥

इनके अलग २ लक्षण ॥

जिस सन्निपात वालेका शरीर पालेके समान शीतल हो और श्वास खांसी हिचकी मोह कंप प्रलाप ग्लानि बहुतकफ वात दाह छर्दि शरीरमेंपीड़ा और स्वर भंग उत्पन्न हो उसे शीतांग सन्निपात कहते हैं ॥ २७१ ॥

तन्द्रातीवततस्तृषातिसरणंश्वासोऽधिकःकासरुक् । सन्ततातितनुर्गलेश्वयथुनासाछिद्रचकण्डूकफः ॥ सुश्यामारसमाक्लमःश्रवणयोर्म्मान्द्यञ्चदाहंस्तथा । यत्रस्यात्सहितन्द्रिकोनिगदितोदोषत्रयोत्थाज्वरः ॥ २७२ ॥

जिस सन्निपात ज्वरमें अधिक तन्द्रा अधिक तृषा अतीसार अधिक श्वास खांसी पीड़ा शरीर में अत्यन्त ताप गलेमें शोथ नासिकाके अग्र भागमें शीतलता जिह्वामें अत्यन्तश्यामता ग्लानि बधिरता और दाह होताहै उसको तन्द्रिक कहतेहैं ॥ २७२ ॥

यत्रज्वरेनिखिलदोषनितान्तरोष जातेप्रलापबहुलासहसोत्थिताश्च । कम्पव्यथापतनदाहविसंज्ञताःस्युर्नाम्नाप्रलापकइतिप्रथितःपृथिव्याम् ॥ २७३ ॥

जिस सन्निपातमें सम्पूर्ण दोष अत्यन्त कुपित हों सहसा बहुत प्रलाप उत्पन्नहो और कंप पीड़ा शरीरमें दाह तथा अज्ञानता होय उसको प्रलापक कहते हैं ॥ २७३ ॥

निष्ठीवोरुधिरस्यरक्तसदृशंकृष्णंतनौमण्डलम् । लौहित्यंनयनेतृषारुचिवमिश्वासातिसारभ्रमाः ॥ आध्मानञ्चविसंज्ञताचपतनंहिक्काङ्गपीडाभृशम् । रक्तष्ठीविनिसन्निपातजनितेलिङ्गंज्वरेजायते ॥ २७४ ॥

रुधिरकी बमन शरीरमें रुधिरके समान तथा काले रंगके चकत्ते नेत्रोंमें ललाई तृषा अरुचि छर्दि श्वास अतिसार भ्रम अफरा अज्ञानता गिरना हिचकी और शरीरमें अत्यन्त पीड़ा यह रक्तष्ठीवी सन्निपातके लक्षण हैं ॥ २७४ ॥

भृशंनयनवक्रताश्वसनकासतन्द्राभृशं प्रलापमदवेपथुःश्रवणहानिमोहास्तथा ॥ पुरोनिखिलदोषजेभवतियत्रलिङ्गंज्वरे । पुरातनचिकित्सकैःसइहभुग्ननेत्रोमतः ॥ २७५ ॥

जिस सन्निपातमें नेत्रोंका बहुत टेढ़ापन श्वास खांसी तन्द्रा भ्रम प्रलाप मद कंप बधिरता और मोह यह लक्षण होतेहैं उसको प्राचीन वैद्य भुग्न नेत्र कहते हैं ॥ २७५ ॥

दोषास्तीव्रतराभवन्तिबलिनःसर्वेऽपियत्रज्वरे। सीहोऽतीवविचेष्टताविकलताश्वासोभृशंमूकता ॥ दाहश्चिक्कनमाननञ्चदहनोमन्दोबलस्यक्षयः । सोऽभिन्यासइतिप्रकीर्त्तितःइहप्राज्ञैर्भिषग्भिःपुरा ॥ २७६ ॥

जिस सन्निपातमें सम्पूर्ण दोष बहुत बलवान् हों य और अत्यन्त मोह चेष्टका न होना विकलता अत्यन्त श्वास मूकता दाह मुखमें चिकनापन मंदाग्नि और बलका नाशहोय उसको अभिन्यास कहतेहैं ॥ २७६ ॥

त्रिदोषजनितेज्वरेभवतियत्रजिह्वाभृशं। वृताकठिनकण्टकैस्तदनुनिर्भरंमूकता ॥ श्रुतिक्षतिबलक्षतिश्वसनकाससन्तापयः । पुरातनभिषग्वरास्तमिहजिह्वकञ्चक्षये॥ २७७॥

जिस सन्निपातमें जिह्वाबहुत कठिन कांटोंसे आच्छादितहो अत्यन्त मूकताहो बधिरता तथा बल क्षयहो और श्वास खाँसी तथा संताप हो उसको जिह्वक कहते हैं ॥ २७७ ॥

व्यथातिशयिताभवेच्छ्वयथुसंयुतासन्धिषु। प्रभूतकफतामुखेविगतनिद्रताकासरुक्॥समस्तमितिकीर्तितंभवातिलक्ष्मयत्रज्वरे। त्रिदोषजनितेबुधैःसहिनिगद्यतेसन्धिगः॥२७८॥

अत्यन्त व्यथा संधियों में सूजन मुख में बहुत कफ निद्रा का नाश और खाँसी यह सब लक्षण जिस सन्निपात ज्वरमें होतेहैं उसको संधिग कहते हैं ॥ २७८ ॥

यस्मिन्लक्षणमेतदस्तिसकलैर्दोषैरुदीतेज्वरे । ऽजस्रंमूर्द्धविधूननंसकसनंसर्वांगपीडाधिका ॥ हिक्काश्वाससदाहमोहसहितादेहेऽतिसंतप्तता। वैकल्यञ्चवृथावचांसिमुनिभिः संकीर्त्तितःसोऽन्तकः ॥ २७९ ॥

जिस सन्निपात में निरंतर शिर कंपना खाँसी सब शरीर में अत्यन्त पीड़ा हिचकी श्वास दाह मोह शरीर में अत्यन्त ताप व्याकुलता और अनर्थक वचन यह लक्षण होते हैं उसको अन्तक कहते हैं ॥ २७९ ॥

दाहोऽधिकोभवतियत्रतृषाचतीव्रा श्वासप्रलापविरुचिभ्रममोहपीड़ा ॥ मन्याहनुव्यथनकण्ठरुजःश्रमश्च । रुग्दाहसंज्ञउदितस्त्रिभवोज्वरोऽयम् ॥ २८० ॥

जिस सन्निपात में अत्यन्त दाह तीव्र तृषा श्वास प्रलाप अरुचि भ्रम मोह तथा पीड़ा होय गले के पीछे की नस जवड़ा तथा कंठ में खेद हो और श्रम होय उसको रुग्दाह कहते हैं ॥ २८० ॥

गायतिनृत्यतिहसतिप्रलपतिविकृतंनिरीक्ष्यतेमुहयेत् । दाहव्यथाभयार्त्तोनरस्तुचित्तभ्रमेज्वरेभवति ॥ २८१ ॥

जिस सन्निपात में रोगी गावे नाचे हँसे प्रलाप करे ठेढ़े नेत्रों से देखे मोह को प्राप्त हो और दाह पीड़ा तथा भयसे व्याकुल होय उसको चित्तभ्रम कहते हैं ॥ २८१ ॥

दोषत्रयेणजनिताकिलकर्णमूले तीव्राज्वरेभवतितुश्वयथुर्व्यथाच ॥ कण्ठग्रहोवधिरताश्वसनंप्रलापः प्रस्वेदमोहदहनानिचकर्णिकाख्ये ॥ २८२ ॥

जिस सन्निपात में कर्ण मूल पर अत्यन्त सूजन तथा पीड़ा हो और कंठरोध बधिरता श्वास प्रलाप स्वेद मोह तथा दाह होय उसको कर्णिक कहते हैं ॥ २८२ ॥

कण्ठःशूकशतावरुद्धवदतिश्वासःप्रलापोऽरुचिः । दाहोदेहरुजातृषापिचहनुस्तम्भःशिरोर्त्तिस्तथा ॥ मोहोवेपथुनासहेतिसकलंलिङ्गंत्रिदोषज्वरे । यत्रस्यात्सहिकण्ठकुब्जउदितःप्राच्यैश्चिकित्साबुधैः ॥ २८३ ॥

जिस सन्निपात में कंठके भीतर सैकड़ों कांटेसे मालूमपड़ें और अत्यन्त श्वास प्रलाप अरुचि दाह शरीर में पीड़ा तृषा जवड़ेका जकड़ना शिरमें पीड़ा मोह तथा कम्प होय उसको कंठकुब्ज कहते हैं ॥ २८३ ॥

सन्धिगस्तेषुसाध्यःस्यात्तन्द्रिकश्चित्तविभ्रमः । कर्णिकोजिह्वकःकण्ठकुब्जःपञ्चापिकष्टकाः ॥ रुग्दाहस्त्वतिकष्टेनसंसाध्यस्तेषुभाषितः । रक्तष्ठीवीभुग्ननेत्रःशीतगात्रःप्रलापकः ॥ अभिन्यासोन्तकश्चैतेषडसाध्याःप्रकीर्त्तिताः ॥ २८४ ॥

ऊपर कहेहुये सन्निपातोंमें से सन्धिग साध्य है तन्द्रिक चित्तविभ्रम कर्णिक जिह्वक तथा कंठकुब्जक यहपांच कष्टसाध्य हैं रुग्दाह अत्यन्त कष्टसाध्य है और रक्तष्ठेवी भग्ननेत्र शीतगात्र प्रलापक अभिन्यास तथा अन्तक यह छः असाध्य कहे हैं ॥ २८४ ॥

अथतन्त्रान्तरेवातोल्वणादीनांसन्निपातज्वरविशेषाणांत्रयोदशानांकुम्भीपाकादीनित्रयोदशनामान्तराणिलक्षणान्तराण्याह ॥ कुम्भीपाकःप्रोर्णुनावःप्रलापीह्यन्तर्दाहोदण्डपातोऽन्तकश्च । एणीदाहश्चाथहारिद्रसंज्ञोभेदाएतेसन्निपातज्वरस्य ॥ अजघोषभूतहासीयंत्रापीड़श्चसंयामः । संशोषीचविशेषास्तस्यैवोक्तास्त्रयोदशान्यत्र ॥ २८५ ॥

तन्त्रान्तरमें वातोल्वणादि तेरह सन्निपात भेदोंके कुम्भीपाकादि अन्य तेरहनाम और लक्षण जो कहेगये हैं सो अबआगे कहते हैं कुम्भीपाक प्रोर्णुनाव प्रलापी अन्तर्दाह दंडपात अन्तक एणीदाह हारिद्रक अजघोष भूतहास यन्त्रापीड़ संन्यास और संशोषी यह तेरह सन्निपातज्वरके भेद हैं ॥ २८५ ॥

अथैषांलक्षणानि ॥

घोणाविवरभ्करदबहुशोणासितलोहितंगाढ़म् । विलुठन्मस्तकमभितः कुम्भीपाकेनपीड़ितंविद्यात् ॥ २८६ ॥ इनकेलक्षण ॥

जिस सन्निपात में नासिका से लाल काला तथा गाढ़ा बहुत रुधिर गिरे और रोगी शिरको इधर उधर चलावे उसको कुम्भीपाक कहतेहैं ॥ २८६ ॥

उत्क्षिप्ययःस्वमंगंक्षिपत्यधस्तान्नितांतमुच्छ्वसिति । तंप्रोर्णुनावजुष्टंविचित्रकष्टंविजानीयात् ॥ २८७ ॥

जिस सन्निपात में रोगी अपने अंगोंको ऊपर उठा २ कर नीचेडाले और बहुत श्वासले उस सन्निपातको प्रोर्णुनाव कहते हैं यह विचित्र कष्टदायक होताहै ॥ २८७ ॥

स्वेदभ्रमांगभेदाःकम्प्रोक्षवथुर्वमिर्व्यथाकण्ठे । गात्रञ्चगुर्वतीवप्रलापिजुष्टस्यजायतेलिंगम् ॥ २८८ ॥

जिस सन्निपातमें स्वेद भ्रम शरीरमें पीड़ा कम्प सन्ताप छर्दि कंठमें पीड़ा और शरीरमें बहुत भारीपन होय उसको प्रलापी कहते हैं ॥ २८८ ॥

अन्तर्दाहः शैत्यंवहिःश्वयथुररतिरपितथाश्वासः । अंगमपिदग्धकल्पंसोऽन्तर्दाहा ईतःकथितः ॥ २८९ ॥

जिस सन्निपात में भीतर दाह बाहर शीत सूजन ग्लानि तथा श्वास और शरीर जलाहुआसा मालूमपड़े उसको अन्तर्दाह कहते हैं ॥ २८९ ॥

नक्तंदिवाननिद्रामुपैतिगृह्णातिमूढधीर्नभसः । उत्थायदण्डपातोभ्रमातुरःसर्व्वतो भ्रमति ॥ नभसोगृह्णातिआकाशात्किञ्चिद्गृहीतुंकरौप्रसारयतीत्यर्थः ॥ २९० ॥

जिस सन्निपात में रात्रि दिन निद्रा न पड़े रोगी आकाश से कुछ लेनेके लिये हाथ फैलावे और भ्रमातुर होकर उठकर इधर उधर चले उसको दंडपात कहते हैं ॥ २९० ॥

सम्पूर्य्यतेशरीरंग्रन्थिभिरभितस्तथोदरंमरुता । श्वासातुरस्यसततंविचेतनस्या न्तकात्तस्य ॥ २९१ ॥

जिस सन्निपात में शरीरपर गाँठें सी पड़ जांय पेट में बात भरजाय श्वास होय और निरंतर अचैतन्यता बनी रहै उसको अन्तक कहते हैं ॥ २९१ ॥

परिधावतीवगात्रेरुक्पात्रेभुजंगहरिणगणः। वेपथुमतःसदाहस्यैणीदाहज्वरार्त्तस्य ॥ रुक्पात्रेपीड़ाभाजनेगात्रस्यविशेषणमेतत् ॥ २९२ ॥

जिस सन्निपात में पीड़ा युक्त शरीपर सर्प पतंग तथा हिरनसे दौड़ते मालूम पड़ें और कंप तथा दाह उत्पन्न हों उसको एणीदाह कहते हैं ॥ २९२ ॥

यस्याऽतिपीतमङ्गंनयनेसुतरांमलस्ततोऽप्यधिकम् । दाहोऽतिशीततावहिरस्यसहा रिद्रकोज्ञेयः ॥ २९३ ॥

जिस सन्निपात में शरीर तथा नेत्र पीलेहों और मल उनसे भी अधिक पीला होय भीतर दाह और बाहर शीतलता होय उसको हारिद्रक कहते हैं ॥ २९३ ॥

छगलकसमानगन्धःस्कन्धरुजावान्निरुद्धगलरन्ध्रः । अजघोषसन्निपातादाताम्रा क्षःपुमान्भवति ॥ २९४ ॥

जिस सन्निपातमें बकरेके समान दुर्गन्धिआवे कन्धोंमें पीड़ा होय कंठ रुकजाय और नेत्र ताम्र वर्ण होंय उसको अजघोष कहते हैं ॥ २९४ ॥

शब्दादीनधिगच्छतिनस्वान्विषयान्यदिन्द्रियग्रामैः। हसतिप्रलपतिपरुषंसज्ञेयोभूत हासार्त्तः ॥ २९५ ॥

जिस सन्निपातमें रोगी अपनी इन्द्रियोंसे शब्दादिक विषयोंको न ग्रहण करसके हँसे और कठोर प्रलाप करे उसको भूतहास कहतेहैं ॥ २९५ ॥

येनमुहुर्ज्वरवेगाद्यन्त्रेणेवावपीड्यतेगात्रम्। रक्तंपीतञ्चवमेद्यन्त्रापीड़ःसविज्ञेयः २९६

जिस सन्निपातमें ज्वरके वेगसे शरीर यन्त्रके द्वारा दबायासाजाय और रक्त तथा पीतवर्ण बमन करे उसको यन्त्रापीड़ कहतेहैं ॥ २९६ ॥

अतिसरतिवमतिकूजतिगात्राण्यभितश्चिरंनरः क्षिपति । संन्याससन्निपातेप्रलपत्युग्राक्षिमण्डलोभवति ॥ २९७ ॥

जिस सन्निपातमें अतीसार छर्दि गलेमें अव्यक्त शब्द अंगोंका इधर उधर पटकना प्रलाप और नेत्रोंकी उग्रता होय उसको संन्यास कहतेहैं ॥ २९७ ॥

मेचकवपुरेतिमेचकलोचनयुगलोमलोत्सर्ग्गात् । संशोषिणीसितपिड़कामण्डलयुक्तोज्वरेनरोभवति ॥ २९८ ॥

जिस सन्निपातमें मलके त्याग करनेसे शरीर तथा नेत्र अत्यन्त काले रंग होजांय और श्वेतवर्ण मंडल युक्त फुड़िया उत्पन्न होंय उसको संशोषी कहतेहैं ॥ २९८ ॥

नारायणएवभिषक्भेषजमेतेषुजान्हवनीरम्।नैरुज्यहेतुरेकोनित्यंमृत्युञ्जयोध्येयः २९९

इन सन्निपातोंमें नारायणही वैद्य औषध गंगाजीकाजल और आरोग्यके लिये निरन्तर श्रीमृत्युंजयका ध्यान करना चाहिये ॥ २९९ ॥

अथासाध्यस्यसन्निपातज्वरस्यलक्षणमाह ॥

सन्निपातज्वरस्यान्तेकर्णमूलेसुदारुणः । शोथःसंजायतेतेनकश्चिदेवप्रमुच्यते ॥ स दारुणःमारकत्वात् । यतस्तेनशोथेनकश्चिदेवप्रमुच्यते ॥ कोऽपिजीवितंत्यजतिइत्यर्थः। सान्निपातज्वरान्कष्टानसाध्यानपरेजगुः । दोषेप्रबृद्धेनष्टेऽग्नौसर्व्वसम्पूर्णलक्षणः । सन्निपातज्वरोऽसाध्यःकष्टसाध्यस्ततोऽन्यथा ॥ सर्व्वाणिदाहशीतादीनिसम्पूर्णानिआतुरगतानिप्रोक्तानियावल्लक्षणानियस्यसः । ततोऽन्यथादोषेपक्वेअग्नौदीप्तेस्वल्पलक्षणकःकष्टसाध्यइत्यर्थः ॥ ३०० ॥

असाध्य सन्निपात ज्वरका लक्षण ॥

सन्निपात ज्वरके अन्तमें करण मूलपर अत्यन्त भयानक सूजन उत्पन्न होतीहै इस सूजनके होनेसे प्रायः सबलोग मृत्युकोप्राप्त होतेहैं और कभी कोई दैवयोगसे बचभी जाताहै (सन्निपात ज्वरोंको कोई कष्टसाध्य और कोई असाध्य कहतेहैं) जिस सन्निपातमें दोष बहुत बढ़जांय अग्नि नष्ट हो जाय और पहले कहेहुए दाह शीतादिक सम्पूर्ण लक्षण मिलें वह असाध्यहै और जो दोष परिपक्व होय अग्नि दीप्तिहोय और सब लक्षण न मिलें तो कष्ट साध्य जानना चाहिये ॥ ३०० ॥

अथसामान्यसन्निपातज्वरस्यचिकित्सा ।

सन्निपातार्णवेमग्नंयोऽभ्युद्धरतिमानवम् । कस्तेननकृतोधर्म्मःकाञ्चपूजांनसोऽर्हति॥ मृत्युनासहयोद्धव्यंसन्निपातंचिकित्सता । यश्चतत्रभवेज्जेतासजेतामयसंकुले ॥३०१॥

सामान्य सन्निपात ज्वरकी चिकित्सा ॥

सन्निपात रूपी समुद्रमें डूबेहुए मनुष्यका जो उद्धार करताहै वह सब धर्मोंका करने वाला और सपर्ण पूजाओं के योग्यहै सन्निपातकी चिकित्सा करना मृत्युके संग युद्ध करनाहै इस युद्धमें जो कोई जीतते हैं वह सब रोगोंके जीतने वाले होतेहैं ॥ ३०१ ॥

श्लेष्मनिग्रहमेवादौकुर्य्याद्वयाधौत्रिदोषजे । संसर्गेयोगरीयान्स्यादुपक्रम्यसवैभवे त् ॥ शेषदोषाविरोधेनसन्निपातेतथैवच । संसर्गेदोषद्वयसंसर्गेगरीयान्बलत्तरः ॥ अं शांशंयत्रदोषाणांविवेक्तुंनैवशक्नुयात् । क्रियांसाधारणींतत्रविदधीतचिकित्सकः ॥ लङ्घ नंवालुकास्वेदोनस्यंनिष्ठीवनंतथा । अवलेहोऽञ्जनंचैवप्राक्प्रयोज्यंत्रिदोषजे ॥ ज्वर इतिशेषः ॥ ३०२ ॥

सन्निपात रोगमें पहले कफको शांत करनाचाहिये और दो दोषोंके संसर्गसे जो रोग उत्पन्न हो उसमें जो दोष बलवान्हो उसकी चिकित्साकरे परन्तु दूसरे दोषके लिये जो हानिकारकहो उसमें दृष्टि रखनी चाहिये और त्रिदोषज रोगमें भी इसीप्रकार चिकित्सा करनीचाहिये वैद्य जहां दोषों के अंश २ अलग न करसके वहां साधारण चिकित्साकरे सन्निपातमें पहले लंघन बालुकास्वेद नस्य निष्ठीवन (कफनिकालना) अवलेह और अंजन इनकाप्रयोग करनाचाहिये ॥ ३०२ ॥

ननुक्रियायास्तुगुणालाभेक्रियामन्यांप्रयोजयेत् । पूर्व्वस्यांशान्तवेगायांनक्रियाशङ्क रोहितः॥ इतिवचनेनक्रियासङ्करस्यनिषिद्धत्वात्कथमत्रनस्यनिष्ठीवनावलेहांजनानियु गपद्विधीयन्तइत्याशङ्क्याह। क्रियाभिस्तुल्यरूपाभिःक्रियासांकर्यमिष्यते। भिन्नरूपतया तास्तुनहिकुर्वंतिदूषणम् ॥ ३०३ ॥

यहां यह सन्देह होताहै कि एक क्रियाके द्वारा कुछ उपकार न होनेपर दूसरी क्रिया करनीचाहिये परन्तु पहली क्रियाके वेगके शांत होजानेपर दूसरी क्रिया करनी चाहिये क्योंकि क्रियाओं का संयोग हितकारी नहीं होताहै इस बचनके द्वारा क्रियाओंके संयोगका निषेध हुआ तो यहां नस्य निष्ठीवन अवलेह और अंजन एक साथही क्यों विधान कियेजातेहैं इसका उत्तर यहहै कि समान क्रियाओं के एक साथ करनेमें दोषहोताहै और जुदी२क्रियाओंके करनेमें कोई दोष नहींहै ॥ ३०३॥

तत्रलङ्घनस्यावधिमाह ॥

त्रिरात्रंपञ्चरात्रंवादशरात्रमथापिवा । लङ्घनंसन्निपातेषुकुर्यादारोग्यदर्शनात् ॥ ल ङ्घनेत्रिरात्राद्विकल्पउलवणेवा । तत्राद्यापेक्षयादोषाणांशीघ्रमध्यमन्दशक्तित्वात् । व्याध्य भावाद्वाआरोग्यदर्शनादिति । यावदारोग्यदर्शनंस्यात्तावद्वालङ्घनंकुर्यात् । एतेनत्रिरा त्राद्यवधेर्नेनियतत्वंसूचितम् । अतएवसुश्रुतःप्राह। सप्तमेदिवसेप्राप्तेदशमेद्वादशेपिवा॥ पुनर्घोरतरोभूत्वाप्रशमंयातिहन्तिवा॥घोरतरइतिस्वभावादेवतदाघोरतरोभूत्वेति ३०४

लंघनकी अवधि ॥

सन्निपात ज्वरमें तीन रात्रि पांच रात्रि दशरात्रि अथवा आरोग्य पर्य्यन्त लंघन करानाचाहिये यहां लंघनके विषयमें तीन रात्रि आदिक अलग २ कल्पना बातादिकोंकी वृद्धिके अनुसार दोषों की शीघ्र मध्यम तथा मन्दशक्तिके अनुसार अथवा रोगके स्वभावके अनुसार जाननी चाहिये जबतक आरोग्य न होय तबतक लंघनदेवे इस्से तीन रात्रि आदि अवधिका निश्चित न होना सूचित होता है इसीसे सुश्रुतने कहाहै कि सातवें दशवें अथवा बारहवें दिन सन्निपातज्वर फिर स्वभावहीसे बढ़ कर शांतहोताहै अथवा मारताहै ॥ ३०४ ॥

हननप्रशमयोःकारणमाह ॥

पित्तकफानिलवृद्धयादशदिवसद्वादशाहसप्ताहात् । हन्तिविमुञ्चत्यथवात्रिदोषजो धातुमलपाकात् ॥ त्रिदोषजोज्वरइतिशेषः । धातुमलपाकात् । धातुपाकाद्धन्तिमलपा काद्विमुञ्चतीत्यर्थः । धातुमलपाकेप्राक्तनकर्म्मैवहेतुः । तत्रयदिजीवनसम्बर्द्धकंकर्म्मा स्तितदामलपाकोऽन्यथाधातुपाकःसचरसादिशुक्रान्तधातूनांपाकोवोद्धव्यः ॥ ३०५ ॥

शान्तहोनेका अथवा रोगीके मारनेकाकारण ॥

सन्निपात ज्वर दशवें दिन बारहवें दिन अथवा सातवें दिन शान्तहोजाता है अथवा क्रमसे पित्त कफ तथा बायुकी वृद्धिके द्वारा मारता है अथवा धातु तथा मलके पाकके द्वारा मारताहै या शान्त होजाताहै अर्थात् धातुओंके पाकसे मारताहै और मलके परिपाक होनेसे शांत होताहै धातु तथा मलके परिपाकमें पूर्वजन्मके कर्महीं कारणहोतेहैं अर्थात् जो जीवनके बढ़ानेवाले कर्म्म हैं तो मलोंका पाक होताहै और नहींतो रसको आदिले वीर्य्य पर्यंत धातुओंका पाकहोताहै ॥ ३०५ ॥

तत्रधातुपाकस्यलक्षणमाह ॥

निद्रानाशोहृदिस्तम्भोविष्टम्भोगौरवारुची। अरतिर्व्वलहानिश्चधातूनांपाकलक्षण म् ॥ विष्टम्भउदरस्यगौरवंगात्राणाम् । अन्यच्च । संवाध्यमानोहृदिनाभिदेशेगात्रेषुवापा करुजान्वितेषु । पीड़ाज्वरार्तोऽङ्गुलिभिश्चगच्छेत्सधातुपाकीकथितोभिषग्भिः । अपर ञ्च । नाभेरूर्द्ध्वंहृदोऽधस्तात्पीड़ितेचेद्व्यथाभवेत् ।धातोःपाकंविजानीयादन्यथातुम लस्यच ॥ ३०६ ॥ धातुओंके परिपाकहोनेका लक्षण ॥

निद्राका नाश हृदयमें स्तम्भ उदरमें विष्टंभ शरीरमें भारीपन अरुचि ग्लानि और बलका नाश यह धातुओंके परिपाक होनेके लक्षणहैं अन्यप्रकार हृदय तथा नाभिमें पीडा शरीरका पकना पीड़ा और ज्वरसे पीडित होकर अंगुलियों के बलसे चलना यह धातुपाकके लक्षणहैं अन्य प्रकार नाभि और हृदय के बीचमें दबाने से पीड़ा होय तो धातुओं का पाक जानना चाहिये और इस बातके न होने में मलका परिपाक समझना चाहिये ॥ ३०६ ॥

अथ मलपाकलक्षणम् ॥

दोषप्रकृतिवैकृत्यंलघुताज्वरदेहयोः । इन्द्रियाणाञ्चवैमल्यंमलानांपाकलक्षणम् ॥ दोषावातादयस्तेषांप्रकृतित्वेतुदाहतंद्रागौरवादिकरणंतस्यावैकृत्यंवैपरीत्यंवैमल्यंमलरा हित्यम् । मलानांदोषाणांपाकलक्षणम् । अन्यच्च । शश्वत्वीन्द्रियपञ्चकस्यपटुतावह्ने श्चयत्रक्रमात् । तृष्णादिप्रशमोज्वरस्यमृदुतातंदोषपाकंवदेत् ॥ ३०७ ॥

मलदोषके परिपाकका लक्षण ॥

बातादि दोषोंकी प्रकृतिकी विकृति अर्थात् दाहतंद्रा और भारीपन आदिका न होना ज्वरका थोड़ा होना शरीरमें हलकापन और इन्द्रियोंकी निर्मलता यह दोषोंके परिपाक होनेका लक्षणहै अन्यप्रकार सदैव पांचों इन्द्रियोंकी सामर्थ्य क्रमसे अग्निकी दीप्ति तृषा आदि उपद्रवोंकी शान्ति और ज्वरकी स्वल्पता यह दोषोंके पाकके लक्षणहैं ॥ ३०७ ॥

हृन्नाभ्योरतिवेदनातिशरणं तीव्रोज्वरस्तृणमदः । श्वासाधिक्यमरोचकोऽरतिरिति स्याद्धातुपाकाकृतिः ॥ ३०८ ॥

हृदय तथा नाभिके बीचमें अत्यन्त पीड़ा अतीसार ज्वरकी तीक्षणता तृषा मद श्वासकी अधिकता अरुचि और वेचैनी यह धातु पाकके लक्षणहैं ॥ ३०८ ॥

आमस्याधिक्येनसप्तमदिवसाद्यवध्यतिक्रमेपरमावधिमाह । हारीतः । सप्तमीद्विगुणायावन्नवम्येकादशीतथा । एषात्रिदोषमर्य्यादा मोक्षायचवधायच ॥ नवम्येकादशी चागमनदिवसं विहायबोद्धव्या, तेनागमनदिवसं नीत्वादशमीद्वादशीतथा । अत्ररात्रिरित्यध्याह्रियते ॥ ३०९ ॥

आमकी अधिकतासे सातवेंदिन आदिकी अवधिके उल्लंघनमें हारीतपरम अवधिको कहतेहैं सन्निपात ज्वरके छूटने और मारनेकी सातवां चौदहवां नवां अठारहवां ग्यारहवां और बाईसवां दिन अवधिहै नवां और ग्यारहवां दिन ज्वर आने के दिनकोछोड़कर लेना चाहिये इस्से ज्वर आनेवालेदिन समेत दशवां और बारहवां दिन होताहै ॥ ३०९ ॥

सन्निपातज्वरीपूर्व्वं सम्यक्लङ्घनमाचरेत् । शृतंशीतंपिवेदम्भः समयेभेषजंभजेत्॥ सन्निपातेनतृष्यन्तं पार्श्वरुक्तालुशोषिणम् । यःपाययेज्जलंशीतं समृत्युर्नरविग्रहः ॥ शीतंअक्वथितंशृतंतु शीतंविहितमेवइतिलङ्घनम् ॥ ३१० ॥

सन्निपात ज्वरवाला पहले अच्छेप्रकारसे लंघन करे और समयके अनुसार औषधके द्वारा परिपाक कियाहुआ जल शीतल करके पिये और औषधका सेवन करे सन्निपात ज्वरमें जिसको तृषा पसली मे पीड़ा और तालु सूखताहो उसको जो कोई बिना गरम कियाहुआ शीतल जल पिलाताहै उसको मनुष्यरूपी मृत्यु जानना चाहिये इति लंघन ॥ ३१० ॥

वालुकास्वेदः ॥

वातश्लेष्मकृतेस्वेदान् कारयेद्रूक्षनिर्म्मितान् । स्निग्धःस्वेदोनिषिद्धोऽत्र विनाकेवल वातजात् ॥ खर्परभृष्टपटस्थितकाञ्जिकसंसिक्तवालुकास्वेदः । शमयतिकफामयमस्तकशूलांगभंगादीन् ॥ श्रोतसांमार्दवंकृत्वा नीत्वापावकमाशयम् । हत्वावातकफस्तम्भं स्वेदोज्वरमपोहति ॥ इतिवालुकास्वेदः ॥ ३११ ॥

वालुका स्वेद ॥

बात कफ जनित रोगमें रूखा स्वेद देना चाहिये इसमें चिकना स्वेद निषेधहै परन्तुकेवल बात जनितरोगमें स्निग्ध स्वेद देनाचाहिये किसीखपरेमें बालूको गरम करके कपड़ेमें बांधे फिर कांजीसे भिगोकर स्वेददे इस्से कफरोग शिरकी पीड़ा और शरीरकी पीड़ा शान्त होतीहै श्रोतोंको कोमलकरके अग्निको अग्निके ही स्थानमें लाकर और वायु तथा कफके जकड़ने को नाशकरके स्वेद ज्वरको नाश करताहै इति बालुका स्वेद नस्य ॥ ३११ ॥

अथ नस्यम् ॥

सैंधवंश्वेतमरिचं सर्षपाःकुष्ठमेवच । वस्तमूत्रेणसंपिष्टंनस्यंतन्द्रानिवारणं ॥ श्वेतमरिचंशिग्रुवीजम् । इतिसैंधवादि नस्यम् ॥ ३१२ ॥

नस्य ॥

सेंधानोन श्वेतमिर्च सरसों और कूट इनसब औषधियोंको बकरेके मूत्रमें पीसकर नास लेने से तन्द्राका नाश होताहै इति सैंधवादि नस्य ॥ ३१२ ॥

मधूकसारसिंधूत्थवचोषणकणाःसमाः । श्लक्ष्णंपिष्ट्वाम्भसानस्यं दद्यात्संज्ञाप्रबोधनम् ॥ मधूकसारादि नस्यम् ॥ ३१३ ॥

महुएके वृक्षकासाग सेंधा नोन बच मिर्च और पीपल इन सबको बराबर लेकर महीन पीसकर जल केसाथ नास लेनेसे चैतन्यता होतीहै इति मधूक सारादि नस्य ॥ ३१३ ॥

मातुलुंगार्द्रकरसं कोष्णंत्रिलवणान्वितम् । अन्यद्वासिद्धविहितं नस्यंतीक्ष्णंप्रयोजयेत् ॥ तेनप्रभिद्यतेश्लेष्मा प्रभिन्नश्चप्रसिच्यते । शिरोहृदयकण्ठास्य पार्श्वरुक्चोपशाम्यति ॥ मोहामयेनमुग्धं बोधयितुंयादृशःशक्तः । कल्पतरुर्नामधेयो रसोनतादृक्परं किञ्चित् ॥ इतिनस्यम् ॥ ३१४ ॥

नीबू तथा अदरकका रस और तीनोनोन इनको मिलायके कुछ गरम २ नास लेनी चाहिये अथवा इनसे अन्य और जो तीक्ष्ण हुलास कही गईहै वह देनी चाहिये और नासके द्वारा कफ गीलाहोकर निकलजाताहै और शिर हृदय कंठ मुख तथा पसलियोंकी पीड़ा शान्त होतीहै मोह रोमसे मोहित मनुष्यको चैतन्य करनेके लिये जैसाकि कल्पतरु रसहै वैसी और कोई औषधि नहीं है इसलिये कल्पतरु रसकी नास लेनी चाहिये इति नस्य॥ ३१४ ॥

अथ निष्ठीवनम् ॥

जिह्वातालुगलक्लोम मरुत्पित्तेनदूषितम् । तदासञ्चारयेच्छोषं जिह्वाविरसतांतथा ॥ स्फुटनञ्चतदाजिह्वां लेपयेन्मधुपिष्टया । द्राक्षायासाज्यपातेन जिह्वास्यात्सरसामृदुः ॥ आर्द्रकस्वरसोपेतं सैंधवंकटुकत्रयम् । आकण्ठाद्धारयेदास्ये निष्ठीवेच्चपुनःपुनः ॥ तेनास्यतालुकोष्ठां शमन्यापार्श्वशिरोगलात् । लीनोऽप्याकृष्यतेश्लेष्मा लाघवंचास्यजायते ॥ पर्वभेदोज्वरोमूर्च्छा निद्राश्वासगलामयाः । मुखाक्षिगौरवंजाड्य मुत्क्लेशश्चोपशाम्यति ॥ सकृद्द्विस्त्रिश्चतुःकुर्याद् दृष्ट्वादोषबलाबलम् । एतद्धिपरमंप्राहुः भेषजंसन्निपातिनाम् ॥ इतिकवलग्रहः ॥ ३१५ ॥

निष्ठीवन ॥

जिह्वा तालु कंठ और फुप्फुस यह जो बायु तथा पित्तके द्वारा दूषित होकर जिह्वाका सूखना बिरसता और फटना उत्पन्नकरें तो दाख को पीसकर घी और सहत के साथ जिह्वा में लेपकरे इस्से जिह्वा सरस और कोमल होजाती है सेंधानोन सोंठ पीपल और मिर्च इनको पीसकर अदरक के रस में मिलाय के गले तक मुख में रखकर बारंबार थूके इस्से हृदय गलेके पीछे की नस पसली शि[illegible]था गले में लिपटाहुआ कफ निकल जाता है इसकारण हलकापन होता है और पोरुओं की पीड़ा ज्वर मूर्च्छा निद्रा श्वास गलेके रोग मुखतथा नेत्रोंका भारीपन शरीरकीजड़ता और मतली यह सब निवृत्त होते हैं दोषोंके बलाबलको देखकर एकबार दो बार तीनबारअथ-

वा चार बार यह क्रियाकरनी चाहिये सन्निपात रोग वालों को यह औषध परम हितकारी है इति कवल ग्रहण ॥ ३१५ ॥

अथावलेहः ॥

कट्फलंपौष्करंशृंगी व्योषंयासश्चकारवी। श्लक्ष्णचूर्णीकृतञ्चैतन्मधुनासहलेहयेत् ॥ एषावलेहिकाहन्ति सन्निपातंसुदारुणम् । हिक्कांश्वासञ्चकासञ्च कण्ठरोगञ्च नाशयेत् ॥ एतत्प्रयोज्यंकफोद्रेके चूर्णमार्द्रकजैरसैः । तंत्रांतरे चोक्तम् । अष्टांगमधुना लिह्यादार्द्रकस्वरसेनवा। संमोहंदारुणंहन्यात्तंद्राकाससमन्वितम् ॥ ३१६ ॥

अवलेह ॥

कायफल पुष्करमूल काकड़ासिंगी सोंठ पीपल मिर्च जवासा और कालाजीरा इनसबको पीस कर सहतकेसाथ चाटनेसे अत्यन्त कठिन सन्निपात हिचकी श्वास खांसी और कंठ रोगोंका नाशहोताहै अधिक कफवाले सन्निपात में यह अदरख के रसके साथ देना चाहिये और तन्त्रान्तर में कहा गयाहै कि अष्टांगावलेह सहत के साथ अथवा अदरकके रस के साथ सेवन करनेसे तन्द्रा और खांसी सहित भयंकर मोहका नाशहोता है ॥ ३१६ ॥

सर्व्वेषुसन्निपातेषु नक्षौद्रमवचारयेत् । शीतोपचारंक्षौद्रंस्याच्छीतंचात्रविरुध्यते ॥ सन्निपातज्वरेषु श्लेष्मानिग्रहार्थं सर्व्वदास्वेदोहितः। तत्राग्निसम्बंधेन देहस्योष्णता तिष्ठति। उष्णेनमधुना विरोधः ॥ उक्तंचसुश्रुतेन। उष्णैर्विरुध्यतेसर्व्वं विषान्वयतया मधु। उष्णार्त्तमुष्णैरुष्णञ्च तन्निहन्तियथाविषमिति ॥ शीतोपचारिक्षौद्रंस्यात् शीतं चात्रविरुध्यते । शीतेनोपचारोऽस्यास्तीतिशीतोपचारि ॥ शीतञ्चात्रसन्निपातेन विरुद्ध्यते ॥ ३१७ ॥

सम्पूर्ण सन्निपातों में सहत नहीं देनाचाहिये क्योंकि सहत शीतल बस्तुओंके साथ दिया जाता है और शीतलता सन्निपातों में बिरुद्ध है सन्निपात ज्वरमें कफ के दूरकरनेकेलिये सदैव स्वेद हितकारीहै इस लिये सदैव अग्निके संयोग से शरीर उष्ण रहता है और उष्णताके साथ सहतका बिरोध है और सुश्रुत ने कहाहै कि सहत बिषके संबंध होने के कारण सब प्रकार उष्णताका विरोधी होताहै इसलिये उष्णता से व्याकुल मनुष्यों को अथवा उष्ण बस्तुओं के साथ या उष्ण कियाहुआ सहत बिषके समान मारने वाला होताहै ॥ ३१७ ॥

(अवलेहः) प्रायेणोर्द्ध्वजत्रुजरोगहरत्वात्सायमुपयुज्यते।यतउक्तंचरकेण। ऊर्द्ध्वजत्रुगदघ्नीयासा सायमवलेहिका। अधोरोगहरीयासा भोजनात्प्राक्प्रयुज्यते ॥ पौष्करं पुष्करमूलं तदलाभेकुष्ठंदेयम् शृंगीकर्कटशृंगी । व्योषंशुण्ठी पिप्पली मरिचानि। यासोयवासः। केचिद्यासस्थाने यवानींप्रक्षिपन्ति । कारवीमंगरैला इतिलोके। अष्टांगावलेहिका ॥ ३१८ ॥

अवलेह प्रायः हंसलीके ऊपर के रोगोंको दूर करताहै इसलिये सायंकालको [illegible] चाहिये क्योंकि चरकने कहा है कि जो अवलेह हंसली के ऊपर के रोगोंको दूर करताहै वह सायंकाल को देना चाहिये और जो अवलेह नीचेके रोगोंको नाशकरताहै वह भोजनके पहलेदेवे ॥ ३१८ ॥

स्विन्नमामलकम्पिष्ट्वा द्राक्षयासहमेलयेत् । विश्वभेषजसंयुक्तं मधुनासहलेहयेत् ॥ तेनास्यशाम्यतिश्वासः कासोमूर्च्छारुचिस्तथा । इतिचतुरंगावलेहः ॥ ३१९ ॥

चतुरंगावलेह ॥

पके हुये आंवलोंको पीसकर दाख और सांठ मिलाके सहतके साथचाटे इस्से श्वास खांसी तथा मूर्च्छाका नाशहोताहै ॥ ३१९ ॥

अथाञ्जनम् ॥

शिरीषबीजंगोमूत्रकृष्णामरिचसैन्धवैः । अञ्जनंस्यात्प्रबोधायसरसोनशिलावचैः ॥ (शिरीषबीजा) ॥ ३२० ॥

अंजन शिरीषबीजाद्यंजन ॥

सिरसके बीज गोमूत्र पीपल मिर्च सैंधानोन लहसन मैनसिल और वच इन औषधियों को पीसकर अंजन लगाने से रोगीको चैतन्यताहोतीहै ॥ ३२० ॥

अयोरजःश्वेतलोध्रंमरिचंचाञ्जनंतथा । गोमूत्रेणसमायुक्तंतन्द्रानाशनमुत्तमम् ॥ (लोहचूर्णाद्यञ्जनम्) अञ्जनंसम्यगारब्धंमधुसिन्धुशिलोषणैः । प्रमोहद्रोहिभवति भाषितंदण्डपाणिना ॥ इत्यञ्जनम् ॥ ३२१ ॥

लोहचूर्णाद्यंजन ॥

लोहचूर्ण सफेदलोध और मिर्च इनको गोमूत्र में पीसकर अंजन करनेसे तन्द्राका नाशहोताहै सहत सैंधानोन मैनसिल और मिर्च इनको पीसअंजन लगानेसे मोहका नाशहोताहै ॥ ३२१ ॥

सूतंविषञ्चमरिचंतुत्थकंनवसादरम् । चूर्णितंस्वरसैमर्द्यधूर्त्तपत्ररसोनयोः ॥ सन्निपातकृतेमोहेमूर्द्धिनालिम्पेत्पदोपरि । अस्थिव्यथास्वनेनैवलेपंकुर्यात्पदोपरि ॥ (पदम्पाच्छइतिलोके) ॥ ३२२ ॥ इतिअंजन ॥

पारा विष मिर्च तूतिया और नौसादर इनको बराबर लेकर धतूरेके पत्ते और लहसनके रस में पीसकर शिरमें और पैरोंपर लेपकरे इस्से सन्निपात जनित मोहका नाशहोताहै और हड्डियों में पीड़ाहोय तौभी इसीका लेप पैरोंपर करना चाहिये ॥ ३२२ ॥

क्वाथ ॥

बिल्वःश्योनाकगम्भारीपाटलागणिकारिका । पित्तघ्नंवातकफहृत्पञ्चमूलमिदंमहत् ॥ शालिपर्णीपृष्ठिपर्णीबृहतीकण्टकारिका । गोक्षुरुंवातपित्तघ्नंकनीयःपञ्चमूलकम् ॥ उभयंदशमूलंतत्पिप्पलीचूर्णसंयुतम् । सन्निपातज्वरंहान्तिहृद्कण्ठग्रहनाशनम् ॥ तन्द्रावातकफातङ्कश्वासपार्श्वार्त्तिकासनुत् । महान्तियानिमूलानिकाष्ठगर्भाणियानिच ॥ तेषान्तुवल्कलंग्राह्यंह्रस्वमूलानिकृत्स्नशः । अत्रबिल्वादीनांपञ्चानांमूलस्यवल्कलंग्राह्यम् ॥ (दशमूलीक्वाथ) ॥ ३२३ ॥ क्वाथ दशमूलीक्वाथ ॥

बेल सोनापाढ़ा गंभारी पाटला अरणी यह बृहत् पंचमूल कहलाताहै यह वात कफ तथा पित्त का नाशकहै शालिपर्णीपृष्ठपर्णी दोनों भटकटैया और गोखुरू यह छोटा पञ्चमूल वात पित्तका

नाशकहै यहदोनों मिलकर दशमूल कहलातेहैं दशमूलका क्वाथपीपलका चूर्णडालकर सेवन करने से सन्निपात ज्वर हृदयतथा कंठका अवरोध तंद्रा बात तथा कफके रोग श्वास पसलीकी पीडा और खांसीका नाशहोताहै जिन वृक्षों की जड़ मोटी और भीतर काष्ठ से भरीहुई होय उनकी छाललेनी चाहिये और जिन वृक्षोंकी जड़छोटी तथा भीतर काष्ठसे रहितहोय वहसंपूर्ण लेनी चाहिये यहां वेल आदिक पांचवृक्षोंकी छाललेनीचाहिये ॥ ३२३ ॥

दशमूलीकषायस्तुपिप्पलीपौष्करान्वितः । सन्निपातज्वरेदेयःश्वासकाससमन्विते ॥ (द्वादशाङ्गक्वाथः) ॥ ३२४ ॥

द्वादशांगक्काथ ॥

दशमूल के काढ़ेमें पीपल और पुष्करमूलमिलाकर पानकरने से सन्निपातज्वर श्वास तथा खांसीका नाशहोताहै ॥ ३२४ ॥

चिरज्वरेवातकफोल्वणेवात्रिदोषजेवादशमूलमिश्रः।किराततिक्तादिगणःप्रयोज्यःशुध्युर्थिनेवात्रिवृताविमिश्रः॥ किराततिक्तादि । किराततिक्तकोमुस्तंगुडूचीविश्वभेषजम्। किरातादिर्गणोह्येषचातुर्भद्रकमित्यपि ॥ (इतिचतुर्दशाङ्गक्वाथः) ॥ ३२५ ॥

चतुर्दशांगक्काथ ॥

पुराने ज्वर में और अधिक वात कफ वाले सन्निपात ज्वरमें दशमूल और किराततिक्तादिगण का क्वाथ देना चाहिये और जिसको दस्तदेने होयँ उसको निसोथमिलाकर यह क्वाथदेवे चिरायता मोथा गिलोय और सोंठ इनको किराततिक्तादि गण और चातुर्भद्रक कहतेहैं ॥ ३२५ ॥

दशमूलीशटीशृङ्गीपौष्करंसदुरालभम् ॥ भार्गीकुटजवीजञ्चपटोलंकटुरोहिणी ॥ अष्टादशांगइत्येषसान्निपातज्वरापहः । कासहृद्ग्रहपार्श्वार्त्तिश्वासहिक्कावमीहरः॥ (अष्टादशांगक्काथः) ॥ ३२६ ॥ अष्टादशांगक्काथ ॥

दशमूल कचूर काकड़ासिंगी पुष्करमूल जवासा भारंगी इन्द्रजौ परवल और कुटकी यह अष्टांदशांग क्काथ सेवनकरने से सन्निपात ज्वर खांसी हृदयका रुकना श्वास पसलीकी पीडा हिचकी तथा छर्दिका नाशहोताहै ॥ ३२६ ॥

भूनिम्बदारुदशमूलमहौषधाब्दातिक्तेन्द्रवीजधानिकेभषणाकषायःतन्द्राप्रलापकसनारुचिदाहमोहश्वासत्रिदोषजनितज्वरनाशनःस्यात् ॥ (द्वितीयोऽष्टादशांगक्काथः)उक्तंचवङ्गसेनेनअष्टादशांगइत्येषमृत्युकल्पंज्वरंजयेदिति ॥ ३२७ ॥

दूसराअष्टादशांगक्काथ ॥

चिरायता देवदारु दशमूल सोंठ मोथा कुटकी इन्द्रजौ धानियां और गजपीपल इनका क्काथ तन्द्रा प्रलाप खांसी अरुचि दाह मोह श्वास और सन्निपात ज्वरका नाशकरताहै और बंगसेनने कहाहै कि यह अष्टादशांगनाम क्काथ मृत्युके समान ज्वर को नाशकरताहै ॥ ३२७ ॥

अथ सन्निपातज्वरेरसाः ॥

विषंत्रिकटुकंगन्धंटङ्कणंमृतशुल्वकम् । धत्तूरस्यचवीजानिहिंगुलंनवमंस्मृतम् ॥ एतानिसमभागानिदिनैकंविजयाद्रवैः। मर्दयेच्चणकाकारांकर्त्तव्यावटिकाथसा ॥ भक्षणाया

नुपातव्योरविमूलकषायकः। मृतसंजीवनीनाम्नासन्निपातज्वरान्तकृत् ॥ इतिमृतसंजीव नीवटिकासन्निपातज्वरेरसप्रदीपे ॥ ३२८ ॥

सन्निपात ज्वरपर रस ॥

विष त्रिकुट गन्धक सुहागा तामेकी भस्म धतूरेके बीज और सिंगरफ इन सबको समभाग लेकर भांगके रसमें एकदिन खरलकरे और चनेके समान गोली बनावे इस गोलीको आककी जड़के काथ के साथ सेवन करे यह मृतसंजीविनी नाम गोली सन्निपात ज्वरकी नाश करने वालीहै (इतिमृत्संजीविनी वटिका)॥ ३२८ ॥

शुद्धसूतंसमंगन्धंसूतांशंमृतताम्रकम्। त्रिभिस्तुल्यैर्गवांक्षीरैःमर्दयेदातपेखरे ॥ मर्द येद्दिनमेकन्तुनिर्गुण्डीशिग्रुजद्रवैः। विधायगोलन्तंगोलमन्धमूषागतंपचेत् ॥ त्रियामं वालुकायन्त्रेततःखल्वेविचूर्णयेत्। अष्टमांशंविषंतत्रक्षिपेत्तेनापिमर्दयेत्॥ त्रिनेत्रास्यो रसोह्येषदेयोगुञ्जाद्वयोन्मितः। पञ्चकोलकषायेणछागीदुग्धेनवासह ॥ रसेनानेनभुक्तेन सन्निपातज्वरोमहान्। संक्षयंव्रजतिक्षिप्रंकर्त्तव्योनात्रसंशय ॥ इतित्रिनेत्ररसः। सन्नि पातज्वरेरसप्रदीपे ॥ ३२९ ॥

सन्निपात ज्वरपर त्रिनेत्र रस ॥

शुद्धपारा शुद्ध गंधक और तांबेकी भस्म इन औषधियोंको समभाग लेकर इन्हींके समान गौकेदूध में मर्दन करके तीक्ष्ण धूपमें सुखावे फिर निर्गुण्डी और सहजन के काथके द्वारा एकदिन मर्दन करे फिर गोला बनाकर अंध नाम वरियामें रखकर तीन पहर बालुकायन्त्रमें पाककरे इसके उपरान्त खरल में पीस के अष्टमांश बिष मिलाकर घोटले यह त्रिनेत्र नामरस पंचकोलके काढ़े अथवा बकरीके दूधके साथ दो रत्ती सेवन करना चाहिये इससे अत्यन्त कठिन सन्निपात ज्वर का नाश होता है इसमें कोई सन्देह नहींहै ॥ ३२९ ॥

भस्मषोड़शनिष्कंस्यादारण्योपलसम्भवम्। मरिचंनिष्कमात्रञ्चविषंनिष्कंविचूर्ण येत् ॥ रसोभस्मेश्वरोनामसान्निपातज्वरान्तकृत्। एकगुञ्जामितोभक्ष्यआर्द्रकस्यद्रवेणहि॥ इतिभस्मेश्वरोरसः। सन्निपातज्वरेरसेन्द्रचिन्तामणौ ॥ ३३० ॥

भस्मेश्वर रस ॥

अरने कंडोंकी भस्म चौंसठ मासे मिर्च चार मासे और बिष चार मासे इन सबको पीसकर एकरत्ती के प्रमाण यह भस्मेश्वररस अदरकके रसके साथ सेवन करनेसे सन्निपात ज्वरका नाशकरताहै ३३०॥

द्वौकर्षौसूतकाद्ग्राह्यौगन्धकाद्द्वौतथैवच। यत्नतस्तूभयंमर्द्यदिनंहंसपदीद्रवैः ॥ क ल्कस्यवटिकांकृत्वानिक्षिपेत्काचभाजने। कर्षैकममृतंतत्रक्षिप्त्वावक्त्रंनिरोधयेत् ॥ कूपि कायाःपरौभागौवालुकाभिश्चपूरयेत्। सार्द्धयावदहोरात्रंतावत्तत्रपचेद्रसम् ॥ याम मात्रोऽनलोदेयस्त्वाङ्गशीतंसमुद्धरेत्। तोलार्द्धममृतंतत्रक्षिपेत्तावत्तथोषणम् ॥ भक्षि तोरक्तिकामात्रोरसस्त्वग्निकुमारकः। सन्निपातज्वरंहन्याद्वातंमन्दाग्नितामपि ॥ शूलञ्च ग्रहणींगुल्मंक्षयंजन्तुगदन्तथा। श्वासकासादिकान्सर्व्वान्गदानेषविनाशयेत् ॥ इतिअ ग्निकुमारोरसः। सन्निपातज्वरादिषुरसेन्द्रचिन्तामणौ ॥ ३३१ ॥

अग्निकुमाररस ॥

पारा और गन्धक दो२ तोले लेकर हंसपदी जडीके रसमें एक दिन घोटे फिर उसकी गोली बना कर शीशीमें रक्खे और उसी शीशीमें १तोला विष छोडकर शीशीका मुख बन्दकरदे और शीशीके दोनों ओर बालूभरके डेढ दिनतक अर्थात् बारह पहर तक दीपकके समान मन्द २ आंचदेवे फिर शीतल होजानेपै उसको निकाल कर आधे तोले विष और आधे तोले मिर्चमिलावे यह एक रत्ती सेवन करने से सन्निपात ज्वर बात मन्दाग्नि शूल ग्रहणी वाय गोला राजयक्ष्मा पसलीके रोग श्वास और खांसी आदिक सब रोगोंका नाशक है ॥ ३३१ ॥

गन्धेशटङ्कमरिचंविषंधत्तूरजैर्द्रवैः दिनंसंमर्दितंशुष्कंपञ्चवक्त्रोरसोभवेत् आर्द्रकस्य द्रवेणैषदातव्योरक्तिकामितः । सन्निपातज्वरेदेयोघोरेतद्दोषनाशनः ॥ पञ्चवक्त्रोरसःस न्निपातेरसेन्द्रचिन्तामणौ ॥ ३३२ ॥

पंचवक्त्ररस ॥

पारा गन्धक सुहागा मिर्च और विष इनसब औषधियोंको धतूरे के पत्तोंके रसमें एक दिन घोट कर सुखालेवे यह पंचवक्त्र नाम रस अदरकके रसके साथ एक रत्ती प्रमाण सेवन करने से घोर सन्नि- पात ज्वर का नाश करताहै ॥ ३३२ ॥

अमृतवराटकमरिचौद्विपञ्चनवभागयोजितैरचिता । वटिकामुद्गसमानाकफत्रिदोषा ग्निमान्द्यहरी ॥ अमृतादिवटी ॥ ३३३ ॥

अमृतादि बटी ॥

बिष२ भाग कौडीकी भस्म ५ भाग और मिर्च ९ भाग इनसबको मिलाकर मूंगके समान बनाई हुई गोली सेवन करने से कफ त्रिदोष और मंदाग्निका नाश करतीहै ॥ ३३३ ॥

अथ शीतज्वररसाः ॥

सूतकंगन्धकञ्चैवहरितालंमनःशिलाः । एकानिष्कंद्विनिष्कञ्चचतुनिष्कंतथैवच ॥ पञ्चनिष्कंरसैःकारवेल्याःसम्यक्प्रकल्पयेत् । ताम्रपत्राणितुल्यानितेनकल्केनलेपयेत् ॥ शरावसंपुटेतानिकृत्वातेषामुपर्य्यपि । दद्यात्तांपिष्टिकांपश्चात्पुटपाकेनपाचयेत् ॥ ततः संचूर्णयेदेवंरसःक्षौद्रेणभक्षितः । यवैकमात्रयाहन्तिघोरंशीतज्वरंध्रुवम् ॥ पाराटंक १ गन्धकटङ्क २ हरतालटङ्क ४ मनःशिलाटङ्क ४ ताम्रपत्रटङ्क १२ शीतज्वरारिःरस प्रदीपे ॥ ३३४ ॥

शीतज्वरपररस ॥

पारा ४ मासा गंधक ८ मासा हरिताल १६ मासा और मैनसिल २० मासा इन औषधियों को करेलीके रसमें पीसले फिर उन्हीं औषधियोंके समान तांबेके पात्रोंपर औषधियोंका लेप करदे फिर सकोरेमें इनपत्रोंको रखकर सकोरेसेही बन्दकरदे और उसके ऊपरभी इन्हीं औषधियोंका लेपकरके पुटपाकमें पाककरे फिर पीसकर एकजौके प्रमाण इसरसको सहतके साथ खानेसे निस्सन्देह घोर शीतज्वरका नाशहोताहै ॥ ३३४ ॥

पारदंगन्धकञ्चैवतुत्थञ्चदरदंविषम् । विषाद्द्विगुणंयोज्यंमरिचंविश्वभेषजम् ॥ अ श्वगन्धाथविजयाकासमर्दःकलिङ्गकः[illegible]चूर्णान्येतानिमर्दयेत् ॥ तुलस्या

स्तुदलैःसार्द्धंभक्षितोरक्तिकामितः। हन्तिशीतज्वरंघोरंनाम्नायंशीतकेशरी ॥ ३३५ ॥

शीतकेशरीरस ॥

पारा गन्धक तूतिया सिंगरफ और विष यह समभाग और विष से अठगुनी मिर्च तथा सोंठ इन औषधियों को असगन्ध भंग कसोंदी और करेला इन चारोंके रसमें घोटे एकरत्ती के प्रमाण यह शीत केशरी नामरस तुलसीदल के साथ खानेसे घोर शीतज्वर को नाश करताहै ॥ ३३५ ॥

तालकंतुत्थकंताम्रंसूतगन्धकटङ्कणम्। सर्व्वमेतत्समंचूर्णंकारवेल्लीरसद्रवैः॥ दिनैकंमर्द्दयेत्तेनरसकर्द्दमकेनतु। ताम्रस्यभाजनस्यान्तर्लिपेदर्द्धांगुलोन्मितम् ॥ तत्पचेद्वालुकायन्त्रेयवायावत्स्फुटन्तिहि। शीतलंतद्विगृह्णीयात्ताम्रपात्रोदराभिषक् ॥ शीतभंजीरसोमाषमात्रोमरिचसंयुतः। भक्षितापर्णखण्डेननाशयेद्विषमज्वरान् ॥ इतिशीतभंजीरसः। रसेन्द्रचिन्तामणौ ॥ ३३६ ॥

शीतभंजी रस ॥

हरताल तूतिया तांबा पारा गन्धक और सुहागा इनसब बराबर औषधियों को पीसकर करेलेके रस में एक दिनतक खरल करके लुगदी बनाले फिर किसी तांबेके पात्रके भीतर आध अंगुल मोटा लेप करदे और बालुकायन्त्र में पाककरे यन्त्रपर जो रखदे जब देखे कि जौ फूटगये तब उतार ले और शीतल होजाने पर तांबेके पात्रमें से औषध को छुड़ाले यह एकमासे प्रमाण शीतभंजी रस मिर्च और पानके साथ खानेसे विषम ज्वरों को नाशकरता है ॥ ३३६ ॥

तालकोदरदोद्भूतःपारदोगन्धकःशिला। क्रमाद्भागार्द्धरहितंकारवेल्यम्बुमर्दितम् ॥ अनेनास्यप्रमाणेनताम्रपात्रंप्रलेपयेत्। अधोमुखंदृढेभाण्डेतन्निरुध्याथपूरयेत् ॥ चुल्यांवालुकयाघस्रमग्निंप्रज्वालयेदधः। शीतंसंचूर्ण्यमाषोऽस्यनागवल्लीदलेस्थितः ॥ भक्षितोमरिचैःसार्द्धंसमस्तविषमज्वरान्। शीतदाहादिकांहन्तिपथ्यंशाल्योदनम्पयः ॥ इतिशीतभंजीरसः। शीतज्वरादिविषमज्वरेषुरसरत्नप्रदीपे ॥ ३३७ ॥

दूसरा शीतभंजी रस ॥

हरताल ४ भाग सिंगरफ से निकालाहुआ पारा २ भाग गन्धक १ भाग और मैनसिल आधा भाग इनसब औषधियों को करेले के रसमें मर्दन करे और इन्हीं औषधियों के बराबर तांबेके पत्रों पर सब पिसीहुई औषधियों का लेप करदे फिर किसी पात्रमें इनको रखकर दूसरे पात्रसे बन्दकरदे और संधियों पर लेपकरदे फिर बालुका यन्त्रमें उसके नीचे एक दिनतक आंचदे और शीतल हो जाने पर चूर्णकर एक उर्द के प्रमाण यह रस पान और मिर्च के साथ खाय यह शीत दाहादिक सम्पूर्ण विषम ज्वरों को नाशकरता है इसमें दूध भात का पथ्य करनाचाहिये ॥ ३३७ ॥

कट्फलंत्रिफलादारुचन्दनंसपरूषकम्। कटुकापद्मकोशीरंविपचेत्कर्षकञ्जले ॥ त्रिदोषदाहतृष्णाघ्नंपानमात्रेप्रपूजितम्। दीर्घकालज्वरार्त्तानामेतत्स्यादमृतोपमम् ॥ कर्षकट्फलाद्युशीरान्तानांसमुदितानांजलेप्रस्थमितेविपचेत्। अर्द्धशेषंकट्फलादिपानंतृष्णायांदाहेच ॥ ३३८ ॥

तृषा और दाहमें कट्फलादिपान ॥

कायफल हड़ बहेड़ा आंवला देवदारु चन्दन फालसा कुटकी पद्माक खस इनसब मिलीहुई एक तोले औषधियोंको लेकर चौंसठ तोले जल में परिपाककरनेसे जब आधा रहजाय तब लेले यह पान करनेसे त्रिदोष दाह तृषा इनको नाश करता है और बहुत कालके पुराने ज्वरवालोंको अमृत के समान है ॥ ३३८ ॥

सन्निपातेतुदाहार्त्तंयःसिञ्चेच्छीतवारिणा।आतुरःसकथंजीवेद्भिषग्वासकथम्भवेत्॥एषसन्निपातिनोदाहेशीताम्बुशेकनिषेधोरुग्दाहादन्यत्रतत्रवाप्यवगाहनस्योक्तत्वात् ३३९ ॥

सन्निपातमें दाहसे पीड़ित मनुष्यको जो शीतल जलसे सींचताहै वह वैद्य नहीं होसक्ताहै और वह रोगी नहीं जीसकाहै सन्निपातवालेको दाहमें शीतल जलसे सींचनेका यहनिषेध रुग्दाह सान्निपातको छोड़कर अन्यसन्निपातोंमें जाननाचाहिये क्योंकि रुग्दाहमें वापीकास्नान लिखा है ३३९ ॥

अथान्नमाह। दुःस्पर्शगोक्षुरक्षुद्रासिद्धमाहारमर्पयेत् । दोषशान्तिबलाग्न्यर्थंत्रिदोषज्वरिणोभिषक्॥ दुःस्पर्शोयवासःआहारमुचितमन्नम् । लाजशक्तून्समश्नीयात्सैन्धवेनसमन्वितान् । तेचज्जीर्यन्त्यविघ्नेनज्वरीजीवेत्तदाध्रुवम्॥ इतिकेचित् ॥ रक्तपित्ताहितत्वेनतृषादाहज्वरेषुच । लाजानांशक्तवःशीतानेवतेऽत्राहितामताः ॥ पाचनोदीपनःस्वेद्योलाजमण्डोयतःस्मृतः । दशमूलादिसंसिद्धःसन्निपातज्वरेहितः ॥ ३४० ॥

सन्निपातवालेको देनेके योग्यअन्न ॥

सन्निपातवालेको दोषकी शांतिके लिये और बल तथा अग्निकी वृद्धिके लिये जवासा गोखुरू और भटकटैयाके द्वारा सिद्धअन्न खानेकोदे कोई कहतेहैं कि ज्वरवाला सैंधवयुक्त खीलके सत्तूखाय और वह जो सुखपूर्वक पचजांय तो रोगी अवश्यजीताहै खीलों के सत्तू शीतल होते हैं इसलिये वह रक्तपित्त तृषा और दाहयुक्त ज्वरमें हितकारी हैं परन्तु सन्निपातज्वरमें नहीं खीलोंकामांड़ दीपन पाचन और स्वेदकारी होता है इसलिये दशमूल आदिकोंके क्वाथ के द्वारा सिद्ध कियाहुआ खीलों कामांड़ देना हितहै ॥ ३४० ॥

सन्निपातज्वरीयस्तुकम्पतेप्रलपत्यपि। किंचिदेवनजानातिचिकित्सातस्यकथ्यते ॥ अभ्यञ्जयेत्पुराणेनसर्पिषापूर्वमेवतम् । वलारास्नागुडूच्याद्यैस्तैलैश्चपरिषेचयेत् ॥ वर्त्तकोवर्त्तिकालावो वार्त्तीकस्तित्तिरिःशशः । कुलिंगश्चरसेनैषां तर्पयेतयथानलम् ॥ वर्त्तकःबटेरि इतिलोके। वर्त्तिकाबटे इतिलोके । वार्त्तीकोवात चटकेति निघण्टुः। वगेरा इतिलोके। कुलिंगःगवरैया इतिलोके ॥ सन्निपातेक्षुधार्त्तंयो भोजयेत्पिशितौदनम्। सकथंभिषगाख्यन्तु लभतेमनुजाधमः ॥ ३४१ ॥

जो सन्निपात ज्वर वाला कांपता हो अनर्थक वचनकहताहो और संज्ञारहित हो उसकोपहले पुराने घीसे मर्दन करके वरियारा रासना और गिलोय आदि के तेल से सींचे फिर बटेर बटई लवा बात चटक तीतर खरगोश और गौरैया इनके मांसके रस से अग्नि के बल के अनुसार तृप्त करावै सन्निपात ज्वर में भूखे रोगीको जो वैद्य मांसके साथ भात खिलाता है वह अधम मनुष्य वैद्यनाम को कैसे पासक्ता है ॥ ३४१ ॥

अथ वातोल्वण सन्निपातज्वरस्य चिकित्सा ॥

पञ्चमूलीकषायन्तु दद्याद्वातोल्वणेज्वरे । भृशोष्णंवासुखोष्णंवा दृष्ट्वादोषबलाबलम् । पञ्चमूलीमहतीप्रथमप्राप्तायास्त्यागेवचनाभावात् ॥ ३४२ ॥

वातोल्वण सन्निपात की चिकित्सा ॥

अधिक बात वाले सन्निपात में बड़े पंचमूल का क्काथ दोषों के बलके अनुसार बहुत अथवा थोड़ा उष्ण पान करावै ॥ ३४२ ॥

अथपित्तोल्वणसन्निपातज्वरस्यचिकित्सा ॥

परूषकञ्चत्रिफलादेवदारुचकट्फलम् । चन्दनंपद्मकंचैवतथाकटुकरोहिणी ॥ पृष्ठिपर्णीश्रृतंत्वेतिरूषितंशीतलंजलम् । पित्तोत्तरेनृणामेतत्सन्निपातचिकित्सितम् ॥ परूषादिक्काथः ॥ ३४३ ॥ पित्तोल्वण सन्निपात की चिकित्सा ॥

फालसा त्रिफला देवदारु कायफल लालचन्दन पद्माक कुटकी और पृष्ठपर्णी इन औषधियों का क्वाथ बासी करके शितल पान करने से पित्तोल्वण सन्निपात का नाशहोताहै इति परूषादि क्काथ ॥ ३४३ ॥

किराततिक्तकंमुस्तंगुडूचीविश्वभेषजम् । पाठोदीच्यंमृणालञ्चतास्तृतंपित्ताधिकेपिबेत् इतिकिरातादिसप्तकम् ॥ ३४४ ॥

चिरायता मोथा गिलोय सोंठ पाठा सुगन्धबाला और कमल की डंडी इनका क्काथ अधिक पित्तवाले सन्निपात में पीना चाहिये इति किरातादि सप्तक ॥ ३४४ ॥

अथकफोल्वणसन्निपातज्वरस्यचिकित्सा ॥

बृहतीपौष्करंभार्गीशठीश्रृंगीदुरालभा । वत्सकस्यतुबीजानिपटोलंकटुरोहिणी ॥ बृहत्यादिगणःशस्तःसन्निपातकफोत्तरे ॥ श्वासादिषुचसर्व्वेषुहितःसोपद्रवेष्वपि ॥ (इति बृहत्यादिः) ॥ ३४५ ॥ कफोल्वण सन्निपात की चिकित्सा ॥

दोनों भटकटैया पुष्करमूल भारंगी कचूर काकड़ासिंगी जवासा इन्द्रजौ परवल और कुटकी यह बृहत्यादि गणका क्काथ श्वासादिक सब उपद्रवों सहित अधिक कफ वाले सन्निपातज्वर में श्रेष्ठ है इति बृहत्यादि क्काथ ॥ ३४५ ॥

अथ वातपित्तोल्वणसन्निपातज्वरचिकित्सा ॥

वातपित्तहरंवृष्यंकनीयम्पञ्चमूलकम्।तत्क्काथोमधुनाहन्तिवातपित्तोल्वणंज्वरम्॥३४६॥

बात पित्तोल्वण सन्निपातकी चिकित्सा ॥

छोटा पंचमूल बात पित्तनाशक और पुष्टिकारीहोताहै इसलिये इसकाक्काथ सहत डालकर पीनें से अधिकबात पित्तवाले सन्निपातका नाश करताहै ॥ ३४६ ॥

अथ वातश्लेष्मोल्वणसंनिपातज्वरचिकित्सा ॥

किराततिक्तकम्मुस्तंगुडूचीविश्वभेषजम् । चातुर्भद्रकमित्याहुर्व्वातश्लेष्मोल्वणे ज्वरे । चतुर्भद्रकःक्काथः ॥ ३४७ ॥

बात कफोल्वण सन्निपातकी चिकित्सा ॥

चिरायता मोथा गिलोय और सोंठ इन औषधियोंकाक्काथ अधिक बात कफवाले सन्निपात में देनाचाहिये इतिचातुर्भद्रकक्काथ ॥ ३४७ ॥

अथपित्तश्लेष्मोल्वणसन्निपातज्वरचिकित्सा ॥

पर्पटःकट्फलंकुष्ठमुशीरंचन्दनंजलम् । नागरंमुस्तकंशृङ्गीपिप्पल्येषांशृतंहितम् ॥ तृष्णादाहाग्निमान्द्येषुपित्तश्लेष्मोल्वणेज्वरे । पर्पटादिक्काथः ॥ ३४८ ॥

पित्त कफोल्वण सन्निपातकी चिकित्सा ॥

पित्तपापडा कायफल कूट खस लालचन्दन सुगन्धबाला सोंठ मोथा काकडासिंगी और पीपल इन औषधियोंका क्काथ तृषा दाह मन्दाग्नि और अधिक पित्त कफवाले सन्निपातमें हितहै इति पर्पटादि क्काथ ॥ ३४८ ॥

अथ बातपित्तश्लेष्मोल्वण सन्निपातज्वरचिकित्सा ॥

नागरंधान्यकंभार्गीपद्माकंरक्तचन्दनम् । पटोलपिचुमन्दश्चात्रिफलामधुकंबला ॥ शर्कराकटुकामुस्तंगजाह्वाव्याधिघातकः । किराततिक्तममृतादशमूलीनिदग्धिका ॥ योगराजोनिहन्त्येषसन्निपातंत्रिकोल्वणम् । सन्निपातसमुत्थानंमृत्युमप्यागतंजयेत् ॥ गजाह्वागजपिप्पली । व्याधिघातकिरवालाकिराततिक्तंद्वैगुण्यार्थंपृथक्पठितम् ॥ इति योगराजक्काथः ॥ ३४९ ॥

बात पित्त कफोल्वण सन्निपातकी चिकित्सा ॥

सोंठ धनियां भारंगी पद्माक लालचन्दन परवल नींब त्रिफला मुलहठी बरियारा शक्कर कुटकी मोथा गजपीपल अमलतास चिरायता गिलोय दशमूल और भटकटैया इन औषधियोंके द्वारा क्काथ बनाकर पीनेसे तीनों दोषोंकी अधिकतासे युक्त सन्निपात ज्वरका नाशहोताहै यह क्काथ सन्निपातके द्वारा आईहुई मृत्युको भी जीतताहै इतियोगराजक्काथ ॥ ३४९ ॥

अथ प्रवृद्धमध्यहीनवातादिजनितसन्निपातज्वराणं चिकित्सामाह ॥

प्रवृद्धंकर्षयेद्दोषंक्षीणंसंवर्द्धयेद्भिषक् । चिकित्सेयंविधातव्यादोषयोर्वृद्धहीनयोः । अस्यायमर्थः । प्रवृद्धंदोषंकर्षयेत् । तत्क्षयहेतुभिरौषधान्नविहारैःकृशीकृत्यसमीकुर्य्यात् । क्षीणंदोषंसंवर्द्धयेत् । तद्वृद्धिहेतुभिरौषधान्नविहारैर्वर्द्धयित्वासमीकुर्य्यादित्यर्थः । प्रवृद्धे शमितेदोषेमध्यमःस्वयमेवहि । शान्तिंयातिशमन्नीतेऽनुबन्धेत्वनुबन्धवत् । अस्यायमर्थः । वर्षासुवायुरनुबन्ध्यःप्रधानमितियावत् । पित्तश्लेष्माणावनुबन्धौवायोरनुचरौ ॥ शरदिपित्तमनुबन्ध्यःकफोऽनुबन्धः । वसंतेकफोऽनुबंध्योवातपित्तेऽनुबन्धौ । तत्रयथानुबन्ध्येप्रशमंनीतेऽनुबन्धःस्वयमेवशान्तिंयाति ॥ तथाप्रवृद्धेदोषेशमितेह्रासयित्वासमीकृतेमध्यमोदोषः । हिनिश्चयेनस्वयमेवशान्तिंयातिप्रकृतोभवतीत्यर्थ ॥ ३५० ॥

अधिक मध्यतथा हीन बातादि दोषवाले सन्निपातोंकी चिकित्सा ॥

जो दोष अधिक होय उस दोषको उसी दोषके क्षीण करनेवाली औषध अन्न तथा विहारकेद्वारा

क्षीण करके समकरे और जो दोष क्षीणहोय उसको उसके बढ़ानेवाली औषध अन्न तथा बिहारके द्वारा बढ़ाकर समकरे जैसे प्रधानके शान्तहोजानेपर अप्रधानभी शान्त होजाताहै उसीप्रकार बढ़े हुए दोषके शान्त होजानेपर मध्यम दोष आपही शांतहोजाताहै इसका यह तात्पर्य्यहै कि वर्षाकाल में बायु प्रधान और पित्त तथा कफ उसके अनुचर अर्थात् अप्रधान शरद ऋतुमें पित्त प्रधान और बात तथा कफ अप्रधान बसन्तऋतुमें कफप्रधान और बात तथा पित्त अप्रधान इन ऋतुओं में जैसे प्रधानके शांतहोजानेपर अप्रधान शांतहोजातेहैं उसीप्रकार बढ़ेहुए दोषके शांतहोकर समहोजानेपर मध्यम दोषनिस्संदेह आपही शांतहोजाताहै ॥ ३५० ॥

अथशीतांगादीनांसन्निपातज्वराणांत्रयोदशानांविशिष्टापिचिकित्सा ॥

तत्रशीताङ्गस्यचिकित्सामाह ॥

भास्वन्मूलंजीरकंत्र्योषभार्गीव्याघ्रीशुण्ठीपुष्करंगोजलेन । सिद्धंसद्यःशीतगात्रार्तिमोहश्वासश्लेष्मोद्रेककासान्निहन्ति॥ भास्वन्मूलंअर्कमूलम् ॥ कर्कोटिकाकन्दरजःकुलत्थःकृष्णावचाकट्फलकृष्णजीरैः । किराततिक्तानलकट्फलाम्बुपथ्याभिरुद्वर्त्तनमत्रशस्तम् ॥ कर्कोटिकाकन्दरजःखस्खसामूलरजः । रसविषमरिचमहेशप्रियफलभस्मैकभूचतुर्वसुभिः । भागैर्म्मितमुद्धूलनमिदमतिस्वेदशैत्यहरम् ॥ ३५१ ॥

शीतांगादिक तेरहसन्निपातोंकी विशेष चिकित्सा कहीजातीहै ॥

शीतांगकी चिकित्सा ॥

आककी जड़ जीरा त्रिकटु भारंगी भटकटैया सोंठ पुष्करमूल इन औषधियोंको गोमूत्रके द्वारा सिद्ध करके सेवन करनेसे शीघ्रही शीतांग मोह श्वास कफकी वृद्धि और खांसीका नाशहोताहै बांझ ककड़ीकी जड़का चूर्ण कुलथी पीपल वच कायफल काला जीरा चिरायता चीताकायफल सुगंधबाला और हड़ इन औषधियोंको पीसकर शरीरमें मलनेसे हित होताहै पारा १ भाग विष३ भाग मिर्च ४ भाग और धतूरेका फल ८ भाग इन औषधियोंको शरीरमें मलनेसे अत्यन्त स्वेद और शीतलता का नाश होताहै ॥ ३५१ ॥ अथतंद्रिकस्यचिकित्सा ॥

क्षुद्रामृतापौष्करनागराणिश्रृतानिपीतानिशिवायुतानि । शुण्ठीकणागस्तिरसोषणामिनस्येनतन्द्राविजयोल्वणानि ॥ मरिचकचपञ्चपचावचारुक्रिमिहरनागरशर्व्वरीगवाक्ष्यः । छगलकजलकलिकतानितान्तंनसिनिहितानतुतन्द्रिकंजयति ॥ कचः बालकः पञ्चपचादारुहरिद्रा । रुक् कुष्ठम् कृमिहरःविड़ंगःशर्व्वरी हरिद्रागवाक्षी इन्द्रवारुणी ॥ नसिनासिकायाम् । तुरंगलालालवणोत्तमेन्दुमनःशिलामागधिकामधूनि ॥ नियोजितान्यक्षिणिनिश्चितञ्चतन्द्राञ्चनिद्राञ्चनिवारयन्ति । लवणोत्तमंसैन्धवं इन्दुः कर्पूरः ॥ निद्रांअतिनिद्रां ॥ ३५२ ॥

तंद्रिककी चिकित्सा ॥

भटकटैया गिलोय पुष्करमूल और सोंठ इनऔषधियों का क्वाथ हड़डालकर पीनाचाहिये सोंठ पीपल मिर्च और अगस्तके फूलकारस इनको मिलाकर नासलेनेसे तंद्राका नाशहोता है मिर्च सुगन्धबाला दारुहल्दी वचकूट बायबिड़ंग सोंठ हल्दी और इन्द्रायण इनऔषधियों को बकरेकेमूत्रमें

पीसकर नासलेनेसे तंद्राका नाशहोताहै घोड़ेकीलार सेंधानोन कपूर मैनसिल और पीपल इनऔषधियोंको सहतके साथ नेत्रोंमें लगानेसे निस्सन्देह तंद्रा और अत्यन्त निद्राका नाशहोताहै ॥३५२॥

अथ प्रलापकस्यचिकित्सा ॥

सतगरवरतिक्तारेवताम्भोदतिक्ता नलदतुरगगन्धाभारतीहारहूराः ॥ मलयजदशमूलीशङ्खपुष्पीसुपक्का । प्रलपनमपहन्युःपानतोनातिदूरात् ॥ वरतिक्तोऽत्रपर्पटीनतुम हानिम्बस्तन्त्रान्तरानुरोधात् । नलदं लामज्जकं तदलाभादुशीरंग्राह्यम् भारतीब्राह्मी वरम्भीइतिलोके ॥ हारहूराद्राक्षा ॥ सान्त्वनैरञ्जनैस्तीक्ष्णैर्नस्यैस्तिमिरसेवनैः । सर्व्वतोविकृतंचित्तमस्यप्रकृतिमानयेत् ॥ ३५३ ॥

प्रलापककी चिकित्सा ॥

तगर पित्तपापड़ा अमलतास मोथा कुटकी लामज्जक असगन्ध ब्राह्मी दाख चन्दन दशमूल और शंखपुष्पी इनऔषधियोंका क्राथपानकरने से शीघ्रही प्रलापक सन्निपातका नाशहोताहै (तसल्ली) अञ्जन तीक्ष्णनस्य और अन्धकारका सेवन इनसबसे सबप्रकारकरके बिगड़ेहुए चित्तको प्रकृतिमेंलावे३५३॥

अथ रक्तष्ठीविनश्चिकित्सा ॥

रोहिषधन्वयवासकवासापर्पटगन्धलताकटुकाभिः । शर्करयासममेषकषायःक्षतजष्ठीविनउग्रदुपायः ॥ रोहिषम् सुगन्धतृणविशेषः। रोहिसइतिलोके॥गन्धलता प्रियंगू॥ पद्मकचन्दनपर्पटमुस्तंजातीजीवकचन्दनवारि । क्लीतकनिम्बयुतंपरिपक्कंवारिभवेदिह शोणितहारि ॥ क्लीतकं यष्ठीमधुकम्। इहरक्तष्ठीविनिमधुकमधूकपरुषकयापाथश्चन्दनपल्लवदारुसनाथः॥ श्रीपर्णीफलशीतकषायःससितइहस्यादस्रजया। पल्लवपत्रकं पाथः बालः श्रीपर्णी गम्भारी ॥ ३५४ ॥

रक्तष्ठीवीकी चिकित्सा ॥

रोहिष (सुगन्धितृणविशेष) जवासा बांसा पित्तपापड़ा प्रियंगु और कुटकी इनऔषधियोंका क्राथ शक्कर डालकरपीनेसे क्षतसेहुए रक्तष्ठीवी सन्निपातका नाशहोताहै पद्माक लालचन्दन पित्तपापड़ा मोथा चमेली जीवक श्वेतचंदन सुगन्धबाला मुलहठी और नींब इनऔषधियोंके क्राथके पीनेसे रक्तष्ठीवी सन्निपातके रुधिरका नाशहोताहै मुलहठी महुआ फालसा सुगन्धबाला लालचंदन तेजपात देवदारु गंभारी इनऔषधियोंका शीतल कषाय शक्करडालकर पीनेसे रक्तष्ठीवी सन्निपातका नाशहोता है ॥ ३५४ ॥

अथ भुग्ननेत्रस्यचिकित्सा ॥

तुरङ्गगन्धालवणोग्रगन्धामधूकसाराोषणमागधीभिः।वस्ताम्बुशुण्ठीलशुनान्विताभिर्नस्यंकृशंभुग्नदृशंकरोति ॥ ३५५ ॥

भुग्ननेत्रकी चिकित्सा ॥

असगन्ध सेंधानोन वच महुएकासाग मिर्च पीपल सोंठ और लहसन इनऔषधियोंको बकरेके मूत्रमें पीसकर नासलेनेसे भुग्ननेत्र सन्निपातका नाशहोताहै ॥ ३५५ ॥

अथाभिन्यासस्यचिकित्सा ॥

शृङ्गीभार्ग्यभयाजाजीकणाभूनिम्बपर्पटैः । देवदारुवचाकुष्टयासकट्फलनागरैः ॥ मुस्तधान्याकतिक्तेन्द्रयवपाठाहरेणुभिः । हस्तिपिप्पल्यपामार्गपिप्पलीमूलचित्रकैः ॥ विशालारग्वधारिष्टशटीवाकुचिकाफलैः । विडंगरजनीदार्व्वीयवानीद्वयसंयुतैः ॥ समांशैर्विहितःक्काथोहिङ्ग्वार्द्रकरसान्वितः । अभिन्यासज्वरंघोरंहन्तितन्द्राञ्चतत्क्षणात् ॥ प्रमेहंकर्णशूलञ्चसन्निपातांस्त्रयोदश । हिक्कांश्वासञ्चकासञ्चतथासर्व्वानुपद्रवानइति शृंग्यादिक्काथः ॥ ३५६ ॥

अभिन्यासकी चिकित्सा ॥

काकडासिंगी भारंगी हड़ कालाजीरा पीपल चिरायता पित्तपापड़ा देवदारु वचकूट जवासाकायफल सोंठ मोथा धनियां कुटकी इंद्रजौ पाठा रेणुका गजपीपल लटजीरा पीपलामूलचीता इंद्रायण अमलतास नींब कचूर बकुची बायविड़ंग हल्दी दारुहल्दी दोनों अजवाइन इनसब बराबर औषधियों का क्काथहींग और अदरकका रसमिलाकर पीनेसे घोर अभिन्यास तंद्रा प्रमेह कानकीपीड़ा तेरह सन्निपात हिचकी श्वास खांसी और सबप्रकारके उपद्रवोंका नाशहोताहै इतिशृंग्यादिक्काथ ॥३५६॥

अथ जिह्वकस्यचिकित्सा ॥

किराततिक्ताकुलकृत्कुलिञ्जंकर्चूरकृष्णाकटुतैलयुक्तः । अम्लद्रवःसंशमयेद्रसज्ञा दोषांस्तुतोदाशरथिर्यथात्र ॥ आकुलकृत्अकलकरहाइतिलोके । अम्लद्रवःबीजपूरादिरसः इतिकिरातादिकवलः ॥ ३५७ ॥

जिह्वककी चिकित्सा ॥

चिरायता अकरकरा इन्द्रजौ कचूर पीपल और कडुआतेल इनसबको निंबूआदिके रसमें मिलाकर कवलग्रहण करनेसे जैसे स्तुति कियेगये श्री रामचंद्रजी दोषोंको नाशकरते हैं उसी प्रकार यह भी दोषोंको नाशकरताहै इतिकिरातादिकवल ॥ ३५७ ॥

शालूरपर्णीमालूरमूलामयमधुप्लुता । शङ्खकपुष्पीसहितासेव्यावाचाविशुद्धये (पर्ण्यादिःअवलेहः) शालूरपर्णीब्राह्मीमालूरमूलंविल्वमूलंआमयःकुष्टं ॥ ३५८ ॥

ब्राह्मी बेलकीजड़ कूट और शंखपुष्पी इनऔषधियोंको पीसकर सहतके साथचाटनेसे बाणी शुद्धहोती है इतिशालूरपर्ण्यादि अवलेह ॥ ३५८ ॥

शालूरक्षुद्रानागरपुष्करामृतलताब्राह्मीवचांसुव्रता भार्गीवासकयासतोयसुरसाक्काथोजयेज्जिह्वकम् । विश्वावर्मविभावरीयुगवरावत्सादनीवारिद व्याघ्रीनिम्बपटोलपुष्करजटारुग्दारुभिर्वाकृतः ॥ पुष्करम्पुष्करंमूलं तथाचामरसिंहः ।मूलेपुष्करकाश्मीरपद्मपत्राणिपौष्करे । सुव्रतागन्धपलासीकाश्मीरेप्रसिद्धा । सुरसातुलसीविश्वादियोगान्तरम् । वर्मः पर्पटःविभावरीयुगंहरिद्रादारुहरिद्राच । वरात्रिफला । वत्सादनी गुडूची।व्याघ्रीकण्टकारिका ॥ ३५९ ॥

भटकटैया सोंठ पुष्करमूल गिलोय ब्राह्मी बच गंधपलासी भारगी बांसा जवासा सुगन्धबाला और तुलसी इन औषधियों का क्वाथ जिह्वक सन्निपात को नाशकरता है सोंठ पित्तपापड़ा हल्दी दारुहल्दी त्रिफला गिलोय मोथा भटकटैया नींब पर्वल पुष्करमूल कूट और देवदारु इनकाक्काथ जिह्वक सन्निपात का नाशकरताहै ॥ ३५९ ॥

अथसन्धिकस्यचिकित्सा ॥

शठीसुरतरूत्तमास्थविरदारुरास्नाःसमाः । सनागरसुधान्विताःपिबशतावरीसंयुताः ॥ मृदुज्वलनपाचिताःसहपुरेणसान्धिग्रह ।ऽयथापहतयेवृथाशिशिरसेवनंमाकृथाः ॥ उत्तमा त्रिफलास्थविरदारुविधाराइतिलोके । सुधागुडूचीपुरोगुग्गुलुः । वचाकवचकच्छुरास हचरामृताभंगुरा । सुराह्वघननागराऽतरुणदारुरास्नापुरः ॥ वृषातरुणभीरुभिःसह भवन्तिसन्धिग्रह ।ऽयथोरुजडिमक्लमभ्रमणपक्षघातद्रुहः ॥ कवचःपर्पटकःकच्छुरायवा सः । भंगुराश्रतिविषासुराह्वोदेवदारु । अतरुणदारुवृद्धदारुपुरोगुग्गुलुः । वृषाव्रह द्दन्तीएरण्डवत्पत्रविटपा । तदलाभेदन्तीचग्राह्यासमानगुणत्वात् ॥ तरुणःएरण्डःभी रुःशतावरीसुवहाशुण्ठीमृताःश्रृताजलेसपुरः (रास्ना) शमयन्तिसेविताःसततंसन्धि गतंसदागतिम् (सुवहा) मुस्तैरण्डप्राणदावाणदारुछिन्नारास्नाभीरुकर्चूरतिक्ता । वा साविश्वापञ्चमूलाश्वगन्धाहन्यान्मन्यास्तम्भसन्धिग्रहार्त्तीः । प्राणदाहरीतकीवाणःनी लपुष्पसहचरः । तिक्ताकटुकी ॥ ३६० ॥

संधिग की चिकित्सा ॥

कचूर देवदारु त्रिफला विधारा रासना सोंठ गिलोय और सतावर इनऔषधियों का मन्दअग्नि में क्वाथ करके गूगल डाल संधिग सन्निपात में पीड़ाके नाशकरने के लिये पीनाचाहिये और शीत का सेवन न करना चाहिये बच पित्तपापडा जवासा झिंटी गिलोय अतीस देवदारु मोथा सोंठ बिधारा रासना गूगल बड़ीदन्ती (इसके न मिलने में दन्ती लेनीचाहिये) रेंड़ी और सतावर इनऔषधियोंकाक्काथ संधिग्रह पीड़ा पेट का भारीपन ग्लानि भ्रान्ति और पक्षाघातको नाशकरताहै रासना सोंठ और गिलोय इनका क्वाथ गूगल डालकर पीनेसे सन्धियोंमें घुसीहुई बातकी पीड़ा का नाशकरताहै मोथा रेंड़ी हड़ झिंटी देवदारु गिलोय रासना सतावर कचूर कुटकी वांसा सोंठ पंचमूल और असगन्ध इन औषधियों का क्वाथ सेवन करने से गले के पीछे की नसका जकड़ना और संधिग्रह का नाश होताहै ॥ ३६० ॥

अथान्तकेचिकित्सा ॥

इहापहायव्रतमुष्णवारिज्वरारियूषादिगदापहारि । ज्वरच्छिदंजीवितदञ्चनित्यंमृत्यु ञ्जयञ्चेतसिचिन्तयस्व ॥ इहअन्तकेव्रतंलङ्घनादिनियमम् । कर्पूरप्रकरावदातवपुषंसं योगमुद्राजुषम् । शङ्खवद्वक्तजनेषुभावुकजुषंभालस्फुरच्चक्षुषम् ॥ सम्पूर्णामृतकुम्भसम्भृ तकरंशुभ्राक्षमालाधरम् । पिंगोतुंगजटाकलापरुचिरंचन्द्रार्द्धमौलिंस्तुहि ॥ भिषग्भिरि तिनिर्णीतंसन्निपातेऽन्तकाभिधे । भेषजंजाह्नवीनीरंवैद्योगोविंदएवहि ॥ ३६१ ॥

अन्तक की चिकित्सा ॥

इस अन्तक सन्निपात में लंघन गरम जल और ज्वर नाशक यूप आदिकों को छोड़कर ज्वरके नाश करनेवाले और जीवन के देनेवाले श्री मृत्युंजय का ध्यान करना चाहिये कपूर के समानश्वेत वर्ण वाले संयोग मुद्राको धारण किये हुए निरंतर भक्तजनों के मंगल करनेवाले ललाटमें दीप्तिमान नेत्रवाले अमृतसे भरेहुए घटको हाथमें धारण कियेहुए रुद्राक्षपहरेहुए पिंगलवर्ण बड़ी२ जटाओंके समूहसे सुंदर और अर्द्धचंद्रको मस्तकमें धारण कियेहुए श्री शिवजी महाराज का ध्यानकरो वैद्यलोगोंने अन्तक नाम सन्निपात में यह चिकित्सा कही है कि औषध तो गंगाजी का जल और वैद्य नारायण हैं ॥ ३६१ ॥

अथरुग्दाहचिकित्सा॥

उशीरचंदनोदीच्यद्राक्षामलकपर्पटैः । शृतंशीतंजलंदद्याद्दाहतृड्ज्वरशांतये ॥ षडंगपानीयम् । ससितोनिशिपर्युषितः प्रातर्द्धान्याकतण्डुलक्काथः पीतःशमयत्यचिरादन्तर्दाहज्वरम्पैत्तम् । धान्याकतन्दुलाःकण्डितधान्याकबीजानि । इतिधान्याकक्काथः । पथ्यातैलघृतक्षौद्रैर्लिह्याद्दाहविनाशिनीम् । पथ्यातैलघृतक्षौद्रैरित्यत्रनसमुच्चयः ॥ तेनकेवलेनमधुनापिलिह्यात् । पथ्यावलेहः । प्रशमयतिदाहमचिराद्दधियुक्तकर्कन्धुपल्लवैर्लेपः ॥ लेपोहिमकरमलयजनिम्बदलैस्तक्रपिष्टैर्वा । हिमकरःकर्पूरः । तथाचघनसारश्चन्द्रसंज्ञ इत्यमरः ॥ उत्तानसुप्तस्यगम्भीरताम्रकांस्यादिपात्रेनिहितेचनाभौ । शीताम्बुधाराबहुलापतन्तीनिहन्तिदाहंत्वरितंज्वरञ्च ॥ शीताम्भसाशतशश्चविलोडितेन । गव्येन चन्दनयुतेनघृतेनदिग्ध्वा । दाहज्वरीसकमलोत्पलमाल्यधारी । क्षिप्रंविशेत्सलिलकोष्ठमनल्पकालम् ॥ काञ्जिकार्द्रपटेनावगुण्ठनंदाहनाशनम् । अथगोतक्रसंस्विन्नशीतलीकृतवाससाम् ॥ ३६२ ॥

रुग्दाह की चिकित्सा ॥

खस लालचंदन सुगंधबाला दाख आंवला और पित्तपापड़ा इन औषधियों का क्वाथ शीतल करके देने से दाह तृषा तथा ज्वरका नाशहोताहै इतिषडंगपानीय ॥ कुटेहुये धनिये के बीजोंको सायंकाल में भिजोकर प्रातःकाल क्वाथ करके शक्कर डालकर पीनेसे अंतर्दाह और पित्तज्वर का नाश होताहै इतिधान्याक क्वाथ॥हड़को पीसकर तेल घी और सहत इनमेंसे किसीके साथ चाटनेसे दाह का नाश होताहै इतिपथ्यावलेह॥बेरके पत्तोंको दही के साथ लेपकरने से अथवा कपूर चंदन और नींबके पत्तों को मट्ठेके साथ पीसकर लेप करने से दाहका नाश होताहै रोगी को चित्त सुलाकर उसकी नाभिपर गहरे तांबे अथवा कांसे आदिके पात्रको रखकर उसमें शीतल जलकी बड़ी धारछोड़नेसे दाह और ज्वरका नाशहोताहै शीतल जलसे सैकड़ों बार धोये गये गौके घी में चंदन मिला के शरीर में लेप करके और कमल तथा कोकाबेलियों की मालाओं को पहर के दाह ज्वरवाला शीघ्र ही जलसे भरेहुए हौज़ में प्रवेश करके बहुत देरतक उसी में रहै इस्से दाहका नाश होता है कांजी में भिंगोये हुए बस्त्र के लपेटने से अथवा गौके मट्ठे में भिगोये हुए शीतल वस्त्र के लपेटने से दाह का नाश होता है ॥ ३६२ ॥

अथान्नमाह ॥

दाहवम्यर्दितंक्षामंनिरन्नंतृष्णयान्वितम् । शर्करामधुसंयुक्तंपाययेल्लाजतर्पणम् ॥ (लाजशक्तुरूपतर्पणम्) ॥ ३६३ ॥

दाहवालेको देनेके योग्य अन्न ॥

दाह तथा छर्दि से व्याकुल क्षीण लंघन किया हुआ और तृषित इनको शक्कर तथा सहत युक्त खीलोंके सतुओं से तृप्त कराना चाहिये ॥ ३६३ ॥

वाप्यःकमलहासिन्योजलयन्त्रगृहाःशुभाः । नार्य्यश्चन्दनदिग्धांग्योदाहेदैन्यहरा मताः ॥ ३६४ ॥

फूले हुए कमल वाली बावड़ी फव्वारे वाला घर और शरीर में चन्दन लगाये हुए स्त्री यह सब दाह की दीनता को दूर करतेहैं ॥ ३६४ ॥

मुक्तावलीचन्दनशीतलानांसुगन्धपुष्पाम्बरभूषितानाम् । नितम्बिनीनांसुपयोधराणामालिङ्गनान्याशुहरन्तिदाहम् ॥ प्रह्लादश्चास्यविज्ञायताःस्त्रीरपनयेत्पुनः । हितञ्चभोजयेदन्नंयेनाप्नोतिसुखंमहत् ॥ (प्रह्लादंकामकृतहर्षम् ॥ ३६५ ॥

मोतियों की माला पहरने तथा चन्दन के लगाने से शीतल शरीर वाली सुगन्धित पुष्प तथा वस्त्रों से आभूषित नितंबवाली और सुन्दर स्तन युक्त ऐसी स्त्रियों के आलिंगन करने से शीघ्रही दाहका नाश होताहै इस प्रकार उस पुरुषको कामकी वृद्धि होय तब स्त्रियोंको हटादे और ऐसेहित कारी अन्नोंको भोजन करावे जिस्से उसको बहुत सुख होवे ॥ ३६५ ॥

अथ चित्तभ्रमस्यचिकित्सा ॥

कर्णोषणोग्रालवणोत्तमानिकरञ्जबीजंप्रमदामलानि । पथ्याक्षसिद्धार्थकहिंगुशुण्ठीयुतानिवस्ताम्बुविमिश्रितानि ॥ पिष्ट्वागुटीयंनयनेनिधेयाप्रचेतनेऽतिप्रथितान्वितार्था । चित्तभ्रमायस्मृतिभूतदोषंशिरोऽक्षिरोगभ्रमनाशहेतुः ॥ (वस्ताम्बुच्छागमूत्रं) कुम्भोद्भवतरोरम्भोगुड़विश्वकणान्वितम् । निहितंनसिनूनंस्याच्चित्तभ्रमविनाशनम् ॥ कुम्भोद्भवतरोरम्भःअगस्तिवृक्षत्वक्कल्करसः ॥ ३६६ ॥

चित्तभ्रमकी चिकित्सा ॥

पीपल मिर्च बच सेंधानोन करंजकेबीज धतूरा आंवला हड़ बहेड़ा पीलीसरसों हींगऔरसोंठ इन औषधियों को समभाग लेकर बकरे के मूत्र में पीसके गोली बनावे इस गोलीको घिसकर नेत्र में लगाने से चैतन्यता होतीहै चित्तभ्रम मृगी भूतदोष शिर तथा नेत्रके रोग और भ्रम यहसब इसके लगानेसे दूर होतेहैं अगस्त्यके वृक्षकी छालके कल्क का रस गुड़ तथा पीपल युक्त नास लेने से चित्तभ्रम का नाश होताहै ॥ ३६६ ॥

मुरामूर्द्धजमेघाह्वमधूकमलयोद्भवैः । मरुत्तरुमधून्मिश्रैःपुरपाणिजपांशुभिः ॥ लोहलामज्जकैलाभिर्धूपःचित्रभ्रमापहः । ग्रहदोषहरःश्रीदःसौभाग्यकरउत्तमः । मुराएकाङ्गी ।

मूर्द्धजोबालाः। मरुत्तरुदेवदारु। पुरःगुग्गुलःपाणिजःनखःपांशुपपटकम्। लोहंअगुरु। लामज्जकम्उशीरवत्पीततृणविशेषःतदलामेउशीरंग्राह्यम्॥ ३६७॥

मरोड़फली सुगंधबाला मोथा महुआ चंदन देवदारु गूगल नखी पित्तपापड़ा अगर लामज्जक और इलायची इन औषधियों को सहत के साथ चाटने से चित्तभ्रम तथा ग्रहदोषों का नाश और शोभा तथा सौभाग्य की वृद्धि होती है॥ ३६७॥

मृद्वीकामरदारुमत्स्यशकलामुस्तामलक्योऽमृता। पथ्यारेवतरामसेनकरजोराजीफलैःसंयुताः। हन्युश्चित्तरुजोऽथदर्दुरदलापाठापटोलीपयः। पथ्यापर्पटराजवृक्षकटुकाशम्बूकपुष्पीशृताः॥ मृद्वीकाद्राक्षा। मत्स्यशकलाकटुकी। आरेवतःआरग्वधः। रामसेनकः किराततिक्तकः। रजःपर्पटकः। राजीफलःपटोलः। अथयोगान्तरमाह। दर्दुरदलामण्डूकपर्णीसाच ब्राह्मी। मञ्जिष्ठाशोणकश्चतथाप्यत्रब्राह्मीग्राह्या। यतःउक्तंद्रव्यगुणग्रंथे। ब्राह्मीमतिप्रदामेध्याज्वरहंत्रीरसायनी। ब्राह्मीवरम्भीतिलोकेपयःबालकम्। राजवृक्षःआरग्वधः। शम्बूकपुष्पीशंखपुष्पी॥ ३६८॥

दाख देवदारु कुटकी मोथा आंवले गिलोय हड़ अमलतास चिरायता पित्तपापड़ा औरपर्व्वल यह सब औषध चित्तभ्रमको नाशकरती हैं दर्दुरदला (ब्राह्मी) पाठा पर्व्वल सुगन्धबाला हड़ पित्तपापड़ा अमलतास कुटकी और शंखपुष्पी इन सब औषधियों का क्वाथ चित्तभ्रम सन्निपात को नाशकरताहै दर्दुरदला शब्दसे ब्राह्मी मजीठ और शोणक का ग्रहण कियाजाताहै परंतु यहां ब्राह्मी ही ग्रहण करनी चाहिये क्योंकि द्रव्य गुण ग्रंथमें कहाहै कि ब्राह्मी बुद्धि वर्द्धक मेधाको हित ज्वर नाशक और रसायन होतीहै॥ ३६८॥

अथ कर्णकस्यचिकित्सा॥

प्रलेपस्तमस्तन्नयत्यल्पमेकःसमुद्रिक्तशोथश्चरक्तावशेषः। पक्केचशस्त्रक्रियापूयजित्सा व्रणत्वंगतेचोचितातच्चिकित्सा। अयमर्थः। अत्यन्तंकर्णिकंएकःप्रलेपःअस्तन्नाशन्नयति। तच्चिकित्साव्रणचिकित्सा। निशाविशालामयमाणिमन्थदार्व्यंगुदीमूलकृतःप्रलेपः। प्रभाकरक्षीरयुतःप्रभावाद्व्यस्तःसमस्तोऽप्यथकर्णिकघ्नः॥ कुलत्थःकट्फलंशुण्ठीकारवीचसमांशकैः। मुखोष्णैर्लेपनंकार्य्यङ्कर्णमूलेमुहुर्मुहुः॥ गैरिकंखठिनीशुण्ठीकट्फलारग्वधैःसमैः। उष्णैःकांजिकसम्पिष्टैर्लेपःकर्णकमूलनुत्॥ ३६९॥

कर्णक सन्निपातकी चिकित्सा॥

कर्णमूल की थोड़ीसी सूजन को एक लेपही नष्ट कर देताहै बहुत बढ़जाने पर रुधिर निकलवाना चाहिये पकजाने पर शस्त्रके द्वारा पीब निकलवाना चाहिये और घाव होजानेपर घावकी चिकित्सा करनी चाहिये हल्दी इंद्रायण कूट सेंधानोन दारुहल्दी और इंगुदी की जड़ इन सब औषधियों मेंसे एक एक अथवा संपूर्ण औषधियों को आकके दूधके साथ लेप करने से कर्णक सन्निपात का नाश होताहै कुलथी कायफल सोंठ और कालाजीरा इन सब औषधियों को बराबर लेकर कुछ गरम गरम बारंबार कर्ण मूल में लेपकरे गेरू खड़िया सोंठ कायफल और अमलतास इन

औषधियों को कांजीमें पीसकर कुछ गरम लेप करने से कर्ण मूल का नाश होताहै ॥ ३६९ ॥

शिग्रुराजिकयोःकल्कंकर्णमूलेप्रलेपयेत् । कर्णमूलभवःशोथस्तेनलेपेनशाम्यति । अशिशिरजलपरिमृदितंमरिचकणाजीरसिंधुजंत्वरितम् । नस्यविधिसेवितंननुकर्णकरुग्नाशकृद्गदितम् ॥ भार्गीजयापौष्करकण्टकारिकटुत्रिकोग्राघनकुण्डलीभिः । कुलीरशृङ्गीकटुकारसाभिःकृतःकषायःकिलकर्णकघ्नः॥भार्गीवमनेटीतिलोके । तदलाभेकण्टकारीमूलंग्राह्यम् । जयागनिआरीतिलोकेपौष्करंपुष्करमूलम् । उग्रावचा । कुण्डलीगुडूची । कुलीरशृंगीकर्कटशृंगी । रसारास्ना । दशमूलमत्स्यशकलाचपलात्रिफलामहौषधकिरातयुतम् । मरिचंपरिक्वथितमाशुबलादपहन्तिकर्णरुजःसकलाः॥ चपलापिप्पली॥३७०॥

सहँजना और राईके कल्कको कर्णमूलमें लेप करनेसे कर्णमूलकी सूजनका नाश होताहै मिर्च पीपल जीरा सेंधानोन इन सबको गरम जलमें पीसकर नासलेने से कर्णकरोग का नाश होता है भारंगी (इसके अभावमें भटकटैयाकी जड़) अरणी पुष्करमूल भटकटैया सोंठ पीपल मिर्च बच मोथा गिलोय काकड़ासिंगी कुटकी और रासना इनका क्वाथ कर्णक सन्निपातको नाश करता है दशमूल कुटकी पीपल त्रिफला सोंठ चिरायता और मिर्च इनका क्वाथ शीघ्रही कर्णक सन्निपातको नाश करताहै ॥ ३७० ॥

अथकण्ठकुब्जस्यचिकित्सा ॥

फलत्रिकत्र्यूषणमुस्तकद्वीकलिङ्गसिंहाननशर्वरीभिः । क्वाथःकृतःकृंततिकण्ठकुब्जंकण्ठीरवःकुञ्जरमाशुतद्वत् ॥ किरातकटुकाकणाकुटजकण्टकारीशटी । (सिंहाननोवासकः । शर्वरीहरिद्रा) कलिद्रुकिलिमाभयाकटुककट्फलाम्भोधरैः । विषामलकपुष्करानलकुलीरशृङ्गीवृषैः ॥ महौषधसखैरयंजयतिकण्ठकुब्जंगणः । शटीकर्चूरःकलिद्रुःविभीतकःकिलिमंदेवदारुकटुकंमरिचंविषाअतीसवृक्षःवृक्षादिभिः किंविशिष्टैर्महौषधसखैः महौषधस्यसखिभिःतेनएतैःसहितेनमहौषधेनेत्यर्थः ॥ ३७१ ॥

कंठकुब्जकी चिकित्सा ॥

त्रिफला त्रिकटु मोथा कुटकी इन्द्रजौ बांसा और हल्दी इनका काढ़ा जैसे सिंह हाथियोंका नाशकरताहै इसीप्रकार कंठकुब्ज सन्निपातको नाश करताहै चिरायता कुटकी पीपल कुरैया भटकटैया कचूर बहेड़ा देवदारु हड़ मिर्च कायफल मोथा अतीस आंवला पुष्करमूल चीता काकड़ासिंगी और बांसा इनके क्वाथमें सोंठ छोडकर पीनेसे कंठकुब्ज सन्निपातका नाशहोताहै ॥ ३७१ ॥

अथोल्वणाव्रातादिप्रवृद्धमध्यक्षीणवातादिहेतुकानांकुम्भीपाकादिनांत्रयोदशानांचिकित्सातुल्यहेतुकानांविस्फुरकादीनामत्रयोदशानामिवविधातव्या (इतिसान्निपातज्वराधिकारः ॥ ३७२ ॥

अधिक बातादि और अधिक मध्य तथा क्षीण बातादि हेतुओंसे उत्पन्न कुंभीपाकादितेरह सन्निपातोंकी चिकित्सासमान हेतुवाले विस्फोटक आदि तेरह सन्निपातोंकेसमान जाननी चाहिये इति सन्निपात ज्वराधिकार ॥ ३७२ ॥

अथागन्तुज्वराधिकारस्तत्रागन्तुकज्वरस्यनिदानान्याह ॥

अभिघाताभिषङ्गाभ्यामभिचाराभिशापतः । आगन्तुर्जायतेदोषैर्यथास्वन्तंविभावयेत् ॥ अभिघातःशस्त्रमुष्टिलगुड़ादिभिर्हननम्। अभिषंगःकामशोकभयक्रोधभूतादीनामावेशः ॥ अभिचारःकृत्याद्युत्पादनं अभिशापःब्राह्मणगुरुवृद्धसिद्धादिकृतःशापः। तंआगन्तुज्वरम्यथास्वंयथादोषलक्षणंदोषैर्विभावयेत्विजानीयात् ॥ ३७३ ॥

आगन्तुकज्वराधिकार। आगन्तुकज्वरके निदान ॥

अभिघात (शस्त्र घूसा और लाठी आदिसेमारना) अभिषंग (काम शोक भय क्रोध और भूतादिकोंका आवेश) अभिचार (कृत्यादिकरना) अभिशाप (ब्राह्मणगुरु वृद्धतथासिद्धादि पुरुषोंकाशाप) इनसब कारणोंसे आगन्तुक ज्वर उत्पन्नहोताहै इसआगंतुक ज्वरको दोषोंके लक्षणके अनुसार कुपितहुये दोषों से जानले ॥ ३७३ ॥

अपराण्यपिनिदानान्याह ॥

येभूतविषवाय्वग्निक्षतभंगादिसम्भवाः । रागद्वेषभयाद्यैश्चतेस्युरागन्तवोगदाः ॥ भयाद्यशब्देनक्रोधलोभादयःसंगृह्यन्ते। तेनरागादयोभंगाद्यन्तायेहेतवोऽप्यागन्तुसंज्ञाः स्युःकार्यकारणयोरभेदोपचारात्एतेनागन्तुजः इत्यत्राप्यागन्तुशब्दोहेतुवाचीआगंतुर्जायतेदोषैरित्यत्रव्याधिवाचीअभिघाताभिषंगाभ्यामित्यादि श्लोकेदोषैर्यथास्वंतंविभावयेयदिति वचने नैवंप्रतीयतेअभिघातादीनांविप्रकृष्टकारणत्वंमिथ्याहारविहाराणामिवदोषाणांसन्निकृष्टकारणत्वंतथासतिदक्षापमानसंक्रुद्धरुद्रेत्यादिश्लोके आगन्तुज्वरस्याष्टमत्वविधानोदोषजेष्वेवप्रवेशात् । उच्यते । आगन्तुज्वरस्यदोषाआरम्भकाःनाकिन्तु पश्चादनुबन्धिनः ॥ ३७४ ॥ अन्य निदान ॥

जो रोग भूतविष वायु अग्नि घाव भंग राग द्वेष और भयआदिकोंसे उत्पन्न होते हैं वह आगंतुक कहलातेहैं भयादि कहने से क्रोध और लोभादिकोंकाभी ग्रहणहोताहै रागको आदि लेकर जो हेतुकहेगयेहैं वहभी आगंतुक संज्ञक हैं क्योंकि कार्य्य और कारणमें अभेदकी कल्पना कीजातीहै इससे आगंतुजस्मृतः इसबाक्य में आगंतु शब्द हेतु बाची है और आगंतुर्जायतेदोषैः इसबाक्यमें रोग बाची है अभिघाताभिषंगाभ्यां इत्यादिक श्लोक में दोषों के लक्षणों के अनुसार उसको जानना चाहिये इस वचनसे यह मालूम होताहै कि अभिघात आदिक मिथ्याहार विहारोंके समान दूरवाले कारणहैं और दोषसमीपी कारणहैं ऐसा होनेसे दक्षापमान संक्रुद्ध इत्यादिश्लोकमें आगन्तु ज्वरका आठवां कहनाठीक न होगा क्योंकि वह दोषज ज्वरोंमेंही आजायगा इसका उत्तरयहहै कि दोष आगन्तुज्वर के प्रारम्भ करने वालेनहीं हैं किन्तु पीछे से होनेवालेहैं ॥ ३७४ ॥

तथाचागन्तुज्वरस्यसंप्राप्तिमाह। चरकः । आगन्तुर्हिव्यथापूर्वोजायतेपश्चान्निजैर्दोषैरनुबध्यतइति॥ तत्रकस्यागन्तोःकोनिजोदोषइत्यपेक्षायामाह॥ कामशोकभयाद्वायुः क्रोधात्पित्तंत्रयोमलाः । भूताभिषङ्गात्कुप्यन्तिभूतसामान्यलक्षणाः ॥ कामशोकभयात् कामशोकभयजादागन्तोः वायुःकुप्यति । क्रोधात्तुक्रोधजादागन्तोःपित्तंप्रकुप्यति ।

भूताभिषंगात्भूतावेशजादागन्तोःत्रयोमलादोषाकुप्यन्तीत्यर्थः । भूतसामान्यलक्षणाः भूतस्यभूतलक्षणस्यसामान्यंसमानतायेषांतानिभूतसामान्यानिलक्षणानियेषांते भूतसामान्यलक्षणाःमलाः ॥ ३७५ ॥

चरककीकहीहुई आगन्तुक ज्वरकीसंप्राप्ति ॥

आगन्तुज्वरमें पहले पीड़ाहोती है और फिरजिस आगन्तु ज्वर का जो दोषहै उस्से युक्त होताहै किस आगंतु ज्वरका कौनसा निज दोषहै यह कहतेहैं जैसेकि कामशोक तथा भयसे बायुक्रोधसे पित्त और भूतावेशसे भूतोंके लक्षणोंके समान लक्षणवाले तीनोंदोष कुपित होतेहैं ॥ ३७५ ॥

अथागन्तुज्वराणांहेतुभेदेनलक्षणभेदानाह ॥

श्यावास्यताविषकृतेतथातीसारएवच । भक्तारुचिःपिपासाचतोदश्चसहमूर्छया ॥ विषकृतेस्थावरजंगमविषभक्षणकृतेज्वरेमुखःश्यावःशुक्लानुविद्धःकृष्णोवर्णःशाकवर्णोवा। अतीसारःस्थावरविषेएवतस्याधोगामित्वात् । तोदःसूचीव्यधनेनेवव्यथा ॥ ३७६ ॥

आगंतुज्वरोंके कारणोंके भेदसेलक्षणोंकेभेद ॥

विषखानेसे होनेवाले आगंतुज्वरमें मुखकी श्यामता अतीसार अन्नमें अरुचि तृषा सुईके गुभनेके समान पीड़ा और मूर्च्छा होतीहै विषखाना यह कहनेसे स्थावर और जंगम दोनो विषोंका ग्रहण होताहै परंतु अतीसार केवलस्थावर विषमें होताहै क्योंकि वह अधोगामी होताहै ॥ ३७६ ॥

औषधीगन्धजेमूर्च्छाशिरोरुग्वमथुस्तथा ॥ कामजेचित्तविभ्रंशस्तन्द्रालस्यमभोजनम् ॥ हृदयेवेदनाचास्यगात्रञ्चपरिशुष्यति । कामजेसमीहितकान्ताद्यप्राप्तिनिमित्तके ज्वरे । चकाराद्वाग्भटोक्तान्यपिलक्षणानिबोद्धव्यानि ॥ तानियथा । कामाद्भ्रमोऽरुचिर्दाहोह्रीनिद्राधीधृतिक्षयइति ॥ ३७७ ॥

किसी औषधके सूंघनेसे उत्पन्न हुए ज्वरमें मूर्च्छा शिरमें पीड़ा और छर्दि होती है कामज अर्थात् वांछित कांता आदिके नमिलने से उत्पन्न हुए ज्वरमें चित्तका विभ्रम तन्द्रा आलस्य हृदयमें पीड़ा और शरीरकी सुखावट होती है और चकारसे बाग्भटके कहे हुए अन्यलक्षणभी जानने चाहिये जैसे कि काम ज्वरमें भ्रम अरुचि दाह लज्जा निद्रा और बुद्धि तथा धैर्यकानाश होताहै ॥ ३७७ ॥

मूर्च्छांगमर्दोतृट्नेत्रचापल्यंकुचवक्त्रयोः । स्वेदःस्यात्हृदिदाहश्चस्त्रीणांकामज्वरे भवेत् ॥ ३७८ ॥

स्त्रियों के कामज्वर में मूर्च्छा अंगोंमें पीड़ा तृषा नेत्रोंमें चपलता स्तन तथा मुखपर स्वेद और हृदयमें दाह होताहै ॥ ३७८ ॥

बालकंशतपत्राणिगंधसारमुशीरकम् । चोपधान्येयकंमांसीक्वाथःकामज्वरापहः ॥ संध्यायांसंस्तरःकार्यःसुगन्धैःकुसुमैर्भृशम् । क्रीड़नीयंस्त्रकान्तेनसहरात्रौतथास्त्रियः ॥ इदमपिकुत्रापिकथितंअत्रपुनः ॥ भयात्प्रलापःशोकाच्चभवेत्कोपाच्चवेपथुः। भयात्भयजेज्वरेप्रलापःशोकाच्चचकारेण। प्रलापएवानुकृष्यते। कोपाच्चकोपादपिवेपथुर्भवति।ननुवेपथुः वातस्यधर्मःततकथंक्रोधजेज्वरेवेपथुः । यतउक्तम् क्रोधोत्थितमिति । एकः

प्रकुपितोदोषइतरानपिकोपयेदितिवचनात्पित्तकोपित्तवातजन्यएवात्रवेपथुः क्रोधाद्वायुरपिभवति। यतउक्तंविदेहेन। क्रोधशोकौस्मृतौवातपित्तरक्तप्रकोपनाविति ३७९॥

सुगंधवाला कमल चंदन खस दालचीनी धनियां और जटामांसी इनके क्वाथपीनेसे कामज्वर का नाशहोताहै संध्याके समय सुगंधित पुष्पादिकोंके द्वारा उत्तम शय्या बिछवाकर स्त्रियोंको अपने पतिकेसाथ और पुरुषोंको अपनी २ स्त्रियोंकेसाथ क्रीडाकरना चाहिये इससेकामज्वर का नाशहोता है कहींपर ऐसाभी कहागया है कि भयतथा शोकजनित ज्वरमें प्रलाप और क्रोधजनित ज्वरमें कंप होताहै अबयह संदेह होताहै कि कंपबायुका धर्म्महै तो क्रोधजनित ज्वरमें कंपकैसे होसक्ताहै क्योंकि कहागयाहै कि क्रोधसे पित्त कुपित होता है इसका उत्तर यहहै कि कुपितहुआ एकदोष अन्यदोषोंको भी कुपित करता है इसवचनके अनुसार कोपयुक्त पित्तके द्वारा कुपितहुई वायुकंपको उत्पन्न करती है अथवा क्रोधसे बायुभी कुपित होतीहै क्योंकि विदेहने कहाहै कि क्रोध और शोकबायु और रक्तपित्तको कुपित करते हैं॥ ३७९॥

भूताभिषङ्गादुद्वेगोहास्यरोदनकम्पनम्॥ केचिद्भूताभिषङ्गोत्थंब्रुवतेविषमज्वरम्। भूताभिषङ्गोत्थोविषमज्वरोभवति॥ कदाचिद्वेगवान्। कदाचिच्छान्तवेगइत्यर्थः। अभिचाराभिशापाभ्यांमोहस्तृष्णाचजायते। तृष्णाचेतिचकारेणहारीतानुवादिवाग्भटोक्तञ्चबोद्धव्यम्। तद्यथा। तत्राभिचारिकैर्मन्त्रैर्हूयमानस्यतप्यते। पूर्व्वंमनस्ततोदेहस्ततोविस्फोटतट्भ्रमैः॥ सदाहमूर्च्छाग्रस्तस्यप्रत्यहंवर्द्धतेज्वरइति॥ ३८०॥

भूतोंके आवेशसे होनेवाले ज्वरमें उद्वेग अनर्थक हास्य रोदन और शरीरमें कंपहोता है और कोई २ कहते हैं कि भूतावेशमें विषमज्वर होता है अर्थात् कभी ज्वरका वेगअधिक और कभी न्यून होजाताहै अभिचार और अभिशापसे होनेवाले ज्वरमें मोहतथा तृषा होती है यहां चकारसे हारीत और वाग्भट के कहेहुए अन्यलक्षण भी जानने चाहिये जैसे कि अभिचारके मंत्रोंके द्वारा दुखित मनुष्यको पहले मनकाताप फिर शरीरमें उष्णता इसके पीछे विष्फोटक तृषा भ्रम दाह तथा मूर्च्छा होती है और ज्वर प्रतिदिन बढ़ता है॥ ३८०॥

अथतेषांचिकित्सा॥

आगन्तुजेज्वरेनैवनरःकुर्वीतलङ्घनम्। तथाचवाग्भटः। शुद्धवातक्षयागन्तुजीर्णज्वरिषुलङ्घनम् नेष्यन्तइतिशेषः। अन्यच्च। लङ्घनंनहितंकामशोकचिन्ताप्रहारजेभयभूतश्रमक्रोधलङ्घनैश्चकृतेज्वरे॥ किन्त्वग्नौदीपितेतत्रदद्यान्मांसरसौदनम्॥ अभिघातज्वरैर्युञ्ज्यात्क्रियामुष्णविवर्जिताम्॥ कषायंमधुरंस्निग्धंयथादोषमथापिच। अभिघातज्वरोनश्येत्पानाभ्यङ्गेनसर्पिषः॥ रक्तावसेकैर्म्मेध्यैश्चतथामांसरसौदनैः। मेध्यैर्मेधायहितैः ३८१॥

आगन्तुज्वरोंकी चिकित्सा॥

आगन्तु ज्वरमें लंघन न कराना चाहिये और ऐसाही वाग्भटने भी कहाहै कि केवल बातजनित क्षयजनित आगन्तुज और जीर्णज्वर में लंघन श्रेष्ठनहीं होता और भी कहागयाहै कि काम शोक चिन्ता प्रहार भय भूतावेश श्रमक्रोध और उपवास इनसे उत्पन्न हुए ज्वरमें लंघन हितकारी नहीं है परन्तु इनकारणोंसे ज्वर आनेपर जो रोगीकी अग्नि दीप्तहोय तो मांसके रसकेसाथ भातदेवे अभिघा

तसे हुएज्वरमें उष्णता रहित चिकित्सा करनी चाहिये और कषाय मधुर तथा स्निग्ध वस्तु अथवा दोषके अनुसार बस्तु देनीचाहिये घीकेपीनेसे अथवा मलनेसे रुधिर निकलवाने से मेधाकी हितकारी वस्तुओं से और मांसके रसयुक्त भातखानेसे अभिघात ज्वरका नाशहोता है ॥ ३८१ ॥

व्यधबन्धश्रमात्यध्वभंगभ्रंशसमुद्भवान्। ज्वरानुपाचरेत्पूर्वक्षीरमांसरसौदनैः ॥ व्यध ताड़नंकर्णादिवेधोवा । भंगछेदभेदादिकःभ्रंशोवृक्षादितःपतनम् । अध्वश्रान्तेषुवाभ्यंग दिवानिद्राञ्चकारयेत् । औषधीगन्धविषजौविषपित्तप्रशमनैः ॥ जयेत्कषायैर्मतिमान्सर्व गन्धकृतैर्भिषक् । सर्वगन्धमाह । चातुर्जातककर्पूरकंकोलागुरुकुंकुमम् । लवंगसहितं चैवसर्वगन्धंविनिर्दिशेत् ॥ ३८२ ॥

व्यध (ताड़ना अथवा कानआदिका छिदवाना) बन्धन श्रम बहुत मार्गचलना भंग (छेदनभेदनादिक) और वृक्षादि पतनके द्वारा उत्पन्न हुए ज्वरमें पहले दूध और मांस रसयुक्त भातके द्वारा चिकित्सा करे मार्ग चलने के द्वारा उत्पन्न हुए ज्वर में तैलादि मर्दन और दिन में शयन कराना चाहिये औषधियों के सूंघने से और विष के द्वारा उत्पन्नहुए ज्वर में विष तथा पित्तनाशक कषाय और सर्वगंधके क्वाथके द्वारा चिकित्सा करना चाहिये दालचीनी इलायची तेजपात नागकेशर कपूर कंकोल अगर केशर और लौंग यह सब सर्व गन्ध कहातीहै ॥ ३८२ ॥

क्रोधजेपित्तजित्कार्य्यन्धार्य्यन्सद्वाक्यमेवच । आश्वासेनेष्टलाभेनवायोः प्रशमनेन च । हर्षैणैश्चशमंयान्तिकामक्रोधभयज्वराः । कामैरथमनोज्ञैश्चपित्तघ्नैश्चाप्युपक्रमैः ॥ सद्वाक्यैश्चशमंयातिज्वरःक्रोधसमुत्थितः (कामैःकामविषयैः) मनोघ्नैःधिक्कारादिभिर्भयजनकवचनैर्वा । कामात्क्रोधज्वरोनश्येत्क्रोधात्कामज्वरस्तथा । घातिताभ्यामुभाभ्यां चकामक्रोधज्वरक्षयः॥घातिताभ्यामुभाभ्याम्मनसिनिगृहीताभ्यांकामक्रोधाभ्याम् ३८३॥

क्रोधज्वर में पित्त नाशक चिकित्सा धैर्य्य और श्रेष्ठ बचन हितकारी होते हैं आश्वास वाक्य (तसल्ली) बांछित वस्तुका मिलना वायुकी शान्ति और हर्षसे काम क्रोध तथा भयजनितज्वर शान्त होते हैं कामके विषय धिक्कार अथवा भयकारी बचन पित्तघ्न चिकित्सा और सद्वाक्यों के द्वारा क्रोध ज्वरशान्त होता है कामके द्वारा क्रोध ज्वर तथा क्रोध के द्वारा कामज्वर नष्टहोता है और इनदोनों को चित्त में रोकने से दोनों प्रकारके ज्वरों का नाशहोता है ॥ ३८३ ॥

भूतविद्यासमुद्दिष्टैर्बन्धावेशनताड़नैः । जयेद्भूताभिषंगोत्थंमनःशान्त्यैचमानसम् ॥ ताडनैरित्यत्रस्थानेकेचित्पूजनैरितिपठन्ति । सहदेवायामूलंविधिनाकण्ठेनिबद्धमपहरति । एकद्वित्रिचतुर्भिर्दिवसैर्भूतज्वरंपुंसाम् ॥ अभिचाराभिशापोत्थौज्वरौहोमादिभिर्जयेत् । दानस्वस्त्ययनातिथ्यैरुत्पातग्रहदुष्टिजौ ॥ इत्यागन्तुज्वराधिकारः ॥ ३८४ ॥

भूत बिद्या में कहेहुए बंधन आवेशन और ताड़नके द्वारा भूतके आवेश से उत्पन्न होनेवालाज्वर नाश होताहै यहां ताड़न के स्थान में कोई २ पूजन यहपाठ कहते हैं मनकी प्रसन्नता से मानसी ज्वर का नाशहोता है सहदेई की जड़ बिधिपूर्बक गले में बाँधने से एक दो तीन तथा चारदिन में भूतज्वर का नाश होताहै अभिचार तथा अभिशाप से उत्पन्नहुये ज्वरको होमादिकों से शान्तकरना

चाहिये और उत्पात तथा ग्रह पीड़ासे उत्पन्नहुए ज्वरको दान स्वस्त्ययन तथा अतिथि सत्कार के द्वारा शान्तकरे इति आगन्तु ज्वराधिकारः ॥ ३८४ ॥

अथविषमज्वराधिकारमाह । तत्रविषमज्वरस्यनिदानकथनपूर्विकांसम्प्राप्तिमाह ॥ दोषोऽल्पोऽहितसम्भूतोज्वरोत्सृष्टस्यवापुनः । धातुमन्यतमम्प्राप्यकरोतिविषमज्वरम् ॥ अयमर्थःज्वरोत्सृष्टस्यज्वरेणत्यक्तस्य । सन्निकृष्टहेतुमाह । दोषःअल्पःज्वरमुक्तः स्वल्पोऽपिविप्रकृष्टहेतुमाह । अहितमाहारविहारादितेनसम्भूतः । सम्पूर्णोजातःअन्यतमन्धातुरसरक्तादिकम् । प्राप्यदूषयित्वापुनर्विषमज्वरंकरोति । ज्वरोत्सृष्टस्यचेतिवाशब्देनेतिवाध्यते । प्रथमतोविषमज्वरोभवति । यतउक्तम् । आरम्भाद्विषमोयस्तु ३८५॥

विषमज्वरका अधिकार विषमज्वरकी निदान समेत संप्राप्ति ॥

छूटेहुए ज्वरवाले मनुष्य का थोड़ा भी दोष अहितकारी आहार विहारादिकों के द्वारा पूराहोकर रस रक्त आदिक किसी धातुमें प्राप्तहोकर उसको दूषित करता हुआ फिर विषमज्वरको उत्पन्न करता है यहां वा शब्द से यह मालूम होताहै कि पहले भी विषम ज्वरहोता है क्योंकि कहागयाहै कि आरंभ से जो विषम होताहै इत्यादि ॥ ३८५ ॥

रसादिकन्धातुन्दूषयित्वाविषमज्वरंकरोति । इत्यपेक्षायामाह । संततंरसरक्तस्थःसततंरक्तधातुगः । दोषःकृद्दोज्वरस्पुंसांसोऽन्येद्युःपिशिताश्रितः ॥मेदोगतस्तृतीयेऽह्निअस्थिमज्जागतःपुनः । कुर्य्याच्चातुर्थिकंघोरमन्तकंरोगसंकरम् ॥ अंतकमिवमारकत्वात् ३८६॥

रसआदिक धातुओंको दूषित करके विषमज्वर उत्पन्न होताहै इसलिये कहते हैं कि संतत ज्वर रसतथा रक्त धातु में स्थित सतत ज्वर रक्त धातु में स्थित अन्येद्युष्क ज्वर मांसमें स्थित तृतीयक ज्वर मेद धातु में स्थित और चातुर्थिक नाम विषमज्वर अस्थि तथा मज्जा में स्थित दोषोंसे उत्पन्न होताहै अत्यन्त घोर चातुर्थिक ज्वर यमराज के समान मारनेवाला और अनेक रोगोंका उत्पन्नकरनेवाला होताहै ॥ ३८६॥ अथ विषमज्वरस्यसामान्यंलक्षणमाह ॥

यःस्यादनियतात्कालात्शीतोष्णाभ्यांतथैवच ॥ वेगतश्चापिविषमोज्वरःसविषमः स्मृतः । यस्त्वनियतात्कालात्स्यादित्यस्यायमर्थः ॥ यथावातिकोज्वरःसप्तदिनानिपैत्तिकोदशदिनानिश्लैष्मिकोद्वादशदिनानिदोषाणांप्राबल्ये वातिकश्चतुर्दशदिनानिपैत्तिकोविंशतिदिनानिश्लैष्मिकश्चतु विंशतिदिनानिस्यात्तथाविषमज्वरोऽनियतंकालंव्याप्यनस्यादित्यर्थः । शीतोष्णाभ्यांगुणाभ्यामपितथास्यात् ॥ वेगतश्चापिविषमःकदाचिदतिवेगवान् । कदाचिच्छान्तवेगः ॥ ३८७ ॥

विषमज्वरका सामान्य लक्षण ॥

जिस ज्वरका समय निश्चित न हो शीत तथा उष्णका नियम न हो और कभी अधिक कभी स्वल्प वेगहो उसको विषमज्वर कहतेहैं जिसका समय निश्चित न हो इसका यह तात्पर्य्यहै कि जैसे वातज्वर सात दिन पित्तज्वर दश दिन और कफज्वर बारह दिन तथा दोषोंकी प्रबलता होने पर वातज्वर चौदहदिन पित्तज्वर बीसदिन और कफज्वर चौबीसदिन रहताहै इसप्रकार विषमज्वर का कोईकाल निश्चित नहींहै ॥ ३८७ ॥

विषमज्वरस्यभेदानाह ॥

सन्ततःसततोऽन्येद्युस्तृतीयकचतुर्थकौ ॥ ३८८ ॥

विषमज्वरके भेद ॥

सन्तत सतत अन्येद्युष्क तृतीयक और चातुर्थिक यह पांच विषमज्वरके भेदहैं ॥ ३८८ ॥

तत्रसन्ततस्यलक्षणमाह ॥

सप्ताहंवादशाहंवाद्वादशाहमथापिवा । सन्तत्यायोऽविसर्गःस्यात्सन्ततःसनिगद्यते विकल्पोवातिकादिभेदात् । सन्तत्यानैरन्तर्य्येण अविसर्गोअपरित्यागनिनुमुक्तानुवन्धित्वंविषमत्वमितिविषमलक्षणम् ॥ तदत्रनघटतइतिकथमयंविषमेषुपठ्यते । घटत एवेतिनदोषः ॥ यतउक्तंचरकेण । विसर्गंद्वादशेकृत्वादिवसेऽव्यक्तलक्षणम् ॥ दुर्लभोपशमःकालंदीर्घमेवानुवर्त्ततइति । यत्तुखरनादेनोक्तम् ॥ ज्वराःपञ्चतुयेप्रोक्ताःपूर्वंसन्ततकादयः । चत्वारःसन्ततंहित्वाज्ञेयास्तेविषमज्वराइति॥तच्चिरेणत्यागाभिप्रायेण ३८९ ॥

संततज्वरका लक्षण ॥

सात दिन दश दिन अथवा बारह दिनतक निरन्तर जो ज्वर रहताहै उसको संतत कहतेहैं सात दिन आदिकी कल्पना वातादि दोषोंके भेदसे है अब यह सन्देह होताहै कि मुक्तानुवन्धित्व (छोड़कर फिर आजाना) ही विषमज्वरका लक्षणहै परन्तु संततज्वरमें यह बात नहींहै तो इसको विषमज्वरोंमें क्यों कहा इसका उत्तर यह है कि संततज्वरमें मुक्तानुवंधित्वहै इसलिये कोई दोष नहीं है क्योंकि चरकने कहाहै कि संततज्वर बारहवें दिन छूटकर अप्रकट लक्षणों से युक्त बहुत कालतक रहताहै इसके शांतहोनेका कालदुर्लभहै और खरनादने जो कहाहै कि जो संतत आदिक पांचज्वर पहलेकहेगयेहैं उनमेंसे संततको छोड़कर बाकीके चारविषमज्वर कहलातेहैं इसका अभिप्रायकेवल ज्वरके बहुतकालतक छूटनेहीपर है ॥ ३८९ ॥

सततलक्षणमाह ॥

अहोरात्रेसततकोद्वौकालावनुवर्तते । द्वौकालौअहन्येककालंरात्रावेककालम् ॥ यतो दोषाणामहोरात्रेप्रत्येकंद्वौद्वौप्रकोपकालौ । यतउक्तंवाग्भटेनवयोऽहोरात्रिभुक्तानामन्तमध्यादिगाःक्रमादिति ॥ ३९० ॥ सततका लक्षण ॥

जो ज्वर दिन रात्रिमें दोबार आताहै उसको सतत कहतेहैं दिन रात्रि में दोबार आताहै इसका यह अर्थहै कि एकबार दिनमें आताहै और एकबार रात्रिमें आताहै क्योंकि दिनरात्रि में हरएक दोष के कुपितहोनेके दो२ कालहैं और ऐसाही बाग्भटने कहाहै कि अवस्था दिनरात्रि और भोजन इनके अन्तमध्य और आदिमें क्रमसे वातपित्त और कफकुपित होतेहैं ॥ ३९० ॥

अन्येद्युष्कलक्षणमाह ॥

अन्येद्युष्कस्त्वहोरात्रादेककालंप्रवर्त्तते ॥ एककालंदोषापेक्षयाएककालमपि । द्वितीयंप्रथमकालेह्येवदोषास्थिते ॥ ३९१ ॥

अन्येद्युष्कका लक्षण ॥

जो ज्वर रात्रिदिनमें एकबार आताहै उसको अन्येद्युष्क कहतेहैं यहां एकबार दोषोंकी अपेक्षासे

कहागयाहै और एकबारभी दूसरेकालमें जाननाचाहिये क्योंकि पहलेकालमें दोष हृदयमें रहताहै ३६१॥

तृतीयकचतुर्थकयोर्लक्षणमाह ॥

तृतीयकस्तृतीयेऽन्हिचतुर्थेऽन्हिचतुर्थकः । तृतीयेऽन्हिइत्यागमनदिनंगृहीत्वा ॥ यतउक्तम्दिनमेकमतिक्रम्ययोभवेत्सतृतीयकः। दिनद्वयन्त्वातिक्रम्ययःस्यात्सहिचतुर्थकइतिअत्राहसुश्रुतः ॥ कफस्थानविभागेनयथासंख्यंकरोतिहि । सततान्येद्युःतृतीयचतुर्थकप्रलेपकान् ॥ अहोरात्रादहोरात्रंस्थानात्स्थानंप्रपद्यते। दोषआमाशयंप्राप्यकरोतिविषमज्वरम् ॥ अयमर्थःआमाशयोरःकण्ठशिरःसन्धयःपञ्चकफस्थानानिएषुतिष्ठन्दोषायथासंख्यंसततादीन्करोति । तत्रआमाशयेस्थितोदोषःसततंकरोतिद्वौकालौ ॥ अहोरात्रेकालद्वयेदोषप्रकोपात्हृदयेस्थितोदोषआमाशयमागत्यअन्येद्युष्कंकरोति। एककालंनैकदेकस्मिन्नेवाहोरात्रेदोषआमाशयमागत्यअन्येद्युष्कंकरोति ॥ तत्रद्वौदोषप्रकोपकालौएकस्मिन्कालेहृदयेतिष्ठत्यपरस्मिन्नामाशयइति । कण्ठेस्थितोदोषोऽहोरात्रात्हृदयमायाति ॥ तृतीयेदिनेआमाशयमागत्यस्वप्रकोपकालेतृतीयकंज्वरंकरोति। एककालंनतुद्वौकालौस्वभावात् ॥ एवमेवशिरस्थितोदोषोअहोरात्रात्कण्ठमायाति । ततःपुनरहोरात्रात्हृदयमायातिचतुर्थेदिने । आमाशयमागत्यस्वप्रकोपकालेचतुर्थकंज्वरंकरोति। एककालन्नतुद्वौकालौस्वभावादेव ॥ ननुदोषस्यागमनंक्रमेणनिजस्थानगमनक्रमात्कथंतृतीयचतुर्थदिवसयोर्ज्वरागमनम् । उच्यतेदोषोहिप्रकोपसमयेवेगंपरित्यज्यलाघवात्स्वस्थानन्तुवेगादिनएवयाति ॥ यतआहदोषःप्रकोपकालेहिवेगवत्वेनलाघवात्। वेगवासरएवायंस्वस्थानमधिगच्छति ॥ सन्धिषुस्थितः प्रलेपकंकरोति। सन्धयश्चामाशयेऽपिसन्तितेषुस्थितःप्रलेपकंसर्व्वदाकरोति ॥ ३६२ ॥

तृतीयक और चातुर्थिकके लक्षण ॥

तीसरे दिन अर्थात एक दिन बीच में छोड़कर जो ज्वर आताहै उसको तृतीयक अर्थात् एकतरा और चौथे दिन अर्थात् दोदिनका अन्तर देकर जो ज्वर आताहै उसे चातुर्थिक अर्थात् तिजारी कहतेहैं तीसरा दिन ज्वर आनेके दिन को लेकर समझना चाहिये क्योंकि कहा गयाहै कि एक दिन का अन्तर देकर जो ज्वर आताहै वह तृतीयक और दोदिन का अन्तर देकर जो आताहै वह चातुर्थिक कहाताहै यहांपर सुश्रुत ने कहाहै कि दोष एक रात दिन में एक स्थानसे दूसरे स्थान में जाताहै इस प्रकार क्रमसे कफ के स्थान के बिभागोंके अनुसार आमाशय में प्राप्त होकर क्रम पूर्वक सतत अन्येद्युष्क तृतीयक चातुर्थिक और प्रलेपक नाम बिषम ज्वरोंको करताहै इसका यह तात्पर्य है कि आमाशय हृदय कंठ शिर और सन्धि समूह यह पांच कफके स्थानहैं दोष इनइन स्थानोंमें स्थितहोकर क्रमसे सतत आदि ज्वरोंको करताहै इनमें से आमाशय में स्थित दोष दिन रात्रि में दोबार सतत ज्वर को उत्पन्न करता है क्योंकि दिन रात्रि में दोषोंके कुपित होने के दोकाल हैं हृदय में स्थित दोष आमाशय में आकर अन्येद्युष्क ज्वर को दिन रात्रि में एकबार उत्पन्न करता है क्योंकि दिन रात्रि में दोषके कुपित होनेके दोकाल हैं उनमें से एक काल में हृदय में रहताहै और दूसरे काल में

आमाशय में जाकर ज्वर को उत्पन्न करताहै कंठ में स्थित दोष एक रात्रि दिन में हृदय में आता है और तीसरे दिन आमाशय में जाकर अपने कोप के समय एक बार तृतीयक ज्वर को उत्पन्न करता है दो बार नहीं उत्पन्न करने में स्वभाव ही कारण है इसी प्रकार शिर में स्थित दोष एक रात्रि दिनमें कण्ठमें आताहै इसके पीछे एक रात्रि दिनमें हृदयमें आताहै फिर चौथेदिन आमाशयमें आकर अपने कोपके समय एक बार चातुर्थिक ज्वर को उत्पन्न करताहै दोबारस्वभाव ही से नहीं उत्पन्न करताहै अब यह सन्देह होताहै कि दोष जितने दिनमें आमाशयमें जाताहै अपने स्थानमें जाने के लिये उतनाही समय चाहिये तो तीसरे और चौथे दिन ज्वर कैसे आताहै इसका उत्तर यहहै किदोष कोपके समय बेगको छोड़कर हलके होने के कारण उसी दिन अपने स्थानमें चलाजाताहै क्योंकि कहागयाहै कि दोष कोप के समय वेगवान् होकर हलके होनेके कारण बेगहोने केही दिन अपने स्थान को चला जाता है संधियों में स्थित दोष प्रलेपकको उत्पन्न करताहै और संधि आमाशय में भी हैं इसलिये संधियों में स्थित दोष निरन्तर प्रलेपक ज्वर को करताहै ॥ ३९२ ॥

निवृत्तःपुनरायातिविषमोनियतेदिने । स्वभावःकारणंतत्रमन्यंतेमुनिपुङ्गवाः ॥ स्वभावस्यकारणत्वेकफस्थानविभागनिरपेक्षाच्चतुर्थकादिविपर्य्ययाअपिज्वराः स्वस्वकाले प्रभवंति । अधिश्रितेयथाभूमिंबीजंकालेप्ररोहति ॥ अधिश्रितेतथाधातून्दोषःकालेप्रकुप्यति । सुश्रुतोऽप्याह । सचापिविषमोदेहंनकदाचित्प्रमुञ्चतिग्लानिगौरवकार्श्येभ्यःसयस्मान्नप्रमुच्यते । वेगेतुसमतिक्रांतेगतोऽयमितिलक्ष्यते ॥ धात्वंतरेषुलीनत्वात्सौक्ष्म्यान्नैवोपलभ्यते ॥ ३९३ ॥

मुनिलोगोंने कहाहै कि निवृत्त हुआ विषमज्वर नियत दिनमें फिर आजाताहै उसमें स्वभावही कारणहै स्वभावके कारण होनेसे कफके स्थानके विभागोंकी अपेक्षा न करके अपने२ समयमें ज्वर चातुर्थिक आदिके उलटेपनसे भी आजातेहैं जैसे पृथ्वीमें बोयाहुआ बीज अपने समयपर उगता है उसीप्रकार धातुओंमें स्थित दोष समयपर कुपित होताहै और सुश्रुतने भी कहाहै कि विषमज्वर शरीरको कभी नहीं छोड़ता क्योंकि ग्लानि शरीरका भारीपन और दुर्बलता यह सब बनेरहते हैं और बेगके चलेजानेपर ज्वरचलागया सा मालूम होताहै परंतु धातुओंके बीचमें लीन होनेकेकारण सूक्ष्मतासे जाना नहींजाताहै ॥ ३९३ ॥

द्विदोषोल्वणस्यतृतीयकस्यलक्षणमाह ॥

कफपित्तात्त्रिकंग्राहीपृष्ठाद्वातकफात्मकः । वातपित्ताच्छिरोग्राहीत्रिविधःस्यात्तृतीयकः ॥ त्रिकग्राहीवेदनयात्रिकंगृह्णातीत्यर्थः । वातकफात्मकःपृष्ठात्ल्यब्लोपेपृष्ठंप्राप्य भवतीत्यर्थःल्यब्लोपेकर्म्मण्यधिकरणेचेतिसूत्रेणपञ्चमी ॥ ३९४ ॥

अधिक दो दोषवाले तृतीयकज्वरके लक्षण ॥

जो तृतीयकज्वर कफ पित्तसे उत्पन्न होताहै उसमें रीढ़के नीचेकी हड्डियोंमें पीड़ा होतीहै जो तृतीयकज्वर बात कफसे उत्पन्न होताहै उसमें पीठमें पीड़ा होतीहै और जो तृतीयकज्वर बातपित्त से उत्पन्न होताहै उसमें शिरकी पीड़ा होतीहै इसलिये तीनप्रकारका तृतीयकज्वर होताहै ॥ ३९४

कफोल्वणस्यवातोल्वणस्यचतुर्थकस्यलक्षणमाह ॥

चातुर्थिकोदर्शयतिस्वभावंद्विविधंज्वरः। जङ्घाभ्यांश्लैष्मिकःपूर्वंशिरसोऽनिलसम्भवः श्लैष्मिकःश्लेष्मोल्वणःतथाअनिलसंभवोवातोल्वणः नन्वस्तिपैत्तिकोपिचातुर्थिकःयतआहनागभर्तृतंत्रेऊर्द्ध्वकायंतुयःपूर्वंगृह्णातिसोनिलात्मकःमध्यकायंतुगृह्णातिपूर्वंयस्तुसपित्तजःपूर्वंगृह्णात्यधःकायंश्लेष्मवृद्धश्चतुर्थकः किंतुप्रायेणकफवाताभ्यांभवतितस्मात्पैत्तिकश्चतुर्थकश्चरकादिभिर्नोक्तः ॥ ३९५ ॥

अधिककफऔर अधिकबातवालेचातुर्थिक ज्वरका लक्षण ॥

चातुर्थिक ज्वर दो प्रकारके स्वभावोंको दिखाताहै उनमेंसे अधिक कफवाला पिंडलियोंसे चढ़ता है और अधिक बातवाला शिरसे चढ़ता है चातुर्थिकज्वर पैत्तिकभी होताहै क्योंकि नागभर्तृ तंत्रमें कहा हैकि बातवाला चातुर्थिकज्वर पहले शिरसे चढ़ता है पित्तवाला चातुर्थिकज्वर शरीरके मध्यसे चढ़ता है और कफवाला चातुर्थिकज्वर शरीरके नीचेसे चढ़ताहै परन्तु प्रायः चातुर्थिकज्वर कफ और बातसे उत्पन्न होताहै इसलिये चरक आदिकोंने पित्तसेहुए चातुर्थिक ज्वरको नहीं कहाहै ॥ ३९५ ॥

संततादीनांत्रिदोषजत्वम् । यतउक्तंचरके प्रायशःसन्निपातेनपञ्चस्युर्विषमज्वराइति ॥ प्रायशोग्रहणादेकदोषजाद्विदोषजाअपिभवंतीति । जैय्यटःउल्वणश्लेमवातः पूर्वंप्रथमंजङ्घाभ्याम् ॥ व्यथयाजंघेव्याप्यपश्चात्सकलंशरीरंव्याप्नोति । एवमुल्वणवातजातःशिरसःपूर्वंव्यथयाशिरोव्याप्यसकलंशरीरंव्याप्नोतीत्यर्थः । विषमज्वरएवान्यश्चातुर्थिकविपर्य्ययः॥ अस्थिमज्जागतोदोषश्चतुर्थकविपर्य्ययः। जायतेभिषजाज्ञेयोविषमज्वरएवसः ॥ अन्यःसंततादिपञ्चकादपरःचातुर्थिकःविपर्य्ययाख्योज्वरःसोऽपिविषमज्वरएववैद्येनज्ञातव्यःसकिंधातुस्थइत्यपेक्षायामाह। अस्थीत्यादि॥ ३९६ ॥

संतत आदिक ज्वरोंका त्रिदोषजपन कहाजाता है चरकने कहाहै कि प्रायः पांचों विषमज्वर सन्निपातसे होतेहैं जैयटने कहाहै कि प्रायः शब्दसे यह मालूम होताहै कि एकदोष और दो दोषसे भी विषमज्वर होताहै अधिक कफवाला चातुर्थिकज्वर पहले पीड़ासे पिंडलियोंको व्याप्तकरके पीछे सम्पूर्ण शरीरमें व्याप्तहोताहै इसीप्रकार अधिक बातसे उत्पन्नहुआ चातुर्थिकज्वर पहले पीड़ासे शिरको व्याप्तकरके सम्पूर्ण शरीरको व्याप्तकरता है संतत आदि पांचप्रकारके विषमज्वरोंसे भिन्न चातुर्थिक विपर्य्यय नामज्वर विषमज्वरों मेंही जानना चाहिये यह अस्थि और मज्जामें स्थित दोनोंसे उत्पन्न होताहै ॥ ३९६ ॥

तस्यचातुर्थिकविपर्य्ययस्यलक्षणमाह ॥

समध्येज्वरयत्यह्नीआद्यन्तेचविमुञ्चति। चतुर्थकविपर्य्ययःइत्युपलक्षणम् । सन्ततादिविपर्य्ययोऽपिवोद्धव्यः । यथाअहोरात्रेद्वौकालौमुञ्चतिशेषंसर्वमहोरात्रंतिष्ठतीतिसततविपर्य्ययः । अहोरात्रेएककालंमुञ्चतिशेषंसर्व्वमहोरात्रंतिष्ठतिअन्येद्युष्कविपर्य्ययः मध्येएकंदिनंज्वरंजनयति । आदावन्त्येचमुञ्चतीतिमध्येएकंदिनंज्वरयतिआदावन्त्येचदिनेमुञ्चतीतितृतीयकविपर्य्ययः ॥ ३९७ ॥

चातुर्थिक बिपर्य्यय के लक्षण ॥

चातुर्थिक बिपर्य्यय ज्वर मध्यमें दोदिन रहताहै और आदिअन्तके दोदिन नहीं रहता अर्थात् दो दिन ज्वर रहता है और बीचमें एक दिननहींआता चातुर्थिक बिपर्य्यय यह उपलक्षण मात्रहै इस्से संततादिक बिपर्य्यय भी जानना चाहिये जैसे जो ज्वर रात्रिदिनमें दो बार उतरे और बाकी रात्रि दिन चढ़ारहै वहसतत बिपर्य्यय कहलाताहै जो ज्वररात्रि दिनमें एकसमय उतरे और बाकी संपूर्ण रात्रि दिन चढ़ारहे वह अन्येद्युष्क बिपर्य्यय कहलाता है जो ज्वर मध्यमें एक दिनहोवे और आदि अन्तके दिनमें उतर जाय उसको तृतीयक बिपर्य्यय कहते हैं ॥ ३९७ ॥

एतेविषमज्वरोपलक्षकाःअन्येरात्रिज्वरादयोऽपिविषमज्वरावोद्धव्याः यथासमौ वातकफौयस्यक्षीणपित्तस्यदेहिनः ॥ रात्रौप्रायोज्वरस्तस्यदिवाहीनकफस्यतु । प्रायःबा हुल्येन ॥ ३९८ ॥

यह बिषमज्वर उपलक्षण मात्र है इस्से अन्यरात्रि ज्वरादिक भी बिषमज्वर जानने चाहियेजैसे जिस मनुष्यके कफबात समहो तथा पित्त क्षीणहोवे उसको प्रायः रात्रिमें ज्वरआताहै और जिसका कफक्षीण होवे उसको बहुधादिनमें ज्वर आता है ॥ ३९८ ॥

सन्ततादीनांशीतपूर्व्वत्वेदाहपूर्व्वत्वेचहेतुमाह ॥

त्वक्स्थौश्लेष्मानिलौशीतमादौजनयतोज्वरम् । तयोःप्रशान्तयोःपित्तमन्तर्दाहंकरोतिच ॥ शीतंशीतसहितम् । प्रशान्तयोःप्रशान्तवेगयोःअन्तःअभ्यन्तरे । करोत्यादौतथा पित्तंत्वक्स्थंदाहमतीवच।तस्मिन्प्रशान्तेत्वितरौकुरुतःशीतमन्ततः॥अन्ततःहस्तपादा दितःशीतदाहादिज्वरयोःत्रिदोषजत्वमाह।द्वावेतौदाहशीतादिज्वरौसंसर्गजौस्मृतौ।दाह पुर्व्वस्तयोःकष्टःसुखसाध्यतमोऽपरः ॥ संसर्गजौसान्निपातिकौ । कष्टःकष्टसाध्यः ॥३९९॥

संततादि ज्वरोंके पहले शीत तथादाह होनेका कारण ॥

कफ और बात त्वचा में स्थितहोकर ज्वरके आदि में शीतको उत्पन्न करते हैं और उनके बेगके शान्त होजाने पर पित्तभीतर दाहकोउत्पन्न करताहै त्वचामें स्थित पित्तज्वर पहले अत्यन्त दाह को उत्पन्नकरताहै और उसकेबेगके शान्तहोजानेपर कफ और बात हाथपैरोंमें शीत उत्पन्न करते हैं दाह पूर्व और शीतपूर्व यह दोनोंज्वर सन्निपातज होतेहैं इनमेंसे दाहपूर्व कष्टसाध्य और शीतपूर्व अत्यन्त सुखसाध्य होताहै ॥ ३९९ ॥

बिषमज्वरविशेषमाह ॥

विदग्धेऽन्नरसेदेहेश्लेष्मपित्तेव्यवस्थिते । तेनार्द्धशीतलंदेहमर्द्धमुष्णंप्रजायते॥अन्न रसेविदग्धे । आहारजेरसेदुष्टेदेहेश्लेष्मपित्तेव्यवस्थितेदुष्टेस्थिते । तेनहेतुनाशीतलंकफे नउष्णंपित्तेनअर्द्धत्वंचार्द्धनारीश्वराकारेणनरसिंहाकारेणवा।कायेदुष्टंयदापित्तंश्लेष्माचा न्तेव्यवस्थितः । तेनोष्णत्वंसरीरस्यशीतत्वंहस्तपादयोः ।(अन्तेहस्तपादादौ) कायेश्ले ष्मायदादुष्टःपित्तंचान्तेव्यवस्थितम् । शीतत्वंतेनगात्रेस्यादुष्णत्वंहस्तपादयोः ॥४०० ॥

विषमज्वरकी विशेषता ॥

विषमज्वरमें आहारके रसके दूषित होजानेपर और कफ तथा पित्तके दूषित होजानेपर आधा

शरीर कफके द्वारा शीतल और आधा शरीर पित्तके द्वारा उष्ण होताहै आधा शरीर शीतल और आधा शरीर उष्ण अर्द्धनारी श्वराकारसे अथवा नरसिंहाकारसे होताहै जब दोषयुक्त पित्त शरीर में और दोषयुक्त कफ हाथ पैरोंमें स्थित होताहै तब शरीर उष्ण और हाथ पैर शीतल होजातेहैं जब दोषयुक्त कफ शरीरमें और दोषयुक्त पित्त हाथपैरोंमें स्थितहोताहै उसरोगीका शरीर शीतल और हाथपैर उष्ण होतेहैं ॥ ४०० ॥

विषमज्वरविशेषस्यप्रलेपकस्यलक्षणमाह ॥

प्रलिपन्निवगात्राणिघर्मेणगौरवेणच। मन्दज्वरविलेपीचसशीतःस्यात्प्रलेपकः॥ गौरवेणउपलक्षितः । मन्दज्वरविलेपीमन्दवेगस्यसदासम्बन्धोऽस्यास्तीतिमन्दज्वरविलेपी। अयंविषमज्वरः। तथाचसुश्रुतः । प्रलेपकाख्योविषमःप्रायशःक्लेशशोषिणाम् ॥ ज्वराश्चविषमाःसर्व्वेप्रायःक्लेशायशोषिणामिति ॥ ४०१ ॥

विषमज्वर विशेष प्रलेपकके लक्षण ॥

जिसज्वरमें शरीरभारी होवे अंगोंमें पसीनाभरा हुआ सामालूम होवे और ज्वर मन्दवेगसे सदैव बनारहे तथा शीतलगे उसको प्रलेपक कहतेहैं यह विषमज्वर है और ऐसाही सुश्रुतने कहा है कि प्रलेपक नाम विषमज्वर प्रायः क्लेशकारी राजयक्ष्मावाले के होताहै और प्रायः सम्पूर्ण विषमज्वर राजयक्ष्मा वालेको क्लेशकारी होते हैं ॥ ४०१ ॥

अथविषमज्वराणांसामान्यचिकित्सा ॥

ज्वराश्चविषमाःसर्व्वेसन्निपातसमुद्भवाः । यथोल्वणस्यदोषस्यतेषुकार्य्यंचिकित्सितम्॥ विषमेष्वपिकर्त्तव्यमूर्द्ध्वञ्चाधश्चशोधनम्।स्निग्धोष्णैरन्नपानैश्चशमयेद्विषमज्वरम् ॥ कालिंगकःपटोलस्यपत्रंकटुकरोहिणी । पटोलंसारिवामुस्तंपाठाकटुकरोहिणी ॥ निम्बःपटोलंत्रिफलामृद्वीकामुस्तवत्सकौ । किराततिक्तममृताचंदनंविश्वभेषजम् ॥ गुडूच्यामलकंमुस्तमर्द्धश्लोकसमापनाः। कषायाशमयंत्याशुपञ्चपञ्चविधंज्वरम्॥ कालिंगकःइंद्रयवःवत्सकःकुटजः। चंदनमत्ररक्तचंदनम्। कषायाःपञ्चपञ्चविधंसंततसततान्येद्युष्कतृतीयकचतुर्थकरूपम् ॥ ४०२ ॥

बिषमज्वरों की सामान्य चिकित्सा ॥

संपूर्ण बिषमज्वर त्रिदोषसे उत्पन्न होतेहैं उनमें से जिस दोषकी अधिकता देखे उसकी चिकित्सा करे बिषमज्वर में बमन बिरेचनादिके द्वारा शोधन करके स्निग्ध और उष्ण अन्न पानके द्वारा बिषमज्वर को शान्त करना चाहिये आगे कहे हुए पांच क्वाथ क्रमसे पांच प्रकारके बिषमज्वरों को शान्त करतेहैं इन्द्रजौ पर्व्वलके पत्तेऔर कुटकी१ पर्व्वल सारिवा (अनन्तमूल) नागरमोथा पाढ़ा और कुटकी २ नींब पर्व्वल त्रिफला दाखमोथा और कुरैयाकीछाल ३ चिरायता गिलोय लालचन्दन और सोंठ ४ गिलोय आंवला और मोथा ५ यहपांचों क्वाथक्रमसे संतत सतत अन्येद्युष्क तृतीयक और चातुर्थिक ज्वरको शान्तकरते हैं ॥ ४०२ ॥

महाबलामूलमहौषधाभ्यांक्वाथोनिहन्याद्विषमज्वरंहि। शीतंसकम्पंपरिदाहयुक्तंविनाशयेत्द्वित्रिदिनप्रयोगात्।मुस्तामलकगुडूचीविश्वौषधकण्टकारिका। क्वाथःपीतःसकणा

चूर्णःसमधुर्विषमज्वरंहंति ॥ तिलतैललवणयुक्तःकल्कोलशुनस्यसेवितःप्रातःविषमज्व रमपहरेत्वातव्याधीनशेषांश्च ॥ कालाजाजीतुसगुडाविषमज्वरनाशिनी । मधुनाचाभ यालीढाहंत्याशुविषमज्वरान् ॥ कालाजाजीतुमंगरैलाइतिच । साचकिंचिद्भृष्टागुड़ तुल्याकर्षमिताभक्षणीया। पीतोमरिचचूर्णेनतुलसीपत्रजोरसः । द्रोणपुष्पीरसोवापीनि हंतिविषमज्वरान् ॥ समगुडमसितंजीरकमीषन्मरिचंभक्षितंसद्यः । एकाहिकंप्रशमयेत् समरेष्विवदानवानिंद्रः ॥ शुंठीजाजीगुडंपिष्टंपीतमुष्णेनवारिणा । जीर्णमद्येनतक्रेणतीव्रं शीतज्वरंजयेत् ॥ ४०३ ॥

सहदेईकी जड़ और सोंठ इनका काढा शीतकम्प और दाहसमेत विषमज्वरको दोतीन दिनमें नष्टकरताहै मोथा आंवला गिलोय सोंठ और भटकटैया इनके काढ़ेमें पीपलका चूर्ण और सहत मिलाकर पीनेसे विषमज्वरका नाशहोता है लहसनको पीसकर तिलके तेल और सेंधोनोनके सा- थखाने से विषमज्वर और सबबातव्याधियोंका नाशहोता है कालेजीरेको भूनकर उसके बराबर गुड़ मिलाकर एकतोलेखाने से विषमज्वरका नाशहोता है सहतकेसाथ हड़चाटनेसे विषमज्वरका नाश होताहै तुलसी अथवा गोमाके पत्तोंकारस मिर्चका चूर्ण मिलाकर सेवनकरने से विषमज्वरका नाश होताहै पुरानागुड़ और कालाजीरा बराबर लेकर कुछ मिर्चमिलाके खानेसे जैसे इन्द्रदैत्योंका नाश करतेहैं उसी प्रकार यह एकाहिक ज्वरका नाशकरता है सोंठ कालाजीरा और गुड़ यहसब बराबर पीसकर उष्णजल पुरानीमद्य अथवा मट्ठेके साथ सेवन करनेसे तीव्रशीतज्वरका नाशहोताहै ४०३॥

अथसंततादीनांविशिष्टाचिकित्सा ॥

अमृतायाःशतंचूर्णंवाससापरिशोधितम् । पृथक्षोडशभागाःस्युर्गुडमाक्षिकसर्पिषा ॥ यथाग्निंभक्षयेदेतन्नरोहितमिताशनः । नास्यकश्चिद्भवेद्व्याधिर्नजरापलितंनच ॥ नज्व राःविषमानैवमोहानानिलरक्तकम् । नचनेत्रगतारोगाःपरमेतद्रसायनम् ॥ मेधाकरंत्रि दोषघ्नंप्रयोगादस्यबुद्धिमान् । जीवेद्वर्षशतंसाग्रंयथैवादितिजस्तथा ॥ इतिगुडूची मोदकः ॥ ४०४ ॥

संततादिज्वरोंकी विशेषचिकित्सा ॥

वस्त्रमें छानाहुआ गिलोयका चूर्ण १०० भा० गुड़ १६ भा० सहत १६ भा० और घी १६ भा० इनसबको एकमें मिलाकर अग्निके बलके अनुसार इसकोखाय और हितकारी तथा परिमित आहा- रखाय इसपरम रसायनके सेवनसे कोई व्याधि वृद्धावस्था बालोंका सफेदहोना विषमज्वर मोह वातरक्त और नेत्ररोगकभी भी नहीं होतेहैं यह मेधाकारी तथा त्रिदोष नाशकहै और इसके सेवनसे देवताओंके समान सौवर्षतक जीताहै इतिगुडूची मोदकः ॥ ४०४ ॥

अथान्नमाह ॥

तक्रंमांसंपयोमांसंदधिमांसमथापिवा । माषमांसञ्चभुञ्जानो मुच्यते विषमज्वरात् ॥ अग्निवेशेनोक्तम् । सुरासमण्डापानार्थेभोजनेचरणायुधाः । तित्तिराःविष्किराःपथ्याःकु क्कुटाःविषमज्वरेगृहकुक्कुटाःवनकुक्कुटाविष्किराः । वर्तिकालावाविष्किरचकोराद्याः॥४०५॥

अथअन्न ॥

मट्ठेके साथ जलके साथ अथवा दहीके साथ पाक किया गया मांस या उद्दींके साथ पाक हुआ मांस भोजन करनेसे विषम ज्वरको नाश करताहै अग्नि वेशने कहाहै कि विषम ज्वर में पान करने के लिये मांड सहित सुरा और भोजन के लिये वनका मुर्गा घरका मुर्गा तीतर और विष्किर (बटेर लवा और चकोरादिक) पक्षियोंका मांस पथ्यहै ॥ ४०५ ॥

अथसततादीनांविशिष्टाचिकित्सा ॥

त्रायन्तीकटुकानन्तासारिवाभिःश्रृतंजलं ॥ पटोलाब्दवृषातिक्तासारिवाभिःश्रृतंजलम्।सतताख्येज्वरेदेयंवातादीनांनिवृत्तये॥वृषाद्वहद्दन्ती।एरण्डवत्पत्रविटपातदलाभेदन्ती चत्राह्यासमानगुणत्वात्।पटोलेन्द्रयवानन्तापथ्यारिष्टामृताजलम् । क्वथितंतज्जलंपीतंज्वरंसततकंजयेत् ॥ अनन्तासारिवा । अरिष्टःनिम्बः । जलंबालकम् । द्राक्षापटोलनिम्बाब्दशक्राह्वत्रिफलाश्रृतम् । जलंजन्तुःपिबेच्छीघ्रमन्येद्युर्ज्वरशान्तये॥ शक्राह्वःइन्द्रयवः ४०६ ॥

सतत आदि कों की विशेष चिकित्सा ॥

त्रायमाणा कुटकी जवासा तथा सारिवा इनका काढ़ा और पर्वल मोथा बड़ीदन्ती (इसकेन होनेमें दन्ती) कुटकी तथा अनन्त मूल इनका काढ़ा सतत नाम ज्वरमें वातादिकों के निवृत्तकरने के लिये देना चाहिये पर्वल इन्द्रजौ अनन्त मूल हड़नींब गिलोय और सुगन्धबाला इनकाकाढ़ा पीनेसे सतत ज्वरका नाश होताहै दाख पर्वल नींब मोथा इन्द्रजौ और त्रिफला इनका क्वाथ पीनेसे अन्येद्युष्क ज्वरका नाश होताहै ॥ ४०६ ॥

कर्म्मसाधारणंत्यक्त्वातृतीयकचतुर्थकौ । भिषजाप्रतिकर्त्तव्यौविशेषोक्तचिकित्सितैः उशीरंचन्दनंमुस्तंगुडूचीधान्यनागरम् ॥ अम्भसाक्वथितंपेयंशर्करामधुयोजितम् । ज्वरेतृतीयकेपुंसांतृष्णादाहसमन्विते ॥ अपामार्गजटाकट्यांलोहितैःसप्ततन्तुभिः । बद्धावारेरवेस्तूर्णंज्वरंहन्तितृतीयकम् ॥ स्थिरातामलकीदारुशिवावृषमहौषधैः । सितामधुयुताक्काथश्चतुर्थकहरःपरःस्थिराशालिपर्णी ॥ तामलकीभूधात्रीशिवाहरीतकी । वृषोवासा ॥ ४०७ ॥

वैद्य तृतीयक और चातुर्थिक ज्वरमें साधारण चिकित्साको छोड़कर विशेष कहीहुई चिकित्सा करे खस चन्दन मोथा गिलोय धनियां और सोंठ इनके क्वाथ में शक्कर और सहत डालकर तृषा तथा दाह युक्त तृतीयक ज्वरमें पिये रविवार के दिन लटजीरेकी जड़ को लाल सात डोरों के द्वारा कमरमें बांधने से तृतीयक ज्वरका नाश होताहै शालि पर्णी भुइं आंवला देवदारु हड़ बांसा और सोंठ इनके काढ़ेमें शक्कर और सहत डालकर पीनेसे चातुर्थिक ज्वरका नाश होता है ॥ ४०७ ॥

अगस्तिपत्रस्यरसेननस्यंनिहन्तिचातुर्थिकमुग्रवीर्य्यम् । शिरीषपुष्पस्यनिशाद्वयस्य कल्केनवातद्घृतसंयुतेनततनस्यमिति ॥ ४०८ ॥

अगस्त के पत्तों के रसकी नास लेनेसे और सिरस के फूल हल्दी तथा दारु हल्दी के कल्क में घी डाल कर नास लेनेसे चातुर्थिक ज्वरका नाश होताहै ॥ ४०८ ॥

ज्वरस्यवेगंकालंञ्चचिन्तयन्जीर्य्यतेतुयः । तस्येष्टैरद्भुतैर्वापिविषमैर्न्नाशयेत्स्मृतम् ॥

सन्ततंविषमंचापिसततंसुचिरोत्थितम्। ज्वरंसुभोजनैःपथ्यैरिष्टैश्चसमुपाचरेत्॥ सन्ततादिविपर्य्ययाणांविषमज्वराणांचिकित्सासन्ततादीनामिवकर्त्तव्या॥ ४०९॥

जो ज्वर वाला ज्वरकेवेग और समयको ध्यान करता हुआक्षीण होताहै उसकी यादकोवांछित आश्चर्य्यकारी अथवा बिषम बस्तुओं के द्वारा नाश करनी चाहिये बहुत काल से हुए संतत और सतत नाम बिषमज्वरमें सुन्दर हितकारी और बाँछित भोजनो से चिकित्सा करे संततादि विपर्य्यय बिषम ज्वरों की चिकित्सा सन्ततादिके समान करनी चाहिये॥ ४०९॥

शीताभिभूतेपुरुषेकुर्य्याच्छीतहरींक्रियाम्। दाहाभिभूतेतुविधिंविदध्याद्दाहनाशनम्॥ आच्छादनैर्बहुतरैर्गुरुभिःकम्बलादिभिः। तूलवत्यामहाशीतंशीतादिज्वरिणोहरेत्, तूलवतीतुरजायिइतिलोके। तंस्तनाभ्यांसुपीनाभ्यांपीवरोरुर्नितम्बिनी॥ युवतीगाढमालिंगेत्तेनशीतंप्रशाम्यति। कान्तांगसंगसञ्जातंतद्वत्शीतेनिवारिते॥ प्रह्लादंचास्यविज्ञायपृथक्तांकारयेत्स्त्रियम्। ततोदाहेतुसञ्जातेपत्रैरेरण्डसम्भवैः॥ शीतलैर्द्धारितैरंगैर्दाहंतस्यापनोदयेत॥ ४१०॥

शीत युक्त पुरुष की शीत नाशक और दाह युक्त पुरुष की दाह नाशक चिकित्साकरे शीतादिज्वर वालेको बहुत शीत लगने पर रजाई और कंवल आदिक बहुत भारी ओढ़ने की चीजोंसे शीत को निवृत्तकरे मोटी जंघावाली युवती स्त्री बहुत बड़े अपने स्तनों से उस शीत वाले पुरुष को अत्यन्त आलिंगन करे इस्से शीतका नाश होताहै और इस प्रकार स्त्रीके आलिंगन से शीतके निवृत्त होने पर उसकी कामकी इच्छा हुई जानकर उस स्त्री को हटाले फिरदाह के उत्पन्न होने पर रेंडीके पत्ते और शीतल वस्तुओं को शरीर पर रखनेसे दाहको नाश करे॥ ४१०॥

तालकंशुक्तिकाचूर्णदत्तंतत्रोभयोरपि॥ नवमांशञ्चतुर्थंस्यान्मर्दयेत्कन्यकाद्रवैः। तत्तुसंशुष्कमुपलैर्वन्यैर्गजपुटेपचेत्॥ शीतंतच्चूर्णयेच्चूर्णगुञ्जामात्रंसितायुतम्। प्रभाते भक्षयेत्तेनयातिशीतज्वरक्षयम्॥ वान्तिर्भवतिकस्यापिकस्यचिन्नभवत्यपि। एकेनदिवसेनैवशीतज्वरहरंपरम्॥ मध्याह्नसमयेपथ्यंशिखरिण्योदनंतथा। इतिभूतभैरवचूर्णंशीतज्वरे ४११॥

शीतज्वरपर भूतभैरव चूर्ण॥

हरिताल और सीपका चूर्ण बराबर लेकर इन दोनोंका नवांभाग तृतिया मिलाके घीग्वार के रसमें घोटे फिर सूख जानेपर अरने कंडों में गजपुटके द्वारा पाककरे शीतल होजाने पर पीसकर शक्करके साथ एक रत्ती रसखाय तो इस्से शीतज्वरका नाश होताहै इस औषधिके खानेसे किसीको वमन होतीहै और किसीको नहींहोती यहएकही दिनमें शीतज्वरका नाशकरताहै इसमें मध्याह्नके समय शिखरन और भातका पथ्यदेना चाहिये॥ ४११॥

कायस्थानाकुलीतिक्तावयस्थापुरचोरकैः। सहदेवावचाकुष्ठैःशीतघ्नैर्धूपलेपनैः॥ एतैरेवौषधैःपिष्टैर्लवणक्षारसंयुतैः। साम्लैर्विपाचितंतैलमभ्यंगाच्छीतनाशनम्॥ कायस्था हरीतकी। नाकुलीरास्नाभेदःनाई इतिलोके। वयस्थागुडूची। पुरोगुग्गुलुः। चोरकः

भण्डीउरतदलाभेगठिवन । सहदेवावृहद्दला । क्षारोयवक्षारः । कायस्थादिधूपनंलेपनं तैलञ्च ॥ ४१२ ॥

कायस्थादि धूपनलेपन और तैल ॥

हड़ नाकुली (रासनाभेद) कुटकी गिलोय गूगल चोरक (इसके अभावमें गठिवन) सहदेई बच और कूट इनकी धूप देनेसे अथवा लेप करनेसे शीतज्वरका नाश होताहै और इन औषधियोंके साथ नोन तथा जवाखार मिलाकर कांजीके साथ पीसकर विधि पूर्वक तेल निकाले इसके मर्दन से शीतका नाश होताहै ॥ ४१२ ॥

एरण्डस्यतुपत्राणिलिप्तभूमौनिधापयेत् । दाहादिज्वरिणोदेहेतानिपत्राणिधारयेत् ॥ तेन नश्यतिदाहोऽस्यज्वरश्चैवोपशाम्यतिदाहेशान्तेयदाशैत्यंतच्चयुक्त्यानिवारयेत् ॥४१३॥

लिपीहुई पृथ्वीमें रेंड़ीके पत्तोंको रक्खे फिर दाहादि ज्वरवालेके शरीर पर इन पत्तोंको रक्खे इस्से दाह और ज्वरका नाश होताहै दाहके शान्त होजाने पर जो शीतलगे तो उसको युक्ति पूर्वक निवृत्त करे ॥ ४१३ ॥

जघनचक्रचलन्मणिमेखलासरसचन्दनचन्द्रविलेपना । वनलतेवतनुंपरिवेष्टयेत्प्रबलदाहनिपीड़ितमङ्गना ॥ चन्द्रःकर्पूरः । तदङ्गसङ्गसञ्जातशैत्यैःदाहेनिवारिते । प्रह्लादश्चास्यविज्ञायतांस्त्रीमपनयेत्पुनः ॥ ४१४ ॥

नितंबोंमें चंचल मणियोंकी मेखला वाली और चंदन तथा कपूरके लेपवाली स्त्री बनकी लताके समान अत्यन्त दाहवाले पुरुषके शरीरको आलिंगन करे स्त्रीके अंग संगसे उत्पन्न हुई शीतलताके द्वारा दाहके निवृत्त होजानेपर और उस पुरुषको कामकी इच्छा उत्पन्न होनेपर उसस्त्रीको हटाले ४१४

सुवर्च्चिकानागरकुष्ठमूर्व्वालाक्षानिशारोहितयष्टिकाभिः । सिद्धंहरेत्षड्गुणतक्रपक्वंतैलंज्वरंदाहसमन्वितंच ॥ इतिषट्तक्रतैलम् ॥ ४१५ ॥

षट् तक्र तैल ॥

सज्जी सोंठ कूट मरोड़फली लाख हल्दी और मजीठ इन औषधियोंके द्वारा छः गुने मट्ठेमें तेलको परिपाक करके मर्दन करनेसे दाह सहित ज्वरका नाश होताहै ॥ ४१५ ॥

रास्नानागरकुष्ठचन्दननिशायष्ट्याह्वकृष्णावलालाक्षासैन्धवसारिवामधुरसादेवाह्वरोहीतकैः ॥ सोशीराम्बुधिफेणरोहिषजलैस्तैलंपचेत्षड्गुणे । तक्रेतच्चजयेत्ज्वरंदृढतरंदाहादिशीतादिकम् ॥ चन्दनमत्रश्वेतम् । मधुरसामूर्वारोहीतकःरोहिणीतिलोके । रोहिषंतिरोहिततृणविशेषःजलम् । महाषट्तक्रतैलम् ॥ ४१६ ॥

महाषट् तक्रतैल ॥

रासना सोंठ कूट श्वेतचन्दन हल्दी मुलहठी पीपल बरियारा लाख सेंधानोन अनन्तमूल मरोड़फली देवदारु रोहिणी खस समुद्रफेन रोहिष सुगन्धवाला इन औषधियोंके साथ छः गुने मट्ठेमें तेलको परिपाक करके मर्दन करनेसे दाहादि और शीतादि अत्यन्त कठिन ज्वरका नाशहोताहै ४१६

पद्मकोत्पलकल्हारमृणालविषपौष्करैः । कुमुदोशीरमञ्जिष्ठापद्मगैरिककट्फलैः ॥ सारिवाद्वयलोध्राह्वक्षीरीखर्ज्जुरमस्तकैः । धात्रीशतावरीयुक्तैःक्वाथेकल्केप्रयोजितैः ॥

लाक्षारसपयःशुक्तमस्तुभिःसहकांजिकैः। पक्वंतैलमिदंत्वच्यंदाहज्वरहरंपरम् ॥ लाक्षारसादिपृथक्तैलतुल्यः। इतिपद्मकादितैलम् ॥ ४१७ ॥

पद्मकादि तैल ॥

पद्माक नीलकमल श्वेतकमल कमलकीडण्डी विष पुष्करमूल कोकावेली खस मजीठ कमल गेरू कायफल दोनों सारिवा लोध खिन्नी खजूर आंवला और शतावर इनके कल्कका काढा लाखका रस दूध सिरका दहीका तोड़ और कांजी इनके द्वारा विधि पूर्व्वक परिपाक कियाहुआ तेल त्वचाको हित और दाह ज्वरका अत्यन्त नाशक होताहै इसमें लाखके रसादिक अलग अलग तेलके समान होने चाहिये ॥ ४१७ ॥

प्रलेपकेप्रयुञ्जीतश्लेष्मज्वरहरींक्रियाम् ॥ ४१८ ॥

प्रलेपक नाम ज्वरमें कफज्वर नाशक चिकित्सा करे ॥ ४१८ ॥

रुद्रजटागोशृङ्गंविड़ालविष्ठोरगस्यनिर्म्मोकः॥ मदनफलभूतकेश्योवंशत्वग्रुद्रनिर्म्माल्यम् ॥ घृतयवमयूरपुच्छचन्द्रकछगलकलोमानिसर्षपाःसवचान्तः ॥ हिंगूगवास्थिमरीचाःसमभागाःछागमूत्रसंपिष्टाः। धूपनविधिनाशमयन्त्येतेसर्व्वाज्वराग्नियतम् ॥ ग्रहडाकिनीपिशाचप्रेतविकारानयंधूपः ॥ रुद्रजटाजटाधारीभूतकेशीजटामांसी । रुद्रनिर्म्माल्यंपुष्पादि। मयूरपुच्छंचन्द्रकम्इतिमाहेश्वरोधूपः ॥ ४१९ ॥

माहेश्वर धूप ॥

जटाधारी गौकासींग बिल्लीकीविष्टा सांपकी केंचुली मैनफल जटामांसी बांसकीछाल शिवजीका निर्माल्य घी जौ मोरपंख बकरेकेबाल सरसों बचहींग गौकीहड्डी और मिर्च इनऔषधियोंको बराबर लेकर बकरेके मूत्रमें पीसकर विधिपूर्व्वक धूपदेनेसे सबप्रकारके ज्वरग्रह डाकिनी पिशाच और प्रेतोंके विकार नष्ट होते हैं ॥ ४१९ ॥

सोमंसानुचरंदेवंसमातृगणमीश्वरम् । पूजयन्प्रयतःशीघ्रंमुच्यतेविषमज्वरात् ॥ सोमंउमयासहितं। सानुचरंनन्द्यादिगणसहितम्। प्रयतःपवित्रः। विष्णुंसहस्रमूर्द्धानंचराचरपतिंविभुम्। स्तुवन्नामसहस्रेणज्वरान्सर्व्वान्व्यपोहति ॥ सहस्रमूर्द्धानमितिसहस्रशीर्षेत्यादिवेदाभिहितनामसहस्रेणभारतोक्तेनेत्यर्थः ॥४२० ॥

पवित्र होकर नन्दी आदिगण मातृका और पार्वतीसहित श्री शिवजीका पूजनकरने से शीघ्रही सम्पूर्ण विषमज्वरोंसे छूटजाताहै और सहस्र शिरवाले सब संसारकेस्वामी व्यापक विष्णुभगवानकी सहस्र नाम(महाभारत अथवा वेदमेंकहेहुये)के द्वारा स्तुति करनेसे संपूर्ण ज्वरोंकानाश होताहै४२०॥

ज्वरस्यापिदेवत्वात्पूजाकार्य्या। यतआहविदेहःतीर्थायतनदेवाग्निगुरुवृद्धोपसर्पणैः। श्रद्धयापूजनैश्चापिसहसाशाम्यतिज्वरः तीर्थंऋषिजुष्टंजलंआयतनम्। देवाधिष्ठितंपुरुषोत्तमक्षेत्रश्रीशैलादि। इतिविषमज्वराधिकारः ॥ ४२१ ॥

देवताहोनेसे ज्वरकाभी पूजन करना चाहिये क्योंकि विदेहने कहाहै कि तीर्थ (ऋषियोंसे सेवन किया हुआजल) आयतन (देवताओंसे युक्तपुरुषोत्तम क्षेत्र और श्रीशैलादिक) देवता अग्नि गुरू

तथावृद्ध इनकी उपासना करनेसे और भक्तिपूर्वक पूजनकरनेसे सहसा ज्वरका नाशहोताहै इति विषम ज्वराधिकार ॥ ४२१ ॥

अथरसादिधातुगतज्वरमाह ॥

गुरुताहृदयोत्क्लेशःसदनंछर्द्यरोचकौ । रसस्थेतुज्वरेलिङ्गंदैन्यंचास्योपजायते ॥ गुरुतागात्राणांहृदयस्थस्यदोषस्योपचितत्वाद्वमनमिवदैन्यंक्लीवचित्तता । रसस्थेरसधातुगते । अथतस्यचिकित्सा । रसस्थेतुज्वरेतस्मिन्कुर्याद्वमनलङ्घने ॥ ४२२ ॥

रसादिधातुओं में गयेहुएज्वरका वर्णन ॥

ज्वरके रसधातुमें प्राप्तहोजाने पर शरीरमें भारीपन हृदयमें दोषके इकट्ठे होनेसे जीमिचलानापीड़ा छर्दि अरुचि और दीनता होतीहै ज्वरके रसधातुमें प्राप्तहोनेपर वमन और लंघन करानाचाहिये ४२२॥

अथरक्तगतज्वरमाह ॥

रक्तनिष्ठीवनंदाहोमोहश्छर्दनविभ्रमौ । प्रलापःपिडिकातृष्णारक्तप्राप्तेज्वरेनृणाम् ॥ मोहोव्यग्रचित्तता । अथतस्यचिकित्सा । सेकःसंशमनोलेपःरक्तमोक्षमसृग्गते ॥४२३॥

रक्तधातु में गयेहुए ज्वरका वर्णन ॥

ज्वरके रक्त धातु में प्राप्त होने पर दाह चित्तकी व्यग्रता छर्दि भ्रम प्रलाप पिड़िका और तृषाहोतीहै इसमें परिशेक शमनलेप और रुधिर निकलवाना यहसब चिकित्सा करवानी चाहिये ४२३॥

अथमांसगतमाह ॥

पिण्डकोद्वेष्टनंतृष्णासृष्टमूत्रपुरीषता । उष्णान्तर्दाहविक्षेपौग्लानिःस्यान्मांसगेज्वरे । उष्णान्तर्मोहविक्षेपावितिपठन्तितत्र उष्णाअन्तः विक्षेपःहस्तपादादिचालनम् तस्यचिकित्सा तीक्ष्णंविरेकंचतथाकुर्य्यात्मांसगतेज्वरे ॥ ४२४ ॥

मांसमें गयेहुये ज्वरका वर्णन ॥

ज्वरके मांस में प्राप्त होने परपिण्डलियोंमें पीड़ा तृषा मलमूत्रका निकलना शरीरके भीतर उष्णता हाथ पैरोंका पटकनाऔर ग्लानि होतीहै मांसमेंगये हुएज्वर वालेको तीक्ष्ण वमन करानीचाहिये ४२४॥

मेदोगतमाह ॥

भृशंस्वेदस्तृषामूर्छा प्रलापश्छर्दिरेवच । दौर्गन्ध्यारोचकौग्लानिर्मेदस्थेचासहिष्णुता ॥ भृशंस्वेदःमेदोमलत्वात् तस्यचिकित्सा मेदस्थेमेदशोनाशं ॥ ४२५ ॥

मेदमें गयेहुए ज्वरका वर्णन ॥

ज्वरकेमेदधातुमें जानेपर अत्यन्त स्वेद तृषा मूर्च्छा प्रलाप छर्दि शरीरमें दुर्गन्धि अरुचि ग्लानि और असहिस्नुता (बर्दास्तनहोना) होतीहै इस में मेद नाशक चिकित्सा होनीचाहिये ॥ ४२५ ॥

अस्थिगतमाह ॥

भेदोऽस्थ्नांकूजनंश्वासोविरेकश्छर्दिरेवच । विक्षेपणञ्चगात्राणांविद्यादस्थिगतेज्वरे ॥ तस्यचिकित्सा । अस्थिस्थेतुज्वरेकुर्य्याद्वातनाशनकंविधिम् । वस्तिकर्म्मप्रयोक्तव्यमभ्यंगोन्मर्दनन्तथा ॥ ४२६ ॥

हड्डियोंमें गयेहुए ज्वरका वर्णन ॥

ज्वरके हड्डियोंमें प्राप्त होनेपर हड्डियोंमें पीड़ा कंठमें अव्यक्त शब्द श्वास दस्तआना छर्दि और अंगोंका पटकना यह सब लक्षण होतेहैं इसमें बात नाशक चिकित्सा वस्तिकर्म तैलादि मर्द्दन और उबटन यह सब करने चाहिये ॥ ४२६ ॥

मज्जागतमाह ॥

तमःप्रवेशनंहिक्काकासःशैत्यंवमिस्तथा । अन्तर्दाहोमहाश्वासोमर्मच्छेदश्चमज्जगे ॥ असाध्यत्वान्नात्रचिकित्सा ॥ ४२७ ॥

मज्जामें गयेहुये ज्वरका वर्णन ॥

ज्वरके मज्जामें प्राप्त होने पर सब ओर अंधकार सा मालूम होना हिचकी खांसी बाहर शीत भीतर दाह छर्दि बहुत श्वास और मर्म्मोंमें छिदने के समान पीड़ा होतीहै यह ज्वर असाध्य होताहै इसीसे इसकी चिकित्सा नहींकही ॥ ४२७ ॥

शुक्रगतमाह ॥

मरणंप्राप्नुयात्तत्रशुक्रस्थानगतेज्वरे । शेफसस्तब्धतामोक्षःशुक्रस्यतुविशेषतः ॥ न नुशुक्रगतेमरणमित्युक्तंतच्चशुक्रंसर्वदेहगं । नैवम् स्वाश्रयस्थशुक्रेमरणम् ॥ ४२८ ॥

वीर्य्यमें गयेहुए ज्वरका वर्णन ॥

ज्वरके वीर्य्य स्थानमें प्राप्त होजाने पर लिंगकी स्तब्धता और वीर्य्यका बहुत निकलना यह लक्षण होतेहैं इसज्वरमें रोगीनहीं जीताहै अबयह सन्देह होताहै कि वीर्य्य में ज्वरके जानेपर मृत्यु होतीहै यह कहागयाहै और वीर्य्य सम्पूर्ण शरीरमें रहताहै यह कैसे होसक्ताहै इसका उत्तर यह है कि वीर्य्यके निजस्थानमें ज्वरके जानेपर मृत्युहोती है ॥ ४२८ ॥

अथजीर्णज्वराधिकारमाह ॥

तत्रजीर्णज्वरस्यसामान्यंलक्षणमाह । योद्वादशेभ्योदिवसेभ्यःऊर्द्ध्वंदोषत्रयेभ्योद्विगुणेभ्यऊर्द्ध्वं । नृणांतनौतिष्ठतिमन्दवेगोभिषग्भिरुक्तोज्वरएषजीर्णः ॥ ४२९ ॥

जीर्णज्वर का अधिकार जीर्ण ज्वरका सामान्य लक्षण ॥

बारह दिनके उपरान्त अथवा तीनों दोषोंकी अवधिके दूने दिनोंसे अधिक जो ज्वर मन्दबेग सबेत शरीर में रहताहै उसको जीर्ण ज्वर कहतेहैं ॥ ४२९ ॥

जीर्णज्वरस्यैवविशेषंवातवलासकमाह ॥

नित्यंमन्दज्वरोरूक्षःशूनःकृच्छ्रेणसिध्यति । स्तब्धांगःश्लेष्मभूयिष्ठोनरोवातबलासकी ॥ वातवलासकीनरइदृग्भवेत । शूनःशोथी । श्लेष्मभूयिष्ठोबहुश्लेष्मकः ॥ ४३० ॥

जीर्णज्वर बिशेष बात बलासक का लक्षण ॥

जिसके बात बलासक ज्वर होताहै उसके ज्वर का बेग मन्द सूजन रूक्षता शरीरमें शिथिलता और कफ की अधिकता होती है ॥ ४३० ॥

अथजीर्णज्वरस्यसामान्यचिकित्सा ॥

जीर्णज्वरीनरःकुर्य्यान्नोपवासंकदाचन । लङ्घनात्सभवेत्क्षीणोज्वरस्तुस्याद्बलीयतः ॥

पुराणेऽपिज्वरेदोषायद्यपथ्यैःपुनस्तथा । लङ्घयेत्तत्रतत्पश्चात्पूर्व्वामेवाचरेत्क्रियाम् ॥ तथापूर्व्ववत् ॥ ४३१ ॥

जीर्ण ज्वर की सामान्य चिकित्सा ॥

जीर्णज्वर वाला मनुष्य उपवास कभी न करे क्योंकि उपवास करने से वह क्षीण होजाताहै और ज्वर बलवान् होजाताहै और जो कुपथ्य से पुराने ज्वर में भी नवीन ज्वरके समान दोष उत्पन्न होयँ तो लंघनकराना चाहिये और फिर पहले के समान चिकित्सा करनी चाहिये ॥ ४३१

निदिग्धिकानागरकामृतानांकाथंपिबेन्मिश्रितपिप्पलीकं । जीर्णज्वरारोचककासशूलश्वासाग्निमान्द्यार्दितपीनसेषु ॥ हन्त्यूर्द्ध्वजामयम्प्रायःसायन्तेनोपयुज्यते । इति त्रिकण्टकक्काथः ॥ ४३२ ॥

त्रिकंटक क्काथ ॥

भटकटैया सोंठ और गिलोय इनके काढेमें पीपल मिलाकर पीनेसे जीर्णज्वर अरुचि खांसी शूल श्वास मंदाग्नि पीनस और ऊर्द्धगत रोगनष्ट होतेहैं यह सायंकालमें पीनाचाहिये ॥ ४३२ ॥

पिप्पलीमधुसंयुक्तःकाथःछिन्नोद्भवोद्भवः । जीर्णज्वरकफध्वंसीपञ्चमूलकृतोऽथवा ॥ अमृतायाःकषायन्तुशीतलीकृतमीरितम् । मधुपादयुतम्पीतंजीर्णज्वरहरम्परम् ॥ पिप्पलीमधुसम्मिश्रंगुडूचीस्वरसंपिबेत् । जीर्णज्वरकफप्लीहकासारोचकनाशनम् ॥ जीर्णज्वरेग्निमान्द्येचशस्यतेगुडपिप्पली । कासाजीर्णारुचिश्वासहृत्पाण्डुकृमिरोगनुत् ॥ द्विगुणःपिप्पलीचूर्णाद्गुडोऽत्रभिषजांमतः । पिप्पलीमधुसंयुक्तामेदःकफविनाशिनी ॥ श्वासकासज्वरहरीपाण्डुप्लीहोदरापहा ॥ ४३३ ॥

गिलोय तथा पंचमूलके काढेमें पीपल और सहत मिलाकर पीनेसे जीर्ण ज्वरका नाश होताहै गिलोयके काढेको शीतल करके उसमें चतुर्थांश सहत मिलाके पीनेसे जीर्णज्वरका नाशहोता है गिलोयके स्वरसमें पीपल और सहत छोड़कर पीनेसे जीर्णज्वर कफ प्लीहा खांसी तथा अरुचि का नाश होताहै पीपलके चूर्णका दूना गुड़ मिलायके खानेसे जीर्णज्वर मन्दाग्नि खांसी अजीर्ण अरुचि श्वास पांडु तथा कृमिरोगका नाश होताहै सहतके साथ पीपलखानेसे मेद कफ श्वास खांसी ज्वर पांडु प्लीहा और उदररोगका नाशहोताहै ॥ ४३३ ॥

आमलंचित्रकंपथ्यापिप्पलीसैन्धवन्तथा ॥ चूर्णितोऽयङ्गणोज्ञेयःसर्व्वज्वरहरःपरः । भेदीरुचिकरःश्लेष्महन्तादीपनपाचनः ॥ इतिआमलक्यादिचूर्णम् ॥ ४३४ ॥

आमलक्यादि चूर्ण ॥

आमला चीता हड पीपल और सेंधानोन इनसबका चूर्ण सर्वज्वरनाशक भेदी रुचिकारीकफनाशक दीपन और पाचन होताहै ॥ ४३४ ॥

द्राक्षामृताशटीशृंगीमुस्तकंरक्तचन्दनम् । नागरंकटुकापाठाभूनिम्बःसदुरालभः ॥ उशीरंधान्यकम्पद्मम्वालकंकण्टकारिका । पुष्करंपिचुमंदञ्चदशाष्टांगमिदंस्मृतम् ॥ जीर्णज्वरारुचिश्वासकासश्वयथुनाशनम् । द्राक्षादिरष्टादशांगक्काथः ॥ ४३५ ॥

द्राक्षादि अष्टादशांग क्वाथ॥

दाख गिलोय कचूर काकड़ासिंगी मोथा लालचन्दन सोंठ कुटकी पाढ़ा चिरायता जवासा खस धनियां पद्माक सुगन्धबाला भटकटैया पुष्करमूल और नींब इनसबका क्वाथसेवन करनेसे जीर्णज्वर अरुचि श्वास खांसी और सूजनका नाशहोताहै॥ ४३५॥

त्रिवृद्ध्यापञ्चवृद्ध्यावासप्तवृद्ध्याथवापिबा। गव्यक्षीरेणसंपिष्टापिवेद्दशदिनानिहि॥ तथैवापनयेदेताएवंविंशतिवासरान्। पिवतांज्वरशान्तिःस्यात्पाण्डुरोगश्चशाम्यति॥ कासश्वासोऽग्निमान्द्यञ्चकफाधिक्यञ्चनश्यति। त्र्यादिवृद्धिर्यथाकफवृद्धिर्दुग्धवृद्धिर्यथाग्निवृद्धिः॥ (इतिवर्द्धमानपिप्पली॥ ४३६॥

वर्द्धमान पिप्पली॥

पीपलको तीन पांच अथवा सातकेक्रमसे प्रतिदिन बढ़ाताहुआ गौके दूधमें पीसकर दशदिनतक पिये और ग्यारहवें दिनसे इसीप्रकार दश दिनतक घटावे इसप्रकार बीस दिनतक पीपलके पीने से ज्वर पांडुरोग खांसी श्वास मन्दाग्नि और कफकी अधिकताका नाशहोताहै यहां तीन आदिकी वृद्धि कफकी वृद्धिके अनुसार और दूधकी वृद्धि जठराग्निके अनुसार करनीचाहिये॥ ४३६॥

बातश्लेष्मज्वरोक्तास्यात्क्रियावातवलासके॥ जीर्णज्वरेकफेक्षीणेदाहेतृष्णासमन्विते॥ पयःपीयूषसदृशंतन्नवेतुविषोपमम्। चन्दनाद्यंहितंतैलंशोषाधिकारकीर्त्तितम्॥ तथानारायणंतैलंजीर्णज्वरहरंपरम्। इतिजीर्णज्वराधिकारः॥ ४३७॥

बात बलासक ज्वरमें वात कफ ज्वरमें कहीहुई चिकित्सा करे जीर्णज्वर कफकी क्षीणता और तृषा सहित दाह में दूध अमृतके समानहैं और नवीन ज्वरमें विषके समान शोषाधिकारमें कहा हुआ चन्दनादि तैल और नारायण तैल जीर्णज्वर का अत्यन्त नाशकहै इति जीर्ण ज्वराधिकार ४३७॥

अथ दुर्ज्जलजनितस्यज्वरस्यचिकित्सा॥

हरीतकीनिम्बपत्रंनागरंसैन्धवोऽनलः। एषांचूर्णंसदाखादेद्दुर्ज्जलज्वरशान्तये॥ इतिहरीतक्यादिचूर्णम्॥ ४३८॥

बुरेजलसेउत्पन्नहुए ज्वरकी चिकित्सा हरीतक्यादिचूर्ण॥

हड़ नींबकी पत्ती सोंठ सेंधानोन और चीता इनका चूर्ण सदैव सेवनकरनेसे बुरेजलसे उत्पन्न हुए ज्वरका नाशहोताहै॥ ४३८॥

अरुचिमनलमान्द्यंपीनसश्वासकासानुदरमुदकदोषानाशुहन्यादशेषान्॥ जनयतितनुकान्तिंचित्तनेत्रप्रसादम्। पलपरिमितशुण्ठीक्षौद्रसिद्धःकषायः॥ इतिशुण्ठीक्वाथः॥ ४३९॥

सुंठीक्वाथ॥

चारतोले सोंठके काढ़ेमें सहत डालकर पीनेसे अरुचि मंदाग्नि पीनस श्वास खांसी उदर और बुरेजलसेहुए दोषका नाशहोताहै तथा कांतिकी वृद्धि और चित्ततथा नेत्रोंमें प्रसन्नता होतीहै ४३९॥

विषंभागद्वयंदग्धंकपर्दंपञ्चभागकम्। मरिचंनागरञ्चैवचूर्णंवस्त्रेणशोधयेत्॥ आर्द्रकस्यरसेनास्यकुर्यान्मुद्गनिभांवटीम्। वारिणावटिकायुग्मंप्रातःसायञ्चभक्षयेत्॥ अयं

रसोज्वरेयोज्यःसामेदुर्ज्जलजेऽपिच । अजीर्णाध्मानविष्टम्भशूलेषुश्वासकासयोः ॥ इतिदुर्ज्जलजेतारसः ॥ ४४० ॥

दुर्जलजेतारस ॥

विष २ भाग कौड़ीकीभस्म ५ भाग सोंठ ५ भाग और मिर्च ५ भाग इनसब औषधियोंके चूर्ण को वस्त्रमें छानकर अदरकके रसमें मूंगके समान गोलीबनावे प्रातःकाल और सायंकाल जलके साथ दो गोलीखाय इस्से आमसहितज्वर बुरेजलसे होनेवालाज्वर अजीर्ण अफरा विष्टंभ शूलश्वास और खांसीका नाशहोता है ॥ ४४० ॥

पटोलमुस्तामृतवाह्निवासकंसनागरंधान्यकिराततिक्तकम् । कषायमेषांमधुनापिबेन्नरोनिवारयेदुर्ज्जलदोषमुल्वणम् ॥ इतिपटोलादिक्काथः ॥ ४४१ ॥

पटोलादि क्काथ ॥

पर्व्वल मोथा गिलोय वांसा सोंठ धनियां चिरायता इनका क्वाथ सहत डालकर पीनेसे बुरेजलसे होनेवाले बहुत बड़ेदोषको भी नाशकरताहै ॥ ४४१ ॥

किराततिक्तात्रिवृदम्बुपिप्पलीविडङ्गविश्वाकटुरोहिणीरजः । निहन्तिलीढंमधुनातिसत्वरंसुदुस्तरंदुर्जलदोषजंज्वरम् ॥ इतिकिराताद्दिचूर्णम् ॥ ४४२ ॥

किरातादि चूर्ण ॥

चिरायता निसोथ सुगन्धवाला पीपल बायबिडंग सोंठ और कुटकी इनसबको चूर्णकरके सहतके संगचाटनेसे बहुत शीघ्र बुरेजलके दोषसे उत्पन्नहुआ अत्यन्त दुस्तरज्वर शान्तहोताहै ॥ ४४२ ॥

भोजनाग्रेनरैःमुक्तंशुण्ठीजाज्यभयोत्थितम् । कल्कन्तुसेवितंनित्यंनानादेशोद्भवंजलम् ॥सहार्द्रकयवक्षारौपीत्वाकोष्णेनवारिणा॥नानादेशसमुद्भूतंवारिदोषमपोहति ॥४४३॥

भोजनके पहले सोंठ कालाजीरा और हड़ इनकी चटनी पीसकर खानेसे अनेक देशोंके जलसे उत्पन्न हुआ ज्वरशान्त होताहै अदरक और जवाखार गरमजलके साथ पीनेसे अनेक देशोंके जलसे उत्पन्न हुआ दोषशान्त होताहै ॥ ४४३ ॥

अथ साध्यज्वरस्यलक्षणमाह ॥

बलवत्स्वल्पदोषेषुज्वरःसाध्योऽनुपद्रवः ॥ ४४४ ॥

साध्यज्वरका लक्षण ॥

जिसज्वरमें रोगी सबलहोय दोषथोड़े होयँ और कोई उपद्रव नहोयँ सोसाध्य है ॥ ४४४ ॥

अथ ज्वरस्योपद्रवानाह ॥

श्वासोमूर्च्छारुचिश्छर्दिस्तृष्णातीसारविग्रहाः । हिक्काकासाङ्गदाहश्चज्वरस्योपद्रवा दश ॥ ४४५ ॥

ज्वरके उपद्रव ॥

श्वास मूर्च्छा अरुचि छर्दि तृषा अतीसार मलकारुकना हिचकी खांसी और दाह ये दशज्वरके उपद्रवहैं ॥ ४४५ ॥

अथ प्रसङ्गादुपद्रवाणांचिकित्साविशेषमाह ॥

सञ्जातोपद्रवोव्याधिस्त्याज्योनस्याच्चिकित्सकैः । व्याधौशान्तेप्रणश्यन्तिसद्यःसर्व्वे

ऽप्युपद्रवाः ॥ अतोव्याधिंजयेद्यत्नात्पूर्वंपश्चादुपद्रवान् । भिषग्यःकुशलःसोऽत्रजयेत्पूर्वमुपद्रवम् ॥ तेष्वपिप्रचुरेषुप्राङ्नाशयेदाशुकारणम् । मूलव्याधिंजयेत्पूर्वंयत्रयोवा भवेद्बली ॥ अविरोधेनकार्य्यातदुभयोरपिचक्रिया ॥ ४४६ ॥

प्रसंगसेज्वरके उपद्रवोंकीविशेष चिकित्सा ॥

वैद्यउपद्रवों के उत्पन्न होनेपर रोगको छोड़नदेवे क्योंकि रोगके शान्तहोजाने पर सम्पूर्ण उपद्रव शीघ्रही शान्तहोजाते हैं इसीसे पहले रोगको नाशकरे पीछे उपद्रवोंकी चिकित्साकरे और जो चतुरवैद्य होय तो पहले उपद्रवोंकोजीते परन्तु उपद्रवोंमें से जो उपद्रव बहुत शीघ्र हानिकारी होवे उसकी चिकित्सा पहले करे एक दूसरेके विरोधसे रहित पहले मुख्यरोगकी चिकित्साकरे अथवा जो बलवान होय उसकी चिकित्साकरे ॥ ४४६ ॥

तत्रज्वरेश्वासस्यचिकित्सा ॥

सिंहीव्याघ्रीताम्रमूलीपटोलीशृंगीपद्मापुष्करंरोहिणीच । शाकंशट्याःशैलमल्याश्च वीजंश्वासंहन्यात्सन्निपातंदशांगः ॥ सिंहीबड़ीकटैया । व्याघ्रीलघुकण्टकारी । ताम्रमूलीदुरालभा । रोहिणीकटुकी । शैलमल्लीकोरैया । दशांगप्रयोगः ॥ ४४७ ॥

ज्वरवालेके श्वासकी चिकित्सा ॥

बड़ी भटकटैया छोटी भटकटैया जवासा पटोली काकड़ासिंगी पद्माक पुष्करमूल कुटकी कचूर काशाक कुरैया का बीज इनकाक्काथ सेवन करने से सन्निपातजश्वास का नाश होता है इतिदशांग प्रयोग ॥ ४४७ ॥

भार्गीनिम्बघनाभयामृतलताभूनिम्बवासाविषा । त्रायंतीकटुकावचात्रिकटुकस्योनाकशक्रद्रुमैः ॥ रास्नायासपटोलपाटलशटीदार्व्वीविशालात्रिवृत् । ब्राह्मीपुष्करसिंहिकाद्वयनिशाधात्र्यक्षदेवद्रुमैः ॥ क्काथोऽयंखलुसन्निपातनिवहान्द्वात्रिंशतांपानतो । दुर्द्धर्षान्निजतेजसाविजयतेसर्प्पान्गरुत्मानिव ॥ किञ्चश्वासबलासकासगुदरुग्हृद्रोगहिक्कामरुन्मन्यास्तम्भगलामयार्दितमलाविष्टम्भवब्रध्मानपि ॥ विषाअतीसशक्रद्रुमःवकुलइतिलोके । देवद्रुमोदेवदारु । इतिद्वात्रिंशत्क्काथः ॥ ४४८ ॥

द्वात्रिंशत्काथ ॥

भारंगी नींब मोथा हड़ गिलोयचिरायता बांसा अतीस त्रायमाणा कुटकी बच सोंठ पीपल मिर्च सोनापाठा मोलसरी रासना जवासा पर्व्वल पटोली कचूर गाज़वां इन्द्रायण निसोथ ब्राह्मी पुष्करमूल दोनोंभटकटैया हल्दी आंवला बहेड़ा और देवदारु इनका काढ़ा सर्पोंको गरुड़जी के समानसन्निपातों को जीतता है और श्वास कफ खांसी गुदाकीपीड़ा हृदय के रोग हिचकी बात गलेके पीछे की नसका जकड़ना गलेके रोग अर्दितबात विष्टंभ तथा व्रध्नको नाशकरता है ॥ ४४८ ॥

मधुनाकृष्णाकट्फलकर्कटशृंगीभवंचूर्णं । श्वासामयमहोग्रैर्लीढ्वालोकःसुखीभवति ॥ वन्योपलाग्नितापितदात्रस्याग्रेणपञ्जरेदाहः । अपहरतिश्वासामयसंशयंभाषितंमुनिभिः ॥ ४४९ ॥

पीपल कायफल और काकड़ासिंगी के चूर्णको सहत के साथ चाटने से बहुतबढ़े हुये श्वासरोग कानाश होता है अरने कंडोंमें खुरपे को गरम करके पांजर में दागनेसे निस्संदेह श्वास रोगका नाश होता है यहमुनिलोगोंने कहा है ॥ ४४६ ॥

अथ ज्वरेमूर्च्छायाम्चिकित्सा ॥

आर्द्रकस्यरसैर्न्नस्यंमूर्च्छायामाचरेन्नरः । अञ्जनञ्चप्रयुञ्जीतमधुसिन्धुशिलोषणैः ॥ शीताम्भसाक्षिसेकःसुरभिर्धूपः सुगन्धिपुष्पञ्च । मृदुतालवृन्तवातःकोमलकदलीदल स्पर्शः ॥ ४५० ॥

ज्वर में मूर्च्छा की चिकित्सा ॥

अदरखके रसकी नासलेने से और सहत सेंधानोन मैनशिल और मिर्चको पीसकर अंजनलगानेसे मूर्च्छाकानाश होता है शीतल जलको नेत्रों में सींचनेसे सुगन्धित धूप तथा पुष्पोंसे कोमल पंखेकी वायुसे और कोमल केलेके पत्तोंके स्पर्शसे मूर्च्छाका नाशहोता है ॥ ४५० ॥

अथ ज्वरेऽरुचेश्चिकित्सा ॥

अरुचौतुश्रृङ्गवेरजरसकैःसोष्णैःससिन्धुजैःकवलः ॥ सिन्धूत्थमातुलुंगीफलकेशर धारणंवक्त्रे ॥ ४५१ ॥

ज्वर में अरुचिकी चिकित्सा ॥

अरुचिमें गरम अदरक के रसको सेंधानिमक मिलाकर मुखमें रक्खे अथवा नींबूके रस में सेंधानिमक मिलाकर मुखमें रक्खे ॥ ४५१ ॥

अथ ज्वरेछर्द्देश्चिकित्सा ॥

क्काथोगुडूच्याःसमधुःसुशीतःपीतःप्रशान्तिंवमनस्यकुर्य्यात् । विड्माक्षिकाणांमधुना ऽवलीढासचन्दनाशर्करयान्वितावा ॥ ४५२ ॥

ज्वर में छर्दिकी चिकित्सा ॥

गिलोय के काढ़ेको ठंढाकर के सहत डालकर पीनेसे छर्दिका नाश होताहै मक्खी की बीटको सहत के साथ चन्दन अथवा शक्कर युक्त चाटने से छर्दिका नाशहोता है ॥ ४५२ ॥

अथज्वरेतृष्णायाश्चिकित्सा ॥

दन्तशठजम्भीरवीजपूरकदाडिमवदरैः सचुक्रकैर्वदनेलेपोजयतिपिपासामथरजतगुटीमुखान्तःस्था ॥ शीतम्पयःक्षौद्रयुतंनिपीतमाकण्ठमाश्वेवतदुद्वमेच्च । तर्षंशमयेद्दिव क्त्रेधृत्वाथवाक्षौद्रबटाग्रलाजाम् ॥ ४५३ ॥

ज्वर में तृषाकी चिकित्सा ॥

बिजौरा नींबू जंभीरी नींबू अनार बेर और चूका इनसब औषधियों को मुख में लेप करनेसे और चाँदीकी गोली को मुखमें रखने से तृषाका नाश होताहै सहत युक्तठंढेदूधको गलेतक पीकर शीघ्र ही बमन करने से अथवा सहत बर्गद के अंकुर और खीलों को एक में मिलाकर मुखमें रखने से तृषा का नाश होता है ॥ ४५३ ॥

अथज्वरेऽतीसारस्यचिकित्सा ॥

लङ्घनमेकंमुक्त्वानान्यदस्तीहभेषजंवलिनः । समुदीर्णदोषनिचयंशमयतितत्पाचयेद्

पिच ॥ वत्सादनीवत्सकवारिवाहविश्वम्भरानिम्बविषासविश्वा । ज्वरेतिसारंत्वरितंजयन्तिविश्वामृतावत्सकवारिवाहाः (विश्वम्भराभूनिम्बः) पाठामृतापर्पटमुस्तविश्वाकिराततिक्तेन्द्रयवान्विपाच्यांपिवन्हरत्येवहठेनसर्वान्ज्वरातीसारानपिदुर्निवारान् ४५४॥

ज्वर में अतीसार की चिकित्सा ॥

बलवान ज्वर वालेको अतीसार में लंघनके सिवाय और कोई औषध नहीं है लंघनसे बढ़े हुये दोषोंकी शान्ति और परिपाक होता है गिलोय कुरैया मोथा चिरायता नींब अतीस और सोंठइनके क्काथ से शीघ्रही ज्वरके अतीसार का नाशहोता है सोंठ गिलोय कुरैया और मोथा इनके काढ़ेसे अतीसार कानाशहोताहै पाठा गिलोय पित्तपापड़ा मोथा सोंठ चिरायता और इन्द्रजौ इनके काढ़े के पीनेसे सम्पूर्ण दुर्निवार्य्य ज्वरातीसारों का भी नाशहोताहै ॥ ४५४ ॥

अथज्वरेविड्ग्रहस्यचिकित्सा ॥

विड्ग्रहेवातजित्कर्म्मकुर्य्यादत्रानुलोमनम् । मलम्प्रवर्तयेदाशुतीक्ष्णाभिःफलवर्त्तिभिः ॥ पथ्यारग्बधतिक्तात्रिवृदामलकैःशृतन्तोयम् । जीर्णज्वरेविवन्धेदद्यादाश्वेवविड्ग्रहःशाम्येत् ॥ ४५५ ॥

ज्वरमें मलरुक जानेकी चिकित्सा ॥

ज्वरमें मलके रुकजाने पर बात नाशक तथा बातकी नीचे लेजानेवाली चिकित्सा करे और तीक्ष्ण फल बर्त्तियों के द्वारा मलको निकाले हड़ अमलतास कुटकी निसोथ और आंवला इनके काढ़े को पीनेसे जीर्णज्वर में मलके रुकनेका नाश होताहै ॥ ४५५ ॥

अथज्वरेहिक्कायाश्चिकित्सा ॥

नीरेणसिन्धूत्थरजोऽतिसूक्ष्मंनस्येनन्नूनंविनिहन्तिहिक्काम् । शुण्ठीहठाद्वासितयासमेताधूपोऽथवाहिंगुसमुद्भवश्च ॥ ४५६ ॥

ज्वरमें हिचकी की चिकित्सा ॥

सेंधोनोन को जलमें महीन पीसकर नासलेनेसे अथवा सोंठ शक्करमें मिलाकर नास लेनेसे या हींग की धूपदेने से हिचकी का नाश होताहै ॥ ४५६ ॥

अथज्वरेकासस्याचिकित्सा ॥

कासेकणाकणामूलंकलिंगद्रुमफलंरजः । सविश्वभेषजंलिह्यान्मधुनावावृषाद्रसम् ॥ (रजःपर्पटकम्) पुष्करमूलकटुत्रिकशृंगी कट्फलयासककारविकाभिः । मधुलुलिताभिरयंखलुलेहःकासरिपुःकफरोगहरश्च ॥ ४५७ ॥

ज्वरमें खांसीकी चिकित्सा ॥

ज्वरमें खांसी आनेपर पीपल पीपलामूल बहेड़ा पीत्तपापड़ा और सोंठ इनके चूर्ण को सहत के साथ चाटे अथवा बांसे के रस को सहत के साथ चाटे पुष्करमूल सोंठ पीपल मिर्च काकड़ासिंगी कायफल जवासा और कालाजीरा इन सब के चूर्ण को सहत के साथ चाटनेसें खांसी और कफ केरोगों का नाश होताहै ॥ ४५७ ॥

अथज्वरेदाहस्यचिकित्सा ॥

दाहाधिकारेलिखितंदाहेकुर्याञ्चिकित्सितम्।परंज्वरेविरुद्धंयन्नोचितंतञ्चिकित्सितम् ४५८

ज्वरमें दाहकी चिकित्सा।

दाहाधिकारमें कही हुई चिकित्सा दाहमें करे परन्तु ज्वर में जो विरुद्ध होयतो वह चिकित्सा नकरै ॥ ४५८ ॥

अथसुखसाध्यस्यज्वरस्यलक्षणम् ॥

सन्तापोऽभ्यधिकोवाह्येतृष्णादीनांचमार्दवम् । वहिर्वेगस्यलिंगानिसुखसाध्यत्वमेवच । तृष्णादीत्यादिशब्देनान्तर्दाहसन्ध्यास्थिव्यथाश्वासागृह्यन्तेतेषांमार्दवमल्पता । वहिर्वेगस्यज्वरस्य । वर्षाशरद्वसन्तेषुवाताद्यैःप्राकृतःक्रमात् । प्राकृतःसुखसाध्यस्तुज्वरःसुरभिसम्भवः (सुरभिर्वसन्तः) ॥ ४५९ ॥

सुखसाध्य ज्वर का लक्षण ॥

जिस ज्वरमें शरीरके बाहर बहुत संताप होवे और तृषा अन्तर्दाह संधि हड्डियोंमें पीड़ा तथाश्वास इनकी अल्पता होवे वह बाहर वेगवाला ज्वर होताहै यहसुख साध्य है वर्षा शरद और बसन्त इन ऋतुओंमें क्रमसे बात पित्त तथा कफके द्वारा स्वाभाविक ज्वर होता है इनमें से बसन्त में हुआ स्वाभाविक ज्वर सुख साध्यहै ॥ ४५६ ॥

अथ कष्टसाध्यस्यज्वरस्यलक्षणम् ॥

वैकृतोऽन्यःसदुःसाध्यःप्राकृतश्चानिलोद्भवः । अन्यःप्राकृतादन्यःवैकृतः ॥ ४६० ॥

कष्टसाध्य ज्वरकालक्षण ॥

बैकृत अर्थात् स्वाभाविक से विरुद्ध जैसे शरद ऋतुमें कफजइत्यादि और स्वाभाविक बात ज्वर कष्टसाध्य होताहै ॥ ४६० ॥

वर्षादिषुजातानांचिकित्साविशेषार्थंप्राधान्यमाह ॥

वर्षासुमारुतोदुष्टःपित्तश्लेष्मान्वितोज्वरम् । कुर्य्यात्पित्तञ्चशरदितस्यचानुबलःकफः । कफोवसन्तेतमपिवातपित्तंभवेदनु ॥ ४६१ ॥

बर्षाआदिमें उत्पन्न ज्वरकी बिशेष चिकित्साके लिये प्राधानता कहते हैं ॥

बर्षामें बायु दूषित होकर पित्त तथा कफसे युक्त ज्वर को उत्पन्न करतीहै शरद ऋतु में दूषित हुआ पित्त कफ के साथ ज्वर को उत्पन्न करताहै और बसन्त ऋतुमें दूषित हुआ कफ बात पित्त के साथ ज्वर को उत्पन्न करताहै ॥ ४६१ ॥

तस्यापित्तज्वरस्यचिकित्सामाह ॥

तत्प्रकृत्याविसर्गाच्चतत्रनानशनाद्भयम् । तत्प्रकृत्यातस्यपित्तस्यप्रकृत्यास्वभावेन ॥ तदुक्तम् ॥ कफपित्तेद्रवेधातुसहेतेलङ्घनंबहु । इतिविसर्गाच्चशरदोविसर्गकालत्वाच्च ॥ यतउक्तम् ॥ बर्षाशरद्धेमन्ताविसर्गकालास्तत्रोपचितबलाः । प्राणिनोभवन्तिसोमस्यबलवत्वादिति ॥ तत्रशरीदपित्तज्वरेअनशनाद्भयंन । वसन्तेकफज्वरेऽपिकफप्रकृत्यालङ्घनाद्भयंनभवति ॥ किन्तुवसन्तस्यादानकालत्वान्निःशङ्कंनकर्त्तव्यम् । यदुक्तं ॥ शिशिर

वसन्तग्रीष्मास्त्वादानकालास्तत्रापचितबलाःप्राणिनोभवन्ति सूर्य्यस्यबलत्वादिति ॥ एतेनेदमुक्तम् । वर्षासुवायुःप्रधानम्पित्तश्लेष्मणावप्रधाने ॥ शरदिपित्तंप्रधानम् कफोऽप्रधानःवसन्तेश्लेष्माप्रधानम् वातपित्तेअप्रधाने । तत्रप्रधानस्यप्राधान्येनचिकित्साकर्त्तव्यासाचाप्रधानेनिषिद्धानविधेया ॥ एवंवैकृतेष्वपिप्रधानस्यप्राधान्येनचिकित्साकर्त्तव्या । तथाचोक्तम् संसर्गेयोगरीयान्स्यादपक्रम्यःसवैभवेत् ॥ शेषदोषाविरोधेनसन्निपातेतथैवच । इतिसंसर्गेदोषद्वयसंसर्गेगरीयान्प्रधानः । अन्तर्दाहोऽधिकातृष्णाप्रलापःश्वसनंभ्रमः।सन्ध्यास्थिशूलमस्वेदोदोषवर्चोविनिग्रहः॥अन्तर्वेगस्यलिङ्गानिकष्टसाध्यत्वमेवच । वर्चोविनिग्रहःपुरीषाऽप्रवृत्तिः ॥ ४६२ ॥

पित्तज्वरकी चिकित्सा ॥

पित्तज्वरमें पित्तके स्वाभाविक पतलेपन से और विसर्ग कालहोनेसे लंघनदेनेमें कोई भयनहीं होता क्योंकि कहागयाहै कि कफ और पित्त यह दोनों पतली धातुहैं इसलिये बहुत लंघनको सह सक्के हैं विसर्गसे अर्थात् शरदऋतुके विसर्गकालहोनेसे क्योंकि कहागयाहै कि बर्षा शरद और हेमन्त यह विसर्गकालहैं इनमें चन्द्रमाके बलवान होनेके कारण प्रायःमनुष्योंका बलइकट्ठा होताहै इस लिये शरदऋतुके पित्तज्वरमें लंघनकरानेसे कोई भयनहीं है बसन्तऋतुके कफज्वरमेंभी कफके स्वाभाविक पतलेहोनेसेलंघनकरानेमें भयनहीं है परन्तु आदानकाल होने से निस्सन्देहहोकर लंघन नहीं करानाचाहिये क्योंकि कहागयाहै कि शिशिर बसन्त और ग्रीष्म यह आदानकालहैं इनमें सूर्य्यके बलवानहोनेसे प्रायः प्राणियोंका बलघटताहै इस्से यह मालूमहोताहै किवर्षामें बायुप्रधान पित्त तथा कफ अप्रधान शरदमें पित्तप्रधान कफअप्रधान और बसन्तमें कफप्रधान बात तथा पित्तअप्रधान होते हैं इस्से इनसब कालोंमें अप्रधानकी अविरोधी प्रधानकी चिकित्सा करनी चाहिये इसीप्रकार वैकृत ज्वरोंमेंभी अप्रधानकी अविरोधी प्रधानकी चिकित्सा करनीचाहिये क्योंकि कहागयाहै किदोदोष और सन्निपातमें जो दोष बलवानहो उसकी चिकित्साकरे परन्तु इसबातपर ध्यानरक्खे कि बाकी के दोषोंके बिरुद्ध नहोवे भीतर दाहअधिकतृषा प्रलाप श्वास भ्रम संधि तथा हड्डियोंमेंपीडा पसीने का न निकलना और दोष तथा मलका न निकलना यह अन्तर्वेग ज्वरके लक्षण हैं यह कष्टसाध्य होता है ॥ ४६२ ॥

अथासाध्यस्यज्वरस्यलक्षणमाह ॥

ज्वरःक्षीणस्यशूनस्यगम्भीरोदीर्घरात्रिकः । असाध्योबलवान्यश्चकेशसीमन्तकृज्ज्वरः ॥ दीर्घरात्रिकःबहुरात्रानुबन्धीकेशसीमन्तकृत । प्रभावात्केशेषुसीमन्तंयःकरोति ॥ ४६३ ॥

असाध्य ज्वरका लक्षण ॥

क्षीणतथा सूजनयुक्त पुरुषका ज्वर और गंभीर तथा बहुत रात्रितक रहनेवाला ज्वर असाध्य होताहै और जिस बलवान् ज्वरके द्वारा रोगीके बाल अकस्मात् जूड़ेसे बंधजायँ वह असाध्यहै ४६३॥

अथ गम्भीरज्वरस्यलक्षणमाह ॥

गम्भीरस्तुज्वरोज्ञेयोह्यन्तर्दाहेनतृष्णया । आनद्धत्वेनचात्यर्थंकासश्वासोद्गमेन च ॥ आनद्धत्वंनविबद्धमलत्वेन ॥ ४६४ ॥

गम्भीरज्वरका लक्षण ॥

जिसज्वरमें भीतर दाह तृषा खांसी श्वास और मलकी बहुत रुकावटहो उसको गंभीरकहते हैं ४६४॥

सामान्यज्वरेकर्णमूलशोथस्यसुखसाध्यत्वादिकमाह ॥

ज्वरस्यपूर्वंज्वरमध्यतोवाज्वरान्ततोवाश्रुतिमूलशोथः । क्रमादसाध्यःखलुकृच्छ्रसाध्यःसुखेनसाध्योमुनिभिःप्रदिष्टः ॥ ४६५ ॥

सामान्यज्वरमें कर्णमूलकी सूजनकासुखपूर्वक साध्यपना आदि कहतेहैं ॥

ज्वरके पहले ज्वरके मध्यमें और ज्वरके अन्तमें कर्णमूलकी सूजन क्रमसे असाध्य कष्टसाध्य और सुखसाध्य होतीहै ॥ ४६५ ॥

अथारिष्टमाह ॥

रोगिणोमरणंयस्मात्अवश्यम्भाविलक्ष्यते । तल्लक्षणमरिष्टंस्यात्रिष्टमप्यभिधीयते॥हेतुभिर्बहुभिर्जातोबलिभिर्बहुलक्षणः । ज्वरःप्राणान्तःकृद्यश्चशीघ्रमिन्द्रियनाशनः ॥ शीघ्रमिन्द्रियनाशनःउत्पन्नमात्रएवचिकित्स्यमानोऽपिइन्द्रियाणां चक्षुरादीनांशक्तिंयोनाशयति ॥ ४६६ ॥

अरिष्टका लक्षण ॥

जिस लक्षणसे रोगीकी मृत्यु अवश्यहोगी यह निश्चयहो उसको अरिष्ट तथा रिष्ट कहतेहैं जो ज्वर बलवान् बहुतसे कारणोंसे उत्पन्न तथा बहुत लक्षणवाला होय वह अवश्य मारनेवाला होताहै और जो ज्वर उत्पन्न होतेही चिकित्साके होनेपरभी शीघ्र नेत्रादिक इन्द्रियोंकी शक्तिको नाशकरता है वह असाध्यहै ॥ ४६६ ॥

अन्यच्चारिष्टमाह ॥

विसंज्ञस्ताम्यतेयस्तुशेतेनिपतितोऽपिवा । शीतार्दितोऽन्तरुष्णश्चज्वरेणम्रियतेनरः ॥ विसंज्ञःविगतज्ञानः । ताम्यतेनष्टहर्षःशेतेनिपतितोवाअत्रापिवाशब्दएवार्थः । निपतितएवतिष्ठतिनचोत्थातुंसमर्थः ॥ तथासनशेतेवाशीतार्दितःबहिः । अन्तरुष्णःअन्तर्दाहवान् ॥ (अन्यच्च) योहृष्टरोमारक्ताक्षोहृदिसङ्घातशूलवान् । वक्त्रेणचैवोच्छ्वसिति तंज्वरोहन्तिमानवम् ॥ हृष्टरोमाऽचवान्हृदिसंघातवानसन्निपातिकशूलवान् । वक्त्रेणचैवोच्छ्वसितिनतुनासिकया॥(अन्यच्च) हिक्काश्वासतृषायुक्तंमूढविभ्रान्तलोचनम् । सन्ततोच्छ्वासिनंक्षीणंनीरक्षयतिज्वरः ॥ क्षपयतीसमापयतीत्यर्थः (अन्यच्च) हतप्रभेन्द्रियंक्षाममरोचकनिपीड़ितम् । गम्भीरतीक्ष्णवेगार्त्तंज्वरितंपरिवर्ज्जयेत् ॥ हतप्रभेन्द्रियम् हताप्रभादीप्तिर्येषांअथवाहताप्रभाप्रतिभाविषयग्रहणशक्तिर्येषाम् तथाविधानि इन्द्रियाणियस्यतंहतप्रभेन्द्रियम् । क्षामंक्षीणम् गम्भीरतीक्ष्णवेगार्त्तंगम्भीरःउक्तलक्षणकः ॥ तीक्ष्णवेगःअतिदुःसहवेगः । ताभ्यांआर्त्तंदुःखितम् (अन्यच्च) मरणंप्राप्नुयात्तत्रशुक्रस्थानगतेज्वरे ॥ शेफसस्तब्धतामोक्षःशुक्रस्यतुविशेषतः । व्याख्यातोऽयंश्लोकः ॥४६७॥

अन्यप्रकारके अरिष्ट जो मनुष्यज्वरके वेगसे ज्ञानरहित होजाय और शैयामें उठनेकी शक्तिसे रहित होकर पड़ारहै अथवा सोवे और भीतर दाह तथा बाहर शीतसे युक्तहो वह मरजाताहै अन्य

प्रकारके अरिष्ट जिस ज्वरवालेके शरीरमें रोमांचहोवें नेत्र लालहोंय हृदयमें सन्निपातकी पीड़ा होय और मुखसेही श्वाससे वह नहीं जीताहै अन्यप्रकार जिस ज्वरमें हिचकी श्वास तृषा मूर्च्छा नेत्रोंका इधर उधर चलाना तथा क्षीणताहो और निरन्तर श्वास चले वह मनुष्यको मारताहै अन्य प्रकार जिसज्वरवालेकी इन्द्रियोंकी दीप्ति अथवा विषयोंके ग्रहण करनेकी शक्ति नष्ट होजाय क्षीणता तथा अरुचि होय और वहुत वेगके साथ गंभीर ज्वरहोय ऐसे रोगीको वैद्य त्याग करदे अन्य प्रकार वीर्य्य स्थानमें ज्वरके जानेपर लिंगकी शिथिलता और अधिक वीर्य्य पात होताहै इसमें रोगी नहीं जीताहै ॥ ४६७ ॥

अथ विषमज्वरस्यारिष्टमाह ॥

आरम्भाद्विषमोयस्तुयस्यवादीर्घरात्रिकः । क्षीणस्यचातिरूक्षस्यगम्भीरोयस्यहन्तितम् ॥ यस्यआरम्भाद्विषमः । प्रथममेवविषमःनतुज्वरोत्सृष्टस्य । यस्यदीर्घरात्रिकः। यस्यक्षीणस्यातिरूक्षस्यचगम्भीरोभवति । तंविषमोदीर्घरात्रिकोगम्भीरश्चहन्तीत्यर्थः। (इतिज्वराधिकारः) ॥ ४६८ ॥

विषमज्वरका अरिष्ट ॥

जोज्वर उत्पन्न होतेही विषमहोय अथवा बहुत रात्रि तक रहै वह असाध्य है और क्षीण तथा रूखे शरीर वालेका गंभीर ज्वर असाध्य होताहै इतिज्वराधिकार ॥ ४६८ ॥

अथातीसाराधिकारः । तत्रातीसारस्यप्रकृष्टानिनिदानान्याह ॥

गुर्व्वतिस्निग्धरूक्षोष्णद्रवस्थूलातिशीतलैः । विरुद्धाध्याशनाजीर्णैर्विषमैश्चापिभोजनैः ॥ स्नेहाद्यैरतियुक्तैश्चमिथ्यायुक्तैर्विषैर्भयैः । शोकदुष्टाम्बुमद्यातिपानैःसात्म्यर्त्तुपर्य्ययैः ॥ जलाभिरमणैर्वेगविघातैःकृमिदोषतः । नृणांभवत्यतीसारोलक्षणंतस्यवक्ष्यते ॥ गुरुमात्रयास्वभावेनसंस्कारेणचअतिशब्दःस्थूलान्तःसहसम्बद्ध्यते । स्थूलम्असम्यक्पिष्टञ्चोधूमादि । विरुद्धंसंयुक्तंक्षीरमत्स्यादि । अध्यशनम्अजीर्णेभुञ्ज्यतेयत्तदध्यशनमुच्यते । अजीर्णआमंविदग्धञ्च । बहुस्तोकमकालेचभुक्तंयद्विषमंहितत् । भोजनैरितिगुर्व्वादिभिर्विषान्तैःसर्वैःसहसम्बध्यते । स्नेहाद्यैःस्नेहपानस्वेदनवमनविरेचनानुवासननिरूहान्तैःअतियुक्तैर्वारंवारंप्रयुक्तैर्मिथ्यायुक्तैःअविधिप्रयुक्तैश्चतैःविषैः विषाण्यत्रस्थावराणितेषामधोगत्वात् । शोकबन्धादिवियोगजनितमनःपीड़ा । सातम्यर्त्तुपर्य्ययैःसात्म्यविपरीतैरसात्म्यैः॥ तथायस्मिन्ऋतौयदुचितंतद्विपरीतैः । जलाभिरमणैःजलक्रीड़ादिभिः । वेगविघातैःमूत्रपुरीषादिहठधारणैः । कृमिभिःपक्वाशयस्यदुष्टैः । एतानियथासम्भवंवातादीनांदुष्टेःकारणानिवोद्धव्यानि । नन्वेवंसतिस्वहेतुदुष्टेनवातादिनातिसारोभवत्येवतावन्मात्रवाच्यंकिमर्थंगुर्वादिह्यभिधानंउच्यतेगुर्वादिहेतुदूषिताएव । वातादयोबाहुल्येनातिसारंजनयन्ति । ननुलङ्घनभुक्तजीर्णतादिलघ्वन्नक्रोधतृषाक्षुधाभिहननदध्यारणालव्यायामवर्षाशरद्वसन्तादिभिःकुपिताः । अतोगुर्वादीन्युच्यन्ते । एवमन्यत्रापिवोद्धव्यम् ॥ ४६९ ॥

अतीसाराधिकार अतीसारके दूरवालेनिदान ॥

भारी बस्तु (मात्रा स्वभाव अथवा संस्कारसे) बहुत चिकनीबस्तु बहुत रूखीबस्तु बहुत उष्ण बस्तु बहुत पतलीबस्तु बहुत स्थूलबस्तु (अच्छेप्रकारसे नहीं पिसे हुए गेहूं आदिक) तथा बहुत शीतलवस्तुके सेवनसे विरुद्ध (दूध तथा मछली आदिक संयोग विरुद्ध) अध्यशन (अजीर्णमेंभोजन) अजीर्ण (कच्चातथा अर्द्धपक्व अन्नादिक) तथा विषम (प्रमाणसे अधिक अथवा थोड़ा और अकालमें भोजन) भोजनसे स्नेहपान स्वेद वमन विरेचन अनुवासन तथा निरूह बस्तिके बारंबार देनेसे अथवा विधिपूर्वक न देनेसे विधिपूर्वक नहींदियेगये स्थावर विषोंसे भय शोक दूषितजल तथा मद्यके बहुत पीनेसे सात्म्य विपर्य्यय (स्वभावके विपरीत) तथाऋतु विपर्य्यय (जिसऋतुमेंजो आहार विहार उचितहैं उनसे विपरीत) से जलक्रीडासे मलमूत्रादिकोंकेवेगके रोकने से और पक्काशयके दुष्ट कृमियोंसे मनुष्योंको अतीसार रोगउत्पन्न होताहै यह संपूर्ण कारण यथा संभव बातादिकों के दोषोंसे जानने चाहिये अब यह सन्देहहोताहै कि अपने हेतुओंसे दोषयुक्त वातादिकोंके द्वारा तो अतीसार होताहीहै फिर इतनाहीन कहकर भारीपन आदि कारण क्यों कहे इसका उत्तर यहहै कि भारी आदि कारणोंसे दोषयुक्त बातादिकही बहुधा अतीसारको उत्पन्न करतेहैं नकि लंघन भोजनका परिपाकहोना आदिक हलकाअन्न क्रोध तृषा क्षुधाकारोकना दही आरनाल (कांजीविशेष) व्यायाम वर्षा शरद और बसन्त आदिकोंसे दोषयुक्त वातादिक अतीसारको उत्पन्न करते हैं इसीलिये भारी आदि कारण कहे जातेहैं इसीप्रकार और स्थानोंमेंभी जाननेचाहिये ॥ ४६९ ॥

तस्यैवपूर्बरूपमाह ॥

हृन्नाभिपाय्वोदरकुक्षितोदगात्रावसादानिलसन्निरोधाः । विट्सङ्गआध्मानमथाविपाकोभविष्यतस्तस्यपुरःसराणि ॥ विट्सङ्गःपुरीषाप्रवृत्तिःअविपाकोभुक्तस्यपुरःसराणि । एतानिलक्षणानिपूर्वभावीनि ॥ ४७० ॥

अतीसार का पूर्व रूप ॥

अतीसार रोग होनेसे पहले हृदय नाभि पसली तथा कुक्षिमें सुई गढ़ने के समान पीड़ा शरीर में शिथिलता बायु का रुकना मलका न निकलना अफरा और भोजन का न पचना यह लक्षण होतेहैं ॥ ४७० ॥

अथातीसारस्यसंप्राप्तिमाह ॥

संशम्यापांधातुरग्निंप्रवृद्धोवर्चोमिश्रोवायुनाधःप्रणुन्नः । सरत्यतीवाऽतिसारंतमाहुर्व्याधिंघोरंषड्विधन्तंवदन्ति ॥ अपांधातुःअत्रसमासाकरणाद्बहुत्वेनचरसजलमूत्रस्वेदमेदःकफपित्तरक्तादयोद्रवधातवोगृह्यन्ते । प्रवृद्धःअग्निंसंशम्यशमयित्वावर्चोमिश्रःपुरीषयुक्तःवायुनाअधःप्रणुन्नःअधःप्रेरितः । अथ सामान्यंरूपमाह । अतिसरतिनदीवत् अतीसारंतमाहुर्व्याधिंघोरमिति । योरसादिद्रवधातुःअतीवसरतीतिप्रकृतिमतिक्रम्यगुदाऽध्वनासरतितंव्याधिमतीसारमाहुः । किंविधंघोरंघोरंभीमंभयानकंघोरमित्यमरःअस्यसंख्यामाह । षड्विधन्तंवदन्तीतिषड्विधत्वंविवृणोति । एकैकशःसर्वशश्चापिदोषैःशोकेनान्यःषष्ठःआमेनचोक्तः ॥ ४७१ ॥

अतीसारकी संप्राप्ति ॥

जिसरोग में रस जल मूत्र स्वेद मेद कफ पित्त तथा रुधिरादिक जलकी धातु बढ़कर अग्नि को शान्त करके मलके साथ मिली हुई और बायुके द्वारा नीचे प्रेरणाकी गई निकलती है उसकोअती-सार कहतेहैं बैद्यलोग इस रोगको अत्यन्त भयंकर और छः प्रकारका कहतेहैं अतीसारका साधारण रूप यहहै कि रसादिक पतलीधातु अपने स्वभावको छोडकर गुदाके मार्गसे बहुत निकलतीहैं इस्से इस रोगको अतीसार कहते हैं इसकी संख्या बर्णन कीजाती हैं अतीसार छः प्रकारकाहै जैसे बातज पित्तज कफज त्रिदोषज शोकज और आमज ॥ ४७१ ॥

अथ सामान्यातीसारस्यचिकित्सामाह ॥

आमपक्वंक्रमंहित्वानातीसारेक्रियायतः।अतोऽतीसारेसर्व्वस्मिन्नामंपक्वञ्चलक्षयेत्४७२

अतीसारकी सामान्यचिकित्सा ॥

अतीसारमें आमके परिपाकके क्रमको छोड़कर और कोई चिकित्सा नहींहै इसलिये सम्पूर्ण अ-तीसारोंमें आम और परिपाक पर अधिक दृष्टिदेनी चाहिये ॥ ४७२ ॥

अथ क्रमाचिकित्सा ॥

तत्रामपक्वयोर्लक्षणम्संसृष्टमामैर्दोषैस्तुन्यस्तमप्सुनिमज्जति । पुरीषंभृशदुर्गन्धि पिच्छिलञ्चामसंज्ञितम् ॥ एतान्येवतुलिङ्गानिविपरीतानियस्यवै । लाघवञ्चविशेषेण तन्तुपक्वंविनिर्दिशेत् ॥ ४७३ ॥

क्रमसेचिकित्साआम और पक्वका लक्षण ॥

आमसहित दोषोंसेयुक्त होनेके कारण जो मलजलमें डालने से डूबजाय औरअत्यन्त दुर्गन्धित तथा पिच्छिल होय उसको आमकहते हैं और इन लक्षणों से रहित तथा बहुत हलके मलको पक्वकहते हैं ॥ ४७३ ॥

नचसंग्राहकंदद्यात्पूर्वमामातिसारिणे । अकालेसंग्रहीतस्तुविकारान्कुरुतेबहून् ॥ दण्डकालसकाध्मानंग्रहण्यर्शोभगन्दरान् । शोथपाण्ड्वामयप्लीहगुल्ममेहोदरज्वरान् ॥ डिम्भस्थःस्थविरस्थश्चवात पित्तात्मकश्चयः । क्षीणधातुबलश्चापिबहुदोषोऽतिविश्रुतः ॥ आमोऽपिस्तम्भनीयःस्यात्पाचनान्मरणंभवेत् लङ्घनमेकंमुक्त्वानान्यदस्तीहभेषजंबलिनः । समुदीर्णंदोषनिचयंतत्पाचयेत्तथाशमयेत्लङ्घनएवदोषदुःसहपिपासायां दोषपाकार्थंषड़ङ्गविधिनार्द्धंश्रृतम्। योगचतुष्टयमाह । धान्याम्बुभ्यांश्रृतंतोयंतृष्णादाहातिसारिणे।हीवेरश्रृङ्गवेराभ्यांमुस्तपर्पटकेनवा॥ मुस्तोदीच्यश्रृतंशीतंप्रदातव्यंपिपासवे॥ हितंलङ्घनमेवादौपूर्वरूपेऽतिसारिणे॥कार्य्यंवानशनस्यान्तेप्रद्रवंलघुभोजनम् ॥ ४७४॥

आमातीसार में पहले ग्राही औषध न दे क्योंकि समयके बिना मलके रोकने से दंडक अलसक आध्मान ग्रहणी बवासीर भगन्दर सूजन पांडुप्लीहा गुल्म प्रमेह उदर और ज्वर यहसब बिकार उ-त्पन्न होतेहैं बालक वृद्ध बात पित्तवाले क्षीण धातु निर्बल और जिनकादोष बहुत निकल गया हो इनसब को आमहोने परभी ग्राही औषध देनीचाहिये क्योंकि इनको केवल पाचक औषध देने से मृत्युहोती है बलवान को अतीसार में लंघनके सिवाय और कोई औषध नहीं हैं क्योंकि लंघन से

बहुत बढ़ेहुए दोष परिपाक और शान्ति को प्राप्तहोतेहैं अतीसार वाले को बहुत तृषा होनेपर आगे कहे हुए चार योग षडंग जलकी बिधिके अनुसार आधा जलबाकी रहजाने पर दोषों के परिपाक के लिये सेवनकराना चाहिये जैसे धनियां और सुगंधवाला का जल १ तृषा दाह युक्त अतीसारमें देना चाहिये सुगन्धवाला तथा सोंठ २ मोथा तथा पित्तपापड़ा ३ और मोथा तथा सुगन्धवाला ४ इनके द्वारा औंट कर आधा बचाहुआ शीतल जल तृषामें देना चाहिये अतीसार के पूर्वरूपमें पहले लंघन हितकारी है और लंघनके अन्तमें पतली तथा हलकी बस्तुका भोजन कराना चाहिये ॥ ४७४ ॥

पथ्यादारुवचामुस्तैर्नागरातिविषान्वितैः । आमातीसारनाशायक्काथमेभिःपिबेन्नरः इतिपथ्यादिक्काथः ॥ ४७५ ॥

पथ्यादिक्काथ ॥

हड़ देवदारु बच मोथा सोंठ और अतीस इनका काढ़ा आमातीसारका नाश करताहै ॥ ४७५ ॥

पाठाहिङ्ग्वाजमोदोग्रापञ्चकोलाङ्कजंरजः । उष्णाम्बुपीतंसरुजंजयत्यामंससैन्धवम् पाठादिचूर्णम् ॥ ४७६ ॥

पाठादिचूर्ण ॥

पाठा हींग अजवाइन बच और पंचकोल इनसबके चूर्णमें सेंधानोन मिलाकर गरमजलके साथ पीनेसे पीड़ायुक्त आमका नाशहोताहै ॥ ४७६ ॥

हरीतकीसातिविषाहिङ्गुसौवर्चलंवचा । सैन्धवञ्चापिसंपिष्यपाययेदुष्णवारिणा ॥ आमातिसारयोगोऽयंपाचयित्वाचिकित्सति । आमातीसारयोगोऽयंयद्येतेननशाम्यति ॥ नतंयोगशतेनापिचिकित्सतिचिकित्सकः ॥ इतिहरीतक्यादिकल्कः ॥ ४७७ ॥

हरीतक्यादिकल्क ॥

हड अतीस हींग कालानोन बच और सेंधानोन इनसब औषधियोंको पीसकर गरमजलके साथ पानकरानेसे पाचन होकर आमातीसारका नाशहोताहै जो आमातीसार इसयोगसेभी नशान्तहोवह सैकड़ोंयोगोंसे भी नहीं अच्छा होताहै ॥ ४७७ ॥

वत्सकातिविषाविल्वंमुस्तकंबालकंशटी । अतीसारंजयेत्सामंचिरजंरक्तशूलजित् ॥ इतिबत्सकादिक्काथः ॥ ४७८ ॥

बत्सकादि क्काथ ॥

कुरैया अतीस बेल सोंठ मोथा सुगन्धवाला और कचूर इनका क्काथ बहुत दिनके पुराने आमातीसार और रक्तशूलको नाशकरता है ॥ ४७८ ॥

एरण्डरससंपिष्टंपक्कमामञ्चनागरम् । आमातीसारशूलघ्नंपाचनंदीपनंपरम् ॥ नागरस्यपुटपाकःकल्कश्च ॥ ४७९ ॥

सोंठकापुटपाक और कल्क ॥

सोंठको रेंड़ीके रसमें पीसकर इसका कल्कसेवनकरनेसे अथवा पुटपाक करके सेवन करनेसे आमातसिार तथा शूलका नाशहोता है और यह पाचन तथा दीपन है ॥ ४७९ ॥

धान्यवालकविल्वाब्दनागरैःपाचितंजलम् । आमशूलविवन्धघ्नंपाचनंदीपनंपरम् ॥ इतिधान्यादिपञ्चकम् ॥ ४८० ॥

धान्यादि पंचक ॥

धनियां सुगन्धवाला बेल मोथा और सोंठ इनका काथ आम शूल तथा विबन्धनाशक और अत्यन्त दीपन पाचन होता है ॥ ४८० ॥

पित्ते धान्यचतुष्कन्तु शुण्ठीत्यागाद्वदन्ति हि । रक्तेऽपि पित्तसाधर्म्याद्देयं धान्यचतुष्टयम् ॥ इतिधान्यादिचतुष्कम् । इत्यामातीसारचिकित्सा ॥ ४८१ ॥

धान्यादि चतुष्क ॥

पित्तातीसारमें सोंठको छोड़कर धनियां आदिक चार औषधीदेनी चाहिये और रक्तातीसारमें भी ऐसाही करना चाहिये इत्यामातीसार चिकित्सा ॥ ४८१ ॥

सलोध्रंधातकीविल्वंमुस्ताम्रास्थिकलिङ्गकम् । पिबेन्माहिषतक्रेणपक्कातीसारनाशनम् ॥ लोध्रादिचूर्णम् ॥ ४८२ ॥

लोध्रादि चूर्ण ॥

लोध धवई बेल मोथा आमकी विजली और इन्द्रजौ इनऔषधियोंके चूर्णको भैंसके मट्ठेके साथ पीनेसे पक्कातीसारका नाश होताहै ॥ ४८२ ॥

समङ्गाधातकीपुष्पंमञ्जिष्ठालोध्रएवच । शाल्मलीवेष्टकोलोध्रोदाड़िमद्रुफलत्वचौ ॥ आम्रास्थिमध्यंलोध्रश्चविल्वमध्यंप्रियंगुच । मधुकंशृङ्गवेरञ्चदीर्घवृन्तत्वगेवच ॥ चत्वारःएतेयोगास्युःपक्कातीसारनाशनाः । एतेयोगाःउपयोज्याःस्युःसक्षौद्रस्तण्डुलाम्बुना ॥ समङ्गालज्जालू । शाल्मलीवेष्टकोमोचरसः ॥ दाड़िमस्यमद्रुफलयोःत्वचौ।प्रियङ्गोर्नपुंसकमत्रफलेवर्तमानत्वात् ॥ शृंगवेरमत्रशुण्ठी । दीर्घवृन्तःशोणाकस्तस्यत्वचः ॥ समंगादीनिचत्वारिचूर्णानि ॥ ४८३ ॥

लज्जालू धवईकेफूल मजीठ तथा लोध १ मोचरसलोध और अनारकीछाल तथा अनारका छिलका २ आमकी गुठलीका मध्य लोध बेल तथा प्रियंगु (ककुनी) के फल ३ मुलहठी सोंठ सोनापाढ़ेकीछाल और दालचीनी ४ यह चारोंचूर्ण पक्कातीसारको नाशकरते हैं यह चूर्णचावलके पानी और सहतके साथ सेवन करना चाहिये ॥ ४८३ ॥

कञ्चटदाड़िमजम्बूशृङ्गाटकपत्रवर्हिष्टम् । जलधरनागरसहितंगंगामपिवेगवाहिनीं रुन्ध्यात् ॥ कञ्चटचौराईशाकस्यभेदः । कञ्चटादिभिश्चतुर्भिःअत्रपंचशब्दःसम्बध्यते ॥ वर्हिष्ठंवालकम् । गंगाधरक्काथः ॥ ४८४ ॥

गंगाधर क्काथ ॥

कंचट (चौराईके सागकाभेद) अनार जामन सिंघाड़ा बेल सुगन्धवाला मोथा और सोंठ इनके क्काथके सेवनसे नदीके प्रवाहके समानभी दस्तोंका वेग रुक जाताहै कंचट आदिचार औषधियों की पत्तीलेनी चाहिये ॥ ४८४ ॥

मोचरसंमुस्तानागरपाठारलुधातकीकुसुमैः । चूर्णमथितसमेतंरुणद्धिगंगाप्रवाहमपिसद्यः॥अरलुःसोनापाठाः। मथितंनिर्ज्जलंदधिवस्त्रपूतम्॥ इतिगंगाधरचूर्णम् ४८५॥

गंगाधर चूर्ण ॥

मोचरस मोथा सोंठ पाठ! सोनापाठा और धवईकेफूल इनकाचूर्ण मथित (कपड़ेमें छानाहुआ जल रहित दही) के साथगंगाजीके भी प्रवाहको बन्दकर देताहै ॥ ४८५ ॥

मुस्तावत्सकबीजंमोचरसौबिल्वधातकीलोध्रम् । गुड़मथितसंप्रयुक्तंगंगामपिवेगवाहिनींरुन्ध्यात् ॥ इतिद्वितीयगंगाधरचूर्णम् ॥ ४८६ ॥

द्वितीयगंगाधर चूर्ण ॥

मोथा इन्द्रजौ मोचरस बेल धवईके फूल और लोध इनसबका चूर्णगुड़ और मथितकेसाथ गंगाजीके भी प्रवाहको बंदकर देताहै ॥ ४८६ ॥

मुस्तारलुकशुण्ठीभिर्धातकीलोध्रवालकैः। बिल्वमोचरसाभ्याञ्च पाठेन्द्रयववत्सकैः ॥ आम्रबीजंसमंगातिविषायुक्तैश्चचूर्णितैः।मधुतण्डुलपानीयंपीतंहंतिप्रवाहिकाम् ॥ हंति सर्व्वानतीसारान्ग्रहणींहंतिवेगतः । वृद्धंगंगाधरंचूर्णंरुन्ध्यात्गीर्वाणवाहिनीम् ॥ इति वृद्धगंगाधरचूर्णम् ॥ ४८७ ॥

वृद्धगंगाधर चूर्ण ॥

मोथा सोनापाढा सोंठ धवईकेफूल लोध सुगंधवाला बेलमोचरस पाढा इन्द्रजौ कुरैया आमकी गुठली लजालू और अतीस इनका चूर्ण सहत और चावलोंके पानीके साथ सेवन करनेसे प्रवाहिका सर्वअतीसार तथा ग्रहणीको नाशकरताहै और गंगाजीके भी प्रवाहको रोकसक्ता है ॥ ४८७ ॥

अङ्कोलमूलकल्कस्तण्डुलपयसासमाक्षिकःपीतः । सेतुरिववारिवेगंझटितिनिरुन्ध्यादतीसारम् ॥ अङ्कोलःढेलाइतिप्रसिद्धः ॥ ४८८ ॥

अंकोलकी जड़का कल्क चावलके पानी और सहतके साथ पीनेसे जलके वेगको बांधके समान अतीसारों को रोकता है ॥ ४८८ ॥

कुटजत्वक्तुलामार्द्रांद्रोणनीरेपचेद्भिषक् । पादशेषंशृतंनीत्वावस्त्रपूतंपुनःपचेत् ॥लज्जालूधातकीबिल्वंपाठामोचरसस्तथा । मुस्ताचातिविषाचैवचूर्णमेषांपलंपलम् ॥ निक्षिप्य विपचेत्तावद्यावद्दर्वीप्रलिप्यते । जलेनछागदुग्धेनपीतोमण्डेनवाजयेत् ॥ घोरान्सर्व्वानतीसारान्नानावर्णान्सवेदनान् । असृग्दरंसमस्तञ्चतथार्शांसिप्रवाहिकाम् ॥ इतिकुटजाष्टकावलेहः ॥ ४८९ ॥

कुटजाष्टकावलेह ॥

कुरैयाकी गीली ४०० तोले छालको एकहजार चौबीस तोले पानी में औटावे जब चौथाई रह जाय तबछानले और उस पानीको फिर चूल्हेपर चढ़ाकर लजालू धवईके फूल बेल पाढ़ा मोचरस मोथा और अतीस इन सब औषधियों का प्रथक् २ चार २ तोले चूर्ण डालकर तबतक औटावे जब तक कि वह करछी में लगनेलगे यह औषध जल बकरी का दूध अथवा मांड़ के साथ सेवन करने से अत्यन्त भयंकर पीड़ायुक्त अनेक प्रकार के रंगवाले अतीसार सबप्रकार के प्रदर बवासीर और प्रवाहिका का नाश करती है ॥ ४८९ ॥

कृत्वालवालंसुदृढंपिष्टैरामलकैर्भिषक् । आर्द्रकस्यरसेनाशुपूरयेन्नाभिमण्डलम् ॥ न

दीवेगोपमंघोरंप्रबद्धंदुर्द्धरंनृणाम् । सद्योऽतीसारमजयंनाशयत्येषयोगराट् ॥ पाठांपि ष्ट्वाचगोदध्नातथामध्यत्वगाम्रजा । अतीसारंव्यथानाहंहन्त्येवाशुनसंशयः ॥ ४९० ॥

आंवलों को पीसकर नाभि पर दृढ घेरासा बनाकर अदरक के रस से उसनाभिको ऊपरतकभर दे यह उत्तम योगनदी के समान बेगवाले भयंकर बहुत बढ़ेहुए कष्टदायक असाध्य अतीसार को भी नाश करता है पाढ़ाको गौके दहीमें पीसकर अथवा आमके वृक्षके भीतर की छालके साथ पीसकर सेवन करने से अतीसार व्यथा तथा दाह का नाश शीघ्रही निस्सन्देह होता है ॥ ४९० ॥

अथ वातातीसारस्यलक्षणमाह ॥

अरुणंफेनिलंरूक्षमल्पमल्पंमुहुर्मुहुः । शकृदामंसरुक्शब्दंमारुतेनातिसार्यते । अरुणमीषद्रक्तम् । शकृत्पुरीषम्सरुक्शब्दम् । शब्दोगुदेतत्साहचर्याद्रुगपिगुदएव बोद्धव्या ॥ ४९१ ॥

बातातीसार का लक्षण ॥

बातातीसार में कुछ लाल फेना युक्त रूखा और कच्चा मल शब्द तथा पीड़ा सहित बारंबार थोड़ा २ निकलता है ॥ ४९१ ॥

अथ तस्यचिकित्सा ॥

बचाचातिबिषामुस्तंबीजानिकुटजस्यच । श्रेष्ठःकषायएतेषांवातातीसारशान्तये४९२॥

बातातीसार की चिकित्सा ॥

बच अतीस मोथा और इन्द्रजौ इन औषधियों का काढ़ा बातातीसार के नष्ट करने को अत्यन्त श्रेष्ठ है ॥ ४९२ ॥

अथ पित्तातिसारलक्षणमाह ॥

पित्तात्पीतंशकृद्रक्तंदुर्गन्धिहरितंद्रुतम् । गुदपाकतृषामूर्च्छादाहयुक्तंप्रवर्त्तते४९३

पित्तातीसार का लक्षण ॥

पित्तातीसार में लाल पीला हरा दुर्गन्धित मल गुदाका पकना तृषा मूर्च्छा और दाह सहित निकलता है ॥ ४९३ ॥

अथ तस्यचिकित्सा ॥

विल्वशक्रयवाम्भोदबालकातिविषाकृतः । क्वाथःकषायोहन्त्यतीसारंसामंपित्तसमुद्भव मितिविल्वादि ॥ ४९४ ॥

पित्तातीसार की चिकित्सा ॥

बेल इन्द्रजौ मोथा सुगन्धवाला और अतीस इनऔषधियों के क्वाथसे आम सहितपित्तातीसार का नाशहोता है इतिबिल्वादि क्वाथ ॥ ४९४ ॥

रसाञ्जनंसातिविषंकुटजस्यफलत्वचम् । धातकींशृंगवेरञ्चपाययेत्तण्डुलाम्बुना ॥ निहन्तिमधुनापीतंपित्तातीसारमुल्वणम् । अग्निंसंदीपयेदेतच्छूलमाशुनिवारयेत् ॥ इतिरसाञ्जनादिचूर्णम् ॥ ४९५ ॥

रसौत अतीस कुरैयाकी छाल इन्द्रजौ धवई के फूल और सोंठ इनका चूर्ण चावलके पानी और सहत के साथ सेवन करने से बढ़ेहुए अतीसार तथा शूल का शीघ्रनाश होताहै और अग्नि दीप्ति होतीहै इति रसाञ्जनादि चूर्ण ॥ ४९५ ॥

अथ पित्तातीसारभेदस्यरक्तातीसारस्यलक्षणसंप्राप्तिमाह ॥

पित्ताकृतिर्यदात्यर्थं द्रव्यमश्नातिपैत्तिके । तदास्यजायतेऽभीक्ष्णंरक्तातीसारउल्वणः ॥ ४९६ ॥

पित्तातीसार का भेद रक्तातीसारका लक्षण और संप्राप्ति ॥

पित्तातीसार में पित्तकारी बस्तुओं के अधिक सेवन करने से अत्यन्त घोर रक्तातीसार उत्पन्न होता है ॥ ४९६ ॥

अथ तस्यचिकित्सामाह ॥

वत्सत्वग्दाड़िमतरुसलाटु फलसम्भवात्वक्च । त्वग्युगलंपलमानंविपचेदष्टांशसम्मितेतोये ॥ अष्टमभागशेषंक्वाथंमधुनापिवेत्पुरुषः । रक्तातीसारमुल्वणमतिशयितंनाशयेन्नियतम् ॥ इतिकुटजदाड़िमक्वाथः ॥ ४९७ ॥

रक्तातीसार की चिकित्सा कुटजदाड़िमक्वाथ ॥

कुरैयाकी छाल और कच्चे अनारका छिलका इनदोनोंको एकपललेकर अठगुने जलमें औटावैफिर अष्टमांशबाकी रहजानेपर सहत डालकर पिये उस्सेबहुत बढ़ेहुये रक्तातीसार का नाशहोताहै४९७॥

कुटजातिविषामुस्ताबालकंलोध्रचन्दनम् । धातकीदाड़िमंपाठाक्वाथमेषांसमाक्षिकम् ॥ पिवेद्रक्तातिसारेतुदाहशूलप्रशान्तये । कुटजादिकषायोऽयंसर्वातीसारनाशनः ॥ इतिकुटजादिक्वाथः ॥ ४९८ ॥ कुटजादि क्वाथ।

कुरैया अतीस मोथा सुगन्धवाला लोध लाल चन्दन धवई के फूल अनार और पाढ़ा इनके क्वाथ में सहत डालकर पीनेसे रक्तातीसार दाह शूल और सब प्रकारोंके अतीसारोंका नाश होताहै ४९८॥

कल्कस्तिलानांकृष्णानांशर्करापञ्चभागिकः । आजेनपयसापीतःसद्योऽतीसारनाशनः ॥ सवत्सकःसातिविषः सविल्वःसोदीच्यमुस्तश्चकृतःकषायः । सामेसशूलेसहशोणितेचचिरप्रवृत्तेपिहितोऽतिसारे ॥ कृष्णमृत्मधुकंलोध्रंकौटजंतण्डुलाम्बुना । पीतमेकत्रसक्षौद्रंरक्तसंग्राहणंपरम् ॥ ४९९ ॥

पिसेहुए काले तिल १ भाग और शक्कर ४ भाग इनको बकरी के दूध के साथ पीने से शीघ्रही अतीसार का नाश होता है कुरैया अतीस बेल सुगंधवाला और मोथा इनका क्वाथ आम शूल और रुधिर सहित बहुत पुराने अतीसारको भी नाश करता है काली मिट्टी मुलहठी लोध और इन्द्रजौ इन औषधियों को चावल के पानी और सहत के साथ पीने से रुधिर बन्द होताहै ॥ ४९९ ॥

गुड़ेनभक्षयेद्विल्वंरक्तातीसारनाशनम् । आमशूलविबन्धघ्नंकुक्षिरोगहरंपरम् ॥ इतिगुड़विल्वम् ॥ ५०० ॥

गुड़ विल्व।

गुड़केसाथ बेलखानेसे रक्तातीसार आमकी पीड़ा बिबन्ध और कोखके रोगोंका नाश होताहै५००॥

जम्ब्वाम्रामलकीनान्तुकुट्टयेत्पल्लवाननवान् । संगृह्यस्वरसन्तेषांमजाक्षीरेणयोजयेत् ॥ तत्पीतंमधुनायुक्तंरक्तातीसारनाशनम् । इतिजम्ब्वादिस्वरसः ॥ ५०१ ॥

जम्ब्वादि स्वरस।

जामन आम और आँवले के नये पत्तोंको कूटकर रस निकाले उसको बकरीके दूध में मिलाकर सहत डालकर पीनेसे रक्तातीसार का नाश होताहै ॥ ५०१ ॥

निकाथ्यमूलममलंगिरिमल्लिकायाः। सम्यक्पलद्वितयमम्बुचतुःशरावे ॥ तत्पादशेषसलिलंखलुशोषणीयम्। क्षीरेपलद्वयमितेकुशलैरजायाः ॥ प्रक्षिप्यमाषकानष्टौमधुनस्तत्रशीतले। रक्तातिसारीतत्पीत्वानैरुज्यंक्षिप्रमाप्नुयात्॥इतिकुटजक्षीरम् ॥ ५०२॥

कुटज क्षीर।

कुरैयाकी जड़ आठ तोले लेकर एक सौ अट्ठाईस तोले पानीमें औटावे फिर चौथाई बाकी रहने पर आठ तोले बकरी का दूध मिलावे फिर पानी जलकर केवल दूध बाकी रहने पर ठंढा करके आठ मासे सहत मिलाकर पिये इस्से शीघ्रही रक्तातीसार का नाश होताहै ॥ ५०२ ॥

पीत्वाशतावरीकल्कंपयसाक्षीरभुग्जयेत् । रक्तातीसारंपीत्वावातया।सिद्धंघृतंनरः ॥ शतावरीकल्कः ॥ ५०३ ॥

शतावरी कल्क ॥

शतावरि के कल्क को दूध के साथ पीनेसे अथवा शतावरि के द्वारा सिद्ध किये हुए घृतके सेवन से रक्तातीसारका नाश होताहै ॥ ५०३ ॥

गोदुग्धंनवनीतञ्चमधुनासितयासह। लीढंरक्तातीसारेतुग्राहकंपरमंमतम् ॥ नवनीतावलेहः ॥ ५०४ ॥

नवनीतावलेह ॥

गौकादूध मक्खन सहत औरशक्कर इनसबको मिलाकर चाटनेसे रक्तातीसारका नाशहोताहै५०४॥

पीतंमधुसितायुक्तंचन्दनंतण्डुलाम्बुना । रक्तातीसारजिद्रक्तपित्ततृड्दाहमेहनुत् ॥ चन्दनमत्रश्वेतचन्दनम्। इतिचन्दनकल्कः ॥ ५०५ ॥

चन्दन कल्क ॥

सफेद चन्दन सहत और शक्कर समेत चावल के पानी के साथ सेवन करने से रक्तातिसार रक्तपित्त तृषा दाह और प्रमेहका नाश होताहै ॥ ५०५ ॥

विरेकैर्बहुभि र्यस्यगुदंपित्तेनदह्यते । पच्यतेवातयोःकार्य्यंसेकप्रक्षालनादिकम् ॥ आदिशब्देनलेपादिग्रहः। पटोलयष्टीमधुकक्काथेनशिशिरेणहि ॥ गुदप्रक्षालनंकार्य्यंतेनैवगुदसेचनम्। दाहेपाकेहितंछागीदुग्धंसक्षौद्रशर्करम् ॥ गुदस्यक्षालनेसेकेयुक्तंपानेचभोजने। गुदस्यदाहपाकयोः ॥ ४०६ ॥

गुदाकेदाह और पकने की चिकित्सा ॥

अतीसार में बहुत दस्त आनेके कारण पित्तसे जो गुदा दाह युक्त होय और पकजाय तो परिषेक (सींचना) धोना और लेपादिक करे परवल और मुलहठीके शीतल क्काथ से गुदाको धोवे और सींचे गुदाके दाह तथापकनेमें शक्कर और सहत युक्त बकरीका दूध पीने तथा भोजन करने में और गुदाके धोने तथा सींचने में हितकारी है ॥ ५०६ ॥

अतिप्रवृत्त्यामहतीभवेद्यदिगुदव्यथा । स्विन्नमूषकमांसेनतदासंस्वेदयेत्गुदम् ॥

अथगोधूमचूर्णस्यसंशीतस्यतुवारिणा। साज्यस्यगोलकंकृत्वामृदुसंस्वेदयेत्गुदम्॥ अथगुदव्यथायाम्। गुदनिस्सरणेप्रोक्तंचांगेरीघृतमुत्तमम्॥ ५०७॥

बहुत दस्त आनेसे जो गुदामें बहुत पीड़ा होय तो मूसे के मांसको उबाल कर गुदामें उसका बफारादे गेहूंके आटेको पानीमें सानकर दूध मिलाके गोलाबनावै उस्से गुदामें धीरं २ स्वेददे गुदाके बाहर निकल आनेमें चांगेरी का घृत लगाना चाहिये॥ ५०७॥

गुदभ्रंशेगुदंस्नेहैरभ्यज्यान्तःप्रवेशयेत्। प्रविष्टंस्वेदयेत्मन्दंमूषकस्यामिषेणहि॥ मूषकस्यामिषेणकाञ्जिकेनस्विन्नेनएरण्डपत्रादिस्थापितेनस्वेदयेत्॥ ५०८॥

गुदभ्रंशरोग में गुदा में तैलादिक स्नेह लगाकर गुदाको भीतर घुसेड़े फिर कांजीमें पकेहुएमूसे के मांसको रेंड़ीके पत्ते पर रखकर स्वेद देवे॥ ५०८॥

शम्बूकमांसंसुस्विन्नंसतैललवणान्वितम्। ईषद्घृतेनचाभ्यज्यस्वेदयेत्तेनयत्नतः॥ गुदभ्रंशमशेषेणनाशयेत्क्षिप्रमेवच। मूषकस्याथवसयापायुंसम्यक्प्रलेपयेत्॥ गुदभ्रंशाभिधोव्याधिःप्रणश्यतिनसंशयः॥ ५०९॥

घोंघेके मांसको उबालकर तेल तथा नोन मिलाने और कुछ घी लगाकर उस्से यत्नपूर्वक स्वेद देवे इस्से शीघ्रही गुदभ्रंशका नाश होताहै मूसेकी चरबीको गुदामें लेप करनेसे गुदभ्रंशका नाश होता है॥ ५०९॥

चाङ्गेरीकोलदध्यम्लक्षारनागरसंयुतम्। घृतंविपक्वंपातव्यंगुदभ्रंशगदापहम्॥ चांगेरीचतुःपत्रीअमलोणिकातस्याःस्वरसः। कोलस्यक्वाथः॥ दध्यम्लंदधिरूपमम्लम्। एतत्त्रयंमिलितंघृताच्चतुर्गुणंक्षारनागरयोःक्वाथः॥ इतिचाङ्गेरीघृतम्॥ ५१०॥

चांगेरी घृत॥

चूकाका रस बेरका काढ़ा खट्टा दही और जवाखार तथा सोंठ का काढ़ा इन औषधियों के साथ परिपाक किये गये घृतके सेवनसे गुदभ्रंशका नाश होताहै इसमें चूका के रस आदि तीनों औषधियों का चौथाई घृत छोड़ना चाहिये॥ ५१०॥

कोमलंपद्मिनीपत्रंयःखादेच्छर्करान्वितम्। एतन्निश्चित्यनिर्दिष्टंनतस्यगुदनिर्गमः॥ पद्मिनीपत्रंसंशोष्यसंचूर्ण्यशर्करायुक्तंखादेत्। अयंतुगुदभ्रंशोऽतीसारंविनापिभवति ततःक्षुद्ररोगेषुलिखितः॥ अत्रगुदस्यदाहपाकव्यथाप्रसंगाद्भ्रंशोऽपिलिखितः। चिकित्सातूभयत्रतुल्यैव॥ ५११॥

कमलिनीके कोमल पत्ते को सुखाकर पीसके शक्करके साथ खाय इस्से निस्सन्देह गुदभ्रंशका नाश होताहै अतीसारके बिनाभी गुदभ्रंश होताहै वह क्षुद्र रोगोंमें लिखागयाहै और गुदाकेदाहपाक तथा व्यथा के प्रसंगसे यहांभी लिखदियाहै इसकी चिकित्सा दोनोंजगह समानहै॥ ५११॥

अथ श्लेष्मातीसारस्यलक्षणं॥

श्वेतंस्निग्धंघनंबद्धंशीतलंमंदवेदनम्।गौरवारुचिसंयुक्तंश्लेष्मणासार्यतेशकृत् ५१२॥

कफातीसारका लक्षण ॥

कफातीसारमें स्वेद स्निग्धघना शीतल और बंधाहुआमल कुछपीड़ाके साथ निकलताहै इस में अरुचि और शरीरमें भारीपन होताहै ॥ ५१२ ॥

अथ तस्यचिकित्सा

श्लेष्मातिसारेप्रथमंहितंलंघनपाचनम् । योज्यश्चामातिसारघ्नोयथोक्तोदीपनो गणः ॥ ५१३ ॥

कफातीसार की चिकित्सा ॥

कफातीसार में पहले लंघन तथा पाचन हितहै और आमातीसार नाशक कहाहुआ दपिनगण देना चाहिये ॥ ५१३ ॥

चव्यंसातिविषामुस्तंबालविल्वंसनागरम् । वत्सकत्वक्फलंपथ्याछर्दिश्लेष्मातिसा रनुत् ॥ चव्यादिक्काथः ॥ ५१४ ॥

चव्यादि क्काथ ॥

चव्य अतीस मोथा कच्ची बेलगिरी कुरैयाकी छाल इन्द्रजौ सोंठ और हड़ इनकाक्काथ छर्दि और कफातीसारको नाशकरताहै ॥ ५१४ ॥

हिङ्गुसौवर्च्चलंव्योषमभयातिविषावचा। पीतमुष्णाम्बुनाचूर्णमेषांश्लेष्मातिसारनुत्॥ हिंग्वादिचूर्णम् ॥ ५१५ ॥

हिंग्वादिचूर्ण ॥

हींग कालानोन त्रिकटु हड अतीस और बच इनका चूर्ण गरम जलके साथ पीने से कफातीसार को नाश करताहै ॥ ५१५ ॥

कृमिशत्रुवचाविल्वपाठाधान्याककट्फलम्। एषांक्काथंभिषग्दद्यादतीसारेद्विदोषजे। तेषांचिकित्साप्रोक्तैवविशिष्टाचनिगद्यते । कट्फलंमधुकंलोध्रंत्वक्दाड़िमफलस्यच ॥ सतण्डुलजलंचूर्णंवातश्लेष्मातिसारनुत् । इतिवातश्लेष्मातिसारेचित्रकातिविषामुस्तं वालबिल्वंसनागरम् ॥ वत्सकत्वक्फलंपथ्यावातपित्तातिसारनुत्। इतिवातपित्तातिसा रेमुस्तासातिविषामूर्व्वावचाचकुटजःसमाः। एषांकषायःसक्षौद्रःपित्तश्लेष्मातिसारनुत्॥ इतिपित्तश्लेष्मातिसारे ॥ ५१६ ॥

बायविडंग वच बेल पाठा धनियां और कायफल इनका क्काथ दो दोषसे उत्पन्न हुए अतीसारमें देना चाहिये बात कफातीसार की चिकित्सा कायफल मुलहठी लोध अनारका छिलका इन औष- धियोंके चूर्णको चावलके पानीके साथ सेवन करनेसे बात कफातीसारका नाश होताहै बात पित्ता- तीसारकी चिकित्सा चीता अतीस मोथा कच्चाबेल सोंठ कुरैयाकीछाल इन्द्रजौ और हड इनके काढ़ेसे बात पित्तातीसारका नाश होताहै पित्त कफातीसारकी चिकित्सा मोथा अतीस मरोरफली बच्च और कुरैया इनसब बराबरभागके काढ़ेमें सहत डालकर पीनेसे पित्तकफातीसारका नाशहोताहै५१६॥

अथ सन्निपातातीसारस्यलक्षणम् ॥

तन्द्रायुक्तोमोहसादास्यशीर्षा वर्च्चःकुर्य्यात्नैकरूपंतृषार्त्तः । सर्व्वोद्भूतेसर्व्वलिंगोपप त्तिःकृच्छ्रैःसाध्योबालवृद्धाऽवलानाम् ॥ ५१७ ॥

सन्निपातातीसारका लक्षण ॥

सन्निपातातीसारमें तीनों दोषोंके लक्षणहोतेहैं और तन्द्रा मोह शिथिलता मुखकासूखना अनेक प्रकारके मलका निकलना और तृषा होतीहै यह बालक वृद्ध और स्त्रियोंको कष्ट साध्यहै ॥५१७॥

अथतस्यचिकित्सा । पञ्चमूलीबलाबिल्व गुडूचीमुस्तनागरैः ॥ पाठाभूनिम्बवर्हि ष्टकुटजत्वक्फलैःसृतम् । सर्वजंहन्त्यतीसारंज्वरञ्चापितथावमिम् ॥ सशूलोपद्रवंश्वा संकासंचापिसुदुस्तरम् । पञ्चमूलञ्चसामान्यंपित्तेयोज्याकनीयसि ॥ वातेपुनर्वलासेच सायोज्यामहतीमता ॥ इतिपञ्चमूल्यादिकःक्काथः ॥ ५१८ ॥

सन्निपातातीसार की चिकित्सा ॥

पंचमूल बरियारा बेल गिलोय मोथा सोंठ पाठा चिरायता सुगन्धबाला कुरैयाकीछाल और इन्द्र-जौ इन औषधियोंके काढ़ेसे पीड़ा तथा उपद्रव सहित सन्निपातातीसार ज्वर छर्दि श्वास और दुस्तर खांसीका नाश होताहै सन्निपातातीसारमें जो पित्त अधिक होय तो छोटा पंचमूल और जो बात तथा कफ अधिक होय तो बड़ा पंचमूल ग्रहण करना चाहिये इति पंचमूल्यादि क्काथ ॥ ५१८ ॥

अभयानागरंमुस्तंगुडेनसहयोजितम् । चतुःसमेयंगुटिकास्यात्सर्वातीसारनाशनम् ॥ अमातीसारमानाहंसाविबन्धंविसूचिकाम् । कृमीनरोचकंहन्याद्दापयत्याशुचानलम् ॥ (इतिचतुःसमोमोदकः) ॥ ५१९ ॥

हड़ सोंठ मोथा और गुड़ इन चारोंको समभाग लेकर मोदक बनावे उसके सेवनसे आमातीसार सब प्रकारके अतीसार आनाह बिबंध विशूचिका कृमितथा अरुचिका नाश होताहै और शीघ्रही अग्नि दीप्ति होतीहै इति चतुस्सम मोदक ॥ ५१९ ॥

तत्कालाकृष्टकुटजत्वंचतण्डुलवारिणा । पिष्ट्वाचतुःपलमितांजंबूपत्रेनवेष्टिताम् ॥ सूत्रेणवध्वागोधूमपिष्टेनपरिवेष्टिताम् । लिप्ताञ्चघनपङ्केननिर्दहेद्गोमयाग्निना ॥ अंगारवर्णाञ्चमृदंदृष्ट्वावह्नेःसमुद्धरेत् । ततोरससमादायशीतंक्षौद्रयुतंपिवेत् ॥ उक्तःकृष्णात्रिपुत्रेणपुटपाकस्तुकौटजः । जयेत्सर्वानतीसारान्रक्तजान्सुचिरोत्थितान् ॥ (इतिकुटजपुटपाकः) ॥ ५२० ॥

चारपल कुरैयाकी ताजीछालको चावलोंके पानीमें पीसकर जामनके पत्तेमें सूतसे बांधे फिर उसपर गेहूंके आटेको लपेट कर गाढ़ीगाढ़ी मट्टीसे लेप करदे और कंडोंकी अग्निमें पाककरे जब देखे कि मट्टी लाल होगईहै तब अग्निसे निकालले फिर तोड़कर उसके रसको निकालकर ठंढा होनेपर सहत डालके पिये इस्से सब प्रकारके अतीसार और पुराने रक्तातीसारका नाश होताहै यह कृष्णा-त्रिपुत्रने कहाहै इति कुटज पुटपाक ॥ ५२० ॥

कुटजत्वक्कृतःक्काथोवस्त्रपुतोहिमीकृतः । सलीढोऽतिविषयुक्तःस्यात्त्रिदोषातिसारनुत् ॥ इच्छन्त्यत्राष्टमांशेनक्काथादतिविषरजः । लेहः । प्रक्षेपयेत्चतुर्थांशमितिकेचिद्वदन्तिहि ॥ (इतिकुटजावलेह) ॥ ५२१ ॥

कुरैयाके छालके काढ़ेको बस्त्रमें छानकर अष्टमांश अतीसका चूर्ण मिलाकर चाटे इस्से सन्नि-

पातज अतीसारका नाश होताहै इसमें कोई कोई पंडित काढ़ेका चौथाई अतीस मिलाना चाहिये ऐसा कहतेहैं इति कुटजावलेह ॥ ५२१ ॥

पलमङ्कोटमूलस्यपाठांदार्व्वीञ्चततसमाम् । पिष्ट्वातण्डुलतोयेनवटकानक्षसंमितान् ॥ छायाशुष्कांश्चतान्कुर्य्यात्तेष्वेकंतण्डुलाम्बुनापेषयित्वाप्रदद्यात्तंपानायगदिनेभिषक् । वातपित्तकफोद्भूतान्द्वन्द्वजान्सन्निपातिकान् ॥ हन्यात्सर्वानतीसारान्वटकोऽयंप्रयोजितः । (इतिअङ्कोटवटकः) ॥ ५२२ ॥

हिंगोट की जड़ पाठा और दारुहल्दी इनसब औषधियों को एक २ पल लेकर चावलों के जलमें पीसकर तोले २ भर का बडा बनावे और छायामें सुखावे फिर एक बड़ा चावल के पानी में पीसकर पिलावे इससे बातज पित्तज कफज द्वन्द्वज और सन्निपातज सब प्रकारके अतीसारों का नाश होताहै इति अंकोट बटक ॥ ५२२ ॥

अथागन्तुजस्यशोकातीसारस्यसंप्राप्तिपूर्व्वकंलक्षणमाह ॥

तैस्तैर्भावैःशोचतोऽल्पाशनस्यवाष्पोष्मावैवह्निमाविश्यजन्तोः ॥ कोष्ठंगत्वाक्षोभयेत्तस्यरक्तंतच्चाधस्तात्काकणन्तीप्रकाशं ॥निर्गच्छेद्वैविड्विमिश्रंह्यविड्वानिर्गन्धंवागन्धवद्वातिसारः। शोकोत्पन्नोदुश्चिकित्स्योऽतिमात्रंरोगोवैद्यैःकष्टएषप्रदिष्टः ॥ अयमर्थः । तैस्तैर्भावैःबन्धुवित्तक्षयादिभिःशोचतःशोकंकुर्व्वतःजन्तोःप्राणिनःवाष्पोष्णावाष्पःशोकजःदेहोष्मणाजनितंनेत्रनासागलादिषुजलंतेनसहितः । ऊष्माशोकजंदेहतेजः । सकोष्ठङ्गत्वावह्निमाविश्यजठराग्निःमन्दीकृत्वा । बाष्पसाहित्यादुष्मणापिवह्नेर्मन्दीभावःइतिनदोषः। वह्नेर्मन्दीभावादेव । अल्पाशनस्येति । जन्तोर्विशेषणम् । ततस्तस्यजन्तोःरक्तंक्षोभयेत् स्वस्थानाच्चालवेदितिसंप्राप्तिः । अथलक्षणम् । तच्चरक्तंअधस्ताद्गुदात् । काकणन्तीप्रकाशम्। गुञ्जाफलसदृशम्। विड्विमिश्रंगन्धवच्च । अविट्निर्गन्धंवानिर्गच्छेत्शोकोत्पन्नोऽतीसारः । अतिमात्रंदुश्चिकित्स्य । शोकापनोदनंविनाकेवलेनभेषजेनप्रतीकर्त्तुमशक्यत्वात् । एषोऽतीसारःकष्टसाध्यःकथितः ॥ ५२३ ॥

आगन्तुजशोकातीसार का संप्राप्ति समेत लक्षण ।

बन्धु और धन आदिकों के नाश होनेसे शोच करतेहुए थोड़ा भोजन करने वाले मनुष्य की नासिका तथा गले आदिसे उत्पन्न जल और शोकजनित शरीर की ऊष्मा एक साथ कोष्ठमें जाकर जठराग्नि को मंद करके रुधिर को बिगाड़तीहै वह रुधिर मलयुक्त अथवा मल रहित गन्ध युक्त अथवा गंधरहित होकर घोंघचीके समान गुदाके द्वारा निकलताहै इसको शोकातीसार कहते हैं यह रोग अत्यन्त कष्टसाध्यहै यहां बाष्प सहित होनेके कारण ऊष्मासेभी अग्निके मन्द होने में कोई दोष नहींहै ॥ ५२३ ॥

अथागन्तुजेनभयातीसारस्यसंप्राप्तिपूर्व्वकंलक्षणमाह ॥

भयेनक्षोभिताःदोषाःदूषयंतिमलंतदातिसार्यतेजंतुःक्षिप्रमुष्णंजलंप्लवम् । वातपित्तातीसारस्यप्रायोलिंगैःसमन्वितम् ॥ अभयोपशमाच्छम्र्येयस्मिन्स्यात्सभयात्स्मृतः

प्लवतिप्लवम् ॥ जलेप्लवमानम् । ननुभयातिसारस्यकथमागंतुजत्वमयमपिदोषजएव । यतआह । भयेनक्षोभितादूषितादोषामलंदूषयंतितंमलमतिसरति । अत्रपूर्व्वमेव दोषसम्बन्धः।उच्यते।रागद्वेषभयाद्यैवतेस्युरागंतवोगदाइतिवचनाद्भयातीसारआगन्तु जएव ॥ भयेनैवहेतुभूतेनदोषावातपित्तकफाःअतीसारंजनयंतिक्षोभितासञ्चालिताः ननुदूषिताभयेनत्रयाणामपिदोषाणां दूषणासम्भवात्अतिसर्त्तुंचलितावातपित्तकफाम लंदूषयंतितत्सर्व्ववातपित्तकफमलंभयेनैवातिसार्य्यते। पश्चाद्वातसम्बन्धेनभयाद् वायुरितिवचनात् ॥ अतएवभयातिसारेवातहर्षैवक्रियाकथितेतिसाधुः ॥ ५२४ ॥

आगन्तुकभयातीसारका संप्राप्ति पूर्व्वक लक्षण ॥

भयातीसार में भयके द्वारा क्षोभित दोषजब मलको दूपित करते हैं तब शीघ्रही जलमें बहता हुआ उष्ण और बात पित्तके अतीसारके चिह्नों से युक्तमल निकलताहै भयकी शान्तिसे सुखहोताहै इस्से इसको भयातीसार कहते हैं अबयह सन्देह होताहै कि भयातीसार दोषजहै इसको आगन्तुक क्यों कहते हैं और कहाभी गयाहै कि भयके द्वारा क्षोभित (चलायमान) दोषयुक्त वातादि दोषमलको दूषित करके अतीसारको उत्पन्न करतेहैं इस वचनके द्वारा रोग उत्पन्न होनेके पहलेही दोषोंका संबन्ध सूचित होताहै इसका उत्तर यहहै कि रागद्वेष और भयसे उत्पन्न रोग आगन्तुक कहलाते हैं इस वचनके द्वारा भयातीसार आगन्तुक है यहां भयके द्वारा दूषित दोषयह अभिप्रायनहीं क्योंकि तीनोंदोषोंका दूषित होना भयके द्वारा असंभव है अतीसारके लिये चलायमान वातपित्त और कफ मलको दूषित करतेहैं वह सम्पूर्ण वातपित्त कफका मल भयके द्वारा निकलता है और पीछे भयके द्वारा बायुहोतीहै इस वचनके अनुसार बायुका संबंध होताहै इसीसे भयातीसारमें बातनाशक क्रिया कही गईहै ॥ ५२४ ॥

अथ तयोश्चिकित्सा । भयशोकसमुद्भूतौज्ञेयौवातातिसारवत् ॥ तयोर्वातहरीका र्य्याहर्षणाश्वासनैःक्रिया । वातातिसारवत्वातातिसारलक्षणयोःतयोश्चिकित्साचहर्षण श्वासनपूर्विकावातहरीकर्त्तव्या ॥ ५२५ ॥

शोकातीसार और भयातीसारकी चिकित्सा ॥

भय और शोकजनित अतीसारमें हर्ष और आश्वास पूर्व्वके वातातीसारके समान वात नाशक चिकित्सा करनी चाहिये ॥ ५२५ ॥

अथामातीसारस्यसंप्राप्तिपूर्वकंलक्षणमाह ॥

अन्नाजीर्णात्प्रद्रुताःक्षोभयंतोदोषाः कोष्ठेधातुसंघान्मलांश्च । नानावर्णनैकशःसार यंतिशूलोपेतंषष्ठमेनंवदंति ॥ अन्नंभुक्तंतदजीर्णञ्चेतिकर्म्मधारयेअन्नाजीर्णम्तस्मात् प्रद्रुताक्षोभयन्तःचालयन्तः । नैकशइत्यत्रनाकादित्वान्नाक्षरविपर्य्ययःनत्वामेनदोषादू ष्यन्तेगुर्वादिभक्षणादिभिरिवतेचातीसारमुत्पादयन्ति ॥ नत्वामेनातीसारमुत्पादयन्ति। तेनामातीसारोऽपिदोषजएव किमर्थंपृथगुक्तम् उच्यते ॥ अथामातीसारस्याचिकित्सा ॥ अतीसारेषुसर्व्वेषुएवसंग्राहकमौषधमुक्तमामातीसारेतुग्राहकंनिषिद्धम् ॥ यतउक्तम्नामे

संग्राहकंदद्यादतीसारेकदाचन। संगृहीतोवलादामोविकारान्कुरुतेवहून् ॥ वलाद्भे षजवलात्विकारात्ग्रहण्याध्मानशूलगुल्मशोथोदरज्वरादीन् ॥ ५२६ ॥

आमातीसारका संप्राप्ति पूर्वक लक्षण ॥

अन्नके अजीर्ण होने से वात पित्त और कफ अपने २ मार्गसे हटकरके रस रक्तादिक धातुओंको और मलों को कोष्ठ में चलायमान करतेहुए क्रीड़ाके साथ अनेकप्रकार के वर्णयुक्त मलको बारम्बार निकालते हैं यह छठा आमातीसार कहाताहै अबयह सन्देह होताहै कि भारी आदि वस्तुओंकेद्वारा जैसे दोष दूषित होतेहैं उसीप्रकार आमके द्वारा दूषित होतेहैं और नहीं अतीसारको उत्पन्नकरते हैं आम अतीसारको नहींउत्पन्न करता इसलिये आमातीसार भी दोषजहै इसको अलग क्योंकहा इस का उत्तर यह है कि सबप्रकार के अतीसारों में ग्राही औषध दीजाती है परन्तु आमातीसार में ग्राही औषधका निषेध है क्योंकि कहागयाहै कि आमातीसारमें ग्राही औषधि कभी न देना चाहिये क्यों- कि औषधके बलके द्वारा आमको रोकने से ग्रहणी अफरा शूल गुल्म सूजन उदर और ज्वरादिक अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं ॥ ५२६ ॥

तस्याचिकित्सा ॥

वत्सकातिविषाशुण्ठीविल्वहिंगुयवाम्बुदाः । चित्रकेणयुतैःक्काथःआमातीसारनाश नः ॥ शोथातीसारस्यचिकित्सा । शोथघ्नीन्द्रयवाःपाठाश्रीफलातिविषाघनाः ॥ क्वथि ताःसोषणाःपीताःशोथातीसारनाशनाः ॥ शोथघ्नीपुनर्नवा। उषणंमरिचं ॥ इतिशोथा तीसारः ॥ ५२७ ॥

आमातीसार की चिकित्सा ॥

कुरैया अतीस सोंठ बेल हींग इन्द्रजौ और चीता इनके काढ़ेसे आमातीसारका नाश होताहै सू- जन वाले अतीसार की चिकित्सा पुनर्नवा इन्द्रजौ पाठा बेल अतीस और मोथा इनके काढ़ेमें मिर्च डालकर पीनेसे सूजन युक्त अतीसार का नाश होताहै ॥ ५२७ ॥

आम्रास्थिमध्यमालूरफलक्काथःसमाक्षिकः । शर्करासहितोहन्यात्छर्द्यतीसारमुल्ब णम् ॥ मालूरफलंविल्वफलं । कषायोभृष्टमुद्गस्यसलाजमधुशर्करः ॥ निहन्याच्छर्द्यती सारंतृष्णांदाहंज्वरंभ्रमम् ॥ इतिछर्द्यतीसारः ॥ ५२८ ॥

आमकी बिजली और बेलके क्वाथ में शक्कर और सहत डालकर पीनेसे छर्दि अतीसार का नाश होताहै भुनीहुई मूंगके काढ़े में खील सहत और शक्कर डालकर पीनेसे छर्दिअतीसार तृषा दाह ज्वर और भ्रमका नाशहोता है इतिछर्दिअतीसार ॥ ५२८ ॥

दध्नाससारेणसमाक्षिकेणभुञ्जीतनिःसारकपीडितस्तु । सुतप्तकुप्यक्कथितेनवापिक्षी रेणशीतेनमधुप्लुतेन ॥ निसारकःनिठाहीतिलोके । सुतप्तकुप्यक्कथितेनसुतप्तसुवर्णरजत निर्वापणक्कथितेनभुञ्जीतपथ्यमितिशेषः ॥ निःसारके ॥ ५२९ ॥

मरोड़ेसे पीड़ित मनुष्य बिना मक्खन निकला दही और सहतके साथ पथ्य भोजन करे अथवा सोने या चांदीसे बुझाये हुए दूधको शीतल करके सहत डाल पथ्यसे भोजन करे ॥ ५२९ ॥

दीप्ताग्निर्निःपुरीषोयःसार्य्यतेफेनिलंशकृत् । सपिवेत्फाणितंशुण्ठीदधितैलंपयोघृतम् ॥

वलाविश्वाशृतंक्षीरंगुड़तैलानुयोजितम् । दीप्ताग्निंपाययेत्प्रातःसुखदंवर्चसःक्षये ॥ पुरीषक्षये ॥ ५३० ॥

दीप्ताग्नि वाले पुरुषको मलके नाश होजाने पर जो फेनायुक्त पतले दस्त आवें तो सोंठ दही तिलका तेल दूध और घी मिलाकर पिये बरियारा और सोंठके द्वारा दूधका पाक करके गुड़ और तेल छोड़कर प्रातः काल पीनेसे दीप्ताग्नि वालेको मलके क्षय होजाने पर सुख होताहै ॥ ५३० ॥

तुलांसंकुट्यबिल्वस्यपचेत्पादावशेषितम् । सक्षीरंसाधयेत्तैलंश्लक्ष्णापिष्टैरिमैःसमैः बिल्वंसधातकींकुष्ठंशुण्ठीरास्नापुनर्नवाः । देवदारुवचामुस्तंलोध्रमोचरसान्वितम् ॥ एभिर्मृद्वग्निनापक्वंग्रहण्यर्शोऽतिसारनुत् । बिल्वतैलमितिख्यातमत्रिपुत्रेणभाषितम् ॥ ग्रहण्यर्शोऽधिकारेयेस्नेहाःसमुपदर्शिताः । प्रयोज्यास्तेऽतिसारेऽपित्रयाणांतुल्यहेतुना ॥ इतिबिल्वतैलम् ॥ ४३१ ॥

चारसौ तोले वेल गिरीको कूटकर १०२४ एकहजार चौबीस तोले जलमें औटावे फिर चौथाई बाकी रहजाने पर तिलका तेल तथा दूधडाले फिर बेलगिरी धवईके फूल कूट सोंठ रासना पुनर्नवा देवदारु बच मोथा लोध और मोचरस इन सबको बराबर भाग लेकर छोड़कर मंदाग्निमें पाक करे यह बिल्व तैल ग्रहणी बवासीर तथा अतीसारको नाश करताहै ग्रहणी और बवासीर के अधिकारमें जो स्नेह कहे गयेहैं वह अतीसार में भी काममें लाने चाहिये क्योंकि यह तीनों समान हेतुवाले हैं इति बिल्व तैल ॥ ५३१ ॥

अथातीसारस्यभेदःप्रवाहिकातस्याःसंप्राप्तिपूर्वकंलक्षणमाह ॥

वायुःप्रवृद्धोनिचितंबलासंनुदत्यधस्तादहिताशनस्य । प्रवाहतोऽल्पंबहुशोमलाक्तंप्रवाहिकांतांप्रवदन्तितज्ज्ञाः ॥ अस्यायमर्थःअहिताशनस्यअतिशयेनवातलभक्ष्यभोजिनःप्रवृद्धोवायुःप्रवाहतः कण्ठेहृद्बलेनसशब्दंवायुमपानमार्गेणत्यजतःनिचितंसञ्चितंबलासंकफंमलाक्तंपुरीषयुक्तंअल्पंबहुशः वारंवारंअधस्ताद् गुदात्नुदतिवैद्याः तांप्रवाहिकां प्रवदन्ति ॥ ५३२ ॥

अतीसारकी भेद प्रवाहिकाका संप्राप्ति पूर्व्वक लक्षण ॥

अत्यन्त वायुबर्द्धक आहारके करनेसे कुपितहुई वात संचित कफको नीचे लेजाती है इसलिये बहुत अपशब्दों सहित बारम्बार थोडामल संयुक्तकफ गुदाकेद्वारा निकलताहै इसरोगको वैद्यलोग प्रवाहिका कहते हैं ॥ ५३२ ॥

तस्यावातजादिभेदेनरूपमाह ॥

प्रवाहिकावातकृतासशूलापित्तात्सदाहासकफाकफाच्च । सशोणिताशोणितसम्भवाच्चताःस्नेहरूक्षप्रभवामतास्तु । तत्ररूक्षप्रभवावातजास्नेहप्रभवाकफजातुशब्दात्तीक्ष्णोष्णप्रभवापित्तजारक्तजाच ॥ तासामतीसारवदादिशेच्चलिङ्गंक्रमंचामविपक्कतांच॥५३३

बातजादिभेदों सेप्रवाहिकाके लक्षण ॥

वातज प्रवाहिका पीड़ा सहित पित्तज प्रवाहिका दाह युक्त कफज प्रवाहिका कफ सहित और रक्तज प्रवाहिका रक्त सहित होतीहै रूखी वस्तुओंसे बातज स्नेहोंके सेवनसे कफज और तीक्ष्ण

तथा उष्ण वस्तुओंके सेवनसे पित्तज तथा रक्तज प्रबाहिका उत्पन्नहोती हैं प्रबाहिकाओं के लक्षण क्रम और आमका परिपाक यह सब अतीसारोंके समान जानने चाहिये ॥ ५३३ ॥

तस्याश्चिकित्सामाह ॥

विल्वपेशीगुडंलोध्रंतैलंमरिचसंयुतम्। लीढ्वाप्रवाहिकाक्रान्तःसत्वरंसुखमाप्नुयात् ॥ विल्वादिरवलेहः॥ ५३४ ॥

प्रबाहिका की चिकित्सा ॥

बेल पुरानागुड़ लोध तिलका तेल और मिर्च इन सबको एकमें मिलाकर चाटने से प्रबाहिका का नाशहोताहै ॥ इति विल्वाद्यवलेह ॥ ५३४ ॥

धातकीवदरीपत्रंकपित्थंरसमाक्षिकम्। सलोध्रमेकतोदध्ना पिवेन्निर्वाहिकार्दितः॥एकतःप्रत्येकंदध्नापिवेदित्यर्थः। इतिधातक्यादिः ॥ ५३५ ॥

धवईके फूल वेलकी पत्ती कैथेका रस सोनामक्खी और लोध इनमें से किसी एकको दही के साथ खाने से प्रबाहिका का नाशहोताहै ॥ इति धातक्यादि ॥ ५३५ ॥

अथासाध्यातीसारिणांलक्षणमाह ॥

पक्वजाम्बवसङ्काशंयकृत्खण्डनिभंतनुत्। घृततैलवसामज्जावेसवारपयोदधि ॥मांसधावनतोयाभंकृष्णंनीलारुणप्रभम्। कर्वुरंमेचकंस्निग्धंचन्द्रिकोपगतंघनम्॥ कुणपंमस्तुलुङ्गाभंसगन्धंक्वथितंवहु। तृष्णादाहारुचिश्वासहिक्कापार्श्वास्थिशूलिनम्॥ संमूर्च्छारतिसंमोहयुक्तंपक्ववलीगुदम्। प्रलापयुक्तञ्चभिषग्वर्जयेदतिसारिणम्॥ असंवृतगुदंक्षीणंशूलाध्मानैरुपद्रुतम्। गुदेपक्वेगतोष्माणमतीसारिणमुत्सृजेत् ॥ असंवृतगुदंगुदसंवरणाक्षमम्। गुदेपक्वेगुदपाकारम्भकेपित्तेविद्यमानेपिशीतगात्रंनष्टाग्निंवा ॥ श्वासशूलपिपासार्त्तंक्षीणंज्वरनिपीड़ितम्। बिशेषेणनरंवृद्धंअतीसारोविनाशयेत् ॥ शोथंशूलंज्वरंतृष्णांश्वासंकासमरोचकम्। छर्दिमूर्च्छांचहिक्काञ्चदृष्ट्वातीसारिणमुत्यजेत्॥ हस्तपादाङ्गुलीसन्धिप्रपाकोमूत्रनिग्रहः । पुरीषस्योष्णतातीवमरणायातिसारिणः ॥ अतीसारीराजरोगीग्रहणीरोगवानपि । मांसाग्निवलहीनोयोदुर्लभंतस्यजीवनम्॥ वालेवृद्धेत्वसाध्योऽयंलिङ्गैरेतैरुपद्रुतः अपियूनामसाध्यंस्यादतिदुष्टेषुधातुषु ॥ ५३६ ॥

असाध्य अतीसारवालों के लक्षण ॥

जिस अतीसार में रोगीका मल पक्की जामनके समान तथा यकृतके खंडके समान वर्ण वाला हो पतलाहो घी तेल चरबी मज्जा बेसवार दूध अथवा दहीके तुल्य अथवा मांसके धोवनके समान होय काला नीला लाल अंजन अथवा मोरकी पूँछके समान सचिक्कण तथा नाना प्रकारके वर्णों से युक्तहोवे वह रोगी असाध्यहै जिस रोगीका मल दुर्गन्धयुक्त अथवा सुगंधित भेजेके समान बहुतसा निकले वह असाध्यहै अतीसारमें तृषा दाह अरुचि श्वास हिचकी पसली तथा हड्डियों में पीड़ा मूर्च्छा व्याकुलता मोह गुदाके चक्रोंका पकना और प्रलापहोय तो असाध्य जानना चाहिये जिस अतीसारवालेको गुदाके बन्दकरने की शक्ति न होय शूल तथा अफराहोय गुदा पकजाय और ऊष्मा

न रहे उसको वैद्य त्यागदेवे जो अतीसारवाला श्वास शूल तथा तृषा से व्याकुल क्षीण और ज्वर से युक्तहो वह असाध्यहै वृद्ध मनुष्यको विशेषकरके अतीसार मारताहै सूजन शूल ज्वर तृषा श्वास खांसी अरुचि छर्दि मूर्च्छा और हिचकी इनसे युक्त अतीसार असाध्य होताहै जिस अतीसारमें हाथ पैर उंगली तथा संधियां पकी हुईसी मालूम पड़ें मूत्र रुकजाय और मल बहुतगरमहो वह असाध्य है अतीसार राजयक्ष्मा और ग्रहणीवाले जो मनुष्य मांस अग्नि तथा बलसे क्षीणहैं उनका जीना दुर्लभहै बालक और वृद्धोंका अतीसार इन सम्पूर्ण उपद्रवों से युक्तहोने पर असाध्य होताहै और धातुओंके अत्यन्त दूषित होजानेपर युवा पुरुषका भी अतीसार असाध्य होजाताहै ॥ ५३६ ॥

अथातीसारमुक्तस्यलक्षणम् ॥

यस्योच्चारंविनामूत्रंसम्यग्वायुश्चगच्छति । दीप्ताग्नेर्लघुकोष्ठस्यस्थितस्तस्योदरामयः ॥ ५३७ ॥

गयेहुए अतीसार के लक्षण ॥

जिसको मल त्यागकरनेके समय के बिना भी मूत्र तथा अपानवायु अच्छेप्रकारसे निकले अग्नि दीप्तहो कोष्ठ हलका होजाय उसको अतीसार रहित जानना चाहिये ॥ ५३७ ॥

अथातीसारिणोवर्ज्जनीयान्याह । स्नानावगाहमभ्यङ्गगुरुस्निग्धादिभोजनम् ॥ व्यायाममग्निसन्तापमतीसारीविवर्जयेत् । स्नानमुद्धृतजलेनअवगाहनंनद्यादौ॥५३८॥

अतीसार वालेको त्याज्य वस्तु ॥

भरेहुए जल से अथवा नदी आदिकमें स्नान शरीर में तैलादि मर्द्दन भारी तथा स्निग्ध वस्तुओं का भोजन व्यायाम और अग्निसे तपना यह अतीसार वालेको वर्ज्जितहैं ५३८ ॥

प्रत्येकंदशगद्याणःशुद्धसूतकगन्धयोः । विंशतित्रिदिनंखल्वेपिष्ट्वाकुर्य्याच्चकज्जलीम् ॥ पश्चादर्कस्यदुग्धेनापेष्ट्वातांकज्जलींत्र्यहम् । ततोवज्रस्यदुग्धेनपिष्ट्वातांकज्जलींत्र्यहम् ॥ आर्द्रकंचित्रकंश्वेतंनिःसहायञ्चमर्दयेत् । पेषयेत्तद्रसैरेवंकज्जलीन्तांदिनत्रयम् ॥ पीतानाञ्चकपर्दीनांचूर्णंगद्याणविंशतिः । विंशतिःशंखचूर्णस्यचत्वारिंशच्चमिश्रितम् ॥ त्रिदिनंमर्दयेत्खल्वेपूर्वोक्तेनक्रमेणच । त्र्यहमर्कस्यदुग्धेनवज्रीदुग्धेनचत्र्यम् ॥ तन्मध्येकज्जलींक्षिप्त्वाचित्रकार्द्ररसेनतु ॥ खल्वेपिष्ट्वात्रयःकार्यागुट्योवदरसम्मिताः॥लिप्त्वादग्ध्वाशुचूर्णेनपक्वकुल्हरिकान्तरम् । प्रक्षिप्यगुटिकास्तत्रचूर्णलिप्तपिधानकम् ॥ दत्वावस्त्रंमृदालिप्त्वागर्तेहस्तप्रमाणिका । तद्गर्भेकुल्हरींमुक्त्वापुटोदेयश्चशाणकैः ॥ पश्चाच्चित्रकनीरेणस्वांगशीतञ्चपेषयेत् । गुटिकापूर्वरीत्येवकृत्वादेयःपुनःपुटः॥ दग्धानांगुटिकानाञ्चचूर्णंकृत्वाथकूपके । क्षेप्यन्नाम्नैवनिःपन्नोरसोऽयंशंखपोटली॥ आमज्वरातिसारेचश्वासेकासेतथैवच । श्लेष्मपित्तामवातेषुमन्दाग्नौग्रहणीषुच ॥ अष्टादशप्रमेहेषुजीर्णेजीर्णवलेषुच । द्वात्रिंशन्मरिचैःसाकंसघृतंवल्लपञ्चकम् ॥ सर्वरोगेषुदातव्यंमरिच्याज्यंविनाज्वरे । शालयोदधिदुग्धादिभोजनंमधुरंहितम् ॥ कट्वम्लक्षारतैलाद्यादूरतःपरिवर्जयेत् । विधिनानेनकर्तव्योरसोऽसौशंखपोटली ॥ क्रमेणविनिवर्त्तन्तेप्रोक्तरोगानसंशयः ॥ ५३९ ॥

शुद्ध पारा और गंधक पांच २ तोले लेकर एकसाथ तीन दिन घोटकर कजलीकरे फिर आकके दूधमें तीन दिन घोटकर थूहरके दूधमें तीन दिन खरलकरे इसके उपरान्त अदरक और श्वेत चीते की जड़को बिना जल के कूटकर रस निकाले उस रसमें तीन दिन कजली को घोटे फिर पीली कौड़ी और शंखका दश २ तोले चूर्ण एकमें मिलाकर पहली कहीहुई विधिसे तीन दिन घोटकर आकके दूधमें और थूहरके दूधमें तीन २ दिन घोटे फिर उसमें वह कजली मिलाकर अदरक और चीते के रसमें घोटकर बेरके बराबर गोली बनावै इसके उपरान्त खूब पक्की कुल्हियाके भीतर चूने का लेपकरके पकावे फिर उसमें वह गोली भरदे और चूने से लिपेहुए ढकनेसे बन्दकरके कपड़ौटी करदे फिर हाथभरका गढ़ा खोदकर अरने कण्डोंसे उसमें पुटदे और शीतल होनेपर निकालके चीते के रसमें पीसकर पहलीसी गोली बनाले और उसीप्रकार से फिर पुटदे पीछे गोलियोंको निकाल पीसकर सीसीमें रक्खे फिर बत्तीस मिर्च और घी के साथ पन्द्रह रत्ती यह शंखपोटली नाम रस खाने से आमज्वर अतीसार श्वास खांसी कफ पित्त आमवात मंदाग्नि ग्रहणी अठारह प्रमेह जी-र्णता और बलक्षयका नाश होता है ज्वर में मिर्च और घीके साथ न देना चाहिये धान दही दूध आदिक भोजन पथ्य हैं और कटु खटाई क्षार तथा तेल आदिक त्याज्यहैं इस प्रकारसे इस शंख पोटली नाम रस के सेवन करनेसे कहेहुए संपूर्ण रोगक्रमसे निस्सन्देह नाशको प्राप्त होतेहैं ॥ इति शंखपोटली रस ॥ ५३६ ॥

त्रैलोक्यविजयाजातिफलेतुल्येकालिंगके । गृहीत्वाद्विगुणंश्रेष्ठोलोहःसर्वातिसारनुत् ॥ विल्वमोचरसलोध्रधातकीपुष्पचूतफलवीजसंयुताम् । भक्षयेदतिविषावलेहिकांसिन्धु वेगमपिदुर्द्धरंध्रुवम् ॥ इत्यतीसाराधिकारः ॥ ५४० ॥

भांग तथा जायफल को समभाग लेकर इनके दूने इन्द्रजौ ले और इनसबका दूना लोहसार ले फिर सब को मिलाकर सेवन करनेसे सब अतीसारोंका नाश होताहै बेल मोचरस लोध धवई के फूल आमकी बिजली और अतीस इन सब औषधियों का अवलेह बनाकर खानेसे समुद्र के बेगके समान भी अतीसार रुकजाताहै ॥ इति अतीसाराधिकार ॥ ५४० ॥

अथज्वरातीसाराधिकारः । ज्वरातिसारयोरुक्तंनिदानंयत्पृथक्पृथक् । तस्माज्ज्व रातिसारस्यनिदानंनोदितंपुनः ॥ ५४१ ॥

ज्वरातीसार ॥

ज्वर और अतीसारका निदान पहले अलग२ कहचुके हैं इस लिये ज्वरातीसारका निदान फिर नहीं कहतेहैं ॥ ५४१ ॥

अथज्वरातीसारस्यचिकित्सा ॥

ज्वरातीसारयोरुक्तंभेषजंयत्पृथक्पृथक् । नतन्मिलितयोःकार्यमन्योन्यंवर्द्धयेद्यतः ॥ अयमभिप्रायः । ज्वरहरमनुलोमनम्भवति । अतीसारहरंस्तम्भनम्भवति ।अतःपरस्प रविरुद्धत्वात्पृथगुक्तंभेषजंमिलितयोर्नकार्य्यम् । यतआह । अनुलोमनंज्वरघ्नंग्राहकम तीसारहृद्भवति । पृथगुक्तमौषधंतज्ज्वरातीसारेविरुद्धमन्योन्यम् ॥ अतस्तौप्रतिकुर्व्वीत विशेषोक्तचिकित्सितैः । लङ्घनमेकंमुक्त्वानचान्यदस्तीहभेषजंबलिनः ॥ समुदीर्णदोष

निचयंतत्पाचयेत्तथाशमयेत् । लङ्घनमुभयोरुक्तंमिलितेकार्यंविशेषतस्तदनु ॥ उत्पलषट्कसिद्धंलाजमण्डादिकंसकलम् । उत्पलषष्ठकंयथा॥ पृष्ठपर्णीबलाबिल्वधनिकानागरोत्पलैः।ज्वरातीसारयोर्वापिपिबेत्साम्लंशृतन्नरः।अत्रलाजामण्डाद्यपेक्षयावाशब्दः । अतीसारपुरीषातिस्रुत्याअम्लत्वञ्चदाडिमरसादिनाकर्त्तव्यम्।इतिउत्पलषष्ठकम् ५४२॥

ज्वरातीसारकी चिकित्सा ॥

ज्वर और अतीसारकी जो औषध अलग२ कहीगईहैं उनको मिलाकर खानेसे ज्वरातीसार नहीं जाताहै क्योंकि वह परस्पर विरुद्धहोकर एक दूसरे को बढ़ातीहैं इसका यह अभिप्रायहै कि ज्वरघ्न औषधमलको निकालने वाली और अतीसार नाशक औषध ग्राही होती है इस लिये परस्पर विरुद्धहोने के कारण अलग२ कही हुई औषध मिलाकर न करनी चाहिये क्योंकि कहागयाहै कि ज्वरघ्न औषध मलकी निकालनेवाली और अतीसारकी औषध ग्राही होती है इस कारण से अलगअलग कही हुई औषध ज्वरातीसार में परस्पर विरुद्धहोती हैं इस लिये ज्वरातीसारमें विशेष कहीहुई औषधियोंके द्वारा चिकित्सा करनी चाहिये इसरोगमें बलवान पुरुषको लंघनके सिवाय और कोई औषध नहींहै लंघनके द्वारा दोष परिपाक और शान्तिको प्राप्तहोते हैं ज्वर और अतीसार इन दोनों में लंघन कहागयाहै और दोनोंके मिलेहोने पर विशेष करके लंघन कराना चाहिये लंघनके उपरान्त उत्पलषष्ठकके द्वारा सिद्ध हुआ खीलोंका माँड़देना चाहिये पृष्ठपर्णी बरियारा बेल धनियां सोंठ और नील कमल यह उत्पलषष्ठक कहलाताहै इनके द्वारा काढ़ाकरके अनारकारस मिलाकर ज्वरातीसारमें देनाचाहिये इति उत्पलषष्ठक ॥ ५४२ ॥

कणाकेरिकणालाजक्काथोमधुसितायुतः। पीतोज्वरातिसारस्यतृष्णामाशुविनाशयेत्॥ इतिकणादिक्काथः । नागरातिविषामुस्तामृताभूनिम्बवत्सकैः।क्काथःसर्वज्वरान्हन्तिअतीसारंसुदारुणम् ॥ इतिनागरादिक्काथः । गुडूच्यातिविषाधान्यशुण्ठीबिल्वाम्बुवालकैः । पाठाभूनिम्बकुटजचन्दनोशीरपर्पटैः ॥ पिबेत्कषायंसक्षौद्रंज्वरातीसारनाशनम् । हृल्लासारुचितृट्दाहवमीनाञ्चनिवृत्तये ॥ वृहद्गुडूच्यादिक्काथः । उत्पलंदाडिमत्वक्चपद्मकेशरमेवच । पीतंतण्डुलतोयेनज्वरातीसारनाशनम् ॥ इतिउत्पलादिचूर्णम् । बिल्वबालकभूनिम्बगुडूचीमुस्तवत्सकैः । कषायःपाचनःशोथज्वरातीसारनाशनः ॥ बिल्वादिक्काथः । नागरातिविषाबिल्वगुडूचीमुस्तवत्सकैः । कषायःपाचनःशोथःज्वरातीसारनाशनः ॥ इतिनागरादिक्काथः । दशमूलीकषायेणविश्वामक्षसमांपिबेत् । ज्वरेचैवातिसारेच सशोथेग्रहणीगदे ॥ इतिदशमूलीक्काथः । इतिज्वरातीसाराधिकारः ॥ ५४३ ॥

पीपल गजपीपल खील इनके काढ़ेको शीतल करके सहततथाशक्कर मिलाकर पीने से ज्वरातीसार वाले की तृषाका नाशहोताहै इतिकणादिक्काथ सोंठ अतीस मोथा गिलोय चिरायता और इन्द्रजौ इनकेकाढ़े से संपूर्ण ज्वर और घोर अतीसारका नाशहोताहै इतिनागरादि क्काथ गिलोय अतीस धनियां सोंठ बेल सुगन्धबाला पाठा चिरायता कुरैया लालचन्दन खस और पित्तपापड़ा इनके काढ़ेमें सहत डाल कर पीने से ज्वरातीसार जीमिचलानां अरुचि तृषा दाह और छर्दिका नाशहोताहै इति वृहत्गडूच्यादिक्काथ नीलकमल अनारके छिलके और कमलका जीरा इनके चूर्ण

को चावलोंके पानीकेसाथपीने से ज्वरातीसारका नाशहोताहै इतिउत्पलादिचूर्ण बेल सुगन्धबाला चिरायता गिलोय मोथा और इन्द्रजौ इनका काढ़ा पाचक और सूजन तथा ज्वरातीसारका नाशक होताहै इतिबिल्वादि क्वाथ सोंठ अतीस बेल गिलोय मोथा और इन्द्रजौ इनका काढ़ा पाचक और सूजन तथा ज्वरातीसारका नाशक होताहै इतिनागरादि क्वाथ तोले भर सोंठ दशमूल के काढ़ेके साथपीनेसे सूजन सहित ज्वर अतीसार और ग्रहणीका नाशहोताहै इतिदशमूलीक्वाथ ॥ इतिज्वरातीसाराधिकार ॥ ५४३ ॥

अथग्रहणीरोगाधिकारः। तत्रग्रहणीरोगस्यसम्प्राप्तिमाह ॥

अतीसारेनिवृत्तेऽपिमन्दाग्नेरहिताशिनः। भूयःसन्दूषितोवह्निर्ग्रहणीमपिदूषयेत् ॥ अपिशब्दादजातातीसारस्यापिग्रहणीरोगःस्यात् ॥ ५४४ ॥

ग्रहणीरोगाधिकारग्रहणीरोगकी संप्राप्ति ॥

अतीसारके निवृत्तहोजाने पर जो मन्दाग्नि वाला पुरुष अहित भोजनकरे तो दूसरीबार अग्नि दूषित होकर ग्रहणीको दूषित करती है अतीसारके न होनेपर भी ग्रहणी रोग होताहै ॥ ५४४ ॥

अथग्रहणीस्वरूपमाह ॥

ग्रहण्यग्निधराकला। यतआहचरके। अग्न्यधिष्ठानमन्नस्यग्रहणाद्ग्रहणीमता। अपक्वंधारयत्यन्नम्पक्वन्त्यजतिचाप्यधः ॥ सुश्रुतेऽपि। षष्ठीपित्तधरानामयाकलापरिकीर्त्तिता। आमपक्वाशयान्तस्थाग्रहणीसाभिधीयते ॥ ग्रहण्याबलमग्निर्हिसचापिग्रहणीमता। तस्मादग्नौप्रदुष्टेतुग्रहण्यपिविदुष्यति॥एतेननिवृत्तातिसारिणापिअहिताहारपरीहारःकरणीयःआवह्निवललाभादित्युक्तंम्भवतिअतएवाहसुश्रुतः। तस्मात्कार्य्यःपरीहारोह्यतीसारेविरिक्तवत्। यावन्नप्रकृतिस्थःस्याद्दोषतःप्राणतस्तथा। विरिक्तेनैवविरिक्तवत् ॥ ५४५ ॥

ग्रहणीका स्वरूप ॥

अग्निकी धारण करनेवाली कलाको ग्रहणी कहते हैं क्योंकि चरकमें कहाहै कि अग्निके धारण करने वाली कला अन्नके ग्रहण करने से ग्रहणी कहलाती है यह कच्चे अन्नको धारण करती है और पक्के अन्नको नीचे छोड़ती है सुश्रुतने भी कहाहै कि आमाशय और पक्वाशय के बीचमें जो पित्तधरा नाम छठी कलाहै उसको ग्रहणी कहते हैं ग्रहणीका बल अग्निहै इसलिये अग्निको भी ग्रहणीकहते हैं इससे अग्निके दूषितहोने पर ग्रहणी भी दूषित होतीहै इससे यह सिद्ध होताहै कि अतीसार के निवृत्त होजानेपर जबतक अग्निमेंबल न आजाय तबतक अहितकारी आहारका त्याग करना चाहिये इसी से सुश्रुतने कहाहै कि जबतक दोष और बल स्वाभाविक न होजायँ तबतक अतीसारवाले को जुलाब लेनेवाले के समान अपथ्यका त्याग करना चाहिये ॥ ५४५ ॥

अथग्रहणीरोगस्यसंख्यापूर्व्वकंसामान्यंलक्षणमाह ॥

एकैकशःसर्व्वशश्चदोषैरत्यन्तमूर्च्छितैः। सादुष्टावहुशोभुक्तामाममेवविमुञ्चति ॥ पक्वंवासरुजंपूतिमुहुर्वद्धंमुहुर्द्रवम्। ग्रहणीरोगमाहुस्तमायुर्वेदविदोजनाः ॥ अतीसारेद्रवधातुप्रवृत्तिर्ग्रहण्यान्तुवद्धस्यापिमलस्यप्रवृत्तिरितितयोर्भेदः ॥ ५४६ ॥

ग्रहणी रोगका संख्यापूर्व्वक सामान्य लक्षण ॥

जिस रोगमें अलग २ और मिलेहुए बहुत बढ़ेहुए वातादि दोषोंसे दोषयुक्त ग्रहणी भोजनकियेहुए पदार्थको कच्चा अथवा पक्का दस्तों में बहुतसा निकाले और मल कभी बंधा कभी पतलाहोकर दुर्गन्ध युक्त पीड़ाके साथ निकले उसको ग्रहणी रोग कहते हैं अतीसार में पतला मल निकलता है और ग्रहणी में बंधाहुआ भी मल निकलताहै यही इन दोनों में भेदहै ५४६ ॥

अथवातजायांग्रहण्यांनिदानसम्प्राप्तिपूर्व्वकंरूपमाह ॥

कटुतिक्तकषायातिरूक्षशीतलभोजनैः। प्रमितानशनाद्ध्ववेगानिग्रहमैथुनैः ॥ मारुतःकुपितोवह्निंसञ्छाद्यकुरुतेगदम्। तस्यान्नंपच्यतेदुःखंशुक्तपाकःखरांगता ॥ कण्ठास्यशोषःक्षुत्तृष्णातिमिरंकर्णयोःस्वनः। पार्श्वोरुवंक्षणग्रीवारुगभीक्ष्णंविशूचिका ॥ हृत्पीडाकार्श्यदौर्बल्यंवैरस्यम्परिकर्त्तिका । गृद्धिःसर्वरसानाञ्चमनसःसदनन्तथा ॥ जीर्णेजीर्य्यतिचाध्मानंभुक्तेस्वास्थ्यमुपैतिच । सवातगुल्महृद्रोगप्लीहाशङ्कीचमानवः ॥ चिराद्दुःखंद्रवंशुष्कंतन्वामंशब्दफेणवत्। पुनःपुनःसृजेद्वर्चःकासश्वासार्दितोऽनिलात् ॥ प्रमितपरिमितंगदंग्रहणीगदम्। शुक्तपाकम् ॥ ५४७ ॥

वातजग्रहणीका निदान और सम्प्राप्तिपूर्व्वक लक्षण ॥

कटु तिक्त कषाय रूखा तथा शीतल भोजन करनेसे थोड़ा भोजन लंघन बहुत मार्ग में घूमना वेगोंका रोकना और मैथुनकेद्वारा कुपितहुई वातअग्निको आच्छादितकरके ग्रहणीको उत्पन्नकरतीहै वात जग्रहणी में भोजन का बहुत देर में पचना तथा परिपाक में खट्टा होनाहै शरीर में कठोरता कृशता दुर्बलता कंठ तथा मुखका सूखना क्षुधा तृषा अन्धकार सा मालूम होना और पसली जंघा हृदय वंक्षण तथा ग्रीवा में पीड़ा होना बिशूचिका मुखकी बिरसता गुदामें काटने के समान पीड़ा सब रसोंके खाने की इच्छा मनमें अप्रसन्नता भोजनके परिपाक होजाने पर अथवा परिपाक के समय अफरा भोजनके पीछे स्वस्थता बारंबार थोड़े २ फेने युक्त कच्चे मलका कष्ट के साथ बहुत देरमें निकलना और खांसी तथा श्वास के द्वारा ब्याकुलता यह लक्षण होतेहैं इसरोग में बातगोला हृदय के रोग और प्लीहा होगईसी मालूमहोतीहै ॥ ५४७ ॥

अथपित्तजायाग्रहण्यानिदानसम्प्राप्तिपूर्व्वकंरूपमाह ॥

कटुतिक्तविदाह्यम्लक्षाराद्यैःपित्तमुल्वणम् । आप्लावयद्धन्त्यनलंजलंतप्तमिवानलम् ॥ सोऽजीर्णपीतनीलाभंपीताभःसार्य्यतेद्रवम् । अत्यम्लोद्गारहृत्कण्ठदाहारुचितृषार्द्दितः ॥ आप्लावयत्मज्जयत्ननुपित्तमग्निगुणयुक्तंतत्कथमग्निंहन्तीत्याह। जलंतप्तमिवानलमितियथा। अग्निगुणयुक्तमपितप्तंजलमनलंहन्तितथापित्तमपिहन्ति। सार्य्यतेअत्रपित्तेनेतिकर्तृपदमध्याहरणीयम् ॥ ५४८ ॥

पित्तकी ग्रहणीका निदान और सम्प्राप्तिपूर्व्वक लक्षण ॥

कटु चिर्परा बिदाही खट्टा तथा खारी आदि पदार्थों से बढ़ाहुआ पित्त गरम जलके समान अग्नि को डबाता हुआ शान्त करता है पित्तजग्रहणी में पीले नीले अथवा केवल पीले पतले तथा कच्चे मलका निकलना खट्टी डकार हृदय तथा कंठमें दाह अरुचि और तृषा होतीहै ॥ ५४८ ॥

अथश्लेष्मजायाग्रहण्याःनिदानपूर्व्वकांसम्प्राप्तिमाह ॥

गुर्वतिस्निग्धशीतादिभोजनादतिमैथुनात् । भुक्तमात्रस्यचस्वप्नाद्धन्त्यग्निंकुपितःकफः ॥ तस्यान्नंपच्यतेदुःखंहल्लासच्छर्द्यरोचकाः । अस्योपदेहमाधुर्यकासष्ठीवनपीनसाः॥ हृदयम्मन्यतेस्तब्धमुदरंस्तिमितंगुरु । दुष्टोमधुरउद्गारःसदनंस्त्रीष्वहर्षणम् ॥ भिन्नमश्लेष्मसंश्लिष्टंगुरुवर्चःप्रवर्त्तनम् । अकृशस्यापिदौर्बल्यमालस्यञ्चककफात्मके ॥ भुक्तमात्रस्यचस्वप्नात्भुक्तेत्यत्राध्यवसितादित्वात्कर्त्रर्थेक्तः । तेनभुक्तवतःसद्यःशयनादित्यर्थः । आस्योपदेहःमुखस्यकफेनलिप्तत्वम् । स्तिमितंविबद्धंनिश्चलमितियावत् । स्त्रीषुअहर्षणम्ररिंसायाअभावः । भिन्नंस्फुटितमामपक्वंश्लेष्मसंश्लिष्टम् । ततएवगुरुवर्चःपुरीषंतस्यप्रवृत्तिः ॥ ५४९ ॥

कफजग्रहणीका निदान और संप्राप्ति पूर्व्वक लक्षण ॥

भारी बहुत स्निग्ध तथा शीतल आदि भोजनसे बहुत मैथुनसे और भोजनके उपरान्त तुरन्त ही सोने से कुपित हुआ कफ अग्निको नष्ट करताहै कफज ग्रहणी में अन्नका बहुतदेर में पचना जी मिचलाना छर्दि अरुचि मुखका कफ से लिपारहना तथा मधुर रहना खांसी बहुत थूकना पीनस हृदय जकड़ाहुआसा मालूमहोना पेटकाभारी तथा निश्चलहोना विकारी मीठी२ डकार शिथिलता मैथुनकी इच्छाका न होना कफसहित बिखरेहुए कच्चे तथा भारी मलका निकलना कृशताके बिना भी बलरहित होना और आलस्य यह लक्षण होतेहैं ५४९ ॥

अथत्रिदोषजस्यग्रहणीरोगस्यनिदानपूर्व्विकांसम्प्राप्तिमाह ॥

पृथग्वातादिनिर्द्दिष्टहेतुलिंगसमागमे । त्रिदोषन्निर्द्दिशेदेवंतेषांवक्ष्यामिलक्षणम् ५५०

सन्निपातज ग्रहणीका निदान और संप्राप्तिपूर्व्वक लक्षण ॥

अलग २ कहेहुए वातादिकोंके हेतु और चिह्नोंके मिलनेसे त्रिदोषजग्रहणी जाननीचाहिये ५५०॥

अथग्रहणीरोगस्यभेदंसंग्रहणीरोगमाह ॥

द्रवंघनंमितंस्निग्धंसकटीवेदनंशकृत् । आमंबहुसुपैच्छिल्यंसशब्दंमन्दवेदनम् । पक्षात्मासाद्दशाहाद्वानित्यञ्चातिविमुञ्चति । अन्त्रकूजनमालस्यं दौर्बल्यंसदनम्भवेत् ॥ दिवाप्रकोपोभवतिरात्रौशांतिञ्चगच्छति । दुर्विज्ञयादुर्न्निवाराचिराकालानुबन्धिनी । साभवेदामवातेनसंग्रहग्रहणीमता । स्निग्धंस्नेहसदृशम् । दिवाप्रकोपोभवतिरात्रौशांतिञ्चगच्छतीतिव्याधेरेवप्रभावः ॥ ५५१ ॥

ग्रहणी रोगका भेद संग्रहणी रोगका वर्णन ॥

संग्रहणी रोगमें पतला गाढ़ा थोड़ा स्नेहके सदृश बहुत पिच्छिल और कच्चामल शब्द और थोड़ी थोड़ी पीड़ा सहित निकलताहै इस रोग में एक पक्ष भरमें महीने भरमें दश दिन में अथवा नित्य पहले कहेहुए लक्षणयुक्त रुक रुक कर दस्त आते हैं और आंतों में गुड़गुड़ाहट आलस्य दुर्बलता कमरमें पीड़ा तथा शरीर में शिथिलता होतीहै इसरोगमें स्वभावसेही दिनमें रोगकावेग और रात्रि में स्वस्थता होतीहै यह रोग बहुत कठिनतासे जाननेके योग्य बहुत दिनतक रहनेवाला और अत्य-

न्त कठिनतासे औषध करनेके योग्य आमवातसे उत्पन्नहोताहै इसको संग्रहणी कहते हैं ५५१ ॥

अथघटीयन्त्राख्यं ग्रहणीरोगभेदमाह ॥

प्रसुप्तिःपार्श्वयोःशूलंतथाजलघटिध्वनिः । तंवदन्तिघटीयंत्रमसाध्यंग्रहणीगदम् ॥ प्रसुप्तिःप्रकर्षेणशयनम् । तथाजलघटीध्वनिः । अधोमुखीकृतायाजलघट्याजलनिःसरणेयथाध्वनिःतथामलनिर्गमसमयेभवति । यदागदोऽयंदेहंव्याप्नोतितदातस्यजीवितङ्गच्छति ॥ ५५२ ॥ घटीयंत्र नाम ग्रहणी रोगका भेद ॥

अधिक निद्रा और मल निकलने के समय जल से भरेहुए औंधाये हुए घट से जल निकलने के शब्दके समान दस्त में शब्द होताहै इसको घटीयंत्र ग्रहणी कहते हैं यह रोग जब मनुष्यके शरीर में व्याप्त होताहै तो उसकी मृत्यु होजाती है ५५२ ॥

अथसामान्यग्रहणीरोगस्यचिकित्सामाह ॥

ग्रहणीमाश्रितंरोगमजीर्णवदुपाचरेत् । लङ्घनैर्दीपनीयैश्चसदातीसारभेषजैः ॥ दोषसामन्निरामञ्चविद्यादत्रातिसारवत् । अतीसारोक्तविधिनातस्यामञ्चविपाचयेत् ॥ पेयादिपटुलघ्वन्नंपञ्चकोलादिभिर्युतम् । दीपनानिचतक्रंचग्रहण्यांयोजयेद्भिषक् ॥ कपित्थबिल्वचांगेरीतक्रदाडिमसाधिता । यवागूःपाचयत्यामंशकृत्संम्वर्त्तयत्यपि ॥ संम्वर्त्तयतिघनीकरोति ॥ ५५३ ॥ सामान्यग्रहणीरोगकीचिकित्सा ॥

ग्रहणी रोगकी चिकित्सा अजीर्णके समान करनी चाहिये और लंघन दीपन औषध तथा अतीसारमें कहीहुई औषधोंसे चिकित्साकरे इसमें दोषका आम सहित और आमसे रहितहोना अतीसार के समान जानना चाहिये अतीसारमें कहीहुई विधि के अनुसार आमका परिपाककरे पंचकोल आदिकोंसेयुक्त पेयादिक हलका अन्न दीपनवस्तु और मट्ठा ग्रहणीरोग में देनाचाहिये कैथा बेल चूका मट्ठा और अनार इनसबकेद्वारा सिद्धकीहुई यवागू आमको पचाती है और मलको बांधतीहै ५५३॥

अथ तक्रम् ॥

(अत्रगोदधिगुणाः) गव्यंदध्युत्तमंबल्यंपाकेस्वादुरुचिप्रदम् ॥ पवित्रंदीपनंस्निग्धंपुष्टिकृत्पवनापहम् । उक्तंदध्नामशेषाणांमध्येगव्यंगुणाधिकम् । (अथमहिषीदधिगुणाः) माहिषंदधिसुस्निग्धंश्लेष्मलंवातपित्तनुत् । स्वादुपाकमभिष्यन्दिवृष्यंगुर्वास्रदूषणम् ॥ (अथछागीदधिगुणाः) आजंदध्युत्तमंग्राहिलघुदोषत्रयापहम् । शस्यतेश्वासकासार्शःक्षयकार्श्येषुदीपनम् ॥ उत्तमंग्राहिग्रहिण्यामतिश्रेष्ठमित्यर्थः ॥ ५५४ ॥

मट्ठेका वर्णन ॥

(गौके दहीके गुण)गौका दही श्रेष्ठ बलकारक पाकमें मधुर रुचिकारी पवित्र दीपन स्निग्ध पुष्टकारी वात नाशक और संपूर्ण दहियोंमें श्रेष्ठ होताहै (भैंसके दहीके गुण) भैंसका दही स्निग्धकफकारी वात पित्त नाशक पाकमें मधुर अभिष्यन्दी वीर्य्यवर्द्धक भारी और रक्तका दूषितकरनेवाला होता है (बकरीके दहीके गुण) बकरीका दही श्रेष्ठ ग्राही (ग्रहणीरोगमें अत्यन्तहित) हलका त्रिदोष नाशक दीपन और श्वास खांसी बवासीर क्षय और कृशता को नाशकरताहै ॥ ५५४ ॥

अथ तक्रस्यभेदः ॥

तक्रन्तुघोलंमथितोदश्वित्तक्रप्रभेदतः । सुश्रुताद्यैर्मुनिश्रेष्ठैश्चतुर्द्धापरिकीर्त्तितम् ॥ ससरंनिर्जलंघोलंमथितन्त्वसरोदकम् । तक्रंपादजलंप्रोक्तमुदश्विच्चार्द्धवारिकम्॥५५५॥

मट्ठेके भेद ॥

तक्र घोल मथित और उदश्वित सुश्रुत आदि मुनियोंने यह चार मट्ठे के भेदकहेहैं मलाई सहित दहीके निर्जलके मट्ठे को घोल मलाई उतरेहुये दहीके निर्ज्जल मट्ठे को मथित चौथाई जल सहित मट्ठे को तक्र और आधे जल सहित मट्ठे को उदश्वितकहतेहैं ॥ ५५५ ॥

वातपित्तहरंघोलंमथितंकफपित्तनुत् । उदश्वित्कफदंबल्यंश्रमघ्नंपरमंमतम् ॥ (अथतक्रस्यगुणाः) तक्रंग्राहिकषायाम्लंमधुरंदीपनंलघु । वीर्य्योष्णंबलदंवृष्यंप्रीणनंवातनाशनम् ॥ यान्युक्तानिदधीन्यष्टौतद्गुणंतक्रमादिशेत् । ग्रहण्यादिमतांतक्रंपथ्यंसंग्राहिलाघवात् ॥ वातघ्नमम्लसान्द्रत्वात्सद्यस्कन्त्वविदाहिच । किञ्चस्वादुविपाकञ्चअन्तेपित्तप्रकोपनम् ॥ कषायोष्णविकाशित्वाद्रौक्ष्याच्चैवकफेहितम् ॥ ५५६ ॥

घोल बात पित्त नाशक मथित कफ पित्त नाशक उदश्वित कफकारी बलिष्ठ तथा अत्यन्त श्रम नाशक होताहै तक्र ग्राही कषैला खट्टा मधुर दीपन हलका बीर्य में उष्ण बलकारी बीर्यबर्द्धक प्रीतिकारी और बातनाशक होताहै जोआठप्रकारके दहीकहेगयेहैं उसीप्रकारउनके मट्ठेकेभी गुण जानने चाहिये ग्रहणी आदि रोगवालोंको ग्राही और हलकेपनेसे तक्रपथ्यहै तक्र खट्टे तथा घनेपनसे बातनाशक होताहै ताजातक्र अविदाही पाकमें मधुर तथा अंतमें पित्तको कुपित करनेवालाहोताहै और कषैलेपनसे उष्णतासे और विकाशी तथा रूखेपनके गुणसे कफनाशक होताहै ॥ ५५६ ॥

अथोद्धृतस्नेहस्यस्तोकोद्धृतस्नेहस्यानुद्धृतस्नेहस्यतक्रस्यगुणाः ॥

समुद्धृतघृतंतक्रंपथ्यंलघुविशेषतः । स्तोकोद्धृतघृतंतस्माद्गुरुवृष्यंकफावहम् ॥ अनुद्धृतघृतंसान्द्रंगुरुपुष्टिबलप्रदम् ॥ ५५७ ॥

घीनिकलेहुए कुछघीनिकलेहुए औरविनघीनिकलेहुए मट्ठेकेगुण ॥

जिस मट्ठेसे अच्छे प्रकार घी निकाल लियाजाता है वह पथ्य तथा बहुत हलकाहोता है जिस मट्ठे से थोड़ा घी निकाला जाताहै वह पहलेकी अपेक्षा भारी बीर्य बर्द्धक तथा कफ कारी होता है और जिस मट्ठेसे घी नहीं निकालाजाताहै वह गाढ़ा भारी पुष्टिकारी तथाबलबर्द्धक होताहै ५५७॥

अथदोषविशेषेतक्रविशेषाः ॥

वातेम्लंसैन्धवोपेतंपित्तेस्वाद्वम्लशर्करम् । पिवेत्तक्रंकफेनापिक्षारत्रिकटुसंयुतम् ॥ हिंगुजीरयुतंघोलंसैन्धवेनावधूलितम् । ग्रहण्यर्शोऽतिसारघ्नंभवेद्वातहरम्परम् ॥ रोचनं पुष्टिदंबल्यंवास्तिशूलविनाशनम् ॥ ५५८ ॥

दोषबिशेषमें तक्र बिशेष ॥

बातकी अधिकतामें खट्टा तथा सैंधवयुक्त मट्ठा सेवन करनाचाहिये पित्तमें खटामिट्ठा मट्ठाशक्कर डालकर सेवन करना चाहिये और कफमें जवाखार तथा त्रिकटु युक्त मट्ठा पीना चाहिये हींग जीरा

तथा सेंधेनोनसे युक्त मट्ठा ग्रहणी बवासीर अतीसार वात तथा मूत्राशयकी पीडाका नाशक रुचिकारी पुष्टिकारी और बलबर्द्धक होताहै ॥ ५५८ ॥

अथामपक्वतक्रगुणाः ॥

तक्रमामंकफंकोष्ठेहन्तिकण्ठेकरोतिच।पीनसश्वासकासादौपक्वमेवविशिष्यते५५९॥

कच्चे पक्के मट्ठे के गुण ॥

कच्चामट्ठा कोष्ठके कफको नष्टकरताहै तथा गलेके कफको बढ़ाताहै और पक्कामट्ठा पीनस श्वास तथा खांसी आदिमें विशेष गुणकारी होताहै ॥ ५५९ ॥

अथतक्रस्यनिषेधः ॥

नैवतक्रंक्षतेदद्यान्नोष्णकालेनदुर्बले । नमूर्च्छाभ्रमदाहेषुनरोगेरक्तपैत्तिके ॥ ५६० ॥

मट्ठेका निषेध ॥

क्षत ऊष्णकाल दुर्बलता मूर्च्छा भ्रम दाह और रक्तपित्त इनमें मट्ठा का निषेधहै ॥ ५६० ॥

अथतक्रस्यगुणोत्कर्षः ॥

नतक्रसेवीव्यथतेकदाचिन्नतक्रदग्धाःप्रभवंतिरोगाः । यथासुराणाममृतंसुखायतथा नराणांभुवितक्रमाहुः ॥ ५६१ ॥

मट्ठेके गुणोंकी बड़ाई ॥

मट्ठेका सेवन करनेवाला कभी व्यथित नहीं होता और मट्ठेके द्वारा नष्ट हुएरोग फिरनहीं उत्पन्न होतेहैं जैसे देवताओंको अमृत सुखदायकहै उसी प्रकार पृथ्वीमें मनुष्योंको मट्ठा सुखदाईहै ॥ ५६१

मुद्गयूषंरसंतक्रंधान्यजीरकसंयुतम् । सैन्धवेनान्वितन्दद्यात्षड्यूषणमितीरितम् ॥ रसंलघुग्राहिमांसरसम् । इतिषड्यूषगुणः ॥ ५६२ ॥

मूंगकायूष मांसका रस और मट्ठा इनमें धनियां जीरा और सेंधानोन मिलाकर देना चाहिये यह षड्यूषन कहलाताहै ॥ इति षड् यूषनम् ॥ ५६२ ॥

कर्षंगन्धकमर्द्धपारदमुभेकुर्याच्छुभांकज्जलीम् । व्यक्षन्त्यूषणतश्चपञ्चलवणंसार्द्धञ्चकर्षंपृथक् ॥ अष्टंहिंगुचजीरकद्वययुतंसर्वार्द्धभंगान्वितम् । खादेत्टंकमितंप्रवृत्तिगदवांस्तक्रेणबिल्वेनवा ॥ इतिलाईचूर्णम् ॥ ५६३ ॥

गन्धक १ तोला पारा ६ मा० इन दोनोकी कजली करे फिर त्रिकटु २ तोला पांचोनोनडेढ़ २ तोले और भुनीहींग दोनोजीरे डेढ़ २ तोले और इनसबकी आधीभंग इन सबको मिलाकर मट्ठे अथवा बेलके साथ चारमासे रोजखानेसे दस्तवालेको हितकारी होताहै ॥ इति लाईचूर्ण ॥ ५६३ ॥

जातीफलंलवङ्गैलापत्रत्वङ्नागकेशरैः । कर्पूरचन्दनतिलत्वक्क्षीरीतगरामलैः ॥ तालीशंपिप्पलीपथ्यास्थूलजीरकचित्रकैः । शुण्ठीविडंगमरिचैःसमभागंविचूर्णितैः ॥ यावन्त्येतानिसर्वाणिदद्याद्भङ्गाञ्चतावतीम् । सर्वचूर्णसमंकृत्वाप्रदेयाशुभ्रशर्करा ॥ कर्षमात्रमिदंखादेन्मधुनाप्लावितंजनः । नाशयेद्ग्रहणींकासंक्षयंश्वासमरोचकम् ॥ इतिजातीफलादिचूर्णम् ॥ ५६४ ॥

जायफल लौंग इलायची तेजपात दालचीनी नागकेशर कपूर चन्दन तिल वंशलोचन तगर आँवला तालीस पीपल हड़ जीरा चीता सोंठ बायबिडंग और मिर्च इनसब औषधियोंको समभाग लेकर चूर्ण करे और सबकी बराबर भंग मिलाकर सबके समान श्वेत शक्कर मिलावे और सहतके साथएक तोले भरखाय इस्सेग्रहणी खांसीक्षय श्वासऔर अरुचिकानाश होताहै॥इति जातीफलादि चूर्ण५६४॥

चित्रकंपिप्पलीमूलंक्षारोलवणपञ्चकम्। व्योषंहिंग्वजमोदाचचव्यञ्चैकत्रचूर्णयेत्॥ वटिकामातुलुंगस्यरसैर्वादाड़िमस्यच। कृताविपाचयत्यामन्दीपयत्याशुचानलम्॥ अजमोदायवानिका। चित्रकादिवटिका॥ ५६५॥

चीता पीपला मूल जवाखार पांचों नोन त्रिकटु हींग अजवाइन और चव्य इनसब औषधियों को चूर्ण करके नींबू अथवा अनारके रस में गोलीवांधे यह गोली आमको परिपाक करती है और अग्निको बढ़ातीहै॥ इति चित्रकादिवटिका॥ ५६५॥

श्रीफलसलाटुमज्जानागरचूर्णेनमिश्रितःसगुड़ः। ग्रहणीगदमत्युग्रंतक्रभुजाशीलितोजयति॥ श्रीफलशलाटुविल्वस्यामंफलम्। गुड़भागद्वयम्। इतिविल्वकल्कः॥५६६॥

कच्ची बेलगिरी और सोंठका चूर्ण दूना गुड़ मिलाकर खानेसे और मट्ठेका पथ्य करनेसे बहुत बढ़े हुए भी ग्रहणी रोगका नाश होता है॥ इति विल्व कल्क॥ ५६६॥

चतुःपलंसुधाकाण्डंत्रिफलालवणत्रयम्।वार्त्ताकोःकुड़वञ्चार्कमूलाद्विल्वंतथानलात्॥ दग्ध्वाद्रवेनवार्त्ताकोर्गुटिकाभोजनान्तरे। भुक्ताभुक्तंपचत्याशुनाशयेद्ग्रहणीगदम्॥ कासंश्वासंतथार्शांसिविसूचींश्चहृदामयम्॥ इतिवार्त्ताकुगुटिका॥ ५६७॥

सेंहुड़ेकी मोटी टहनी ४ पल तीनों नोन ३ प० बनका बैंगन ४ प० और चीता तथा आककी जड़ चार २ तो० इनसब औषधियों को जलाकर बैंगन के रसमें गोली बनावे भोजन के उपरान्त इसगोली को खानेसे बहुत शीघ्र भोजन पचता है और ग्रहणी खांसी श्वास बवासीर विशूचिका तथा हृदय के रोगोंका नाशहोता है॥ इति वार्ताकु गुटिका॥ ५६७॥

मुस्तकातिविषाविल्वकौटजंसूक्ष्मचूर्णितम्। मधुनाचसमालीढंग्रहणींसर्वजांजयेत्॥ कौटजइन्द्रयवः॥ इतिमुस्तकादिचूर्णम्॥ ५६८॥

मोथा अतीस बेल और इन्द्रजौ इनका सूक्ष्म चूर्ण करके सहत के साथ चाटने से सब प्रकार की ग्रहणी का नाशहोता है॥ इति मुस्तकादि चूर्ण॥ ५६८॥

श्वेतोवायदिवारक्तःसुपक्वोग्रहणीगदः। गुड़ेनाधिकसर्ज्जेणभक्षितेनाशुनश्यति॥ इतिसर्ज्जरसचूर्णम्॥ ५६९॥

राल को गुड़के साथ खानेसे बहुत शीघ्र श्वेत तथा रक्त पकाहुआ ग्रहणी रोगनष्ट होताहै॥इति सर्जरस चूर्ण॥ ५६९॥

विल्वाव्दशक्रयववालकमोचसिद्धमाजंपयः पिवतियोदिवसत्रयंवा॥ सोऽतिप्रवृद्धचिरजंग्रहणींविकारम् सामंसशोणितमसाध्यमपिक्षिणोति॥ ५७०॥

बेल मोथा इन्द्र जौ सुगन्धवाला और मोचरस इनके द्वारा क्षीर पाककी विधि से बकरीका

दूध तनिदिन तक पीनेसे बहुत बढ़े हुए बहुत पुराने और आम तथा रुधिर सहित असाध्य ग्रहणी रोग का नाश होता है ॥ ५७० ॥

प्रस्थत्रयंत्वामलकीरसस्यशुद्धस्यदत्त्वार्द्धतुलांगुड़स्य । चूर्णीकृतैर्ग्रन्थिकजरिचव्य व्योषैःसकृष्णाहयुषाजमोदैः। विड़ंगसिन्धुत्रिफलाजवानीपाठाग्निधान्यैश्चपलप्रमाणैः॥ दत्वात्रिवृच्चूर्णपलानिचाष्टावष्टौचतैलस्यपचेद्यथावत्। तंभक्षयेदक्षपलप्रमाणंयथेष्टचेष्टन्त्रिसुगन्धियुक्तम् ॥ अनेनसर्वेग्रहणीविकाराःसश्वासकासास्वरभेदशोथाः । शाम्यन्तिचायंचिरमन्तरग्नेर्हतस्यपुंस्त्वस्यचवृद्धिहेतुः ॥ स्त्रीणान्तुवन्ध्यात्वविनाशनःस्यात्कल्याणकोनामगुडःप्रसिद्धः। तैलमनाग्त्रिवृद्भृष्टंत्रिफलायाःपलत्रयम् ॥ सिद्धेनिधेयमत्रैवगुड़ेकल्याणपूर्व्वके॥ इतिकल्याणगुड़ः ॥ ५७१ ॥

आंवले का रस १२८ तो० शुद्धगुड़ २०० तो० पीपलामूल जीरा चव्य त्रिकटु गजपीपल हाऊबेर अजवाइन बायबिड़ंग सेंधानोन त्रिफला अजमोद पाठा चीता धनियां दालचीनी इलायची तथा तेजपात यह सब एक २ पल और तेल तथा निसोथका चूर्ण आठ २ प० तेलमें निसोथ के चूर्णको कुछ भूनकर आंवलेका रस और गुड़ मिलाकर पाक करे फिर ऊपर कहीहुई संपूर्ण ओषधियों का चूर्ण मिलावे यह एक रुद्राक्ष अर्थात् चार पांच मासे खानेसे सबप्रकार की ग्रहणी श्वास खांसी स्वरभेद सूजन मंदाग्नि तथा नपुंसकता को नष्ट करता है और स्त्रियों के वंध्यापनेको भी दूरकरता है ॥ इति कल्याण गुड़ ॥ ५७१ ॥

पिप्पलीपिप्पलीमूलंचित्रकंगजपिप्पली । धान्याकञ्चविड़ंगानिजवानिमरिचानि च॥त्रिफलाचाजमोदाचनीलनीजीरकस्तथा। सैन्धवंरोमकञ्चापिसामुद्रंरुचकंविड़म् ॥ आरग्वधश्चत्वक्पत्रंसूक्ष्मैलाचोपकुञ्चिका । शुण्ठीशक्रयवाश्चैवप्रत्येकंकर्षसंमिताः ॥ मृद्वीकायाःपलान्यत्रचत्वारिकथितानिहि । त्रिवृतायाः पलान्यष्टौगुड़स्यार्द्धतुलां तथा ॥ तिलतैलपलान्यष्टावामलक्यारसस्यतु । प्रस्थत्रयमिदंसर्वंशनैर्मृद्वग्निनापचेत् ॥ औदुंबरंचामलकंवदरञ्चयथाबलम् । तावन्मात्रमिदंखादेद्भक्षयेद्वायथानलम् ॥ निखिलान्ग्रहणीरोगान्प्रमेहांश्चैवविंशतिम् । उरोघातंप्रतिश्यायंदौर्व्बल्यंवह्निसंक्षयम् ॥ ज्वरानपिहरेत्सर्व्वान्कुर्य्यात्कान्तिंमतिंबलम् । पाण्डुरोगान्जवाद्धन्तिरक्तपित्तञ्चविड्ग्रहम् ॥ धातुक्षीणेयवक्षीणःस्त्रीषुक्षीणःक्षयीचयः । तेभ्योहितश्चवन्ध्यायैमहाकल्याणकोगुड़ः ॥ इतिमहाकल्याणकगुड़ः ॥ ५७२ ॥

पीपल पीपलामूल चीता गजपीपल धनियां बायबिड़ंग अजवाइन मिर्च त्रिफला अजमोद नीलनीजीरा सेंधानोन सांभरनोन समुद्रनोन कालानोन विट्नोन अमलतास दालचीनी तेजपात छोटी इलायची काला जीरा सोंठ और इन्द्रजौ यह सब एक२ तो० दाख १६ तो० निसोथ ३२तो० गुड़२००तोला तिलका तेल३२तो०और आंवलेका रस१६२तो०इनसबको विधि पूर्व्वक मंदाग्नि में पाककरे इसको गूलर के समान आंवलेके बराबर अथवा बेरके बराबर या अग्निके बलके अनुसारखाय इसके खानेसे संपूर्ण ग्रहणीरोग बीसों प्रमेह उरोघात जुकाम दुर्बलता मन्दाग्नि सर्बज्वर पांडु रक्त

पित्त तथा मलका रुकना इन सबका नाश होताहै और कांति मति तथा बलकी वृद्धि होतीहै यह धातु क्षीण वृद्ध स्त्री प्रसंग से क्षीण क्षय रोगी और बन्ध्या स्त्री इन सबको हितकारी है इति ॥ महाकल्याणक गुड़ ॥ ५७२ ॥

कूष्माण्डानांसुपक्वानांस्विन्नानांनिष्कुलत्वचाम् । सर्पिःप्रस्थंपलशतंताम्रपात्रेशनैः पचेत् ॥ पिप्पलीपिप्पलीमूलंचित्रकंगजपिप्पली । धान्यकानिविडङ्गानिनागरंमरिचानिच ॥ त्रिफलाचाजमोदाचकलिङ्गाजाजिसैन्धवम् । एकैकस्यपलञ्चैकंत्रिवृतोऽष्टौपलानिच ॥ तैलस्यचपलान्यष्टौगुड़ात्पञ्चाशदेवतु । आमलक्यारसस्यात्रप्रस्थत्रयमुदीरितम् ॥ तावत्पाकंप्रकुर्व्वीतमृदुनावह्निनाभिषक् । यावद्दर्व्याःप्रलेपंस्यात्तदैनमवतारयेत् ॥ औदुम्बरंचामलकंवादरंवायथाबलम् । तावन्मात्रमिदंखादेद्भक्षयेद्वायथानलम् ॥ अनेनैवविधानेनप्रयुक्तश्चदिनेदिने। निहन्तिग्रहणीरोगान्कुष्ठानर्शोभगंदरान् ॥ ज्वरमानाहहृद्रोगंगुल्मोदरबिसूचिकाः । कामलांपाण्डुरोगञ्चप्रमेहांश्चैवविंशतिम् ॥ वातशोणितवीसर्पदद्रूयक्ष्माहलीमकान् । वातपित्तकफान्सर्वान्दुष्टान्शुद्धान्समाचरेत् ॥ व्याधिक्षीणावयःक्षीणास्त्रीषुक्षीणाश्चयेनराः। तेभ्योहितोगुड़ोऽयंस्याद्बन्ध्यानामपि पुत्रदः ॥ वृष्योबल्योवृंहणश्चवयसःस्थापनंतथा । इतिकूष्माण्डकल्याणकगुड़ः ५७३॥

अच्छे प्रकार पके हुए छिलके और बीजसे रहित उबाले हुए कुंभड़े को सौपल लेकर एक प्रस्थ घी और आठ पल तिल का तेल तांबेके पात्रमें डालकर भूने फिर आंवलेका रस ३ प्रस्थ और गुड़ २०० तोले डालकर पाक करे इसके उपरान्त पीपल पीपलामूल चीता गजपीपल धनियां बायबिड़ंग सोंठ मिर्च त्रिफला अजवाइन इन्द्रजौ कालाजीरा और सेंधानोन यह सब एक एक पल और निसोथ आठपल इन सबको पीसकर उसमें डालकर मंदाग्नि से तबतक पाककरे जब तक कि करछीमें लगने लगे फिर उतारले यह गूलर आंवला अथवा बेर के बराबर या अग्नि के बलके अनुसार प्रति दिन खानेसे ग्रहणी कुष्ठ बवासीर भगंदर ज्वर आनाह हृदयके रोग गुल्म उदर बिशूचिका कामला पांडुरोग बीसों प्रमेह बातरक्त वीसर्प दाद यक्ष्मा तथा हलीमकका नाश होताहै और दूषित बात पित्त तथा कफ शुद्धहोजातेहैं और व्याधि से क्षीण वृद्ध स्त्रियोंके द्वारा क्षीण मनुष्योंको हितकारी होताहै यह बंध्या स्त्रियोंको पुत्रदेने वाला बर्य्य बर्द्धक बलकारी धातु बर्द्धक और अवस्थाका स्थित रखने वाला होताहै ॥ इति कूष्मांडकल्याणक गुड़ ॥ ५७३ ॥

अतीसाराधिकारालिखितंविल्वतैलञ्चात्रहितम् । इतिग्रहणीरोगाधिकारः ५७४ ॥

अतीसाराधिकार में कहा हुआ बेलकातेल भी ग्रहणी रोगमें हितकारीहै ॥ इति ग्रहणीरोगाधिकार ॥ ५७४ ॥

भावप्रकाशः द्वितीयभागः ॥

अथार्शोऽधिकारः ॥

तत्रार्शसः सन्निकृष्टानि निदानान्याह ॥

पृथग्दोषैःसमस्तैश्चशोणितात्सहजानिच । अर्शांसिषट्प्रकाराणिविद्याद्गुदवलित्रये ॥ केचित्तुरुधिरस्यापिदोषत्वंमन्यन्ते, तन्मतमाश्रित्याह, शोणितादिति । सहजानि शरीरेसहजातानि, संख्याचाह, षट्प्रकाराणीति, गुदवलित्रयेसार्द्धचतुरङ्गुलंगुदस्य मानम्, तस्यावयवभूतास्तिस्रोवलयः, शङ्खावर्त्तनिभाःउपर्य्युपरिसन्ति । तासांनामप्रवाहणीविसर्ज्जनीसम्बरणीचेति, तत्रगुदोऽष्ठार्द्धांगुलमानस्तदूर्ध्वमंगुलमानप्रथमावलिःसार्द्धैकाङ्गुलमानाद्वितीयात्तृतीयाचतावती ॥ उक्तञ्च । अर्द्धांगुलप्रमाणेनगुदौष्ठंपरिचक्षते॥गुदौष्ठादंगुलञ्चैकंप्रथमान्तुवलिंविदुः॥सार्द्धैकांगुलमानेनपृथगन्येप्रकीर्त्तिते १॥

भावप्रकाश द्वितीयभाग ॥

बवासीरका अधिकार ॥

बवासरिके समीपी कारण ॥

गुदाके तीन चक्रों में छः प्रकार का बवासीर रोग उत्पन्न होताहै जैसे बातज पित्तज कफज सन्निपातज रक्तज और सहज (शरीर केसाथ उत्पन्न हुआ) गुदाके तीन चक्र अर्थात् साढ़े चार अंगुल का गुदाका प्रमाणहै और गुदा के अंग भूत तीन चक्र शंखावर्त्तके समान ऊपर ऊपरहैं उनका नाम प्रबाहणी बिसर्ज्जनी और संबरणी है गुदाके मुखका प्रमाण आधा अंगुल है उसके ऊपरका चक्र १ अंगुल और उसके ऊपर दो चक्र डेढ़ डेढ़ अंगुलकेहैं और कहा गयाहै कि गुदाका मुख आधा अंगुल इसके ऊपर एक चक्र एक अंगुल और उसके ऊपरदो चक्र डेढ़ डेढ़ अंगुलकेहैं १ ॥

अथ वातार्शसोविप्रकृष्टं निदानमाह ॥

कषायकटुतिक्तानिरूक्षशीतलघूनिच । प्रमितात्यशनंतीक्ष्णंमद्यंमैथुनसेवनम् ॥ लङ्घनंदेशकालौचशीतौव्यायामकर्मच । शोकोवातातपस्पर्शोहेतुर्वातार्शसाम्मतः ॥ प्रमितमपरिमितंतीक्ष्णमितिमद्यविशेषणम् । पिष्टादिस्मृदुमद्यस्यवातशमकत्वात् ॥ आतपस्तूष्णवीर्य्योद्भूतरौक्ष्याद्वातप्रकोपेहेतुः । वातार्शसाम् ॥ नत्वर्शांसिसर्वाणित्रिदोषजानियत्राह। पञ्चात्मामारुतःपित्तंकफोगुदवलित्रये । सर्वएवप्रकुप्यन्तिगुदजानांसमुद्भवे ॥ तथाकथंवातार्शसामिति । उच्यते । तत्तदाधिक्याद्व्यपदेशभेदइतिनदोषः । अतएवाग्रेवक्ष्यतेवातोल्वणानामिति । तथाचचरकः । अर्शांसिनामजायन्तेनासान्निपातिकैस्त्रिभिः । दोषैर्दोषविशेषात्तुविशेषःकथ्यतेऽर्शसामिति ॥ २ ॥

वातज बवासीरके दूर वाले कारण ॥

कषैली कटु तिक्त रूखी शीतल तथा हलकी वस्तु बेप्रमाण बहुत भोजन तीक्ष्ण मद्य अधिक मैथुन लंघन शीतल देश तथा काल व्यायाम शोक और वायु तथा धूपका सेवन यह वातज बवासीर के कारणहैं अब यह सन्देह होताहै कि सम्पूर्ण बवासीर त्रिदोषजहैं क्यों कि कहा गयाहै कि बवासीरके उत्पन्न होनेमें पांच प्रकारकी वात तथा पित्त और कफ यह सब गुदाके तीन चक्रों में कुपित होते हैं तो वातज बवासीर यह क्यों कहा इसका उत्तर यहहै कि दोषोंकी अधिकताके अनुसार वातज आदि भेदोंकी कल्पनाकी गईहै इस लिये कोई दोष नहीं है इसीसे आगे कहेंगे कि वातो ल्वणोंके इत्यादि और ऐसाही चरकने भी कहाहै कि सन्निपातके बिना बवासीर नहीं होती परन्तु दूषणोंके द्वारा दोषों की विशेषतासे वातज आदि भेदोंकी विशेष कल्पना करी जातीहै ॥ २ ॥

तथापित्तार्शसो विप्रकृष्टंनिदानमाहः ॥

कट्वम्ललवणोष्णानिव्यायामाग्न्यातपप्रभा । देशकालावशिशिरौक्रोधोमद्यमसूयनम् ॥ विदाहितीक्ष्णमुष्णञ्चसर्वपानान्नभोजनम् । पित्तोल्वणानांविज्ञेयःप्रकोपेहेतुरर्शसाम् ॥ उष्णद्रव्यस्यस्पर्शनादिबोद्धव्यम् । उष्णपानभोजनस्याग्रेवक्ष्यमाणत्वात् ॥ अग्न्यातपप्रभाअग्न्यातपयोःप्रभातेजः अथवाअग्न्यातपतद्द्रव्यस्यतेजःदीप्तिःप्रभा । अशिशिरोदेशोमरुतूशरद्ग्रीष्मश्चकालः क्रोधःदमःकोपःअसूयनंपरसम्पत्तौद्वेषः प्रकोपेउत्पत्तौ ॥ ३ ॥

पित्तज बवासीरके दूरवाले कारण ॥

कटु अम्ल तथा लवण रस उष्णवस्तुका स्पर्शादि व्यायाम अग्नि तथा धूपका सेवन उष्ण देश तथा काल क्रोध मद्यपान पराई सम्पतिमें द्वेष विदाही तीक्ष्ण तथा उष्ण वस्तुओंका पान भोजनादिक यह सम्पूर्ण पित्तकी बवासीरके कारणहैं ॥ ३ ॥

अथ कफार्शसो विप्रकृष्टनिदानमाह ॥

मधुरस्निग्धशीतानिलवणाम्लगुरूणिच । अव्यायामदिवास्वप्नशय्यासनसुखेरतिः॥ प्राग्वातसेवाशीतौचदेशकालावचिन्तनम्।श्लैष्मिकानांसमुद्दिष्टमेतत्कारणमर्शसाम् ४

कफकी बवासीरके दूरवाले कारण ॥

मधुर लवण स्निग्ध शीतल खट्टी तथा भारी वस्तु व्यायाम न करना दिनमें सोना शय्या तथा आसनके सुखमें अनुराग पुरवाई हवा शीतल देश तथा काल और चिन्ताका न होना यह कफज बवासीरके कारणहैं ॥ ४ ॥

अथ त्रिदोषार्शोविप्रकृष्टं निदानमाह ॥

सर्वोहेतुस्त्रिदोषाणांसहजैर्लक्षणंसमम् । जनकत्वेनत्रयोदोषाःयेषांतानित्रिदोषजानि । अर्शसांसर्वोहेतुःपृथग्वातपित्तकफार्शोहेतुः ॥ त्रिदोषार्शोलक्षणंश्वासरुजाविबन्धैःसहजार्शोभिःसमम् । ननुत्रिदोषाणामितिविशेषणंव्यर्थम् ॥ यतःसर्वएवव्याधयस्त्रिदोषजाः । उक्तञ्च ॥ द्रव्यमेकरसंनास्तिनरोगोऽप्येकदोषजः । एकस्तुकुपितोदोषइतरानपिकोपयेत् ॥ इतियुक्तिमप्याहस्वकारणाद्वृद्धोवायुः शैत्याद्द्रावं द्रवत्वात्पित्तंवर्द्धयत्त

इतिउच्यते। यत्रस्वस्वकारणात्त्रयोदोषाःकुप्यन्तितत्रत्रिदोषजव्यपदेशइतिनदोषः५॥

त्रिदोषकी बवासीरके दूरवाले कारण॥

वात पित्त और कफकी बवासीरके मिलेहुए सब कारण त्रिदोषकी बवासीरके जानने चाहिये और त्रिदोषकी बवासीरके लक्षण सहज बवासीरके समान होतेहैं अब यह सन्देह होताहै कि सम्पूर्ण रोग त्रिदोष वाले होतेहैं तो बवासीरका त्रिदोष वाली यह विशेषण क्यों दिया और कहा भी गयाहै कि कोई द्रव्य एक रसयुक्त नहींहै और एक दोपसे उत्पन्न कोई रोग नहीं है क्यों कि एक दोष कुपित होकर अन्य दोषोंको भी कुपित करताहै और युक्तिसे भी सिद्ध होताहै कि अपने कारणोंसे बढ़ीहुई वायु शीतगुणसे वातको और पतलेपनसे पित्तको बढ़ाती है इसका उत्तर यहहै कि जहां अपने अपने कारणोंसे तीनोंदोष कुपित होतेहैं वहां त्रिदोषज यह विशेषण दियाजाताहै इससेकोई दोषनहींहै॥५॥

अथार्शसःपूर्वरूपमाह॥

विष्टम्भोऽन्नस्यदौर्बल्यंकुक्षेराटोपएवच। कार्श्यमुद्गारबाहुल्यंसक्थिसादोल्पविट्कता॥ ग्रहणीदोषपाण्ड्वार्त्तेःप्रशङ्काचोदरस्यच। पूर्वरूपंविनिर्दिष्टमर्शसामभिवृद्धये ६॥

बवासीरका पूर्वरूप॥

बवासीर होनेसे पहले अन्नका अजीर्ण दुर्बलता कोषमें गुड़गुड़ शब्द कृशता बहुत डकार जंघाओंमें शिथिलता मलकी अल्पता और ग्रहणी पांडु तथा उदर रोगकी शंका यह लक्षण होतेहैं॥६॥

अथार्शसांप्राप्तिपूर्वकंसामान्यलक्षणमाह॥

दोषास्त्वङ्मांसमेदांसिसंदूष्यविविधाकृतीन्। मांसांकुरानपानादौकुर्वन्त्यर्शांसितान्जगुः॥ त्वंमांसपदेनत्वङ्मांसमाश्रितंरक्तमभिगृह्यते। किञ्चित्साधारणरक्तश्रावणोपदेशात्॥ आदिशब्देननासानेत्रनाभिमेढ्रादिष्वपिकुर्वन्ति॥७॥

बवासीरके संप्राप्ति पूर्वक सामान्य लक्षण॥

वातादिक दोष त्वचा मांस मेद और रुधिरको दूषित करके गुदा नासिका नेत्र नाभि तथा लिंग आदि स्थानोंमें अनेकप्रकारके आकारवाले मांसके अंकुरोंको उत्पन्न करतेहैं उन्हें बवासीर कहतेहैं७॥

वातार्शोलक्षणम्॥

गुदांकुरावह्वनिलाःशुष्काश्चिमिचिमान्विताः। म्लानाःश्यावारुणाःस्तब्धाविशदाःपरुषाःखराः॥ मिथोविसदृशावक्रास्तीक्ष्णाविस्फुटिताननाः। बिम्बीकर्कन्धुखर्जूरकर्कोटिफलसन्निभाः॥ केचित्कदम्बपुष्पाभाःकेचित्सिद्धार्थकोपमाः। शिरःपार्श्वांसकट्यूरुवंक्षणाभ्यधिकव्यथाः॥ क्षवथूद्गारविष्टम्भहृद्ग्रहारोचकप्रदाः। कासश्वासाग्निवैषम्यकर्णनादभ्रमावहाः॥ तैरार्त्तोग्रथितंस्तोकंसशब्दंसप्रवाहिकम्। रुक्फेनपिच्छानुगतंविबद्धमुपवेश्यते॥ कृष्णत्वङ्नखविण्मूत्रनेत्रवक्त्रंतथैवच। गुल्मप्लीहोदराष्ठीलासम्भवस्तत एवच॥ वह्वनिलाःवातोल्बणगुदांकुराः॥ अर्शांसिचिमिचिमान्विताः। चिमिचिमाव्यथाविशेषाः। चरचराइतिलोके तदन्विताः। श्यावारुणाःश्यावाधूम्रवर्णाः अरुणवर्णा वा। स्तब्धाःकठिनाःविशदाःपिच्छिलाः परुषाःगोजिह्वावत्। खरस्पर्शाःकर्कशाः। खराः

कोटीफलवत्सूक्ष्मानेककण्टकचिताः। विम्ब्यादिफलसन्निभाः ॥ आकृत्याअत्रविकल्पबोधकंवक्ष्यमाणंकञ्चित्केचिदितिपदंप्रतिसम्बद्धनीयम् ॥ कदम्बपुष्पाभाःस्थिरानेकसूक्ष्मशिखराः। सिद्धार्थकोपमाःपीतसूक्ष्मपिटिकाचिताः ॥ तैरार्तइत्यर्शोभिःपीडितः। तैरार्त्तोविवद्धमुपवेश्यतइत्यार्त्तस्यप्रयोज्यकर्त्तुःकर्म्मतार्षत्वात् ॥ ग्रथितंमलगुटिकाग्रंथितविद्वर्त्तिरूपम्। पिच्छापिच्छिलोद्रवभागः ॥ वद्धंसंहृतम्। विशब्दोनपुंसकेऽप्यस्ति ॥ उपवेश्यतेत्याज्यते। ततएववातार्शएवगुल्मादीनांसम्भवः। अष्ठीलानाभेरधोभागेपाषाणपिण्डिकावद्वातव्याधिविशेषः ॥ ८ ॥

बातकी बवासीर के लक्षण ॥

बातकी बवासीर के मस्से सूखे चरचराहटवाले म्लान धुमेले अथवा लालबर्ण वाले कठोर विशद (पिच्छलतासे रहित) गौकीजिह्वा के समान खरखरे खिकसाके समान सूक्ष्म काँटेवाले परस्पर भिन्नरूप वाले टेढ़े नुकीले फटेहुए मुखवाले कुंदरू बेर खजूर तथा खिकसा के फलके समान आकृति वाले कोई कदंबके फूलके समान अनेक कांटोंसे युक्त कोई सरसों के समान फुंसियोंसे युक्त और शिर पसली कन्धे कमर जंघा तथा बंक्षण (जांघ और कमरका मध्य) में अधिक पीड़ा छींक डकार बिष्टंभ हृदय के रोग अरुचि खांसी श्वास बिषमाग्नि कानों में शब्द तथा भ्रमके करनेवाले होतेहैं इनसे पीड़ित मनुष्य को शब्द पीड़ा फेनाप्रवाहिका तथा सुदे युक्त पतलेपन सहित बन्धे दस्त आते हैं और उस मनुष्य के नख त्वचा मल मूत्र मुख तथा नेत्र काले होजाते हैं और इसी बातकी बवासीर से बायगोला पिलही उदर तथा अष्ठीला (नाभिके नीचे पत्थरकी बटियाके समान बातव्याधि) उत्पन्न होती है ॥ ८ ॥

पित्तार्शोलक्षणम् ॥

पित्तोत्तरानीलमुखारक्तपीतसितप्रभाः। तन्वस्रस्राविणोविस्रास्तनवोमृदवःश्लथाः॥ शुकजिह्वायकृत्खण्डजलौकोवक्त्रसन्निभाः। दाहपाकज्वरस्वेदतृष्णामूर्च्छारतिप्रदाः॥ सोष्माणोद्रवनीलोष्णपीतरक्तामवर्चसः। यवमध्याहरितपीतहारिद्रत्वङ्मुखादयः ॥ तनु अघनम्। श्लथालम्बिनः ॥ सन्निभाआकृत्या। पाकोगुदस्यसोष्माणःउष्णस्पर्शाः ॥ हरिच्छाकवर्णम्। पीतंहरितालवर्णम् ॥ हारिद्रंहारिद्रावर्णम्। आदिशब्दान्मलमूत्रपुरीषाणांग्रहणम् ॥ ९ ॥

पित्तकी बवासीरके लक्षण ॥

पित्तकी बवासीर के मस्से नीले मुखवाले रक्त पीत तथा कृष्णवर्ण वाले पतलेरुधिर के बहाने वाले आमकी गन्धिवाले पतले कोमल लम्बे तोतेकी जीभ यकृत खंड अथवा जोंकके मुखके समान आकृतिवाले उष्ण स्पर्शवाले और जौंके समान मध्यवाले होतेहैं इनसे पीड़ित मनुष्य को दाह गुदाकापकना ज्वर स्वेद तृषा मूर्च्छा तथा बेचैनी होतीहै नीले पीले लाल तथा आम सहित पतले उष्णतायुक्त दस्त आतेहैं और रोगीकामुख त्वचा मल तथा मूत्रहरा और हरिताल तथा हल्दी के समान पीलाहोजाताहै ॥ ९ ॥

अथ पित्तोत्तरभेदरक्तार्शोलक्षणमाह ॥

रक्तोल्वणागुदेकीलापित्ताकृतिसमन्विताः । वटप्ररोहसदृशागुञ्जाविद्रुमसन्निभाः ॥ अत्यर्थंदुष्टमुष्णंचगाढ़विट्कप्रपीड़िताः । स्रवन्तिसहसारक्तंतस्यचातिप्रवृत्तितः ॥ भेकाभःपीड्यतेदुःखैःशोणितक्षयसंभवैः । हीनवर्णबलोत्साहोहतौजाःकलुषेन्द्रियः ॥ विट्श्यावंकठिनंरूक्षमधोवायुर्नवर्त्तते । तनुचारुणवर्णंचफेनिलंवासृगर्शसाम् ॥ कट्यूरुगुदशूलञ्चदौर्बल्यंयदिवाधिकम् । तत्रानुबन्धोवातस्यहेतुर्यदिचरूक्षणम् ॥ शिथिलंश्वेतपीतंचविट्स्निग्धंगुरुशीतलम् । यद्यर्शसांघनंचासृक्तन्तुमत्पाण्डुपिच्छिलम् ॥गुदंसपिच्छंस्तिमितंगुरुस्निग्धंचकारणम् । श्लेष्मानुबन्धोविज्ञेयस्तत्ररक्तार्शसांबुधैः ॥ गुदेतुकीला अर्शांसिपित्ताकृतिसमन्विताः । पित्तार्शोलक्षणयुक्ताः । आकारेणचवटप्ररोहसदृशाःदुःखैःरोगैःत्वक्पारुष्याम्बुशीतप्रार्थनादिभिः । कलुषेन्द्रियःव्याकुलसर्व्वेन्द्रियः । अथरक्तस्यापिवातोल्वणस्यलक्षणमाह । रक्तार्शांसिअनुबन्धःउल्वणम् । रूक्षंरूक्षयतीतिरूक्षणम् । रूक्षंद्रव्यम् । पित्तोल्वणस्यतुलक्षणम् । रक्तोल्वणागुदेकीलाःपित्ताकृतिसमन्विताः । इत्यादिनैवोक्तंरक्तपित्तयोःसमानलिङ्गत्वात् । ॥ १० ॥

खूनी बवासीर के लक्षण ॥

खूनी बवासीर के मस्से पित्तकी बवासीर के समान लक्षण वाले बर्गदके अंकुर समान आकृति वाले और घोंघची तथा मूँगेके सदृश होते हैं मलके कड़ेहोने से पीड़ित हुएइनमस्सोंमें से एकाएकी गरम और दूषित बहुतसा रुधिर निकलता है रुधिर के बहुत बहनेसे मेंढक के समान रंगवाला रोगी रुधिर के क्षयसे उत्पन्नहुए त्वचाकी कठिनता तृषा तथा शीतकी इच्छा आदिक रोगोंसे पीड़ित होताहै वर्ण बल तथा उत्साह रहित होजाताहै ओजका नाशहोताहै सम्पूर्ण इन्द्रियां व्याकुल होजातीहैं मैला कठिन तथा रूखा मल उतरताहै और अधोवायु नहीं निकलती जो रूखी बस्तुके सेवनसे खूनी बवासीर होय और पतला लाल तथा फेने समेत रुधिर निकले और कमर जंघा तथा उदर में पीड़ा और दुर्बलता होय तो उसमें बायुकी अधिकता जाननी चाहिये जो स्निग्ध तथा भारीवस्तु के सेवन से खूनी बवासीर हुईहोय और मल ढीला स्वेद पीला स्निग्ध भारी तथा शीतल होय रुधिर गाढ़ा पांडुवर्ण तन्तुओंसे भरा तथा चिकना होय और गुदा गीले कपड़े से ढकी हुईसी चिकनी होय तो उसमें कफकी अधिकता जाननी चाहिये और खूनी बवासीर के मस्से पित्तकी बवासीर के समान लक्षण वाले होतेहैं इत्यादि कहनेहीसे अधिक पित्तवाली खूनी बवासीर का लक्षण कहागया क्योंकि रुधिर और पित्तके लक्षण समान होते हैं ॥ १० ॥

कफोल्वणस्यलक्षणम् ॥

श्लेष्मोल्वणामहामूलाघनामन्दरुजःसिताः । उत्सन्नोपचिताःस्निग्धाःस्तब्धवृत्तगुरुस्थिराः ॥ पिच्छिलाःस्तिमिताःश्लक्ष्णाःकण्ड्वाढ्याःस्पर्शनप्रियाः । करीरपनसास्थ्याभास्तथागोस्तनसन्निभाः ॥ वङ्क्षणानाहिनःपायुबस्तिनाभिविकर्षिणः । सकासश्वासहृल्लासप्रसेकारुचिपीनसाः ॥ मेहकृच्छ्रशिरोजाड्यशिशिरज्वरकारिणः । क्लैब्याग्निमार्द्दवच्छ

र्दिरामप्रायविकारदाः ॥ वसाभासकफप्रायपुरीषाःसप्रवाहिकाः । उत्सन्नाःउन्नताः । उपचिताःस्थूलाः । स्निग्धाःस्नेहाभ्यक्ताः । स्थिरानिश्चलाः । पिच्छिलाःकफोल्वणत्वात् । स्तिमिताआर्द्रचर्म्मावगुण्ठिताइव । श्लक्ष्णामणिवन्मसृणाः । करीरोवंशांकुरः । पनसास्थिगोस्तनाः । तदाकृतयःवङ्क्षणानाहिनःवङ्क्षणयोरानाहकारिणः । पाय्वादिष्वाकर्षणवत्पीड़ाकारिणः । कृच्छ्रंमूत्रकृच्छ्रम् । शिरोजाड्यंशिरोभागेशीताक्रान्तमिव । क्लैव्यंस्त्रीष्वनिच्छाअत्रछर्दिशब्दःसान्तआर्षत्वात् । आमप्रायविकारदाः । आमबहुलाव्याधयोऽतीसारग्रहण्यादयःतान्ददति ॥ ११ ॥

कफकी बवासीरके लक्षण ॥

कफकी बवासीरके मस्से बड़ीजड़वाले घने थोड़ी पीड़ावाले श्वेत ऊंचे मोटे चिकनाई से भरे हुये अचल सच्चिकन गीलेवस्त्रसे ढकेहुएकेसमान मणियोंकेसमान स्वच्छ खुजलीवाले स्पर्शकरनेमें सुखदाई करील कटहलके बीज अथवा मुनक्काके समान आकारवाले वंक्षणमें बंधनसा करनेवाले गुदा मूत्राशय तथा नाभिमें खेंचनेकीसी पीड़ाकरनेवाले और खांसी श्वास मतली नाक मुखकाबहना अरुचि पीनस प्रमेह मूत्रकृच्छ्र शिरमें शीतसा मालूम होना शीतज्वर नपुंसकता मंदाग्नि छर्दि तथा अतीसार और ग्रहणीआदि आमके बिकार इनसब रोगोंके करनेवाले होते हैं और रोगीको प्रबाहिका सहित अधिक कफसे युक्त चरबी केसे दस्त आतेहैं ॥ ११ ॥

द्वन्द्वजार्शोलक्षणम् ॥

हेतुलक्षणसंसर्गाद्विद्याद्द्वन्द्वोल्वणानिच ॥ १२ ॥

द्वंद्वज बवासीरका लक्षण ॥

ऊपरकहेहुए दोदोषोंके कारण और लक्षणोंके मिलनेसे द्वन्द्वज बवासीर जाननी चाहिये ॥ १२ ॥

अथ त्रिदोषजार्शःसहजार्शोलक्षणमाह ॥

सर्वैःसर्वात्मकान्याहुर्लक्षणैःसहजानिच । सर्वलक्षणैर्वातपित्तकफार्शोलक्षणैःप्रागुक्तैः सर्वात्मकानिसन्तितान्यर्शांसिअतस्तथातैरेवलक्षणैःसहजान्यर्शांस्याहुः ॥ १३ ॥

त्रिदोषज और सहज बवासीर के लक्षण ॥

ऊपरकहेहुए वात पित्त और कफके संपूर्ण लक्षणोंके मिलने से त्रिदोषज और सहज बवासीर जाननी चाहिये ॥ १३ ॥ तन्त्रान्तरेसहजार्शोलक्षणंपृथगाहुः ॥

अर्शांसिसहजातानिदारुणानिभवन्तिहि ।दुर्दर्शनानिपाण्डूनिपरुषाण्यरुणानिच॥ अन्तर्मुखानितैरार्त्तःक्षीणःक्षीणस्वरोभवेत् । क्षीणानलःक्षीणरेताःशिरासन्ततविट्ग्रहः॥ अल्पप्रजाःक्रोधशीलोभग्नकांस्यस्वनान्वितः । शिरोदृक्कर्णनासासुरोगीहृल्लेखसेकवान् ॥ १४ ॥ तन्त्रान्तरमें कहाहुआ सहज बवासीरका अन्य लक्षण ॥

सहजबवासीरके मस्से भयंकर दुर्दर्शन पांडु तथा रक्त वर्णवाले कठोर और भीतरकी ओर मुखवाले होतेहैं इनसे व्याकुल मनुष्य क्षीण क्रोधी फूटेकांसेके समान तथा क्षीणशब्दवाला मंदाग्नि अल्पवीर्य्यवाला निकलीहुई नसवाला मलकी रुकावटवाला थोड़ी सन्तानवाला और शिर दृष्टि

कान तथा नासिकाके रोगवाला होताहै और उसका हृदय लिपाहुआसा मालूमहोताहै और नासिका तथा मुखसे जल निकलताहै ॥ १४ ॥

सुखसाध्यार्शोलक्षणम् ॥

वाह्यायांतुवलौजातान्येकदोषोल्वणानिच । अर्शांसिसुखसाध्यानिनचिरोत्पतितानि च ॥ वाह्यायांवलौसंवरण्याम् । नचिरोत्पतितानिअतिक्रान्तसंवत्सराणिएतानि लक्षणमिलितानिसुखसाध्यत्वबोधकानि ॥ १५ ॥

सुखसाध्य बवासीरके लक्षण ॥

एक दोषकी अधिकतावाले बाहरके संवरणी नाम चक्रमें उत्पन्न होनेवाले और एकबर्षके भीतर के पैदाहोनेवाले ववासीरके मस्से सुखसाध्य होतेहैं ॥ १५ ॥

कष्टसाध्यार्शोलक्षणम् ॥

द्वन्द्वजानिद्वितीयायांवलौयान्याश्रितानिच । कृच्छ्रसाध्यानितान्याहुःपरिसंवत्सराणिच ॥ द्वितीयायांवलौसर्ज्जन्याम् । परिसंवत्सराणिपरिगतः संवत्सरोयेषांतान्यतीत संवत्सराण्यतियावत् । एतानिप्रत्येकंकष्टसाध्यलक्षणानि ॥ १६ ॥

कष्टसाध्य बवासीरके लक्षण ॥

दोदोषोंकी अधिकतावाले विसर्जनीनाम दूसरे चक्रमें पैदाहोनेवाले और एकबर्षके पुरानेबवासीर के मस्से कष्टसाध्यहोतेहैं १६ ॥ असाध्यार्शोलक्षणम् ॥

सहजानित्रिदोषाणियानिचाभ्यन्तरांबलिम् । जायन्तेऽर्शांसिसंश्रित्यतान्यसाध्यानि निर्द्दिशेत् (अभ्यन्तरांबलिंप्रवाहिणीम्) (एतान्यपिप्रत्येकमसाध्यानिलक्षणानि ॥ १७ ॥

असाध्य बवासीरके लक्षण ॥

सहज अथवा त्रिदोषज और प्रवाहिणी नाम भीतरके चक्रमें उत्पन्न होनेवाले बवासीर के मस्से असाध्य होते हैं ॥ १७ ॥

शेषत्वादायुषस्तानिचतुष्पादसमन्वये । याप्यन्तेदीप्तकायाग्नेःप्रत्याख्येयान्यतोऽन्यथा ॥ यद्यायुःशेषोवर्त्ततेचिकित्सायाःचत्वारःपादास्तेयदावैद्यवचनकारीधनवानुदारोजितेंद्रियोरोगी । शस्त्रकर्म्मणिकुशलोवैद्यः अनलसः ॥ आप्तःप्रियःपरिचारकः । षट्रसवीर्य्यादिकमौषधंएषांसमन्वयेसमागमे ॥ अतिदीप्तकायाग्नेःपुरुषस्यतानिअर्शांसियाप्यन्तेचिकित्सायाम् । अतोऽन्यथाप्रत्याख्येयानिचिकित्साहीनानीत्यर्थः ॥ १८ ॥

जो आयु बाकीहोय रोगी की अग्नि दीप्तहोय और चतुष्पाद मिलें तो असाध्यभी याप्य होते हैं और ऐसा न होवे तो चिकित्साके अयोग्यहैं चतुष्पाद अर्थात् बैद्यकी आज्ञामाननेवाला धनी दाता तथा जितेन्द्री रोगी शास्त्र तथा चिकित्सामें कुशल बैद्य आलस्य रहित विश्वासपात्र तथा प्रियपरिचारक और नबीन तथा रसवीर्य्यादि से युक्त औषध इन चारोंबातोंको चतुष्पाद कहते हैं ॥ १८ ॥

अथार्शोऽरिष्टमाह ॥

हस्तेपादेमुखेनाभ्यांगुदेवृषणयोस्तथा । शोथोहृत्पार्श्वशूलंच यस्यासाध्योऽर्शसोहि

सः ॥ असाध्यःसन्निहितमरणबोद्धव्यः । अर्शसःअर्शोरोगयुक्तः ॥ एतन्मिलितमरिष्ट लक्षणम् । हृत्पार्श्वशूलंसंमोहश्छर्दिरङ्गस्यरुग्ज्वरः ॥ तृष्णागुदास्यपाकश्चनिहन्युर्गुदजातुरम् । गुदास्यचास्यमोष्ठदेशस्तस्यपाकः ॥ हृत्पार्श्वशूलादिसमस्तंचारिष्टलक्षणं तृष्णारोचकशूलार्त्तमतिप्रस्रुतशोणितम् । शोथातीसारसंयुक्तमर्शांसिक्षपयन्तिहि १९॥

बवासीरका अरिष्ट ॥

जिस बवासीर वालेके हाथ पैर मुख नाभि गुदा तथा अंडकोशोंमें सूजनहोय और हृदय तथा पसलियों में पीड़ाहोय उसकी मृत्यु निकट जाननी चाहिये जिस बवासीर वाले के हृदय तथा पसलियोंमें पीडाहोय मूर्च्छा छर्दि शरीरकी पीड़ा ज्वर तथा तृषा उत्पन्नहो और गुदाका मुखपक-जाय उसकी मृत्यु निकट जाननी चाहिये जो बवासीर वाला तृषा अरुचि शूल बहुत रुधिरकाबहना सूजन और अतीसार इनसे युक्त होय उसकी मृत्युहोती है ॥ १९ ॥

मेढ्रार्शो लक्षणम् ॥

मेढ्रादिष्वपिवक्ष्यन्तेयथास्वंनाभिजानिच । गण्डूपदास्यरूपाणिपिच्छिलानिमृदूनि च ॥ यथास्वंयथात्मीयलक्षणम् । नचात्रोक्तनिदानपूर्वसम्प्राप्तिलक्षणंयुक्तम् ॥ तत्रार्शसःपदन्तुमांसांकुरःसाम्यात् । गण्डूपदःकञ्चुलकः ॥ २० ॥

लिंगादि की बवासीरकालक्षण ॥

लिंग आदिकोंमें भी अपने २ लक्षणोंके अनुसार मस्से उत्पन्न होतेहैं उनमेंसे नाभिमें हुए मस्से केंचुयेके मुख के समान आकृतिवाले सचिक्कण और कोमल होतेहैं ॥ २० ॥

अथ मांसांकुरसाम्यादत्राधिकारे चर्मकीलस्यसम्प्राप्तिपूर्वकंलक्षणमाह ॥

व्यानोगृहीत्वाश्लेष्माणंकरोत्यर्शस्त्वचोवहिः । कीलोपमंस्थिरखरंचर्मकीलंतुतद्विदुः ॥ खरंकर्कशम् ॥ २१ ॥

मस्सोंके समान होनेके कारण इस अधिकारमें चर्मकीलका संप्राप्ति पूर्व्वक लक्षण कहाजाताहै ॥

व्यान बायु कफको ग्रहण करके त्वचाके ऊपर स्थिर कर्कश और कील के समान मस्सा उत्पन्न करती है उसको चर्मकील कहते हैं ॥ २१ ॥

तस्य च वातादि भेदेनलक्षणमाह ॥

वातेनतोदपारुष्यंपित्तादसितरक्तता । श्लेष्मणास्निग्धतातस्यग्रथितत्वंसवर्णता ॥ सवर्णताशरीरसमानवर्णता ॥ २२ ॥

वातादि भेदसे चर्मकीलके लक्षण ॥

बायुकी चर्म्मकील में पीड़ा तथा कठिनता पित्तकी चर्म्मकील में मस्से के मुखका कालापन और कफकी चर्म्मकील में स्निग्धता गठीलापन तथा शरीर के समान वर्ण होता है ॥ २२ ॥

अथ सामान्यतोऽर्शसःचिकित्सा ॥

यद्वातस्यानुलोम्याययदग्निबलवृद्धये । अन्नपानौषधंसर्वंतत्सेव्यंनित्यमर्शसैः ॥

अर्शसेःअर्शोरोगयुक्तेः । शालिषष्ठिकगोधूमयवान्नानिघृतैःसह ॥ अजाक्षीरेणवानिम्बप टोलानांरसेनवा । कन्दैर्वार्त्ताकुमूलांशैःरसैर्मांसरसेनवा ॥जीवन्त्यग्रोदिकाशाकैस्तण्डुलीयकवास्तुकैः । अन्यैश्चसृष्टविण्मूत्रमरुद्भिर्वह्निदीपनैः ॥ अर्शोभिभिन्नवर्चांसिहन्याद्वातातिसारवत् । सतक्रंलवणंदद्याद्वातवर्चोऽनुलोमनम् ॥ नप्ररोहंतिगुदजाःपुनस्तक्रसमाहताः । तक्राभ्यासोऽर्शसैःकार्य्योवलवर्णोऽग्निवृद्धये । स्रोतःसुतक्रशुद्धेषुसम्यक्चलतितद्रसः ॥ तेनपुष्टिस्तथातुष्टिर्वलंवर्णश्चजायते । वातश्लेष्मविकाराणांशतञ्च विनिवर्त्तते ॥ २३ ॥

बवासीर की सामान्य चिकित्सा ॥

जो अन्न पान तथा औषध वायु के नीचे लेजानेवाले और अग्निबलको बढानेवाले होवैं वह संपूर्ण बवासीरवालों को नित्य सेवन करना चाहिये बवासीर वालेको घृत सहित शालि साँठी गेहूं और जौ इनको बकरी का दूध नींव पर्वलका रस जमींकंद बैंगन तथा मूलीका यूष मांसका रस इनमें से किसीके साथ सेवन करावे और जीवन्ती पोय चौराई बथुई और अन्य मलमूत्र की निकालने वाली बायुको नीचे लेजाने वाली तथा दीपन वस्तुओं के साथ सेवन करावे बवासीर में मलके भेद होजाने पर वातातिसार के समान चिकित्सा करे वायु तथा मलके नीचे लेजाने के लिये सैंधव सहित मट्ठेका सेवन करे मट्ठेके द्वारा नष्टहुई बवासीर फिर नहीं निकलती बवासीरवालोंको बल वर्ण तथा अग्निकी वृद्धिके लिये सदैव मट्ठेका सेवन करनाचाहिये मट्ठेके द्वारा स्रोतोंके शुद्ध होजाने पर रस अच्छीप्रकार से शरीर में फैलता है इस्से पुष्टता तुष्टता बल तथा बर्ण की उत्पत्ति होती है और बात कफके सैकडों विकार शान्त होजाते हैं ॥ २३ ॥

चिरविल्वाग्निसिन्धूत्थनागरेन्द्रयवारलुः । तक्रेणपिवतोऽर्शांसिनिपतन्त्यसृजासह ॥ चिरविल्वःकरञ्जः । तस्यफलस्यात्रमज्जाग्राह्या ॥ अरलुः शोणकः । इतिकरञ्जादिचूर्णम् ॥ २४ ॥

करंजुयेकी मींगी चीता सेंधानोन सोंठ इन्द्रजौ और सोनापाठा इनके चूर्णको मट्ठेके साथ पीनेसे रुधिर सहित मस्से गिर जातेहैं ॥ इति करंजादि चूर्ण ॥ २४ ॥

लेपंरजनिचूर्णेनसुधादुग्धयुतेनच । अर्शोरोगनिवृत्त्यर्थंकारयेत्तुचिकित्सकः। पिप्पली सैन्धवंकुष्ठंशिरीषस्यफलंतथा । सुधादुग्धार्कदुग्धंवालेपोऽयंगुदजान्हरेत् ॥ हरिद्राजालिनीचूर्णंकटुतैलसमन्वितम् । एषलेपोवरःप्रोक्तोह्यर्शसामन्तकारकः ॥ जालिनीकटुतोरइइतिलोके । असितानांतिलानान्तुपलंशीतजलेनच ॥ खादतोऽर्शांसिशाम्यन्ति दृढ़ादन्ताभवन्तिच । शस्त्रैर्वाथजलौकाभिःप्रच्छन्नंकठिनार्शसः ॥ शोणितंसञ्चितंदुष्टंहरेत्प्राज्ञःपुनःपुनः ॥ २५ ॥

थूहरके दूधके साथ हल्दीके चूर्णको लेप करनेसे बवासीर जातीहै पीपल सेंधानोन कूट सिरसके बीज इन सबको थूहर अथवा आकके दूधके साथ लेप करनेसे मस्सोंका नाश होताहै हल्दी और कड़वी तोरईका चूर्ण कडुये तेलके साथ लेप करनेसे बवासीरका नाशहोताहै चार तोले कालेतिल शीतलजलके साथ खानेसे बवासीर शान्त होजातीहै और दांत दृढ होजाते हैं जो कठोर मस्सों में

छिपाहुआ इकट्ठा रुधिर मालूम देतो बारम्बार शस्त्र अथवा जोंकोंकेद्वारा निकलवानाचाहिये २५॥

काशीसंसैन्धवंकृष्णाशुण्ठीकुष्ठञ्चलाङ्गली । शिलाभिदश्वमारश्चदन्तीजन्तुघ्नचित्रकम् ॥ तालकंकुनटीस्वर्णक्षीरीचैतैःपचेद्भिषक् । तैलंस्नुह्यर्कपयसागवांमूत्रचतुर्गुणम् ॥ एतदभ्यङ्गतोऽर्शांसिक्षारेणैवपतन्तिहि । क्षारकर्म्मकरंह्येतन्नचसन्दूषयेद्वलिम् ॥ काशीसङ्कसीसइतिलोके । लाङ्गलीकरिहारीतिलोके । शिलाभित्पाषाणभेदः । अश्वमारःकनैलइतिलोके । स्वर्णक्षीरीचौराईइतिलोके । इतिवृहत्काशीसाद्यतैलम् ॥ २६ ॥

कसीस सेंधानोन पीपल सोंठ कूट करिहारी पाषाणभेद कनेर दन्ती बायबिड़ंग चीता हरिताल मैनशिल चौराई इन वस्तुओंके द्वारा तेलको थूहर तथा मदारका दूध और चौगुना गोमूत्र डालकर विधिपूर्वक पाककरे इस तेलके लगानेसे मस्से गिरपड़तेहैं यह तेलक्षारके कार्य्यको सिद्ध करताहै और चक्रोंको दूषित नहीं करताहै ॥ इति वृहत्कासीसाद्यतैल ॥ २६ ॥

शुण्ठीकणामरिचनागदलत्वगेलंचूर्णीकृतंक्रमविवर्द्धितमूर्द्धमन्त्यात् । खादेदिदंसमसितंगुदजाग्निमान्द्यगुल्मारुचिश्वसनकण्ठहृदामयेषु ॥ तद्यथा एलाबीजमत्रसूक्ष्मं ग्राह्यम् । अतआहमदनपालः । एलासूक्ष्माकफश्वासकासार्शोमूत्रकृच्छ्रनुदित्यादि । तस्याबीजंभागः १ तजभागः २ दलंपत्रकम् ३ नागंनागकेशरम् ॥ यतआहनिघंटधन्वन्तरिः । नागपुष्पंमतंनागंकेशरंनागकेशरमित्यादि तस्यभागः ४ मरिच ५ पीपरि ६ सोंठि ७ चिनीभाग १८ सम शर्क्करचूर्णम् ॥ २७ ॥

छोटी इलायचीके दाने १ भाग तज २ भाग तेजपात ३ भाग नागकेशर ४ भाग मिर्च ५ भाग पीपल ६ भाग सोंठ ७ भाग चीनी २८ भाग इन सब औषधियोंको चूर्णकरके और लिखीहुई चीनी मिलाकर खाने से बवासीर मन्दाग्नि बायगोला अरुचि श्वास कंठ और हृदयके रोग यह सब नष्ट होतेहैं ॥ इति समशर्कर चूर्ण ॥ २७ ॥

त्रिकत्रयंवचाहिंगुपाठाक्षारौनिशाद्वयम् । चव्यतिक्ताकलिङ्गानिशताङ्गालवणानिच ॥ ग्रन्थिविल्वाजमोदाचगणोऽष्टाविंशतिर्मतः ॥ एतानिसमभागानिसूक्ष्मचूर्णानिकारयेत् ॥ चूर्णंविड़ालपदकंपिवेदुष्णेनवारिणा । एरण्डतैलयुक्तंवालिह्याच्चूर्णमिदंनरः ॥ हन्यादर्शांसिसर्व्वाणिश्वासशोषभगन्दरान् । हृच्छूलंपार्श्वशूलंञ्चवातगुल्मंतथोदरम् ॥ हिक्कांकासंप्रमेहांश्चपाण्डूरोगंसकामलम् । आमवातमुदावर्त्तमन्त्रवृद्धिंगुदकृमीन् ॥ अन्येचग्रहणीदोषाभिषग्भिर्य्येप्रकीर्त्तिताः । विजयोनामचूर्णोऽयंतान्सर्व्वानाशुनाशयेत् ॥ महाज्वरोपसृष्टानांभूतोपहतचेतसाम् । अप्रजानाञ्चनारीणांहितमेतद्भिषजम् ॥ त्रिकत्रयंत्रिफला । त्रिकटुत्रिसुगन्धीनि ॥ क्षारौस्वर्ज्जिकाजवक्षारश्च । लवणानिपञ्च ग्रन्थिपिप्पलीमूलम् । विड़ालपदकंकर्षइतिविजयचूर्णम् ॥ २८ ॥

त्रिफला त्रिकटु त्रिसुगन्ध (दालचीनी तेजपात और इलायची) बच हींग पाठा जवाखार सज्जी हल्दी दारुहल्दी चव्य कुटकी इन्द्रजौ सौंफ पांचोनोन पीपलामूल बेल और अजमोद इन सबको समभाग लेकर महीन चूर्ण करे फिर १ तोले भर चूर्ण गरमजल के साथ पिये अथवा रेंड़ीके तेल

केसाथ चाटे इस्से संपूर्ण बवासीर श्वास सूजन भगन्दर हृदयकी पीड़ा पसलीकी पीड़ा बायगोला उदर हिचकी खांसी प्रमेह पांडुरोग कामला आमबात उदावर्त्त आंतका बढ़ना गुदाके कृमि और बैद्योंके कहेहुए ग्रहणी के संपूर्ण दोष यह सब शीघ्र नष्ट होतेहैं यह चूर्ण बहुत ज्वर से व्याकुल तथा भूतों से बिकल चित्त वाले मनुष्यों को और बंध्यास्त्रियों को हितकारी है इति विजय चूर्ण ॥ २८ ॥

मरिचमहौषधचित्रकशूरणभागायथोत्तरंद्विगुणाः। सर्व्वसमोगुड़भागःसेव्योऽयंमोदकःप्रसिद्धफलः॥ ज्वलनंज्वलयतिजाठरमुन्मूलयतीहशूलसगुल्मगदान्। निःशेषयतिश्लीपदमर्शांसिविनाशयत्याशु॥ तद्यथामरिचभागः१।शुण्ठीभागः२।चीताभागः ४ शूरणभागः८। गुड़भागः१५। इतिलघुशूरणमोदकः॥ २९॥

मिर्च १ भा० सोंठ२ भा० चीता४ भा० जिमींकन्द८ भा० और गुड़१५ भा० इन सब औषधियों केमोदक बनावे इनके खानेसे उदरकी अग्नि दीप्त होताहै और शूल बाय गोला श्लीपद और बवासीरका शीघ्र नाश होताहै इति लघु शूरण मोदक॥ २९॥

षोड़शभाशूरणगावह्नेरष्टौमहौषधःस्यात्।अर्द्धेनभागयुक्तिर्मरिचस्यततोऽपिचार्द्धेन॥ त्रिफलाकणासमूलातालीशारुष्करकृमिघ्नानाम्। भागामहौषधसमादहनांशतालमूलीच॥ भागःशूरणतुल्योदातव्योवृद्धदारकस्यापि। भृङ्गैलेमरिचांशेसर्व्वाण्येकत्रकारयेच्चूर्णम्॥ द्विगुणेनगुड़ेनयुतःसेव्योऽयंमोदकःप्रकामधनैः। गुरुवृष्योभोजनरतैरितरेषूपद्रवंकुर्य्यात्॥ भस्मकमनेनजनितंपूर्वमगस्त्यस्ययोगराजेन। भीमस्यमारुतेरपिमहाशनोतेनतौयातो॥ अग्निबलवर्णहेतुर्नकेवलंशूरणोमहावीर्य्यः। हन्ताशस्त्रक्षारानलैविनाप्यर्शसामेषः॥ श्वयथुश्लीपदगदहृद्ग्रहणींचकफानिलोद्भूताम्। नाशयतिवलीपलितंमेधांकुरुतेजरांचहरेत्॥ हिक्कांकासंश्वासंचराजरोगंप्रमेहांश्च। प्लीहानंचतथोग्रंहन्त्याशुरसायनंपुंसाम्॥ एषांभागायथा।शूरणभागः१६।चीताभागः८।शुण्ठीभागः४। मरिचभागः२।हररें। बहेरा। आँवरा। पीपरि। पिपरामूल। तालीश। भेलातदसह्यत्वेरक्तचन्दनम्। विड़ंगप्रत्येकंभागः४।तालमूलीभागः८।विधाराभागः१६। तजभागः १। इ ।चीछोटीविजभागः १। गुड़भागः१७६। इतिवृहच्छूरणमोदकः॥ ३०॥

जिमींकन्द १६ भाग चीता ८ भाग सोंठ ४ भाग मिर्च दो भाग हड़ बहेड़ा आमला पीपल पीपलामूल तालीस भिलावाँ बायबिड़ंग यहसब चारचार भाग तालमूली ८ भाग बिधारा १६ भाग तज १ भाग छोटीइलाइची के दाने १ भाग गुड़ १७६ भाग इनसब औषधियों को चूर्ण करके गुड़के साथ मोदक बनावै यह औषध धनवानों को खानी चाहिये क्योंकि इसमें भारी और वीर्य्य वर्द्धक भोजन करना चाहिये और नहीं तो उपद्रव करतीहै इसके द्वारा अगस्त्य और भीमसेन को भस्मक रोग होगयाथा इसीसे वह बहुत खानेवालेहुए यह केवल अग्निबल तथा वर्णहीका बढ़ानेवाला नहीं है किन्तुशस्त्र क्षार तथा अग्निके बिनाभी बवासीरको नष्टकरताहै इसके द्वारा सूजन श्लीपद कफ तथा बात जनित ग्रहणी झुर्री बालोंकी सफेदी वृद्धावस्था हिचकी खांसी श्वास राजयक्ष्मा प्रमेह तथाप्लीहा इनसबकानाश होताहै और यह रसायन तथा बुद्धि वर्द्धकहै इति वृहच्छूरण मोदक॥ ३०॥

त्रिवृत्तेजोवतीदन्तीश्वदंष्ट्राचित्रकंशटी । गवाक्षीमुस्तविश्वाह्वविडङ्गानिहरीतकी ॥ पलोन्मितानिचैतानिपलान्यष्टावरुष्करात् । वृद्धदारात्पलान्यष्टौशूरणस्यतुषोडश ॥ जलेद्रोणद्वयेक्काथ्यंचतुर्भागावशेषितम् । पूतंपूतंरसंभूयःक्काथेभ्यस्त्रिगुणंगुडम् ॥ मेल यित्वापचेत्तावद्यावद्दर्वीप्रलेपनम् । अवतार्य्यंततःपश्चाच्चूर्णानीमानिदापयेत् ॥ त्रिवृत्ते जोवतीकन्दांचेत्रकद्विपलांशिकान् । एलात्वङ्मरिचं चापिनागाह्वञ्चापिषट्पलम् ॥ द्वात्रिंशच्चपलान्यत्रचूर्णयित्वानिधापयेत् ।ततोमात्रांप्रयुञ्जीतजीर्णेक्षीररसाशिनः॥कन्दः शूरणःहन्यादर्शांसिसर्व्वाणितथासर्व्वोदराण्यपि ॥ गुल्मानापप्रमेहांश्चपाण्डुरोगंहली मकम् । दीपयेदनलंमन्दंयक्ष्माणंचापकर्षति ॥ आधिवातेप्रतिश्याये पीनसेचहितोमतः । भवन्त्यनेनपुरुषाःशतंवर्षाण्यनामयाः ॥ दीर्घायुषःप्रजननोवलीपलितवर्ज्जिताः । गुडः श्रीवाहुशालोऽयंरसायनवरोमतः ॥ दुर्नामान्तकरोह्येषदृष्टोवारसहस्रशः।यावद्दर्वीप्रलेपः स्याद्गुडोवातन्तुमान्भवेत् ॥तोयपूर्णेयदापात्रेक्षिप्तोनप्लवतेगुडः । क्षिप्तस्तुनिश्चलस्तित ष्ठेत्पतितस्तुनशीर्य्यति॥एषपाकःसमस्तानांगुडानांपरिकीर्त्तितः । सार्द्धपलंपलंचार्द्धंभक्ष येद्गुडखण्डयोः ।गुडःश्रेष्ठातुमध्यमाहीनामात्रोक्तामुनिभिस्त्रिधा।श्रीवाहुशालः ३१॥

निसोथ तेजोवती (चव्य) दन्ती गोखुरू चीता कचूर इन्द्रायन मोथा सोंठ बायबिडंग और हड़ यह सब एक२पल भिलावा ८ प० बिधारा८ प० जमींकन्द१६प० इनसब औषधियोंको २०४८तोले पानीमें औटावे जब चौथाई बाकीरहै तबछानले फिर क्वाथकी औषधियोंका तिगुना गुड उसपानी में डालकर जबतककरछी में लगने लगेतबतक पाककरके उतारले फिर निसोथ चव्य ज़िमींकन्द चीता यह सब दो२पल इलायची तज मिर्च तथा गजपीपल यह सब छः२ पल इन सब बत्तीस पल औषधियोंके चूर्णको मिलावे इसको मात्राके अनुसार खाय और इसके पचजाने पर दूध तथा मांसके रसका पथ्यकरे इसके द्वारा सब प्रकारकी बवासीर सम्पूर्ण उदर बायगोला प्रमेह हलीमक पांडु मंदाग्नि राजयक्ष्मा अधिबात ज़ुकाम तथा पीनसका नाश होताहै और झुर्री बालोंकी सुफेदी तथा संपूर्ण रोगोंसे निवृत्त होकर सन्तान उत्पन्न करने में समर्थ होके सौबर्ष तक जीता है यह श्री बाहु शाल नाम गुड़रसायनों में श्रेष्ठहै और बवासीरके नाश करने में यह सैकड़ोंबार अनुभव किया गया है जब करछी में लगने लगै सूतसा निकलने लगे पानीमें डालनेसे नघुले फेकने से निश्चलबनार हे अथवा गिरकर बहने न लगे तब गुड़का परिपाक हुआ जानना चाहिये मुनि लोगोंने इसकी मात्रा तीनप्रकार की कही हैं श्रेष्ठमात्रा ६ तोले मध्यम मात्रा ४ तोले और हीन मात्रा २ तोले ॥ इति श्री बाहुशाल गुड़ ॥ ३१ ॥

तिलभल्लातकैःपथ्यं गुड़श्चेतिसमांशकैः।दुर्नामश्वासकासघ्नं प्लीहपाण्डुज्वरापहम् ॥ पित्तश्लेष्मप्रशमनी कण्डूकक्षोरुजापहा। गुदजान्नाशयत्याशु भक्षितासगुडाभया॥३२॥

तिल भिलावा हड़ और गुड़ इन सबको समभाग लेकर खाने से बवासीर श्वास खांसी प्लीहा पांडु और ज्वरका नाशहोता है गुड़के साथ हड़को खाने से पित्त कफ खुजली तर खुजली और बवासीर का नाशहोता है ॥ ३२ ॥

प्रणम्यशङ्करंरुद्रं दण्डपाणिंमहेश्वरम् । जीवितारोग्यमान्विच्छन्नारदोऽपृच्छदीश्व
रम् ॥ सुखोपायेनहेनाथ शस्त्रक्षाराग्निभिर्विना । चिकित्सामर्शसांनृणांकारुण्याद्वक्तुम
र्हसि ॥ नारदस्यवचःश्रुत्वा नराणांहितकाम्यया । अर्शसांनाशनंश्रेष्ठं भैषज्यंशङ्करोऽव
दत् ॥ पाराभ्रवज्रादिलोहानामादायान्यतमंशुभम् । कृत्वानिर्म्मलमादौतुकुनट्यामाक्षि
केणच ॥ पत्तूरमूलकल्केनलिम्पेद्रसयुतेनच । कुनटीमनःशिलाःमाक्षिकंसुवर्णमाक्षिकम् ॥
पत्तूरपटकारइतिलोकेरसःपारदः । वह्नौनिक्षिप्यविधिवत्साराङ्गारेणानिर्द्धमेत् ॥ ज्वा
लाचतस्यरोद्धव्यात्रिफलायारसेनच । सारःकाष्ठं । ततोविज्ञायगलितंशंकुनोदूर्ध्वंसमुच्छ्र
येत् । त्रिफलायारसेपूते तदाकृष्यतुनिर्द्धमेत् ॥ नसम्यक्गालितंयत्तु तेनैवविधिनापुनः ।
ध्मातंनिर्वापयेत्तस्मिं ल्लोहंतत्त्रिफलारसे ॥ यल्लोहंनमृतंतत्रपाच्यंभूयोऽपिपूर्ववत् । मार
णान्नमृतंयच्च तत्पक्तव्यमलोहवत् ॥ ततःसंशोष्यविधिवच्चूर्णयेल्लोहभाजने । लोहंतच्च
तथायत्स्याद् दृषदासूक्ष्मचूर्णितम् ॥ कृत्वालोहमयेपात्रे मृत्तिकालिप्तरन्ध्रके । रसैःपङ्को
पमंकृत्वा तंपचेद्गोमयाग्निना ॥ पुटानिक्रमशोदद्यात्पृथग्गेभिर्विधानतः । त्रिफलार्द्रकभृ
ङ्गानांकेशराजस्यबुद्धिमान् ॥ मानकन्दकभल्लातवह्नीनांशूरणस्यच । हस्तिकर्णपलाश
स्य कुलिशस्यतथैवच ॥ भृंगःभेंगरिआकेशराजःकेशरागइति । पुटेपुटेचूर्णयित्वा लो
हात्षोड़शिकंपलम् । तन्मात्रंत्रिफलायाश्च पलेनाधिकमाहरेत् ॥ अष्टभागावशेषेतुरसे
तस्याःपचेद्बुधः । अष्टौपलानिदत्वाच सर्पिषोलोहभाजने ॥ ताम्रेवालोहदर्व्यातु चाल
येद्विधिपूर्वकम् । ततःपाकविधानज्ञः स्वच्छेचोर्द्ध्वंचसर्पिषि ॥ मृदुमध्यादिभेदेनग्रहणीया
त्पाकमागतं । आरम्भेतद्विधानज्ञः कृतकौतुकमंगलः ॥ आमरंघृतसयुक्तंविलिह्या द्रक्ति
काक्रमात् ॥ द्वादशरक्तिकापर्य्यन्तंयथाग्निबलंखादेत् । वर्द्धमानानुपानञ्चगव्यक्षीरेणसं
युतम् । गव्याभावेत्वजायाश्चास्निग्धवृष्यादिभोजनम् ॥ सद्योवह्निकरञ्चैवभस्मकञ्च
नियच्छति । हन्तिवातंतथापित्तंकुष्ठानिविषमज्वरम् ॥ गुल्माक्षिपाण्डुरोगांश्चनिद्राल
स्यंमरोचकम् । शूलञ्चपरिणामञ्चप्रमेहमपबाहुकम् ॥ श्वयथुंरुधिरस्रावंदुर्न्नामानंवि
शेषतः । वलकृद्बृंहणञ्चैव कान्तिदंस्वरबोधनम् ॥ शरीरलाघवकरमारोग्यपुष्टिवर्द्ध
नम् । आयुष्यंश्रीकरञ्चैववलतेतस्करंशुभम् ॥ सश्रीकंपुत्रजननंवलीपलितनाशनम् ।
दुर्न्नामारिरयंनाम्नादृष्टोवारसहस्रशः ॥ अनेनार्शांसिदह्यन्ते यथातूलञ्चवह्निना । सौ
कुमार्य्याल्पकायत्वा न्मद्यसेवीयदानरः ॥ जीर्णमद्यादियुक्तादिभोजनैःसहदापयेत् । लाव
तित्तिरवर्त्तीर मयूरशशकादयः ॥ चटकःकलविङ्कश्चवर्त्तकाहारितालकः ॥ श्येनकश्चचट्ट
हल्लावोवनविष्किरकादयः ॥ पारावतमृगादीनां मांसंजाङ्गलकंशुभम् । वर्त्तीरःवगेरीति
लोके ॥ वनचटकःकलविङ्कोगृहचटकः । वर्त्तकावटेरिइतिलोके ॥ हरितालकःहरिलइ
तिलोके । विष्किरावर्त्तकादयः ॥ मद्गुरोरोहितःश्रेष्ठः शकुलश्चविशेषतः । मत्स्यराजा

इतिप्रोक्ता हितमत्स्यायदेहिने॥ वृन्ताकस्यफलंशस्तंपटोलंबृहतीफलम् ॥ प्रलम्बाभी रुवेत्राग्रन्ताड़कन्तण्डुलीयकम् ॥ प्रलम्बावालम्बालाबूः । भीरुःशतावर्य्याःपत्रमूपत्र शाकम्। ताड़कंदेवदालीअकरकरेतिलोके। तथाचनिघण्टेधन्वन्तरिः । जीमूतकोदेव ताड़ःकृतकोशोगरागरी ॥ प्रोक्ताखुविषहद्वृ ग्रीदेवदालीचताड़कः ॥ देवदालीरसेतिक्ता कफार्शःशोथपाण्डुता । नाशयेदित्यादि ॥ वास्तूकंधान्यशाकञ्चचित्रकञ्च। कमर्द्दकम् ।च कमर्द्दकञ्चकवड़शाकम् ॥ नालिकेरञ्चखर्ज्जूरंदाड़िमंलवलीफलम् । शृङ्गाटकञ्चपक्वाम्रं द्राक्षातालफलानिच ॥ हितान्येतानिवस्तूनिलोहमेतत्समश्नताम् । नाश्नीयाल्लकुचंको लकर्कन्धूवदराणिच ॥ जम्वीरंवीजपूरञ्चतिन्तिड़ीकरमर्द्दकम् । कोलंक्षुद्रवदरम् ॥ क र्कन्धूर्वृहद्वदरम् । अनूपानिचमांसानिकङ्करंपुण्ड्रकाणिच । करकरं । हंससारसदा त्यूहचाषक्रौञ्चवलाकिका । डाक् नीलकण्ठ।मानकन्दकंसेरुणिकतकञ्च। कलिङ्गकम्॥ तरबूज। कूष्माण्डकञ्चकर्कोटंकमुकञ्चाविशेषतः । कटुकंकालशाकञ्चकुन्दुरुककर्कटीतथा॥ तिलकाड़ा । ककारादीनिसर्व्वाणिद्विदलानिचवर्ज्जयेत् ॥ शङ्करेणसमाख्यातोयक्षरा जानुकम्पया । जगतामुपकारायदुर्न्नामारिरयंध्रुवम् ॥ स्थानाच्चलतिमेरुश्चपृथ्वीपर्य्ये तिवायुना। पतन्तिचन्द्रताराश्चमिथ्याचेदहमब्रुवम्॥ ब्रह्मघ्नाश्चकृतघ्नाश्चक्रूरायेऽस त्यवादिनः। वर्ज्जनीयाःसधर्म्मेणभिषजागुरुनिन्दकाः ॥ मुनिरसपिष्टंविडङ्गंमुनिरसली ढंचिरस्थितंधर्म्मे । द्रावयतिलोहदोषान्वह्निर्नवनीतपिण्डमिव ॥ मुनिरत्रागस्त्यः। का लेमलप्रवर्त्तिर्लाघवमुदरेविशुद्धिरुद्गारे॥ अङ्गेषुनावसादोमनःप्रसादोऽस्यपरिपाके। क्रि मिरिपुचूर्णलीढंसहितंस्वरसेनवङ्गसेनस्य॥ क्षपयत्यचिरान्नियतंलोहाजीर्णोद्भवंशूलम् । वङ्गसेनस्यअगस्तेः॥भवेद्यद्यतिसारस्तुदुग्धंपीत्वातुनंजयेत्। गुञ्जाद्वादशकादूर्द्ध्वंवृद्धि रस्यभयप्रदा॥ शङ्करप्रणीतंलोहम्। इतिसामान्याक्रिया: ॥ ३३ ॥

एक समय संपूर्ण जीवोंके नीरोग करने की इच्छा करते हुए नारदजीने संपूर्ण संसार के कल्याण करने वाले दंडपाणि महेश्वर श्री शिवजीको प्रणाम करके पूंछा कि हे नाथ ऐसा कौनसा सुखदायी उपाय है कि जिस्से शस्त्र क्षारतथा अग्नि के विनाभी बवासीरों की चिकित्सा होजाय वह आप मनुष्यों पर दया करके कहिये ऐसे नारदके वचन सुनकर मनुष्योंके हितकी कामना से श्री शिवजी ने बवासीर कीनाश करने वाली परमउत्तम यह औषधी कही कि बज्र आदिक लोहोंमें से किसी प्रकार के लोहे को लेकर पारा लगाकर मैनसिल और सोना माखी से शुद्ध करे फिर पतंग की जड़का कल्क और पारेसे लेप करके सारनाम काष्ठके कोयलों में तपावे और जो आगकी लपट उठेतो उसको त्रिफले के काढे से बुझावे फिर उसको गला जानकर त्रिफले के क्वाथ में बुझावे और जितना लोहा अच्छे प्रकार से न गलाहो उसको उसी प्रकार से फिर गलाकर त्रिफले के क्वाथमें बुझावे इसप्रकार से लोहे के नमरनेपर पूर्वोक्त विधिसे फिर पाककरे और इसप्रकारसेभी जो लोहा न मरे उसको त्यागकरदे फिर बाकी लोहेको सुखाके लोहे के पात्र में लोहेके ही डंडे से खूब महीनचूर्णकरे इसके

उपरान्त क्रमसे त्रिफला अदरक भांगरा जल भांगरा मानकेचू भिलावाँ चीता ज़मींकन्द हस्तिकर्ण ढाक और थूहर इनके द्वारा अलग २ क्वाथ करके लोहेकी लुगदी बनावे और उसको लोहेकेपात्र में रक्ख बन्दकरके मिट्टीसे लेपकरे और कंडोंकी आंचमें पुटपाक देवे हरएकपुटमें इसीप्रकारसे पाककरे फिर सोलहपल त्रिफलेको चौगुने जलमें पाककरके अष्टमांश बाकी रहनेपर उतारले फिर लोहे अथवा तांबेके पात्रमें आठपल घी डालके १६ पल लोहा मिलावे और उसमें वह क्वाथ मिला के मन्दाग्नि में पाककरे और लोहेकी डंडीसे चलाताजाय जबजलसूखकर घी बाकी रहे तब उतारले परन्तु पाककी विधिका जानने वाला वैद्य अवस्थाकेअनुसार और औषधोंको उसमें डालकरमृदुमध्य आदिकपाकदेकर उतारे औरऔषध सेवनके प्रारम्भमें कौतुक और मंगलकरके सहत और घीकेसाथएक रत्ती औषध से प्रारम्भकरे और अग्नि बलके अनुसार बारह रत्ती तक बढ़ावे और इसकेऊपरगौके दूध का अनुपानकरे और औषधके साथ अनुपानकोभी बढ़ाताजाय इसके द्वारा शीघ्रही अग्नि दीप्तहोतीहै और भस्मक वात पित्तकुष्ठ विषम ज्वर बायगोला नेत्ररोग पांडु अधिक निद्रा आलस्य अरुचि शूल परिणाम शूल प्रमेह अपबाहुक सूजन रुधिर का बहना तथा बवासीर इनसबका नाशहोताहै और यह औषधि बलकारी धातुबर्द्धक कान्तिकारी स्वरको हित शरीर को हलका करनेवाली आरोग्य कारी पुष्टि बर्द्धक आयुको हित शोभाकारी तथा तेजबर्द्धकहै और इस के द्वारा पुत्रउत्पन्नकरने में सामर्थ्य उत्पन्न होतीहै झुर्रीमिटजातीहैं बालकाले होजातेहैं यह लोह बवासीर का परमशत्रुहै इसबातका सैकड़ोंबार अनुभव कियागयाहै जैसे अग्निके द्वारा रुई भस्महोतीहै इसीप्रकार इस औष-धी से बवासीरोंका नाशहोताहै सुकुमार छोटे शरीर वाले अथवा मद्य के सेवन करनेवाले मनुष्यों को पुरानी मद्य तथा भोजन आदि के साथ यह औषध देनी चाहिये लवा तीतर बटेर मोर खरगोश बनकी गौरैया गैरी हारिल बाज बड़ालवा बनके विष्किर पक्षी कबूतर तथा मृगादिक बनके जीवोंका मांस हितकारीहै मदूगुर रेहू तथा शकुल यह मछलियों में श्रेष्ठ मत्स्यराज कहलाती हैं यह परम हितकारी है बैंगन परवल भटकटैया के फल लम्बी लौकी सतावर के पत्ते देवदाली (अकरकरा) तथा चौराई बथुई धनियां चीता चकवड नारियल खजूर अनार हरफारेवड़ी सिंघाड़ा पक्का आम दाख और ताड़काफल यह ऊपर कहीहुई संपूर्ण वस्तु लोहे के सेवन करने वालों को हितहैं बड़हल छोटा बेर बड़ाबेर जंभीरी नींबू बिजौरा नींबू इमली करौंदा अनूपमांस केकड़ा पुंड्रक हंस सारस नीलकंठ चाप बक मानकेचू कसेरू निर्म्मली तरबूज कुंभडा खिकसा सुपारी कड़वी वस्तु कालशाक कुंदुरु ककड़ी ककारादि सब वस्तु और दो दलवाली सबवस्तु इन सबको लोहे का सेवन करने वाला छोड़दे संसार के उपकार के लिये श्रीशिवजीने यह बवासीर की नाश करने वाली औषधि कहीहै चाहै सुमेरु पर्वत अपने स्थान से हटजाय पृथ्वी वायुसे उड़जाय और चन्द्रमा तथा तारा गिरपड़ें परन्तु यह औषधि कभी मिथ्या नहीं होसकी है ब्रह्मघाती कृतघ्न क्रूर मिथ्यावादी और गुरु निन्दक इन मनुष्यों को धर्मात्मा बैद्य यह औषध न देवे अगस्तके रसमें बाय बिडंग को पीस कर धूपमें सुखावे फिर अगस्त के रसके साथ चाटै इस्से जैसे अग्निके संयोग से मक्खन पिघलताहै उसी प्रकार लोह खाने से हुए संपूर्ण दोष पिघल जातेहैं अर्थात् नष्ट होजाते हैं समय पर मलका त्याग डकारकी शुद्धता उदरमें हलकापन शरीर में शिथिलता का न होना और मनकी प्रसन्नता यह खाये हुए लोहेके परिपाक होजाने के लक्षण हैं अगस्त के रसके साथ बायबिडंगके चूर्ण के चाटने से शीघ्रही लोह के खानेसे अजीर्ण हुआ नष्ट होजाता है लोहके सेवन

से उत्पन्न हुआ अतीसार दूध के पीनेसे निवृत्त होताहै बारह रत्तीसे अधिक लोहखानेसे अत्यन्त कष्ट होता है ॥ इतिशंकरप्रणीतं लोहम् ॥ इति बवासीरकी सामान्य चिकित्सा ॥ ३३ ॥

अथ रक्तार्शसांचिकित्सा ॥

रक्तार्शसामुपेक्षेतरक्तमादौस्रवद्भिषक् । दुष्टास्रनिःसृतेनस्युःशूलानाहास्रगामयाः ॥३४॥

खूनी बवासीर की चिकित्सा ॥

बैद्य खूनी बवासीर में पहले रुधिर को न बन्द करे क्योंकि दूषित रुधिरके निकल जानेपर शूल आनाह और रुधिर के रोग नहीं होते हैं ॥ ३४ ॥

चन्दनकिराततिक्तकधन्वजवासाःसनागराःक्वथिताः । रक्तार्शसांप्रशमनादार्वीत्वगुशीरनिम्बाश्च ॥ चन्दनमत्ररक्तम् । नागरमत्रमुस्तकम् ॥ इतिचन्दनादिक्वाथः ॥३५॥

लालचन्दन चिरायता धमासा जवासा नागरमोथा दारुहल्दी दालचीनी खस और नींब इनका क्वाथ पीने से खूनी बवासीर शान्त होती है ॥ इति चन्दनादि क्वाथ ॥ ३५ ॥

नवनीततिलाभ्यासात्केशरनवनीतशर्कराभ्यासात् । दधिसरमथिताभ्यासाद्गुदजाःशाम्यन्तिरक्तवहाः ॥ दध्नस्तूपरियोभागोघनस्नेहयुतःसरः । मथितंसररहितंनिर्जलंवस्त्रपूतंदधि ॥ सपद्मकेशरंक्षौद्रंनवनीतंनवंलिहन् । शिताकेशरसंयुक्तंरक्तार्शासिसुखीभवेत् ॥ पयसाशृतेनयूषैःसतीनमुद्गाढकीमशूराणाम् । ओदनमद्याम्लैःशालिःशामाककोद्रवजम्॥शशहरिणलावमांसैःकपिञ्जलैरेणमांसैश्च।ओदनमद्याम्लैरीषत्सुगंधैश्च३६

मक्खन तथा तिल मक्खन नाग केशर तथा शक्कर और दही की मलाई तथा मथित इनतीन योगोंसे खूनी बवासीर शान्त होतीहै निर्ज्जल मलाई रहित बस्त्रके द्वारा छाने हुए दही को मथित कहते हैं कमल की केशर सहत ताजा मक्खन शक्कर और नाग केशर इनसबको चाटने से खूनी बवासीर नष्ट होतीहै मटर मूंग अरहड़ और मशूर इन सबको दूध के साथ परिपक्क करके इनका यूष बनावे उसके साथ धान सामा और कोदो का भात खाय मद्य तथा खट्टी वस्तु सहित तथा कुछ सुगन्ध युक्त इनवस्तुओंको खानेसे खूनी बवासीर शान्त होती है खरगोश हिरन लवा सफेदतीतर और काला हिरन इनके मांसके साथ भी ऊपर कहाहुआ भातखाना चाहिये ॥ ३६ ॥

समङ्गोत्पलमोचाकस्तिरीटोत्पलचन्दनैः । सिद्धंछागीपयोदद्याद्गुदजेशोणितात्मके ॥ समङ्गालजालू।मोचाकोमोचरसः।तिरीटोलोध्रः।चन्दनंरक्तम्।इतिसमंगादिदुग्धम्३७॥

लजालू नीलकमल मोचरस लोध तिल और लाल चन्दन इनके द्वारा बकरीके दूधको क्षीर पाक करके खूनी बवासीरमें देना चाहिये ॥ इति समंगादि दुग्ध ॥ ३७ ॥

भावितंरजनीचूर्णैस्नुहीक्षीरैःपुनःपुनः । बन्धनात्सुदृढंसूत्रंछिनत्त्यर्शोभगन्दरम् ॥ इतिक्षारसूत्रम् ॥ ३८ ॥

हल्दीके चूर्ण और थूहरके दूधसे सात दिन तक भावना दिये गये सूतको बहुत मजबूत कर बांधनेसे बवासीरके मस्से और भगंदर कट जाताहै इति क्षार सूत्र ॥ ३८ ॥

नासानाभिसमुत्थेषुतथामेढ्रादिजेष्वपि । त्रिष्वप्यर्शःसुकुर्वीततत्रतत्रयथोचितम् ॥ चर्म्मकीलन्तुसंछिद्यदहेत्क्षारेणचाग्निना ॥ ३९ ॥

नासिका नाभि तथा लिंग आदिमें मस्सोंके उत्पन्न होनेपर जिसमें जो चिकित्सा उचित होय सो करे और चर्म कीलको काटकर क्षार तथा अग्निसे जलावे ३९ ॥

वेगावरोधंस्त्रीपृष्ठयान्युत्कुटकाशनम् । यथास्वंदोषलंचान्तमर्शसःपरिवर्ज्जयेत् ॥ (इत्यर्शोऽधिकारः) ॥ ४० ॥

मल मूत्रादिका वेग रोकना स्त्री प्रसंग हाथी आदि सवारियों पर चढ़ना उकड़ू बैठना और अपने अपने अनुसार दूषित अन्न इन सबको बवासीर वाला छोड़दे इति बवासीरका अधिकार ॥ ४० ॥

अथ जठराग्निविकाराधिकारः । तत्रसन्निकृष्टनिदानपूर्व्वकानुदराग्निविकारानाह ॥

कफपित्तानिलाधिक्यात्तत्साम्याज्जाठरोऽनलः । मन्दस्तीक्ष्णोऽथविषमःसमश्चेति चतुर्विधः ॥ ४१ ॥

जठराग्निके विकारका अधिकार ॥

समीपी कारणों समेत उदरके विकारोंका वर्णन ॥

कफ पित्त तथा वायुकी अधिकतासे और समतासे क्रम पूर्व्वक मन्द तीक्ष्ण विषम और समयह चार प्रकारकी अग्नि होती हैं ॥ ४१ ॥

मन्दस्याग्नेर्लक्षणमाह ॥

स्वल्पापिनैवमन्दाग्नेर्मात्राभुक्ताविपच्यते।छर्दिःसादःप्रसेकःस्याच्छिरोजठरगौरवम्॥४२॥

मन्दाग्निका लक्षण ॥

मन्दाग्नि वाले पुरुषको थोड़ा भी भोजन नहीं पचता और छर्दि शिथिलता मुखसे पानी छूटना तथा शिर और पेटमें भारीपन होताहै ॥ ४२ ॥

तीक्ष्णस्यलक्षणमाह ॥

मात्रातिमात्राप्यशितातीक्ष्णाग्निःपच्यतेसुखम् । अतएवहिकेनापिमतस्तीक्ष्णाग्निरुत्तमः ॥ ४३ ॥

तीक्ष्णाग्निका लक्षण ॥

तीक्ष्णाग्नि वाले पुरुषको अधिक भोजनभी सुखपूर्व्वक पचजाताहै इसलिये कोईकोई तीक्ष्णाग्निको उत्तम कहतेहैं ॥ ४३ ॥

विषमस्यलक्षणमाह ॥

अशिताखलुमात्रापिविषमाग्नेस्तुदेहिनः।कदाचित्पच्यतेसम्यक्कदाचिन्नविपच्यते ॥ तस्याध्मानमुदावर्त्तशूलंजठरगौरवम् । प्रवाहणमतीसारस्तथास्यादन्त्रकूजनम् ॥ ४४ ॥

विषमाग्निका लक्षण ॥

विषमाग्नि वाले पुरुषको प्रमाणके अनुसार भी भोजन कभी पचताहै और कभी नहीं पचता और आध्मान उदावर्त्त शूल पेटमें भारीपन प्रवाहिका अतीसार तथा पेटमें गड़गड़ाहट होतीहै ॥४४॥

समस्यलक्षणमाह ॥

समासमाग्नेरशितामात्रासम्यग्विपच्यते।सोऽग्निरुत्तमएतेषुनतीक्ष्णस्तूत्तमोमतः ॥ सचमधुरस्निग्धादिभोज्यःसम्यगग्नावुत्तमः । तर्हिकथंतीक्ष्णविकारमध्येगणना । उच्यते । समोऽग्निःक्षुधाविघातादाश्वेवतथाविकारंनकरोति । तीक्ष्णस्तुस्वल्पकालमपिक्षुधा

विघातादाश्वेवपैत्तिकान्विकारान्कुरुते । तीक्ष्णःपित्तसमुत्थजान्विषमोवातहेतुकान् । तथाकरोतिमन्दाग्निविकारान्कफसम्भवान् ॥ ४५ ॥

समाग्निका लक्षण ॥

समाग्नि वाले पुरुषको प्रमाणके अनुसार भोजन अच्छे प्रकारसे पच जाताहै यही अग्नि सम्पूर्ण अग्नियोंमें उत्तमहै और तीक्ष्णाग्नि उत्तमनहीं है अब यह सन्देह होताहै कि तीक्ष्णाग्नि मधुर स्निग्धादि भोजनोंको अच्छे प्रकारसे पचातीहै इसलिये उत्तमहै तोउसकी रोगोंमें गणना क्योंकरीहै इसका उत्तर यहहै कि सम अग्नि क्षुधाके रोकनेसे शीघ्रही विकारको नहीं करती और तीक्ष्णाग्नि थोड़ी देर भी क्षुधाके रोकनेसे शीघ्र पित्त सम्बन्धी विकारोंको करतीहै और ऐसाही कहाभी है कि तीक्ष्णाग्नि पित्त सम्बन्धी विषमाग्नि वात सम्बन्धी और मन्दाग्नि कफ सम्बन्धी विकारों को करती है ॥ ४५ ॥

भस्मकस्यनिदानसंप्राप्तिपूर्व्वकंलक्षणमाह ॥

बह्वत्तिरूक्षान्नभुजांनराणांक्षीणेकफेमारुतपित्तवृद्धो । अधिप्रवृद्धःपवनान्वितोऽग्निर्भुक्तंक्षणाद्भस्मकरोतियस्मात्॥तस्मादसौभस्मकसंज्ञकोऽभूदुपेक्षितोऽयंपचतेचधातून्४६

भस्मक रोगका निदान संप्राप्ति पूर्व्वक लक्षण ॥

बहुत अत्यन्त रूखी वस्तुओंके खाने वाले मनुष्योंके कफके क्षीण होजाने पर और वात तथा पित्तके बढ़ने पर बहुत बढ़ी हुई वात सहित अग्नि भोजन को क्षण भरमें पचाती है इसीसे इसको भस्मक कहतेहैं इसमें तरह देनेसे यह धातुओंको पचातीहै ॥ ४६ ॥

भस्मकस्यसोपद्रवमरिष्टमाह ॥

तृट्स्वेददाहमूर्च्छादीन्कृत्वैषोऽत्यग्निसम्भवान् ।पक्वान्नमाशुधात्वादीन्साक्षिप्रंनाशयेद्ध्रुवम् ॥ ४७ ॥

भस्मकका उपद्रव सहित अरिष्ट ॥

तृषा स्वेद दाह तथा मूर्च्छा आदिको उत्पन्न करतीहुई अन्नको शीघ्रही पचाकर यह अग्निशीघ्रही धातु आदिकोंको भस्मकर देतीहै ॥ ४७ ॥

अथाजीर्णस्यविप्रकृष्टंनिदानमाह ॥

अत्यम्बुपानाद्विषमाशनाच्चसन्धारणात्स्वप्नविपर्ययाच्च । कालेऽपिसात्म्यंलघुचापि भुक्तमन्नंनपाकंभजतेनरस्य ॥ सन्धारणात् । क्षुधामूत्रपुरीषादीनाम् । स्वप्नविपर्ययात् दिवाशयनाद्रात्रौजागरणात् । लघुचापीत्यपिशब्दात्स्निग्धोष्णादिगुणयुक्तमपि । (अन्यच्च) तृष्णाभयक्रोधपरिप्लुतेनलुब्धेनरुग्दैन्यनिपीड़ितेन । प्रद्वेषयुक्तेनचसेव्यमानमन्नंनसम्यक्परिपाकमेति॥ परिप्लुतेनव्याप्तेन । उक्तकारणेभ्योऽतिमात्रान्नभोजनंविशेषादजीर्णस्यकारणमजीर्णञ्चबहुव्याधीनांकारणमित्याह । अनात्मवन्तःपशुवद्भुज्यन्तेयेऽप्रमाणतः । रोगानीकस्यतेमूलमजीर्णंप्राप्नुवन्तिहि॥ अनात्मवन्तः। अबुद्धिमन्तः। रोगानीकस्य विसूच्यादेर्मूलंकारणम् (अन्यच्च) प्रायेणाहारवैषम्यादजीर्णंजायतेनृणाम् । तन्मूलोरोगसङ्घातःतद्विनाशाद्विनश्यति ॥ अजीर्णविनाशाद्विनश्यति।रोगसङ्घातःरोगसमूहः४८॥

अजीर्णका दूरवाला निदान ॥

बहुत जलपान विषमाशन क्षुधा तथा मलमूत्रादि वेगोंका रोकना दिनमें सोना और रात्रि में जागना इनसब कारणोंसे सात्म्य हलका स्निग्ध तथा उष्णादि गुणयुक्त भोजन समयपर कियाहुआ भी परिपाकको नहीं प्राप्त होताहै(अन्यप्रकार)तृषा भय तथा क्रोधसे व्याकुल लोभी रोगी दीन और द्वेषी मनुष्यों को अन्न अच्छेप्रकार से नहीं पचता है ऊपर कहे हुए कारणों में से बहुत भोजनही अजीर्णका मुख्य कारणहै और अजीर्ण से बहुत रोग उत्पन्न होतेहैं जैसे कि जो निर्बुद्धि मनुष्य पशु के समान बेप्रमाण भोजन करतेहैं वह विसूचिका आदि रोगोंके कारण रूप अजीर्णको प्राप्त होतेहैं (अन्यप्रकार)प्रायः आहारकी विषमतासे मनुष्योंको अजीर्ण होताहै यह अजीर्ण अनेक रोगोंकाकारण है और इसके नष्ट होनेसे वहरोगभी नष्ट होजाताहै ॥ ४८ ॥

अजीर्णस्यसामान्यंलक्षणमाह ॥

ग्लानिर्गौरवविष्टम्भ भ्रममारुतमूढता ॥ विबंधोप्रवृत्तिर्वा सामान्याजीर्णलक्षणम् ॥ मारुतमूढतावायोरवरोधः । विबंधःमलप्रवृत्तिः ॥ ४९ ॥

अजीर्णका सामान्य लक्षण ॥

ग्लानि भारीपन विष्टंभ भ्रम बायुका रुकना और मलका रुकना अथवा पतला होकर निकलना यह सामान्य अजीर्णके लक्षणहैं ॥ ४९ ॥

सन्निकृष्टकारणसहितानजीर्णस्यभेदानाह ॥

आमंविदग्धंविष्टब्धंकफपित्तानिलैस्त्रिभिः । त्रिभिरित्येकशोनतुमिलितैः ॥ अजीर्णंकेचिदिच्छंतिचतुर्थंरसशेषतः ।केचित्तुसुश्रुतादयः॥ रसशेषतःभुक्तस्यपक्वस्यसारभूतो योद्रवःसोरसः । सोऽपिपच्यतेभुक्तस्यसारभूतोयो ॥ द्रवःसचापक्वःसारःरसशेषःतस्मात् । चतुर्थमजीर्णम् ॥ नन्वामाजीर्णाद्रसशेषस्यकोभेदः । उच्यते ॥ आमंमधुरतांगतमपक्वमन्नमेव । रसशेषस्तुभुक्तस्यपक्वस्यसारभूतोयोद्रवःसचापक्वःइतिभेदः ॥ ५० ॥

समीपी कारणों समेत अजीर्णके भेद ॥

कफ पित्त और बायुके द्वारा क्रमसे आम विदग्ध और विष्टब्ध नामक तीनप्रकारका अजीर्ण होताहै और कोई २ सुश्रुतादिक अन्नके सारांशको भूतरसके न पकने से चौथारस शेष नाम अजीर्ण कहतेहैं अब यह सन्देहहै कि आमाजीर्ण और रसशेषाजीर्ण में क्या भेदहै इसका उत्तर यहहै किआम मधुरताको प्राप्तहोनेवाले कच्चे अन्नहीको कहतेहैं और रसशेष पचेहुये भोजन के सारांश भूत पतले रसके न पकनेको कहतेहैं यही भेदहै ॥ ५० ॥

अजीर्णंपञ्चमंकेचिन्निर्दोषंदिनपाकिच । निर्दोषंगौरवंभ्रमशूलादिदोषाऽजनकम् दिनपाकिच । अहोरात्रेणपाकंयातीतिस्वभावः । यत्तुमात्राकालसात्म्यातिदोषाद्दिनांतरेपाकंयातितद्दिनपाकि । अतएव । याममध्येनभोक्तव्यमितिवचनम् ॥ ५१ ॥

मात्रा काल तथा सात्म्य आदिके दोषसे जो भोजन रात्रि दिनमें पचताहै और भारीपन भ्रम तथा शूलादिक दोष नहीं उत्पन्न होतेहैं उसको भी कोई २ पंडित लोग दिनपाकी नाम पांचवां अजीर्ण कहतेहैं इसीसे दिनके प्रथम पहरमें न खाना चाहिये यह बचन कहाहै ॥ ५१ ॥

वदन्तिषष्ठञ्चाजीर्णंप्राकृतंप्रतिवासरम्। प्राकृतमविकारकम्। प्रतिवासरंप्रतिदिनभावी। भुक्तंयावन्नजीर्णंतावदजीर्णमित्युच्यते। एतदभिधानस्यप्रयोजनंपाकार्थंवामपार्श्वे शयनंप्रियशब्दादिसेवनादिकम्। नचात्राहारस्यनिषेधः। प्रातराशेत्वजीर्णेतुसायमाशे नदुष्यतीतिवचनेनसायमाशस्यावश्यंकर्तव्यत्वात् ॥ ५२ ॥

प्रतिदिन भोजनके न पचजानेतक बिकार रहित छठा अजीर्ण कहलाताहै इस अजीर्ण के मानने का यह प्रयोजनहै कि भोजनके परिपाकके लिये बाईंकरवँटसे सोवे और प्रिय बचनोंका श्रवण आदि करे और इस अजीर्ण में भोजनका निषेध नहींहै क्योंकि कहागयाहै कि प्रातःकाल के भोजनके न पचनेपर सायंकाल में भोजन करने से कोई दोषनहीं होता इस बचनसे सायंकाल में भोजन करना अवश्यहै यह बात सिद्ध हुई ॥ ५२ ॥

अथामजीर्णस्यलक्षणमाह ॥

तत्रामेगुरुतोत्क्लेशःशोथोगण्डाक्षिकूटगः। उद्गारश्चयथाभुक्तमविदग्धंप्रवर्त्तते ॥ गुरुताउदरांगयोः। उत्क्लेशःउपस्थितवमनामिव ॥ अक्षिकूटोऽक्षिपुटकः ॥ ५३ ॥

आमाजीर्ण का लक्षण ॥

आमाजीर्ण में उदर तथा शरीरका भारीपन मतली गालतथा नेत्रोंके पोटोंमें सूजन और खटाई से रहित जैसा भोजन किया है उसी प्रकार की डकार यह लक्षण होते हैं ॥ ५३ ॥

अथ विदग्धाजीर्णस्यलक्षणमाह ॥

विदग्धेभ्रमतृण्मूर्च्छाःपित्ताच्चविविधारुजः। उद्गारश्चसधूमाम्लस्वेदोदाहश्चजायते ॥ विविधारुजःऊषचोषादयःदाहादयः ॥ ५४ ॥

विदग्धाजीर्ण के लक्षण ॥

भ्रम तृषा मूर्च्छा धुएं समेत खट्टी डकार स्वेद दाह और ऊष चोष आदिक पित्तकी अनेक पीड़ा यह विदग्धाजीर्ण के लक्षण हैं ॥ ५४ ॥

अथ विष्टब्धाजीर्णस्य लक्षणमाह ॥

विष्टब्धेशूलमाध्मानंविविधावातवेदनाः। मलवाताऽप्रवृत्तिश्चस्तम्भोमोहोऽङ्गपीड़नम्। वातवेदनाःतोदभेदादयः। स्तम्भोऽङ्गनाम्रमोहोमूर्च्छा ॥ ५५ ॥

विष्टब्धाजर्णिके लक्षण ॥

शूल आध्मान तोदभेद आदिक बातकी अनेक पीड़ा मल तथा बायुका न निकलना शरीरमेंजड़ता तथा पीड़ा और मूर्च्छा यह विष्टब्धाजीर्ण के लक्षण हैं ॥ ५५ ॥

अथ रसशेषाजीर्णस्य लक्षणमाह ॥

रसशेषेऽन्नविद्वेषोहृदयाशुद्धिगौरवैः ॥ ५६ ॥

रस शेष अजीर्ण के लक्षण ॥

अन्न में अरुचि और हृदय में अशुद्धता तथा भारीपन यह रसशेष अजीर्ण के लक्षणहैं ॥ ५६ ॥

गुड़ेनशुण्ठीमथचोपकुल्यांपथ्यांतृतीयामथदाड़िमंवा । आमेष्वजीर्णेषुगुदामयेषुवर्चोविबन्धेषुचनित्यमद्यात् ॥ ६७॥

अजीर्ण की चिकित्सा ॥

हड़ और सोंठ को गुड़ अथवा सेंधे निमक के साथ निरन्तर सेवन करनेसे अग्नि दीप्तहोती है गुड़ के साथ सोंठ पीपरि हड़ अथवा अनार को नित्य खाने से आमाजीर्ण गुदाके रोग और मलकी रुकावट का नाशहोता है ॥ ६७॥

व्योषंदन्तींत्रिवृच्चित्रंकृष्णामूलंविचूर्णितम्। तच्चूर्णंगुड़सम्मिश्रंभक्षयेत्प्रातरुत्थितः॥ एतद्गुड़ाष्टकन्नामबलवर्णाग्निवर्द्धनम्। शोथोदावर्त्तशूलघ्नंप्लीहपाण्ड्वामयापहम् ॥ सर्व्वचूर्णसमोगुड़ोदेयः। गुड़ाष्टकम्॥ ६८ ॥

त्रिकटुदन्ती निसोत चीता और पीपलामूल इन सब औषधियों को समभाग चूर्ण करके और इन सबकी बराबर गुड़ मिलाके प्रातःकाल खानेसे बल वर्ण तथा अग्निकी वृद्धिहोतीहै और सूजन उदावर्त्त शूल प्लीहा तथा पांडुरोग कानाश होताहै इतिगुड़ाष्टकम् ॥ ६८ ॥

दहनाजमोदसैन्धवनागरमरिचानिचाम्लतक्रेण। सप्ताहादग्निकरंपाण्ड्वर्शोनाशनम्परमम् ॥ ६९ ॥

चीता अजमोद सेंधानोन सोंठ और मिर्च इनसबको खट्टे मट्ठेकेसाथ सातदिन सेवन करनेसे अग्निकी वृद्धि और पाण्डु तथा बवासीरका नाश होताहै ॥ ६९ ॥

तत्रामेवमनङ्कार्य्यंविदग्धेलङ्घनंहितम्। विष्टब्धेस्वेदनंशस्तंरसशेषेशयीतच ॥ वचालवणतोयेनवान्तिरामेप्रशस्यते। कणासिन्धुवचाकल्कंपीत्वाचशिशिराम्भसा ॥ जलमत्रसरावमात्रम्। वचाकर्षार्द्धमिता । द्वयोश्चूर्णमुष्णेनजलेनपिबेत् । कणादिकल्कंवापीत्वावान्तिरामेप्रशस्यते । इत्यनेनान्वयः। धान्यनागरसिद्धंवातोयंदद्याद्विचक्षणः ॥ आमाजीर्णप्रशमनंशूलघ्नंवस्तिशोधनम् ॥ भवेद्यदाप्रातरजीर्णशङ्कातदाभयानागरसैन्धवाभ्याम्। विचूर्णितांशीतजलेनभुक्त्वाभुञ्ज्यादशंकंमितमन्नकाले ॥ विदह्यतेयस्यतुभुक्तमात्रंदन्दह्यतेहृद्गलश्चयस्य । द्राक्षांसितामाक्षिकसम्प्रयुक्तांलीढाभयांचापिसुखंलभेत ॥ ७० ॥

आमाजीर्ण में बमन बिदग्धाजीर्ण में लंघन विष्टब्धाजीर्णमें स्वेदन और रस शेषाजीर्ण में शयन कराना चाहिये बच और सेंधानोन छःछः माशे लेकर गरमजलके साथ पीकर बमन करे इस्से आमाजीर्ण नष्टहोताहै पीपल सेंधानोन और बचके कल्कको शीतल जलके साथ पीकर बमनकरने से आमाजीर्ण नष्ट होताहै धनियाँ और सोंठके काढ़ेको सेवनकरनेसे आमाजर्णि तथा शूलकानाश होताहै और मूत्राशय शुद्ध होताहै जो प्रातःकाल अजीर्णका सन्देह होय तो हड़ सोंठ और सेंधेनोन को शीतल जलके साथखाय फिर भोजनके समयपर निस्सन्देह होकर प्रमाण सहित भोजनकरे जो भोजनके उपरान्त बिदाहहोय और हृदय तथा गलेमें जलन होय तो दाख और हड़को शक्कर और सहत के साथ चाटै इस्से आनन्द होता है ॥ ७० ॥

त्रिकटुकमजमोदासैन्धवंजीरकेद्वेसमधरणधृतानामष्टमोहिंगुभागाः । प्रथमकवलभुक्तंसर्पिषाचूर्णमेतज्जनयतिजठराग्निंवातरोगांश्चहन्ति ॥ इतिहिंग्वष्टकम् ॥ ७१ ॥

त्रिकटु अजमोद सेंधानोन दोनों जीरे और इन सबकी अष्टमांश हींग सबको पीसकर प्रथमग्रास में घृतके साथखाय इस्से अग्निकी वृद्धि होतीहै और बातरोगोंका नाशहोताहै इति हिंग्वष्टक ॥ ७१॥

द्वौक्षारौचित्रकंपाठा करञ्जंलवणानिच । सूक्ष्मैलापत्रकंभार्ङ्गीकृमिघ्नंहिंगुपौष्करम् ॥ शटीदार्व्वीत्रिविन्मुस्तंवचाचेन्द्रयवास्तथा । वृक्षाम्लंजीरकंधात्रीश्रेयसीचोपकुञ्चिका ॥ अम्लवेतसमम्लीका यवानीदेवदारुच । अभयातिविषाश्यामा हवुषारग्वधंसमम् ॥ तिलमुष्ककशिग्रूणांकोकिलाक्षपलाशयोः । क्षाराणिलोहकिट्टञ्च तप्तंगोमूत्रसेचितम् ॥ सूक्ष्मचूर्णानिकृत्वातु समभागानिकारयेत् । मातुलुंगरसेनैवभावयेद्दिवसत्रयम् ॥ दिनत्रयन्तुशुक्तेन तथार्द्रकरसेनच । अत्यग्निकारकंचूर्णं प्रदीप्ताग्निसमप्रभम् ॥ उपयुक्तंविधानेननाशयत्यचिराद्ददान् ॥ अजीर्णमथगुल्मञ्चप्लीहानंगुदजानिच ॥ उदराण्यन्त्रवृद्धिञ्चअष्ठीलांवातशोणितम् ॥ प्रणुदत्युल्वणान्दोषान्नष्टाग्निंचप्रदीपयेत् ॥ द्वौक्षारौस्वर्ज्जिकायवक्षारश्च । लवणानिपञ्च । वृक्षाम्लंविषामिलइतिलोके । श्रेयसीहरीतकी । उपकुञ्चिकामंगरैलाइतिलोके । अम्लवेतसकाभावेचुक्रंदातव्यम् । श्यामाप्रियंगु । मुष्ककः घण्टापाडरिइतिलोके । कोकिलाक्षःकोइलषाइतिलोके ॥ इतिवृहदग्निमुखंचूर्णम् ७२॥

सज्जी जवाखार चीता पाठा करंजुआ पांचोंनोन छोटी इलायची तेजपात भारंगी बायबिड़ंग हींग पुष्करमूल कचूर दारुहल्दी निसोत मोथा बच इन्द्रजौ चूक जीरा आमला हड कालाजीरा अमलवेत (इसके अभावमें चूक देनाचाहिये) इमली अजवाइन देवदारु हड़ अतीस प्रियंगु हाऊबेर अमलतास और तिल घंटापाढल सहिंजना छीला तथा पलाशकाखार और गोमूत्रमें बुझाया हुआ लोहका कीट इनसब औषधियोंको समभाग लेकर सूक्ष्म चूर्ण करके नींबूके रसमें तीनदिन भावना देवे और तीन २ दिन सिरके में तथा अदरकके रसमें भावनादे यह चूर्ण अत्यन्त अग्निवर्द्धक जलतीहुई अग्निके समानहै विधि पूर्वक इसका सेवन करनेसे अजीर्ण बायगोला प्लीहा बवासीर उदररोग आंत का बढ़ना अष्ठीला बात रक्त तथा दोषोंकी वृद्धि यहसब नष्ट होते हैं और नष्टहुई अग्निभी दीप्त होतीहै इति वृहदग्नि मुख चूर्ण ॥ ७२ ॥

स्नुह्यर्कंचित्रकैरण्ड वरुणंसपुनर्नवम् । तिलापामार्ग्गकदलीपलाशंतिन्तिड़ीतथा ॥ गृहीत्वाज्वालयेदेतत्प्रस्थंभस्माखिलंयथा ॥ जलाढ़केविपक्तव्यंयावत्पादावशेषितम् । सुप्रसन्नंविनिस्राव्य लवणप्रस्थसंयुतम् ॥ पक्वंनिर्धूमकठिनंसूक्ष्मचूर्णीकृतंपुनः ॥ जवानीजीरकव्योष स्थूलजीरकहिंगुभिः ॥ शीतोदकेनतच्चूर्णं पिवेत्प्रातर्हिमात्रया । तस्मिन्जीर्णेऽन्नमश्नीयाद्यूषर्जांगलजैरसैः ॥ ईषदम्लैःसलवणैःसुखोष्णैर्वह्निदीपनैः । एतेनाग्निर्विवर्द्धेत वलमारोग्यमेवच ॥ तत्रानुपानंशस्तंहितक्रंवाभोजनेहितम् । मन्दाग्न्यर्शोविकारेषुवातश्लेष्मामयेषुच ॥ सर्व्वाङ्गशोथरोगेषु शूलगुल्मोदरेषुच ॥ अश्मर्य्यांशर्करायाञ्च विण्मूत्रानिलरोगिषु ॥ वैश्वानरक्षारः ॥७३ ॥

थूहर आक चीता रेड़ी बरना पुनर्नवा तिल लटजीरा केला ढाक और इमली इन सब समभाग औषधियोंको जलाकर सब की ६४ तोले भस्मको २५६ तोले जलमें औटावे चौथाई बाकी रहने पर ठहराकर किसी पात्रमें उड़ेलले फिर उस जलके साथ ६४ तोले निमक मिलाकर फिर पाक करे इसके उपरान्त धूम रहित कडा होजाने पर सूक्ष्म चूर्ण करे फिर अजवाइन जीरा त्रिकटु काला जीरा और हींग मिलाकर शीतल जलके साथ प्रातःकाल मात्राके अनुसार खाय और औषधके पच जाने पर यूष तथा जंगली जीवोंके मांसके रसके साथ अन्नखाय कुछ खट्टी तथा उष्ण लवण युक्त दीपन वस्तुओंके साथ अन्नखाय अनुपानमें अथवा भोजनमें मट्ठेका सेवन करे यह औषधि अग्नि वर्द्धक बल तथा आरोग्य कारी और मन्दाग्नि बवासीर वात कफके रोगसर्वांग सूजन शूल वायगोला उदर रोग पथरी शर्करा वातरोग तथा मलमूत्र रोग इन सबकी नाशकहै इतिवैश्वा नरक्षार ॥ ७३ ॥

सामुद्रलवणंकार्य्यं मष्टकर्षमितंबुधैः । सौवर्चलंपञ्चकर्षं विड़सैन्धवधान्यकम् ॥ पिप्पलीपिप्पलीमूलं पत्रकंकृष्णजीरकम् ॥ तालीशंकेशरंचव्यमम्लवेतसकंतथा ॥ द्विकर्षमात्राण्येतानि प्रत्येकंकारयेद्बुधः । मरिचंजीरकंविश्व मेकैकंकर्षमात्रकम् ॥ दाड़िमंस्याच्चतुःकर्षंत्वगेलाचार्द्धकर्षिका । एतच्चूर्णीकृतंसर्व्वंलवणंभास्कराभिधम् ॥ भक्षयेच्छाणमानन्तु तक्रमस्तुककाञ्जिकैः॥ वातश्लेष्मभवंगुल्मं प्लीहानमुदरक्षयम् ॥ अर्शांसिग्रहणींकुष्ठंविबन्धञ्चभगन्दरम्॥शूलंशोथंश्वासकासामदोषांश्चापिहृद्रुजम्॥ अश्मरींशर्कराञ्चापि पांडुरोगंक्रमीनपि । मन्दाग्निंनाशयेदेतद्दीपनंपाचनंपरम् ॥ हितायसर्व्वलोकानां भास्करेणविनिर्म्मितम् । हन्यात्सर्व्वाण्यजीर्णानि भुक्तमात्रमसंशयम् ॥ अत्रदाड़िमस्य बीजानांकर्षचतुष्टयमितंदेयम् ॥ इतिभास्करलवणम् ॥ ७४ ॥

खारी निमक ८ तोले कालानोन ५ तोले विड़नोन सेंधानोन धनियां पीपलामूल तेजपात काला-जीरा तालीस नागकेशर चव्य तथा अमलवेत यह सब दो २ तोले मिर्च जीरा तथा सोंठ एक२तोला अनारदाना ४ तोला दालचीनी तथा इलायची छः २ मासे इनसब औषधियोंको एकसाथ चूर्ण करके मट्ठा दही अथवा कांजीके साथ चारमासे चूर्णखाय इस्से वात कफके रोग वायगोला प्लीहा उदर क्षय बवासीर ग्रहणी कुष्ठ मलका रुकना भगन्दर शूल सूजन श्वास खांसी आमदोष हृदयकी पीड़ा पथरी शर्करा पांडुरोग कृमि तथा मन्दाग्निका नाशहोताहै और यह दीपन तथा पाचनहै सब संसारके हितके लिये भगवान् सूर्य्य देवताने इसको बनायाहै इसके खानेसे सब प्रकारके अजीर्ण निस्संदेह नष्ट होजातेहैं इति भास्कर लवण ॥ ७४ ॥

सैन्धवसमूलमगधाचव्यानलनागरपथ्या । क्रमवृद्धमग्निवृद्धौवड़वानलनामचूर्णं स्यात् ॥ इतिवड़वानलचूर्णम् ॥ ७५ ॥

सेंधानोन पीपलामूल पीपल चव्य चीता सोंठ और हड़ इन सब औषधियोंको क्रमसे एक एक भाग बढ़ाकर (सेंधानोन १ भाग पीपलामूल २ भाग इत्यादि) ले और चूर्णकर मात्राके अनुसार खाय इस्से अग्नि बढ़तीहै इति बड़वानल चूर्ण ॥ ७५ ॥

पथ्यानागरकृष्णाकरञ्जविल्वाग्निभिःसितातुल्यैः ॥ वड़वानलइवजरयतिबहुगुर्व्वीति भोजनंचूर्णम् ॥ इतिद्वितीयवड़वानलचूर्णम् ॥ ७६ ॥

हड़ सोंठ पीपल करंजुआ बेल और चीता यह सब समभाग चूर्ण करके इनकी बराबर शक्कर डाल कर सेवन करनेसे बहुत भारी भोजन भी परिपाक होजाताहै इतिद्वितिय बड़वानल चूर्ण ॥ ७६ ॥

एलात्वक्नागपुष्पाणांमात्रोत्तरविवर्द्धिता । मरिचंपिप्पलीशुण्ठी चतुष्पञ्चोत्तरोत्त रा ॥द्रव्याण्येतानियावन्तितावतीसितशर्करा।चूर्णमेतत्प्रयोक्तव्यमग्निसन्दीपनंपरम् ॥ इतिसमशर्करचूर्णम् ॥ ७७ ॥

इलायची१ भाग दालचीनी२ भाग नाग केशर३ भाग मिर्च ४ भाग पीपल ५ भाग और सोंठ ६ भाग इन सबकी बराबर सफेद शक्कर इन सब औषधियों के मिलेहुए चूर्णके खानेसे अत्यन्त अग्निकी दीप्ति होतीहै इति समशर्कर चूर्ण ॥ ७७ ॥

अथाजीर्णेरसाः ॥

द्विपलंगन्धकंशुद्धंपलमेकन्तुपारदम् । मृतलोहंतथाताम्रंकर्षद्वयमितंपृथक् ॥ सञ्चूर्ण्य सर्व्वसम्मिश्रंद्रावयित्वाग्नियोगतः । सम्यक्द्रुतंसमस्तंतत्पञ्चांगुलदलेक्षिपेत् ॥ पुनः संचूर्ण्यतत्सर्व्वंलौहपात्रेनिधापयेत् । जम्बीरस्यरसंतत्रपूतंपलशतंक्षिपेत्॥ चुल्ल्यांनि वेश्यतद्यत्नात् मृदुनावह्निनापचेत् ॥ रसेतस्मिन्घनीभूते तत्संशोष्यविचूर्णयत् ॥ पञ्च कोलकषायस्य चुक्रेणसहितस्यच । भावनातत्रदातव्या पश्चात्संशोषयेच्छनैः ॥ भृष्ट टङ्कनचूर्णेन तुल्येनसहमेलयेत् । मरिचेनापितुल्येन तदर्द्धेनविडेनच ॥ भावयेत्सप्त कृत्वस्तु चणकाम्लजलेनच । ततःसंशोष्यसम्पिष्य कूपमध्येनिधापयेत् ॥ रसक्रव्याद नामायं भैरवानन्दयोगिना ॥ उक्तःसिंहलराजाय बहुमांसाशिनेपुराः ॥भक्षयेद्भोजनस्या न्ते माषद्वयमितंरसम् ॥ भक्षयित्वारसंपश्चात् पिबेत्तक्रंससैन्धवम् ॥ अत्यर्थंगुरुयद्भुक्त मतिमात्रमथापिच ॥ तत्सर्व्वंजीर्यतिक्षिप्रं रसस्यैतस्यभक्षणात् ॥ शूलंगुल्मञ्चविष्टम्भं प्लीहानमुदरंतथा । रसःक्रव्यादनामाऽयंविनिहन्तिनसंशयः ॥ इतिक्रव्यादरसाजीर्णेरसे न्द्रचिन्तामणौरसरत्नप्रदीपेच ॥ ७८ ॥

अजीर्णपर रस ॥

शुद्ध गंधक २ पल शुद्धपारा १ पल लोहे तथा तांबेकी भस्मदो २ तोले इनसब औषधियोंको मिला कर आगपर खूब गलावे और गलाकर रेंडीके पत्तेपर डाले फिर उसको चूर्ण करके लोहेके पात्र में रक्खे और उस में ४०० तोले जंभीरी नींबूका रस छोड़कर चूल्हे पर चढ़ाय मन्दाग्नि से पाक करे इसके उपरान्त रसके गाढ़े होजाने पर सुखाके चूर्ण करे फिर चूक सहित पंच कोलके काढ़े में भावना देकर सूख जानेपर उसके समान भुना सुहागा तथा मिर्च और आधा भाग बिड़नोन मिला कर चनोंके रसमें सातबार भावनादे फिर सुखायके और पीस के सीसी में रखछोड़े यह क्रव्याद नाम रस पूर्व्व कालमें बहुत मांसके खाने वाले सिंहलद्वीप के राजाके लिये भैरवानन्द योगीने कहा था भोजन के अन्त में दोमाशे इस रस को खाकर सेंधेनोन समेत मट्ठा पिये इस्से बहुत भारीतथा बहुत अधिकभी भोजन शीघ्र पचजाताहै और शूल बाय गोला विष्टंभ प्लीहा तथा उदर रोग सबनष्ट होतेहैं इति क्रव्यादरस ॥ ७८ ॥

क्षारत्रयंसूतगन्धौपञ्चकोलमिदंसमम् । सर्व्वैस्तुल्याजयाभृष्टातदर्द्धाशिग्रुजाजटा ॥ एतत्सर्व्वंजयाशिग्रुवह्नीनांकेवलैर्द्रवैः । भावयेत्त्रिदिनंघर्म्मेततोलघुपुटेपचेत् ॥ मार्कव स्यद्रवैर्घृष्टोरसोज्वालानलोभवेत् । निष्कोऽस्यमधुनालीढोऽनुपानंगुडनागरम् ॥ हन्त्य जीर्णमतीसारंग्रहणीमग्निमार्दवम् । श्लेष्महृल्लासवमनमालस्यमरुचिंजयेत् ॥ (अथ पञ्चकोलम्)पिप्पलीपिप्पलीमूलंचव्याचित्रकनागरैः । जयात्रविजया।मार्कवःभृङ्गराजः ॥ इतिज्वालानलोरसः । अजीर्णेरसरत्नप्रदीपे ॥ ७९ ॥

जवाखार सज्जी सुहागा पारा गन्धक पीपल पीपला मूल चव्य चीता औरसोंठ यहसब समभाग और सबकी बराबर भुनी हुई भंग और भंगकी आधी सहिंजने की जड़ इन सब को मिलाकर भंग सहिंजना तथा चीतेके रसमें एकएक दिन भावनादेवे फिर हलके पुटमें पाककर के भांगरेके रस में घोटले चार माशे इस रसको सहतके साथ चाटे और सोंठ तथा गुड़ का अनुपान करे इसके द्वारा अजीर्ण अतीसार ग्रहणी मन्दाग्नि कफ मतली छर्दि आलस्य तथा अरुचिका नाश होताहै इति ज्वाला नल रस ॥ ७९ ॥

टङ्कणंरसगन्धौचसमभागंत्रयंविषात् । कपर्दःस्वर्ज्जिकाक्षारोमागधीविश्वभेषजम् ॥ पृथक्पृथक्कर्षमात्रंवसुभागमिहोषणम् । जम्बीराम्लैर्दिनंघृष्टंभवेदग्निकुमारकः ॥ विसूचीशूलवातादिवह्निमान्द्यप्रशान्तये । क्षारोजवक्षारः । अग्निकुमारोविसूच्यामजीर्णेरसरत्न प्रदीपे । रसेन्द्रचिन्तामणौ ॥ ८० ॥

सुहागा पारातथा गन्धक एक२ भाग विष३भागकौड़ी की भस्म सज्जी जवाखार पीपल तथासोंठ एक२ भाग और मिर्च ८भाग इनसब औषधियोंको जंभीरी नींबूके रसमें एक दिन घोटे फिर मात्रा के अनुसार सेवन करने से विसूचिका शूल और बातादि की मन्दाग्नि नष्ट होती है इति अग्नि कुमार रस ॥ ८० ॥

पारदामृतलवङ्गगन्धकंभागयुग्ममरिचेनमिश्रितम् । तत्रजातिफलमर्द्धभागिकंति न्तिड़ीफलरसेनमर्दितम् ॥ वह्निमांद्यदशवक्त्रनाशनोरामबाणइतिविश्रुतोरसः । संग्रहग्र हणिकुम्भकर्णकमामवातखरदूषणंजयेत् ॥ दीयतेतुमरिचानुपानतःसद्यएवजठराग्निदी पनः । रोचनःकफकुलान्तकारकःश्वासकासवमिजन्तुनाशनः ॥ पाराभाग १ । विषभा ग १ । लवङ्गभाग १ । गन्धकभाग १ । मरिचभाग २ । जायफरभागआधा । इतिरा मबाणरसः । रसेन्द्रचिन्तामणौ ॥ ८१ ॥

पारा विष लौंग तथा गन्धक एकएक भाग मिर्च दोभाग जायफल आधा भाग इनसब औषधियों को इमली के रसमें पीसकर सेवनकरे यह रामबाण नाम रस मंदाग्नि रूपी रावण संग्रहणी रूपी कुंभकर्ण और आमबात रूपी खरदूषण को नाश करताहै मिर्चके अनुपानकेसाथ इसका सेवन करने से जठराग्निदीप्तहोतीहै रुचि होतीहै और कफ श्वास खांसी छर्दि तथा कृमियों का नाश होता है इति राम बाणरस ॥ ८१ ॥

अथ शङ्खवटी ॥

पलञ्चिञ्चाक्षारंपरिमितमिदंपञ्चलवणम् द्वयंसम्यक्पिष्टंभवतिलघुनिम्बूफलरसैः ॥ त

तःपिष्टेतस्मिन्पलपरिमितंशङ्खशकलम् क्षिपेद्वारान्सप्तद्रवमिहचतेनैवविधिना ॥ पलप्रमाणंकटुकत्रयञ्चपलार्द्धमानंवचहिंगुभागः । विषंपलंद्वादशभागयुक्तंतावद्रसोगन्धकएषचोक्तः ॥ वदरास्थिप्रमाणेनवटीमेतस्यकारयेत् । भक्षयेत्सेवयासाम्यात्सर्व्वाजीर्णप्रशान्तये ॥ सर्व्वोदरेषुशूलेषुविसूच्यांविविधेषुच । अग्निमान्द्येषुगुल्मेषुसदाशङ्खवटीहिता ॥ इतिशङ्खवटीरसः । रसरत्नप्रदीपे ॥ ८२ ॥

इमलीकाखार १ पल और पांचौनोन एक २ पल इनको कागदी नींबूके रसमें खूब पीसे फिर १ पल शंखको सातवार तक्रादिक सात द्रवोंमें पहले कहीहुई विधिसे डालकर शुद्धकरके मिलावे इसके उपरान्त त्रिकटु १पल वच तथा हींग आधेपल बिष पारा तथा गन्धक आधेपल इनसब औषधियोंको एकसाथ पीसकर बेरकी गुठलीके समान गोली बनावे फिर इसको संपूर्ण अजीर्णोंकी शान्तिके लिये खाय इसके द्वारा संपूर्ण उदर शूल विसूचिका अनेक प्रकारकी मन्दाग्नि और बायगोलेका नाश होताहै इति शंखवटी ॥ ८२ ॥

स्नुह्यर्कचिञ्चापामार्ग्गरम्भातिलपलाशजान् । लवणानाददीतैषांप्रत्येकंकर्षमात्रया॥ लवणानिपृथक्पञ्चग्राह्याणिपलमात्रया । स्वर्ज्जिकाचयवक्षारष्टङ्कनंत्रितयंपलम् ॥ सर्व्वं त्रयोदशपलंसूक्ष्मंचूर्णंविधायच । निम्बूफलरसेप्रस्थंसम्मितेतत्परिक्षिपेत् । तत्रशङ्खस्यशकलंपलंवह्नौप्रताप्यतु । वारान्निर्व्वापयेत्सप्तसर्व्वद्रवतितद्यथा । नागरंत्रिपलंग्राह्यंमरिचन्तुपलद्वयम् । पिप्पलीपलमानास्यात्पलार्द्धंभृष्टहिंगुतः ॥ ग्रन्थिकंचित्रकञ्चापि जवानीजीरकंतथा । जातीफलंलवङ्गञ्चपृथक्कर्षद्वयोन्मितम् ॥ रसोगन्धोविषञ्चापिटङ्कणञ्चमनःशिला । एतानिकर्षमात्राणिसर्व्वंसञ्चूर्ण्यमिश्रयेत् ॥ सरावार्द्धेणचुक्रेणवटिकांतस्यकारयेत् । माषप्रमाणसद्वैद्यैर्बृहच्छङ्खवटीस्मृता ॥ सर्व्वाजीर्णप्रशमनीसर्व्वशूलनिवारिणी । विसूच्यलसकादीनांसद्योभवतिनाशिनी । इतिबृहत्शङ्खवटीअजीर्णे ॥ ८३ ॥

थूहर आक इमली लटजीरा केला तिल तथा ढाक इनसबके क्षार एक २ तोले सेंधानोन१तो० पांचोंनोन एक२पल सज्जी जवाखार तथा सुहागा दो२ पल इनसब १३ पल औषधियोंको महीन चूर्ण करके एकप्रस्थ नींबूके रसमें छोड़े फिर एकपल शंखको सातबार अग्निमें तपा २ कर उस में बुझावे जिस्से कि शंखगल जाय और सोंठ ३ पल मिर्च २ पल पीपल १ पल भुनीहींग आधापल पीपलामूल चीता अजवाइन जीरा जायफल तथा लौंग दो २ तोले पारा गन्धक बिष सुहागातथा मैनसिल एक २ तो० इनसब औषधियोंको महीन पीसकर उसमें मिलावे फिर १६ तोले चूक मिलाकर माशे २ भरकी गोली बनावे इसके सेवनसे संपूर्ण अजीर्ण और शूल तथा विसूचिका और अलसक आदि रोगोंका नाश होताहै इति वृहच्छंखवटी ॥ ८३ ॥

टङ्कणकणामृतानांसहिंगुलानांसमंभागम् । मरिचस्यभागयुगलंनिम्बूनीरैर्वटीकार्या ॥ वटिकांकलायसदृशामेकांद्वेवासमश्नीयात् । सत्यमजीर्णेशान्त्यैवह्नेर्द्दृद्ध्यैकफध्वस्त्यै ॥ इतिअजीर्णकण्टकोरसः ॥ ८४ ॥

सुहागा पीपल विष तथा सिंगरफ एक २ भाग और मिच २ भाग इन सब औषधियोंको नींबके

रसमें पीसकर मटरके समान गोली बनावे फिर एक अथवा दोगोली खानेसे अजीर्ण तथा कफका नाश होताहै और अग्नि दीप्त होतीहै इति अजीर्ण कंटक रस ॥ ८४ ॥

जलपीतमपामार्गशूलंहन्याद्विसूचिकाम् । सतैलंकारवेल्यम्बुनाशयेद्विविसूचिकाम्॥ वालमूलस्यतुक्काथःपिप्पलीचूर्णसंयुतः । विसूचीनाशनःश्रेष्ठःजठराग्निविवर्द्धनः ८५ ॥

लटजीरेके काढ़ेको पीनेसे शूल तथा विसूचिकाका नाशहोताहै करेलेके रसमें तेल डालकर पीनेसे विसूचिकाका नाश होताहै कच्ची मूलीके काढ़ेमें पीपलका चूर्ण छोड़कर पीनेसे विसूचिकाका नाश और अग्निकी वृद्धिहोतीहै ॥ ८५ ॥

विल्वनागरनिःक्काथोहन्याच्छर्दिविसूचिकाम् । विल्वनागरकैटर्य्यक्काथस्तदधिकोगुणैः ॥ कैटर्य्यकट्फलः ॥ ८६ ॥

बेल और सोंठके काढ़ेसे छर्दि तथा विसूचिकाका नाशहोताहै और बेल सोंठ तथा कायफलका काढ़ा इससेभी अधिक गुणकारी है ॥ ८६ ॥

व्योषंकरञ्जस्यफलंहरिद्रेरसंसमावाप्यचमातुलुंग्याः । छायाविशुष्कावटिकाकृतासा हन्याद्विसूचींनयनाञ्जनेन ॥ अनुभूतमिदम्। अपामार्गस्यपत्राणिमरिचानिसमानिच। अश्वस्यलालयापिष्टाञ्जनाद्धन्तिविसूचिकाम् ॥ ८७ ॥

त्रिकटु करंजुआ हल्दी दारुहल्दी और नींबूकारस इन सम्पूर्ण औषधियोंको मिलाकर छायामें सुखाकर गोली बांधे इस गोलीको घिसकर अंजन लगानेसे विसूचिकाका नाशहोताहै यह अनुभव किया हुआहै लटजीरेकी पत्ती और मिर्च समभाग लेकर घोड़ेकी लारमें पीसकर अंजन लगानेसे विसूचिका का नाश होताहै ॥ ८७ ॥

विसूच्यामतिवृद्धायांतक्रंदधिसमंजलम् । नारिकेराम्बुपेयंवाप्राणत्राणाययोजयेत् ॥ त्वक्पत्रकैरण्डुकाशिग्रुकुष्ठैरम्लप्रपिष्टैःसवचाशताह्वैः । उद्वर्त्तनंखल्लिविसूचिकाघ्नंतैलंविपक्वञ्चतदर्थकारि ॥ कुष्ठसैन्धवयोःकल्कंचुक्रंतैलेतुसाधितम् । विसूच्यांमर्दनंतेनखल्लीशूलनिवारणम् ॥ पिपासायांतथोत्क्लेशेलवङ्गस्याम्बुशस्यते । जातीफलस्यवापीतंश्रृतं भद्रघनस्यवा ॥ ८८ ॥

विसूचिकाके बहुत बढ़जानेपर प्राणोंकी रक्षाके लिये मट्ठा समभाग जल मिलाहुआ दहीअथवा नारियलका जल पीना चाहिये दालचीनी तेजपात रासना अगर सहिंजन कूट बच और सौंफ इन सबको कांजीमें पीसकर उबटन लगानेसे बांयटे तथा विसूचिका का नाश होता है और इन्हीं औषधियों के द्वारा तेलको पकाकर मर्दन करनेसे बांयटे तथा विसूचिका का नाश होता है कूट तथा सेंधे नोनका कल्क और चूक इनको डाल तेलको पकाकर मर्दन करने से विसूचिकावाले के बाँयटे तथा शूल का नाश होताहै विसूचिका में तृषा तथा उत्क्लेश के होनेपर लौंग जायफल अथवा नागरमोथे का क्वाथ पिलाना चाहिये ॥ ८८ ॥ अथ उत्क्लेशस्यलक्षणम्

उत्क्लिश्यान्नंचनिर्गच्छेत्प्रसेकष्ठीवनेरितम् । हृदयंपीड्यतंचास्यतमुत्क्लेशंविनिर्दिशेदिति ॥ ८९ ॥

उत्क्लेशका लक्षण ॥

उबकाई आवे परन्तु अन्न न गिरे और प्रसेक (मुखसे पानी छूटना) थुकथुकी तथा हृदय में पीड़ाहोय उसको उत्क्लेश कहतेहैं ॥ ८९ ॥

सरुग्वानद्धमुदरमम्लेपिष्टैःप्रलेपयेत्। दारुहैमवतीकुष्ठंशताह्वाहिंगुसैन्धवैः ॥ हैमवतीश्वेतवच। इतिदारुषट्कम् ॥ ९० ॥

पीड़ा सहित उदरके फूलने पर देवदारु श्वेत बच कूट सौंफ हींग और सेंधानोन इनसबको कांजीमें पीसकर लेपकरे इति दारुषट्क ॥ ९० ॥

तक्रेणयुक्तंयवचूर्णमुष्णंसक्षारमार्तिंजठरेनिहन्यात्। स्वेदोघटैर्वाप्यथवाष्पपूर्णैरुष्णैस्तथान्यैरपिपिण्डतापैः ॥ विलम्बिकालसकयोरयमेवक्रियाक्रमः । अतएवतयोरुक्तं पृथक्नहिचिकित्सितम् ॥ ९१ ॥

जौके चूर्ण और जवाखारको मट्ठे में मिलाकर गरमगरम पेटमें लेप करनेसे पीड़ाका नाश होता है भाफसे भरे हुए घड़ोंके द्वारा स्वेद लेनेसे अथवा अन्य उष्ण गोलेआदि के सेकनेसे पीड़ा का नाश होताहै विलम्बिका और अलसक कीभी चिकित्सा इसी क्रमसे होती है इसी हेतुसे उनकी चिकित्सा पृथक् नहीं लिखीगई ॥ ९१ ॥

तंभस्मकंगुरुस्निग्धसान्द्रमन्दहिमस्थिरैः।अन्नपानैर्नयेच्छान्तिंपित्तघ्नैश्चविरेचनैः ॥ अत्युद्धताग्निशान्त्यैमाहिषदधिदुग्धसर्पींषि । संसेवेतयवागूंसमपिष्टैपयसिसर्पिषासिद्धाम् ॥ असकृतपित्तहरणंपायसप्रतिभोजनम् । श्यामात्रिवृत्विपक्वञ्चपयोदद्याद्विरेचनम् ॥ यत्किञ्चिन्मधुरंमेध्यंश्लेष्मलंगुरुभोजनम् । सर्वंतदत्यग्निहितंभुक्त्वाप्रस्वपनं दिवा ॥ सितन्तण्डुलसितकमलंछागक्षीरेणपायसंसिद्धम् । भुक्त्वाचतेनपुरुषोदशादिवसात्तुच्छभोजनोभवति ॥ ९२ ॥

भारी स्निग्ध कठोर मन्द शीतल तथा स्थिर गुण युक्त अन्नपान के द्वारा और पित्त नाशक वस्तु तथा विरेचनके द्वारा भस्मक को शान्त करे बहुत बढ़ी हुई अग्नि को शान्त करने के लिये भैंसका दूध दही तथा घी सेवन करे और चावलोंका चूर्ण तथा दूध समभाग लेकर घीमें पाक कीगई यवागू का सेवन करे सदैव पित्तनाशक खीरका भोजन करे प्रियंगु और निसोत के द्वारा पाककिये हुए दूधसे विरेचनकरवावे मधुर मेधा को हित कफ कारी और भारी भोजन तीक्ष्णाग्नि वालोंको हितहै और भोजन के उपरान्त दिनमें सोना भी हितहै श्वेत चावल और श्वेत कमलके साथ बकरीके दूधकी खीर करके खानेसे दशदिनमें भूख कमहोजाती है ॥ ९२ ॥

अथ विशिष्टद्रव्याजीर्णेविशिष्टंपाचनद्रव्यमाह ॥

अलंपनसपाकायफलंकदलसम्भवम्। कदलस्यतुपाकायबुधैरपिघृतंहितम् ॥ घृतस्यपरिपाकायजम्बीररस्यरसोहितः ॥ नारिकेरफलंतालवीजयोः पाचकंसपदितण्डुलंविदुः।क्षीरमेवसहकारपाचनंचारमज्जनिहरीतकीहिता ॥ मधूकमालूरनृपादनानांपरूषखर्ज्जूरकपित्थकानाम्। पाकायपेयंपिचुमन्दवीजंघृतेऽपितक्रेऽपितदेवपथ्यम् ॥ खर्ज्जूरश्टं

गाटकयोःप्रशस्तंविश्वौषधंकुत्रचभद्रमुस्तम् । यज्ञांगबोधिद्रुफलेषुशस्तंप्लक्षेतथापर्य्युषितंप्रपीतं ॥ तण्डुलेषुचपयःपयःस्वथोदीपकन्तुचिपिटेकणायुतः । षष्टिकादधिजलेन जीर्यतेकर्कटीचसुमनेषुजीर्य्यति ॥ सुमनेषुगोधूमेषुजीर्य्यति ॥ गोधूममाषहरिमन्थसतीन मुद्गपाकोभवेज्झटितिमातुलपुत्रकेण॥मातुलपुत्रकंधत्तूरफलम्॥कंगूश्यामा॥खर्ज्जूरिकाविष कशेरुशितासुशस्तंशृंगाटकेमधुफलेष्वपिभद्रमुस्तम् ॥ कंगुश्यामाकनीवाराकुलत्थश्चाविलम्बितम् । दध्नोजलेनजीर्य्यन्तिवैदलःकाञ्जिकेनतु ॥ पिष्टान्नंशीतलंवारिकृशरासैन्धवंपचेत् । माषेण्डरीनिम्बुफलंपायसंमुद्गयूषकः ॥ बटोर्वेसवाराल्लवंगंनफेनीसमंपर्य्यटःशिग्रुर्बीजेनयाति । कणामूलतोलड्डुकापूपसट्टादिपाकोभवेच्छष्कलीमण्डयाश्च ॥ वेसवारोवगसइतिलोके । तद्यथास्नेहोनिशाहिंगुलवङ्गकैलाधान्यार्कजीरार्द्रकनागराणि ॥ अम्लोषणंसैन्धवचूर्णमन्नेयथोचितंसंस्कृतयेप्रणीतम् । इतिसट्टासट्टकपानविशेषः। मण्डमाण्डेतिलोके ॥ ९३ ॥ द्रव्यविशेषके अजीर्ण में पाचन द्रव्य विशेष ॥

कटहलके परिपाकके लिये केला केलेके परिपाकके लिये घी घीके परिपाकके लिये जँभीरी नींबू का रस नारियल तथा ताड़के बीजके परिपाकके लिये चावल आमके परिपाकके लिये दूध और चिरौंजीके परिपाकके लिये हड़ हितकारीहै महुआ बेल चिरौंजी फालसा खजूर घी और मट्ठा इनके अजीर्णमें निंबौलीका पेय बनाकर पीना चाहिये खजूर और सिंघाड़ेके अजीर्णमें सोंठ और नागरमोथेका सेवन करना चाहिये गूलर पीपल और पकरियाके फलोंके अजीर्णमें सोंठ अथवा नागरमोथेका बासी काढ़ा पीना चाहिये चावलोंके अजीर्ण में दूध दूधके अजीर्णमें अजवाइन और चिड़वोंके अजीर्णमें पीपल और अजवाइनका सेवन करना चाहिये सांठीके चावलोंके अजीर्ण में दहीका तोड़ पीना चाहिये और ककड़ीका अजीर्ण गेहूंसे मिटजाताहै गेहूं उर्द चना मटर और मूंग इनके अजीर्ण में धतूरे के फल सेवन करने चाहिये काकुन सामा खजूर कमल की डंडी कसेरू शक्कर सिंवाड़ा और महुआ इनके अजीर्ण में नागरमोथेका सेवन करे काकुन सामा तिन्नी और कुलथी इनके अजीर्ण में दहीका तोड़ हितहै दालवाली चीजें कांजी से पचतीहैं पीठीकी चीजें शीतल जल से और खिचड़ी सेंधानोन से पचतीहै नींबू से इमरती और मूंग के यूषसे खार पचती है नोनसे बेसवार (तैलादिक स्नेह हल्दी हींग लौंग इलायची धनियां जीरा अदरक सोंठ खटाई मिर्च और सेंधानोन यह सब बस्तु यथोचित अन्नके सुधारने के लिये छोड़नी चाहिये इसको बेसवार कहतेहैं) पचताहै लौंग से फेनी पचतीहै पापड़ सहिंजनके बीज से पचताहै लड्डू मालपुआ और सट्टक(पन्नाविशेष) आदि पीपलामूल से पचतेहैं पूरी माड़से पचती हैं ॥ ९३ ॥

किमत्रचित्रंबहुमत्स्यमांसभोजीसुखीकाञ्जिकपानतःस्यात् । इत्यद्भुतंकेवलवह्निपक्वोमांसेनमत्स्यःपरिपाकमेति ॥ आममाषफलंमतुस्यतद्बीजंपिशितेहितम् । कूर्म्ममांसंयवक्षाराच्छीघ्रंपाकमुपैतिहि ॥कपोतपारावतनीलकण्ठकापिञ्जलानांपिशितानिभुक्त्वा । काशस्यमूलंपरिपिष्यपीतंसुखीभवेन्नाबहुशोहिदृष्टम् ॥ कपोतोधवलःपाण्डुः ॥ मांसानि सर्वाण्यपियान्तिपाकक्षारेणसद्यास्तिलनालजेन ॥ ९४ ॥

मछली और मांस को बहुत साखाकर कांजी पीनेसे पचजाताहै यहकुछ आश्चर्य्य नहींहै परन्तु केवल अग्निमें पकाई हुई मछली मांसके साथ खाने से पचजातीहै यह आश्चर्य्यहै कच्चे आमसे मछली और आमकी बिजली से मांस पचता है कछुएकामांस जवाखार से बहुत जल्द पचता है श्वेत तथा पांडुरंगका कबूतर नलिकंठ और सफेद तीतर इनके मांसको खाकर कांसकी जड़को पीसकर पीनेसे परिपाक होता है यह बहुत बार देखागयाहैतिलकी डंडीके क्षारसे संपूर्ण मांसपचते हैं ॥९४॥

चञ्चूकसिद्धार्थकवास्तुकानांगायत्रिसारःकथितेनपाकः ॥ चञ्चूकचेचूइतिलोके। गायत्रीखदिरः। पालङ्किकाकेवुककारवेल्लीवार्त्ताकुवंशांकुरमूलकानाम् । उपोतिकालावु पटोलकानांसिद्धार्थकोमेघरवश्चपक्ता ॥ मेघरवःचौराइतिलोके। विपच्यतेशूरणकंगुडेनतथालुकंतण्डुलधावनेन। पिण्डालुकंजीर्य्यतिकोरदूषात्कशेरुपाकःकिलनागरेण ॥ लवणस्तण्डुलतोयात्सर्पिर्जम्बीरकाद्यम्लात् । मरिचादपितच्छीघ्रंपाकंयात्येवकाञ्जिकात्तैलम् ॥ ९५ ॥

चेंचू सरसों और बथुयेकाशाक खैरसारसे पचता है पालक केऊ करेला बैंगन बांसके अंकुर मूली पोय लौकी और परवल यह सब श्वेत सरसों और चौराई से पचते हैं जमींकंद गुड़ से और आलू चावल के धोवन से पचता है गोल आलू कोदोंसे और कसेरू सोंठसे पचताहै नोन चावलके पानीसे घी जंभीरी नींबू आदिकी खटाईसे अथवा मिर्चसे और तेलकांजी से पचताहै ॥ ९५ ॥

क्षीरंजीर्य्यतितक्रेणतद्गव्यंकोष्णमण्डकात् । माहिषंमानिमन्थेनशङ्खचूर्णेनतद्दधि ॥ मण्डकःमाड़इतिलोके। रसालंजीर्य्यतिव्योषात्खण्डनागरभक्षणात् ॥ सितानागरमुस्तेनतथेक्षुश्चाद्रिकारसात् ॥ जरामिरागैरिकचन्दनाभ्यामभ्येतिशीघ्रंमुनिभिःप्रदिष्टं ॥ उष्णेनशीतंशिशिरेणचोष्णंजीर्णो भवेत्क्षारगणस्तथाम्लैः ॥ इरामदिरातप्तंतप्तंहेमवातारमग्नौतोयेक्षिप्तंसप्तकृत्वस्तदम्भः । पीत्वाजीर्णन्तोयजातंनिहन्यात्तत्रक्षौद्रंभद्रमुस्तंविशेषात् ॥ तत्रतोयाजीर्णे। इतिजठराग्निविकारः॥ ९६ ॥

दूध मट्ठेसे गौका दूध कुछ गरम मांड़से भैंसका दूध सैंधोनोन से और भैंसका दहीशंखके चूर्ण से पचताहै पौंड़ा त्रिकटुसे खांड़ सोंठसे चीनी नागरमोथे से और ईख अदरक के रस से पचती है पुरानी मद्य गेरू तथा चन्दनसे शीतल बस्तु उष्ण बस्तुसे उष्ण बस्तु शीतल बस्तुसे और संपूर्ण क्षारखटाई से पचतेहैं जलपीने से अजीर्ण होनेमें सोने अथवा चांदीको आगमें तपातपा कर सात बार पानीमें बुझावे और उस पानीको पिये उस्से अजीर्ण दूर होता है नागरमोथा औरसहत के द्वारा पानी का अजीर्ण नष्ट होताहै इतिजठराग्नि बिकार॥ ९६ ॥

अथ कृम्यधिकारः। अथ कृमीनांभेदानाह ॥

कृमयस्तुद्विधाप्रोक्तावाह्याभ्यन्तरभेदतः। तेषांनिदानान्याह। बहिर्म्मलकफासृग्विड्जन्मभेदाच्चतुर्विधाः ॥ नामतोविंशतिविधावाह्यास्तत्रमलोद्भवाः ॥ तत्रतेषुवाह्याःकृमयःमलोद्भवाः। त्वक्लग्नबहिर्मलस्वेदसम्भवाः। तेषांरूपाण्याह। तिलप्रमाणसंस्थानवर्णाःकेशाम्बराश्रयाः । तिलानामिवपरिमाणानिवर्णायेषांतेबहुपादाश्चसूक्ष्माश्चयू

कालिख्याश्चनामतः । द्विधातत्रयूकाबहुपादाकृष्णाकेशाश्रया । लिख्याःसूक्ष्माःश्वेताच स्त्राश्रयाः । तत् कर्त्तव्यविकारमाह । द्विधातेकोठपिटिकाकण्डुगण्डानप्रकुर्व्वते ॥ ९७॥

कृमिरोगाधिकार कृमियोंके भेद ॥

बाह्य और आभ्यन्तर प्रकार से कृमि दो प्रकार केहैं स्वेद कफ रक्त और मलसे वह उत्पन्न होते हैं इसलिये कारण भेदसे चार प्रकार के होते हैं और नाम भेद से बीस प्रकार के होतेहैं उनमेंसे मल अर्थात् स्वेद से उत्पन्न हुए कृमि बाह्य कहलातेहैं यह तिलके समान आकृति तथा वर्णवाले होतेहैं और बाल तथा वस्त्रों में रहते हैं इनमें से बहुत पैरवाले काल यूक (जुआं) नाम कृमि बालों में रहते हैं और सूक्ष्म श्वेत वर्ण वाले लिख्य (लीख) नामवाले कृमि वस्त्रों में रहते हैं यह दोनों प्रकारके कृमि चकत्ते फुंसी खुजली और फोड़ोंको उत्पन्न करते हैं ॥ ९७ ॥

आभ्यन्तरकृमीनांविप्रकृष्टंनिदानमाह ॥

अजीर्णभोजीमधुराम्लसेवीद्रवप्रियःपिष्टगुडोपभोक्तः । व्यायामवर्ज्जीचदिवाशयी चविरुद्धभोजीलभतेकृमींश्च ॥ ९८ ॥

आभ्यन्तर कृमियों के दूरवाले कारण ॥

अजीर्ण कारी वस्तु मधर खट्टी तथा बहुत पतली वस्तु पीठी और गुडके खाने से विरुद्ध भोजन से व्यायाम न करनेसे और दिनमें सोनेसे कृमि उत्पन्न होतेहैं ॥ ९८ ॥

उत्पन्नकृमिलक्षणमाह ॥

ज्वरोविवर्णताशूलंहृद्रोगःसदनंभ्रमः । भक्तद्वेषोऽतिसारश्चसञ्जातकृमिलक्षणम् ॥ ९९ ॥

उत्पन्नहुए कृमियोंके लक्षण ॥

आभ्यन्तर कृमियोंके उत्पन्न होनेपर ज्वर विवर्णता शूल हृदय के रोग शिथिलता भ्रम भोजनमें अरुचि और अतीसार यह लक्षण होतेहैं ॥ ९९ ॥

अथ कफजकृमीणांविप्रकृष्टंनिदानमाह ॥

मांसमाषगुड़क्षीरदधिशुक्तैःकफोद्भवाःशुक्रंकालान्तरेणाम्लीभूतइक्षुरसविकारः॥ १००॥

कफके कृमियोंके दूर वाले कारण ॥

मांस उर्द गुड़ दूध दही और सिरके के खाने से कफके कृमि उत्पन्न होते हैं ॥ १०० ॥

कफजकृमीणांसम्प्राप्तिपूर्व्वकंलक्षणमाह ॥

कफादामाशयेजाताःवृद्धाःसर्पन्तिसर्वतः । पृथुब्रध्ननिभाःकेचित्केचिद्गण्डुपदोपमाः॥ रूढ़धान्यांकुराकाराःतनुदीर्घास्तथाणवः । श्वेतास्ताम्रावभासाश्चनामतःसप्तधातुते ॥ अन्त्रादाउदरावेष्टाहृदयादामहाकुहाः । चुरवोदर्भकुसुमाःसुगन्धास्तेचकुर्व्वते ॥ हृल्लास मास्यश्रवणमविपाकमरोचकम् । मूर्च्छाच्छर्दिज्वरानाहकाससक्षवथुपीनसान्॥वन्धश्चर्म्म लतारूढोऽङ्कुरितः । तनवःपरिणाहेनतथादीर्घास्तनुर्दीर्घाश्चुरवश्चुरमानः । तत्कर्त्तव्य विकाराहल्लासादयः ॥ १०१ ॥

कफके कृमियों के संप्राप्ति पूर्व्वक लक्षण ॥

कफसे आमाशयमें उत्पन्न हुए कृमि बढ़कर सब ओरको फैलतेहैं उनमें से कुछ स्थूल कुछ तस्मे के समान कुछ केंचुए के समान कुछ उगे हुए नाजके अंकुरके समान और कुछ लंबे तथा कुछ पतले होतेहैं इनका वर्ण श्वेत अथवा तांबेकासा होताहै यह नामसे सात प्रकारके होते हैं जैसे अन्त्राद उदरावेष्टक हृदयाद महाकुह चुरु दर्भ कुसुम और सुगन्ध इनके द्वारा मतली मुखसे पानी छूटना भोजनका न पचना अरुचि मूर्च्छा छर्दि ज्वर अफरा कृशता छींक और पीनस यहसबरोग होतेहैं१०१॥

शोणितजकृमीणांविप्रकृष्टंनिदानमाह ॥

विरुद्धाजीर्णशाकाद्यैःशोणितोत्थाभवन्तिहि ॥ १०२ ॥

रुधिरके कृमियोंके दूरवाले कारण ॥

बिपरीत भोजन और अजीर्ण कारी बस्तु तथा शाकादिक के खाने से रक्तज कृमि उत्पन्न होतेहैं१०२॥

अथ रक्तजकृमीणांसम्प्राप्तिपूर्वकलक्षणम् ॥

रक्तवाहिशिरास्थानारक्तजाजन्तवोऽणवः । अपादावृत्तताम्राश्चसौक्ष्म्यात्केचिदद्दर्शनाः ॥ केशादालोमविध्वंसाःरोमद्वीपाउदुम्बराः । षट्तेकुष्ठैककर्म्माणःसहसौरसमातरः ॥ सौरसमातृभ्यांसहवर्त्ततइतिसहसौरसमातरः ॥ १०३ ॥

रक्तज कृमियों के संप्राप्ति पूर्व्वक लक्षण ॥

रुधिर के लेजाने वाली नाड़ियों में रक्तज कृमि उत्पन्न होतेहैं यह कृमि पैर रहित सूक्ष्म गोल और तांबेकेसे रंग वाले होतेहैं इनमेंसे कुछ सूक्ष्मता के कारण दिखाई नहींदेते यह नाम भेदसे छः प्रकारकेहैं जैसे केशाद रोम विध्वंस रोम द्वीप उडुम्बर सौरस और मातृ इन सबके द्वारा कुष्ठ रोग उत्पन्न होताहै ॥ १०३ ॥

पुरीषजानाहपुरीषजकृमीणांविप्रकृष्टन्निदानमाह ॥

पक्वाशयेपुरीषोत्थाजायन्तेऽधोविसर्पिणः।वृद्धास्तेस्युर्भवेयुश्चतेयदामाशयोन्मुखाः॥ तदास्योद्गारनिःश्वासविड्गन्धानुविधायिनः । पृथुवृत्ततनुस्थूलाश्यावपीतसितासिताः ॥ तेपञ्चनाम्नाकृमयःककेरुकमकेरुकाः । सौसुरादाःसशूनाख्याःलेलिहाजनयन्तिच ॥ विड्भेदशूलविष्टम्भकार्श्यपारुष्यपाण्डुताः । रोमहर्षाग्निसदनगुदकण्डुर्विमार्ग्गगाः ॥ वृद्धास्तेऽधोविसर्पिणःस्युःयदातेआमाशयोन्मुखाभवेयुरित्यन्वयः । तेविमार्ग्गगाःसन्तोविड्भेदादीन्जनयन्तिइत्यर्थः ॥ १०४ ॥

मलके कृमियों के दूरवाले कारण ॥

उर्द पीठी खटाई नोन गुड़ तथा शाकके खानेसे मलके कृमि उत्पन्न होतेहैं मलके कृमि पक्वाशय में उत्पन्न होकर नीचेकी ओर जातेहैं यह बढ़कर जब आमाशय की ओर जातेहैं तब रोगी को डकार श्वास तथा मलमें दुर्गन्ध उत्पन्न होतीहै इनमें से कुछ स्थूल तथागोल कुछ सूक्ष्म तथा स्थूल और धुमैले पीले श्वेत तथा काले वर्ण के होते हैं यह नामसे पांच प्रकारके होतेहैं जैसे ककेरुक मकेरुक सौसुराद सशून और लेलिहि यह बिपथगामी होकर मल भेद शूल बिष्टंभ कृशता कठोरता पांडु वर्ण रोमांच मन्दाग्नि और गूदामें खुजली इन रोगों को उत्पन्न करते हैं ॥ १०५ ॥

अथकृमीनांचिकित्सा ॥

विड़ङ्गव्योषसंयुक्तमन्नमण्डंपिवेन्नरः । दीपनंकृमिनाशायजठराग्निविवृद्धये ॥ प्रत्यहं कटुकंतिक्तंभोजनंकफनाशनम् । कृमीनांनाशनंरुच्यमग्निसन्दीपनंपरम् ॥ विड़ङ्गशृत पानीयंविड़ङ्गेनावधूलितम् । पीतंकृमिहरंदृष्टंकृमिजांश्चगदाञ्जयेत् ॥ लिह्याद्विडंग चूर्णंवामधुनाकृमिनाशनम् । पलाशवीजस्यरसंपिवेन्माक्षिकसंयुतम् ॥ पिवेत्तद्वीजक ल्कंवामधुनाकृमिनाशनम् । कम्पिल्लचूर्णंकर्षार्द्धंगुड़ेनसहभक्षितम् ॥ पातयेत्तुकृमीन् सर्व्वानुदरस्थान्नसंशयः । विड़ङ्गंकीटजंवीजंतथावीजंपलाशजम् ॥ सञ्चूर्ण्यखादेत् खण्डेनकृमीन्नाशयितुंनरः । निम्वपत्रसमुद्भूतंरसंक्षौद्रयुतंपिवेत् ॥ धत्तूरपत्रजंवापिकृ मिनाशनमुत्तमम् ॥ १०५ ॥ कृमियों की चिकित्सा ॥

वायविडंग और त्रिकटु समेत मांड़ के पीनेसे कृमि नष्ट होतेहैं और अग्नि बढ़ती है प्रतिदिन कटु तथा तिक्त भोजन करनेसे कफ तथा कृमियों का नाश होताहै और रुचि तथा अग्नि की वृद्धि होतीहै वायविडंग के द्वारा औटाये हुए जलमें वायविडंग काही चूर्ण छोड़कर पीने से कृमि और कृमियोंसे उत्पन्न होनेवाले रोगोंका नाश होताहै वायविड़ंगके चूर्णको सहतके साथ चाटनेसे कृमियों का नाश होताहै पलास के वीजोंके काढ़ेमें सहत डाल कर पीनेसे अथवा ढाकके वीजों को पीसकर सहत मिलाकर चाटने से कृमियोंका नाश होताहै ६ मासे कवीले के चूर्णको गुड़के साथ खाने से निस्सन्देह पेटके सब कृमि गिरपड़ते हैं वायविडंग इन्द्रजौ तथा ढाकके वीज इन सबको पीसकर खांड के साथ खानेसे कृमिनष्ट होते हैं नींबकी अथवा धतूरे की पत्तीमें सहत डालकर पीने से कृमियों का नाश होता है ॥ १०५ ॥

रसेन्द्रेणसमायुक्तोरसोधत्तूरपत्रजः । ताम्बूलपत्रजोवापिलेपोयूकाविनाशनः ॥ धत्तू रपत्रकल्केनतद्रसेनैवपाचितम् । तैलमभ्यङ्गमात्रेणयूकानाशयतिक्षणात् ॥ १०६ ॥

धतूरे की पत्ती के अथवा पानके रसमें पारा मिलाकर लेप करने से जुओंका नाश होताहै धतू- रेकी पत्तीके रस और कल्कसे पाक कियेगये तेलको मर्दन करनेसे जुआंओंका नाश होताहै ॥१०६॥

कृमीणांविट्कफोत्थानामेतदुक्तंचिकित्सितम् । रक्तजानान्तुसंहारंकुर्य्यात्कुष्ठचिकि त्सया ॥ क्षीराणिमांसानिघृतानिचापिदधीनिशाकानिचपर्णवन्ति । अम्लंचमिष्टञ्चरसंवि शेषात्कृमीन्जिघांसुःपरिवर्ज्जयेद्धि ॥ इतिकृम्यधिकारः ॥ १०७ ॥

मल और कफ से उत्पन्न हुए कृमियों की यह चिकित्सा कहीगई और रक्तज कृमियोंका नाश कुष्ठ की चिकित्सा से करना चाहिये दूध मांस घी दही पत्रशाक खटाई और मिठाई यहसव कृमि रोगवाले को छोड़ देना चाहिये इति कृमि अधिकार ॥ १०७ ॥

अथ पाण्डुरोगकामलाहलीमकाधिकारः ॥

तत्रपाण्डुरोगस्यसंख्यापूर्व्वकंसन्निकृष्टनिदानमाह ॥

पाण्डुरोगाःस्मृतापञ्चवातपित्तकफैस्त्रयः । चतुर्थःसन्निपातेनपञ्चमोभक्षणात्मृदः॥ पञ्चमोभक्षणात्मृदइतिननुमृत्तिकापिदूषितदोषद्वारेणैवपाण्डुरोगंजनयतीति मृद्भक्षणजः

पाण्डुरोगोदोषजादभिन्नएवंकथंपञ्चमइति। उच्यते। अपरकारणकुपितावातादयोऽन्यानपिरोगान्कुर्वन्ति। मृत्तिकाभक्षणात्कुपितास्तुवातादयोविशेषतःपाण्डुरोगमेवजनयन्त्येवेतिविशेषचिकित्साविशेषाच्चपञ्चमःचरकेणोक्तः ॥ १०८ ॥

पांडु कामला और हलीमकरोगका अधिकार ॥

पांडुरोगके संख्यापूर्व्वक समीपी कारण ॥

पांडुरोग पांच प्रकारकाहै जैसे वातज पित्तज कफज सन्निपातज और मृत्तिकाके खानेसे अबयह सन्देह होताहै कि मिट्टी खानेसे दूषित हुए दोष पांडुरोगको उत्पन्न करतेहैं इसलिये मिट्टी खानेसे हुआ पांडुरोगभी दोषजसे अलग नहींहै तो उसको अलग पांचवां क्यों गिनाया इसका उत्तर यहहै कि अन्य कारणोंके द्वारा कुपित वातादिक अन्य रोगोंकोभी उत्पन्न करतेहैं परन्तु मिट्टी खानेसे कुपित दोष पांडुरोगकोही उत्पन्न करतेहैं यह विशेषताहै और चिकित्साकी विशेषतासे चरकने इसको पांचवां कहाहै ॥ १०८ ॥

अथ विप्रकृष्टंनिदानपूर्व्विकांसम्प्राप्तिमाह ॥

व्यवायमम्लंलवणानिमद्यंमृदंदिवास्वप्नमतीवतीक्ष्णम्। निषेव्यमाणस्यविदूष्यरक्तंदोषास्त्वचंपाण्डुरतांनयन्ति ॥ तीक्ष्णंराजिकादिः ॥ १०९ ॥

पांडुरोगकी दूरवाले कारणों समेत संप्राप्ति ॥

मैथुन खटाई नोन मद्यपान मृत्तिकाभक्षण दिनमेंसोनाऔर बहुततीखीराईआदि वस्तुओंका सेवन इनकारणोंसे कुपित दोष रुधिरको दूषित करके त्वचाको पांडुवर्ण करतेहैं ॥ १०९ ॥

अथ पूर्वरूपमाह ॥

त्वक्स्फोटनिष्ठीवनगात्रसादमृद्भक्षणप्रेक्षणकूटशोथाः। विण्मूत्रपीतत्वमथाविपाकोभविष्यतस्तस्यपुरःसराणि ॥ प्रेक्षणकूटशोथइतिअक्षिगोलकशोथः ॥ ११० ॥

पांडुरोगका पूर्व्वरूप ॥

पांडुरोग होनेसे पहले त्वचाका कुछ फटना थुकथुकी अंगोंकी शिथिलता मृत्तिकाकाभक्षण नेत्रके पोटोंमें सूजन मल मूत्रकापीलापन और भोजनका परिपाक नहोना यह लक्षण होतेहैं ॥ ११० ॥

अथ वातिकस्यपाण्डुरोगस्यलक्षणमाह ॥

त्वङ्मूत्रनयनादीनांरूक्षकृष्णारुणाभता। वातपाण्ड्वामयेकम्पस्तोदानाहभ्रमादयः ॥ कृष्णारुणाभतापाण्डुत्वंनातिक्रामति अतएवसुश्रुतेसर्व्वेषुचैतेषुअपिपाण्डुभावोयतोऽधिकोअतःखलुपाण्डुरोगइति। भ्रमादयइत्यादिशब्दात्भेदशूलादयः ॥ १११ ॥

वातज पांडुरोगके लक्षण ॥

वातज पांडुरोगमें त्वचा मूत्र तथा नेत्रादिकोंमें रूखापन कालापन तथा ललाई होतीहै औरकंप शरिरमें पीडा आनाह भ्रम तथा शूलादिक उत्पन्न होतेहैं कालापन और ललाई पांडु वर्ण को उल्लंघन नहीं करती क्योंकि सुश्रुतने कहाहै कि सब प्रकारके पांडुरोगोंमें पांडुता अधिक होतीहै इसलिये इसको पांडुरोग कहतेहैं ॥ १११ ॥

अथ पैत्तिकस्यलक्षणमाह ॥

पीतत्वङ्नखविण्मूत्रोदाहतृष्णाज्वरान्वितः । भिन्नविट्कोऽतिपीताभःपित्तपाण्ड्वामयेनरः ॥ भिन्नविट्कःसद्रवमलः ॥ ११२ ॥

पित्तज पांडुरोग का लक्षण ॥

पित्त के पांडुरोगों में त्वचा नख मल तथा मूत्र में पीलापन दाह तृषा ज्वर मलभेद और बहुत पीलापन यह लक्षण होते हैं ॥ ११२ ॥

अथ श्लैष्मिकस्यलक्षणमाह ॥

कफप्रसेकःश्वयथुःतन्द्रालस्यातिगौरवैः।पाण्डुरोगीकफात्शुक्लैस्त्वङ्मूत्रनयनाननैः॥ अत्रोपलक्षणेनतृतीया ॥ ११३ ॥

कफके पांडु रोग के लक्षण ॥

कफ के पांडुरोग में मुखसे कफ निकलना सूजन तन्द्रा आलस्य शरीर में बहुत भारीपन और त्वचा मूत्र नेत्र तथा मुखमें श्वेतता यह लक्षण होते हैं ॥ ११३ ॥

सान्निपातिकस्यलक्षणमाह ॥

सर्व्वान्नसेविनःसर्व्वेदुष्टादोषास्त्रिदोषजम् । त्रिदोषलिङ्गंकुर्व्वन्तिपाण्डुरोगंसुदुःसहम् ॥ ११४ ॥

सन्निपातज पांडुरोग के लक्षण ॥

पांडु रोगकारी सम्पूर्ण वस्तुओं के सेवन से दूषितहुए सम्पूर्ण दोष अत्यन्त दुस्सह सन्निपातज पांडु रोग को उत्पन्न करते हैं इसमें तीनों दोषों के लक्षण होते हैं ॥ ११४ ॥

अथमृज्जस्यसम्प्राप्तिमाह ॥

मृत्तिकादनशीलस्यकुप्यन्त्यन्यतमोमलः । कषायामारुतंपित्तंमूषरामधुराकफम् ॥ कोपयेन्मृद्रसादींश्चरौक्ष्याद्भुक्तंचरुक्षयेत् । पूरयत्यविपक्वैवस्रोतांसिनिरुणद्ध्यपि ॥ इन्द्रियाणांबलंहत्वातेजोवीर्य्यौजसीतथा । पाण्डुरोगंकरोत्याशुबलवर्णाग्निनाशनम् ॥ स्रोतांसिशिरामुखानि । तेजोदीप्तिः ॥ ओजःसर्व्वधातुरसः ॥ ११५ ॥

मिट्टी खानेसे हुए पांडुरोगकी संप्राप्ति ॥

मिट्टी खानेसे वात पित्त अथवा कफ कुपित होताहै अर्थात् कषैली मिट्टीसे बायु क्षारमिट्टीसे पित्त और मधुर मिट्टीसे कफ कुपित होता है मिट्टी रूखेपन से रसादिकोंको और भोजन कियेहुए पदार्थ को रूखा करती है और आप कच्चीही स्रोतोंको भरके रोकदेतीहै और इन्द्रियोंके बल तेज वीर्य्य तथा ओजको नष्टकरके शीघ्रही बल वर्ण तथा अग्नि के नाश करने वाले पांडु रोगको उत्पन्न करती है ११५

अथमृज्जस्यलक्षणमाह ॥

मृद्भक्षणाद्भवेत्पाण्डुस्तन्द्रालस्यनिपीड़ितः।सकासश्वासशूलार्त्तःसदारुचिसमन्वितः॥ शूनाक्षिकूटगण्डभ्रूःशूनपान्नाभिमेहनः । कृमिकोष्ठोऽतिसार्य्येतमलंसासृक्कफान्वितम् ॥ कृमिकोष्ठाउदराभ्यन्तरस्थकृमिर्भवेदित्यनेनसम्बध्यते । अतिसार्य्येतमलमितिकर्म्मकर्तृतत्कर्म्मवत्मन्तव्यम् ॥ तस्मिन्कर्म्मण्यर्थेऽत्रयत्प्रत्ययः ॥ ११६ ॥

मिट्टी खाने से हुए पांडुरोग के लक्षण ॥

मिट्टी खानेसे हुए पांडुरोग में तन्द्रा आलस्य खांसी श्वास शूल तथा सदैव अरुचि होती है और उदरमें कृमि होते हैं आंखों के पोटे गाल भृकुटी पर नाभि तथा लिंगमें सूजन होतीहै और कफ तथा रुधिर सहित दस्त आते हैं ॥ ११६

अथासाध्यस्यलक्षणमाह ॥

जरारोचकहल्लासछर्द्दितृष्णाक्लमान्वितः । पाण्डुरोगीत्रिभिर्द्दोषैस्त्याज्यःक्षीणोहतेन्द्रियः ॥ पाण्डुरोगश्चिरोत्पन्नःखरीभूतोनसिद्ध्यति । कालप्रकर्षाच्छूनाङ्गोयोवापीतानिपश्यति ॥ खरीभूतःअतिरूक्षितःसर्व्वधातुः । बद्धाल्पविट्सहरितंसकफंयोऽतिसार्य्यते ॥ दीनःश्वेदातिदिग्धाङ्गःच्छर्द्दिमूर्च्छातृषान्वितः । पाण्डुदन्तनखोयस्तुपाण्डुनेत्रश्चयोभवेत् ॥ पाण्डुसङ्घातदर्शीचपाण्डुरोगीविनश्यति । पाण्डुसङ्घातदर्शीपीतवर्णस्यराशिंपश्यति ॥ अन्तेषुशूनंपरिहीनमध्यंम्लानंतथान्तेषुचमध्यशूनम् । गुदेमुखेशेफसिमुष्कयोश्चशूनंप्रताम्यन्तमसंज्ञकल्पम् ॥ विवर्जयेत्पाण्डुकिनंयशोऽर्थीतथापिसारज्वरपीड़ितञ्च । अन्तेषुहस्तपादादिषु ॥ म्लानंक्षीणम् । प्रताम्यन्तम्ग्लानिंगच्छन्तम् ॥ असंज्ञकल्पंमृतसदृशम् ॥ ११७

असाध्य पांडुरोग के लक्षण ॥

ज्वर अरुचि मतली छर्द्दि तृषा तथा ग्लानि के होनेपर क्षीणता तथा इन्द्रियोंकी शक्ति के नष्टहोजानेपर और तीनों दोषों के होनेपर पांडुरोग असाध्य जानना चाहिये बहुत पुराने पांडुरोगमें धातुओं के अत्यन्त रूखे होजानेपर असाध्य जानना चाहिये थोड़े दिन से होनेवाले पांडुरोगमें जो सूजन उत्पन्न हो और रोगी को सम्पूर्ण बहतु पीलीदीखें तो असाध्य जानना चाहिये जिसपांडु रोगवाले का हरा कफ सहित बंधा हुआ थोड़ा २ मल निकले वह असाध्य है जो पांडुरोगी बहुत दीन स्वेद के द्वारा लिपेहुए से शरीर वाला और छर्द्दि मूर्च्छा तथा तृषा से व्याकुल होय वह असाध्य है जिस पांडुरोग वालेके दांतनख तथानेत्रपीले होजाय़ें और सबपदार्थ पीलेदीखें वहअसाध्यहै जिसपांडुरोग वाले के हाथ पैरों में सूजन होय शरीर का मध्यभाग क्षीण होजाय अथवा हाथ पैर क्षीण होयँ और मध्य में सूजन होय वह असाध्य है जिस पांडु रोग वाले के मुख लिंग गुदा तथा अंडकोशों में सूजन होय और ग्लानि बेहोशी अतीसार तथा ज्वर होय वह असाध्य है ॥ ११७ ॥

अथपाण्डुरोगभेदस्यकामलायानिदानपूर्व्विकांसम्प्राप्तिमाह ॥

पाण्डुरोगीतुयोऽत्यर्थंपित्तलानिनिषेवते । तस्यपित्तमसृङ्मांसंदग्ध्वारोगायकल्प्यते ॥ पित्तम्कर्तृदग्ध्वासन्दूष्यरोगायकामलारूपाय । पाण्डुरोगिणएवातिशयितपित्तलसेवयाकामलाभवतिनायंनियमः ॥ किन्तुकामलास्वतन्त्रापिभवति । यथाराजयक्ष्माकासादुपेक्षिताद्भवतिनायंनियमः ॥ किन्तुराजयक्ष्मास्वतन्त्रोपिभवति । तद्वदेव ॥ ११८ ॥

पांडुरोग का भेद कामला रोगकी निदान पूर्व्वक संप्राप्ति ॥

जिस पांडु रोग वाले को बहुत पित्त कारी बस्तुओं के सेवनसे बढ़ाहुआ पित्तरुधिर तथा मांसको दूषित करता है उसको कामला रोग उत्पन्न होता है पांडु रोग वाले कोही पित्तकारी बस्तुओंके से-

चनसे कामला रोग होता है यह नियम नहीं है किन्तु कामला अपने आपभीस्वतन्त्र होता है जैसे खांसी की उपेक्षा करने से राजयक्ष्मा होता है यह नियम नहीं है किन्तु राजयक्ष्मा स्वतन्त्र भी होता है उसी प्रकार यहां भी जानना चाहिये ॥ ११८ ॥

कामलायालक्षणमाह ॥

हारिद्रनेत्रःसुभृशंहारिद्रत्वङ्नखाननः । पीतरक्तसकृन्मूत्रोभेकवर्णोहतेन्द्रियः ॥ दाह्याविपाकदौर्बल्यसदनारुचिकर्षितः । हारिद्रंहरिद्रावर्णम् ॥ पीतरक्तशकृन्मूत्रः । पीतेरक्तेवासकृन्मूत्रेयस्यसः ॥ भेकवर्णःवृहद्भेकवर्णः ॥ ११९ ॥

कामला का लक्षण ॥

कामला में नेत्र त्वचा नख तथा मुखका हल्दी के समान अत्यन्त पीला होना मल मूत्र का पीत अथवा रक्त होना बड़े मेढक के समान वर्ण होजाना इन्द्रियों की शक्ति का नाश दाह भोजन कानपचना दुर्बलता शिथिलता और अरुचि यह लक्षण होते हैं ॥ ११९ ॥

तस्याभेदमाह ॥

कामलाबहुपित्तैषाकोष्ठशाखाश्रयामता । एकाकोष्ठाश्रया । अपराशाखाश्रया ॥१२०॥

कामला के भेद ॥

बहुत पित्तवाला यह कामलारोग एक कोष्ठाश्रय और दूसरा शाखाश्रय होताहै ॥ १२० ॥

तत्रकोष्ठाश्रयांकामलामाह ॥

कालान्तरात्खरीभूताकृच्छ्रास्यात्कुम्भकामला ॥ १२१ ॥

कोष्ठाश्रय कामलाका वर्णन ॥

बहुत कालका पुराना कामलारोग रूक्ष होकर कुंभकामला नाम कहाजाताहै यह कठिनता से साध्यहै ॥ १२१ ॥ कुम्भकामलीनामारिष्टलक्षणमाह ॥

छर्द्यरोचकहल्लासज्वरक्लमनिपीडितः।नश्यतिश्वासकासार्त्तोविड्भेदीकुम्भकामली १२२

कुंभ कामलाका अरिष्ट ॥

कुंभ कामलारोगवालेको जो छर्दि अरुचि मतली ज्वरग्लानि श्वास खांसी और मल भेदहोयतो वह नहीं जीताहै ॥ १२२ ॥

अथोभयोरपिकामलयोऽरिष्टलक्षणमाह ॥

कृष्णपीतसकृन्मूत्रोभृशंशूनश्चमानवः । सरक्ताक्षिमुखच्छर्दिविण्मूत्रोयश्चताम्यति ॥ दाहारुचितृषानाहतन्द्रामोहसमन्वितः।नष्टाग्निसंज्ञःक्षिप्रंहिकामलावान्विपद्यते १२३ ॥

दोनों कामलाओंके अरिष्ट ॥

जिस कामलावालेका मल मूत्र काला पीला अथवा लाल होय नेत्र मुख तथा बमन रक्त वर्ण होय और सूजन तथा मोहहोय वह असाध्यहै जिस कामलावालेको दाह अरुचि आनाह तन्द्रा मोह तथा मन्दाग्नि और बेहोशहोय वह नहीं जीताहै ॥ १२३ ॥

अथपाण्डुरोगस्यैवभेदंहलीमकञ्चाह ॥

यदातुपाण्डोर्वर्णःस्याद्धरितश्यावपीतकः । बलोत्साहक्षयस्तन्द्रामन्दाग्नित्वंमृदुज्व

रः ॥ स्त्रीष्वहर्षोऽङ्गमर्दश्चश्वासतृष्णारुचिभ्रमाः । हलीमकन्तदातस्यविद्यादनिलपित्ततः ॥ पाण्डोःपाण्डुरोगिणः ॥ १२४ ॥

पांडुरोगके भेद हलीमकका बर्णन ॥

जो पांडु रोगवालेका वर्ण हरा धुमेला तथा पीलाहोय बलतथा उत्साहका क्षयहोय और तन्द्रा मन्दाग्नि थोड़ाज्वर मैथुनमेंअनिच्छा शरीरमेंपीड़ा श्वास तृषा अरुचि तथा भ्रमहोयतो उसे हलीमक रोग जानना चाहिये यह बायु और पित्तसे उत्पन्न होताहै ॥ १२४ ॥

अथतस्यपाण्डुरोगचिकित्सामाह ॥

सप्तरात्रंगवांमूत्रैर्भावितञ्चायसोरजः। पाण्डुरोगप्रशान्त्यर्थम्पयसाप्रपिबेन्नरः॥ गोमूत्रसिद्धंमण्डूरचूर्णंसगुड़मश्नतः । पाण्डुरोगक्षयंयातिपंक्तिशूलञ्चदारुणम् ॥ अयोमलंसुसंतप्तंभूयोगोमूत्रसाधितम् । मधुसर्पियुतंलीढ्वापाण्डुरोगीसुखीभवेत्॥ १२५ ॥

पांडुरोगकी चिकित्सा ॥

लोहेकी भस्मको सातादिन गोमूत्रमें भावना देकर सेवन करनेसे पांडुरोगका नाश होता है गोमूत्र के द्वारा बना हुआ मंडूर गुड़के साथ खानेसे पांडु और भयंकर परिणाम शूलका नाश होताहै मंडूर को बारम्बार अग्निमें तपा तपा कर गोमूत्रमें बुझावे फिर इसके चूर्णको घी और सहत के साथ चाटनेसे पांडुरोगका नाश होताहै ॥ १२५ ॥

पुनर्नवात्रिवृत्व्योषंविड़ङ्गंदारुचित्रकम् । कुष्ठंहरिद्रात्रिफलादन्तीचव्यंकलिंगकम् ॥ कटुकापिप्पलीमूलंमुस्तंशृंगीचकारवी ॥ यवानीकट्फलंचेतिपृथक्पलमितंसमम् ॥ मण्डूरंद्विगुणंचूर्णाद्गोमूत्रेऽष्टगुणेपचेत् । गुड़ेनवटिकांकृत्वातक्रेणालोड्यतांपिवेत् ॥ पुनर्नवादिमण्डूरवटकोऽश्विविनिर्म्मितः । पाण्डुरोगंनिहन्त्याशुकामलाञ्चहलीमकम् ॥ श्वासंकासञ्चयक्ष्माणंज्वरंशोथंतथोदरम् । शूलंप्लीहानमाध्मानमर्शांसिग्रहणीकृमीन् ॥ वातरक्तञ्चकुष्ठञ्चसेवनान्नाशयेद्ध्रुवम्। अत्रपुनर्नवादिमण्डूरम् २४। प्रत्येकपल १। लोहकीटचूर्णपल ४८। गोमूत्रपल १९२। पुनर्नवादिमण्डूरः ॥ १२६ ॥

पुनर्नवा निसोत त्रिकटु बायविडंग देवदारु चीता कूट हल्दी दारुहल्दी त्रिफला दन्ती चव्य इन्द्रजव कुटकी पीपलामूल मोथा काकड़ासिंगी कालाजीरा अजवाइन और कायफल यहसब एक २ पल और इनसबके चूर्णका दूना अर्थात् ४८ पल मंडूर इनसबको १९२ पल गोमूत्र में पाककरके गुड़ डालकर वड़े बनावे फिर मट्ठेमें इस बड़ेको घोलकर पिये यह पुनर्नवादि मंडूर बटक अश्विनी कुमारने बनायाहै इसके द्वारा पांडुरोग कामला हलीमक श्वास खांसी यक्ष्मा ज्वर सूजन उदरशूल प्लीहा आध्मान बवासीर ग्रहणी कृमि बात रक्त औरकुष्ठका नाशहोता है इति पुनर्नवादि मंडूर १२६॥

त्र्यूषणंत्रिफलामुस्तंविड़ङ्गंचित्रकंतथा । एतानिनवभागानिनवभागाहतायसः ॥ एवमेकीकृतंचूर्णंनरोऽष्टादशरक्तिकम् । प्रलिह्यात्मधुसर्प्पिभ्यांपिवेत्तक्रेणवासह ॥ गोमूत्रेणपिवेद्वापिपाण्डुरोगंविनाशयेत् । शोथंहृद्रोगमुदरकृमिकुष्ठंभगन्दरम् ॥ नाशयेदग्निमान्द्यञ्चदुर्नामकमरोचकम् । आर्द्रकस्यरसेनापिलिह्यात्कफसमृद्धिमान् ॥ अत्र

नवायसलोहंनवरक्तिकापरिमितंभक्षणीयम्। यतःउक्तंरसप्रदीपे॥ गुञ्जामेकांसमारभ्य यावत्स्युर्नवरक्तिका। तावत्लोहंसमश्नीयात्यथादोषांनलंनरः॥ एवंसतिप्रथमदिने त्र्यूषणादिसहितंरक्तिकाद्वयमितंप्रतिदिनंरक्तिकाद्वयंद्वयंवर्द्धयेत्। यावत्त्र्यूषणादिसहि तादशरक्तिकास्युः॥ ततस्ताःप्रतिदिनंखादेत्। इतिनवायसंचूर्णम्॥ १२७॥

त्रिकटु त्रिफला मोथा बायबिडंग तथा चीता यहसब एक २ भाग और लोहेकी भस्म ६ भा० इनसब औषधियोंको एकमें मिलाकर घी और सहतके साथ १८ रत्तीचाटे अथवा मट्ठे या गोमूत्रके साथ पिये इस्से पांडु सूजन हृदयकेरोग उदर कृमि कुष्ठ भगन्दर मन्दाग्नि बवासीर तथा अरुचिका नाशहोताहै जिसके कफ अधिकहोय वहअदरकके रसके साथ इसकोचाटे यहांलोहा६रत्ती भर खाना चाहिये क्योंकि रस प्रदीपमें कहागयाहै कि दोष और अग्निके अनुसार एकरत्तीसे लेकर ६ रत्तीतक लोहा खाना चाहिये इसीसे पहले दिन त्रिकटु आदि सहित लोहा दोरत्तीखाय फिर प्रतिदिन दो २ रत्ती बढ़ाकर१८ रत्ती तक होजानेपर प्रतिदिन इतना २ ही सेवन करेइ ति नवायस चूर्ण॥ १२७॥

अथकामलाचिकित्सा॥

त्रिफलायागुडूच्यावादार्व्यामरिचकस्यवा। प्रातर्माक्षिकसंयुक्तःशीतलःकामलापहः॥ अञ्जनेकामलार्त्तानांद्रोणपुष्पीरसोहितः। गुडूचीपत्रकल्कंवापिवेत्तक्रेणकामली॥ धात्री लोहरजोव्योषनिशाक्षौद्राज्यशर्कराः। लीढानिवारयत्याशुकामलामुद्धतामपि॥ कुम्भा ख्यकामलायांतुहितःकामलिकोविधिः। गोमूत्रेणपिबेत्कुम्भकामलावान्शिलाजतुम्॥ दग्ध्वाक्षकाष्ठैर्मलमायसन्तुगोमूत्रनिर्व्वापितमष्टवारान्। विचूर्ण्यलीढंमधुनाचिरेणकु म्भाह्वयंपाण्डुगदंनिहन्ति॥ अपहरतिकामलार्तिनस्येनकुमारिकाजलंसद्यः॥ १२८॥

कामला की चिकित्सा॥

त्रिफला गिलोय दारुहल्दी अथवा नींब के शीतल काढ़े में सहत डालकर प्रातःकाल पीनेसे कामला का नाशहोता है गूमाके रसका अंजन लगाना कामला वालोंको हितकारी है गिलोय के पत्तोंको पीसकर मट्ठेके साथपीनेसे कामला का नाशहोता है आंवला लोहचूर्ण त्रिकटु हल्दी सहत घी और शक्कर इनसबको मिलाकर चाटने से बहुत बढ़ेहुए भी कामला रोगका नाशहोता है कुम्भ कामलामें भी कामला केही समान चिकित्सा करनी चाहिये शिलाजीत को गोमूत्र के साथ पीनेसे कुम्भ कामला का नाशहोता है॥ १२८॥

अथहलीकमचिकित्सा॥

मारितमायसञ्चूर्णंमुस्ताचूर्णेनसंयुतम्। खदिरस्यकषायेणपिबेद्दन्तुंहलीमकम्॥ शितातिलाबलायष्टीत्रिफलारजनीयुगैः। लोहंलिह्यात्समध्वाज्यंहलीमकनिवृत्तये १२९

हलीमककी चिकित्सा॥

लोहेकी भस्म और मोथे के चूर्णको कत्थे के काढ़ेके साथ पीनेसे हलीमक का नाशहोता है शक्कर तिल बरियारा मुलहठी त्रिफला हल्दी और दारुहल्दी के साथ लोहेको सहत और घी मिला कर चाटने से हलीमक का नाशहोता है॥ १२९॥

अमृतलतारसकल्कंप्रसाधितंतुरगविद्विषः सर्पिः । क्षीरंचतुर्गुणमेतद्धितरेचहलीम कार्त्तेभ्यः ॥ अमृतलताद्यंघृतम् ॥ १३० ॥

गिलोय के रस और कल्क के द्वारा भैंसके घीको भैंस के चौगुने दूध के साथ पाककरके हलीमक रोगमें देना चाहिये इति अमृतलतादिघृत ॥ १३० ॥

मधुरैरन्नपानैस्तंवातपित्तहरैर्हरेत ।कामलापाण्डुरोगोक्तांक्रियांचात्रोपयोजयेत् १३१

मधुर तथा वात पित्त नाशक अन्नपान के द्वारा और पांडु रोग तथा कामला में कहीहुई चिकित्सा के द्वारा हलीमक को दूरकरे ॥ १३१ ॥

अथसामान्यतःपाण्डुरोगकामलाहलीमकचिकित्सा ॥

फलत्रिकामृतावासातिक्ताभूनिम्बनिम्बजःक्वाथः । क्षौद्रयुतोऽयंहन्याद्धलीमकंपाण्डु कामलारोगम् ॥ १३२ ॥

पांडु कामला और हलीमक की सामान्य चिकित्सा ॥

त्रिफला गिलोय बांसा कुटकी चिरायता और नींब इनके क्वाथ में सहत डालकर पीनेसे हलीमक पांडु और कामला का नाशहोता है ॥ १३२ ॥

त्र्यूषणंत्रिफलामुस्ताविडङ्गंचव्यचित्रकम् । दार्वीत्वङ्माक्षिकोधातुग्रन्थिकोदेवदारु च ॥ एषांद्विपलिकान्भागान्कृत्वाचूर्णंपृथक्पृथक् । मण्डूरचूर्णंद्विगुणंशुद्धंचाञ्जनसन्निभम् ॥ मूत्रेचाष्टगुणेपक्त्वातस्मिन्तत्प्रक्षिपेन्नरः । उदुम्बरसमाकारान्वटकान्स्तान् यथाग्निच ॥ उपयुञ्जीततक्रेणजीर्णेसात्म्यञ्चभोजनम् । मण्डूरवटिकाश्चेषाप्राणदाः पाण्डुरोगिणाम् ॥ कुष्ठानिजठरंशोथमुरुस्तम्भंकफामयान् । अर्शांसिकामलामेहंप्लीहा नंशमयन्तिच ॥ त्र्यूषणादिमण्डूरवटिका ॥ १३३ ॥

त्रिकटु त्रिफला मोथा बाय बिड़ंग चव्य चीता दारुहल्दी दालचीनी सोनामक्खी पीपलामूल औरदेवदारु इनसबको दो दोपल लेकर पृथक् २ चूर्णकरै और इनसबके दूने अञ्जन के समान पिसे हुए मंडूर के चूर्णको अठगुने गोमूत्र में पाककरके ऊपर कहेहुए चूर्णोंको गेरे फिर गूलर के समान बड़े बनाकर मट्ठेके साथ अपनी अग्नि के अनुसार सेवनकरे और पचजानेपर सात्म्य भोजन करे यह पांडुरोग वालोंको प्राणदायक है और कुष्ठ उदर सूज़न जंघाओं का जकड़ना कफरोग बवासीर कामला प्रमेह तथा प्लीहा इनसबको नाशकरे है इति त्र्यूषणादि मंडूर बटिका ॥ १३३ ॥

किराततिक्तासुरदारुदार्व्वीमुस्तागुडूचीकटुकापटोलम् ।दुरालभापर्पटकंसनिम्बंकटुत्रिकंवह्निफलत्रिकञ्च ॥ फलंविडङ्गस्यसमांशिकानिसर्वैःसमंचूर्णमथायसश्च। सर्पिर्मधुभ्यांवटिकाविधेयातक्रानुपानात्भिषजाप्रयोज्या ॥ निहन्तिपाण्डुञ्चहलीमकञ्चशोथं प्रमेहंग्रहणीरुजञ्च। श्वासञ्चकासञ्चसरक्तपित्तमर्शांस्यथोवाग्ग्रहमामवातम् ॥व्रणाञ्चगुल्मान्कफविद्रधिञ्चचित्रञ्चकुष्ठञ्चततःप्रयोगात् । इत्यष्टादशांगलोहम् १३४॥

चिरायता देवदारु दारुहल्दी मोथा गिलोय कुटकी पर्वल जवासा पित्तपापड़ा नींब त्रिकटु चीता त्रिफलातथा बायविडंग यहसब समभाग और इन सबकी बराबर लोहेका चूर्ण मिलाकर घी तथा

सहत के साथ मोदक बनावे फिर मट्ठेके अनुपानसे सेवनकरे इस्से पांडु हलीमक सूजन प्रमेह ग्रहणी श्वास खांसी रक्त पित्त बवासीर बचनका रुकजाना आमवात घाव बायगोला कफ विद्रधि श्वित्र (श्वेतकुष्ठ) और कुष्ठका नाश होताहै इति अष्टादशांग लोह ॥ १३४ ॥

यवगोधूमशाल्यन्नैरसैर्ज्जाङ्गलजैर्हितैः। मुद्गाढकीमसूराद्यैरेषुभोजनमिष्यते ॥ एषु पाण्डुरोगकामलाहलीमकेषु १३५ ॥ इतिपाण्डुरोगकामलाहलीमकाधिकारः॥

पांडु कामला और हलीमकरोगमें जौ गेहूं शालिधानों के चावलोंकाभात जंगलीजीवोंके मांसकारस मूंग अरहड़ औरमसूरआदिक भोजनकेलियेदनेचाहिये १३५इति पांडुकामलाहलीमक रोगाधिकारः ॥

अथरक्तपित्ताधिकारः। तत्ररक्तपित्तस्यनिदानपूर्विकांसम्प्राप्तिमाह ॥

घर्म्मव्यायामशोकाध्वव्यवायैरतिसेवितैः। तीक्ष्णोष्णक्षारलवणैरम्लैःकटुभिरेवच॥ पित्तंविदग्धंस्वगुणैर्विदहत्याशुशोणितम्। तीक्ष्णंमरिचादि ॥ उष्णमग्नितापादिःक्षारो यवक्षारादिः। विदग्धंदूषितम्स्वगुणैःस्वकारणैः। गुणैस्तीक्ष्णादिभिः। गुणैरितिबहुत्वे नतीक्ष्णाम्ललवणकटूष्णघर्म्मादयोगृह्यन्तेविदहतिदूषयति ॥ १३६ ॥

रक्त पित्तका अधिकार॥रक्त पित्तकी निदान पूर्वकसंप्राप्ति ॥

धूप व्यायाम शोक मार्ग तथा मैथुनके अत्यन्त सेवनसे और मिर्चादि तीक्ष्ण जवाखारादिक्षार अग्नि संतापादि उष्णता नोन खटाई तथा कटुवस्तुओंके सेवनसे दूषितहुआ पित्ततीक्ष्णादिअपने गुणोंसे शीघ्रही रुधिरको दूषित करताहै ॥ १३६ ॥

अथ रक्तपित्तस्यसामान्यलक्षणमाह ॥

ततःप्रवर्त्ततेरक्तमूर्द्ध्वञ्चाधोद्विधापिवा। अत्ररक्तमित्युपलक्षणम्। तेनसंसृष्टंपित्तञ्च। अतएवरक्तञ्चपित्तञ्चरक्तपित्तमितिद्वन्द्वइतिसुश्रुतः। रक्तञ्चतत्पित्तंचेतिरक्तपित्तंरागप्राप्तं पित्तरक्तमित्युच्यतेरक्तपित्तंकर्म्मधारयश्च। रक्तपित्तमनीषिभिरितिउभयत्रापिनदोषःका रणत्रयात्कारणत्रयमाह । संयोगात्दूषणात्तत्तुसामान्यात्गन्धवर्णयोःरक्तस्यापिपित्त माख्यातं।मार्गानाह। ऊर्ध्वंनासाक्षिकर्णास्यैर्मेढ्रयोनिगुदैरधः । कुपितंरोमकूपैश्चसम स्तैस्तत्प्रवर्त्तते। कुपितंपित्तम् ॥ १३७ ॥

रक्त पित्तका सामान्य लक्षण ॥

ऊपर कहेहुये कारणोंसे कुपितहुआ रुधिर (यहाँ रुधिर उपलक्षण मात्रहै इस्से पित्तभी उसके साथ जानना चाहिये) ऊपरसे नीचेसे अथवा दोनों मार्गोंसे निकलताहै उनमें से ऊपर नासिका नेत्र कान तथा मुखके द्वारा और नीचे लिंगयोनि तथा गुदाकेद्वारा कुपित हुआ रक्त पित्त निकलताहै और संपूर्ण रोम कूपोंसे भी रक्त पित्त निकलता है ॥ १६७ ॥

पूर्व्वरूपमाह ॥

सदनंशीतकामित्वं कण्ठधूमायनंवमिः । लोहगन्धश्चनिश्वासो भवत्यस्मिन्भवि ष्यति ॥ १३८ ॥

रक्त पित्त का पूर्व्व रूप ॥

शिथिलता शीतकी इच्छा गलेसे धुआं निकलना छर्दि और श्वास में लोहकीसी गन्ध यह लक्षण रक्त पित्त होनेके पहले होतेहैं ॥ १३८ ॥

विशिष्टरूपमाह ॥

सान्द्रंसपाण्डुसस्नेहंपिच्छिलंचकफान्वितम् (वातिकमाह) श्यावारुणंसफेनञ्चतनु रूक्षञ्चवातिकम् (पैत्तिकमाह)रक्तपित्तंकषायाभंकृष्णगोमूत्रसन्निभम् । मेचकांगारधूमाभमञ्जनाभञ्चपैत्तिकम् ॥ मेचकम्चिक्कणंकृष्णवर्णं । अञ्जनंस्रोतोञ्जनंतदाभंसंसर्गविशेषेणमार्गभेदमाह । संसृष्टलिंगंसंसर्गाद्त्रिलिंगंसान्निपात्तिकम् । ऊर्ध्वगंकफसंसृष्टमधोगंमारुतानुगम् ॥ द्विमार्गंकफवाताभ्यामुभाभ्यांतत्प्रवर्त्तते ॥ १३९ ॥

रक्त पित्त के विशेषलक्षण ॥

कफज रक्त पित्त में गाढ़ा पांडु वर्ण स्नेहयुक्त और सचिक्कण रक्तनिकलताहै बातज रक्त पित्तमें धुमैला तथा रक्त बर्ण फेने समेत पतला और सूखा रक्त पित्त निकलताहै पित्तज रक्त पित्तमें कषाय के सदृश कृष्णबर्ण गोमूत्रके सदृश चिकने घरके धुयेंके समान अथवा अंजनके समानरक्त पित्त निकलताहै उपर कहेहुए दोदोषोंके लक्षणोंके मिलनेसे द्वन्द्वज और सबलक्षणोंके मिलनेसे सन्निपातज रक्त पित्त जानना चाहिये ऊपर गयाहुआ रक्त पित्त कफ युक्तनीचे गयाहुआरक्त पित्तबात युक्त और ऊपरतथा नीचे दोनों ओरसे गयाहुआ रक्त पित्त कफबात दोनोंसे मिलाहुआ जाननाचाहिये॥१३९॥

उपद्रवानाह ॥

दौर्बल्यंश्वासकासज्वरवमथुमदाःपाण्डुतादाहमूर्च्छा भुक्तेघोरोविदाहस्त्वधृतिरपि सदाहृद्यतुल्याचपीड़ा ॥ कृष्णाकोष्ठस्यभेदःशिरसिचतपनंपूयनिष्ठीवनञ्चद्वेषोभक्तेऽविपाकोविकृतिरपिभवेद्रक्तपित्तोपसर्गात् ॥ विकृतिःमांसप्रक्षालनाभतादिः ॥ १४० ॥

रक्त पित्त के उपद्रव ॥

दुर्बलता श्वास खांसी ज्वर छर्दिमद पांडुवर्ण दाहमूर्च्छा भोजनकी अत्यन्त कुपचताअधीरता हृदयमें बहुत पीड़ा तृषा मलभेद शिरमें सन्ताप पीपथूकना भोजनमें अरुचि भोजनका न पचना और रुधिर का मांसके धोवनके समान होना यह रक्त पित्तके उपद्रव हैं ॥ १४० ॥

साध्यत्वादिकमाह ।

एकदोषानुगंसाध्यंद्विदोषात्याप्यमुच्यते । यत्त्रिदोषमसाध्यंस्यान्मन्दाग्नेरतिवेगवत् ॥ ऊर्द्ध्वंसाध्यमधोयाप्यमसाध्यंयुगपद्गतम् । व्याधिभिःक्षीणदेहस्यवृद्धस्याऽनश्नतस्तुयत् ॥ १४१ ॥

रक्त पित्तकासाध्यासाध्यआदिका बर्णन ॥

एक दोषवाला रक्त पित्त साध्य दोदोषवाला याप्य औरतीन दोषवाला असाध्य होताहै मन्दाग्नि वालेका अधिकवेग युक्त रक्तपित्त असाध्य होताहै ऊपर गयाहुआ साध्य नीचे गयाहुआ याप्य और दोनों ओर गयाहुआ रक्त पित्त असाध्य होताहै रोगोंसे क्षीण शरीर वालेकावृद्धका और भोजननकरने वालेका रक्त पित्त असाध्य होता है ॥ १४१ ॥

अथ साध्यमाह ॥

एकमार्गंबलवतोनातिवेगंनवोत्थितम् । रक्तपित्तंसुखेकालेसाध्यंस्यान्निरुपद्रवम् ॥ सुखेकालेहिमशिशिरयोः ॥ १४२ ॥

साध्य रक्त पित्त के लक्षण ॥

एक मार्गमें गयाहुआ नवीन उपद्रव रहित और थोड़े वेगवाला रक्त पित्त बलवान् रोगीकाहेमन्त और शिशिर ऋतुमें साध्य होता है ॥ १४२ ॥

असाध्यमाह ॥

मांसप्रक्षालनाभंक्कथितमिवचयत्कर्दमाम्भोनिभंवा मेदःपूयास्त्रकल्पंयकृदिवयदिवा पक्कजम्बूफलाभम् । कृत्स्नंकृष्णंयच्चनीलंभृशमपिकुणपंयत्र चोक्ताविकारा स्तद्वर्ज्यंरक्तपित्तंसुरपतिधनुषायच्चतुल्यंविभाति ॥ उक्ताविकारादौर्बल्यादयः । सुरपतिधनुषातुल्य । नानावर्णम् । येनचोपहतोरक्तंरक्तपित्तेनमानवः । पश्येद्भृशंवियच्चापितदसाध्यमसंशयम् ॥ येनरक्तपित्तेनोपहतःमनुष्यःदृश्यघटपटादिकंरक्तंपश्यतिसनश्यतिवियच्चापिअदृश्यमपीत्यर्थः (अथारिष्टमाह) लोहितंछर्दयेद्यस्तुबहुशोलोहितेक्षणः । लोहितोद्गारदर्शीच मृयतेरक्तपैत्तिकः ॥ लोहितोद्गारदर्शीव्याधिमहिम्नोद्गारमपिलोहितंपश्यतीत्यर्थः॥१४३॥

असाध्य रक्त पित्त के लक्षण ॥

जोरक्त पित्त मांसके धोवनके काढ़ेके कीचड़से मिलेहुए जलके मेद तथा पीपके पक्कीजामुनके अथवा यकृतके समान होवे वह असाध्य है और जो रक्त पित्त काला नीला बहुत दुर्गन्धित ऊपर कहेहुए उपद्रवों से युक्त अथवा इन्द्र धनुष के समान अनेक रंग वाला होय वह असाध्य है जो रक्त पित्त वाला आकाश तथा सब दीखनेवाली बस्तुओंको लाल रंगका देखे वह निस्सन्देह असाध्य है जिस रक्त पित्त वाले को बहुत रुधिर की वमन होय और उद्गार लाल दखि और जिसके दोनों नेत्र लाल होजावें उसकी मृत्यु होती है ॥ १४३ ॥

अथ रक्तपित्तस्यचिकित्सा ॥

पित्तास्रंस्तम्भयेन्नादौप्रवृत्तंबलिनोयतः । हृत्पाण्डुग्रहणीरोगप्लीहगुल्मज्वरादिकृत्॥ शालिषष्टिकनीवारकोरदूषप्रसाधिकाः।श्यामाकाश्चप्रियंगुश्चभोजनंरक्तपित्तिनाम्॥प्रियंगुःकंगुः।मसूरमुद्गचणकाःसमकुष्ठाढकीफलाः।प्रशस्ताःसूपयूषार्थेकल्पितारक्तपित्तिनाम् ॥ दाड़िमामलकंविद्वानम्लार्थञ्चापिदापयेत्। पटोलनिम्बवेत्राग्रप्लक्षवेतसपल्लवाः ॥ शाकार्थे शाकसात्म्यानांतण्डुलीयादयोहिताः । पारावतान्कपोतांश्चलावाद्रक्ताक्षवर्त्तकान् ॥ शशान्कपिञ्जलानेणान्हरिणान्कालपुच्छकान्।रक्तपित्तहरान्विद्याद्रसास्तेषांप्रयोजयेत् ॥ ईषदम्लांश्चघृतभृष्टान्ससैन्धवान्। कफानुगेयूषशाकान्दद्याद्वातानुगेरसम् ॥ पथ्यंसतीनयूषेणससितैर्लाजशक्तुभिः ॥ १४४ ॥

रक्त पित्तकी चिकित्सा ॥

बलवान् रक्त पित्त वालेका पहले रुधिर बन्द नहीं करना चाहिये क्योंकि रुधिरके रोकनेसे हृदय

केरोग पांडुरोग ग्रहणी प्लीहा बायगोला और ज्वरादिक रोग उत्पन्न होतेहैं शालि धान्य साठी तिन्नी कोदों लालधान्य सामा और काकुन यह रक्त पित्तवालोंको भोजनके लिये हितकारी हैं मसूर मूंग चने मोठ और अरहड़ इनकी दालका यूष रक्त पित्तवालोंको देना चाहिये अनार और आमला खटाई के लिये देना चाहिये पर्वल नींब सरकंडेका अग्रभाग पकरिया बेंतकीपत्ती और चौराई आदिका शाक देना चाहिये श्वेत तथा पांडुवर्णके कबूतर लवा चकोर बटेर खरगोश श्वेततीतर कालाहिरन ताम्रवर्णका और कालीपूंछकाहिरन इन सबके मांसका रस रक्त पित्तमें हितकारीहै कफजरक्तपित्तमें कुछ खट्टे सेंधेनोन युक्त घीमें भूनकर यूष और शाकदेने चाहिये बातजरक्त पित्तमें मांसका रस हितहै मटर का यूष और शक्कर युक्त खीलोंके सत्तू पथ्यके लिये रक्तपित्तमें देनेचाहिये ॥ १४४ ॥

धान्याकधात्रीवासानांद्राक्षापर्पटयोर्हिमः । रक्तपित्तंज्वरंदाहंतृष्णाशोषञ्चनाशयेत् ॥ धान्यकादिर्हिमः ॥ १४५ ॥

धनियां आमला बांसा दाख और पित्तपापड़ा इनके द्वारा शीत कषाय(औषध बनाने के प्रकरणमें देखो)बनाकर पिये इससे रक्त पित्तज्वर दाह तृषा और शोषकानाशहोताहै इतिधान्यकादिहिम १४५ ॥

ह्रीवेरमुत्पलंधान्यंचन्दनंयष्टिकामृता । उशीरञ्चत्रिवृच्चैषांक्काथंसमधुशर्करम् ॥ पाययेत्तेनसद्योहिरक्तपित्तंप्रणश्यति । रक्तपित्तंजयत्युग्रंतृष्णांदाहंज्वरंतथा ॥ पद्मोत्पलानां किञ्जल्कःपृष्णिपर्णीप्रियंगुका । जलेसाध्यारसेतास्मिन्पेयास्यात्रक्तपित्तिनाम् ॥ वासापत्रसमुद्भूतो रसःसमधुशर्करः । क्काथोवाहरतेपित्तोरक्तपित्तंसुदारुणम् ॥ पिष्टानांवृषपत्राणांपुटपाकरसोहिमः । समधुर्हरतेरक्तपित्तंकासज्वरक्षयान् ॥ उत्पलंकुमुदंपद्मंकह्लारंलोहितोत्पलम् । मधुकञ्चेतिपित्तासृक्तृष्णाछर्दिहरोगणः ॥ वासायांविद्यमानायामाशायां जीवितस्यच । रक्तपित्तीक्षयीकासीकिमर्थमवसीदति ॥ आढ़रूषकमृद्वीकापथ्याक्काथः सशर्करः । क्षौद्राढ्यःसकलश्वासरक्तपित्तनिवर्हणः ॥ १४६ ॥

सुगन्धबाला नील कमल धनियां चन्दन मुलहठी गिलोय खस और निसोत इनके काढ़े में सहत और शक्कर डालकर पीनेसे रक्त पित्त तृषा दाह तथा ज्वर का नाशहोता है कमलकी केशर नीले कमलकी केशर पृष्णिपर्णी प्रियंगु (ककुनी) इन औषधियोंके काढ़ेसे पेया बनाकर रक्त पित्त वालोंको देना चाहिये और बांसेके पत्तोंके रस अथवा काढ़ेमें सहत और शक्कर डालकर पीनेसे अत्यन्त भयंकर रक्त पित्तका नाश होताहै बांसेके पत्तोंको पीसकर पुटपाक करके उसके शीतल रसमें सहत डाल कर पीनेसे रक्तपित्त ज्वर खांसी और क्षयकानाश होताहै उत्पल कुमुद पद्म कह्लार रक्तोत्पल यह पांचों प्रकारके कमल और मुलहठी इन औषधियोंके सेवनसे रक्तपित्त तृषा और छर्दिका नाशहोताहै जीवनकी आशाके होनेपर और बांसेके मिलनेपर रक्त पित्त क्षय और खांसीवालेको कोई भय नहींहै बाँसा दाख और हड़ इनके काढ़ेमें शक्कर और सहत डालकर पीनेसे खांसी श्वास और रक्तपित्तका नाश होताहै ॥ १४६ ॥

दूर्वासोत्पलकिञ्जल्कमञ्जिष्ठाशैलवालुका । शीताशीतमुशीरञ्चमुस्तंचन्दनपद्मकम् ॥ विपचेत्कार्षिकैरेतैराजंप्रस्थमितंघृतम् । तण्डुलानांजलंछागीक्षीरंदद्याच्चतुर्गु

णम् ॥ तत्पानंवमतोरक्तंनावनंनासिकागते। कर्णाभ्यांयस्यगच्छेत्तुतस्यकर्णौप्रपूरयेत ॥ चक्षुःस्नवतिरक्तञ्चेत्पूरयेत्तेनचक्षुषी। मेढ्रपायुप्रवृत्तेतुवस्तिकर्म्मसुयोजयेत् ॥ रोमकूप प्रवृत्तेतुतदभ्यङ्गंप्रयोजयेत्। सर्व्वेपुरक्तपित्तेषुतस्मात्श्रेष्ठमिदंघृतम् ॥ इतिदूर्व्वाद्यंघृतम् ॥ १४७ ॥

दूब कमलकी केशर मजीठ एलवालुक शक्कर सफेद चन्दन खस मोथा लालचन्दन और पद्माक यहसब एक २ तोला बकरीका घी १ प्रस्थ चावलोंका पानी ४ प्र० और बकरीका दूध ४ प्र० इन सबके द्वारा विधि पूर्व्वक घी बनाकर जो रोगीके मुखसे रुधिर गिरता होय तो पान करावे जो नासिका से रुधिर निकलता हो तो नासदेवे और कानोंसे रुधिर निकलताहो तो कानोंमेंभरे जो नेत्रोंसे रुधिर बहता हो तो नेत्रोंमें भरे जो लिंग तथा गुदासे रुधिर बहता होय तो इस घीसेवास्ति देवे और जो संपूर्ण रोम कूपोंसे रुधिर बहता होय तो इसको सब शरीरमें मर्दन करे सब प्रकार के रक्त पित्तोंमें यहघी बहुत श्रेष्ठहै इति दूर्बाद्य घृत ॥ १४७ ॥

मृद्वीकांचन्दनंलोध्रंप्रियंगुञ्चविचूर्णयेत्। चूर्णमेततपिवेत्क्षौद्रवासारससमन्वितम्॥ नासिकामुखपायुभ्योयोनिमेढ्रादिवेगिनम्। रक्तपित्तंस्नवद्धन्तिसिद्धएषप्रयोगराट् ॥ यच्च शस्त्रक्षतेनैवरक्तंगच्छतिवेगतः। तदप्येतेनचूर्णेनतिष्ठत्येवावचूर्णितम्॥ इक्षूणांमध्यकाण्डानिसकन्दंनीलमुत्पलम्। केशरंपुण्डरीकस्यमोचामधुकपद्मकैः॥ वटप्ररोहतुंगाश्च द्राक्षाखर्ज्जूरमेवच। एतानिसमभागानिकषायंसम्प्रकल्पयेत् ॥ उषितंमधुसंयुक्तंपाययेच्छर्कराान्वितम्। सप्रमेहंरक्तपित्तंक्षिप्रमेतन्नियच्छति ॥ द्राक्षयाफलिनीभिर्व्वाप्रियालमधुकेनवा। श्वदंष्ट्रयाशतावर्य्यारक्तजित्साधितंपयः ॥ पक्कोदुम्बरकाश्मर्य्याःपथ्याखर्ज्जूरगोस्तनाः। मधुनाघ्नन्तिसंलीढ़ारक्तपित्तंपृथक्पृथक् ॥ अत्रकाश्मर्य्याःफलमेवग्राह्यंफलसाहचर्य्यात्।अतिनिश्रुतरक्तोवाक्षौद्रयुक्तंपिवेदसृक्। सकृद्वाभक्षयेदाज्यमांसंवापित्तसंयुतम्॥नासाप्रवृत्तरुधिरंघृतभृष्टंश्लक्ष्णपिष्टमामलकम्। मेतुरिवतोयवेगंरुणद्धिमूर्ध्निप्रलेपेन ॥ घ्राणप्रवृत्तेजलमाशुपेयंसशर्करंनासिकयाचयोवा। द्राक्षारसंक्षीरघृतंपिवेद्वासशर्करञ्चेक्षुरसंहिताय ॥ नस्येदाड़िमपुष्पस्यरसोदूर्व्वाभवोऽपिवा। आम्रास्थिजःपलाण्डोर्वानासिकास्नावरक्तजित् ॥ १४८ ॥

दाख लालचन्दन लोध और प्रियंगु इन सब औषधियों को पीसकर सहत और बांसे के रस में मिलाकर पिये इस से मुख नासिका गुदा योनि तथा लिंग आदि से निकलता हुआ रुधिर बन्द होता है शस्त्र आदि के घाव से बेग पूर्व्वक बहताहुआ रुधिर इस चूर्ण के लगानेसे बंद होजाता है ईख के बीच की पोई जड़सहित नील कमल की केशर मोचरस मुलहठी पद्माक बर्गद की जटा दाख और खजूर इन सब औषधियों को सम भाग लेकर क्वाथ करे फिर बासी क्वाथमें सहत और शक्कर डालकर पीने से प्रमेह तथा रक्तपित्त का शीघ्र नाश होता है दाख मालकांगनी चिरौंजी मुलहठी भटकटैया अथवा सतावर के द्वारा क्षीर पाक करके पीने से रक्त पित्त का नाश होताहै पक्कागूलर गंभारिकाफल हड़ खजूर तथा दाख इनमेंसे किसीको पीसकर सहतके साथ चाटने से रक्तपित्त का

नाश होताहै जिसके बहुत रुधिर बहताहोय वह सहत डालकर बकरेका रुधिर पिये अथवा सहत युक्त मांस या यकृत एकबार खाय नासिकाके द्वारा रुधिरके बहनेपर आमलेको घी में भूनकर महीन पीसके शिरमें लेपकरनेसे जैसे बांधसे जल रुकजाताहै उसी प्रकार रुधिर बन्द होजाताहै नासिका के द्वारा रुधिर बहनेपर जल तथा शक्कर दूध तथा शक्कर मुनक्काका काढा तथा शक्कर दूधसे निकला हुआ घी तथा शकर अथवा ऊखका रस तथा शक्कर नासिकाके द्वारा पीना चाहिये अनार के फूल दूब आमकी बिजली अथवा प्याजके रसकी नास लेनेसे नासिकासे रुधिरका बहना बन्द होताहै १४८॥

पुराणंपीनमानीयकूष्माण्डस्यफलंबृहत्।तद्बीजाधारबीजत्वक्शिराशून्यंसमाचरेत्॥ततस्तस्यतुलांनीत्वापचेज्जलतुलाद्वये।तस्मिन्नीरेऽर्द्धशिष्टेतुयत्नतःशीतलीकृते॥तानिकूष्माण्डखण्डानिपीड्येत्दृढवाससा। यत्नतस्तज्जलंनीत्वापुनःपाकायधारयेत्॥कूष्माण्डंशोषयेद्घर्म्मेताम्रपात्रेततःक्षिपेत्॥क्षिप्त्वातत्रघृतंप्रस्थंकूष्माण्डंतेनभर्ज्जयेत्॥मधुवर्णंतदालोक्यतज्जलंतत्रनिक्षिपेत्। सितायाश्चतुलांतत्रक्षिप्त्वातल्लेहवत्पचेत्॥सुपक्केपिप्पलीशुण्ठीजीराणांद्विपलेपृथक्। पृथक्पलार्द्धंधान्याकंपत्रैलामरिचत्वचम् ॥ चूर्णमेषांक्षिपेत्तत्रघृतार्द्धंक्षौद्रमावपेत्। एतत्पलमितंखादेदथवाग्निबलंयथा॥ खण्डकूष्माण्डलेहोऽयं रक्तपित्तञ्चनाशयेत्। पित्तज्वरंतृषांदाहंप्रदरंकृशतांवमिम् ॥ कासंश्वासञ्चहृद्रोगंस्वरभेदंक्षतंक्षयम्।नाशयेत्येवव्रद्धिञ्चबृंहणोबलवर्द्धनः। इतिखण्डकूष्माण्डावलेहः १४९॥

पुराने बहुत बड़े मोटे कुंभडेको लाकर बीज बीजोंके रहनेके गूदे छिलके और नसोंको निकालकर चारसौ तोले लेले फिर उसको आठसौ तोले जलमें पाक करे फिर जलके आधे बाकी रहनेपर शीतल करके उस कुंभड़ेको मोटे कपड़ेमें निचोड़ले और धूपमें कुछ सुखाले इसके उपरान्त किसी तांबेके पात्रमें चौंसठ तोले घी डालकर कुंभड़ेको भूनेफिर कुंभड़ेका रंग सहतके समान देखकर उस कुंभड़े के निचोड़े हुये जलको भी उसमें डालदे और चारसौ तोले शक्कर डालकर अवलेहके समान पाककरे पाक होजानेपर पीपल सोंठ तथा जीरा इनका चूर्ण आठ २ तोले और धनियाँ तेजपात इलायची मिर्च तथा दालचीनी इनका चूर्ण दो २ तोले उसमें छोड़े और घीका आधा सहत मिलावै इसको एकपल अथवा अग्नि बलके अनुसार सेवन करनेसे रक्त पित्त पित्तज्वर तृषा दाह प्रदर कृशता छर्दि खांसी श्वास हृदयके रोग स्वर भेद क्षत क्षय तथा वृद्धिरोगका नाश होताहै और धातु तथा बलकी वृद्धि होतीहै इति खंडकूष्मांडावलेह ॥ १४९ ॥

पुराणंपीनमानीयंकूष्माण्डस्यफलंदृढम्। तद्बीजाधारबीजत्वक्शिराशून्यंसमाचरेत् ॥ ततोऽतिसूक्ष्मखण्डानिकृत्वातस्यतुलांपचेत् । गोदुग्धस्यतुलामध्येमन्देऽग्नौवापचेच्छनैः ॥ शर्करायास्तुलांसार्द्धंगोघृतंप्रस्थमात्रकम् । प्रस्थार्द्धंमाक्षिकञ्चापिकुडवंनारिकेरतः ॥ प्रियालंफलमज्जानंद्विपलंतिखुरीपलम् । क्षिपेदेकत्रविपचेल्लेहवत्साधुसाधयेत् ॥ भिषक्सुपक्कमालोक्यज्वलनादवतारयेत् । कोष्णेतत्रक्षिपेदेषांचूर्णंतानिवदाम्यहम् ॥ एकोऽक्षःशतपुष्पायाश्चथक्षीरोयवानिका । गोक्षुरःक्षुरकःपथ्याकपिकच्छुफलानिच ॥ समीत्वक्चसर्वेषा मक्षयुग्मंपृथक्पृथक् । धान्यकंपिप्पलीमुस्त मश्वगन्धाशतावरी ॥

तालमूलीनागबलावालकंपत्रकंशटी । जातीफलंलवंगञ्चसूक्ष्मैलावृहदेलिका ॥ शृंगाट कंपर्पटकंसर्व्वपलामितंपृथक् । चन्दननागरन्धात्रीफलञ्चापिकशेरुकम् ॥ प्रत्येकंपञ्च कर्षाणिचत्वार्य्येतानिनिःक्षिपेत् । पलद्वयमुशीरस्यमपाणस्योषणस्यच ॥ कूष्माण्डस्याव लेहोऽयंभक्षितःपलमात्रया । किंवायथावह्निबलंभुक्तारोगान्विनाशयेत् ॥ रक्तपित्तंशीत पित्तमम्लपित्तमरोचकम् । वह्निमान्द्यंसदाहञ्चतृष्णांप्रदरमेवच ॥ रक्तार्शोंऽपितथाछर्दि पाण्डुरोगञ्चकामलाम् । उपदंशंविसर्पञ्चजीर्णञ्चविषमंज्वरम् ॥ लेहोऽयंपरमोवृष्योवृं हणोबलवर्द्धनः ॥ स्थापनीयःप्रयत्नेनभाजनेमृण्मयेनवे ॥ इतिवृहत्कूष्माण्डावलेहः ॥ १५० ॥

पुराने मोटे और बहुत मजबूत पेठेको लेकर बीज बीजोंके रहनेका गूदा छिलका और नसें निकाल डाले फिर उसके बहुत छोटे २ चारसौ तोले टुकड़े ४०० तोलेगौके दूधमें मंदाग्निके द्वारा पाककरे इसके उपरान्त ६०० तोले शक्कर ६४ तोले गौका घी ३२ तोले सहत ३२ तो० गोला ८ तो० चिरौंजी तथा ४ तोले तवाखीर इनसब औषधियोंको इसमें डालकर अच्छेप्रकारसे पाक करे फिर परिपाक हुआ जानके उतारले और कुछ गरमी बाकी रहनेपर सोंफका चूर्ण १ तोले जवाखार अजवाइन गोखरू तालमखाना हड किंवांचके बीज तथा दालचीनी इन सबका चूर्ण दो २ तोले धनियां पीपलमोथा असगन्ध सतावर तालमूली गुलशकरी सुगन्ध- बाला तेजपात कचूर जायफल लौंग छोटीइलायची बडीइलायची सिंघाडा पित्तपापडा इनसब का चूर्ण एक २ पल चन्दन सोंठ आमला और कशेरू इनकाचूर्ण पांच २ तोले खस बकुची तथा मिर्च इनसबका चूर्ण दो २ पल इनसबचूर्णों को उसमें मिलावे इसकूष्माण्डावलेह को एकपल अथवा अग्नि बल के अनुसार सेवनकरने से रक्त पित्तशीतपित्त अम्ल पित्त अरुचि मन्दाग्नि दाह तृषा प्रदर खूनी बवासीर छर्दि पांडु कामला उपदंश (आतशक) वीसर्प जीर्णज्वर तथा विषम ज्वरों का नाशहोता है और वीर्य्य बल तथा धातुकी वृद्धि होती है इस औषधको यत्न पूर्वक मिट्टी के नवीन पात्रमें रक्खे इति वृहत्कूष्माण्डावलेह ॥ १५० ॥

कूष्माण्डकस्यस्वरसंपलानांशतमात्रया । रसतुल्यंगवांक्षीरंधात्रीचूर्णपलाष्टकम् ॥ मृद्वग्निनापचेत्तावद्यावद्भवतिपिण्डवत् । धात्रीतुल्यासितायोज्यापलार्द्धंलेहयेदनु ॥ खण्डकूष्माण्डकंह्येतत्भुक्तमभ्यासतोहरेत् । रक्तपित्तमम्लपित्तंदाहंतृष्णाञ्चकामलाम् ॥ इति खण्डकूष्माण्डकम् ॥ १५१ ॥

पेठेकारस ४०० तो० गौकादूध ४०० तो० और आमले का चूर्ण ३२ तो० इनसब औषधियों को मन्दाग्नि में पाककरे जब सबका पिंडसा होगया देखे तब ३२ तोले शक्कर मिलादे इसको दोतोले रोज सेवन करने से रक्त पित्त अम्ल पित्त दाह तृषा तथा कामला का नाशहोता है इति खंड कूष्माण्डक ॥ १५१ ॥

शतावरीचिछन्नरुहाद्वृषोमुण्डतिकाबलाः । तालमूलीचगायत्रीत्रिफलायास्त्वचस्त था ॥ भार्गीपुष्करमूलञ्चपृथक्पञ्चपलानिच । जलद्रोणेविपक्तव्यमष्टभागावशेषित म् ॥ दिव्यौषधिहतस्यापिमाक्षिकेणहतस्यवा । पलद्वादशकंदेयंरुक्मलोहस्य चूर्णितम् ॥ खण्डतुल्यंघृतंदेयंपलंषोडशकंबुधैः । पचेत्ताम्रमयेपात्रेगुडपाकोमतोयथा ॥ प्रस्थार्द्धम

धुनोदेयंशुभ्रास्मजतुकस्यच । शृङ्गीकृष्णाविडङ्गञ्चशुण्ठ्याजाजीपलंपलम् ॥ त्रिफला धान्यकंपत्रंकणामरिचकेशरम् । चूर्णंदत्वासुमथितंस्निग्धेभाण्डेनिधापयेत् ॥ यथाका लंप्रयुञ्जीतविड़ालपदमात्रकम् । गव्यक्षीरानुपानञ्चसेव्योमांसरसःपयः ॥ गुरुवृष्या न्नपानानिस्निग्धमांसादिबृंहणम् । रक्तपित्तंक्षयंकासंपाश्र्वशूलंविशेषतः ॥ वातरक्तंप्रमे हञ्चशीतपित्तंवमिंक्लमम् । श्वयथुंपाण्डुरोगञ्चकुष्ठंप्लीहादरंतथा ॥ आनाहंमूत्रसंस्राव मम्लपित्तंनिहन्तिच । चक्षुष्यंबृंहणंवृष्यंमङ्गल्यंप्रीतिवर्द्धनम् ॥ आरोग्यंपुत्रदंश्रेष्ठंकामा ग्निबलवर्द्धनम् । श्रीकरंलाघवञ्चैवखण्डखाद्यंप्रकीर्त्तितम् ॥ छागंपारावतंमांसंतित्तिरिः प्रकरःशशः । कुरंगःकृष्णसारश्चमांसमेषांप्रयोजयेत् ॥ नारिकेरपयःपानंसुनिषणकवा स्तुकम् । शुष्कमूलकजीवाख्यंपटोलंबृहतीफलम् ॥ वार्त्ताकंपक्वमाम्रञ्चखर्ज्जूरंस्वादु दाड़िमम् । ककारपूर्व्वकंयच्चमांसञ्चानूपसम्भवम् ॥ वर्ज्जनीयंविशेषेणखण्डखाद्यंसम श्नता । लोहान्तरवदत्रापिपुटनादिक्रियेष्यते ॥ नपुनर्माक्षिकेणैवशिलयैवहिमारणम् । भा र्गीवभनेठी । दिव्यौषधीमनःशिला । रुक्मलोहंगजवेलीइतिलोके । सुनिषणश्चतुःपत्री शाकविशेषः । जीवन्तीजीवइतिशाकविशेषः । ककारपूर्व्वककटुकःकालशाकंकूष्माण्डं कर्क्कटीकर्कोटककलिंगकर्कन्धुकरमर्द्दककरीरकतककशेरुकाञ्जिकइत्यादिवर्जनीयम् । इ तिखण्डखाद्यंलोहम् ॥ १५२ ॥

सतावर गिलोय बांसा मुंडी बरियारा तालमूली खैरकी छाल त्रिफलाकी छाल भारंगी तथा पुष्करमूल इनसब औषधियों को बीस २तोले लेकर १०२४ तोलेजलमें पकावे जब अष्टमांश बाकी रहैतब मैनशिल तथा सोना मक्खी के द्वारा माराहुआ रुक्म नाम लोहे का४=तोले चूर्ण इतनीही शक्कर तथा ६४ तोले घी डालकर तांबेके पात्रमें गुड़पाक की विधिसे पाककरे फिर सहत ३२ तोले बंशलोचन शिलाजीत काकड़ासिंघी पीपल बायबिड़ंग सोंठ तथा कालाजीरा यह सबचार ४ तोले त्रिफला धनियां तेजपात मिर्च तथा नागकेशर यह सबदो २ तोले इनसब औषधियोंका चूर्ण मिला य के खूब चलावे और किसी चिकने पात्रमें रखदे फिर १ तोला रोजखाय और गौकादूध मांसरस अथवा जलका अनुपानकरे इसका सेवन करने वाला भारी तथा वीर्य्यवर्द्धक और सचिक्कण तथा मांसादिक धातु वर्द्धक पदार्थ खाय इसके द्वारा रक्त पित्त क्षय खांसी पसलीकी पीड़ा बात रक्त प्र- मेह शीतपित्त छर्दि ग्लानि सूजन पांडु कुष्ठ प्लीहा उदर अफरा मूत्र बहना तथा अम्लपित्तका ना- शहोता है और यह नेत्रोंको हित धातुबर्द्धक वीर्यवर्द्धक मंगलकारी प्रीतिदायक आरोग्यकारी पुत्र- दायक कामाग्नि बलबर्द्धक शोभाकारी तथा शरीरका हलका करनेवाला होता है बकरा परेवा तीतर केकड़ा खरगोश लालहिरन तथा काला हिरन इनसबका मांस इस औषधके सेवन करनेवाले को खाना चाहिये नारियल का जलपीना चाहिये और चौपतिया बथुई सूखीमूली जीवन्ती परवल भटकटैयाकेफल बैंगन पक्काआम खजूर तथा मीठाअनार खानाचाहिये इसऔषधका सेवनकरने- वाला कटु कालशाक कूष्मांड ककड़ी कर्कोटक कलिंग (तरबूज) कर्कन्धु (बेर) कमरख करीलक- तक कशेरूऔर कांजीआदिक ककारादिशब्द तथा अनूप देशके जीवोंकामांस त्यागकरदे अन्यलोहोंके

समान इसमेंभी पुटपाक आदिक क्रियाकरे परन्तुकेवल मैनशिल तथा सोनामक्खीकेहीद्वारा मारना उचित नहींहै ॥ इतिखंडखाद्यलोह ॥ १५२ ॥

शतावरीमूलकल्कंकल्कात्क्षीरंचतुर्गुणम् । क्षीरतुल्यंघृतंगव्यंसितयाकल्कतुल्यया ॥ घृतशेषंपचेत्तन्तुपलार्द्धंलेहयेत्सदा । रक्तपित्तंह्यम्लपित्तंक्षयंश्वासञ्चनाशयेत् ॥ शतावरीपाकः । इतिरक्तपित्ताधिकारः ॥ १५३ ॥

पीसीहुई सतावरकी जड़ इसका चौगुना दूध तथा घी और उसकीही बराबर शक्कर इन सब औषधियोंको पाककरे जब केवल घी बाकी रहजाय तब उतारले इसको दोतोले खानेसे रक्त पित्त अम्लपित्त क्षय तथा श्वासका नाश होताहै॥ इति सतावरीपाक॥ इति रक्तपित्ताधिकार ॥ १५३ ॥

अथाम्लपित्ताधिकारः । तत्राम्लपित्तस्यविप्रकृष्टंनिदानमाह ॥

विरुद्धदुष्टाम्लविदाहिपित्तप्रकोपिपानान्नभुजोविदग्धम् । पित्तंस्वहेतूपचितंपुरायत्तदम्लपित्तंप्रवदन्तिसन्तः ॥ दुष्टंव्यापन्नमन्नम् । पित्तप्रकोपीत्युक्तेऽपिअम्लविदाहीतिविशेषार्थम् । पित्तप्रकोपिपानंतक्रसुरादि । अम्लंमाषादि । स्वहेतूपचितंपुरावर्षास्वम्लविपाकैर्जलैरोषधीभिश्चताद्दशीभिरुपचितम् । सञ्चितंअम्लपित्तं । तदम्लपित्तंवदन्तिअम्लपित्ताख्यंरोगंवदन्ति ॥ १५४ ॥

अम्लपित्तका अधिकार अम्लपित्तके दूरवाले कारण ॥

विरुद्धवस्तु दूषितअन्न खट्टी तथा बिदाहीवस्तु मट्ठा तथा मद्य आदिक पित्तकारी पीनेकीवस्तु उर्द आदिक पित्तकारी भोजनकी वस्तु इनसबके सेवनकरनेवाले पुरुषोंका वर्षासम्बन्धी खट्टे विपाक वाले जलतथा औषधियोंकेद्वारा संचितपित्त कुपितहोताहै इसको वैद्यलोग अम्लपित्तरोगकहतेहैं१५४॥

अथाम्लपित्तस्यव्याधेर्लक्षणमाह ॥

अविपाकःक्लमोत्क्लेशःतिक्ताम्लोद्गारगौरवैः । हृत्कण्ठदाहाऽरुचिभिरम्लपित्तंवदेद्भिषक् ॥ अम्लपित्तंद्विधाप्रोक्तमधोगञ्चतथोर्ध्वगम् ॥ १५५ ॥

अम्लपित्तका लक्षण ॥

अन्नका न पचना ग्लानि मतली तिक्त तथा खट्टी डकार भारीपन हृदय तथा कंठमें दाह अरुचि यह लक्षण जिसके होंय उसको अम्लपित्त जानना चाहिये अम्लपित्त ऊर्ध्वगत और अधोगत भेदोंसे दो प्रकारकाहै ॥ १५५ ॥

तत्रोर्ध्वगस्यलक्षणमाह ॥

वांतंहरितपीतमनीलकृष्णमारक्तरक्ताभमतीवचाच्छम् । मत्स्योदकाभन्त्वपिपिच्छलंभंश्लेष्मानुजातंसहितंरसेन ॥आरक्तमुईषल्लोहितम् । रक्ताभंवा । अतीवचाच्छंनिर्मलम् । रसेनलवणकटुतिक्तरूपेण ॥ १५६ ॥

ऊर्ध्वगत अम्लपित्तके लक्षण ॥

ऊर्ध्वगत अम्लपित्तमें हरा पीला नीला काला कुछ लाल अथवा लाल निर्मल मछलीके धोवन के समान अत्यन्त सच्चिक्कण कफयुक्त और लवण कटु तथा तिक्त रसयुक्त वमन होताहै ॥ १५६ ॥

अधोगस्यलक्षणमाह ॥

तृट्दाहमूर्च्छाभ्रममोहकारिप्रयात्यधोवाविविधप्रकारम् । हृल्लासकोठानलसादहर्षस्वेदाङ्गपीतत्वकरंकदाचित् ॥ मूर्च्छासर्व्वदाज्ञानशून्यता । मोहोविपरीतंज्ञानम् अधोवेति वाशब्दऊर्ध्वगापेक्षया । विविधप्रकारम् । हरिद्रावर्णयोगात् । कदाचित्हृल्लासादिकरं चभवति ॥ १५७ ॥

अधोगत अम्लपित्तके लक्षण ॥

अधोगत अम्लपित्तमें तृषा दाह ज्ञानका न होना भ्रम तथा ज्ञानकी विपरीतताहोतीहै नीचेकेमार्ग से हल्दी आदिक अनेक रंगों समेत मल निकलताहै और कभी कभी मतली चकत्ते मन्दाग्नि रोमांच स्वेद तथा शरीरका पीलापन होताहै ॥ १५७ ॥

अम्लपित्तस्यावस्थाविशेषमाह ।

भुक्तेविदग्धेऽप्यथवाप्यभुक्तेकरोतितिक्ताम्लवमिंकदाचित् । उद्गारमेवंविधमेवकण्ठहृत्कुक्षिदाहंशिरसोरुजञ्च ॥ करचरणदाहमौष्ण्यंमहतीमरुचिंज्वरंचकफपित्तम् । जनयतिकण्डुमण्डलपिड़िकाशतनिचितरोगचयम् ॥ भुक्तेविदग्धेतिक्ताम्लवमिंकरोति । तथाउद्गारंएवंविधमेवतिक्ताम्लमेववामिंकरोति । तथाकण्ठहृत्कुक्षिदाहंशिरोरुजंवा॥ करोतितथाकरचरणदाहादिकंजनयति । तथाकंडूमण्डलपिड़िकाव्याप्तगात्रेरोगचयम्करोति । अन्नविपाकक्लमादिकंजनयति ॥ १५८ ॥

अम्लपित्तकी विशेष अवस्था ॥

कभीकभी भोजनके परिपाकके समयमें अथवा भोजनके बिनाकिये तिक्त तथा खट्टा वमन होताहै और इसी प्रकारकी डकारें आतीहैं कंठ हृदय कोख हाथ तथा पैरोंमें दाह होताहै शिरमें पीड़ा होती है हाथ पैर उष्ण रहतेहैं अरुचि होतीहै कफ पित्त जनित ज्वर होताहै खुजली मंडलाकार चकत्ते तथा फुंसियोंसे शरीर भरजाताहै और अन्नका अपरिपाक तथा मतली आदि रोग उत्पन्न होतेहैं ॥१५८॥

अथाम्लपित्तदोष संसर्गमाह ॥

सानिलंसानिलकफंसकफंतच्चलक्षयेत् । दोषलिंगेनमतिमान्भिषङ्मोहकरंहितम् ॥ ऊर्ध्वाधःप्रवृत्त्याच्छर्द्यतीसाराभ्यांतुल्यतयावैद्यभ्रान्तिकृत ॥ १५९ ॥

अम्लपित्तमें दोषोंकासंसर्ग ॥

ऊर्ध्वगत अम्लपित्तमें बमनहोनेसे छर्दिऔर अधोगत अम्लपित्तमें दस्तआनेसे अतीसारकी भ्रान्ति बैद्योंकोहोतीहै इसालिये बातयुक्त बातकफयुक्त अथवा केवलकफयुक्त यहपरीक्षा लक्षणोंसे करनी चाहिये ॥ १५९ ॥

दोषभेदेन लक्षणभेदमाह ॥

कम्पप्रलापमूर्च्छाझिचिमिचिमिगात्रावसादशूलानि । तमसोदर्शन विभ्रमप्रमोहहर्षास्तथानिलेनयुतेन ॥ कफनिष्ठीवनगौरवजड़तारुचिशीतसादवमिलेपाः । दहनबलहानिः कण्डूनिद्राचिह्नंकफानुगेभवति ॥ उभयमिदमेवचिह्नंमारुतकफसम्भवेऽम्लपित्तेस्यात् । चिमिचिमिझिनिझिनीतिलोकेहर्षोरोमाञ्चः ॥ १६० ॥

दोषभेदसे लक्षणोंकाभेद ॥

धातयुक्त अम्लपित्तमें कम्प प्रलाप मूर्च्छा शरीरमें झंझनाहट शिथिलता शूल अंधेरा मालूमहोना भ्रांति मोह तथारोमांचहोताहै कफयुक्त अम्लपित्तमें कफका थूकना भारीपन जड़ता अरुचिशीत शिथिलता छर्दि मुखमेंकफसा लिपाहोना मंदाग्नि निर्बलता खुजली तथा अधिक निद्राहोतीहै औरवातकफ युक्तअम्लपित्तमें वातऔरकफदोनोंके लक्षणमिलते हैं ॥ १६० ॥

तथाम्ल पित्तस्य साध्यत्वादिकमाह ॥

रोगोऽयमम्लपित्ताख्योयत्नात्संसाध्यतेनवः । चिरोत्थितोभवेद्याप्यःकृच्छ्रसाध्यःसकस्यचित् ॥ कस्यचित्हीनाहाराचारशीलस्य ॥ १६१ ॥

अम्लपित्तका साध्यासाध्यपन ॥

यहअम्लपित्त रोग यत्नसाध्यहोता है और बहुतदिनोंका पुराना अम्लपित्त याप्य अथवा किसी २ हीन आहारतथा आचारवालेका कष्टसाध्य होताहै ॥ १६१ ॥

अथ श्लेष्मपित्तस्यलक्षणमाह ॥

तमोमूर्च्छारुचिश्छर्दिरालस्यंचशिरोरुजा । प्रसेकोमुखमाधुर्य्यंश्लेष्मपित्तस्य लक्षणम् ॥ १६२ ॥

श्लेष्मपित्तके लक्षण ॥

अन्धकार मालूम होना मूर्च्छा अरुचि छर्दि आलस्य शिरमेंपीड़ा मुखमें जलभर आना और मुखका मीठा रहना यह श्लेष्मपित्तका लक्षणहै ॥ १६२ ॥

अथाम्लपित्तश्लेष्मपित्तयोश्चिकित्सा ॥

अम्लपित्तेतुवमनंपटोलारिष्टवासकैः । कारयेन्मदनैःक्षौद्रैःसैन्धवैश्चतथाभिषक् ॥ विरेचनंत्रिवृच्चूर्णैमधुधात्रीफलद्रवैः । ऊर्द्ध्वंगंवमनैर्विद्वानधोगंरेचनैर्हरेत् ॥ वर्ज्जिताःअम्लपित्तमितिशेषः । यवगोधूमविकृतीस्तीक्ष्णसंस्कारवत्तथास्वंलाजशक्तूनूवासितामधुयुतान्पिवेत् । निस्तुषयववृषधात्रीक्वथितंसलिलंत्रिगन्धमधुयुक्तम् ॥ द्रुतमपहरतिवमिंसञ्जनितामम्लपित्तेन । छिन्नोद्भवानिम्बपटोलपत्रंक्षौद्रान्वितंपीतमनेकरूपम् ॥ सुदारुणं हन्तितदम्लपित्तंयथाशनिस्तालतरुंप्रवृद्धम् । वासामृतापर्पटकनिम्बभूनिम्बमार्कवैः । त्रिफलाकुलकैःक्वाथःसक्षौद्रश्चाम्लपित्तहा ॥ १६३ ॥

अम्ल पित्त और श्लेष्म पित्तकी चिकित्सा ॥

अम्ल पित्त रोग में परवल नींब बांसा तथा मैन फल के काढ़े में सहत और सैंधानोन डालकर पिलाके वमन करावे निसोथ और आम लेके क्वाथ में सहत डालकर पिला के दस्त करावे ऊर्द्ध्व गत अम्ल पित्त में वमन और अधोगत अम्ल पित्त मेंविरेचन कराना चाहिये अम्ल पित्त में जौ और गेहूं के द्वारा तीक्षणता रहित भोजन बनाकर देवे अथवा दोष के अनुसार खीलों के सत्तू सहत और शक्कर के साथ पिये भूसी रहित जौ बांसा और आमले के काढ़े में दालचीनी इलायची तेज पात और सहत डालकर पीनेसे बहुत शीघ्र अम्ल पित्तसे होने वाली छर्दि का नाश होताहै गिलोय नींव तथा परवल के पत्तों के काढ़े में सहत डालकर पीने से जैसे कि बज्रके लगनेसे बड़े ताड़ के वृक्षका नाश होता है उसी प्रकार बड़े भयंकर अम्ल पित्त का नाश होताहै बांसा गिलोय पित्तपापड़ा

नींब चिरायता भांगरा त्रिफला और परवल इन के काढे में सहत डालकर पीने से अम्ल पित्त का नाश होताहै ॥ १६३ ॥

पाठापटोलयवचन्दनधान्यधात्री वासावरांगदलनागकणाभयाभिः । लेहःसिताब्जमधुभिःशिलपालपिण्डी हन्त्यम्लपित्तमरुचिज्वरदाहशोषान् ॥ हन्त्यम्लपित्तवमनारुचिदाहमोह खालित्यमेहशिशिरव्रणशुक्रदोषान् । भुक्त्वानरःसततमामलकीरसेनवृद्धोऽप्यनेनहिभवेत्तरुणोरिरंसुः ॥ १६४ ॥

पाठा परवल धवई चन्दन धनियां आमला बांसा तज तेजपात गजपीपल और हड़ इन सब औषधियों को पीसकर शक्कर कमल और सहत के साथ चाटने से अम्लपित्त अरुचि ज्वर दाह शोष छर्दि मोह गंजापन प्रमेह शीतल घाव और वीर्य्यके दोष यह सब रोग नष्ट होतेहैं इसको आमलेके केसरके साथचाटने से वृद्धभीतरुण केसमान मैथुनमें इच्छाकरने वालाहोताहै ॥ १६४ ॥

कूष्माण्डकरसोग्राह्यःपलानांशतमात्रकम् । रसतुल्यंगवांक्षीरंधात्रीचूर्णपलाष्टकम् ॥ धात्रीतुल्यासितायोज्यागव्यमाज्यंपलद्वयम् । मन्दाग्निनापचेत्सर्वंयावद्भवतिपिण्डितम् ॥पलार्द्धंपलमेकंवाप्रत्यहंभक्षयेदिदम् ।खण्डकूष्माण्डकंख्यातमम्लपित्तापहंपरम् ॥ इतिखण्डकूष्मांडकीऽवलेहः ॥ १६५ ॥

पेठेकारस औरगौकादूध चार२सौतोले आमलेकाचूर्ण औरशक्कर बत्तीस २ तोले गौकाघी ८ तोले इन सबको मंदाग्निमें पकावेजब पिण्डसा होजायतो उतारले चारतोले अथवादोतोले इसको नित्यखाने से अम्लपित्तका नाशहोताहै इतिखंडकूष्मांड का वलेह ॥ १६५ ॥

कुडवंनारिकेरस्यजलेमृद्वग्निनापचेत् । नारिकेरजलाभावेगव्येपयसितत्पचेत् ॥ धान्यकंपिप्पलीमुस्तंचातुर्जातम्विचूर्णितम् । प्रत्येकंटङ्कमात्रंतुशीतेतस्मिन्विनिःक्षिपेत् ॥ पलमात्रस्तदर्द्धोऽपिभक्षितःप्रत्यहंनरैः । नारिकेरकखण्डोऽयंपुंस्त्वनिद्रावलप्रदः ॥ अम्लपित्तंरक्तपित्तंशूलञ्चपरिणामजम् । क्षयंक्षपयतिक्षिप्रंशुष्कंदावानलोयथा ॥ पलमात्रगव्यघृतेननारिकेरस्यभर्ज्जनंकर्त्तव्यमितिसम्प्रदायः । इतिनारिकेरखण्डः ॥ १६६ ॥

१६ तोलेनारियलके गोलेको चारतोलेगौके घीमेंभूनकर नारियलकेजल अथवागौके दूधकेसाथ पाक करेफिर शीतलहोजाने परधनियां पीपल मोथा दालचीनी इलायची तेजपात औरनाग केशर इनसब काचार२मासेचूर्ण उसमेंछोड़े इसकोचार तोले अथवा दो तोले नित्यखानेसे पुरुषार्थ निद्रा तथा बल कीवृद्धि होतीहैऔर अम्लपित्तरक्तपित्त परिणामशूल तथा क्षयकानाशहोताहै इतिनारिकेरखण्ड १६६ ॥

प्रस्थन्तुनारिकेरस्यसूक्ष्मंदृषदिपेषितम् । निस्त्वचीकृतकूष्माण्डखण्डानामर्द्धमाढकम् ॥ तद्द्वयंभर्ज्जयेद्गव्येघृतेतुकुडवोन्मिते । ततस्तत्रक्षिपेच्छुद्धंगोदुग्धञ्चाढकोन्मितम् ॥ तत्रैवनिःक्षिपेद्धव्यांसितांप्रस्थद्वयोन्मिताम् । पचेत्सर्व्वाणिचैकत्रमृदुनावह्निनाभिषक् ॥ सुपक्वेशीतलेतत्रचूर्णीकृत्यविनिःक्षिपेत् । सूक्ष्मैलाधान्यकंधात्रीपर्पटंजलदंजलम् ॥ उशीरंचन्दनंद्राक्षांशृंगाटञ्चकशेरुकम् । त्वक्पत्रकेसरकर्पूरंकर्षयुग्मंपृथक्पृथक् ॥ सर्व्वंसंमिश्रयेद्रक्षेद्भाजनेमृण्मयेनवे । पलमात्रमिदंप्रातर्भक्षयेद्वायथानलम् ॥ एतन्निषेवितं

हन्तिरोगानितान्नसंशयः। अम्लपित्तंज्वरंपित्तंरक्तपित्तमरोचकम्॥ वातरक्तंतृषांदाहंपाण्डुरोगञ्चकामलाम्। क्षयंक्षपयतिक्षिप्रंशूलंचपरिणामजम्॥ नारिकेरस्यखण्डोऽयमश्विभ्यांभाषितःपुरा। वर्णदोबृंहणोवृष्यःपुंस्त्वनिद्राबलप्रदः॥इतिवृहन्नारिकेरखण्डः १६७॥

नारियल की पिसी हुई गिरी ६४ तोले और छिले हुए पेठेके टुकड़े १२६ तोले इन दोनों को १६ तोले गौके घीमें भूनकर शुद्ध गौका दूध २५६ तोले और मिश्री १२८ तोले इसमें मिलावे फिर सबको एक साथ मन्दाग्नि में पाककरे पाक के होजाने पर शीतल करके छोटी इलायची धनियां आमला पित्त पापड़ा मोथा सुगन्धबाला खस चन्दन दाख सिंघाड़ा कशेरू दालचीनी तेजपात और कपूर इन सबका चूर्ण दोदो तोले मिलावे फिर सबको एक में मिलाकर मृत्तिका के नवीन पात्र में रक्खे इसको ४ तोले अथवा अपनी अग्नि के अनुसार प्रातःकाल सेवन करने से अम्ल पित्त ज्वर पित्त रक्तपित्त अरुचि बातरक्त तृषा दाह पांडुरोग कामला क्षय तथा परिणामशूलका नाश होता है पूर्वकाल में अश्विनीकुमार ने इसको बनाया था यह बर्ण कोहित धातु तथा बीर्य्य बर्द्धक और पुरुषार्थ निद्रा तथा बलकारी होताहै इति वृहन्नारि केर खण्ड॥ १६७॥

अथ पित्तश्लेष्म चिकित्सा॥

अभयापिप्पलीद्राक्षासिताधान्ययवासकम्। मधुनाकण्ठदाहघ्नंपित्तश्लेष्महरंपरम्॥ पटोलयवधान्याकपिप्पल्यामलकानिच। एषांक्षौद्रयुतःक्काथःपित्तश्लेष्महरःपरः॥ पित्तश्लेष्मवमीकण्डूकोठविस्फोटदाहनुत्। दीपनःपाचनःक्काथःशृङ्गवेरपटोलयोः॥ पिप्पलीखण्डपथ्याभिस्तुल्याभिर्मोदकःकृतः। पित्तश्लेष्महरोभुक्तोवह्निमान्द्यञ्चनाशयेत्॥ इत्यम्लपित्तश्लेष्मपित्ताधिकारः॥ १६८॥

पित्त श्लेष्म की चिकित्सा॥

हड़ पीपल दाख मिश्री धनियां और जवासा इन सब को सहत के साथ चाटने से कंठदाह और पित्त श्लेष्मका नाश होताहै पवरल इन्द्रजौ धनियां पीपल और आमला इन के काढ़ेमें सहत डाल कर पीनेसे पित्त श्लेष्मका नाश होताहै सोंठऔर परवल का काढ़ा पित्त श्लेष्म छर्दि खुजली चकत्ते बिस्फोटक तथा दाहको नष्ट करताहै और दीपन तथा पाचन होताहै पीपल खांड़ और हड़ इनको समभाग लेकर मोदक बनावे इससे पित्त श्लेष्म और मंदाग्नि का नाशहोताहै इति अम्ल पित्त श्लेष्म पित्त धिकार॥ १६८॥

अथ राजयक्ष्माधिकारः तत्र राजयक्ष्मणोविप्रकृष्टंसन्निकृष्टञ्चनिदानमाह॥

वेगरोधात्क्षयाच्चैवसाहसाद्विषमाशनात्। त्रिदोषोजायतेयक्ष्मागदोहेतुचतुष्टयात्॥ वेगोऽत्रवातमूत्रपुरीषाणिनिगृह्णातियदानर इतिचरकवचनात्। क्षयात्क्षीयतेऽनेनेतिक्षयः। तेनातिव्यवायानशनेर्ष्यादयाधातुक्षयहेतवःक्षयशब्देनोच्यन्ते। साहसात्बलवतासमम्मल्लयुद्धादितः। विषमाशनात्बहुस्तोकमकालंवाभुक्तंतद्विषमाशनम्। तस्मात्त्रिदोषःसान्निपातिकः। हेतुचतुष्टयात्। अन्येऽपिहेतवोहेतुचतुष्टयएवान्तर्भवन्ति। यक्ष्मणःपर्य्यायाराजयक्ष्माक्षयशोषाः॥ १६९॥

राजयक्ष्माका अधिकार राजयक्ष्माके दूर वाले और समीपी कारण ॥

बात मूत्र तथा मल आदिक बेगका धारण मैथुन लंघन तथा ईर्षा आदिके द्वारा धातुक्षय बलवानके साथ मल्लयुद्ध आदिक साहसिक कार्य बहुत थोड़ा अथवा कुसमयका भोजन इनचारकारणों से त्रिदोषज राजयक्ष्मा नामरोग उत्पन्न होताहै इन्हीं चारकारणों में अन्यकारणभी जाननेचाहिये राजयक्ष्मा क्षय और शोष यह इसके नामहैं ॥ १६९ ॥

यक्ष्मादीनां निरुक्तिमाह ॥

वैद्योव्याधिमतांयस्मात् व्याधेर्यत्नेनयक्ष्यते । सयक्ष्माप्रोच्यतेलोके शब्दशास्त्रविशारदैः ॥ यक्ष्यतेपूज्यते, राज्ञश्चन्द्रमसो यस्मादभूदेष किलामयः । तस्मात्तंराजयक्ष्मेति प्रवदन्ति मनीषिणः । क्रियाक्षय करत्वात्तु क्षय इत्युच्युतेवुधैः ॥ संशोषणाद्रसादीनां शोषइत्यभिधीयते ॥१७० ॥ यक्ष्मा आदि नामोंकी निरुक्ति ॥

इस रोगके कारण रोगियोंके द्वारा वैद्य यत्नपूर्वक यक्षित (पूजित) होताहै इसलिये इसरोगको यक्ष्मा कहतेहैं यह रोग पहले राजा अर्थात् चन्द्रमाके हुआथा इस्से इसको राजयक्ष्मा कहतेहैं यहरोग क्रियाओंके क्षयकरनेसे क्षय कहाजाताहै और यह रोग शरीरके रसादिकोंको सुखाताहै इसीसे इसे शोष कहते हैं ॥ १७० ॥

तस्यसम्प्राप्तिमाह । कफप्रधानैर्दोषैस्तुरुद्धेषुरसवर्त्मसु । अति व्यवायिनो वापि क्षीणेरेतस्य नन्तराः ॥ क्षीयन्ते धातवःसर्वे ततःशुष्यति मानवः । कफप्रधानैर्दोषैः रसवर्त्मसुरुद्धेषु अनन्तरा सर्व्वे धातवःक्षीयन्ते । ततोमानवः शुष्यति । कारणभूतस्य रसस्यक्षये कार्य्याणां रक्तादीनामनुक्रमेण क्षीयमाणत्वात् । मार्गावरोधे रसक्षयहेतुमाह चरकः। रसःस्रोतःसुरुद्धेषुस्वस्थानस्थोविदह्यते। सऊर्द्ध्वंकासवेगेनवहुरूपःप्रवर्त्तते॥ स्वस्थानस्थः हृदयस्थः कासंविनापि रसक्षयोभवति । मार्गावरोधकुपितवातेनरसस्य शोषणात् । उक्तञ्च वायोर्द्धातुक्षयात् कोपात्मार्गस्यावरणेनच । अनुलोमक्षयंदृष्ट्वा प्रति लोमक्षयावहः ॥ अति व्यवायिनो वा रेतसिक्षीणे प्रतिलोमक्रमेणानन्तराःसर्व्वे धातवोरसपर्य्यन्ताःक्षीयन्ते । तद्यथा। शुक्रेक्षीणे मज्जाक्षीयते । मज्जनिक्षीणे अस्थि क्षीयते एवंपूर्वंपूर्वं क्षीयते,ननु कार्यस्यशुक्रस्य क्षयेकथं कारणभूतानां मज्जादीनांक्षयः उच्यते शुक्रक्षयाद्वायुः कुप्यति । सवायुःसान्निध्यात् क्रमेणमज्जादीन् सर्व्वान्धातून्शोषयति । ततस्तदनन्तरं मानवःशुष्यति ॥ १७१ ॥

राजयक्ष्माकी संप्राप्ति ॥

कफप्रधान दोषोंकेद्वारा रसके मार्गोंके रुकजाने पर संपूर्ण धातु क्षीण होजातीहैं इस्से शोषरोग उत्पन्न होताहै अथवा बहुत मैथुनसे बीर्य्यके नष्टहोजानेपर संपूर्णधातु क्षीणहोतीहैं तब यह रोगउत्पन्न होताहै मार्गोंके रुकनेसे रसोंका चय होताहै यह चरकने कहाहै जैसे स्रोतोंके रुकजानेपर हृदय में स्थित रस दूषित होकर खांसीके बेगसे ऊपर और बहुत प्रकारोंसे निकलताहै स्रोतोंके रुकनेपरखांसी के बिनाभी कुपितबायुकेद्वारा रस सूखजाताहै क्योंकि कहा हुआहै कि स्रोतोंके रुकजानेसे और धातु-

ओंके क्षयसे वायुकुपित होताहै अनुलोमक्षयको देखकर प्रतिलोम क्षय होताहै जैसे बहुत मैथुनकरने वाले के बीर्य्य के क्षीणहोजानेपर उलटे क्रमसे रस पर्य्यन्त सम्पूर्ण धातु एकके उपरान्त एक क्षीण होतीहैं जैसे बीर्य्यके क्षीणहोनेपर मज्जा क्षीणहोतीहै मज्जाके क्षीणहोनेपर हड्डीक्षीण होतीहै इत्यादि क्रमसे पूर्व पूर्वधातु क्षीणहोती है अब यह सन्देह होताहै कि कार्य्यरूप बीर्य्यके क्षीणहोनेपर कारण रूप मज्जादिक धातुक्यों क्षीणहोतीहैं इसका उत्तर यहहै कि बीर्य्यके क्षयहोनेसे बायु कुपित होतीहै और वह बायु निकट होनेके कारण मज्जाआदि संपूर्ण धातुओंको क्रमसे सुखातीहै तबमनुष्यको शोष रोग होताहै ॥ १७१ ॥

पूर्व्वरूप माह ॥

श्वासांगसादकफसंश्रवतालुशोषवम्यग्निसादमदपीनसकासनिद्राः । शोषेभविष्य तिभवन्तिसचापिजन्तुःशुक्लेक्षणोभवतिमांसपरोरिरंसुः ॥ स्वप्नेषुकाकशुकशल्लकिनील कण्ठगृध्रास्तथैवकपयःकृकलासकाश्च । तंवाहयन्तिसनदीर्विजलांश्चपश्येच्छुष्कांस्त रूनूपवनधूमदवार्दितांश्च ॥ १७२ ॥

राजयक्ष्माका पूर्व्वरूप ॥

राजयक्ष्मा होनेसे पहले श्वास शरीर में शिथिलता कफ थूकना तालुका सूखना छर्दि मन्दाग्नि मद पीनस खांसी निद्रा नेत्रोंकी श्वेतता मांस भोजन तथा मैथुन में इच्छा होतीहै और स्वप्नमें कौआ तोता सेई नीलकण्ठ गृद्ध बन्दर तथा गिर्गिटान यह इसको लेचलतेहैं और निर्ज्जल नदी सूखे तथा बायु धूम और दावाग्निसे व्याकुल वृक्ष उसको दिखाईपड़तेहैं यह लक्षण होतेहैं ॥१७२ ॥

पादयोःयक्ष्मिणो लक्षणमाह ॥

अंसपार्श्वाभितापश्चसन्तापःकरपादयोःज्वरःसर्व्वाङ्गिकश्चेतिलक्षणंराजयक्ष्मिणः॥ अंसयोःपार्श्वयोश्चाभितापःपीडाअत्रसकलधातुक्षयपूर्व्वकःसकलशरीरशोषोबोद्धव्यः । एतानित्रीणिलक्षणानिप्रायोभावित्वेनचरकेणोक्तानि ॥ सुश्रुतेनयक्ष्मणिषट्लक्षणान्यु क्तानिभक्तद्वेषोज्वरःश्वासःकासःशोणितदर्शनम् । स्वरभेदश्चजायन्तेषड्रूपेराजयक्ष्म णि ॥ उल्वणतयादोषाणांभेदाद्यक्ष्मणामेकादशलक्षणान्याह । स्वरभेदोऽनिलाच्छूलं सङ्कोचश्चांसपार्श्वयोः ॥ ज्वरोदाहोऽतिसारश्चपित्ताद्रक्तस्यचागमः । शिरसःपरिपूर्ण त्वमभक्तश्छन्दएवच ॥ कासःकण्ठस्यचध्वंसोविज्ञेयःकफकोपतः अनिलातउल्वणात। ए वंपित्तात्कफाच्च। यतआहसुश्रुतः। एकएवमतःशोषःसंन्निपातात्मकोगदः । उद्रेकात्तत्र लिङ्गानिदोषाणांनिपतन्तिहि ॥ १७३ ॥

राजयक्ष्माके लक्षण ॥

राजयक्ष्मारोगमें कन्धे तथा पसलियोंमें पीड़ा हाथ पैरोंमें जलन और सर्वांग में ज्वर होताहै यह तीन लक्षण बहुधा होतेहैं इसलिये चरकने कहेहैं और सुश्रुतमें छः प्रकारके लक्षण कहेहैं जैसे भोजन में अरुचि ज्वरश्वास खांसी रुधिर थूकना और स्वर भेद यह छः लक्षण राजयक्ष्मामें होतेहैं दोषोंकी अधिकतासे राजयक्ष्मा के ग्यारह ११ लक्षणहैं बातके अधिकहोनेमें स्वर भेद शूल कन्धे तथा पसलियों में संकोच होताहै पित्तकी अधिकतामें रुधिर थूकना ज्वर दाह तथा अतीसार होता है

और कफकी अधिकता में शिरका भारीपन भोजनमें अरुचि खांसी और कंठभेद होता है सुश्रुतने कहाहै कि यक्ष्मारोग त्रिदोषज एकही होताहै परन्तु वातादि दोषोंकी अधिकता से अलग २ लक्षण होते हैं॥ १७३॥

अथासाध्यंयक्ष्माणमाह ॥

एकादशभिरेभिर्वाषड्भिर्वापिसमन्वितम्। त्रिभिर्वापीडितंलिङ्गैर्ज्वरकासासृगामयैः॥ जह्याच्छोषार्द्दितंजन्तुमिच्छन्सुविमलंयशः॥ १७४॥

असाध्य राजयक्ष्माका लक्षण॥

ऊपर कहेहुए ग्यारह लक्षण अथवा सुश्रुतके कहेहुए छः लक्षण या ज्वर खांसी और रुधिर थूकना इन तीन लक्षणों से युक्त राजयक्ष्मा वालेको वैद्य त्याग करदे॥ १७४॥

तत्र विशेषमाह॥

सर्व्वैरर्द्धैस्त्रिभिर्व्वापिलिंगैर्मांसबलक्षये। युक्तोवर्ज्यश्चिकित्स्यस्तुसर्वरूपोऽप्यतोऽन्यथा॥ सर्वैर्लिंगैरेकादशभिःअर्द्धैःषड्भिस्त्रिभिर्ज्वरकासरुधिरवमनैः। अतोऽन्यथामांसबलेसतिसर्व्वरूपोऽपिनप्रत्याख्येयः किन्तुचिकित्स्यः। महाशनंक्षीयमाणमतीसारनिपीड़ितम्॥ शूनमुष्कोदरञ्चैवयक्ष्मिणंपरिवर्ज्जयेत्। महाशनंक्षीयमाणमित्येकमसाध्यंलक्षणम्॥ अतीसारनिपीड़ितमितिद्वितीयम्। यतउक्तम् मलायत्तंबलंपुंसांशुक्रायत्तञ्चजीवितम्। तस्मात्यत्नेनसंरक्षेत्यक्ष्मिणोमलरेतसी। शूनमुष्कोदरमितितृतीयम्। अथारिष्टमाह। शुक्लाक्षमन्नद्वेष्टारमूर्द्धश्वासनिपीड़ितम्॥ कृच्छ्रेणबहुमेहन्तंयक्ष्माहन्तीहमानवम्। मेहन्तंशुक्रंक्षरन्तम्। शुक्लाक्षत्वाद्येकैकशोऽरिष्टलक्षणमाह। अवधिमाह। परंदिनसहस्रन्तुयदिजीवतिमानवः। सुभिषग्भिरुपक्रान्तस्तरुणःशोषपीड़ितः॥ शोषपीड़ितोमानवश्चेत्तरुणोभवति। सुभिषग्भिरुपक्रान्तोभवति तदापरंदिनसहस्रंद्वितीयंदिनसहस्रंयदिजीवतितत्रजीवनविकल्पइत्यर्थः। एतेनशोषपीड़ितोमानवश्चेत्तरुणोभवतिसद्वैद्यैश्चिकित्सितोभवतितदाप्रथमंदिनसहस्रंजीवेदेवेत्युक्तम् १७५॥

असाध्यता में विशेषता॥

ऊपरकहेहुए ग्यारह छः अथवा तीन लक्षणों से युक्त यक्ष्मा वालेका मांस और बल क्षीण हो गयाहो उसकी चिकित्सा नहीं करनीचाहिये परन्तु मांस और बलके होनेपर जो सम्पूर्ण लक्षण होंय तौभी चिकित्सा करनी चाहिये जो यक्ष्मा वाला बहुत आहार करनेपरभी क्षीणहोता चलाजाय वह असाध्य है जो यक्ष्मा में अतीसार होय तो असाध्य समझना चाहिये क्योंकि कहागयाहै कि मल के आधीन बल और वीर्य्य के आधीन जीवन होताहै इसलिये यक्ष्मा वालेके मल और वीर्य्य की रक्षायत्न पूर्व्वक करनी चाहिये जो यक्ष्मा में अंडकोश तथा उदरमें सूजन होय तो असाध्य जानियेजिस यक्ष्मा वालेके दोनोंनेत्र श्वेत होजायँ अन्नमें अरुचिहोय ऊर्ध्व श्वासचलेऔरबड़े कष्टसे बहुतसा वीर्य्य गिरे वह नहीं जीता है जो राजयक्ष्मा वाला तरुणहोय अच्छे वैद्यों से चिकित्सा कियाजाय तो एकहजार दिन से अधिक जीता है इससे यह सिद्ध होताहै कि जो राजयक्ष्मा वाला तरुण होवे और अच्छे वैद्यों से चिकित्सा कियाजाय तो एकहज़ारदिन अवश्य जीता है॥ १७५॥

अथ चिकित्सामाह ॥

ज्वरानुबन्धरहितंबलवंतंक्रियासहम् । उपक्रमेदात्मवन्तं दीप्ताग्निमकृशंनरम् ॥ आत्मवन्तंयत्नवन्तंधृतिवन्तंवा ॥ १७६ ॥

चिकित्सा करनेके योग्य राजयक्ष्मा वाला ॥

जो राजयक्ष्मावाला ज्वर रहित बलवान क्रियाओंका सहनेवाला यत्नवान् दीप्ताग्नि और कृशता रहितहो वह चिकित्सा करने के योग्यहै ॥ १७६ ॥

अथ निदान विशेष शोषानाह ॥

व्यवायशोकवार्द्धक्यव्यायामाध्वप्रशोषितान् । व्रणोरःक्षतसंज्ञौचशोषिणोलक्षणैःशृणु॥ व्रणशोषीउरःक्षतशोषीच ॥ १७७ ॥

कारणोंकी विशेषतासे यक्ष्माकी विशेषता ॥

मैथुन शोक वृद्धावस्था व्यायाम मार्गगमन घाव और उरक्षत इनके द्वारा जो शोषरोग उत्पन्न होताहै उसकेलक्षण अलग२ आगेकहतेहैं ॥ १७७ ॥

तत्रव्यवायशोषिणोलक्षणमाह ॥

व्यवायशोषीशुक्रस्यक्षयलिंगैरुपद्रुतः । पाण्डुदेहोयथापूर्व्वंक्षीयन्तेचास्यधातवः ॥ शुक्रस्यक्षयलिंगैःसुश्रुतोक्तैः । तानियथाशुक्रक्षयेमेढ्रवृषणवेदनाव्यवायेचाशक्तिः । चिराद्वाप्रसेकःप्रसेकोऽल्पशुक्रदर्शनमिति । यथापूर्व्वंक्षीयन्तेचास्यधातवःप्रथमंशुक्रंक्षीयते पश्चाच्छुक्रक्षयजनितवायुनामज्जादयोऽपिधातवोयथापूर्व्वंक्षीयन्ते ॥ १७८ ॥

मैथुनकेशोष वालेकेलक्षण ॥

मैथुनकेद्वारा जिसको शोषहोताहै उसकेआगे लिखेहुए लक्षण होतेहैं जैसेलिंग तथा अंडकोशोंमें पीड़ा मैथुनमें अशक्त बहुतदेरमें थोड़ेसेवीर्य्यका गिरनाऔर शरीरका पीलापन यहलक्षण होतेहैं और पूर्व्व २ के क्रमसेधातु क्षीण होती हैं अर्थात्पहले वीर्य्य क्षीणहोताहै फिरवीर्य्यके क्षीणहोनेसे कुपित वायुके द्वारा मज्जाआदिकधातु पूर्व्वके क्रमसे क्षीण होतीहैं ॥ १७८ ॥

शोकशोषिणो लक्षणमाह ॥

प्रध्यानशीलःस्रस्तांगःशोकशोष्यपितादृशः । विनाशुक्रक्षयकृतैर्विकारैरुपलक्षितः ॥ प्रध्यानशीलस्याभावेनशोकोजनितस्तद्ध्यानपरःस्रस्तांगःशिथिलांगः । तादृशःव्यवायशोषिसदृशः । तेनशुक्रादिसर्व्वधातुक्षययुक्तोभवति । परंशुक्रक्षयकृतैर्विकारैर्मेढ्रवृषणवेदनादिभिर्वर्ज्जितोभवतिव्याधिस्वभावात् ॥ १७९ ॥

शोकके द्वारा होनेवाले शोषकेलक्षण ॥

शोकसेहोनेवाले शोषवाला इनआगे लिखेहुए लक्षणोंसे युक्तहोताहै जैसे जिसवस्तुकेलिये शोकहुआ होय उसका ध्यानकरना शरीरमें शिथिलता और बीर्य्यक्षयके लक्षणों से रहित मैथुनके शोषके लक्षण होते हैं ॥ १७९ ॥

जराशोषिणोलक्षणमाह ॥

जराशोषीकृशोमन्दवीर्य्यबुद्धिबलेन्द्रियः । कम्पनोरुचिमान्भिन्नकांस्यपात्रहतस्वरः॥

ष्ठीवतिश्लेष्मणाहीनंगौरवारुचिपीड़ितः । संप्रस्तुतास्यनासाक्षः शुष्करूक्षमलच्छविः॥ मन्दशब्दःस्वल्पार्थः ।शुक्ररूक्षमलच्छविःशुष्केरूक्षेमलच्छवीयस्यसःप्रसुप्तगात्रावयवः प्रसुप्तःस्पर्शाज्ञः ॥ १८० ॥

वृद्धावस्थासेहुए शोषकेलक्षण ॥

जिसको वृद्धावस्थासे शोषउत्पन्न होताहै उसकेआगे कहेहुए लक्षणहोते हैं जैसे कि कृशता और वीर्य बुद्धि बल तथा इन्द्रियों की शक्तिकी अल्पता कम्प अरुचि फूटे कांसे के समान स्वर कफ रहित थूकना शरीरमें भारीपन मुख नासिका तथा नेत्रोंसे जल बहना और मल तथा दीप्तिका सूखा तथा रूखा होना ॥ १८० ॥

अध्वशोषिणोलक्षणमाह ॥

अध्वप्रशोषीस्रस्तांगःसम्भृष्टपरुषच्छविः । सम्भृष्टपरुषच्छविःप्रसुप्तगात्रावयवः शुष्कक्लोमगलाननः । सम्भृष्टस्येवपरुषाछविर्य्यस्यसः । प्रसुप्तगात्रावयवःप्रसुप्तःस्प र्शाज्ञः ॥ १८१ ॥

मार्गसे हुए शोषवाले के लक्षण ॥

मार्गचलनेसे होनेवाले शोषरोगमें शरीर की शिथिलता जलेहुए के समान छबिका रूखापनहोना शरीर में स्पर्शका ज्ञान न रहना और क्लोम कंठ तथा मुखमें सूखापन यह सब लक्षण होते हैं१८१॥

अथ व्यायामशोषिणो लक्षणमाह ॥

व्यायामशोषीभूयिष्ठमेभिरेवसमन्वितः । लिंगैरुरःक्षतकृतैःसंयुक्तश्चक्षतंविना ॥ ए भिरेवस्रस्तांगत्वादिभिरध्वशोषिलक्षणैरेवभूयिष्ठम् अत्यर्थम् ॥ १८२ ॥

व्यायाम से हुए शोषके लक्षण ॥

व्यायाम से हुए शोषमें मार्ग गमन से हुए शोष के संपूर्ण लक्षण अधिकतासे होतेहैं और क्षतको छोड़कर उरक्षतके भी संपूर्ण लक्षण होतेहैं ॥ १८२ ॥

सनिदानंव्रणशोषमाह ॥

रक्तक्षयाद्वेदनाभिस्तथैवाहारयन्त्रणात्।व्रणितस्यभवेच्छोषोसचासाध्यतमःस्मृतः १८३॥

कारण सहित घावसे हुए शोष का बर्णन ॥

घाववाले को रुधिर के बहने से घाव की पीड़ासे और आहार के रोकने से शोष उत्पन्न होता है यह अत्यन्त असाध्यहै ॥ १८३ ॥

उरःक्षतनिदानमाह ॥

धनुषाह्यस्यतोऽत्यर्थंभारमुद्वहतेगुरुम् । युद्ध्यमानस्यबलिभिःपततोविषमोच्चतः ॥ वृषंहयंवाधावन्तंदम्यंचान्यंनिगृह्णतः। शिलाकाष्ठाश्मनिर्घातान्क्षिपतोनिघ्नतःपरान्॥ अधीयानस्यचात्युच्चैर्दूरंवाव्रजतोद्रुतम् । महानदींवातरतोहयैर्वासहधावतः ॥ सहसो त्पततोदूरंतूर्णञ्चापिप्रनृत्यतः । तथान्यैःकर्म्मभिःक्रूरैर्भृशमभ्याहतस्यवा ॥ स्त्रीषुचाति प्रसक्तस्यरूक्षाल्पप्रमिताशिनः । विक्षतेवक्षसिव्याधिर्बलवान्समुदीर्य्यते ॥ आयस्यतः आयासतः । आयासंकुर्व्वतःहयंवृषादिकम् । अन्यंगजोष्ट्रादिकमशिलादीर्घपाषाणःअ श्मप्रस्तरखण्डः । निर्घातोऽस्त्रविशेषःव्याधिःउरःक्षताख्यः १८४॥

उरक्षत का निदान ॥

धनुष के खींचने आदिका परिश्रम भारी बोझे का उठाना बलवान के साथ युद्ध विषम अथवा ऊंचे स्थान से गिरना दौड़ते हुए बलवान बैल घोड़ा हाथी तथा ऊंट आदि को रोकना बड़े पत्थर काठ पत्थर के टुकड़े अथवा निर्घात नाम अस्त्र को फेंककर शत्रुओं को मारना बहुत ऊंचे स्वर से पढ़ना बहुत जल्दी दूरतक दौड़ना बड़ी नदीमें तैरना घोड़ोंके साथ दौड़ना एकाएकी बहुत दूरतक उछलना बहुत जल्दी नाचना तथा अन्य क्रूर कर्मों के द्वारा बहुत चोटसे बहुत मैथुन से और रूखे अथवा थोड़े भोजन से घावयुक्त हृदय में बलवान् उरक्षत नामरोग उत्पन्न होता है ॥ १८४ ॥

अथ उरःक्षतस्यलक्षणमाह ॥

उरोविरुज्यतेऽत्यर्थंभिद्यतेऽथविभज्यते। शूलंभवतितत्पादंशुष्यत्यंगंप्रवेपते॥ प्रपीड्यतेततःपार्श्वेशुष्यत्यंगंप्रकम्पते। क्रमाद्वीर्य्यंबलंवर्णोरुचिरग्निश्चहीयते॥ ज्वरोव्यथामनोदैन्यंविड्भेदोऽग्निवधस्तथा। दुष्टश्यावःसदुर्गन्धःपीतोविग्रन्थितोबहु॥ कासमानस्यचाभीक्ष्णंकफःसासृक्प्रवर्त्तते। सक्षतःक्षीयतेऽत्यर्थंतथाशुक्रौजसोःक्षयात्॥ विरुज्यतेपीड्यते। भिद्यतेविदार्य्यतइति। विभज्यतेद्विधाक्रियतइव। सक्षतःसपुरुषःक्षतः। उरःक्षतवान्। अत्यर्थंक्षीयतेक्षीणोभवति॥ १८५॥

उरक्षत का लक्षण ॥

उरक्षत रोगमें छातीके भीतर टूटनेकीसी फटने कीसी तथा चीरनेकीसी पीड़ा होतीहै शूल पैरों का सूखना कम्प तथा पसलियोंमें पीड़ा होतीहै शरीर सूखताहै वीर्य्य बलवर्ण रुचि तथा अग्नि यह सबक्रम से क्षीण होतेहैं ज्वर पीड़ा मनमें ग्लानि मलभेद तथा मन्दाग्नि होतीहै खांसीके साथ दूषितधुमैला अथवा पीत वर्ण दुर्गन्धित गांठ युक्त रुधिर सहित बारम्बार बहुत सा कफ निकलताहै और वीर्य्य तथा ओजकेक्षयसे अत्यन्त क्षीणता होतीहै इसरोगका पूर्वरूप नहीं प्रकाशित होताहै १८५ ॥

अथोरःक्षतस्यविशिष्टंलक्षणमाह ॥

उरोरुक्शोणितच्छर्द्दिःकासोवैशेषिकःक्षते। क्षीणेसरक्तमूत्रत्वंपार्श्वपृष्ठकटीग्रहः॥ क्षते उरःक्षतवतिउरोरुक्शोणितच्छर्दिःकासोवैशेषिकःविशेषतःभवत्येवास्मिन्उरःक्षतवति सास्रकफशुक्रौजसांक्षयात्क्षीणेसरक्तमूत्रत्वंपार्श्वपृष्ठकटिग्रहश्चभवति॥ १८६॥

उरक्षतका विशेष लक्षण ॥

उरक्षतवालेके छातीमें बहुत पीड़ा रुधिरकी छर्दि तथा बहुत खांसी होतीहै और क्षीण होजाने पर रुधिर सहित मूत्र निकलना और पसली पीठ तथा कमरमें पीड़ा होतीहै ॥ १८६ ॥

निदानविशेषेणोरःक्षतलक्षणमाह ॥

वेगरोधात्क्षयाच्चैवकोष्ठात्पूतिमलात्तथा। क्षतोरस्कस्यान्नपाकेनिःश्वासोवातिपूतिकः॥ क्षयात्धातूक्षयहेतोरतिव्यवायोदितःकोष्ठात्प्रतिमलात्कोष्ठात्प्रतिमलवातेनप्रतिलोममलात्पूतिकः पूतिगन्धः॥ १८७॥

निदानोंकी विशेषतासे उरक्षतका लक्षण ॥

वेगोंका रोकना तथा धातुओंके क्षयहोनेसे बातादिक दोष उलटे होकर उरक्षतको उत्पन्न करतेहैं इसमें अन्नके परिपाकके समय अत्यन्त दुर्गन्धित श्वास आताहै ॥ १८७ ॥

उरःक्षतस्यसाध्ययाप्यासाध्यलक्षणमाह ॥

अल्पलिंगस्यदीप्ताग्नेःसाध्योवलवतोनवः।परिसंवत्सरोयाप्यःसर्व्वलिङ्गंतुवर्ज्जयेत् १८८

उरक्षतका साध्य याप्य और असाध्य लक्षण ॥

दीप्ताग्नि तथा बलवान मनुष्यका नवीनथोड़े लक्षणवाला उरक्षत साध्यहोताहै एकवर्षकापुराना याप्य होताहै और संपूर्ण लक्षणोंसे युक्त उरक्षत असाध्य होताहै ॥ १८८ ॥

अथ राजयक्ष्मचिकित्सा ॥

बलिनोबहुदोषस्यपञ्चकर्माणिकारयेत्। यक्ष्मिणःक्षीणदेहस्यतत्कृतंस्याद्विषोपमम् ॥ मलायत्तंवलंपुंसांशुक्रायत्तञ्चजीवितम्।तस्माद्यत्नेनसंरक्षेद्यक्ष्मिणोमलरेतसी ॥ १८९ ॥

राजयक्ष्माकी चिकित्सा ॥

बहुत दोष युक्त बलवान यक्ष्मावालेकी बमन विरेचनादि पंच कर्म्मोंके द्वारा चिकित्सा करनी चाहिये परन्तु क्षीण शरीरवाले यक्ष्मा रोगीको बमनादिक पांचों कर्म्म विषके समान अहित कारीहैं मनुष्योंका बल वीर्य्यके आधीन और जीवन मलके आधीन होताहै इसलिये यक्ष्मावालेके मल और बीर्य्यकी रक्षायत्न पूर्व्वक करनी चाहिये ॥ १८९ ॥

शालिषष्टिकगोधूमयवमुद्गादयोहिताः।मद्यानिजाङ्गलाःपक्षिमृगाःपथ्याविशुष्यताम् १९०

शालि साठी गेहूंजौ और मूंगादिक मद्य जंगलीपक्षी तथा मृगोंके मांस राजयक्ष्मा वालेकोहितहैं १९०॥

सपिप्पलीकंसयवंसकुलत्थंसनागरम्। दाडिमामलकोपेतंस्निग्धंमाजंरसंपिवेत् ॥ तेनपुष्टिर्निवर्त्तन्तेविकाराःपीनसादयः। द्रव्यतोद्विगुणंमांसंसर्व्वतोऽष्टगुणंजलम् ॥ पादस्थंसंस्कृतञ्चाज्येषडङ्गोयूषउच्यते॥ तथायवपल १। कुलत्थपल १। छागमांसपल ४।जलपल ४८।शेषपल १२।ततःपलमितेघृतेसंस्कारणीयम्। तत्रकर्षमितंसैन्धवंदेयम्। सौरभार्थंहिंगुदेयम्। पिप्पलीनागरश्चपृथङ्मासमितंकल्कीकृत्यदेयम्। षडङ्गयूषः ॥ १९१ ॥

जौ तथा कुलथी एक २ पल बकरेका मांस चारपल और जल ४८ पल इनसबको एकसाथ पाककरे जब १२ पल जल बाकीरहै तब १ पल घी डालकर उसका संस्कार करे और १ तोले सेंधानोन थोड़ीसी हींग और पीपल तथा सोंठ आमला और अनारकारस एक २ मासे मिलाकर इस मांसके रसको सेवन करे इस्से पुष्टता होती है और पीनसआदिक रोग नष्ट होते हैं इति षडंगयूष ॥ १९१ ॥

ककुभत्वक्नागवलावानरीवीजंविचूर्णितम्। पयसा पीतंमधुघृतयुक्तंसहितंयक्ष्मादिकासहरम् ॥ छागमांसंपयश्छागंछागंसर्पिःसनागरम्। छागोपसेवीशयनंछागमध्येतु यक्ष्मनुत् ॥ मधुताप्यविडङ्गाश्मजतुलोहघृताभयाः। घ्नन्तियक्ष्माणमत्युग्रंसेव्यमानाहिताशिनः ॥ ताप्यंसुवर्णमाक्षिकम् शर्करामधुसंयुक्तंनवनीतंलिहन्क्षयी। क्षीराशीलभते पुष्टिमतुल्येचाज्यमाक्षिके ॥ १९२ ॥

अर्जुनवृक्षकीछाल गुलशकरी और कवाँचके बीज इनके चूर्णको दूधकेसाथ पाक करके सहत घी और शक्कर मिलाकर खानेसे यक्ष्मा और खांसी आदि रोगोंका नाश होताहै बकरेका मांस बकरीका दूध सोंठ सहित बकरीका घी बकरों के साथ रहना और बकरों में सोना इनसबसे राजयक्ष्मा रोगका नाशहोता है सोनामक्खी बायबिडंग शिलाजीत लोहकी भस्म और हड़ इनसबको सहत और घी के साथ चाटने से और पथ्य भोजन करनेसे अत्यन्त उग्र राजयक्ष्माका नाश होताहै शक्कर और सहत के साथ मक्खन चाटकर दूधपीने से और समतासे रहित घी तथा सहतको चाटकर दूध पीनेसे राजयक्ष्मावालेको पुष्टता होती है ॥ १९२ ॥

सितोपलातुगाक्षीरीपिप्पलीवहुलात्वचः । अन्त्यादूर्द्ध्वंद्विगुणिताश्चूर्णितामधुसर्पिषा ॥ लेहयेद्राजरोगार्त्तंकासश्वासज्वरातुरम् । पार्श्वशूलिनमल्पाग्निसुप्तजिह्वंरुचिच्युतम् ॥ हस्तपादांगदाहेचज्वरेरक्तेतथोर्द्ध्वगे । सितोपलामिश्री । वहुलासूक्ष्मैला । इति सितोपलादिरवलेहः ॥ १९३ ॥

मिश्री १६ भा० वंशलोचन ८ भा० पीपल ४ भा० छोटी इलायची दोभा० और दालचीनी १ भा० इनसबको सहत और घीके साथ चाटनेसे राजयक्ष्मा खांसी श्वास क्षय पसली की पीड़ा मंदाग्नि जिह्वास्तंभ अरुचि हाथ पैर तथा शरीरका दाह ज्वर और ऊर्ध्वगत रक्त पित्तका नाश होताहै इति सितोपलादि अवलेह ॥ १९३ ॥

जातीफलंविड़ंगानिचित्रकंतगरंतिलाः । तालीसंचन्दनंशुण्ठीलवंगमुपकुञ्जिका ॥ कर्पूरश्चाभयाधात्रीमरिचंपिप्पलीतुगा । एषामक्षसमाभागाश्चातुर्जातकसंयुताः ॥ पलानिसप्तभृंगायाःसितासर्वसमामता । चूर्णमेतत्क्षयंकासंश्वासञ्चग्रहणीगदम् ॥ अरोचकंप्रतिश्यायंतथाचानलमन्दताम् । एतान्रोगान्निहन्त्येववृक्षमिन्द्राशनिर्यथा ॥ इतिजातीफलाद्यंचूर्णम् ॥ १९४ ॥

जायफल बायबिड़ंग चीता तगर तिल तालीस चन्दन सोंठ लौंग कालाजीरा कपूर हड़ आमला मिर्च पीपल बंशलोचन दालचीनी इलायची तेजपात और नागकेशर यहसब तोले२भर भांगरा ७ पल और सबके बराबर मिश्री इस चूर्ण के खानेसे क्षय खांसी श्वास ग्रहणी अरुचि पीनस और मन्दाग्निका नाश होताहै इति जाती फलादि चूर्ण ॥ १९४ ॥

बालरोगाधिकारोक्तंतैलंलाक्षादियोजयेत् । अभ्यंगेयक्ष्मिणोनित्यंवृद्धवैद्योविशेषतः १९५

बालरोगों के अधिकार में कहाहुआ लाक्षादि तैल यक्ष्मा वालेको वृद्ध वैद्योंके उपदेशसे नित्य लगाना चाहिये ॥ १९५ ॥

वासकस्यरसप्रस्थंमाचिकासितशर्कराः । पिप्पल्याद्विपलंतावत्सर्पिषश्चशनैःपचेत् ॥ तस्मिन्लेहत्वमायातेशीतेक्षौद्रपलाष्टकम् । दत्वावतारयेद्वैद्योलीढ़ालेहोऽयमुत्तमः ॥ हन्त्येवराजयक्ष्माणंकासंश्वासंचदारुणम् । पार्श्वशूलंचहृच्छूलंरक्तपित्तंज्वरंतथा ॥ वासावलेहः ॥ १९६ ॥

बांसे का रस तथा मिश्री दोनों चौंसठ २ तोले और पीपल तथा घी आठ २ तोले इनसबको धीरे २ पाककरे जब अवलेह बनजाय तब शीतलहोजानेपर बत्तीस तोले सहत डालकर चाटे इससे

राजयक्ष्मा खांसी श्वास पसली तथा हृदयकी पीड़ा रक्त पित्त और ज्वरका नाश होता है इति बांसा अवलेह ॥ १९६ ॥ अथ व्यवायादिहेतुकशोषचिकित्सा ॥

तत्रव्यवायशोषिणंक्षीणंरसमांसाज्यभोजनैः। सुकूलैर्मधुरैर्हृद्यैर्जीवनीयैरुपाचरेत् ॥ रसःमांसरसःसुकूलैर्हितैः ॥ १९७ ॥

मैथुनादिसे उत्पन्न राजयक्ष्माकी चिकित्सा ॥

मैथुनसे हुए राजयक्ष्मावालेकी चिकित्सा मांस रस घी मधुर हितकारी तथा हृदय को हितकारी भोजनोंसे और जीवनीय गणसे करनी चाहिये ॥ १९७ ॥

अथ शोकशोषचिकित्सा ॥

हर्षणैःश्वसनैःक्षीरैःस्निग्धैर्मधुरशीतलैः।दीपनैर्लघुभिश्चान्नैःशोषरोगमुपाहरेत् १९८॥

शोकसे हुए राजयक्ष्माकी चिकित्सा ।

हर्ष आश्वासवाक्य और दूध स्निग्ध मधुर शीतल हलकी तथा दीपन बस्तुओंकेद्वारा शोषसे हुए राजयक्ष्माकी चिकित्सा करनी चाहिये ॥ १९८ ॥

अथ व्यायामशोषचिकित्सा ॥

व्यायामशोषिणंस्निग्धैःक्षतक्षयहितैर्हिमैः।उपाचरेज्जीवनीयैर्विधिनाश्लेष्मिकेनतु १९९॥

व्यायामसे हुए राजयक्ष्माकी चिकित्सा ॥

स्निग्ध तथा शीतल बस्तुओंसे जीवनीय गणसे और क्षत क्षय तथा कफकी चिकित्सा की बिधिसे व्यायामसे होनेवाले राजयक्ष्माकी चिकित्सा करनी चाहिये ॥ १९९ ॥

अध्वशोषचिकित्सा ॥

आस्यासुखैर्दिवास्वप्नैःशीतैर्मधुरबृंहणैः। अन्नमांसरसाहारैरध्वशोषमुपाचरेत् २००॥

मार्गचलनेसे होनेवाले राजयक्ष्माकी चिकित्सा ॥

शीतल मधुर तथा धातुवर्द्धक अन्न तथा मांसके रसके भोजनसे सुखपूर्वक बैठानेसे और दिनमें सुलानेसे मार्ग चलनेसे होनेवाले राजयक्ष्मा की चिकित्साकरे ॥ २०० ॥

व्रणशोष चिकित्सा ॥

व्रणशोषंजयेत्स्निग्धैर्दीपनैःस्वादुशीतलैः।ईषदम्लैरनम्लैर्वायूषमांसरसादिभिः॥२०१॥

व्रणसे हुये राजयक्ष्माकी चिकित्सा ॥

स्निग्ध दीपन मधुर तथा शीतल बस्तुओंसे कुछ खट्टे अथवा खटाई रहित यूषोंसे और मांसके रसादिकोंसे घावसे होनेवाले राजयक्ष्माकी चिकित्साकरे ॥ २०१ ॥

अथोरःक्षत चिकित्सा ॥

बलाश्वगन्धाश्रीपर्णीबहुपुत्रीपुनर्नवा। पयसानित्यमभ्यस्ताःशमयन्तिक्षतक्षयम् ॥ श्रीपर्णीकम्भारि। बहुपुत्रीशतावरी। इतिबलादिचूर्णम् ॥ २०२ ॥

उरक्षतकी चिकित्सा ॥

बरियारा असगंध गंभारी सतावर और पुनर्नवा इनसबको दूधके साथ नित्य सेवन करने से उरक्षतका नाश होता है इति बलादि चूर्ण ॥ २०२ ॥

एलापत्रत्वचोध्वांक्षापिपल्यर्द्धपलंपृथक् । सितामधूकखर्ज्जूरमृद्वीकाश्चापलोन्मिताः॥ संचूर्ण्यमधुनायुक्तावटिकाःसम्प्रकल्पयेत्। अक्षमात्रांततश्चैकांभक्षयेत्तुदिनेदिने॥ क्षतंक्षयंज्वरंकासंश्वासंहिक्कांवमिंभ्रमम्। मूर्च्छांमदंतृषांशोषंपार्श्वशूलमरोचकम्॥ प्लीहानमाढ्यवातंचरक्तपित्तंस्वरक्षयम् । एलादिगुटिकाहन्तितृष्यासन्तर्पणीपरा॥ इति एलादिगुटिका॥ २०३॥

इलाइची तेजपात तथा दालचीनी यह तीनों छः२मासे पीपल दो तोले शक्कर मुलहठी खजूर तथा दाख चार चार तोले इन सबको पीसकर सहत के साथ एक एक तोले की गोली बनावे एक गोली रोज खानेसे क्षत क्षय ज्वर खांसी श्वास हिचकी छर्दि भ्रम मूर्च्छा मद तृषा शोष पसलीकी पीड़ा अरुचि प्लीहा आढ्य वात रक्त पित्त तथा स्वर भेद का नाशहोताहै और वीर्य्य की वृद्धि तथा सन्तर्पण होताहै इतिएलादि गुटिका॥ २०३॥

द्राक्षायाःप्रस्थमेकन्तुमधुकस्यपलाष्टकम् । पचेत्तोयाढकेशुद्धेपादशेषेणतेनतु॥ पलिकेमधुकद्राक्षेपिष्टेकृष्णापलद्वयम्। प्रदायसर्पिषःप्रस्थंपचेत्क्षीरेचतुर्गुणे॥ सिद्धेशीते पलान्यष्टौशर्क्करायाःप्रदापयेत्। एतद्द्राक्षाघृतंसिद्धंक्षतक्षीणसुखावहम्॥ वातंपित्तंज्वरं श्वासंविस्फोटकहलीमकान्। प्रदररक्तपित्तञ्चहन्यात्मांसबलप्रदम्॥ इतिद्राक्षादि घृतम्॥ २०४॥

दाख ६४ तोले मुलहठी ३२ तोले इन दोनों को२५६ तोले जलमें औटावे जब चौथाईबाकी रहै तब मुलहठी तथा दाख चारचार तोले और पीपल आठ तोले इनसबको पीसकर उसमेंमिलावै और ६४ तोले घी और इसका चौगुना दूध डालकर इसका पाककरे जब पाक होकर शीतल होजाय तब ३२ तोले शक्कर मिलावे इस घृतके सेवनसे क्षत क्षीणबायु पित्त ज्वर श्वास बिस्फोटक हलीमक प्रदर तथा रक्त पित्तका नाशहोताहै और मांस तथाबल की वृद्धि होती है॥ इति द्राक्षादिघृत॥ २०४॥

क्षीरैर्धात्रीचमञ्जिष्ठाक्षीरिणाञ्चतथारसैः । पचेत्समैर्घृतंप्रस्थंमधुरैःकर्षसम्मितैः॥ द्राक्षाद्विचन्दनोशीरैःशर्करोत्पलपद्मकैः। मधूककुसुमानन्ताकाश्मरीतृणसंज्ञकैः॥ प्रस्थार्द्धमधुनःशीतेशर्करार्द्धतुलांतथा। पलार्द्धिकांश्चसञ्चूर्ण्यत्वगेलापत्रकेशरान्॥विनीयतत्रसंलिह्यान्मात्रांनित्यंसुयन्त्रितः। अमृतप्राशमित्येतदश्विभ्यांपरिकीर्तितम्॥ क्षीरमांसाशिनांहन्तिरक्तपित्तंक्षतंक्षयम्। तृष्णारुचिश्वासकासछर्दिमूर्च्छाप्रमर्दनम्॥ मूत्रकृच्छ्रज्वरघ्नञ्चबल्यंस्त्रीरतिवर्द्धनम्। अमृतप्राशावलेहः॥ २०५॥

दूध घी आमलेकारस मजीठ का रस तथा क्षीरीवृक्षोंका रस यह सबचौंसठ २ तोले इनमें जीवक दाख दोनों चन्दन खस शक्कर कमल पद्माक महुएके फूल धमासा गम्भारी रोहित तृण इन सबका एक२तोले कल्क मिलाकर पाककरे पाकके शीतल होजानेपर ३२ तोले सहत २०० तोले शक्कर और दालचीनी इलायची तेजपात तथा नागकेशर यहसब दोदोतोले मिलावे यह अमृतप्राश अवलेह अश्विनी कुमारने बनाया है इसको मात्राके अनुसार खाकर दूध तथा मांसका आहारकरने

से रक्त पित्त उरक्षत क्षय तृषा अरुचि श्वास खांसी छर्दि मूर्च्छा शरीरकी पीड़ा मूत्र कृच्छ्र तथा ज्वरका नाश होताहै और बल तथा मैथुन शक्ति की वृद्धि होतीहै इति अमृत प्राशावलेह ॥२०५॥

यद्यच्चतर्पणंशीतमविदाहिहितंलघु । अन्नपानंनिषेव्यंस्यात्क्षतक्षीणैःसुखार्थिभिः ॥ शोकंस्त्रियःक्रोधमसूयताञ्चत्यजेदुदारान्विषयान्भजेच्च । तथाद्विजातींस्त्रिदशान्गुरूं श्चवाचश्चपुण्याःशृणुयाद्द्विजेभ्यः ॥ २०६ ॥

उरक्षतवाला मनुष्य शीतल विदाहरहित हितकारी हलके तथा तृप्तकारी अन्नपानका सेवनकरे शोक क्रोध स्त्रीप्रसंग तथा ईर्षाका त्यागकरे उत्तम विषयोंका सेवनकरे और ब्राह्मण देवता तथा गुरुओंका पूजन करे और ब्राह्मणोंसे पवित्र कथाओंको सुने ॥ २०६ ॥

राजयक्ष्मणि रसाः ॥

रसभस्मामृतासत्वंलोहंमधुघृतान्वितम् । अमृतेश्वरनामायंषड्गुञ्जोराजयक्ष्मणि रसभस्ममारितोरसः । अमृतासत्वंगुडूचीसत्वम् । लोहंमारितम् । अमृतेश्वररसोराज यक्ष्मणिरसेन्द्रचिन्तामणौ ॥ २०७ ॥

राजयक्ष्मापररस ॥

पारेकीभस्म गिलोयकासत और लोहेकी भस्म इनको सहत और घी के साथ छः रत्तीखाने से राजयक्ष्माका नाश होता है इति अमृतेश्वररस ॥ २०७ ॥

त्रयोंऽशोमारितात्सूतादेकोंऽशोहेमभस्मतः । एकोंऽशोमृतताम्रस्यशिलागंधश्चताल कम् ॥ प्रत्येकंभागयुग्मंखादेत्तत्सर्व्वंविचूर्णयेत् । वराटीः पूरयेत्तेनछागीक्षीरेणटङ्क णम् ॥ पिष्ट्वातेनमुखंरुद्ध्वामृद्भाण्डेताश्चधारयेत् । कुप्यांपचेत्गजपुटेस्वांङ्गशीतंसमु द्धरेत् ॥ रसोराजमृगाङ्कोऽयंचतुर्गुञ्जःक्षयापहः । मरिचैरूनविंशत्याकणाभिर्दशभिस्त था ॥ मधुनासर्पिषाचापिदद्यादेतंरसंभिषक् । अनेननश्यतिक्षिप्रंवातश्लेष्मभवःक्षयः ॥ इतिराजमृगाङ्कोरसोराजयक्ष्मणिरसेन्द्रचिन्तामणौ ॥ २०८ ॥

पारेकीभस्म ३ भा० सोने तथा तांबेकीभस्म एक २ भा० मैनशिल गन्धक तथा हरिताल दोदो भा० इनसबको एकसाथ पीसकर कौड़ियों में भरदेवे फिर बुकरीके दूधमें सुहागेको पीसकर उस सुहागेसे कौड़ियोंके मुखको बन्दकरके मट्टीके पात्रमें रखकर गजपुटमें पाककरे फिर शीतल होजाने पर निकालकर चाररत्तीरस उन्नीस मिर्च तथा १० पीपल घी और सहतके साथ खाय इसके द्वारा बात कफसे होनेवाले राजयक्ष्माका शीघ्रही नाश होता है इति मृगांकरस ॥ २०८ ॥

शुद्धंसूतंद्विधागन्धंकुर्य्यात्खल्वेनकज्जलीम् । तयोःसमंतीक्ष्णचूर्णंमर्द्दयेत्कन्यका द्रवैः ॥ द्वियाममातपेगोलंताम्रपात्रेनिधापयेत् । आच्छाद्यैरण्डपत्रेणस्यादुष्णंयामयुग्म तः ॥ धान्यराशौन्यसेत्पश्चादष्टरात्रात्तदुद्धरेत् । सञ्चूर्ण्यगालयेद्वस्त्रैःसत्यंवारितरंभ वेत ॥ त्रिकटुत्रिफलैलाभिर्जातीफललवंगकैः । नवभागोन्मितैरेभिःसमैरेषरसोभवेत् ॥ निष्कद्वयमितंनित्यंमधुनासहलेहयेत् । अयमग्निरसोनाम्नाकासक्षयहरःपरः ॥ इतिअ ग्निरसःशार्ङ्गधरे । इतिराजयक्ष्माधिकारः ॥ २०९ ॥

शुद्धपारा १ भा० गन्धक दोभाग इनदोनोंकी कजली करे फिर इनदोनोंकी बराबर लोहेकी भस्म मिलाकर घीकारके रसमें घोटे और गोलासा होजानेपर तांबेके पात्र में रखकर दोपहरतक धूप में सुखावे फिर रेंड़ीके पत्तोंसे ढककर गरमही गरम उसको धान्यराशिमें रखदे फिर आठदिनके पीछे निकालकर पीसके कपड़े में छानले तब यह निसन्देह पानीमें तैरने लगताहै इसके उपरान्त त्रिकटु त्रिफला इलायची जायफल तथा लौंग यहसब समभाग और इनसबकी बराबर यहरस मिलावे और सहत के साथ चार चार मासे रोजखाय इस्से खांसी और राजयक्ष्माका नाश होता है इति अग्निरस इति राजयक्ष्माधिकार ॥ २०९ ॥

अथ कासाधिकारः । तत्रकासस्यनिदानसम्प्राप्तिपूर्व्वकंसामान्यलक्षणमाह ॥

धूमोपघाताद्रजसस्तथैवव्यायामरूक्षान्ननिषेवणाच्च । विमार्गगत्वादतिभोजनस्यवेगावरोधात्क्षवथोस्तथैवच ॥ प्राणोह्युदानानुगतःप्रदुष्टःसभिन्नकांस्यस्वनतुल्यघोषः । निरेतिवक्त्रात्सहसासदोषःमनीषिभिःकासइतिप्रदिष्टः॥सदोषःस्तादृक्प्राणानिलरूपः२१०॥

खांसीका अधिकार । खांसीका निदान संप्राप्ति पूर्व्वक सामान्य लक्षण ॥

मुख तथा नासिका में धुयें तथा धूलके जानेसे व्यायामसे रूखा अन्नखानेसे वेगोंके तथा छींकके रोकनेसे और बहुत भोजनके अपने मार्गके अनुसार पेटमें नजानेसे दोष सहित प्राण वायु उदानके साथ फूटे कांसेके समान शब्द करती हुई हठपूर्व्वक मुखसे निकलतीहै इसीको पंडित लोग खांसी कहते हैं ॥ २१० ॥

संख्यामाह ॥

पञ्चकासाःस्मृतावातपित्तश्लेष्मक्षतक्षयैः । क्षयायोपेक्षिताःसर्वेबलिनश्चोत्तरोत्तरम् ॥ क्षयायराजयक्ष्मणे ॥ २११ ॥

खांसी की संख्या ॥

खांसी ५ प्रकारकी होती है जैसे बातज पित्तज कफज क्षतज और क्षयज यह पांचों उत्तरोत्तर बलवान हैं इनकी उपेक्षा करनेसे राजयक्ष्मा रोग उत्पन्न होताहै ॥ २११ ॥

अथ पूर्व्वरूपमाह ॥

पूर्व्वरूपंभवेत्तेषांशूकपूर्णगलास्यता । कण्ठेकण्डूश्चभोज्यानामवरोधश्चजायते ॥ कवलागिलनेकण्ठव्यथा ॥ २१२॥

खांसीका पूर्व्व रूप ॥

खांसहिोनेके पहले गले तथा मुख में काँटेसे पड़ना गलेमें खुजली और भोजन करनेके समय गलेमें पीड़ा यह लक्षण होतेहैं ॥ २१२ ॥

अथ वातिकस्यरूपमाह ॥

हृच्छङ्खपार्श्वोदरमूर्द्धशूलीक्षामाननःक्षीणबलस्वरौजाः । प्रसक्तवेगस्तुसमीरणेन भिन्नस्वरःकासतिशुष्कमेव ॥ शंखोललाटैकदेशःशुष्कंश्लेष्मादिरहितम् ॥ २१३ ॥

बातज खांसीके लक्षण ॥

बातज खांसीमें हृदय शंख (शिरकी हड्डियां) पसली उदर तथा शिरमें पीड़ा मुखमें क्षीणता बल स्वरतथा ओजकीक्षिणताऔरवेगपूर्व्वक स्वरभेद सहित सूखी खांसीआना यहलक्षणहोते हैं२१३॥

पैत्तिकस्यरूपमाह ॥

उरोविदाहज्वरवक्त्रशोषैरभ्यर्दितस्तिक्तमुखस्तृषार्त्तः । पित्तेनपीतानिवमेत्कटूनिकासे त्सपाण्डुःपरिदह्यमानः । सपाण्डुःपाण्डुरोगयुक्तः ॥ २१४ ॥

पित्तज खांसीके लक्षण ॥

छातीमेंदाह ज्वर मुखकासूखना तथा तिक्तता तृषा शरीरमें दाह पांडुवर्ण और खांसीमें पीले तथा कडुए कफका गिरना यह पित्तज खांसीके लक्षणहैं ॥ २१४ ॥

श्लैष्मिकस्यरूपमाह ॥

प्रलिप्यमानेनमुखेनसीदञ्छिरोरुजार्त्तःकफपूर्णदेहः । अभक्तरुङ्नीरवकण्डुयुक्तः कासेद्भृशंसान्द्रकफःकफेन ॥ प्रलिप्यमानेनमुखेनश्लेष्मलिप्तेनमुखेनोपलक्षितः । अ भक्तरुक्नभक्तेरुक्रुचिर्यस्यसःकण्डूकण्ठएवच ॥ २१५ ॥

कफज खांसीके लक्षण ॥

मुखका कफसे लिपा रहना शिरमें पीडा देहमें कफभरा हुआसा मालूम पडना भोजनमें अरुचि भारीपन गलेमें खुजली और खांसीमें बहुत गाढे कफका निकलना यहकफज खांसीकेलक्षणहैं २१५॥

क्षतकासस्यनिदानपूर्विकांसम्प्राप्ति माह ॥

अतिव्यवायभाराध्वयुद्धाश्वगजनिग्रहैः । रूक्षस्योरःक्षतंवायुर्गृहीत्वाकासमावहेत् ॥ अश्वगजयोर्निग्रहोदमनम् ॥ २१६ ॥

उरक्षतकी खांसीका निदान और संप्राप्ति ॥

बहुत मैथुन भारउठाना मार्गगमन युद्ध और हाथी तथा घोड़ेका रोकना इनकारणोंसे बात रूखे पुरुषके उरक्षत उत्पन्न करके खांसीको उत्पन्न करतीहै ॥ २१६ ॥

लक्षणमाह ॥

सपूर्वंकासतेशुष्कंततःष्ठीवेत्सशोणितम् । कण्ठेनकूजत्यत्यर्थंविभग्नेनेवचोरसा ॥ सूचीभिरिवतीक्ष्णाभिस्तुद्यमानेनशूलिना । दुःखस्पर्शेनशूलेनभेदपीड़ाभितापिना ॥ पर्वभेदज्वरश्वासतृष्णावैस्वर्य्यपीड़ितः । पारावतइवाकूजन्कासवेगात्क्षतोद्भवात् ॥ क ण्ठेनेत्युपलक्षणेतृतीयाएवमुरसेति ॥ २१७ ॥

क्षतज खांसीका लक्षण ॥

उरक्षतकी खांसीमें पहले सूखी खांसी आतीहै फिर रुधिर सहित थूक निकलता है गले में बहुत पीड़ाहोतीहै छातीमें टूटनेके समान तथा सुई गड़ने के समानपीडा तथा स्पर्शकी असह्यता होतीहै शूल तथा टूटने कीसी पीड़ासे व्याकुलता होती है पोरुओं का टूटना ज्वर श्वास तृषा तथा स्वरभंग होताहै और खांसीके वेगमें कबूतरके समान गलेसे शब्द निकलताहै यह लक्षण होतेहैं ॥ २१७ ॥

क्षयकासस्यनिदानपूर्विकांसम्प्राप्तिमाह ॥

विषमासात्म्यभोज्यातिव्यवायाद्वेगनिग्रहात् । घृणिनांशोचतांनृणांव्यापन्नेऽग्नौत्र योमलाः ॥ कुपिताःक्षयजंकासंकुर्य्युर्देहक्षयप्रदम् । घृणिनांविचिकित्सायुक्तानां ॥२१८॥

क्षयज खांसीकी निदान पूर्वक संप्राप्ति ॥

विषम तथा असात्म्य भोजन अत्यन्त मैथुन मलमूत्रादि वेगोंका रोकना सन्देह और शोकके द्वारा अग्निके विगड़ने पर तीनों दोष कुपित होकर देहकी क्षय करनेवाली क्षयज नामखांसीको उत्पन्न करते हैं २१८ ॥

लक्षणमाह ॥

सगात्रशूलज्वरमोहदाहप्राणक्षयश्चोपलभेत्सकासी । शुष्कंविनिष्ठीवतिनिर्बलस्तुप्रक्षीणमांसोरुधिरंप्रपूयम्॥तंसर्वलिङ्गंभृशदुश्चिकित्स्यंचिकित्सितज्ज्ञाक्षयजंवदन्ति २१९

क्षयकी खांसीका लक्षण ॥

शरीरमें पीड़ा ज्वर मोह दाह निर्बलता देहका सूखना मांसकी क्षीणता तथा पीपसहित रुधिरका थूकना और प्राणक्षय यह क्षयकी खांसीके लक्षणहैं इन सब लक्षणोंसे युक्त इस खांसीको बैद्य लोग अत्यन्त कठिनतासे चिकित्सा करनेके योग्य कहतेहैं ॥ २१९ ॥

असाध्यसाध्ययाप्यत्वमाह ॥

इत्येषक्षयजःकासःक्षीणानांदेहनाशनः । साध्योबलवतांवास्याद्याप्यस्त्वेवंक्षतोत्थितः ॥ एवंक्षतोत्थितःक्षीणानामसाध्यः । बलवतांसाध्योयाप्योवास्यात् ॥ नवाकदाचित्सिध्येतामपिपादगुणान्वितौ सिध्येताक्षतजक्षयजौसद्वैद्यः सद्भेषजःसत्परिचारकयुक्तस्यसदातुरस्यजातौ ॥ "स्थविराणांजराकासःसर्वोयाप्यःप्रकीर्त्तितः" स्थविराणांजराकासःवृद्धानांयःकासोभवतिसजराकाससंज्ञःससर्वएववातजादिरपियाप्यः ॥ २२० ॥

साध्य असाध्य और याप्य लक्षण ॥

क्षयकी खांसी क्षीण मनुष्योंको असाध्य और बलवानोंको साध्य अथवा याप्य होतीहै क्षत तथा क्षयसे हुई खांसी जोथोड़ेदिनकी होय और सद्वैद्य उत्तमऔषध अच्छा परिचारक तथा बैद्यकी आज्ञा माननेवाला रोगी होय तोकभीकभी साध्यहोतीहै वृद्धपुरुषोंकी खांसीको जराकास कहतेहैं वहवातज आदिक सब याप्यहैं ॥ २२० ॥

त्रीन्पूर्वान्साधयेत्साध्यान्पथ्यैर्याप्यास्तुयापयेत् । स्वल्पोऽपिकासःउपेक्षणीयोनभवति ॥ किन्तुशीघ्रंप्रतिकरणीयइत्याह । ज्वरारोचकहृल्लासस्वरभेदक्षयादयः ॥ भवन्तुपेक्षयायस्मात्तस्मात्तंत्वरयाजयेत् ॥ २२१ ॥

बातज पित्तज तथा कफज यह तीन प्रकारकी खांसी साध्यहैं इस लिये इनकी चिकित्सा करनी चाहिये और याप्य खांसीको पथ्यकेद्वारा रोकेरहै थोड़ीसीभी खांसीकी उपेक्षा न करे किन्तु शीघ्रही उसका यत्नकरे क्योंकि कहा गयाहैकि खांसीकी उपेक्षा करनेसे ज्वर अरुचि मतली स्वरभेद और क्षय आदिक रोग उत्पन्न होतेहैं इसलिये शीघ्रही उसकी चिकित्सा करनी चाहिये ॥ २२१ ॥

अथकासस्यचिकित्सा ॥ तत्रवातकासस्य चिकित्सा ॥

वास्तुकोवायसीशाकंमूलकंसुनिषण्णकम् । स्नेहास्तैलादयोभक्ष्याःतथेक्षुरसगौड़िकाः ॥ दध्यारनालाम्लफलंप्रसन्नापानमेवच । शस्यतेवातकासेषुस्वाद्वम्ललवणानिच ॥ वायसीशाकंमाचीकवैयाइतिलोके । सुनिषण्णकंसिरुआइतिलोके । शाकविशेषः ॥

चाङ्गेरीसदृशःपत्रैःसुनिषण्णंचतुर्दलम् । शाकोजलान्वितेदेशेचतुष्पत्रीतिचोच्यते ॥ चौपत्तीयाइतिलोके ॥ २२२ ॥ बातकी खांसीकी चिकित्सा ॥

बथुई केवैया मूली चौपतिया तेल आदिक स्नेह ऊखका रस गुड़ के बनेहुए भोजनके पदार्थदही आर्नाल खट्टेफल पना और मधुर खट्टे और लवण रस युक्त पदार्थ वातज खांसी में हितकारी हैं चौपतिया जल सहित स्थान में उत्पन्न होताहै इसमें चांगेरीके समान चारपत्ते होतेहैं ॥ २२२ ॥

ग्राम्यानूपोदकैःशालियवगोधूमषष्टिकान् । रसैर्माषात्मगुप्तानांयूषैर्वाभोजयेत्भिषक् ॥ ग्राम्यानूपोदकैरसैरित्यन्वयः । आत्मगुप्ताकिवाचइतिलोके ॥ दशमूलीकृताश्वासकासहिक्कारुजापहा । यवागूर्दीपनीवृष्यावातरोगविनाशिनी ॥ रसःकर्कटकानांवाघृतभृष्टःसनागरः । वातकासप्रशमनःशृङ्गीमत्स्यास्यवायुनः ॥ २२३ ॥

शालि धान्य जौ गेहूं और सांठी को जंगली अनूप देशके तथा जलके जीवों के मांसके साथ अथवा उर्द तथा किवांच के बीज के यूषके साथ भोजन करावे दशमूलके काढ़ेसे पाककी गई यवागू श्वास खांसी हिचकी तथा बात रोगों को नष्ट करतीहै और बीर्य्य तथा अग्नि को बढ़ाती है केकडा अथवा सींगवाली मछली का रस घी में परिपाक किया हुआ सोंठके साथ खानेसे बातकी खांसीका नाश होता है ॥ २२३ ॥

अथ पित्तकासस्य चिकित्सा ॥

कण्टकारीयुगंद्राक्षावासाकर्चूरबालकैः । नागरेणचपिप्पल्याक्वथितंसलिलंपिवेत् ॥ शर्करामधुसंयुक्तंपित्तकासहरंपरम् ॥ २२४ ॥

पित्तकी खांसीकी चिकित्सा ॥

दोनों भटकटैया दाख बांसा कपूर सुगन्धबाला सोंठ और पीपल इनके काढ़े में शक्कर और सहत डालकर पीनेसे पित्तकी खांसीका नाश होताहै ॥ २२४ ॥

अथ कफकासस्यचिकित्सा ॥

पिप्पलीकट्फलंशुण्ठीशृंगीभांगीतथोषणम् । करवीकण्टकारीचसिन्दुवारोयवानिका ॥ चित्रकोवासकश्चैषांकषायंविधिवत्कृतम् । कफकासविनाशायपिवेत्कृष्णारजोयुतम्॥पिप्पल्यादिक्वाथः॥ २२५ ॥ कफकी खांसीकी चिकित्सा ॥

पीपल कायफल सोंठ काकड़ासिंगी भारंगी मिर्च कालाजीरा भटकटैया निर्गुण्डी अजवाइन चीता और बांसा इनसबका बिधि पूर्व्वक क्वाथ बनाकर पीपल का चूर्ण मिलाकर पीने से कफकी खांसी का नाश होताहै इति पिप्पल्यादि क्वाथ ॥ २२५ ॥

क्षतजकास चिकित्सा ॥

इक्षिक्षुवालिकापद्ममृणालोत्पलचन्दनम्। मधुकंपिप्पलीद्राक्षालाक्षाशृंगीशतावरी॥ द्विगुणाचतुगाक्षीरीसितासर्वंचतुर्गुणा । लिह्यात्तन्मधुसर्पिर्भ्यांक्षतकासनिवृत्तये ॥ इक्षुवालिकाइक्षुभेदः । चंद्रइतिलोके । पद्मंपद्मकाष्ठंमृणालंविषंउत्पलंकमलंचंदनमत्रधवलंचूर्णत्वात्शृंगीकर्कटशृंगीतुगाक्षारीवंशरोचनासाचेक्षोर्द्विगुणा ॥ २२६ ॥

उरक्षतकी खांसीकी चिकित्सा ॥

ईख इक्षुवालिका (एक प्रकारकी ईख) पद्माक कमलकी डंडी कमल सफेद चन्दन मुलहठी पीपल दाख लाख काकड़ासिंगी सतावरि यह सब समभाग और वंशलोचन दोभाग और सबकी चौगुनी शक्कर इन सब औषधियों को मिलाकर सहत और घी के साथ चाटने से क्षतज खांसी का नाश होताहै ॥ २२६ ॥

अथ क्षयकास चिकित्सा ॥

चूर्णंकाकुभमिष्टंवासकरसभावितंबहुवारान् । मधुघृतसितोपलाभिर्लेह्यंक्षयकासरक्तहरम् ॥ काकुभचूर्णंककुभचूर्णम् ॥ २२७ ॥

क्षयकी खांसीकी चिकित्सा ॥

अर्जुनकी छालके चूर्ण में अनेक बार बांसेके रसकी भावना देकर सहत घी और मिश्री केसाथ चाटनेसे क्षयकी खांसी और रुधिर गिरने का नाश होताहै ॥ २२७ ॥

अथ कासस्यसामान्य चिकित्सा ॥

ताप्यमानस्यकासेननासास्रावेस्वरेजड़े । क्षयथौगंधनासेचधूमपानंप्रयोजयेत् ॥ मनःशिलालमरिचंमांसीमुस्तेंगुदैःपिवेत् । धूमंत्र्यहञ्चतस्यानुपयश्चसगुड़ंपिवेत् ॥ एष कासान्पृथक्द्वन्द्वसर्वदोषसमुद्भवान् । शतैरपिप्रयोगाणामसाध्यान्साधयेद्ध्रुवम् ॥ आलंहरितालं) बदरीदलमालिप्तशिलयातपशोषितम् । तद्धूमपानंसक्षीरं महाकासनिवारणम् ॥ २२८ ॥ खांसीकी सामान्य चिकित्सा ॥

खांसी के द्वारा नाक बहना स्वरकी जड़ता तथा छींक उपस्थित होनेपर और सूंघने की शक्ति के न होनेपर धूम्रपान कराना चाहिये मैनशिल हरिताल मिर्च जटामांसी मोथा और हिंगोट इनके द्वारा तीन दिन तक धूम्रपान करे और धूम्रपान करके गुड़ सहित दूध पिये इस के द्वारा अलग अलग द्वन्द्वज सान्निपातज और सब प्रकार की असाध्य खांसी भी नष्ट होतीहैं मैनशिल से बेरकी पत्तियों परलेप करके धूप में सुखावे और इनका धूम्र पान करके दूध पिये इस्से बहुतबढ़ी हुई खांसी का नाश होताहै ॥ २२८ ॥

कण्टकारीकृतःक्राथःसकृष्णःसर्व्वकासहाकण्टकार्याःकणायाश्चचूर्णंसमधुकासहृत २२९

भटकटैयाके काढ़ेमें पीपलका चूर्ण मिलाकर पीनेसे सबप्रकारकी खांसीका नाश होताहै भटकटैया और पीपलके चूर्णको सहतके साथ चाटने से खांसीका नाश होताहै ॥ २२९ ॥

लवंगजातीफलपिप्पलीनांभागांश्चकर्षांक्षसमानमेषाम् । पलार्द्धमानंमरिचंप्रदेयं पलानिचत्वारिमहौषधस्य ॥ सितासमस्तेनसमाप्यचूर्णंरोगानिमानाशुबलान्निहन्ति । कासज्वरारोचकमेहगुल्मश्वासाग्निमान्द्यग्रहणीविकारान् ॥ समशर्करंचूर्णंवटिकावा २३०

लौंग जायफल तथा पीपल यह सब तोले २ भर मिर्च दो तोले सोंठ १६ तो० और इनसबकी बराबरशक्कर मिलाकर अथवा मोदक बनाकर खाने से खांसी ज्वर अरुचि प्रमेह बायगोला श्वास मन्दाग्नि और ग्रहणीका नाश होताहै इति समशर्कर चूर्णयावटिका ॥ २३० ॥

कुनटीसैन्धवंव्योषंविड़ंगामयाहिंगुभिः । लेहःसाज्यमधुःकासश्वासहिक्कानिवारणः ॥

हरीतकीकणाशुण्ठीमरीचंगुडसंयुतम् । कासश्लेष्मापहंप्रोक्तंपरंवह्नेःप्रदीपनम् ॥ २३१

मैनशिल सेंधानोन त्रिकटु बायबिड़ंग कूट और हींग इनसबको पीसकर सहत और घीके साथ चाटने से खांसी श्वास और हिचकीका नाश होता है हड़ पीपल सोंठ और मिर्च इनके चूर्णको गुड़के साथ खानेसे खांसी तथा कफका नाशहोताहै और अग्निकी बहुत वृद्धि होती है ॥ २३१ ॥

कर्षःकर्षार्शपलंपलद्वयंस्यात्ततोऽर्द्धकर्षेञ्च । मरिचस्यपिप्पलीनाञ्चदाड़िमगुड़याव शूकानाम् ॥ सर्वौषधिभिरसाध्याःकासायेवैश्चनिर्मुक्ताः अपिपूयच्छर्दयतांतेषामिदमौषधं परमम् ॥ कर्षांशोऽत्रकर्षद्वयं ॥ २३२ ॥

मिर्च १ तो० पीपल २ तो० अनारकी छाल ४ तो० गुड़ ८ तो० और जवाखार ६ माशे इन सब औषधियों को सेवन करनेसे सबप्रकारकी असाध्य खांसी भी नष्ट होती है और जिनको पीपकी वमन होतीहै उनके लियेभी यह औषधि हितकारीहै ॥ २३२ ॥

मरिचंकर्षमात्रंस्यात्पिप्पलीकर्षसम्मिता । अर्द्धकर्षोयवक्षारःकर्षयुग्मञ्चदाड़िमम् ॥ एतच्चूर्णीकृतंयुञ्ज्यादष्टकर्षगुड़ेनहि । शाणप्रमाणांगुटिकांकृत्वावक्त्रेविधारयेत् ॥ अस्याः प्रभावात्सर्व्वेऽपिकासायान्त्येवसंक्षयम् । दाड़िमफलत्वक्ग्राह्यंमरीचादिगुटिका २३३

मिर्च तथा पीपल एकएक तोला जवाखार ६ माशा अनारकी छाल २ तोला और गुड़ ८ तोले इन सबकी चार माशेकी गोली बनाकर मुखमें रखनेसे सब प्रकारकी खांसीका नाश होताहै इति मरिचादि गुटिका ॥ २३३ ॥

समूलवल्कच्छदकण्टकार्यास्तुलान्ततोद्रोणमितंजलञ्च । हरीतकीनांशतमेकपात्रे विपाच्यकुर्याच्चरणाम्बुशेषम् ॥ तस्मिन्कषायेतनुवस्त्रपूतेहरीतकीभिःसहितंगुड़स्य । तुलांविनिःक्षिप्यपचेत्सुपक्वमेतत्समुत्तार्यसुशीतलञ्च ॥ पलंपलञ्चापिकटुत्रयञ्चतथाचतुर्जा तपलंविचूर्ण्य । पलानिषट्पुष्परसस्यचापिविनिःक्षिपेत्तत्रविमिश्रयेच्च ॥ प्रयुज्यमा नोविधिनैषलेहोयथाबलञ्चापियथानलञ्च । वातात्मकंपित्तकृतंकफोत्थंत्रिदोषजातान्य पिचत्रिदोषं ॥ क्षतोद्भवञ्चक्षयजञ्चकासंश्वासञ्चहन्यात्सहपीनसेन । यक्ष्माणमेकादश रूपमुग्रंहरीतकीयाभृगुणोपदिष्टा ॥ पुष्परसोमधु इतिभृगुहरीतकी ॥ २३४ ॥

जड़ पत्ती तथा पुष्प समेत भटकटैया ४०० तोला और १०० हड़ इन दोनों को १०२८ तोले जलमें पाक करके जब चौथाई बाकीरहै तब छानले फिर उसी काढ़े में ४०० तोले गुड़ और वही हड़ें डालकर पाककरे अच्छे प्रकार पाक होकर शीतल होजाने पर मिर्च पीपल तथा सोंठ चारचार तोले दालचीनी इलायची तेजपात तथा नागकेशर चारचार तोले और सहत २४ तोले इन सब औषधियोंको उसमें मिलाकर खूब चलादेवे फिर अग्नि बलके अनुसार इसको सेवन करनेसे बातज पित्तज कफज त्रिदोषज क्षतज तथा क्षयजआदि सबप्रकारकी खांसी श्वास पीनसऔर संपूर्णलक्षणों से युक्त यक्ष्मा रोगका नाशहोताहै इति भृगुहरीतकी ॥ २३४ ॥

कण्टकारीतुलांनीरद्रोणेपक्त्वाकषायकम् । पादशेषंगृहीत्वाचतत्रचूर्णानिदापयेत् ॥ पृथक्पलांशान्येतानिगुडूचीचव्यचित्रकौ । मुस्तकर्कटशृंगीचत्र्यूषणंधन्वयासकः ॥

भार्गीरास्नाशटीचैवशर्करापलविंशतिः। प्रत्येकंचपलान्यष्टौप्रदद्यात्घृततैलयोः॥ पक्वा लेहत्वमानीतेशीतेमधुपलाष्टकम्। चतुर्भागन्तुगाक्षीर्याःपिप्पलीचचतुःपलम्॥ क्षिप्त्वानिदध्यात्सुदृढेमृण्मयेभाजनेशुभे। लेहोऽयंहन्तिहिक्कार्त्तिकासश्वासानशेषतः॥ कण्टकार्य्यवलेहःइतिकासाधिकारः॥ २३५॥

४०० तोले भटकटैयाको १०२४ तोले जलमें पाककरके चौथाईबाकीरहनेपर उतारले फिरगिलोय चव्य चीता मोथा काकड़ासिंगी सोंठ पीपल मिर्च जवासा भारंगी रासना तथा कचूर इनसबको पीसके चार चार तोले शक्कर अस्सी तोले घी तथा तेल बत्तीस २ तोले इनसब औषधियोंको उस में मिलाकर पाककरें फिर अवलेहसा बनकर शीतल होजानेपर सहत ३२ तोले और बंशलोचन तथा पीपल सोलह २ तोले मिलाकर मट्टी के पात्रमें रखछोड़े इसअवलेहके सेवनसे हिचकी खांसी तथा श्वासका नाशहोताहै इति कंटकादि अवलेह इतिकासाधिकार॥ २३५॥

अथहिक्काधिकारः तत्रहिक्कायाःविप्रकृष्टंदानमाह॥

विदाहिगुरुविष्टंभिरूक्षाभिष्यन्दिभोजनैः। शीतपानाशनस्नानरजोधूमातपानिलैः॥ व्यायामकर्मभाराध्ववेगाघातापतर्पणैः। हिक्काश्वासश्चकासश्चनृणांसमुपजायते॥ अपतर्पणमनशनादि॥ २३६॥

हिचकीका अधिकार हिचकीके दूरवाले कारण॥

विदाही भारी विष्टंभी रूखी शीतल तथा अभिष्पन्दी वस्तुओंके भोजनसे शीतल जल पीनेसे शीतल जलमें स्नानकरनेसे नासिकामें धूल तथा धुएंके जानेसे धूप तथा बायुके सेवनसे व्यायाम भार लेचलना मार्ग गमन तथा मल मूत्रादि वेग रोकनेसे और व्रत आदिकों से मनुष्योंको हिचकी श्वास और खांशी उत्पन्न होतीहै २३६॥

संप्राप्तिमाह॥

वायुःकफेनानुगतःपञ्चहिक्काःकरोतिहि। अन्नजांयमलांक्षुद्रांगम्भीरांमहतीन्तथा २३७॥

हिचकीकी संप्राप्ति॥

कफके साथ मिलीहुई बात पांच प्रकार की हिचकियों को उत्पन्न करती है जैसे अन्नजा यमला क्षुद्रा गंभीरा और महती॥ २३७॥ सामान्यलक्षणमाह॥

मुहुर्मुहुर्वायुरुदेतिसस्वनःयकृत्प्लिहान्त्राणिमुखादिवाक्षिपन्। सदोषवानाशुहिनस्त्यसून्यतस्ततस्तुहिक्केत्यभिभीयतेवुधैः॥ वायुरत्रसोदानप्राणोबोधव्यः। उदेतिऊर्ध्वंयाति श्वसनःहिगितिशब्दवान्। ऊर्ध्वगमनंविशिनष्टियकृदित्यादि। प्लिहइतिशब्दोऽप्यस्तिदीर्घत्वविकल्पात्। मुखादितिल्यब्लोपे पञ्चमी तेनयकृत्प्लीहान्त्राणिमुखमानीयअक्षिपन् निःसारयन्इवेत्यर्थःवायुः। दोषवान्दोषोऽत्रकफः तद्वान्वायुःकफेनानुगतइतिसम्प्राप्तिःहिनस्तीतिहिक्काप्टषोदरादित्वाद्रूपसिद्धिःहिगतिशब्दंकरोतीति॥ २३८॥

हिचकीका सामान्य लक्षण॥

कफ सहित प्राण तथा उदान बायु बारबार हिक् शब्द पूर्व्वक य कृतप्लीहा तथा आंतोंको मानो

मुखमें लातीहुई बाहर निकलती है इसमें शीघ्रही प्राणोंका नाश होता है इसलिये पंडित लोग इसको हिक्का बोलते हैं ॥ २३८ ॥ पूर्वरूपमाह ॥

कण्ठोरसोगुरुत्वञ्चवदनस्यकषायता । हिक्कानांपूर्व्वरूपाणिकुक्षेराटोपएवच ॥ वदनस्यकषायतावातात् ॥ २३९ ॥

हिचकी का पूर्वरूप ॥

हिचकी होनेके पहले कंठ तथा हृदय में भारीपन मुख में कषैलापन और पेटमें गड़गड़ाहट यह लक्षण होतेहैं ॥ २३९ ॥ अन्नजालक्षणमाह ॥

पानान्नैरतिसंयुक्तैःसहसापीड़ितोऽनलः । हिक्कयेत्यूर्द्धगोभूत्वातांविद्यादन्नजांभिषक् ॥ अनिलः प्राणोवायुः ॥ २४० ॥

अन्नजा हिचकी के लक्षण ॥

बहुत अन्न पानके सेवन से कुपित हुई प्राण बायु ऊर्ध्व गामी होकर हिचकी को उत्पन्न करती है इसको अन्नजा कहतेहैं ॥ २४० ॥ यमलालिङ्गमाह ॥

चिरेणयमलैर्वेगैर्याहिक्कासम्प्रवर्त्तते । कम्पयन्तीशिरोग्रीवांयमलांतांविनिर्दिशेत् २४१ ॥

यमला हिचकी के लक्षण ॥

जो हिचकी देर देरमें एक साथ दोबार आतीहै और शिर तथा ग्रीवामें कम्प होताहै उसको यमला कहतेहैं ॥ २४१ ॥ क्षुद्रामाह ॥

विकृष्टकालैर्यावेगैर्मन्दैःसमभिवर्त्तते । क्षुद्रिकानामसाहिक्का जत्रुमूलंप्रधावति ॥ विकृष्टकालैःचिरेण । जत्रुःकक्षोरसोःसन्धिः ॥ २४२ ॥

क्षुद्रा हिचकी का लक्षण ॥

जो हिचकी जत्रु (बगल और छाती की सन्धि) के मूलसे उठकर थोड़ेबेगके साथ देरमें आती है उसको क्षुद्रिका कहते हैं ॥ २४२ ॥ गंभीरामाह ॥

नाभिप्रवृत्तायाहिक्काघोरागम्भीरनादिनी । अनेकोपद्रवकरीगम्भीरानामसास्मृता ॥ अनेकोपद्रववतीतृष्णाज्वरादियुक्ता ॥ २४३ ॥

गंभीरा हिचकी का लक्षण ॥

जो हिचकी नाभिसे उठकर गंभीर शब्दके साथ आतीहै और तृषा तथा ज्वरादिक उपद्रवोंके सहित होतीहै उसको गंभीरा कहतेहैं ॥ २४३ ॥

महतीमाह ॥

मर्म्माणिपीड़यन्तीवसततंयाप्रवर्त्तते । महाहिक्केतिसाज्ञेयासर्व्वगात्रप्रकम्पिनी ॥ मर्म्माणिवस्तिहृदयशिरःप्रभृतीनि ॥ २४४ ॥

महती हिचकी के लक्षण ॥

जो हिचकी बस्ति हृदय तथा शिर आदि मर्मस्थलोंको पीड़ित करती हुई और सब अंगोंको कपाती हुई लगातार आतीहै उसको महती कहते हैं ॥ २४४ ॥

असाध्यत्वमाह ॥

आकम्पतेहिक्कतोयस्यदेहोदृष्टिश्चोर्ध्वंताम्यतेनित्यमेव । क्षीणोऽन्नद्विट्क्षौतियश्चातिमात्रंतौद्वौचान्त्यौवर्जयेद्धिक्कवन्तौ ॥ आकम्पतेविस्फूर्यतइवतौद्वाविति । आकम्पतइत्यादिनानित्यमेवेत्यनेनैकोहिक्कमानः ॥ क्षीणइत्यादिनातिमात्रमित्यन्तेनापरः । तौद्वौअन्त्यौचगम्भीरयामहतोहिक्कयाहिक्कमानौवर्जयेत् ॥ अपरञ्चअतिसञ्चितदोषस्यभक्तद्वेषकृशस्यच । व्याधिभिःक्षीणदेहस्यवृद्धस्यातिव्यवायिनः ॥ आयासाच्चसमुत्पन्नाहिक्काहन्त्याशुजीवितम् ॥ यमिकाचप्रलापार्त्तिमोहतृष्णासमन्विता ॥ २४५ ॥

असाध्य हिचकी के लक्षण ॥

जिस हिचकी में सम्पूर्ण शरीर कांपे नेत्र ऊपरको उठजायँ और मोहहोवे वह असाध्यहै जिस हिचकीमें क्षीणता अन्नमें अरुचि और बारंबार छींकहोय वहअसाध्य है और गंभीरा तथा महती हिचकी भी असाध्य हैं और भी कहा गया है कि दोषोंका बहुत इकट्ठा होना अन्नमें अरुचि कृशता रोगोंसे शरीरका क्षीण होना अथवा अत्यन्त मैथुन करना इन सबसे युक्तमनुष्योंकी हिचकी और परिश्रम से हुई हिचकी असाध्य होती है प्रलाप मोह और तृषा युक्त यमिका हिचकी असाध्य होती है ॥ २४५ ॥

साध्यत्वमाह ॥

अक्षीणस्याप्यदीनस्यस्थिरधात्विन्द्रियस्यच । तस्यसाधयितुंशक्यायमिकाहन्त्यतोऽन्यथा ॥ २४६ ॥

साध्य हिचकीके लक्षण ॥

क्षीणता तथा दीनता रहित और धातु तथा इन्द्रियोंकी स्थिरता वाले मनुष्य की यमिका हिचकी साध्यहोती है और इसके विशेष असाध्य होती है ॥ २४६ ॥

हिक्कायाश्चिकित्सा ॥

यत्किञ्चित्कफवातघ्नमुष्णंवातानुलोमनम् । भेषजंपानमन्नंवाहिक्काश्वासेषुतद्धितम् ॥ हिक्काश्वासातुरेपूर्वंतैलाक्तेस्वेदइष्यते । ऊर्ध्वाधःशोधनंशस्तंदुर्बलेशमनंमतम् ॥ प्राणावरोधतर्जनविस्मापयनशीतवारिपरिषेकैः । चित्रैःकथाप्रयोगैःशमयेद्धिक्कांमनोऽभिघातैश्च ॥ २४७ ॥

हिचकी की चिकित्सा ॥

कफ बात नाशक उष्ण और बात को अपने मार्गके अनुसार करने वाली औषध तथा अन्नपान हिचकी और श्वास में हितकारी हैं हिचकी और श्वास वाले को पहले तेल लगाकर स्वेद देना चाहिये फिर बमन विरेचन के द्वारा शुद्ध करना चाहिये और दुर्बल मनुष्यको शमन औषध देना चाहिये प्राणायाम तर्जना आश्चर्य्य करना शीतल जलसे सींचना अनेक प्रकार की विचित्र कथा और मन के तोड़ने वाली क्रिया इन सबसे हिचकी निवृत्त होती है ॥ २४७ ॥

हिक्कार्त्तस्यपयश्छागंहितंनागरसाधितम् । मधुसौवर्चलोपेतंमातुलुङ्गरसंपिवेत् ॥ मधुकंमधुसंयुक्तंपिप्पलीशर्करान्विता । नागरंगुड़संयुक्तंहिक्काघ्नंनावनंत्रयम् ॥ प्रवालशङ्खत्रिफलाचूर्णंमधुघृतप्लुतम् । पिप्पलीगैरिकञ्चेतिलेहोहिक्कानिवारणः ॥ नैपाल्यागोविषाणाद्वाकुष्ठात्सर्जरसस्यवा । धूमंकुशस्यवाकार्यंपिवेद्धिक्कोपशान्तये ॥ नैपालीमन

शिला । निर्धूमाङ्गारनिःक्षिप्तहिंगुमाषभवोरजः । हिक्कापञ्चापिहन्त्याशुधूमपीतीनसंशयः॥हरेरुककणानाञ्चक्काथोहिंगुसमन्वितः।हिक्काप्रशमनश्रेष्ठोधन्वन्तरिवचोयथा २४८

सोंठ के द्वारा पाकक्रियाहुआ बकरीका दूध अथवा सहत और काले नोनसे युक्त नींबूकारस पीनेसे हिचकी निवृत्तहोती है सहतयुक्त मुलहठी का चूर्ण शक्कर सहित पीपलका चूर्ण अथवा गुड़ सहित सोंठका चूर्ण इनके द्वारा नासलेनेसे हिचकीका नाशहोता है मूंगा शंख त्रिफला और पीपिल तथा गेरू इनके चूर्णको सहत और घीके साथ चाटनेसे हिचकी का नाशहोता है मैनशिल तथा गौका सींग अथवा कूट तथा राल या कुशके द्वारा धूम्रपान करनेसे हिचकी नाशहोतीहै हींग और उर्दके चूर्ण को धूम रहित अंगारेपर छोड़कर उसके धुएंके पीनेसे पांचों प्रकारकी हिचकी का नाश होताहै मटर और पीपल के काढ़े में हींग डालकर पीनेसे हिचकीका नाशहोताहै यहधन्वन्तरका बचनहै॥ २४८॥

चन्द्रसूरस्यबीजानिक्षिपेदष्टगुणेजले । पदामृदूनिमृदियात्ततोवाससिगालयेत् ॥ हिक्कातिवेगविकलस्तज्जलंपलमात्रया । पिवेत्पिवेत्पुनश्चापिहिक्कावश्यंप्रशाम्यति । चन्द्रसूररसःइतिहिक्काधिकारः ॥ २४९ ॥

चन्द्रशूर के बीजों को अठगुने जलमें पाककरे जब चौथाई बाकी रहै तब धीरे २ कपड़ेमें छानले इसको एक२ पल बारम्बार पिये इससे बहुत बेगवालीभी हिचकी नष्टहोती है इतिचन्द्रशूररस इति हिक्काधिकार ॥ २४९ ॥

अथ श्वासाधिकारः । तत्र निदानमाह ॥

यैरेवकारणैर्हिक्कादेहिनांसम्प्रवर्त्तते । तैरेवबहुभिःश्वासोव्याधिर्घोरःप्रजायते ॥ श्वासस्यभेदानाहमहोद्धूर्ध्वछिन्नतमकःक्षुद्रभेदैस्तुपञ्चधा । भिद्यतेसमहाव्याधिःश्वासएकोविशेषतः ॥ २५० ॥

श्वासका अधिकार श्वासका निदान ॥

जिनकारणोंसे हिचकी उत्पन्नहोती है उन्हींकारणों की अधिकतासे भयंकर श्वास रोग उत्पन्नहोता है महाश्वास ऊर्ध्व श्वास छिन्नश्वास तमकश्वास और क्षुद्रश्वास यह श्वासके पांचभेद हैं॥२५०॥

तस्यपूर्व्वरूपमाह ॥

प्राग्रूपंतस्यहृत्पीड़ाशूलमाध्मानमेवच ।आनाहोवक्त्रवैरस्यंशङ्खनिस्तोदएवच २५१॥

श्वासका पूर्वरूप ॥

श्वासरोग उत्पन्नहोने के पहले हृदयमें पीड़ा शूल आध्मान आनाह मुखकी बिरसता और शिर की हड्डियों में पीड़ा यह लक्षण होते हैं ॥ २५१ ॥

सम्प्राप्तिमाह ॥

यदास्रोतांसिसंरुध्यमारुतःकफपूर्व्वकैः। विष्वक्व्रजतिसंरुद्धस्तदाश्वासंकरोतिस। विष्वक्व्रजतिसर्वतोविमार्गानूयातिसंरुद्धःकफेनरुद्धमार्गः ॥ २५२ ॥

श्वासकी संप्राप्ति ॥

जब कफ युक्त बात स्रोतों को रोककरके और कफसे रुके हुए मार्ग वाली होकर सबओर अपने मार्गों से रहित होकर घूमती है तब श्वास रोग उत्पन्न होता है ॥ २५२ ॥

महा श्वासस्यलक्षणमाह ॥

ऊद्र्ध्वायमानवातोयःशब्दवद्दुःखितोनरः । उच्चैःश्वसितिसन्नद्धोमत्तर्षभइवानिशम्॥ प्रनष्टज्ञानविज्ञानस्तथाविभ्रान्तलोचनः । विवृताक्षाननोवद्धमूत्रवर्चोविशीर्णवाक् ॥ दीनस्यश्वसितञ्चास्यदूराद्विज्ञायतेभृशम् । महाश्वासोपसृष्टस्तुक्षिप्रमेवविपद्यते ॥ ऊद्र्ध्वायमानवातःऊद्र्ध्वंनीयमानोवातोयस्यसःशब्दवत्।सशब्दंयथास्यात् ॥ कीदृक्स शब्दस्तद्बोधयितुमाह । मत्तर्षभइव ॥ उच्चैःश्वसितीत्यन्वयःसन्नद्धःआनद्धः आनाहयुक्त इतियावत् । ज्ञानंशास्त्रम् । विज्ञानंतदर्थविनिश्चयः ॥ विशीर्णवाक्स्खलितवचनः । दीनःम्लानःमारकश्चायंमहाश्वासः ॥ २५३ ॥

महाश्वास का लक्षण ॥

जिस मनुष्यकी वायु ऊपर लेजाईगईहोकर मतवाले बैलकेसे शब्द के साथ निरन्तर क्लेश सहित निकलती है शास्त्रज्ञान तथा उसके अर्थजानने की शक्ति नष्टहोजाती है नेत्र चंचलहोजाते हैं मुख तथा नेत्र खुले रहतेहैं मल मूत्र रुकजाता है बचनशक्ति नष्टहोजाती है म्लानता तथा अफराहोताहै और श्वासदूरसेसुनाई देताहै उसको महाश्वास कहतेहैंमहाश्वास वाला शीघ्रही मरजाताहै २५३॥

ऊद्र्ध्वश्वासमाह ॥

ऊद्र्ध्वश्वसितियोऽत्यर्थंनचप्रत्याहरत्यधः।श्लेष्मावृतमुखस्रोतःक्रुद्धगन्धवहार्दितः॥ ऊद्र्ध्वदृष्टिर्विपश्यंस्तुविभ्रान्ताक्षइतस्ततः।प्रमुह्यन्वेदनार्त्तश्चशुष्कास्योरतिपीड़ितः ॥ ऊद्र्ध्वश्वासेप्रकुपितेह्यधःश्वासोनिरुद्ध्यते । मुह्यतस्ताम्यतश्चोद्र्ध्वश्वासस्तस्यनिह न्त्यसून् ॥ सर्वेषुश्वासेषुऊद्र्ध्वश्वासोऽत्रअत्यर्थमितिविशेषः।नचप्रत्याहरत्यधःनश्वास मधःकरोति । श्लेष्मावृतेत्यादिश्लेष्मणावृतंयन्मुखंस्रोतांसिचतैःक्रुद्धोयोगन्धवहस्तेना र्दितः ॥ विपश्यत्इतस्ततोविकृतंयथास्यादेवंपश्यन् अधःश्वासोनिरुद्ध्यतेश्वासोनाधः प्रवर्त्ततइत्यर्थः । मुह्यतोमोहंप्राप्नुवतस्ताम्यतोग्लानिंप्राप्नुवतश्चऊद्र्ध्वश्वासः असून् प्राणान्हन्ति २५४ ॥

ऊर्ध्वश्वास का लक्षण ॥

जो मनुष्य अत्यन्त ऊपर को श्वास छोडे नीचे को श्वास न खींचसके कफके द्वारा मुख और स्रोतके बन्द होजाने से कुपित हुई बायुके द्वारा पीडित होय ऊपर दृष्टि वाला भ्रम युक्त नेत्रवाला इधर उधर देखे मोह पड़ा तथा मुख के सूखने से पीड़ित होय और बेचैनी से व्याकुल होय उस का ऊर्ध्वश्वास कहते हैं ऊर्ध्व श्वास के कुपित होने पर नीचेके श्वास रुक जाते हैं मोह तथा ग्लानि युक्त मनुष्य ऊर्ध्व श्वास में मरजाताहै ॥ २५४ ॥

छिन्नमाह ॥

यस्तुश्वसितिविच्छिन्नंसर्वप्राणेनपीड़ितः । नवाश्वसितिदुःखार्त्तोमर्मच्छेदरुजार्दि तः ॥ आनाहंस्वेदमूर्च्छार्त्तोदह्यमानेनवस्तिना । विप्लुताक्षःपरिक्षीणःश्वसन्रक्तैकलो चनः ॥ विचेताःपरिशुष्कास्योविवर्णःप्रलपन्नरः । छिन्नश्वासेनविच्छिन्नःसशीघ्रंविजहा

त्यसून् ॥ विच्छिन्नःसविच्छेदंसर्वप्राणेनसर्वबलेनमर्मच्छेदरुजार्दितः। हृदयशिरश्छेदवेदनयैवपीड़ितः॥ दह्यमानेनवस्तिनाउपलक्षितः। विप्लुताक्षःअश्रुपूर्णनेत्रः॥ विचेताः उद्विग्नचित्तःछिन्नश्वासेनविच्छिन्नः यस्तुश्वसितिविच्छिन्नमित्यादिलक्षणयुक्तोयःसनरः छिन्नश्वासेनविच्छिन्नःपीड़ितोवोद्धव्यःमारकश्चायंछिन्नश्वासः॥ २५५ ॥

छिन्न श्वास का लक्षण ॥

जो मनुष्य पीड़ित होकर पूरेबल से ठहर ठहर कर श्वास लेवे अथवा श्वास न ले तथा कष्ट युक्त होय हृदय तथा मस्तक में छेदने के समान पीड़ासे युक्त होय आनाह स्वेद मूर्च्छा तथा मूत्राशय में दाह से व्याकुल होवे अश्रुपूर्ण तथा रक्त वर्ण नेत्र से युक्त होय बहुत क्षीणता से श्वास छोड़े उद्विग्न चित्त होवे और मुखका सूखना बिवर्णता तथा प्रलापसे युक्तहोय उसको छिन्नश्वास वाला जानना चाहिये इनलक्षणोंसे युक्त रोगी शीघ्रही मरजाताहै॥ २५५॥

तमकश्वासमाह ॥

प्रतिलोमोयदावायुः स्रोतांसिप्रतिपद्यते। ग्रीवांशिरश्चसंगृह्यश्लेष्माणंसमुदीर्य्य च॥ करोतिपीनसंतेनकण्ठेघुर्घुरकंतथा। अतीवतीव्रवेगञ्चश्वासंप्राणप्रपीड़कम्॥ प्रताम्यतिसवेगेनत्रस्यतेसन्निरुध्यते। प्रमोहंकासमानश्चसगच्छतिमुहुर्मुहुः॥ श्लेष्मणामुच्यमानेनभृशंभवतिदुःखितः। तस्यैवचविमोक्षान्तेमुहूर्त्तंलभतेसुखम्॥ तथास्योद्ध्वंसतेकण्ठःकृच्छ्राच्छक्नोतिभाषितुम्। नचापिनिद्रांलभतेशयानःश्वासपीड़ितः॥ पार्श्वेतस्यावगृह्णातिशयानस्यसमीरणः। आसीनोलभतेसौख्यमुष्णञ्चैवाभिनन्दति॥ उच्छ्रिताक्षोललाटेनस्विद्यताभृशमार्तिमान्। विशुष्कास्योमुहुःश्वासोमुहुश्चैवावधम्यते॥ मेघाम्बुशीतप्राग्वातैःश्लेष्मलैश्चविवर्द्धते। सयाप्यस्तमकश्वासःसाध्योवास्यान्नवोत्थितः॥ संगृह्यव्यथयासमुदीर्य्यवर्द्धयित्वा। पीनसंनासास्रावंतेनश्लेष्मणाघुर्घुरं घुर्घुरशब्दंप्राणप्रपीड़कम्॥ प्राणाधिष्ठानहृदयप्रपीड़कम्। प्रताम्यतितमसिप्रविशतीववेगेनश्वासवेगेनसन्निरुध्यतेनिश्चेष्टोभवति। इतिचरकः। सन्निरुध्यतेश्वासइतिजैयटः॥ श्लेष्मणाऽमुच्यमानेनमुखंमुखमिवउद्ध्वंसतेव्यथितोभवतिशयानःशयननिहिताङ्गोऽवगृह्णातिपीड़यतिउष्णञ्चैवाभिनन्दतिइत्यनेनतमकोवातकफारब्धइतिबोद्धव्यः। उच्छ्रिताक्षोऽशूनाक्षःललाटेनस्विद्यताउपलक्षितःअवधम्यतेगजारूढ़स्येवसर्वगात्रञ्चाल्यते॥ तमकस्यैवपित्तानुबन्धजनितज्वरादियोगेनप्रतमकसंज्ञामाह। ज्वरमूर्च्छापरीतञ्चविद्यात्प्रतमकंभिषक्॥ २५६॥

तमक श्वास का लक्षण॥

जबवायु उलटी होकर संपूर्ण स्रोतों में प्राप्त होतीहै और ग्रीवा तथा शिरमें पीड़ा करती हुई कफको बढ़ाकर पीनसको उत्पन्न करतीहै तब उस कफसे रुकीहुई बायु बहुत तीव्र बेगके साथ गलेमें घुर घुर शब्द पूर्वक हृदय में पीड़ा कारी श्वास रोगको उत्पन्न करती है इस्से युक्त होकर

मनुष्य अन्धकार में घुसाहुआसा चेष्टा रहित तथा अत्यन्त तृषा से युक्त होता है बारंबार खांसने से मोहको प्राप्त होताहै कफके न निकलने से बहुत दुःखित होताहै कफके निकल जानेसे कुछदेर सुखको प्राप्त होताहै कंठमें पीड़ासे युक्त होताहै बहुत कष्टसे बोलसक्ता है श्वास से पीड़ित होने के कारण सोने से निद्रानहीं आती है सोने से बायु के द्वारा पसलियों में पीड़ा होती है बैठने से कुछ सुखहोताहै उष्ण बस्तु में इच्छा होतीहै नेत्रोंमें सूजन तथा शिरमें पसीना आताहै मुखसूख जाताहै बहुत पीड़ा होतीहै बहुत श्वास आतेहैं और बारंबार हाथी पर सवार होने के समान शरीर काँपता है मेघ जल शीत पुरवाई हवा और कफ कारी बस्तुओं से यह रोग बढ़ता है यह तमक श्वास याप्य है और नवीन होयतो कभी कभी साध्यभी होता है तमकश्वास वालेको जो ज्वर और मूर्च्छा होवेतो उसको प्रतमक जानना चाहिये ॥ २५६ ॥

तस्यैवापरलक्षणमाह ॥

उदावर्त्तरजोजीर्णक्लिन्नकायनिरोधजः । तमसावर्द्धतेऽत्यर्थंशीतलैश्चप्रशाम्यति ॥ मज्जतस्तमसीवास्यविद्यात्प्रतमकन्तुतम् । उदावर्त्तोरोगविशेषःरजोधूलिःअत्राजीर्णो न्नादिक्लिन्नंविदग्धंकायनिरोधःअंगायोगानांनिरोधःतस्मादुत्पन्नः । अथवाक्लिन्नकायःवृद्ध नरःनिरोधःवेगानान्तु ॥ २५७ ॥

प्रतमकश्वास का अन्य लक्षण ॥

उदावर्त्त रोग नासिका में धूलजाना अजीर्ण वृद्धावस्था तथा मलादि बेगोंके रोकने से प्रतमक श्वास उत्पन्न होता है यह अन्धकार से बहुत बढ़ता है और शीतल बस्तुओंसे शान्त होता है इस रोग से युक्त मनुष्य सदैव अन्धकार में घुसाहुआसा मालूम होता है इसको प्रतमक श्वास कहते हैं॥ २५७॥

क्षुद्रश्वासमाह ॥

रूक्षायासोद्भवःकोष्ठेःक्षुद्रवातमुदीरयन् । क्षुद्रश्वासोनसोऽत्यर्थंदुःखेनांगप्रबाधकः ॥ हिनस्तिनचगात्राणिनचदुःखंयथेतरे । नचभोजनपानानांनिरुणद्ध्युचितांगतिम् ॥ नेन्द्रियाणांव्यथाञ्चापिकाञ्चिदुत्पादयेद्रजम् । ससाध्यउक्तोबलिनःसर्वेचाव्यक्तलक्षणाः ॥ क्षुद्रःअल्पनिदानलिंगः उदीरयन्ऊर्द्ध्वंगच्छन्दुःखःदुःखप्रदःइतरेचत्वारः श्वासाःसर्वे महाश्वासादयोऽपि। अव्यक्तलक्षणाःसन्तःसाध्याः॥ २५८॥

क्षुद्र श्वासका लक्षण ॥

रूखी बस्तुओंके सेवनसे और परिश्रम के द्वारा कोष्ठमें रहने वाली बायु ऊर्ध्वगामी होकर थोड़े निदान तथा लक्षण वाले क्षुद्र श्वास को उत्पन्न करती है यह क्षुद्र श्वास अत्यन्त क्लेशकारी पीड़ा शरीर में नहीं उत्पन्न करता है शरीर को हीन नहीं करता अन्य श्वासों के समान दुःखदाई नहीं होता अन्नपान की यथोचित गतिको नहीं रोकता और इन्द्रियों में पीड़ा तथा अन्य रोगों को नहीं उत्पन्न करता है यह श्वास साध्य है और बलवान् पुरुषों के महा श्वास आदिक संपूर्ण श्वास जो अप्रकट लक्षण वाले होवें तो साध्य हैं ॥ २५८॥

श्वासानांसाध्यत्वादिकमाह ॥

क्षुद्रःसाध्यतमस्तेषांतमकःकृच्छ्रउच्यते। त्रयःश्वासानसिध्यन्तितमकोदुर्बलस्यच॥

कामंप्राणहरारोगाब्रहवोनतुतेतथा। यथाश्वासश्चहिक्काचहरतःप्राणमाशुवै॥ बहवोज्व रादयः। तथायथाश्वासहिक्केहरतोजीवमाशुते॥ २५९॥

श्वास के साध्या साध्य लक्षण॥

क्षुद्र श्वास साध्य है तमक श्वास कष्टसाध्य है महाश्वास ऊर्ध्वश्वास तथा छिन्नश्वास यह तीनों असाध्य हैं और दुर्बल मनुष्य को तमकश्वास भी असाध्य है यद्यपि प्राणनाशक ज्वरादि अनेक रोग हैं परन्तु श्वास तथा हिचकी के समान शीघ्र प्राण नाशक और कोई रोग नहीं है२५९॥

अथ श्वासस्य चिकित्सा॥

श्वासहिक्कातुरंप्रायःस्निग्धैःस्वेदैरुपाचरेत्। युक्तैर्लवणतैलाभ्यांतैरस्यग्रथितःकफः श्वासोविलयमायातिमारुतश्चोपशाम्यति। स्विन्नंज्ञात्वाततश्चैनंभोजयेच्चरसौदनम्॥ स्वरसंशृंगवेरस्यमाक्षिकेणसमन्वितम्। पाययेत्श्वासकासघ्नंप्रतिश्यायकफापहम्॥ शृं गवेरमार्द्रकं। प्रस्थंविभीतकानामस्थिविनासाधयेदजामूत्रे॥ अथावलेहोलीढोमधु सहितःश्वासकासघ्नः॥ देवदारुबलामांसींपिष्ट्वावर्त्तिप्रकल्पयेत्। तांघृताक्तांपिवेद्धूमं श्वासंहन्तिसुदारुणम्॥ दशमूलीशटीरास्नापिप्पलीविश्वपौष्करैः। शृंगीतामलकीभा र्गीगुडूचीनागराग्निभिः॥ यवागूंविधिनासिद्धांकषायंवापिवेन्नरः। श्वासहृद्ग्रहपार्श्वा र्त्तिहिक्काकासप्रशान्तये॥ तामलकीभूम्यामलकी॥ २६०॥

श्वास की चिकित्सा॥

श्वास तथा हिचकी वाले की प्रायः स्निग्ध स्वेदों से चिकित्सा करे नोन तथा तेलको मिलाकर स्वेद देनेसे लिपटा हुआ कफ तथा श्वास नष्ट होता है और बायु शान्त होती है इस प्रकार स्वेद देकर मांसके रसके साथ भातखिलावै अदरक के रसमें सहत डालकर पीने से श्वास खांसी पी- नस तथा कफका नाशहोता है गुठली रहित ६४ तोले बहेडे को लेकर बकरी के मूत्र में पाक करे फिर इसको सहत के साथ चाटने से श्वास तथा खांसीका नाश होता है देव दारु बरियारा तथा जटामांसी को समभाग लेकर पीसकर बत्ती बनावे फिर उसको घीमें डुबोकर उसका धूमपान करे इस्से अत्यन्त भयंकर श्वासका नाश होताहै दशमूल कचूर रासना पीपल सोंठ पुष्करमूल काकड़ा सिंगी भुइँआमला भारंगी गिलोय सोंठ और चीता इन सबका काढ़ा अथवा इनके काढ़ेसे बनीहुई यवागूपीने से श्वास हृदय के रोग पसली की पीड़ा हिचकी तथा खांसीका नाश होताहै॥ २६०॥

दशमूलस्यवाक्काथःपौष्करेणावचूर्णितः। श्वासकासप्रशमनःपार्श्वशूलनिवारणः॥ र म्भाकुन्दशिरीषाणांकुसुमंपिप्पलीयुतम्। पिष्ट्वातण्डुलतोयेनपीत्वाश्वासमपोहति॥ शृ ङ्गीमहौषधकणाघनपौष्कराणाम् चूर्णंशटीमरिचयोश्चसिताविमिश्रम्। क्काथेनपीतम मृतावृषपञ्चमूल्याः श्वासंत्र्यहेणविनिहन्तिहिघोररूपम्॥ पञ्चमूलीतुसामान्यापित्तेयो ज्याकनीयसी। महतीमारुतेदेयासैवदेयाकफाधिके॥ कूष्माण्डकशिफाचूर्णंपीतंकोष्णे नवारिणा। शीघ्रंशमयतिश्वासंकासञ्चापिसुदारुणम्॥ हरिद्रांमरिचंद्राक्षांकणांरास्नां शटींगुडम्। कटुतैलंलिहन्हन्यात्श्वासान्प्राणहरानपि॥ २६१॥

दशमूल के काढ़ेमें पुष्कर मूलके चूर्णको छोड़कर पीनेसे श्वास खांसी और पसली की पीडा का नाश होता है केला कुन्द और सिरस के फूलोंको पीसकर पीपल मिलाय के चावलोंके पानी के साथ पीने से श्वास का नाश होता है काकडासिंगी सोंठ पीपल मोथा पुष्कर मूल कचूर तथा मिर्चको समभाग लेकर इनके चूर्ण में सबकी बराबर मिश्री मिलाकर गिलोय बांसा और पंचमूल इनके काढ़ेके साथ पीने से तीन दिनमें अत्यन्त भयंकर श्वासका नाश होता है जो श्वास में पित्त की अधिकता होय तो छोटा पंचमूल और जो कफ तथा बात की अधिकता होय तो बड़ा पंचमूल लेना चाहिये कुंभड़ेकी जड़के चूर्ण को कुछ गरम जलके साथ पीने से शीघ्रही अत्यन्त भयंकर श्वास तथा खांसीका नाश होता है हल्दी मिर्च दाख पीपल रासना कचूर और गुड़ इन सबको कडुयेतेल के साथ चाटने से प्राण नाशक श्वासका भी नाश होता है ॥ २६१ ॥

शतंसंगृह्यभार्ग्यास्तुदशमूल्यास्तथाशतम् । शतंहरीतकीनाञ्चपचेत्तोयेचतुर्गुणे ॥ पादावशेषेतस्मिंस्तुरसेवस्त्रनिपीड़िते । आलोड्यचतुलांपूतांगुड़स्यत्वभयास्ततः ॥ पुनःपचेत्तुमृद्वग्नौयावल्लेहत्वमेतितत् । शीतेचमधुनस्तत्रषट्पलानिविनिक्षिपेत् ॥ त्रिकटुत्रिसुगन्धञ्चपलमात्रंपृथक्पृथक् । यवक्षारंकर्षयुग्मंसञ्चूर्ण्यप्रक्षिपेत्ततः ॥ भक्षयेद्भयामेकांलेहस्यार्द्धपलंतथा । श्वासंसुदारुणंहन्तिकासंपञ्चविधंतथा ॥ अर्शांस्यरोचकंगुल्मंशकृद्भेदंक्षयंतथा । स्वरवर्णप्रदोह्येषजठराग्नेश्चदीपनः ॥ नाम्नाभार्गीगुडःख्यातोभिषग्भिःसकलैर्मतः । भार्गीगुडः ॥ २६२ ॥

भारंगी दशमूल और हड़ इनको चार २ सौ तोले लेकर चौगुने जलमें पाककरे जब चौथाई बाकी रहै तब उतार कर छानले फिर उसी जलमें ४०० तोले गुड़ और वही हड़ें मिलाकर मन्दाग्नि में पाककरे जब अवलेह बन जाय तब उतारले और शीतल होजानेपर सहत २४ तोले सोंठ पीपल मिर्च दालचीनी इलायची तथा तेजपात चारचार तोले और जवाखार दो तोले यह सब उसमें मिलावै एक हड़ और दो तोले अवलेह रोजखाय इससे भयंकर श्वास पांच प्रकार की खांसी बवासीर अरुचि गोला मलभेद तथा क्षयका नाशहोताहै और स्वर वर्ण तथा जठराग्निकी वृद्धि होतीहै इति भार्गी गुड ॥ २६२ ॥

अष्टाङ्गचूर्णसंयुक्तंछागक्षीरंप्रयोजयेत् । श्वासंकासान्वितंघोरंहन्यादेतन्नसंशयः ॥ दशमूलरसंदेयंश्वासनिर्मूलशान्तये । अवश्यमरणीयोयःजीवेद्वर्षशतंनरः ॥ २६३ ॥

अष्टांग चूर्ण के साथ बकरी का दूधपीने से खांसी सहित भयंकर श्वास का निस्सन्देह नाशहोता है श्वासके निर्मूलशान्तिकेलिये दशमूलकारस पीनाचाहिये इससे जिसकी मृत्यु अवश्यहोती है वहभी सौ बर्षतक जीता है ॥ २६३ ॥

रसोगन्धोविषञ्चापिटङ्कणञ्चमनःशिला । एतानिकर्षमात्राणिमरिचंचाष्टकर्षकम् ॥ कटुत्रयंकर्षयुग्मंपृथगत्रविनिःक्षिपेत् । रसःश्वासकुठारोऽयंसर्वश्वासनिवारणः । इति श्वासकुठाररसःइतिश्वासाधिकारः ॥ २६४ ॥

पारा गन्धक बिष सुहागा और मैनशिल यहसब एक २ तोले मिर्च ८ तोले और सोंठ पीपल

तथा मिर्च दो दो तोले इनसबको पीसकर सेवन करनेसे सबप्रकारके श्वासोंका नाश होताहै इति श्वास कुठाररस इति श्वासाधिकार ॥ २६४ ॥

अथ स्वरभेदाधिकारः। तत्रस्वरभेदस्यनिदानसम्प्राप्तिपूर्वकंलक्षणमाह ॥

अत्युच्चभाषणविषाध्ययनाभिघात सन्दूषणैःप्रकुपिताःपवनादयस्तु । स्रोतःसुतेस्वरवहेषुगताःप्रतिष्ठां हन्युःस्वरंभवतिचापिहि षड्विधःसः ॥ अध्ययनमुच्चैर्वेदादिपाठः अभिघातःकण्ठादिदेशेलगुडादिभिः एतैरत्युच्चभाषणादिभिश्चतुर्भिःसंदूषणैरन्यैरपिनिजैर्दुष्टहेतुभिःस्रोतःसुस्वरवहेषुचतुर्षुप्रतिष्ठांस्थितिंगताःस्वरंहन्युरितिलक्षणंसस्वरभेदः षड्विधः। वातपित्तकफसन्निपातक्षयमेदोभवभेदैः ॥ २६५ ॥

स्वरभेदका अधिकारस्वरभेदका निदान और संप्राप्ति पूर्वक लक्षण ॥

बहुत जोरसे बोलना बिषखाना उच्चस्वरसे वेदआदिक पढ़ना और कंठादिकों में लाठी आदिकी चोट इनकारणों से कुपित बातादिक दोष स्वरके लेचलनेवाले चारों स्रोतोंमें स्थित होकर स्वरको बिगाड़तेहैं स्वरभेद ६ प्रकारकाहै जैसे बातज पित्तज कफज सन्निपातज क्षयज और मेदज॥ २६५ ॥

तत्रवातिकस्वरभेदिनोलक्षणमाह ॥

वातेनकृष्णनयनाननमूत्रवर्चा भिन्नंशनैर्वदतिगर्द्दभवत्स्वरञ्च । पित्तेनाह। पित्तेनपीतनयनाननमूत्रवर्चाब्रूयाद्गले नसचदाहसमन्वितेन । गलदाहवचनसमयएवबोद्धव्यः। कफेनाह। ब्रूयात्कफेनसततंकफरुद्धकण्ठः स्वल्पंशनैर्वदतिचापिदिवाविशेषात्॥ दिवासूर्यरश्मिभिःकफस्याल्पीभावात् । सन्निपातेनाह। सर्वात्मकेभवतिसर्वविकारसम्पत्तञ्चाप्यसाध्यमृषयःस्वरभेदमाहुः । क्षयजमाह । धूम्येतवाक्क्षयकृतेक्षयमाप्नुयाच्चस्यादेवचापिहतवाक्परिवर्जनीयः। वाक्धूम्येतसधूमेवनिःसरतिदावंवाप्नुयाद्वागेव । मेदोभवमाह। अंतर्गलंस्वरमलक्ष्यपदंचिरेण। मेदोऽन्वयाद्वदतिदिग्धगलस्तृषार्तः। अन्तर्गलंगलस्यमध्यएवस्वरंवदति। दिग्धगलःमेदसाश्लेष्मणाचालिप्तगलः ॥ तृषार्त्तः मेदसोष्मणार्त्तवरोधात् ॥ २६६ ॥

बातज स्वर भेद के लक्षण ॥

वातज स्वरभेदमें नेत्र मुख मूत्र तथा मलमें कालापन और धीरे२ गधेकेसमान कर्कश तथा भंग स्वर निकलताहै पित्तज स्वर भेदमें नेत्र मुख मूत्र तथा मलमें पीलापनहोताहै और बोलनेके समय गलेमें पीड़ाहोतीहै कफजस्वरभंगमें गलेमें सदैव कफकेभरेरहनेसे बोलनेकीशक्ति कमहोजातीहै और दिनमेंसूर्यकी किरणोंकेद्वाराकफके कमहोनेसे रात्रिकी अपेक्षा दिनमें धीरे २ कुछअधिक बोलाजाताहै सन्निपातज स्वरभंगमें तीनोंदोषोंके लक्षणहोतेहैं यहस्वरभेद असाध्यहोताहै क्षयजस्वरभेदमें बोलनेकीशक्ति क्षीणहोकरधुंएंसेयुक्त हुआसा बचन थोड़ानिकलताहै यह असाध्यहै मेदज स्वरभंगमें मेद तथा कफकेद्वारा कंठरुकाहुआसा मालूमहोताहै तृषा उत्पन्नहोतीहै और गले के भीतर बहुतदेर में स्पष्टता रहित बचन बोलताहै ॥ २६६ ॥

असाध्यत्वमाह ॥

क्षीणस्यवृद्धस्यकृशस्यचापिचिरोत्थितोयश्चसहोपजातः।मेदस्विनःसर्वसमुद्भवश्च स्वरामयोनैवससिद्धिमेति॥ क्षीणस्यक्षयरोगिणःकृशस्यअपुष्टस्य॥ २६७॥

असाध्य स्वर भेदका लक्षण॥

क्षयरोगी वृद्ध कृश तथा मेदवाले मनुष्यका स्वरभेद अथवा बहुतकालका पुराना या जन्महीसे उत्पन्न हुआ और सन्निपातज स्वरभेद असाध्य होताहै॥ २६७॥

स्वरभेदचिकित्सा॥

वातादिजनितश्वासकासघ्नायेप्रकीर्त्तिताः। योगास्तानत्रयुञ्जीतयथादोषंचिकित्सकः वातेसलवणंतैलंपित्तेसर्पिःसमाक्षिकम्। कफेसक्षारकटुकंक्षौद्रंकवलइष्यते॥ गलेतालु निजिह्वायादन्तमूलेषुचाश्रितः। तेनिष्कृष्यतेश्लेष्मास्वरश्चाशुप्रसीदति॥ आद्येको ष्णंजलंपेयंभुक्त्वाघृतरसौदनम्। क्षीराम्बुपानंपित्तोत्थेपिबेत्सर्पिरतन्द्रितः॥पिप्पलीपिप्प लीमूलंमरिचंविश्वभेषजम्। पिबेन्मूत्रेणमतिमान्कफजेस्वरसंक्षये॥ २६८॥

स्वर भेदकी चिकित्सा॥

बातादि दोष जनित श्वास तथा खांसीके नाश करनेवाले जो योग कहे गयेहैं वही योग दोषके अनुसार स्वर भेदमें भी लेने चाहिये वातज स्वर भेदमें लवण युक्त तेलके द्वारा पित्तजमें सहत युक्त घीके द्वारा और कफज स्वर भेदमें जवाखार तथा त्रिकटु समेत सहतके द्वारा ग्रास लेना चाहिये कंठ तालु जिह्वा तथा दांतोंकी जड़में लगालगा कर ग्रास मुखमें रखना चाहिये इससे कफ निकल जाताहै और स्वर उत्तम होजाताहै वातज स्वरभेद में घी तथा मांसके रसके साथ भात खाकर कुछ उष्ण जल पीना चाहिये पित्तज स्वरभेद में दूधमें जल मिलाकर पीना चाहिये और घी भी पीना चाहिये कफज स्वर भेदमें पीपल पीपलामूल मिर्च और सोंठको गौके मूत्रके साथ पिये॥ २६८॥

निदिग्धिकातुलाग्राह्यातदर्द्धंग्रन्थिकस्यतु। तदर्द्धंचित्रकस्यापिदशमूलञ्चतत्समम्॥ जलद्रोणद्वयेक्वाथ्यंगृह्णीयादाढकंततः। पूतेक्षिपेत्तदर्द्धन्तुपुराणस्यगुड़स्यच॥ सर्वमेकत्र कृत्वातुलेहवत्साधुसाधयेत्। अष्टौपलानिपिप्पल्यास्त्रिजातकपलंतथा॥ मरिचस्यपलं चैकंसर्वमेकत्रचूर्णितम्। मधुनाकुड़वंदत्त्वातदश्नीयाद्यथानलम्॥ निदिग्धिकावलेहोऽ यंभिषग्भिर्मुनिभिर्मतः। स्वरभेदहरोमुख्यःप्रतिश्यायहरस्तथा॥ कासश्वासाग्निमान्द्या दीन्गुल्ममेहगलामयान्। आनाहमूत्रकृच्छ्राणिहन्यात्ग्रन्थ्यर्वुदानिच॥ निदिग्धिकाव लेहः॥ २६९॥

भटकटैया ४०० तोला पीपलामूल २०० तोला चीता तथा दशमूल सौ २ तोला इन सबको २०४८ तोले जलमें पाककरके २५६ तोले बाकी रहनेपर उतारकर छानले फिर १२८ तोले पुराना गुड़ मिलायके अवलेहकासा पाककरे पाक होजाने पर पीपल ३२ तोले दालचीनी इलायची तेज- पात तथा मिर्च चारचार तोले इन सबको पीसकर उसमें मिलावै और १६ तोले सहत मिलावे फिर अग्निके बलके अनुसार इसका सेवन करनेसे स्वर भेद पीनस खांसी श्वास मन्दाग्नि गोला

प्रमेह गलेके रोग आनाह मूत्रकृच्छ्र ग्रंथि और अर्बुद रोगका नाश होताहै इति निदग्धिकावलेह २६९

मृगनाभिःससूक्ष्मैलालवंगकुसुमानिच । त्वक्क्षीरीचेतिलेहोऽयंमधुसर्पिःसमायुतः ॥ वाक्स्तम्भमुग्रं जयतिस्वरभ्रंशसमन्वितम् । मृगनाभ्यादिरवलेहः ॥ २७० ॥

कस्तूरी छोटी इलायची लौंग और वंशलोचन इन सबको सहत और घीके साथ चाटनेसे स्वर-भेद सहित अत्यन्त कठिन वाक्यस्तंभका नाश होताहै इति मृगनाभ्यादि अवलेह ॥ २७० ॥

ब्राह्मीवचाभयावासापिप्पलीमधुसंयुता । अस्यप्रयोगात्सप्ताहात्किन्नरैःसहगीयते ॥ इतिस्वरभेदाधिकारः ॥ २७१ ॥

ब्राह्मी बच हड़ बांसा और पीपल इनको सहतके साथ सात दिन सेवन करनेसे मनुष्य किन्नरों के साथ गानेके योग्य होजाताहै इति स्वर भेदाधिकार ॥ २७१ ॥

अथारोचकाधिकारः । तत्रसनिदानमरोचकमाह ॥

वातादिभिःशोकभयातिलोभक्रोधैर्मनोघ्नाशनरूपगन्धैः । अरोचकाःस्युःपरिहृष्टदन्तः कषायवक्त्रश्चमतोऽनिलेन ॥ अरोचकाःनभोजनेरुचिमुत्पादयन्तीत्यरोचकाव्याधयःप ञ्चवातादिभेदैः । वातिकस्यलक्षणमाह । परिहृष्टदन्तःअम्लभक्षणेनेवपरिहृष्टोदन्तोय स्यसः । तथाकषायवक्त्रःकषायरसंवक्त्रंयस्यसः । पैत्तिकमाह । कट्वम्लमुष्णंविरसञ्चपू तीपित्तेनविद्याल्लवणञ्चवक्त्रम् ।कट्वम्लमित्यादिनाविद्यादित्यनेनपैत्तिकस्यलक्षणमाहुः श्लैष्मिकमाह । यतो विदग्धश्लेष्मास्यलवणभावमुपैतिलवणञ्चवक्त्रम् । तथामाधु र्य्यपैच्छिल्यगुरुत्वशैत्यस्निग्धत्वदौर्गन्ध्ययुतंकफेन। पैच्छिल्यंमुखस्याभ्यन्तरेस्निग्धत्वं वहिः । आगन्तुजमाह । अरोचकेशोकभयातिलोभक्रोधाद्यहृद्याशुचिगन्धजेस्यात् ॥ स्वाभाविकञ्चास्यमथारुचिश्चत्रिदोषजेनेकरसंभवेच्च। क्रोधादिशब्देनाहृद्ययोरशनरूप योर्ग्रहणंस्वाभाविकञ्चअविकृतरसंत्रिदोषजमाह।नैकरसम्अनेकरसमास्यंस्यात् २७२

अरुचिका अधिकार निदान सहित अरुचिका वर्णन ॥

वातादिक दोष शोक भय पीड़ा लोभ क्रोध मनको अप्रिय भोजन रूप तथा गन्धके द्वारा अरुचि उत्पन्न होतीहै वातज पित्तज कफज सन्निपातज और आगन्तुक यह पांच प्रकारकी अरुचि होती है वातज अरुचिमें दन्तहर्ष (खटाई खायेसे हुए दांत) और मुखमें कषैलापन होताहै पित्तजअरुचि में कटु अम्ल तथा लवण रस युक्त उष्ण विरस और दुर्गन्धित मुख रहता है कफज अरुचि में मुख लवण तथा मधुररस युक्त सचिक्कण भारी शीतल तथा दुर्गन्धि युक्त रहताहै और मुखसेबाहर स्निग्ध-ता होतीहै आगन्तुक अरुचिमें शोक भय अत्यन्त लोभ क्रोधादिक और हृदयको अहित भोजन रूप तथा अपवित्र गन्धसे उत्पन्न हुए अरुचि रोगमें मुख स्वाभाविक रहताहै और भोजनमें अरुचि होती है सन्निपातज अरुचिमें कषाय आदिक अनेक रस मुखमें मालूम पड़ते हैं ॥ २७२ ॥

वातजादिभेदेनमुखेविकृतिमभिधायान्यथाविकृतिमाह । हृच्छूलपीड़नयुतंपवनेनपि त्तात्तृड्दाहचोषबहुलंसकफप्रसेकम् । श्लेष्मात्मकंबहुरुजंबहुभिश्चविद्याद्वैगुण्यमोह जड़ताभिरथापरञ्च ॥ हृच्छूलपीड़नयुतंहृदिशूलेनपीड़नंतेनयुतम् । चोषःपार्श्वस्थित

ग्निनेवसन्तापःबहुभिः त्रिभिर्दोषैःबहुरुजम् उक्तंवातादिरोगयुक्तं वैगुण्यंमनसोव्याकुलत्वं । जड़ताशून्यताअपरम् आगन्तुजं ॥ २७३ ॥

वातज आदि भेदोंसे मुखके विकारोंको कहकर अन्यप्रकारके विकारोंको कहतेहैं जैसे वातज अरुचि में हृदयकी पीड़ासे व्याकुलता होतीहै पित्तज अरुचिमें तृषादाह तथा पास रक्खीहुई अग्नि से दाह के समान पीड़ाहोती है कफ अरुचिमें मुखसे कफज निकलता है सन्निपातज अरुचि में कही हुई वातादि रोगोंकी सब पीड़ा होती हैं और आगन्तुक अरुचि में मनकी व्याकुलता मोह तथा जड़ता होती है ॥ २७३ ॥

भक्तद्वेषभक्तछन्दौचरकसुश्रुताभ्यामरोचकत्वेनैवसंगृहीतौ । वृद्धभोजस्तेषांलक्षणानिपृथगाह । प्रक्षिप्तन्तुमुखेचान्नं यत्रनास्वादतेनरः । अरोचकःसविज्ञेयोभक्तद्वेषमतःशृणु ॥ आस्वादतेअन्नस्यमिष्टतांनप्राप्नोति । तदन्नंमिष्टांलगतीतियावत् ॥ चिन्तयित्वातु मनसादृष्ट्वास्पृष्ट्वातुभोजनम् । द्वेषमायातियोजन्तुर्भक्तद्वेषःसउच्यते ॥ कुपितस्यभयार्तस्यतथाभक्तानिरोधिनः । यत्रनान्नेभवेच्छ्रद्धासभक्तच्छन्दउच्यते ॥ २७४ ॥

चरक और सुश्रुतमें भक्तद्वेष और अभक्तच्छन्द को भी अरुचिमें गिनाहै परन्तु वृद्धभोजने इन के लक्षण अलग अलग कहेहैं जैसे जो भोजनकी वस्तु मुखमें रखनेसे उसकी मधुरता न मालूम पड़े उसको अरुचि कहतेहैं किसी वस्तुको मनमें शोचकर देखकर अथवा सुनकर जो उसमें द्वेष होजाताहै उसको भक्त द्वेष कहतेहैं क्रोध युक्त भयभीत अथवा भक्ति रहित मनुष्यकी जो अन्नमें श्रद्धा न होय तो उसे अभक्तच्छन्द कहतेहैं ॥ २७४ ॥

अथारोचकस्यचिकित्सा ॥

भोजनाग्रेसदापथ्यंलवणार्द्रकभक्षणम् । रोचनंदीपनंवह्नेर्जिह्वाकण्ठाविशोधनम् ॥ शृङ्गवेररसंवापिमधुनासहयोजयेत् । अरुचिश्वासकासघ्नंप्रतिश्यायकफापहम् ॥ २७५ ॥

अरुचिकी चिकित्सा ॥

भोजनके पहले सेंधोनोन के साथ अदरख सदैव खानी चाहिये यह रुचिकारी अग्नि दीपक और जिह्वा तथा कंठकी शोधकहै अदरकके रसमें सहत डालकर सेवन करने से अरुचि श्वास खांसी जुकाम तथा कफ का नाश होताहै ॥ २७५ ॥

पक्काम्लीकासिताशीतवारिणावस्त्रगालिता । एलालवङ्गकर्पूरमरिचैरवधूलिता ॥ पानकस्यास्यगण्डूषंधारयित्वामुखेमुहुः । अरुचिंनाशयत्येषपित्तंप्रशमयेत्तथा ॥ अम्लीकापानम् ॥ २७६ ॥

पक्की इमली तथा शक्कर को शीतल जलमें घोलकर वस्त्र में छाने फिर उसमें इलायची लौंग कपूर तथा मिर्च मिलावे इसपन्ने के बारंबार कुल्लेकरनेसे अरुचिका नाशहोकर पित्तकी शान्तिहोती है इति अम्लिकापान ॥ २७६ ॥

राजिकाजीरकौभृष्टौभृष्टंहिंगुसनागरम् । सैन्धवंदधिगोःसर्वंवस्त्रपूतंप्रकल्पयेत् ॥ तावन्मात्रं क्षिपेत्तत्रयथास्याद्रुचिरुत्तमा । तक्रमेतद्भवेत्सद्योरोचनंवह्निवर्द्धनम् ॥ तक्रन्तुगण्यं ॥ २७७ ॥

राई जीरा तथा हींगकोभूनकर चूर्णकरे और सेंधानोन तथा सोंठ मिलाकर सबऔषधियों के बराबर गौकादही मिलावे फिरवस्त्रमें छानकर इसीकेबराबर गौकामट्ठा मिलावे इसके सेवन से रुचि और अग्नि दोनों बढ़तीहैं ॥ २७७

सम्यगावर्तितंदुग्धंनिवद्धंदधिमाहिषम् । एकीकृत्यपटेघृष्टंशुभ्रशर्करयासमम् । एलालवङ्गकर्पूरमरिचैश्चसमान्वितम् ॥ नाम्नाशिखरिणीकुर्याद्रोचिंसकलवल्लभाम् । द्वेपलेदाडिमाम्लस्यखण्डंदद्यात्पलत्रयम् ॥ त्रिसुगन्धिपलंचैकंचूर्णमेकत्रकारयेत् । तच्चूर्णमात्रयाभुक्तमरोचकहरंपरम् । दीपनंपाचनञ्चस्यात्पीनसज्वरकासजित् । (दाडिमादिचूर्णम् ॥ २७८ ॥

गाढ़ेदूध और वस्त्रमेंबँधेहुए भैंसकेदहीको एकसाथ छानकर सुपेद शक्कर इलायची लौंग कपूर और मिर्च मिलावे इस्से अरुचि का नाशहोताहै इसको शिखरनकहतेहैं खट्टाअनार ८ तो० शक्कर१२ तो० और दालचीनी इलायची तथा तेजपात ४ तो० इनसबके चूर्णको मात्राके अनुसार खाने से अरुचिकानाश होताहै और यह चूर्ण दीपन पाचन तथा पीनस ज्वर और खांसी का नाशकहोता है इति दाड़िमादिचूर्ण ॥ २७८ ॥

लवंगकङ्कोलमुशीरचन्दनंनतंसनीलोत्पलकृष्णजीरकम् । जलंसकृष्णागुरुभृंगकेसरंकणाचविश्वानलदंसहेलया ॥ तुषारजातीफलवंशरोचनाःसितार्द्धभागासकलंविचूर्णितम् । सरोचनंतर्पणमग्निदीपनंबलप्रदंवश्यतमंत्रिदोषजित् ॥ उरोविबन्धंतमकंगलग्रहंसकासहिक्कारुचियक्ष्मपीनसम् । ग्रहण्यतीसारमुरःक्षतंनृणांतथाप्रमेहान्निखिलान्निहन्ति ॥ कङ्कोलंसुगन्धविशेषः । नतंतगरम् । जलंबालकंभृङ्गंत्वकनलदमुशीरंतुषारःकर्पूरः । लवङ्गादिचूर्णम् ॥ २७६ ॥

लौंग कंकोल मिर्च खस चन्दन तगर नीलकमल कालाजीरा सुगन्धबाला कालाअगर दालचीनी नागकेशर पीपल सोंठ खस इलायची कपूर जायफल और बंशलोचन इन सब बराबर औषधियों को पीसकर सबकी आधीशक्कर मिलावे इसके सेवनसे रुचि तृप्ति अग्नि तथा बलकी वृद्धि होतीहै और त्रिदोष छातीका अकड़ना तमकश्वास गलग्रह खाँसी हिचकी अरुचि राजयक्ष्मा पीनस ग्रहणी अतीसार उरःक्षत तथा प्रमेहका नाश होताहै और यह चूर्ण अत्यन्त बशीकरणभीकरनेवालाहै इति लवंगादि चूर्ण ॥ २७९ ॥

जवानीदाड़िमंशुण्ठीतिन्तिरीकाम्लवेतसैः ।वदराम्लंचकुर्वीतचतुःशाणमितानिच॥ सार्द्धद्विशाणंमरिचंपिप्पलीदशशाणिका । त्वक्सौवर्चलधान्याकजीरकंद्विद्विशाणिकम्॥ चतुःषष्टिमितैःशाणैःशर्करामत्रयोजयेत् । चूर्णितंसर्वमेकत्रयवानीखाण्डवाभिधम् ॥ चूर्णजयत्पाण्डुरोगंहृद्रोगंग्रहणीज्वरम् । छर्दिशोषातिसारांश्चप्लीहानाहविबन्धताम् ॥ अरुचिंशूलमन्दाग्निमर्शोजिह्वागलामयान् । जवानीखाण्डवंचूर्णम् ॥ इत्यरोचकाधिकारः ॥ २८० ॥

अजवाइन अनार सोंठ इमली अमलवेत तथा बेर सोलह२मासे मिर्च १० मासे पीपल ४०मा० दालचीनी कालानोन धनियां तथा जीरा आठ २ मासे और शक्कर २१ तोले चार मासे इनसब को पीसकर सेवन करने से पांडु हृदय के रोग ग्रहणी ज्वर छर्दि शोष अतीसार प्लीहा आनाह बिबन्ध अरुचि शूल मन्दाग्नि बवासीर और जिह्वा तथा कंठके रोग नष्ट होते हैं इति यवानी खांडव चूर्ण इति अरोचिकाधिकार ॥ २८० ॥

अथ छर्द्यधिकारः। तत्रछर्दिविप्रकृष्टसन्निकृष्टनिदानपूर्विकांसंप्राप्तिमाह ॥

अतिद्रवैरतिस्निग्धैरहृद्यैर्लवणैरपि। अकालेचातिमात्रैश्चयथासात्म्यैश्चभोजनैः॥ आमाद्भयात्तथोद्वेगादजीर्णात्कृमिदोषतः। नार्याश्चापन्नसत्वायास्तथातिद्रुतमश्नतः॥ वीभत्स्यैर्हेतुभिश्चान्यैर्भुक्तमुत्क्लिश्यतेबलात्। आमात् असम्यक्पक्वाद्रसात् अजीर्णाद्यथास्थिताद्भुक्तात् आपन्नसत्वायाः प्राप्तगर्भायाः॥ दुष्टैर्दोषैःपृथक्सर्वैर्वीभत्स्यालोकनादिभिः। छर्दयःपञ्चविज्ञेयाःतासांलक्षणमुच्यते। अन्यैर्वीभत्स्यैर्विकृतैर्हेतुभिःघृणाकारिभिः। अनिष्टश्रवणस्पर्शनदर्शनभक्षणपानैः। उत्क्लिश्यते ॥ २८१ ॥

छर्दिका अधिकार छर्दिके दूरवाले और समीपी कारणों समेत सम्प्राप्ति ॥

बहुत पतली बहुत स्निग्ध हृदय को अहित बस्तु तथा लवणके बहुत खानेसे समय के बिना अथवा बहुत या असात्म्य भोजनसे बहुत जल्दी भोजन करने से आमदोष भय घबराहट अजीर्ण तथा कृमियों के दोषसे स्त्रियों को गर्भ होनेसे और अन्य वीभत्स कारणों से कुपित दोषों के कारण भोजन करी हुई बस्तुकी वमन होती है छर्दि ५ प्रकार की होती है जैसे वातज पित्तज कफज सन्निपातज और आगन्तुक ॥ २८१ ॥

पूर्वरूपमाह ॥

हृल्लासोद्गारसंरोधौप्रसेकोलवणास्यता। द्वेषोऽन्नपानेचभृशंवमीनांपूर्वलक्षणम् २८२

छर्दिका पूर्व रूप ॥

छर्दि होनेके पहले मतली डकारका रुकना मुख से जल निकलना मुखका नमकीन होना और अन्नपान में द्वेष यह लक्षण होते हैं ॥ २८२ ॥

छर्देःसामान्यंलक्षणमाह ॥

छादयन्नाननंवेगैरर्दयन्नङ्गभञ्जनैः। निरुच्यतेछर्दिरितिदोषोवक्त्रंप्रधावितः॥ छादयन् पूरयन् अङ्गभञ्जनैः अंगभेदैः अर्दयन् अङ्गानि। पीड़ियन्वक्त्रंप्रधावितःदोषःछर्दिरित्युच्यते ॥ २८३ ॥

छर्दिका सामान्य लक्षण ॥

जिस रोगमें दोष वेग तथा शरीरमें पीड़ा सहित ऊपर मुखकी ओर दौड़ता हुआ मुखको पूर्ण करके बाहर को निकलता है उसको छर्दि कहते हैं ॥ २८३ ॥

वातजाया लक्षणमाह ॥

हृत्पार्श्वपीड़ामुखशोषशीर्षनाभ्यार्तिकासस्वरभेदतोदाः। उद्गारशब्दप्रबलंसफेनंवि

च्छिन्नकृष्णंतनुकंकषायम् ॥ कृच्छ्रेणचाल्पंमहताचवेगेनार्तोऽनिलाच्छर्दयतीवदुःखम् । कषायंकषायरसमूदुःखमिवछर्दयति ॥ २८४ ॥

बातज छर्दिका लक्षण ॥

बातज छर्दिमें हृदय पसली मस्तक तथा नाभिमें पीड़ा मुखका सूखना खांसी स्वरभंग सुई चुभनेकीसी पीड़ा बहुत शब्द के साथ डकार और अत्यन्त कष्ट तथा वेग सहित फेने समेत उष्ण कषैले पतले पदार्थ की थोड़ीसी बमन होती है ॥ २८४ ॥

पित्तजामाह ॥

मूर्च्छापिपासामुखशोषमूर्द्धताल्वक्षिसन्तापतमोभ्रमार्त्तः। पीतंभृशोष्णंहरितञ्चतिक्तं धूम्रञ्चपित्तेनवमेत्सदाहम् ॥ २८५ ॥

पित्तज छर्दिका लक्षण ॥

पित्तकी छर्दिमें मूर्च्छा तृषा मुखका सूखना अन्धकारसा मालूम होना भ्रम मस्तक तालु तथा नेत्रोंमें दाह और दाह सहित हर एककाले अथवा रक्तवर्ण अत्यन्त उष्ण तिक्त रसयुक्त पतले पदार्थ की बमन होती है ॥ २८५ ॥

कफजामाह ॥

तन्द्रास्यमाधुर्यकफप्रसेकसन्तोषनिद्रारुचिगौरवार्त्तः । स्निग्धंघनंस्वादुकफाद्विशुद्धंसलोमहर्षोऽल्परुजंवमेत्तु ॥ सन्तोषस्तृप्तिः ॥ २८६ ॥

कफकी छर्दिका लक्षण ॥

कफकी छर्दिमें तन्द्रा मुखकी मधुरता कफका बहना तृप्ति निद्राकी अधिकता रोमांच अरुचि तथा शरीरमें भारीपन होताहै और थोड़ी पीड़ा सहित स्निग्ध घने तथा मधुर रसयुक्त श्वेत पदार्थ की बमन होती है ॥ २८६ ॥

त्रिदोषजमाह ॥

शूलाविपाकारुचिदाहतृष्णाश्वासप्रमोहप्रबलाप्रसक्ता । छर्दिस्त्रिदोषाल्लवणाम्ल नीलसान्द्रोष्णरक्तंवमतान्नृणांस्यात् ॥ २८७ ॥

त्रिदोषज छर्दिका लक्षण ॥

त्रिदोषज छर्दिमें शूल भोजनका न पचना अरुचिदाह तृषा श्वास तथा मोह होता है और घने, उष्ण नील तथा रक्त वर्ण लवण तथा अम्ल रसयुक्त पदार्थ की सदैव बमन होती है ॥ २८७ ॥

आगन्तुजामाह ॥

असात्म्यजाचकृमिजामजाचवीभत्सजादौहृदजाचयाहि । सापञ्चमीताश्चविभावयेद्दोषोच्छ्रयेणैवयथोक्तमादौ ॥ एताःपञ्चाप्यागन्तुजत्वेनसात्म्यादेकैव । अतएव सागन्तुजापञ्चमीविभावयेत्अनुबन्धयेत् ॥ २८८ ॥

आगन्तुज छर्दिका लक्षण ॥

आगन्तुज छर्दि पांच प्रकार की है जैसे असात्म्यज कृमिज आमज वीभत्सज और गर्भज यह पांचों प्रकार की छर्दि पहले कहेहुए बातज आदि छर्दियों के लक्षणोंके अनुसार दोषोंकी अधिकता से जाननी चाहिये ॥ २८८ ॥

उपद्रवानाह ॥

कासश्वासज्वरस्तृष्णाहिक्कावैचित्यमेवच। हृद्रोगस्तमकश्चैवज्ञेयाश्छर्दैरुपद्रवाः ॥ वैचित्यंविकृतचित्तत्वंतमकोऽत्रतमः श्वासपदेनैवतमकाख्यस्याविश्वासस्योक्तेः २८९ ॥

छर्दिके उपद्रव ॥

खांसी श्वास ज्वर तृषा हिचकी घबराहट हृदयकेरोग अन्धकारसा मालूम होना यहसब छर्दिके उपद्रव हैं ॥ २८९ ॥

असाध्यांसाध्याश्चाह ॥

क्षीणस्ययाछर्दिरतिप्रसक्तासोपद्रवाशोणितपूययुक्ता। सचन्द्रिकान्ताप्रवदन्त्यसाध्यांसाध्याश्चिकित्सेन्निरुपद्रवांच ॥सचन्द्रिकांमयूरपिच्छचन्द्रिकाप्रभायुक्ताम् २९० ॥

साध्यासाध्य छर्दिके लक्षण ॥

जो क्षीण पुरुषको उपद्रव सहित रुधिर तथा पीवसे मिलीहुई मोरकी पूंछके समान वर्णयुक्त सदैव वमन होय वह असाध्यहै औरजो उपद्रव सहित न होय तो साध्यहै ॥ २९० ॥

अथ छर्दिश्चिकित्सा ॥

आमाशयोत्क्लेशभवाहिसर्व्वाछर्द्योमतालंघनमेवतस्मात्। विधीयतेमारुतजांविनातुसंशोधनंवाकफपित्तहारि ॥ हन्यात्क्षीरोदकंपीतंछर्दिःपवनसम्भवाम्। मुद्गामलयूषोवाससर्पिष्कःससैन्धवः ॥ (क्षीरोदकंनाशितस्यक्षीरस्योदकम्) गुडूचीत्रिफलानिम्बपटोलैःक्वथितंजलम्। पिबेन्मधुयुतंतेनछर्दिर्नश्यतिपित्तजा ॥ हरीतकीनांचूर्णन्तुलिह्यान्माक्षिकसंयुतम्। अधोमार्गीकृतेदोषेछर्दिःशीघ्रंनिवर्तते ॥ विडङ्गत्रिफलाविश्वाचूर्णमधुयुतंजयेत्। विड़ङ्गप्लवशुण्ठीनांचूर्णंवाकफजांवमिम् ॥ (प्लवंकैवर्त्तमुस्तकंगुड़तजीइतिलोके) पिष्ट्वाधात्रीफलंलाजान्शर्कराश्चपलोन्मिताम्। दत्वामधुपलञ्चापिकुड़वंसलिलस्यच ॥ वाससागालितंपीतंहन्तिछर्दिंत्रिदोषजाम्। गुड़ूच्यारचितंहन्तिहिमंमधुसमन्वितम् ॥ दुर्निवारामपिछर्दिंत्रिदोषजनितांबलात् ॥ २९१ ॥

छर्दिकी चिकित्सा ॥

सब प्रकारकी छर्दि आमाशयमें दोषके इकट्ठे होनेसे उत्पन्न होतीहै इसलिये इसमें वमन कराना चाहिये परन्तु वातज छर्दिमें वमन न करानी चाहिये इसके उपरान्त कफ पित्तनाशक संशोधन औषध देनी चाहिये फटेहुये दूधका पानी अथवा मूंग और आमलेका यूष घी डालकर पीनेसे वातकी छर्दि का नाशहोताहै गिलोय त्रिफला नींब और परवलके काढ़ेमें सहत डालकर पीनेसे पित्तकी छर्दिका नाशहोताहै हड़के चूर्णको सहतके साथ चाटनेसे दोष नीचेको जाताहै इसलिये छर्दि शीघ्रही निवृत्त होजातीहै बायबिड़ंग त्रिफला और सोंठको सहतके साथ चाटने से अथवा बायबिड़ंग नागरमोथा सोंठ इनके चूर्णको सहतके साथ चाटनेसे कफकी छर्दिका नाशहोताहै आमला खील तथा शक्कर यहसब चारतोले लेकर और इनके साथ चारतोले सहत मिलाकर सोलहतोले जलमें छानकर पीनेसे सन्निपातज छर्दिका नाश होताहै गिलोयके शीत कषायमें सहत डालकर पीनेसे कृच्छ्र साध्य भी त्रिदोषज छर्दिका शीघ्र नाश होताहै ॥ २९१ ॥

एलालवङ्गगजकेसरकोलमज्जालाजाप्रियंगुघनचन्दनपिप्पलीनाम्। चूर्णानिमाक्षिकसितासहितानिलीढ्वाछर्दिंनिहन्तिकफमारुतपित्तजाताम्॥ (एलादिचूर्णम्॥ २९२॥

इलायची लौंग नागकेशर बेरकीगिरी खील मालकांगनी मोथा चन्दन और पीपल इनसबको चूर्णकरके सहतकेसाथ चाटनेसे वात पित्त और कफकीछर्दिकानाशहोताहै इति एलादि चूर्ण २९२॥

अश्वत्थवकुलंशुष्कंदग्धंनिर्वापितंजले।तज्जलंपानमात्रेणछर्दिंजयतिदुर्जयाम्॥पथ्यात्रिकटुधान्याकजीरकाणांरजोलिहन्। मधुनानाशयेच्छर्दिमरुचिञ्चत्रिदोषजाम्॥विल्वत्वचोगुडूच्यावाक्वाथःक्षौद्रेणसंयुतः। छर्दिंत्रिदोषजांहन्तिपर्पटःपित्तजांतथा। आम्रास्थिविल्वनिर्यूहःपीतःसमधुशर्करः। निहन्याच्छर्द्यतीसारंवैश्वानरइवाहुतिम्॥ निर्यूहः क्वाथः। जम्ब्वाम्रपल्लवशृतंलाजरजःसंयुतंशीतम्। शमयतिमधुनायुक्तंवमिमतिसारतृषामुग्राम्॥ २९३॥

पीपलकी सूखी छालको जलाकर पानीमें बुझावे इसपानीके पीनेसे दुस्साध्य छर्दिकाभी नाश होजाताहै हड़ त्रिकटु धनियाँ तथा जीरा इनको पीसकर सहतकेसाथ चाटनेसे त्रिदोषज छर्दि तथा अरुचिका नाश होताहै बेलकी छाल अथवा गिलोयके काढ़ेमें सहत डालकर पीनेसे त्रिदोषज छर्दिका नाश होताहै और पित्तपापड़ेके काढ़ेमें सहत डालकर पीनेसे पित्तकी छर्दिका नाश होता है आमकी गुठली और बेलके काढ़ेमें सहत और शक्कर डालकर पीनेसे छर्दि और अतीसारका नाशहोता है जामन और आमके पत्तोंके काढ़ेको शीतल करके और खील तथा सहत डालकर पीने से बहुत भयंकर छर्दि अतीसार तथा तृषाका नाश होता है॥ २९३॥

बीभत्सजांहृद्यतमैरिष्टैर्दौर्हृदजांफलैः।लङ्घनैरामजांछर्दिंजयेत्सात्म्यैरसात्म्यजाम्॥ कृमिहृद्रोगवद्धन्याच्छर्दिंकृमिसमुद्भवाम्। तत्रतत्रयथादोषंक्रियांकुर्याच्चिकित्सकः॥ सोद्गारायांभृशंछर्द्यांमूर्वायाधान्यमुस्तयोः। समधूकाञ्चनंचूर्णंलेहयेन्मधुसंयुतम्॥ सौवर्चलमज्याजांचशर्करामरिचानिच। क्षौद्रेणससंतंलीढंसद्यश्छर्दिंनिवारणम्॥ (छर्द्यधिकारः॥ २९४॥

बीभत्सजछर्दि हृदयकी हितकारी बस्तुओंसे गर्भजछर्दि अभीष्ट फलोंसे आमजछर्दि लंघनोंसे और असात्म्यजछर्दि सात्म्य बस्तुओंसे निवृत्त होती है कृमिजछर्दिकी चिकित्सा कृमि तथा हृदयके रोगोंके समान करनी चाहिये वैद्यको दोषके अनुसार बिचारकर चिकित्सा करनी चाहिये बहुत डकार सहित छर्दिके होनेपर मरोरफली धनियां मोथा मुलहठी और रसौतको सहतके साथ चाटे कालानोन जीरा शक्कर और मिर्च इनको सहतके साथ चाटनेसे शीघ्रही छर्दिका नाशहोता है इति छर्दि अधिकार॥ २९४॥

अथ तृष्णाधिकारः। तत्रतृष्णायाःनिदानपूर्विकांसम्प्राप्तिमाह॥

भयश्रमाभ्यांबलसंक्षयाद्वाऊर्ध्वंचितंपित्तविवर्द्धनैश्च। पित्तंसवात्तंकुपितंनराणांतालुप्रपन्नंजनयेत्पिपासाम्॥ स्रोतःस्वपांवाहिषुदूषितेषुदोषैश्चतृदसम्भवतीहजन्तोः। तिस्रःस्मृतास्ताःक्षतजाचतुर्थीक्षयात्तथान्यामसमुद्भवाच॥ भक्तोद्भवासप्तमिकेतितासांनि

बोधलिङ्गान्यनुपूर्वशस्तु ॥ नराणांपित्तंस्वस्थानएवसञ्चितंपित्तंसवातम् । पित्तविवर्द्धनैः कट्वम्लोष्णादिभिःकुपितात् । भयश्रमाभ्यांबलसंक्षयादुपवासापिदेश्चवातःकुपित तद्द्वयमूर्ध्वंप्राप्तंऊर्ध्ववशात्पिपासां जनयेत्नकेवलंतालुन्येवदूषितेतृषाभवतिकिन्तुजलवाहिस्रोतःस्वपि। अतआहस्रोतःस्वित्यादिमन्वत्रबहुवचनंनयुक्तंयतोजलवहेद्वेस्रोतसीसुश्रुतेनोक्ते । उच्यते । तयोरेवानेकप्रतानयोगान्नदोषःअपांवाहिषुस्रोतःस्वितिजिह्वादेरप्युपलक्षणम्। यतआह। चरकः ॥ रसवाहिनीश्चधमनीर्जिह्वाहृदयगलतालुक्लोमसंशोषान्।नृणांदेहेषुकुरुतस्तृष्णामतिबलांपित्तानिलाविति॥संख्यामाह। तिस्रइत्यादि २९५॥

तृषाकाअधिकार तृषाकी निदान पूर्वक संप्राप्ति ॥

भय परिश्रम बलकाक्षय और पित्तबर्द्धक कटुअम्ल तथा उष्णादि वस्तुओंकेद्वारा कुपितहुए पित्त और बायु ऊर्ध्वगामी होकर तालुमें जातेहैं तब तृषा उत्पन्न होतीहै दूषित दोषोंके द्वारा जलके जाने वाले स्रोतों केदूषित होजानेपर तृषा उत्पन्नहोतीहै तृषा ७ प्रकारकी है जैसे बातज पित्तज कफज क्षतज क्षयज आमज और अन्नज अब यह सन्देह होताहै कि सुश्रुत में जलके जाने के दो स्रोतकहे गयेहैं तो यहाँ बहुवचन क्योंकहा इसका उत्तर यहहै कि दोहोनेपर भी बहुत शाखाओंके विस्तारसे बहुवचन कहागयाहै यहाँ जलके बहनेवाले स्रोत कहनेसे चरकके वचनके अनुसार जिह्वा हृदय कंठ तालु तथा क्लोमकाभी ग्रहणहोताहै अर्थात् बात और पित्त कुपित होकर इनस्थानोंमें भी स्थित होकर तृषाको उत्पन्न करतेहैं २९५ ॥

तृष्णायाःसामान्यंलक्षणमाह ॥

ताल्वोष्ठकण्ठास्यचतोददाहौसन्तापमोहौभ्रमविप्रलापाः ।सर्वाणिरूपाणिभवन्तितस्यामुत्पत्तिकालेतुविशेषतोहि ॥ २९६ ॥

तृषाका सामान्य लक्षण ॥

तालु ओठ कंठ तथा मुखमें पीड़ा और दाह होताहै और सन्ताप मोह भ्रम तथा प्रलाप होताहै यहसब लक्षण तृषाके उत्पन्न होनेके समय होते हैं ॥ २९६ ॥

वातजामाह ॥

क्षामास्यतामारुतसम्भवायान्तोदस्तथाशङ्खशिरःसुचापि । स्रोतोनिरोधोविरसश्चवक्त्रंशीताभिरद्भिश्चविवृद्धिमेति ॥ शङ्खःशिरःसुशङ्खयोःशिरसिचस्रोतोनिरोधःरसाम्बुवाहिनीधमनीनिरोधः ॥ २९७ ॥ बातज तृषाका लक्षण ॥

बातज तृषामें मुखकी मालिनता तथा विरसता माथेकी हड्डी तथा शिरमें पीड़ा और रस तथा जल के जानेकी नाड़ियों का रुकना यह लक्षण होते हैं और शीतल जल के सेवन से यह अधिक बढ़ती है ॥ २९७ ॥

पित्तजामाह ॥

मूर्च्छान्नविद्वेषविलापदाहारक्तेक्षणत्वंप्रततश्चशोषः । शीताभिनन्दामुखतिक्तताच पित्तात्मिकायांपरिधूपनञ्च ॥ विलापःप्रलापः प्रततश्चशोषः अविरतःशोषः शीताभिनन्दाशीतेच्छापरिधूपनंकण्ठाद्धूमनिर्गमइति ॥ २९८ ॥

पित्तज तृषाका लक्षण ॥

पित्तज तृषामें मूर्च्छा अन्नमें द्वेष प्रलाप दाह नेत्रोंका लालहोना मुखका अधिक सूखना शीतकी इच्छा मुखमें तीतापन गलेसे धुयेंका निकलना यहलक्षण होते हैं॥ २९८ ॥

कफजमाह ॥

वाष्पावरोधात्कफसंवृतेऽग्नौतृष्णावलासेनभवेन्नरस्य । निद्रागुरुत्वंमधुरास्यताच तयार्दितःशुष्यतिचातिमात्रम्॥ अग्नौजठराग्नौकफसंवृतेस्वकारणकुपितेनकफेनोपरि ष्टाच्छादिनेवाष्पावरोधात्अग्नेरूष्मावरोधात्अवरुद्धानलोष्मणाम्बुवहः स्रोतःशोषणा त्वलासेनकफेननरस्यतृड्भवेत्तथातृष्णयाऽर्दितःपीड़ितःशुष्यतिकृशोभवति २९९ ॥

कफकी तृषाके लक्षण ॥

अपने कारणोंसे कुपित कफ जठराग्निको आच्छादित करता है और अग्निकी ऊष्माको रोकता है फिर रुकीहुई ऊष्माके द्वारा जलके जानेवाले श्रोतोंके सूखजाने से कफकी तृषा उत्पन्न होती है इसमें अधिक निद्रा भारीपन मुखमें मधुरता तथा बहुत कृशता होती है ॥ २९९ ॥

क्षतजामाह ॥

क्षतस्यरुक्शोणितनिर्गमाभ्यांतृष्णाचतुर्थीक्षतजामतातु।क्षतस्यशस्त्रादिक्षतयुक्तस्य रुक्पीड़ा ॥ ३०० ॥

क्षतज तृषाका लक्षण ॥

शस्त्रआदिकेद्वारा घावयुक्त मनुष्यकोपीड़ा औररुधिर निकलनेके कारणक्षतजतृषाउत्पन्न होतीहै ३००

क्षयजामाह ॥

रसक्षयाद्याक्षयसम्भवासातयाभिभूतस्तुनिशादिनेषु । पेपीयतेऽम्भःसमुखंनयातितां सन्निपातादितिकेचिदाहुः ॥ रसक्षयोक्तानिचलक्षणानितस्यामशेषेणभिषग्व्यवस्येत् । रसक्षयलक्षणानिसुश्रुतेनोक्तानिरसक्षयेहृत्पीड़ाकम्पःशोषः शून्यतातृष्णा चेतिव्यवस्येत जानीयात् ॥ ३०१ ॥

क्षयज तृषाका लक्षण ॥

रसके क्षयहोने से जो तृषा उत्पन्न होती है उसको क्षयज तृषा कहते हैं क्षयजतृषा में रात्रि दिन जलपीनेसे भी तृप्ति नहीं होती और रसक्षयके संपूर्ण लक्षण मिलते हैं कोई २ इसको सन्निपातजतृषा भी कहते हैं रसक्षय के लक्षण सुश्रुत के कहे हुये यह हैं जैसे हृदय में पीड़ा कंप मुखका सूखना शून्यता और तृषा ॥ ३०१ ॥

आमजामाह ॥

त्रिदोषलिङ्गामसमुद्भवाचहृच्छूलनिष्ठीवनसादकर्त्री ॥ ३०२ ॥

आमज तृषाके लक्षण ॥

आमज तृषामें सन्निपातके चिह्न होते हैं और हृदय में पीड़ाथुकथुकी तथा शरीर में शिथिलता होती है ॥ ३०२ ॥

भुक्तोद्भवामाह ॥

स्निग्धंतथाम्लंलवणञ्चभुक्तंगुर्वन्नमेवाशुतृषांकरोति । लवणञ्चेतिचकारात्कटुच ३०३॥

अन्नज तृषाकालक्षण ॥

स्निग्ध अम्ल लवण कटु और भारी वस्तुओं के सेवन से शीघ्रही तृषा उत्पन्न होती है इसको अन्नजा तृषा कहते हैं ॥ ३०३ ॥

उपसर्गजामाह ॥

हीनस्वरःप्रताम्यन्दीनाननहृदयशुष्कगलतालुः । भवतिखलुसोपसर्गात्तृष्णासाशोषिणीकष्टा ॥ शोषिणीधातुशोषिणी ॥ ३०४ ॥

उपद्रवजतृषाके लक्षण ॥

जिस तृषामें स्वरकी क्षीणता मूर्छा तथा ग्लानि होय और मुख हृदय तथा तालु सूखजाय वह धातुओंकी सुखानेवाली तृषा उपद्रव सहित कष्टसाध्य होतीहै ॥ ३०४ ॥

उपसर्गानाह । तद्युक्तायाःअरिष्टत्वञ्चाह ॥

ज्वरमेहक्षयकासश्वासाद्युपसृष्टदेहानां । सर्वास्त्वतिप्रसक्तारोगकृशानांवमिप्रसक्तानां ॥ घोरोपद्रवयुक्तातृष्णामरणायविज्ञेया । आदिशब्दादतीसारादीनांग्रहणम् ॥ अतिप्रसक्ताःनितरांघोरोपद्रवयुक्ताःअतीवमुखशोषादियुक्ताः ॥ ३०५ ॥

तृषाके उपद्रव और अरिष्ट ॥

ज्वर प्रमेह क्षय खांसी तथा श्वास तथा अतीसारादिसे युक्त मनुष्योंकी अत्यन्त उपद्रव सहित संपूर्ण तृषाओंररोगसेकृश तथा छर्दिसे व्याकुल मनुष्योंकी घोर उपद्रव युक्ततृषामृत्युकारीहोतीहै ३०५॥

अथ तृष्णायाश्चिकित्सा ॥

वातघ्नमन्नपानंमृदुलघुशीतञ्चवाततृष्णायाम् । तृष्णायांपवनोत्थायांसगुडंदधिशस्यते ॥ स्वादुतिक्तंद्रवंशीतंपित्ततृष्णापहंपरम् । मुस्तपर्पटकोदीच्यछत्राख्योशीरचन्दनैः ॥ शृतंशीतंजलंदद्यात्तृट्दाहज्वरशान्तये । छत्राधान्यकंकश्चिद्धात्रीञ्चदद्यात्चन्दनमत्रधवलंतस्यातितृष्णाहरत्वात्शृतमर्द्धपक्वमत्रकर्त्तव्यम् । षड़ङ्गपानम् ॥ ३०६ ॥

तृषाकी चिकित्सा ॥

बातजतृषामें बातनाशक कोमल हलकी तथा शीतल वस्तुओंके द्वारा चिकित्सा करनी चाहिये और इसमें गुड़सहित दहीखाना श्रेष्ठहै पित्तज तृषामें मधुर तिक्त पतली तथा शीतल वस्तु हितकारी हैं मोथा पित्तपापड़ा सुगन्धबाला धनियाँ खस और चन्दन इनके द्वारा जलको पाककरने पर जब आधारहै तब शीतल करके पीनेसे तृषा दाह तथा ज्वर शान्त होताहै इति षड़ंगपानीय ॥ ३०६ ॥

लाजोदकंमधुयुतंशीतंगुड़विमर्दितम् । काश्मरीशर्करायुक्तंपिवेत्तृष्णार्दितोनरः॥ ३०७॥

खीलोंके द्वारा पाक कियेहुए जल में शीत होजानेपर सहत गुड़ गंभारी और शक्कर छोड़कर पीनेसे तृषाका नाश होताहै ॥ ३०७ ॥

आस्तरणमार्द्रवासप्रावरणञ्चार्द्रवासःस्यात् । तेनपिपासाशाम्यतिदाहश्चोग्रोऽपिदेहिनांनियतं ॥ गोस्तनीक्षुरसक्षीरयष्टीमधुमधुत्पलैः । नियतंनासिकापीतेतृष्णाशाम्यतिदारुणा ॥ वैशद्यंजनयत्यास्येसंदधातिमुखेजलम् । तृष्णादाहप्रशमनंमधुगण्डूषधारणम् ॥ जिह्वातालुगलक्लोमशोषेमूर्ध्निनिधापयेत् । केशरंमातुलुङ्गस्यघृतसैन्धवसंयुतम्॥

दाड़िमंबदरंलोध्रं कपित्थंवीजपूरकम् । पिष्ट्वामूर्द्धिनिलेपस्तु पिपासादाहनाशनः ॥ वारिशीतंमधुयुतमाकण्ठाद्वापिपासितम् । पाययेद्वामयेच्चाथतेनतृष्णाप्रशाम्यति ॥ प्रातःशर्करयोपेतःक्काथोधान्याकसम्भवः । जयेत्तृष्णांतथादाहभवेत्स्रोतोविशोधनम् ॥ आमलंकमलंकुष्ठंलाजश्चवटरोहकम् । एतच्चूर्णस्यमधुनागुटिकांधारयेन्मुखे ॥ तृष्णांप्रवृद्धांहन्त्येषामुखशोषञ्चदारुणम् ॥ ३०८ ॥

गीले वस्त्रके ओढ़नेओर बिछानेसे तृषा तथाअत्यन्त दाहका नाश होताहै दाखईखकारसदूधमुलहठी सहत और कमलकाफूल इनसब बस्तुओंको पीसकर नासिकाकेद्वारा पीनेसे तृषाका नाश होताहै मुखमें सहतका कुल्ला रखनेसे तृषा तथा दाहका नाशहोता है और मुख में निर्म्मलता होकर जल आताहै जिह्वा तालु कंठ तथा क्लोमके सूखनेपर नींबूकाजीरा घी और सेंधानोन इनसबको मस्तक पर लेपकरे अनार बेर लोध कैथा और बिजौरा नींबू इनसबको पीसकर शिरपर लेपकरनेसे तृषा तथा दाहका नाशहोताहै सहतयुक्त शीतल जल गलेतक पिलाकर बमन करानेसे तृषाका नाशहोताहै धनियेके काढ़ेमें शक्कर डालकर प्रातःकाल पीनेसे तृषा तथा दाहका नाशहोताहै और स्रोत शुद्ध होतेहैं आमला कमल कूट खील और बर्गदके अंकुर इनसबको पीसकर सहतके साथ गोली बनाकर मुखमें रखनेसे तृषा तथा मुखके सूखनको नाश होताहै ॥ ३०८ ॥

क्षतोद्भवांरुग्विनिवारणेनजयेद्रसानामसृजश्चपातैः । क्षयोत्थितंक्षीरजलंनिहन्यान्मांसोदकंवामधुरोदकंवा ॥ आमोद्भवांविल्ववचायुतानांजयेत्कषायैरथदीपनानाम् । गुर्वन्नजामुल्लिखनैर्जयेच्चक्षयंविनासर्वकृताञ्चतृष्णाम् ॥ उल्लिखनैःलेखनद्रव्यैःस्निग्धेऽन्नेभुक्तेयातृष्णास्यात्तांगुड़ाम्बुनाशमयेत् । अतिरोगदुर्बलानांतृष्णांशमयेन्नृणामिहाशुपयः ॥ पयोन्नदुग्धं ॥ ३०९ ॥

क्षतजतृषाके नाशकरनेके लिये मांसरस और रुधिरका पानकरे क्षयजतृषामें जल मिलाहुआ दूध मांसकारस अथवा मधुर जल पिये आमजतृषाके दूरकरनेके लिये बेल तथा बचके द्वारा क्वाथ बनाकर पिये यह दीपनहै भारी भोजनसे उत्पन्न हुई तृषामेंलेखन बस्तुओं से चिकित्सा करे क्षयज तृषाको छोड़कर सबप्रकारकी तृषा लेखन बस्तुओं से निवृत्त होती हैं स्निग्ध भोजन करनेसे जोतृषा उत्पन्न होतीहै वह गुड़के शर्बत पीनेसे शान्त होतीहै रोगके द्वारा अत्यन्त दुर्बल मनुष्योंकी तृषा दूध पीनेसे निवृत्त होती है ॥ ३०९ ॥

मूर्च्छाछर्दितृषानाहस्त्रीमद्यभृशकर्षिताः । पिबेयुःशीतलंतोयंरक्तपित्तेमदात्यये ॥ सात्म्यान्नपानभैषज्यैस्तृष्णांतस्यजयेत्पुनः । तस्यांजितायामन्योऽपिव्याधिःशक्यश्चिकित्सितुम् ॥ तृषंपूर्वामपक्षीणेनलभेतजलंयदि ॥ मरणंदीर्घरोगंवाप्राप्नुयात्त्वरितंनरः । तृषितोमोहमायातिमोहात्प्राणान्विमुञ्चति । तस्मात्सर्व्वास्ववस्थासुनक्कचिद्वारिवारयेत् ॥ अन्नेनापिविनाजन्तुःप्राणान्धारयतेचिरम् । तोयाभावात्पिपासार्त्तःक्षणात्प्राणैर्विमुच्यते ॥ इति तृष्णाधिकारः ॥ ३१० ॥

मूर्च्छा छर्दि तृषा आनाह रक्त पित्त और मदात्यय रोगवालोंको और मद्य तथा मैथुनसे कृशमनुष्यों

को शीतल जल पिलाना चाहिये सात्म्य अन्नपान तथा औषधोंके द्वारा पहले तृषाको दूरकरे क्योंकि तृषाके निवृत्त होजानेपर अन्य रोगकी चिकित्सा होसक्ती है प्यासेको जो शीघ्रही जल न मिले तो मरण अथवा किसी बड़ेरोगको प्राप्त होताहै तृषासे मोह होताहै और मोहसे मृत्यु होतीहै इसलिये किसी अवस्थामेंभी जल न रोकना चाहिये अन्नके बिनाभी प्राणी बहुत कालतक जी सक्ता है परन्तु जलके बिना प्यासा होकर क्षणभर मेंही मरजाताहै इति तृषाधिकार ॥ ३१० ॥

मूर्च्छाधिकारः । तत्रमूर्च्छायानिदानपूर्विकांसंप्राप्तिमाह ॥

क्षीणस्यबहुदोषस्यविरुद्धाहारसेविनः ॥ वेगाघातादभीघाताद्धीनसत्वस्यवापुनः । करणायतनेषूग्रावाह्येष्वभ्यन्तरेषुच । निविशन्तेयदादोषास्तदामूर्च्छन्तिमानवाः ॥ बहुदोषस्याधिकदोषस्यनत्वनेकदोषस्य । तदामूर्च्छात्रिदोषजैवस्यात्ततथैवास्तुकोदोषः तत्रपृथक्दोषजानांमूर्च्छानांवक्ष्यमाणत्वात्वेगाघातात्मलादेः, अभिघातात्लगुड़ादिना, हीनसत्वस्यस्वल्पसत्वगुणस्य, अर्थादधिकतमोगुणस्ययतउक्तंमूर्च्छापित्ततमःप्रायेति, करणायतनेषुकरणंमनस्तस्यायतनेषुस्वस्थानेषुवाह्येषुकर्मेन्द्रियेषुअभ्यन्तरेषुबुद्धीन्द्रियेषु ॥ ३११ ॥

मूर्च्छाका अधिकार । मूर्च्छाकी निदान पूर्व्वक संप्राप्ति ॥

क्षीण बहुत दोषयुक्त तथा विरुद्ध आहार करनेवाले वेगोंके रोकनेवाले लाठीआदिके चोटवाले और हीनसत्व वाले मनुष्योंके मनकी स्थानरूप कर्मेन्द्रिय और बुद्धीन्द्रियोंमें जबबहुत कठिन दोष प्राप्त होतेहैं तब मूर्च्छा उत्पन्न होतीहै ॥ ३११ ॥

सामान्यलक्षणमाह ॥

संज्ञावहासुनाड़ीषुपीड़ितास्वानिलादिभिः । तमोऽभ्युपैतिसहसासुखदुःखव्यपोहकृत् ॥ सुखदुःखव्यपोहाच्चनरःपततिकाष्ठवत् । मोहोमूर्च्छेतितामाहुःषड्विधासाप्रकीर्तिता ॥ तमोगुणःअज्ञानहेतुःअभ्युपैतिआगच्छतिसुखदुःखव्यपोहकृत् । सुखदुःखज्ञाननाशकरंनष्टसुखदुःखज्ञानेनरःकाष्ठवत्पतति तांमोहोमूर्च्छेतिप्राहुरित्यन्वयःमूर्च्छायामूर्च्छायोऽपिपर्यायः । यतउक्तम् । संज्ञोपघातोमूर्च्छायोमूर्च्छास्यान्मूर्च्छनंतथा । कश्मलंप्रलयोमोहःसंन्यासस्तुमृतोपमः ॥ इतिषड़पिमूर्च्छेविवृणोति । वातादिभिःशोणितेनमद्येनचविषेणच ॥ षट्स्वप्येतासुपित्तन्तुप्रभुत्वेनावतिष्ठते । यतउक्तम् । मूर्च्छापित्ततमःप्रायेति ॥ ३१२ ॥

मूर्च्छाका सामान्य लक्षण ॥

वातादिदोषोंके द्वारा ज्ञानके प्राप्तकरने वाली नाड़ियोंके ढकजाने पर सुख दुःखका नाश करने बाला तमोगुण बढ़ताहै इस्से मनुष्य काष्ठके समान गिरपड़ताहै इसको मूर्च्छा कहते हैं संज्ञोपघात मूर्च्छाय मूर्च्छा मूर्च्छन कश्मल प्रलय मोह संन्यास और मृतोपम यह मूर्च्छा के नाम हैं मूर्च्छा ६ प्रकारकी हैं जैसे बातिक पैत्तिक कफज रक्तज मद्यज और बिषज इनछओं प्रकारकी मूर्च्छाओंमें पित्त प्रधानहै क्योंकि कहागया है कि मूर्च्छामें पित्त और तमोगुण अधिक होता है ॥ ३१२ ॥

तस्याःपूर्व्वरूपमाह ॥

हृत्पीड़ाजृम्भणंग्लानिःसंज्ञानाशोबलक्षयः । सर्व्वासांपूर्व्वरूपाणियथास्वन्तांविभावयेत् ॥ ३१३ ॥

मूर्च्छाका पूर्व्व रूप ॥

सबप्रकारकी मूर्च्छाओंके होनेसे पहले हृदयमें पीड़ा जंभाई ज्ञानकानाश ग्लानि और बलक्षय होताहै इनको दोषके अनुसार जानलेवे ॥ ३१३

तत्रवातिकमूर्च्छामाह ॥

नीलांवायदिवाकृष्णमाकाशमथवारुणम् । पश्यंस्तमःप्रविशतिशीघ्रञ्चप्रतिबुध्यते ॥ वेपथुश्चाङ्गमर्दश्चप्रपीड़ाहृदयस्यच ॥ कार्श्यंश्यावारुणाच्छायामूर्च्छायेवातसम्भवे ॥ नीलंनीलवर्णंकृष्णंकज्जलाभंअरुणंअलक्तरागंतमःप्रविशतिमूर्च्छातेश्यावारुणाच्छायागात्रस्य ॥ ३१४ ॥

बातज मूर्च्छाका लक्षण ॥

बातज मूर्च्छामें रोगी आकाश को नीला काला अथवा लाल देखकर मूर्च्छित होता है औरशीघ्रही चैतन्य होताहै शरीरमें पीड़ा कम्प हृदयमें पीड़ा कृशता और धुमैला तथा रक्तबर्ण होजाताहै ३१४॥

पैत्तिकमाह ॥

रक्तंहरितवर्णंवाविपित्तन्तमथापिवा । पश्यंस्तमःप्रविशतिसस्वेदःप्रतिबुध्यते ॥ सपिपासःससन्तापोरक्तपित्ताकुलेक्षणः । सम्भिन्नवर्चाःपीताभोमूर्च्छायेपित्तसम्भवे३१५॥

पित्तकी मूर्च्छाके लक्षण ॥

पित्तज मूर्च्छामें रोगी आकाशकोलाल हरा अथवा पीला देखकर मूर्च्छित होता है और पसीना आनेपर चैतन्य होता है तृषा सन्ताप नेत्रोंमें ललाई तथा पीलापन मलभेद और पीत वर्ण यह लक्षण होते हैं ॥ ३१५ ॥

श्लैष्मिकमाह ॥

मेघसङ्काशमाकाशंतमोभिर्वाघनैर्वृतम् । पश्यंस्तमःप्रविशतिचिराच्चप्रतिबुध्यते ॥ गुरुभिःप्रावृतैरङ्गैर्यथैवार्द्रेणचर्मणा । सप्रसेकःसहल्लासोमूर्च्छायेकफसम्भवे ॥ मेघसङ्काशंशुभ्रमेघसङ्काशमित्यर्थः। यतआहसुश्रुतः। कफेनपश्येद्रूपाणिश्वेताभ्रप्रतिमानितु । घनैर्निविड़ैस्तमोभिःगुरुभिरंगैरुपलक्षितः ॥ ३१६ ॥

कफज मूर्च्छाके लक्षण ॥

कफज मूर्च्छा में रोगी आकाश को मेघों के समान अथवा घने अन्धकार से ढकाहुआसा देखकर मूर्च्छित होताहै और बहुत देरमें चैतन्य होताहै अंगोंमें भारीपन शरीर गीले कपड़ोंसे ढकाहुआसा मालूम होना लारबहना और मतली यह लक्षण होते हैं यहाँ मेघ शब्द से श्वेतमेघ लेना चाहिये क्योंकि सुश्रुतने कहाहै कि कफसे श्वेत मेघोंके समान रूप दिखाई देते हैं ॥ ३१६ ॥

मूर्च्छायःषड्विधउक्तःसुश्रुतेन। चरकस्तुसान्निपातिकमपिमूर्च्छायमाह॥ सर्व्वाकृतिःसन्निपातादपस्मारइवागतः । सजन्तुंपातयत्याशुविनावीभत्सचेष्टितैः ॥ अपस्मारइवागतस्तेनमहताभिघातेन । पततिचिरेणप्रतिबुध्यतेतर्हितयोःकोभेदइत्यतआह । सन्नि

पातिकमूर्च्छायाःविनावीभत्सचेष्टितैः । कफेनवमनदन्तघट्टनाक्षिविकृत्यादिभिर्विनापातयति ॥ ३१७ ॥

सुश्रुतने ६ प्रकारकी मूर्च्छा कहीहैं परन्तु चरकने सन्निपातज मूर्च्छा भी कहीहै जैसे सन्निपातज मूर्च्छा तीनों दोषोंके लक्षणोंसे युक्त होती है और इस में मृगीके समान शीघ्रही रोगी गिरपड़ता है और देरमें चैतन्य होताहै परन्तु मृगीके समान मुखसे फेन गिरना दांतोंका कटकटाना और नेत्रों में बिकारादिक बीभत्स लक्षण नहीं होते हैं और यही इनदोनोंमें भेदहै ॥ ३१७ ॥

रक्तजायामूर्च्छायानिदानमाह ॥

पृथिव्यम्भस्तमोरूपंरक्तगन्धस्तदन्वयः।तस्माद्रक्तस्यगन्धेनमूर्च्छन्तिभुविमानवाः॥ तमोरूपंतमोवहुलंमानवाश्चयेतामसाः । नतुसात्विकाराजसाश्चअत्रेकेवदन्तिनैवायुक्तिःसमीचीनातर्हिचम्पकादिगन्धेनापिमूर्च्छाप्रसज्येतत्त्रापिगन्धस्यपार्थिवत्वात् । अतआह ॥ द्रव्यस्वभावमित्येकेदृष्ट्वायदातिमुह्यति ॥ अत्राहभोजः । दर्शनादसृजस्तज्जाद्गन्धाद्वैवप्रमुह्यति ॥ ३१८ ॥ रक्तजमूर्च्छाका निदान ॥

पृथ्वी तथा जल यहदोनों तमोगुण रूप हैं और इन्हींसे रुधिर तथा गन्ध उत्पन्न होतेहैं इसीसे रुधिरकी गन्धि के द्वारा तामस मनुष्य मूर्च्छित होते हैं सात्विक और राजस नहीं मूर्च्छित होते हैं यहाँपर कोई २ यह कहतेहैं कि यह युक्ति ठीकनहींहै क्योंकि ऐसा होनेसे चम्पादिककी गन्धिसे भी मूर्च्छा होनी चाहिये क्योंकि उनमें भी पृथ्वी सम्बन्धी गन्धि है इसी से कहागया है कि देखकरजो मूर्च्छा होती है यह वस्तुओंका स्वभावहै यहाँपर भोजने कहा है कि रुधिरके देखनेसे और सूंघने से मूर्च्छा होती है ॥ ३१८ ॥

रक्तेनमूर्च्छितस्यलक्षणमाह ॥

स्तब्धाङ्गदृष्टिस्त्वसृजादगूढोच्छ्वासश्चमूर्च्छितः ॥ ३१९ ॥

रक्तज मूर्च्छाका लक्षण ॥

रुधिरसे मूर्च्छित मनुष्यका शरीर तथा नेत्रस्तब्ध होजातेहैं और श्वास साफ२ नहीं आता ३१९

मद्यजविषजयोर्मूर्च्छयोर्निदानमाह ॥

गुणास्तीव्रतरत्वेनस्थितास्तुविषमद्ययोः।तएवतस्मात्ताभ्यान्तुमोहौस्यातांयथेरितौ ॥ येगुणाःलघुरूक्षाशुविशदव्यवायितीक्ष्णाविकाशिसूक्ष्मोष्णानिर्देश्यरसत्वादयः तैलादिद्रव्येभ्यस्तास्तीव्राश्चसन्ति । तएवगुणाःविषमद्ययोस्तुतीव्रतरत्वेनास्थिताःतत्रापिभेदः । तएवमद्येदृश्यन्तेविषेतुबलवत्तराइति ॥ ३२० ॥

मद्यज और विषज मूर्च्छाका निदान ॥

विष और मद्यमें लघु रूक्ष विशद आशु विवाई तीक्ष्ण विकाशी सूक्ष्म उष्ण और योगवाही आदिक गुण तीव्रतासे रहतेहैं इसी हेतुसे मद्य और विषके द्वारा मूर्च्छा होतीहै तन्त्रान्तर में इसमेंभी भेद कहागयाहै कि सान्निपातके कुपित करनेवाले जो विषके गुण कहे गयेहैं वही मद्यमेंभी हैं परन्तु विष में यह गुण अधिकतासे रहतेहैं ॥ ३२० ॥

मद्यजायाःमूर्च्छायालक्षणमाह ॥

मद्येनप्रलपन्शेतेनष्टविभ्रान्तमानसः । गात्राणिविक्षिपन्भूमौजरांयावन्नयातितत् ॥ नष्टविभ्रान्तमानसःनष्टंसर्वथास्मृतिहीनंविभ्रान्तंरज्जौसर्पज्ञानयुक्तंमानसंयस्यसः । जरां जीर्णत्तोतन्मद्यम् ॥ ३२१ ॥ मद्यज मूर्च्छाका लक्षण ॥

मद्यज मूर्च्छामें स्मृतिका नाश तथा भ्रान्ति (रस्सीमें सर्पादिकका ज्ञान) युक्त चित्तहोताहै और जबतक मद्यका परिपाक नहीं होताहै तबतक मनुष्य प्रलाप करताहै और अंगोंको पटकता हुआ पृथ्वी में पड़ा रहताहै ॥ ३२१ ॥

विषजायालक्षणमाह ॥

वेपथुःस्वप्नतृष्णाःस्युस्तमश्चविषमूर्च्छिते । वेदितव्यंतीव्रतरंयथास्वंविषलक्षणैः ॥ विषस्यमूलकन्दफलपत्रक्षीरादिभेदभिन्नस्ययथास्वंलक्षणमुक्तंसुश्रुतेकल्पस्थानेतल्लक्षणंमद्यापेक्षयातीव्रतरंवेदितव्यंनतुसंज्ञानाशेनसाम्यधर्म्मात् ॥ ३२२ ॥

विषज मूर्च्छा का लक्षण ॥

विषज मूर्च्छामें कम्प निद्रा तृषा तथा अन्धकार मालूम होना और खायेहुए विषके लक्षण तीव्रता से मालूम होतेहैं मूल कन्द फल पत्र दूध आदि भेद युक्त विषके लक्षण सुश्रुतके कल्प स्थानमें कहे गयेहैं वह लक्षण मद्यकी अपेक्षा तीव्र कहे गयेहैं जोकि इन दोनोंमें संज्ञाका नाश होताहै केवल इसी लिये इनको शमन जानना चाहिये ॥ ३२२ ॥

मूर्च्छाभ्रमतन्द्रादीनांकोभेदइत्यतआह ॥

मूर्च्छापित्ततमःप्रायोरजःपित्तानिलाद्भ्रमः । तमावातकफात्तन्द्रानिद्राश्लेष्मतमोभवा ॥ रजःपित्तानिलाद्भ्रमइतिनात्रसमुच्चयः । केवलपित्तज्वरेभ्रमस्योक्तत्वात्भ्रमश्च चक्रारूढस्येवभ्रमवस्तुज्ञानंस्वदेहस्यभ्रमतइवज्ञानञ्च ॥ ३२३ ॥

मूर्च्छा भ्रम और तन्द्रा आदिका भेद ॥

पित्त तथा तमोगुण की अधिकतामें मूर्च्छा पित्त वात तथा रजोगुणकी अधिकतामें भ्रम (चक्रपर चढ़ी हुई घूमती हुईसी सब वस्तुओंका मालूम होना) वात कफ तथा तमोगुणकी अधिकतामें तन्द्रा और कफ तथा तमोगुणकी अधिकतामें निद्रा उत्पन्न होतीहै ॥ ३२३ ॥

तन्द्रायालक्षणमाह ॥

इन्द्रियार्थेष्वसंवित्तिर्गौरवंजृम्भणंक्लमः । निद्रार्त्तस्येवयस्येहितस्यतन्द्रांविनिर्द्दिशेत् ॥ इन्द्रियार्थानामर्थःप्रयोजनयेषु । अर्थाद्विषयेषु । असंवित्तिःअसम्यक्ज्ञानं । इतिइन्द्रियार्थःसम्यक्ज्ञानादिनिद्रायां प्रबुद्धस्यक्लमाभावस्तन्द्रायान्तुप्रबोधितस्यापिक्लमइत्यनयोर्भेदः ॥ ३२४ ॥ तन्द्राका लक्षण ॥

जब इन्द्रियोंमें विषयके ग्रहण करने की शक्ति नरहै शरीरमें भारीपन होय जंभाई आवे और नींदसे भरे हुएके समान क्लम मालूम होवे उसको तन्द्रा कहतेहैं निद्रा और तन्द्रामें यह भेदहै कि निद्रामें जागनेके उपरान्त क्लमजाता रहताहै और तन्द्रावालेको जागनेपरभी क्लममालूम होताहै ३२४

क्लमस्यलक्षणमाह ॥

योनायासःश्रमोदेहेप्रवृद्धःश्वाससङ्गतः । क्लमःसइतिविज्ञेयइन्द्रियार्थप्रबाधकः ॥ इन्द्रियाणांबुद्धीन्द्रियाणांकर्मेन्द्रियाणाञ्च । अर्थःप्रयोजनंविषयग्रहणंतस्यप्रबाधकःआवल्येन ॥ ३२५ ॥

क्लमका लक्षण ॥

जिसमें परिश्रमके बिना श्रम मालूम देवे श्वास बड़े २ आवें और इन्द्रियांअपनेर काम को नकर सकें उसको क्लम कहतेहैं ॥ ३२५ ॥

निद्रालक्षणमाह ॥

यदातुमनसिक्लान्तेकर्मात्मानःक्लमान्विताः । विषयेभ्योनिवर्त्तन्तेतदास्वपितिमानवः ॥ क्लान्तोग्लानीश्रान्तइतियावत्कर्मात्मानक्लमान्विता । कर्मेन्द्रियाणिज्ञानेन्द्रियाणिचक्लमान्विताःइन्द्रियाणिश्रान्ता ॥ ३२६ ॥

निद्राका लक्षण ॥

जिस समय मनुष्यका मन कर्म्मेन्द्रिय और बुद्धीन्द्रिय शान्त होकर विषयोंसे निवृत्त होजावें उसको निद्रा युक्त जानना चाहिये ॥ ३२६ ॥

संन्यासस्यसंप्राप्तिपूर्व्विकांलक्षणमाह ॥

वाग्देहमनसांचेष्टामाक्षिप्यातिबलामलाः । संन्यस्यन्त्यबलंजन्तुप्राणायतनमाश्रिताः॥ सनासंन्याससंन्यस्तःकाष्ठीभूतोमृतोपमः । प्राणैर्विमुच्यतेशीघ्रंमुक्तासद्यःफलांक्रियाम् ॥ आक्षिप्यविनाश्यसंन्यस्यन्तिमूर्च्छयन्तिप्राणायतनंहृदयंसंन्यस्तःमूर्च्छितःकाष्ठीभूतःक्रियारहितःअतएवमृतोपमइतिसद्यःफलांक्रियांसूचीव्यधनांजनावपीडकपिकच्छुघर्षणवृश्चिकादिदंशनादिरूपां ॥ ३२७ ॥

संन्यासका संप्राप्ति पूर्व्वक लक्षण ॥

अत्यन्त बलवान् कुपित दोष प्राणोंके स्थान रूप हृदयमें स्थित होकर वाणी देह तथा मन की चेष्टाको नष्ट करके निर्बल मनुष्यको मूर्च्छित करतेहैं वह मूर्च्छित मनुष्य काष्ठके समान क्रिया रहित मराहुआसा पड़ा रहताहै इसको संन्यास कहतेहैं इसमें शीघ्र फलकारी सुई चुभाना अंजन लगाना किंवांच रगड़ना और बिच्छूसे कटाना आदि क्रियाके बिना शीघ्रही प्राण निकल जातेहैं ॥ ३२७ ॥

संन्यासस्यमूर्च्छातोभेदमाह ॥

दोषेषुमदमूर्च्छायागतवेगेषुदेहिनः । स्वयमप्युपशाम्यन्तिसंन्यासोनौषधैर्विना ॥ ३२८ ॥

संन्यास और मूर्च्छाकाभेद ॥

मूर्च्छा में दोषोंके वेग अथवा मदके शान्त होजाने पर मनुष्य अपने आप चैतन्य हो जातेहैं परन्तु संन्यास औषधियों के बिना नहीं शान्त होताहै ॥ ३२८ ॥

अथ मूर्च्छायाश्चिकित्सा ॥

सेकावगाहामणयःसहाराःशीताःप्रदेहाव्यजनानिलाश्च । शीतानिपानानिचगन्धवन्तिसर्व्वासुमूर्च्छास्वनिवारितानि ॥ मणयश्चन्द्रकान्तादयःहारामुक्तादिहाराःशीताःप्रदे

ह्यःसकर्पूरचन्दनानुलेपनानि। शीतानिपानानिसितामलकादिपानकानि । गन्धवन्तिक र्पूरादिसुगन्धवन्तिसर्वासुमूर्च्छास्वनिवारितानिअस्यायमभिप्रायःसेकादीन्यन्यासुमूर्च्छा सुहितान्येवकिन्तुवातश्लेष्मजास्वपिननिवारितानितत्रापिपित्तस्यप्राधान्यत्वात् । सिद्धा निवर्गेमधुरेपयांसिसदाड़िमाजाङ्गलजारसाश्च । हितशालयश्चमूर्च्छासुपथ्याःससतीन मुद्गाः (सतीनःकलायः) ॥ ३२९ ॥

मूर्च्छाकीचिकित्सा ॥

मूर्च्छारोगमें जलसेसींचना स्नानकरवाना चन्द्रकान्तादिक मणियोंका धारण कराना मोतीआदि केहार कपूर सहित चन्दनकालेप पंखेकीबायु शीतल तथा सुगंधित पीनेकीवस्तु इनके सेवन से बातज तथा कफज आदि संपूर्ण मूर्च्छा निवृत्त होती हैं मधुरबर्गके द्वारा पाक कियाहुआ दूध अनार सहित जंगली जीवोंके मांसकारस और जौ लाल धान मटर तथा मूंग यह सब मूर्च्छामें पथ्यहै ॥३२९॥

कोलमज्जोषणोशीरकेसरंशीतवारिणा । पीतंमूर्च्छांजयेल्लीढ्वाकृष्णांवामधुसंयुताम् ॥ शीतेनतोयेनविषंमृणालंकृष्णाञ्चपथ्यांमधुनावलिह्यात् । कुर्य्याच्चनासावदनावरोधंक्षीरंपि वेद्वाप्ययमानुषीणाम् ॥ द्राक्षासितादाड़िमलाजवन्तिकह्लाङ्गनीलोत्पलपद्मवान्ति । पिवेत्क षायाणिचशीतलानिपित्तज्वरेयानिचयापयन्ति॥शिरीषबीजगोमूत्रकृष्णामरिचसैन्धवैः । अञ्जनंस्यात्प्रबोधायसरसोनशिलावचैः ॥ अन्यच्च । अञ्जनंसम्यगारब्धंमधुसिन्धुशि लोषणैःप्रमोहघ्नेहिभवतिभाषितंभिषजांवरैः॥शिलामनशिला। ऊषणंमरिचः।मधूकसार सिन्धूत्थवचोषणकणासमा । श्लक्ष्णांपिष्टाम्भसानस्यंकुर्य्यात्संज्ञाप्रबोधनम् ॥ ३३० ॥

बेरकी गुठली मिर्च खस नागकेशर इन सबको शीतल जल के साथ पानकरनेसे अथवा सहतके साथ पीपल के चाटनेसे मूर्च्छाका नाश होताहै कमलकीडंडी पीपल तथा हडको सहत के साथ चाटने से अथवा शीतल जलके साथ कमल की डंडी को पीनेसे मूर्च्छाका नाश होताहै नाक तथा मुखको बन्दकरनेसे अथवा स्त्री का दूध पीनेसे मूर्च्छाका नाश होताहै दाख शक्कर लजालू अनार खील कहलार कमल नील कमल और कमल इन सब औषधियोंका शीतल कषाय पीनेसे और पित्तज्वरमें कहीहुई क्रिया करनेसे मूर्च्छा शान्त होतीहै सिरसकेबीज गोमूत्र पीपल सेंधानोन रसौत मैनशिल और बच इन सबको पीसकर अंजन लगानेसे मूर्च्छा का नाश होताहै सहत सेंधानोन मैनशिल और मिर्च इन सब को पीस अंजन लगाने से मूर्च्छा का नाश होताहै महुआकासार सेंधा-नोन बच मिर्च तथा पीपल इन सब को पानीमें महीन पीस नास लेने से चैतन्यता होती है ॥ ३३० ॥

अथ रक्तजादीनांमूर्च्छानांचिकित्सा ॥

रक्तजायान्तुमूर्च्छायांहितःशीतक्रियाविधिः।मद्यजानांपिवेन्मद्यंनिद्रांसेवेतवासुखम् ॥ विषजायांविषघ्नानिभेषजानिप्रयोजयेत् ॥ ३३१ ॥

रक्तज आदि मूर्च्छाओंकी चिकित्सा ॥

रक्तज मूर्च्छाओं में शीतल क्रियाकरनी चाहिये मद्यज मूर्च्छा में मद्यपान अथवा सुखपूर्वकसोवे और विषज मूर्च्छा में बिषनाशक औषध देनीचाहिये ३३१ ॥

अथ संन्यासचिकित्सा ॥

प्रभूतदोषस्तमसोऽतिरेकात्सम्मूर्च्छितोनैवविबुध्यतेयः । संन्यस्तसंज्ञःसहिदुश्चिकित्स्योनरोभिषग्भिःपरिकीर्त्तितोऽसौ ॥ अञ्जनान्यवपीडाश्चधूमाःप्रधमनानिच । सूचीभिस्तोदनंशस्तंदाहपीडानखान्तरे ॥ लुञ्चनंकेशलोम्नाञ्चदन्तैर्दशनमेवच । आत्मगुप्तावघर्षश्चहितस्तस्यप्रबोधने ॥ अवपीडःकल्कीकृतौषधरसस्यनासापुटेदानम् । प्रधमनं औषधचूर्णस्यद्विमुख्यनाडिकयामुखवातेननासापुटेदानंतस्यसंन्यस्तस्य ॥ ३३२ ॥

संन्यास कीचिकित्सा ॥

बहुत बढ़े हुए दोष और तमोगुण की अधिकता से जो मनुष्य मूर्च्छित होकर चैतन्य न होय उसको संन्यास रोग जानना चाहिये यह अत्यन्त कठिनता से चिकित्सा करनेके योग्यहै संन्यास रोगमें अंजन औषधके कल्कको नाकमें भरदेना धुआं देना दो मुख वाली नली के द्वारा फूंककर औषधियोंके चूर्ण को नाक में छोडना सुईचुभाना नखोंमें जलाना तथा पीडादेना बाल तथा रोमों कानोचना दांतोंसे काटना किवांचका रगड़ना यह सब बातें चैतन्य होनेके लिये करना चाहियें ३३२॥

अथ मूर्च्छायांरसौ ॥

कणामधुयुतंसूतंमूर्च्छायांप्राशयेद्भिषक् । शीतसेकावगाहादीन्सर्वाङ्गेपीडनंहठात् ॥ सूतंमारितं । ताम्रचूर्णसमोशीरंकेशरंशीतवारिणा । पीतंमूर्च्छान्द्रुतंहन्याद्वृक्षमिन्द्राशनिर्यथा ॥ताम्रचूर्णमारितताम्रचूर्णम् ॥ ३३३ ॥

मूर्च्छापररस ॥

पारेकीभस्म पीपल को सहत के साथ चाटने से शीतल जलके सींचनेसे तथा स्नानसे सब शरीर के दबाने से मिर्च तांबेकी भस्म तथा नागकेशर इन सबको सम भाग लेकर शीतल जल के साथ पीने से जैसे इन्द्रके वज्रसे वृक्षका नाश होताहै इसी प्रकार शीघ्र मूर्च्छाका नाश होताहै ॥ ३३३ ॥

अथ भ्रमस्याचिकित्सा ॥

पिबेद्दुरालभाक्काथंसघृतंभ्रमशान्तये । पथ्याक्काथेनसंसिद्धंघृतंधात्रीरसेनवा ॥ शुण्ठीकृष्णाशताह्वानांसाभयानांपलंपलम् । गुडस्यषट्पलान्येषागुटिकाभ्रमनाशिनी ॥ ताम्रं दुरालभाक्काथैःपीतन्तुघृतसंयुतम् । निवारयेत्भ्रमंशीघ्रंतांयथाशम्भुभाषितम् ॥३३४॥

भ्रमकी चिकित्सा ॥

जवासेका काढा अथवा हड़का काढा घी डालकर पीनेसे आमलेके रस के द्वारा घृतके सेवन से सोंठ पीपल सतावर तथा हड़ यह सब एक २ पल गुड़ ६ पल इनको मिलाके गोली बनाकर खाने से और जवासेके काढ़ेके साथ घी तथा तांबेकी भस्मके पीनेसे शीघ्रही भ्रमका नाश होताहै ३३४ ॥

अथ तन्द्रायाअतिनिद्रायाश्चिकित्सा ॥

तुरङ्गलालालवणोत्तमेन्दुमनःशिलामागधिकामधूनि । नियोज्यतान्यक्षिणविनिश्चितानितन्द्रांसनिद्रांविनिवारयन्ति । (इन्दुःकर्पूरः) सैन्धवंश्वेतमरिचंसर्षपाःकुष्ठमेवच । बस्तमूत्रेणसम्पिष्टंनस्यंतन्द्रानिवारणम् ॥ श्वेतमरिचंशिग्रुबीजम् । शुण्ठीकणोग्रालव

णोत्तमानिनस्येनतन्द्राविजयोल्वणानि । क्षुद्रामृतापौष्करनागराणिभार्गीशिवाभ्यांकथितानिपानात् ॥ शिवाहरीतकी ॥ इतिमूर्च्छाभ्रमनिद्रातन्द्रासंन्यासाधिकारः ॥ ३३५ ॥

तन्द्रा और अति निद्राकी चिकित्सा ॥

घोड़ेकीलार सेंधानोन कपूर मैनशिल पीपल तथा सहतमें पीसकर अंजन लगानेसे निद्रा सहित तन्द्राका नाश होताहै सेंधानोन सहजनेके बीज सरसों तथा कूट इन सबको बकरेके मूत्रमें पीसकर नास लेनेसे सोंठ पीपल बच तथा सेंधानोन इनको पीसकर नास लेनेसे और भटकटैया गिलोय पुष्करमूल सोंठ भारंगी तथा हड़के क्वाथके पीनेसे तन्द्रा का नाश होताहै इति मूर्च्छा भ्रम निद्रा तन्द्रा संन्यासाधिकार ॥ ३३५ ॥

अथ मदात्ययाधिकारः । तत्रमदस्यस्वभावमाह ॥

मद्यंस्वभावतःप्राज्ञैर्यथैवान्नंतथास्मृतम् । अयुक्तियुक्तंरोगाययुक्तियुक्तंरसायनम् ॥ युक्तियुक्तेर्महिमानमाह । प्राणाःप्राणभृतामन्नंतदयुक्त्यानिहन्त्यसून् । विषंप्राणहरंतद्वद्युक्तियुक्तंरसायनम् ॥ विधिनामात्रयाकालेहितैरन्नैर्यथाबलम् । प्रहृष्टोयःपिबेन्मद्यंतस्य स्यादमृतंतथा ॥ ३३६ ॥

मदात्ययका अधिकार । मद्यका स्वभाव ॥

मद्य स्वभावसेही अन्नके समानहै नियमके अनुसार सेवन करनेसे रसायनहै और युक्तिके बिना सेवन करनेसे रोगकारी है अन्न मनुष्योंका प्राणहै परन्तु युक्तिके बिना इसका सेवन करने से प्राण नष्ट होते हैं बिष प्राणोंका नाशक है परन्तु युक्ति पूर्व्वक सेवन करनेसे रसायन है इसीलिये विधि पूर्व्वक यथायोग्य समयमें मात्राके अनुसार प्रसन्न चित्त होकर जो कोई मद्यपान करता है उसको वह मद्य अमृतके समान गुणकारी होती है ॥ ३३६ ॥

तत्रविधिर्यथा ॥

कृतशारीरसंस्कारःशुचिरुत्तमगन्धवान् । उद्दामगन्धिभिःस्फीतैर्मृदुभिर्वसनैर्वृतः ॥ विचित्रविविधःस्रग्वीरक्ताभरणभूषितःसानन्दःसावधानश्चपिबेन्मद्यंशनैःशनैः ३३७॥

मद्यपीनेकी विधि ॥

शरीरके संस्कार करके पवित्र उत्तम सुगन्धको लगाकर सुगन्धित सुन्दर कोमल वस्त्रोंको पहन कर अनेक प्रकारके विचित्र हारोंको धारणकर लाल २ आभूषणों से अलंकृत होकर और सावधान होके आनन्द पूर्व्वक धीरे २ मद्यको पिये ॥ ३३७ ॥

देशोयथा ॥

उपवनेषुसुरभिसुरङ्गसुमनःसमूहमनोहरेषु । मञ्जुगुञ्जन्मधुकरनिकरेषुकूजत्कलकण्ठेषु ॥ सुरभिशिशिरमधुरसमीरेषुमन्दिरेषु । सुधांशुश्रेषुसुधूपधूपितेषुसूपधानेषु ॥ संस्तीर्णविहितशयनासनेषु । उपविष्टोऽथवातिर्य्यक्भृशंहृष्टःसुरांपिबेत् ॥ सौवर्णैराजतैःपात्रैःपिबेन्मणिमयैरपि । रूपयौवनमत्ताभिर्वल्लभाभिर्विशेषतः ॥ वस्त्राभरणमाल्यैश्चभूषिताभिर्यथर्तुकैः । दीयमानंमृगाक्षीभिःपिबेन्मद्यंमुदान्वितः ॥ ३३८

मद्यपीनेके योग्यस्थान॥

सुगन्धित तथा उत्तम रंगवाले पुष्पों से मनोहर मधुर गुंजार करतेहुये भ्रमरों से व्याप्त कूंजती हुई कोकिलाओंसे युक्त उद्यानमें शीतल मंद सुगन्ध पवन युक्त मन्दिरोंमें अमृतके समान श्वेत उत्तम धूपोंसे धूपित सुन्दर तकियेतथा बिछौने सहित शय्या और आसनोंपर बैठकर अथवा तिरछे होकर प्रसन्नता पूर्व्वक मद्यको पिये सोने चांदी अथवा मणियों के पात्रमें मद्यको पिये रूप तथा यौवन से मतवाली ऋतु के अनुसार वस्त्र आभूषण तथा मालाओं से आभूषित और अत्यन्त प्रिय मृगनयनी स्त्रियोंके हाथसे मद्य प्रसन्नचित्त होकर पिये॥ ३३८॥

मात्रयेतिमात्रातन्त्रान्तरेकथिता॥

शुद्धकायःपिबेन्मद्यंसोपदंशंपलद्वयम्। मध्याह्नेद्विगुणंतच्चसुस्निग्धंभक्षयेदनु॥ प्रदोषेष्टपलंतद्वन्मात्रामद्यरसायने। अनेनविधिनासेव्यंमद्यंनित्यमतन्द्रितैः॥ शुद्धकायः उत्सृष्टमलमूत्रः। पलद्वयंपारिशेष्यात्पूर्वाह्णेबोद्धव्यम्॥ अतन्द्रितैःमात्रयासावधानैः अन्येत्वाहुः। बुद्ध्यादयोगुणायावद्धुल्लसन्तिनिरत्ययाः॥ मात्रेयंविहितामद्यपानेऽयारोगजन्मने॥ ३३९॥

तन्त्रान्तरमें कहीहुई मद्यपीनेकीमात्रा॥

मल मूत्रको त्याग करके पूर्वाह्नमें चटनी और गज्जक के साथ दोपल मद्यपिये मध्याह्नमें चार पलमद्य पीकर स्निग्ध भोजनकरे और अपराह्णमें आठपलमद्य पिये इस विधि के अनुसार सावधानता पूर्वक मात्रा से नित्य सेवनकी हुई मद्य रसायन होती है जितनी मद्य पीनेसे बुद्धि आदिक गुण सावधान बनेरहें वही मद्यकी मात्राहै और इससे अधिकपीने से रोग उत्पन्न होते हैं यह अन्य लोगोंका मतहै॥ ३३९॥

कालइतियस्मिन्कालेयादृशंमद्यमुचितंतस्मिंस्तादृशंपेयम्। ऋतुसम्बन्धीयथा। ग्रीष्मेमद्यंहिमंस्वादुमाध्वीकादिसुखप्रदम्॥ प्रशस्यतेहिशीते उष्णतीक्ष्णंगौडिकंपैष्टिकादि हितैरन्नैरिति। मद्यानुकूलैर्विविधैःफलैर्वर्णमनोहरैः॥ सुगन्धैर्लवणैर्हृद्यैर्भृष्टैर्मांसैःपृथग्विधैः। स्निग्धैरन्नैश्चभक्ष्यैश्चसहमद्यंपिबेन्नरः॥ अन्नैःसद्भैरोदनपर्पटकादिभिः। भक्ष्यैः लड्डुकाफेणिकादिभिः॥ अभ्यंगोत्सादनस्नानवासोधूपानुलेपनैः। स्निग्धोष्णैस्तादृशैरन्नैर्वातप्रकृतिकःपिबेत्॥ शीतोपचारैर्विविधैर्मधुरस्निग्धशीतलैः। फलैरन्नैःसहनरःपित्तप्रकृतिकःपिबेत्॥ श्लेष्मिकोजांगलैर्मांसैर्मरिचैर्मदिरांपिबेत्॥ ३४०॥

यथा योग्य समयमें अर्थात् जिस समय में जैसी मद्य उचित होय वैसी पीना चाहिये ग्रीष्म ऋतुमें शीतल तथा मधुर दाख आदिकी सुखदाई मद्य श्रेष्ठहै और शीत काल में उष्ण तीक्ष्ण गौड़िक तथा पीठी आदिकी मद्य श्रेष्ठहै मनुष्य मद्य के अनुकूल अनेक प्रकारके वर्णों से मनोहर फल सुगन्धित वस्तु लवण हृदय को हित पदार्थ भुने हुए नाना प्रकारके मांस स्निग्ध भात पापड़ आदि पदार्थ और लड्डू फेनी आदिक भक्ष्य पदार्थों के साथ मद्य पान करे बात प्रकृति मनुष्य तैलादि मर्दन उबटन स्नान वस्त्र धूप और चन्दनादिका लेप इन सब से युक्त होकर स्निग्ध तथा उष्ण अन्नके साथ मद्य पान करे पित्त प्रकृति मनुष्य अनेक प्रकारों के शीतल उपचारोंको करके मधुर

स्निग्ध तथा शीतल फल और अन्नोंके साथ मद्य पानकरे कफ प्रकृति वाला मनुष्य जंगली जीवों के मांस और मिर्च के साथ मद्य पान करे ॥ ३४० ॥

प्राक्पिबेत्श्लैष्मिकोमद्यंभक्तस्योपरिपैत्तिकः। वातिकस्तुपिबेन्मध्येसमदोषोयथेच्छते ॥ वातिकस्तुपिबेन्मद्यंप्रायोगौड़िकंपैष्टिकम्। कफपित्तात्मकोयस्तुमाध्वीकंमाधवंपिवेत् ॥ विधिर्वसुमतामेषकथितश्चरकादिभिः। यथोपपत्तिकंवापिपिबेन्मद्यंहिमात्रया ३४१

कफप्रकृति मनुष्य भोजन के पहले पित्त प्रकृतिमनुष्य भोजन के पीछे वातप्रकृति मनुष्य भोजनके मध्य में और समप्रकृतिवाला मनुष्य इच्छा के अनुसार मद्य पानकरे वातप्रकृति वाला मनुष्य प्रायः गौड़िक तथा पैष्टिक और कफ तथा पित्तप्रकृतिवाला मनुष्य प्रायः माध्वीक तथा माधव मद्यको पियै चरक आदिकों ने धनवान् लोगों के लिये यह विधि कही है साधारण मनुष्य योग्यताके अनुसार मात्रासे मद्यपान करे ॥ ३४१ ॥

मद्यस्यगुणमाह ॥

रसवातादिमार्गाणांसत्वबुद्धीन्द्रियात्मनाम्। प्रधानस्यौजसश्चैवहृदयंस्थानमुच्यते॥ मद्यंहृदयमाविश्यस्वगुणैरोजसोगुणान्। दशभिर्दशसंक्षोभ्यचेतोनयतिविक्रियाम् ॥ लघूष्णतीक्ष्णसूक्ष्माम्लव्यवायाशुकरंतथा।रूक्षंविकाशिविशदंमद्यंदशगुणंस्मृतम् ॥ गुरुशीतंमृदुस्निग्धंसान्द्रंस्वादुस्थिरंतथा।प्रसन्नंपिच्छिलंसूक्ष्ममोजोदशगुणंस्मृतम् ३४२

मद्यके गुण ॥

रस तथा वायुआदिके बहनेके स्रोत सत्वगुण ज्ञानेन्द्रिय आत्मा और प्रधान ओजधातु इनसब का हृदयही स्थानहै मद्य हृदयमें प्रवेश करके अपने आगेलिखेहुये दशगुणों से ओजके दशगुणोंको क्षोभित करके चित्त में बिकार उत्पन्न करती है लघु उष्ण तीक्ष्ण सूक्ष्म अम्ल विवाही आशुकारी रूक्ष बिकाशी और विशद यह दशमद्यके गुणहैं गुरु शीत मृदु स्निग्ध सान्द्र स्वादु स्थिर प्रसन्न पिच्छिल और सूक्ष्म यह दशओजके गुणहैं ॥ ३४२ ॥

गौरवंलाघवाच्छैत्यमौष्ण्यादम्लस्वभावतः। माधुर्य्यमार्द्दवंतैक्ष्ण्यात्प्रसादञ्चाशुभावनात् ॥ रौक्ष्यात्स्नेहंव्यवायित्वात्स्थिरत्वंसूक्ष्मतामपि। विकाशिभावात्पैच्छिल्यंवैशद्यात्सान्द्रतांतथा ॥ सौक्ष्म्यान्मद्यंनिहन्त्येवमोजसास्वगुणैर्गुणान्। सत्वंतदाश्रयश्चाशुसंक्षोभ्यकुरुतेमदम् ॥ हृदिमद्यगुणाविष्टेहर्षस्तर्षोरतिःसुखम्। विकाराश्चयथासत्वंचित्राराजसतामसाः ॥ जायन्तेमोहनिद्रान्ताइत्येतन्मदलक्षणम् ॥ ३४३ ॥

गुरुको लघुसे शीतको उष्णसे मधुरको अम्लसे मृदुको तीक्ष्णसे प्रसन्नको आशुकारीसे स्नेहको रूक्षतासे स्थिरको बिवाईसे सूक्ष्मको बिकाशीसे पिच्छिलको बिशदसे और सान्द्रको सूक्ष्मगुण से मद्य क्षोभित करती है इस प्रकार मद्य अपने गुणोंसे ओज के गुणोंको क्षोभित करती है मद्य सत्व गुण और हृदयको क्षोभित करके मदको उत्पन्न करती है मद्य के गुणोंके हृदय में प्रविष्ट होनेपर हर्ष तृषा अनुराग सुख तथा बिकार आदिक सत्वगुण रहित अनेकप्रकारके राजस तथा तामसगुण उत्पन्न होते हैं और अन्त में मोह तथा निद्रा प्राप्त होती है यह मदके लक्षण हैं ॥ ३४३ ॥

हर्षमोजोबलंपुष्टिमारोग्यंपौरुषंतथा। युक्त्यापीतंकरोत्याशुमद्यंमदसुखप्रदम् ॥

रोचनंदीपनंहृद्यंस्वरवर्णप्रसादनम् । प्रीणनंबृंहणंबल्यंभयशोकश्रमापहम् ॥ स्वापनंनष्ट निद्राणांमूकानांवाग्विशोधनम् । नाशनञ्चातिनिद्राणांविबन्धानांविबन्धनुत् ॥ बधबन्ध परिक्लेशाःदुःखानाञ्चाप्यबोधकम् । अपिप्रवयसांमध्यमुत्सर्गान्मोदकारकम् ॥ बहुदुः खक्षतस्यास्यशोकैरुपहतस्यच । विश्रामोजीवलोकस्यमद्यंयुक्त्यानिषेवितम् ॥ ३४४ ॥

युक्ति पूर्व्वक मद्यका सेवनकरनेसे हर्ष ओज बल पुष्टता आरोग्य और पुरुषार्थ उत्पन्न होतेहैं और सुखदायी नशा होताहै विधि पूर्व्वक सेवन की हुई मद्य रुचिकारी दीपन हृदयको हित स्वर तथा वर्णको उत्तम करनेवाली प्रीतिकारी धातु वर्द्धक बलकारी भय शोक तथा श्रम नाशक निद्रा रहित मनुष्योंको निद्रा करानेवाली गूंगों के बचनको शुद्ध करनेवाली अति निद्रा नाशक विबन्धकी नाश करनेवाली बध अथवा बन्धन आदिके क्लेश तथा दुःखके ज्ञान को भुलाने वाली वृद्धोंको भी आनन्द देनेवाली और बहुत दुःख क्षत तथा शोक से व्याकुल मनुष्योंको विश्राम देनेवाली होती है ३४४ ॥

मदस्त्रिलक्षणोभवति । एकोमदोऽधिकसत्वगुणस्यपुंसोभवति।द्वितीयोऽधिकरजोगुण स्यतृतीयोऽधिकतमोगुणस्य । अतएवोक्तञ्चरके ॥ प्रधानाधममध्यानांरुक्मणांव्यक्ति दायकः । यथाग्निरेवंसत्त्वानांमद्यंप्रकृतिदर्शकमिति ॥ ३४५ ॥

मद तीन प्रकारका है एक अधिक सत्त्व गुण वालेका दूसरा अधिक रजोगुणवालेका और तीसरा अधिक तमोगुणवालेका होताहै इसीसे चरकने कहाहै कि जैसे अग्नि में सुवर्णकी उत्तमता मध्यमता तथा निकृष्टता प्रकट होतीहै उसीप्रकार मद्यके द्वारा मनुष्योंकी उत्तमादि प्रकृति प्रकट होती है ३४५॥

तत्रसात्विकस्यमदस्यलक्षणमाह ॥

बुद्धिस्मृतिप्रीतिकरःसुखश्चपानान्ननिद्रारतिवर्द्धनश्च । सम्पाठगीतस्वरवर्द्धनश्चप्रो क्तोऽतिरम्यःप्रथमोमदोहि ॥ प्रीतिःपरेणमैत्री । सुखःसुखयतीतिसुखःसुखकरइत्यर्थः । पानादित्यादिपानादिष्वनुषङ्गवर्द्धनःअतिरम्यः मनोविकारित्वेऽपिनदुःखकरःप्रथमगुणवि कारित्वात्प्रथमःएवंद्वितीयंतृतीयञ्च ॥ ३४६ ॥

सात्विक मदका लक्षण ॥

सात्विकमद बुद्धि स्मृति सुख अन्य पुरुषोंके साथ मित्रता अन्नपान तथा निद्रामें अभिलाष पठन गीत तथा स्वर को बढ़ाताहै और अत्यन्त आनन्दकारी होताहै ॥ ३४६ ॥

राजसस्यमदस्यलक्षणमाह ॥

अव्यक्तबुद्धिस्मृतिवाग्विचेष्टःसोन्मत्तलीलाकृतिरप्रशान्तः । आलस्यनिद्राभिहतो मुहुश्चमध्येनमत्तःपुरुषोमदेन ॥ अव्यक्तेत्यत्रईषदर्थेनञ्विचेष्टःउन्मत्तस्यलीलाकृति भ्यांसहिः ॥ ३४७ ॥

राजसमदके लक्षण ॥

राजसमदसे बुद्धि स्मृति तथा बोलनेकी शक्ति अल्प होतीहै बारम्बार आलस्य तथा निद्रा आती है उन्मत्तकीसी लीला तथा आकृति होजातीहै शान्ति नष्टहोजातीहै और चेष्टा विरुद्ध होजातीहै ३४७॥

तामसस्यमदस्यलक्षणमाह ॥

गच्छेदगम्यांनगुरूंश्चमन्येखादेदभक्ष्याणिचनष्टसंज्ञः । ब्रूयाश्चगुह्यानिहृदिस्थिता

निमदेतृतीयेपुरुषोऽस्वतन्त्रः॥मन्येइतिपरस्मैपदसार्षत्वात्अस्वतन्त्रःमदपरवशः ३४८

तामस मदके लक्षण ॥

तामस मद से मनुष्य अगम्या में गमन करताहै गुरुओंको नहीं मानता अभक्ष्य पदार्थों को खाताहै ज्ञान रहित हो जाताहै हृदय में स्थित छिपी हुई बातोंको भी कहने लगता है और मदसे परबश होजाताहै ॥ ३४८ ॥

यद्यपिमदास्त्रयःएवतथापिसुश्रुतानुरोधादतितामसमदलक्षणमाह । चतुर्थेतुमदेमूढोभग्नदार्विवनिष्क्रियः । कार्य्याकार्य्यविभागज्ञोमृतादपिप्ररोमृतः ॥ मूढोमोहयुक्तः ॥ कोमदन्तादृशंगच्छेदुन्मादमिवचापरम् । बहुदोषमिवामूढःकान्तारंस्ववशःकृती ॥ अमूढःविचारबहुलः ॥ ३४९ ॥

यद्यपि मद तीनही प्रकार के हैं तथापि सुश्रुत के मतके अनुसार अति तामस मदका लक्षण कहतेहैं जैसे अति तामस मदसे मनुष्य मोह युक्त टूटे हुए वृक्षके समान चेष्टा रहित कार्य्याकार्य्य के बिचार से शून्य मरे हुए के समान मूर्च्छित होताहै कौन बिचारवान् स्वाधीन और कृतकृत्य पुरुष बहुत दोष वाले बनके समान उन्माद रूपी उस प्रकारके मदमें प्राप्त होने की इच्छाकरेगा अर्थात् कोईभी नहीं करैगा ॥ ३४९ ॥

नातिमाद्यन्तिबलिनःकृताहारामहाशनाः । स्निग्धाःसत्ववयोयुक्तामद्यनित्यास्तदन्वयाः ॥ मेदःकफाधिकामन्दवातपित्तादृढाग्नयः । विपर्य्ययेऽतिमाद्यन्तिविष्टब्धाःकुपिताश्चये ॥ मद्येनचाम्लरूक्षेणसाजीर्णेबहुनापिच ॥ ३५० ॥

बलवान् स्निग्ध सत्त्व गुण युक्त अधिक अवस्था वाले अत्यन्त भोजन करनेवाले नित्य मद्य पीनेवाले भोजन किये हुए और जिनके पिता पितामहादिक मद्य पीते हैं ऐसे मनुष्यों को बहुत नशा नहीं होताहै अधिकमेद तथा कफवाले थोड़े बात पित्त तथा अग्नि वाले विष्टम्भ तथा कोप युक्त और अजीर्ण वाले मनुष्योंको बहुत नशा होताहै बहुत खट्टी तथा रूखी मद्य से भी बहुत नशा होता है ॥ ३५० ॥

अथ मदात्ययानांनिदानमाह ॥

विषस्ययेगुणदृष्टाःसन्निपातप्रकोपणाः । तएवमद्येदृश्यन्तेविषेतुबलवत्तराः ॥ तस्मादविधिपीतेनतथमात्राधिकेनच । युक्तेनचाहितैरन्नैरकालेसेवितेनच ॥ तस्मादविधिपीतेनतथामात्राधिकेनच । युक्तेनचाहितैरन्नैरकालेसेवितेनच ॥ मद्यंनखलुजायन्तेमदात्ययमुखागदाः । अविधिप्रयुक्तंमद्यंविकारान्तरानुत्पादयन्ति । इत्यतआह । निर्भक्तमेकान्ततएवमद्यंनिषेव्यमानंमनुजेननित्यम् । उत्पादयेत्कष्टतमान्विकारानुत्पादयेच्चापिशरीरभेदनम् ॥ एकान्ततोनैरन्तर्येणविकारान्मदात्ययादीन् । शरीरस्यभेदंनाशम् ॥ ३५१ ॥

मदात्यय रोगका निदान ॥

सन्निपातके कुपित करनेवाले जोगुण विषमें हैं वही मद्यमेंभी हैं परन्तु विषमें विशेष करकेहैं इस लिये अविधि पूर्व्वक अधिक मात्रा से अहित अन्नों के साथ अथवा अकालमें मद्य पीने से मदात्यय आदिक रोग उत्पन्न होतेहैं विना विधिके मद्य पान करनेसे अन्य २ विकार भी उत्पन्न होते हैं जैसे

कि भोजनके विना निरंतर मद्य पान करनेसे अत्यन्त दुखदाई मदात्यय आदिक रोग उत्पन्न होते हैं और शरीर भी नष्ट हो जाताहै ॥ ३५१ ॥

मदात्ययादीनांहेत्वन्तरमाह ॥

क्रुद्धेनभीतेनपिपासितेनशोकाभितप्तेनबुभुक्षितेन । व्यायामभाराध्वपरिक्षतेनवेगावरोधाभिहितेनचापि ॥ अत्यम्लरूक्षावततोदरेणसाजीर्णभुक्तेनतथाबलेन । उष्णाभितप्तेनचसेव्यमानंकरोतिमद्यंविविधान्विकारान् ॥तानेवविकारान्विवृणोति । पानात्ययंपरमदंपानाजीर्णमथापिच । पानविभ्रममत्युग्रंतेषांवक्ष्यामिलक्षणम् ॥ ३५२ ॥

मदात्यय आदिकों के अन्य कारण ॥

क्रुद्ध भयभीत तृषित शोक युक्त बुभुक्षित व्यायाम भारका लेचलना तथा मार्ग गमन से क्षीण वेगों के रोकने वाले चोटवाले बहुत जल पान तथा रूखी वस्तुके सेवनसे फूले हुए पेटवाले अजीर्ण में भोजन करने वाले दुर्बल और उष्णतासे संतप्त ऐसे मनुष्यों को मद्य पीनेसे अनेक रोग उत्पन्न होतेहैं वह रोग यहहैं जैसे पानात्यय पर मद्य पानाजीर्ण और पानविभ्रम इनके लक्षण आगे लिखे जाते हैं ॥ ३५२ ॥ तत्रमदात्ययस्यसामान्यंलक्षणमाह ॥

शरीरदुःखंबलवत्प्रमोहोहृदयव्यथा । अरुचिप्रततंतृष्णाज्वरःशीतोष्णलक्षणः॥शिरःपार्श्वास्थिसन्धीनांवेदनाविक्षतेयथा । जायतेऽतिबलाजृम्भास्फुरणंवेपनंश्रमः ॥ उरोविबन्धःकासश्चहिक्काश्वासोप्रजागरः । शरीरकम्पःकर्णाक्षिमुखरोगास्त्रिकग्रहः ॥ छर्दिर्विड्भेदरुत्क्लेशोवातपित्तकफात्मकः । भ्रमप्रलापोरूपाणामसताञ्चैवदर्शनम् ॥ तृणभस्मलतापर्णपांशुभिश्चावपूरणम्।प्रधर्षणंविहंगैश्चभ्रांतचेताःसमन्यते ॥व्याकुलानामशस्तानांस्वप्नानांदर्शनानिच। मदात्ययस्यरूपाणिसर्वाण्येतानिलक्षयेत् ॥ ३५३ ॥

मदात्यय का सामान्य लक्षण ॥

शरीरमें बहुत क्लेश मोह हृदयमें पीड़ा अरुचि निरन्तर तृषा शीत तथा उष्ण लक्षणोंसे युक्तज्वर शिरमें पीड़ा पसली तथा रीढ़के नीचे हड्डियों में टूटनेकीसी पीड़ा हड्डियों की सन्धियोंमें पीड़ा बहुत जंभाई शरीर का फड़कना कम्प श्रम हृदय का जकड़ना खांसी श्वास हिचकी निद्राकानाश शरीर काकंपना काननेत्र तथा मुखके रोग वातज छर्दि पित्तज मल भेद कफज मतली भ्रम प्रलाप असत् रूपोंका देखना तृण भस्म लता पत्र तथा धूलसे पूर्णसा मालूम होना चित्तके भ्रम युक्त होने से पक्षियोंसे विरा हुआसा मालूम होना और व्याकुलता समेत बुरेस्वप्नोंकादेखना यह सबमदात्यय के लक्षण हैं ॥ ३५३ ॥ अथवातिकस्यमदात्ययस्यनिदानमाह ॥

स्त्रीशोकभयभाराध्वकर्मभिर्योऽतिकर्षितः । रूक्षास्यप्रमिताशीचयःपिबत्यतिमात्रया ॥ रूक्षंपरिणतमद्यनिशिनिद्रानिहत्यवाकरोति । तस्यतच्छीघ्रंवातप्रायंमदात्ययम् ॥ ततमद्यम् ॥ ३५४ ॥

वातज मदात्यय के निदान ॥

मैथुन शोक भय भार तथा मार्ग गमन से कृशशरीरवाला रूखा तथा अल्प भोजन करनेवाला मनुष्य रूखी तथा पुरानी मद्य रात्रि में जागरण कर के मात्रासे अधिक पिये तो उसको शीघ्रही वातज मदात्यय रोग होता है ॥ ३५४ ॥

अथ तस्यलक्षणमाह ॥

हिक्काश्वासशिरःकम्पपार्श्वशूलप्रजागरैः।विद्याद्बहुप्रलापस्यवातप्रायंमदात्ययम् ३५५

बातज मदात्ययका लक्षण ॥

बातज मदात्यय में हिचकी श्वास शिरका कंपना पसली में पीड़ा निद्राका नाश और अत्यन्त प्रलाप यहसब लक्षण होते हैं ॥ ३५५ ॥

अथ पैत्तिकस्य निदानमाह ॥

तीक्ष्णोष्णमद्यमम्लंचयोऽतिमात्रंनिषेवते । अम्लोष्णतीक्ष्णभोजीचक्रोधनोज्ञानवान्नरः ॥ तस्योपजायतेतीव्रपित्तप्रायोमदात्ययः ॥ ३५६ ॥

पित्तजमदात्ययका निदान ॥

तीक्ष्ण उष्ण तथा खट्टी बस्तुओं से बहुत खानेवाले क्रोधी और ज्ञानवान् मनुष्य तीक्ष्ण उष्ण तथा खट्टी मद्यको अधिक सेवनकरे तो बहुत तेज पित्तज मदात्यय रोग उत्पन्नहोताहै ॥ ३५६ ॥

अथ तस्यलक्षणमाह ॥

तृष्णादाहज्वरस्वेदमोहातीसारविभ्रमैः।विद्याद्धरितवर्णस्यपित्तप्रायंमदात्ययम् ३५७

पित्तज मदात्ययका लक्षण ॥

पित्तज मदात्ययमें तृषा दाह ज्वर स्वेद मोह अतीसार भ्रम और शरीरका पीलापन यह लक्षण होते हैं ॥ ३५७ ॥ अथ श्लैष्मिकस्यमदात्ययस्यनिदानमाह ॥

मधुरःस्निग्धोगुर्वाशीयःपिबत्यतिमात्रया । अव्यायामदिवास्वप्नशय्यासनसुखेरतः॥ मदात्ययंकफप्रायंसनरोलभतेध्रुवम् ॥ ३५८ ॥

कफज मदात्ययका निदान ॥

मधुर स्निग्ध तथा भारी बस्तु खानेवाले व्यायाम रहित दिनमें सोनेवाले और शयन तथा बैठने के सुखको करनेवाले मनुष्य जो मात्रासे अधिकमद्यपानकरें तो उनको निस्सन्देह कफज मदात्यय रोग होता है ॥ ३५८ ॥ अथ तस्यलक्षणमाह ॥

छर्द्यरोचकहृल्लासतंद्रास्तैमित्यगौरवैः।विद्याच्छीतपरीतस्यकफप्रायंमदात्ययम् ३५९

कफज मदात्ययके लक्षण ॥

कफज मदात्यय में छर्दि अरुचि मतली तन्द्रा शरीरमें गीला कपड़ा लिपटाहुआसा मालूम होनाभारीपन और शीतलगना यह लक्षण होते हैं ॥ ३५९ ॥

अथ सान्निपातिकस्यमदात्ययस्यलक्षणनिदानमाह ॥

त्रिदोषोहेतुभिःसर्वैःसर्वैर्लिंगैर्मदात्ययः ॥ ३६० ॥

सन्निपातज मदात्ययके लक्षण और निदान ॥

त्रिदोषज मदात्यय ऊपरकहेहुये सब निदानोंसे उत्पन्न होताहै और इसमें सबके लक्षणहोते हैं ३६०

अथ परमदमाह ॥

श्लेष्यक्षयोऽङ्गगुरुताविरसास्यताच विण्मूत्रशक्तिरथतन्द्रिररोचकश्च । लिङ्गंपर

स्यतुमदस्यवदन्तितज्ज्ञाः ॥ तृष्णारुजाशिरसिसन्धिषुचापिभेदःतन्द्रिस्तन्द्रा ॥३६१॥

परमदके लक्षण ॥

कफकी अधिकता अंगोंमें भारीपन मुखकी विरसता मलमूत्रका रुकना तन्द्रा अरुचि तृषा शिर में पीड़ा और सन्धियों में टूटने की सी पीड़ा यह परमदके लक्षणहैं ॥ ३६१ ॥

पानाजीर्णमाह ॥

आध्मानमुग्रमथवोद्गिरणंविदाहः पानेत्वजीर्णमुपगच्छतिलक्षणानि । ज्ञेयानितत्र भिषजासुविनिश्चितानिपित्तप्रकोपजनितानिचकारणानि ॥ उद्गिरणंवान्तिरुद्गारोवापी यतइतिपानंमद्यम् ॥ ३६२ ॥ पानाजीर्णके लक्षण ॥

आध्मान छर्दिऔर दाह यह पानाजीर्णके लक्षणहैं और इसमेंपित्तके कुपितकरनेवाले कारणहोतेहैं ३६२

पानविभ्रममाह ॥

हृद्गात्रतोदकफसंस्रवकण्ठधूममूर्च्छावमीमदशिरोरुजनप्रदेहाः । द्वेषःसुरान्नविकृतेषु चतेषुतेषुतंपानविभ्रममुशन्त्यखिलेषुधीराः ॥ कण्ठधूमःकण्ठाद्धूमानिर्गतइवप्रदेहःकफेन लिप्तास्यताद्वेषः सुरान्नविकृतेषुचतेषुतेषुसुराविकारेष्वन्नविकारेषुचद्वेषः अखिलेषुमद्यवि कारेषु ॥ ३६३ ॥ पान विभ्रम के लक्षण ॥

हृदय तथा शरीरमेंपीड़ा कफ बहना गलेसे धुआंसा निकलना मूर्च्छा छर्दि मद शिरमें पीड़ामुख कफसे लिपा हुआसा होना और अनेकप्रकारकी मद्य तथा अन्नकेपदार्थों में द्वेष यहपान विभ्रमके लक्षणहैं ॥ ३६३ ॥ असाध्यानांमदात्ययादीनांलक्षणमाह ॥

हीनोत्तरोष्ठमतिशीतममन्ददाहंतैलप्रभास्यमतिपानहतन्त्यजेच्च । जिह्वौष्ठदन्तम सितन्त्वथवापिनीलंपीतेचयस्यनयनेरुधिरप्रभेच ॥ हिक्काज्वरोवमथुवेपथुपार्श्वशूलाः कासभ्रमावपिचपानहतंत्यजेत्तम् ॥ ३६४ ॥

असाध्य मदात्यय आदि के लक्षण ॥

जिसका ओष्ठ क्षीण होजाय ऊपर शीत तथा भीतर बहुत दाह मालूमहोवे मुखमें तेललगा हुआ सा मालूमहोय ऐसा मदात्ययवाला असाध्यहै जिह्वा ओष्ठ तथा दांत नीले अथवा काले होयँ और दोनोंनेत्र पीले अथवा लाल होयँ तो मदात्यय असाध्यजानना चाहिये हिचकी ज्वर छर्दि कंप पसली में पीड़ा खांसी और भ्रम इन सबसे युक्त मदात्ययवाले को त्याग करदेवे ॥ ३६४ ॥

अथ मदात्ययादीनांचिकित्सा ॥

मद्योत्थानाञ्चरोगाणांमद्यमेवहिभेषजम् । यथादहनदग्धानांदहनंस्वेदनंहितम् ॥ मिथ्यातिहीनंमद्येनयोव्याधिरुपजायते । समेनैवनिपीतेनमद्येनसहिशाम्यति ॥ वीजपू रकवृक्षाम्लकोलदाड़िमसंयुतम् । यवानीहवुषाजाजीशृङ्गवेरावचूर्णितम् ॥ सस्नेहैःशकु भिर्युक्तमुपदंशैश्चिरोत्थितम् । दद्यात्सलवणंमद्यंवातपैत्तिकशान्तये॥मद्यंसौवर्चलव्योष युक्तंकिञ्चिज्जलान्वितम् । जीर्णमद्यायदातव्यंवातपानात्ययापहम् ॥ चव्यंसौवर्चलंहिंगु पूरकंविश्वदीपकम् । चूर्णमद्येनपातव्यंपानात्ययरुजापहम् ॥ ३६५ ॥

मदात्यय आदिकों की चिकित्सा ॥

जैसे अग्निसे जलेहुओंको अग्निके द्वारा स्वेद देना हितकारीहै इसी प्रकार मद्यसे हुए रोगों में मद्यही औषधहै बिधि रहित अधिक अथवा थोड़ी मद्य पीनेसे जोरोग उत्पन्न होतेहैं वह मात्राके अनुसार मद्य पीने से शान्त होतेहैं बिजौरानींबू अम्लवेत बेर तथा अनार के रस से युक्त घी मिले हुए सत्तुओंमें अजवाइन हाऊबेर जीरा सोंठ और सेंधानोन मिलाकर इनके साथ मद्य पान करने से बहुत दिनसे उत्पन्न हुआ बात पित संबंधी मदात्यय रोग शान्त होताहै कालानोन त्रिकटु औरकुछ जल मिलाकर मद्य के पचजाने पर फिर मद्य पिलानेसे बातज मदात्यय शान्त होताहै चव्य काला नोन हींग बिजौरानींबू सोंठ और अजवाइनका चूर्ण मिलाकरपानेसे मदात्यय रोगका नाशहोताहै ३६५

लावतित्तिरदक्षाणांरसैश्चशिखिनामपि। पक्षिणांमृगमत्स्यानामानूपानांतथोदनैः ॥ स्निग्धोष्णलवणाम्लैश्चवेशवारैर्मुखप्रियैः । स्निग्धैर्गोधूमकैरन्नैर्वातप्रायंमदात्ययम् ॥ नारीणांयौवनोष्माणांनिर्दयैरुपगूहनैः । श्रोण्यूरुकुचभारैश्चमेरोष्णोष्णसुखप्रदैः ॥ शयनाच्छादनैरुष्णैश्चान्तर्गेहैःसुखप्रदैः।मारुतैःप्रबलैःशीघ्रंप्रशाम्यतिमदात्ययः॥ ३६६॥

लवा तीतर मुर्गा तथा मोर यहसब पक्षी मृग मछली तथा अनूपजीवोंके मांसकेरस भात स्निग्ध उष्ण लवण अम्ल तथा मुखको प्रिय बेसवार और गेहूंके बने हुए स्निग्ध पदार्थ इनसबके साथ मद्य पीनेसे बातज मदात्यय नष्ट होताहै यौवनसे मतवाली स्त्रियोंके आलिंगनसे तथा दाबनेमें सुखदायी उष्ण नितम्ब जंघा तथा स्तनोंसे उष्ण सुखदायी शय्या तथा आच्छादन से और उष्ण कोठरी आदि भीतरके गृहोंके सेवनसे बातज मदात्यय रोग नष्टहोताहै ॥ ३६६ ॥

पित्तपानात्ययेयोज्याःसर्वतश्चक्रियाहिमाः। सितामाक्षिकसंयुक्तंमद्यमर्द्धोदकंपिबेत् ॥ मद्यंखर्जूरमृद्वीकापरूषकरसैर्युतम्। सदाड़िमरसंशीतंशक्तुभिश्चावचूर्णितम्॥सशर्करंवा माध्वीकंसंयुक्तमथवापरम्। दद्याद्बहूदकंकालेपातुंपित्तमदात्यये ॥ शशान्कपिञ्जलावानेणांलावानशितपुच्छकान्। मधुराम्लान्प्रयुञ्जीतभोजनेशालिषष्टिकान् ॥ पटोलयूषमिश्रंवाछागलंकल्पयेद्रसम्। सतीनमुद्गमिश्रंवादाड़िमामलकान्वितम् । द्राक्षामलकखर्जूरपरूषकरसेनच ॥ कल्पयेत्तर्पणान्यूषान्रसांश्चविविधात्मिकान्। शीतानिचान्नपानानिशीतशय्यासनानिच। शीतवातजलस्पर्शाःशीतान्युपवनानिच ॥ क्षौमपद्मोत्पलानाञ्चमणीनांमौक्तिकस्यच। चन्दनोदकशीतानांस्पर्शाश्चन्द्रांशुशीतला ॥ ३६७॥

पित्तज मदात्यय रोगमें सब शीतल क्रिया करनी चाहिये शक्कर तथा सहत युक्त आधे जल से मिलीहुई मद्य पीनी चाहिये खजूर दाख फालसा तथा अनारके रससे युक्त शीतल मद्य सत्तुओं के साथ पानकरे शक्कर युक्त दाखकी मद्य अथवा अन्य किसी प्रकारकी अधिक जल मिलीहुई मद्यपान करे इस्से पित्तज मदात्यय रोगनष्ट होतेहैं खरगोश श्वेततीतर मृग लवा दुम्बा मेढ़ा तथा बकरा इनके मांसकारस मधुर तथा खट्टीबस्तु परवल मटर तथा मूंगकायूष अनार तथा आमलेकी खटाई शालि धान्य सांठीके चांवल खिलावे अथवा दाख आमला खजूर तथा फालसेका यूष और अनेक प्रकारके मांसके रस तृप्तिके लिये देवे शीतल अन्न जल शय्या आसन बायु जल स्पर्श तथा उपवन इनसबका सेवन करना चाहिये रेशमीबस्त्र कमल उत्पल मणि मोती चंदन युक्त जल का स्पर्श और चन्द्रमाकी

किरण इनसबका सेवन करना चाहिये यह सब पित्तज मदात्यय रोग में हितकारी हैं ॥ ३६७ ॥

रूक्षतर्पणसंयुक्तंयवानीव्योषसंयुतम्। यवगोधूमकञ्चान्नंरूक्षयूषेणभोजयेत्॥ कुलत्थकानांशुष्काणांमूलकानांरसेनवा। प्रभूतकटुसंयुक्तंयवान्नंवाप्रदापयेत्॥ छागमांसरसंरूक्षमम्लंवाजाङ्गलंरसम्। व्योषयूषमनागम्लंपिबेत्कफमदात्यये॥ स्थाल्यामथकपालेवा भृष्टंकृत्वातुनीरसम्। कट्वम्ललवणंमांसंखादेत्कफमदात्यये॥ वामकद्रव्ययुक्तेनमद्येनोल्लेखनंमतम्। मदात्ययेकफोद्भूतेलङ्घनञ्चयथाबलम्॥ ३६८ ॥

कफज मदात्ययरोगमें अजवाइन तथा त्रिकटुयुक्त रूखे तर्पण(तृप्तिकारी पदार्थ) और जौ तथा गेहूंके पदार्थ रूखे यूषों के साथ अथवा कुलथी तथा सूखी मूलीके यूषके साथ भोजनकरावे या बहुत कटुता युक्त जौ के पदार्थ सेवनकरावे व करे अथवा जंगलीजीवों के मांसकारस घृतादि रहित कुछ खट्टा सेवन करे और त्रिकटु के यूषमें थोड़ी खटाई डालकर पानकरे हाँड़ी अथवा खपरे में कडवे अम्ल तथा लवणयुक्त नीरसमांसको भूनकर खाय वमन करानेवाली औषधियों से युक्त मद्य पिला कर वमन कराने से और बलके अनुसार लंघन कराने से कफज मदात्यय नष्टहोता है ॥ ३६८ ॥

यदिदंकर्मनिर्दिष्टंवातपित्तकफान्प्रति। सर्वजेसर्वमेवेदंप्रयोक्तव्यंचिकित्सकैः॥३६९॥

वातज पित्तज और कफज मदात्यय रोगमें जो चिकित्सा कही गई है वह संपूर्णमिलाकर सन्निपातज मदात्यय में करनी चाहिये ॥ ३६९ ॥

अथ प्रसङ्गात् कोद्रवादिमद चिकित्सा ॥

सगुडःकुष्माण्डरसःशमयतिमदमाशुकोद्रवजम्। धत्तूरजञ्चदुग्धंसशर्करञ्चाशुपानेन॥ सछर्दिमूर्च्छातीसारंमदंपूगफलोद्भवम्। सद्यःप्रशमयेत्पीतमात्रैर्वारिशीतलम्॥ वन्यकरीषघ्राणाज्जलपानाल्लवणभक्षणादपिच। शाम्यतिपूगफलोद्भवमदःसशूलःशर्कराकवलात्॥ तत्क्षणान्नस्यदितंचूर्णंसमाघ्रातंप्रणाशयेत्। ताम्बूलोत्थंमदंपुंसामेकमेव स्वभावतः॥ जातीफलमदंशीघ्रंहन्तिपथ्यानिषेविता। शीततोयावगाहश्चशर्करादधियोजिता॥ विभीतमदशान्त्यर्थमेतदेवमतापुनः। मद्यंपीत्वायदिनाततत्क्षणमवलेढिशर्करांसघृताम्॥ जातुनमदयतिमद्यंमनागपिप्रथितवीर्य्यमपि॥ इतिपानात्ययपरमदपानाजीर्णपानविभ्रमाधिकारः॥ ३७० ॥

प्रसंगसे कोदों आदिके मद की चिकित्सा ॥

कुंभड़ेके रसमें गुड़मिलाकर पीने से कोदोंका मद नष्ट होताहै दूधमें शक्कर मिलाकर पीने से धतूरे के मदका नाशहोताहै तृप्ति पूर्वक शीतल जलपीने से छर्दि मूर्च्छा तथा अतीसार सहित सुपारीके मदका नाशहोताहै बनके कंडेके सूंघने से जलपीने से अथवा नोनखाने से भी सुपारीके मदका नाशहोताहै शक्करके ग्रास को मुख में रखनेसे चूने से हुई मुखकी पीड़ा का नाशहोताहै चूने को मल कर सूंघनेसे पान के मदका नाश होताहै हड़के सेवन से जायफलके मदका शीघ्रनाशहोताहै शीतलजलमें स्नानकरने से और शक्करसहित दहीके खानेसे बहेड़े के मदका नाश होताहै मद्यको पीकर जो शीघ्रही घीमें शक्कर मिलाकर चाटे तौ बहुत नशीली मद्यकाभी मदनाश होताहै इति पानात्यय पर मदपानाजीर्ण पानविभ्रमाधिकार ॥ ३७० ॥

अथ दाहाधिकारः। तत्रदाहःसप्तविधस्तेष्वादौपित्तजंदाहमाह ॥

पित्तज्वरसमःपित्तदाहःस्यात्तस्यसंक्रमः। दाहउष्मात्मकोव्याधिः पित्तज्वरसमानः पित्तज्वरलक्षणयुक्तः पित्तज्वरेत्वामाशयदुष्टादह्लांद्वयोऽधिकाइतिभेदः तस्यदाहस्य पित्तज्वरोक्तक्रमचिकित्सा ॥ ३७१ ॥

दाह का अधिकार ॥

दाह सातप्रकारका है उनमें से पहले पित्तज दाहको कहते हैं पित्तज दाहमें पित्तज्वरके लक्षण होते हैं.(परन्तु भेद यह है कि पित्तज्वरमें बेचैनी तथा आमाशय में दोष अधिक होते हैं और दाहमें यह नहींहोते हैं) इस्से इसकी चिकित्साभी पित्तज्वरके समान होती है ३७१ ॥

रक्तजमाह ॥

कृत्स्नदेहानुगंरक्तमुद्रिक्तंदहतिध्रुवम्। सन्धूप्यतेचोष्यतेचताम्राभस्ताम्रलोचनः ॥ लोहगन्धाङ्गवदनोवह्निनेवावकीर्य्यते। उद्रिक्तमतिरक्तंसत्दहतिदाहाख्यंव्याधिंकरोतिसन्दह्यते अग्निनादह्यतइवउष्यतेसमीपस्थेनेव वह्निनाताप्यतेचूष्यतइतिपाठान्तरे आचूषणेनेवपीड़ामनुभवतीत्यर्थः। वह्निनेवावकीर्य्यतेशरीरोपरिवह्निप्रक्षिप्यतइवशस्त्रादिक्षतनिःस्नुतइव ॥ ३७२ ॥ रक्तज दाहका वर्णन ॥

रक्तज दाहमें संपूर्ण शरीरका रुधिर कुपित होकर दाह को उत्पन्न करता है इसमें रोगी समीपमें धरी हुईसी अग्नि के द्वारा संतप्तके समान पीड़ित होताहै तृषित होताहै शरीर तथा नेत्र ताम्र वर्ण होजातेहैं शरीर तथा मुखमें लोहेकीसी गन्धि आती है और शरीर में चिन्गारियांसी गिरीहुई मालूमपड़ती हैं ॥ ३७२ ॥

रक्तपूर्णकोष्ठजमाह ॥

असृजापूर्णकोष्ठस्यदाहोऽन्यःस्यात्सुदुस्तरः। असृजाशस्त्रादिक्षतान्निःसृतरक्तेन ३७३ ॥

रक्तपूर्णकोष्ठज दाह का वर्णन ॥

शस्त्र आदिके द्वारा हुए घावसे बहने वाले रुधिर से कोष्ठके पूर्ण होजाने पर एक प्रकारका अत्यन्तदुस्तर दाह उत्पन्न होताहै इसको रक्तपूर्ण कोष्ठज कहते हैं ॥ ३७३ ॥

मद्यजमाह ॥

त्वचंप्राप्तःसपानोष्मापित्तरक्ताभिमूर्च्छितः। दाहंप्रकुरुतेघोरंपित्तवत्तत्रभेषजम् ॥ सपानोष्मामद्यपानजनितउष्मापित्तरक्ताभिमूर्च्छितः। पित्तरक्ताभ्यांवर्द्धितः ॥ ३७४ ॥

मद्यज दाहका वर्णन ॥

मद्यपीने से हुई ऊष्मा पित्त तथा रुधिर के साथबढ़ीहुई त्वचामें प्राप्तहोके भयंकर दाहको उत्पन्न करती है इसमें पित्तकी सी चिकित्सा करनी चाहिये ॥ ३७४ ॥

तृषानिरोधजमाह ॥

तृष्णानिरोधादब्धातौक्षीणेतेजःसमुद्धतम्। सवाह्याभ्यन्तरंदेहंप्रदहेन्मन्दचेतसः ॥ संशुष्कगलताल्वोष्ठोजिह्वांनिःकाश्यवेपते। अब्धातौरसेक्षीणेक्षयंप्राप्तेतेजःसमुद्धतंवृद्धं मन्दचेतसःअल्पबुद्धेःयतस्तेनतृषानिरोधःकृतः ॥ ३७५ ॥

तृषा निरोधज दाहका वर्णन ॥

जो मन्द बुद्धि मनुष्य तृषा होने पर जल नहीं पीताहै उसकी रस धातुके क्षीण होजानेपर बढ़ा हुआ तेज शरीरके भीतर तथा बाहर दाहको उत्पन्न करताहै इसमें कंठ तालु तथा ओठ सूखजाते हैं जिह्वा बाहर निकल आतीहै और कंप होताहै ॥ ३७५ ॥

धातुक्षयजमाह ॥

धातुक्षयोत्थोयोदाहस्तेनमूर्च्छातृषान्वितः । क्षामस्वरः क्रियाहीनः ससीदेद्भृश पीडितः॥ ३७६ ॥

धातु क्षयज दाहका वर्णन ॥

धातुक्षयज दाहमेंमूर्च्छा तृषा स्वरभंग कार्योंमे असमर्थता औरबहुत दाहहोनेसे मृत्युभीहोजातीहै ३७६॥

मर्माभिघातजमाह ॥

मर्माभिघातजोऽप्यस्तिसोऽसाध्यःसप्तमोमतः।मर्माणिशिरोहृदयवस्त्यादीनि॥३७७॥

मर्माभिघातज दाहका वर्णन ॥

शिर हृदय तथा मूत्राशय आदि स्थानोंमें चोटलगनेसे जोदाह उत्पन्न होताहै वहअसाध्यहै ३७७॥

असाध्यदाहमाह ॥

सर्वएवचवर्ज्याःस्युःशीतगात्रस्यदेहिनः ॥ ३७८ ॥

असाध्य दाहके लक्षण ॥

शीतल शरीरवाले मनुष्योंके संपूर्ण दाह असाध्य होतेहैं ॥ ३७८ ॥

अथ दाहचिकित्सा ॥

शतधौतघृताभ्यक्तंलेपंवायवशक्तुभिः । कोलामलकयुक्तैर्वाधान्याऽम्लैरपिबुद्धिमान् । धान्याम्लंकाञ्जिकभेदः । छादयेत्तस्यसर्वाङ्गमारनालार्द्रवाससा । लामज्जकेनयुक्तेन चन्दनेनानुलेपयेत् ॥ चन्दनाम्बुकणास्यन्दितालवृन्तोपवीजनैः । सुप्याद्दाहार्दितोऽम्भोजकदलीदलसंस्तरे ॥ परिषेकावगाहेषुव्यजनानाञ्चसेवने । शस्यतेशिशिरन्तोयंदाह तृष्णोपशान्तये ॥ फलिनीलोध्रसेव्याम्बुहेमपत्रंकुटन्नटम् । कालीयकरसोपेतंदाहेशस्तं प्रलेपनम्॥ फलिनीप्रियङ्गुःसेव्यंउशीरंअम्बुवालकं।हेमपत्रंनागकेशरपत्रंकुटन्नटंवितुन्न कंगुड़तजीइतिलोके क्वचित्चम्बावती इतिनामकालीयकंकलम्बकइतिलोके । ह्रीवेरप द्मकोशीरचन्दनाम्बुजवारिणा ॥ सम्पूर्णामवगाहेतद्रोणींदाहार्दितोनरः ॥ ३७९ ॥

दाहकी चिकित्सा ॥

सौवारका धोया हुआ घी तथा जौके सत्तू मिलाकर लेप करनेसे बेर तथा आमले एकसाथ कांजी में पीसकर लेप करनेसे कांजी में भीगे हुए कपड़ेके ओढ़नेसे खस तथा चन्दनको शिरके में पीसकर लेपकरनेसे और कमल तथा केले के पत्तोंकी शय्यापर शयन करके चन्दन युक्त जलसे सिंचेहुए पंखों की बायुके सेवनसे दाहका नाश होताहै तृषा तथा दाहकी शान्तिके लिये जलसे सींचना स्नान करना तथा पंखोंपर छिड़कना इन सबकार्य्योंमें शीतल जल श्रेष्ठहै माल कंगनी लोध खस सुगन्धबाला नागकेशरके पत्ते और गुड़तजी इनसबको कलंबकके रसमें पीसकर लेपकरने से सुगन्धबाला पद्माक

खस चन्दन तथा कमलको पीसकर जलमें मिलाके फिर इस जलको हौजमें भरकर उसमें स्नान करनेसे दाहका नाशहोताहै ३७९॥

वाप्यःकमलहासिन्योजलयन्त्रगृहाःशुभाः । नार्यश्चन्दनदिग्धाङ्ग्योदाहदैन्यहरामताः ॥ पाययेत्कमलस्याम्भःशर्कराम्भःपयोऽपिच । क्षीरमिक्षुरसञ्चापिकारयेत्पित्तजिद्विधिम् ॥ ३८० ॥

फूलेहुए कमलवाली बावड़ी फुहारेदार घर और शरीरमें चन्दन लगायेहुए स्त्री यह सब दाहकी नाशकहैं कमलका जल शक्करयुक्त जल अथवा दूध तथा ईखका रस इनका सेवन करनेसे और पित्त नाशक चिकित्सा करने से दाह का नाश होताहै ॥ ३८० ॥

पटीरपर्पटोशीरनीरर्नीरदनीरजैः। मृणालमिसिधान्याकपद्मकामलकैःकृतः ॥ अर्द्धशिष्टःसिताशीतःपीतःक्षौद्रसमन्वितः । क्वाथोऽपोहयेद्दाहंनृणाञ्चपरमोल्वणम् ॥ पटीरंचन्दनम् । इतिचन्दनादिक्वाथः ॥ ३८१ ॥

चन्दन पित्तपापड़ा खस सुगन्धबाला मोथा कमल कमलकीडंडी सोंफधनियां पद्माक और आमला इन सबके द्वारा आधा अवशिष्ट काढ़ा बनाकर शीतल होजानेपर शक्कर तथा सहत डालकर पीनेसे बहुत बढ़ेहुएभी दाहका नाश होताहै इति चन्दनादिक्वाथ ॥ ३८१ ॥

तिलतैलंभवेत्प्रस्थंतत्षोड़शगुणेशनैः । काञ्जिकेविपचेत्तत्स्याद्दाहज्वरहरंपरम् ॥ इतिकाञ्जिकतैलम् । इतिदाहाधिकारः ॥ ३८२ ॥

६४ तोले तिलके तैलको १६ गुनी कांजीमें पकाकर मर्दन करनेसे दाह ज्वरका नाश होताहै ॥ इति कांजिकतेल इति दाहाधिकार ॥ ३८२ ॥

अथोन्मादाधिकारस्तत्रोन्मादस्य निरुक्तिमाह ॥

मदयन्त्युद्धतादोषायस्मादुन्मार्गमाश्रिताः।मानसोऽयमतोव्याधिरुन्मादइतिकीर्त्तितः। अयमर्थः । यस्माद्धेतोरुद्धताःप्रवृद्धाःदोषाःउन्मार्गमाश्रिताःमदयन्तिचित्तंविक्षिपन्ति अस्मिन्सोऽयमुन्मादइतिकीर्त्तितःसउन्मादःमानसोव्याधिःमनोवैकृत्यकारणात् । तस्यैवावस्थाभेदेनामान्तरमाह ॥ सचाप्रवृद्धस्तरुणोमदसंज्ञां बिभर्त्तिच । सउन्मादः तरुणोनवीनः ३८३ ॥ उन्मादका अधिकार उन्मादकी निरुक्ति ॥

विमार्गमें प्राप्त बढ़ेहुए दोष चित्तको विकल करतेहैं इसलिये इसको उन्माद कहते हैं यह मानस रोगहै और वही उन्मादरोग जो बहुत बढ़ा नहोय और नवीन होयतो उसको मद कहतेहैं ॥ ३८३ ॥

उन्मादस्यविप्रकृष्टंलक्षणमाह ॥

विरुद्धदुष्टाशुचिभोजनानिप्रधर्षणंदेवगुरुद्विजानाम् । उन्मादहेतुर्भयहर्षपूर्वोमनोऽभिघातोविषमाचचेष्टा । दुष्टंधत्तूरबीजादिसहितंअशुचिरजस्वलास्पर्शादिप्रधर्षणमभिभवःविषमाचेष्टावलवद्विग्रहादिः ॥ ३८४ ॥

उन्मादके दूरवाले कारण ॥

बिरुद्ध दुष्ट (धतूरेकेबीज आदिसे युक्त) तथा अशुचि (जस्वलास्त्री आदिकोंसे छुएहुए) भोजन

से देवता गुरू तथा ब्राह्मणोंके तिरस्कारसे भयसे हर्षसे मनके तोडनेसे और बलवानके साथ युद्धादि से उन्माद रोग उत्पन्न होताहै ॥ ३८४ ॥

सन्निकृष्टंनिदानमाह ॥

एकैकशःसर्वशश्चदोषैरत्यर्थमूर्च्छितैः। मानसेनचदुःखेनसपञ्चविधउच्यते॥विषाद्भव तिषष्ठश्चयथास्वंतत्रभेषजम् । तस्यसंप्राप्तिमाह । तैरल्पसत्वस्यमलाःप्रदुष्टाःबुद्धेर्नि वासंहृदयंप्रदूष्य ॥ स्रोतांस्यधिष्ठायमनोवहानिप्रमोहयन्त्याशुनरस्यचेतः अल्पसत्वस्य अल्पसत्वगुणस्यमलावातादयः बुद्धेर्निवासंहृदयंप्रदूष्येतिएतेनाश्रयस्यदुष्यातदाश्रिता याःबुद्धेरपिदुष्टिरुक्तामनोवहानिस्रोतांसिहृदयाश्रितानिदशएतानिविशेषतोबोद्धव्यानि। चरकेणसकलशरीरस्रोतांस्येवमनोऽधिष्ठानत्वेनोक्तानिप्रमोहयन्तिविकृतिंकुर्वन्ति३८५॥

उन्मादके समीपी कारण ॥

उन्माद ६ प्रकारकाहै वातज पित्तज कफज सन्निपातज मनके दुःखसे उत्पन्न और विषज इनमें अपने २ अनुसार चिकित्साकी जातीहै ऊपर कहेहुए कारणोंके द्वारा दूषित दोष थोडे सत्त्वगुणवाले मनुष्यके बुद्धिके स्थान रूप हृदयको दूषित करके और मनके लेचलनेवाले स्रोतोंमें स्थित होकेचित्त को मोहितकरतेहैं ॥ ३८५ ॥ उन्मादस्यसामान्यरूपलक्षणमाह ॥

धीविभ्रमःसत्वपरिप्लवश्चपर्याकुलादृष्टिरधीरताच । अबद्धवाक्यंहृदयञ्चशून्यंसामा न्यउन्मादगदस्यलिङ्गम् ॥ धीविभ्रमःशुक्तिकायांरजतज्ञानम्। सत्वपरिप्लवःसत्वंमनस्त स्यचाञ्चल्यं ॥ अबद्धवाक्यम्असंबद्धभाषित्वं। शून्यंस्मृतिशून्यं ॥ ३८६ ॥

उन्मादका सामान्य लक्षण ॥

सामान्य उन्मादमें बुद्धि भ्रम मनकी चंचलता व्याकुलदृष्टि अधीरता असम्बद्धवाक्य और हृदय का स्मृतिसे रहितहोना यह लक्षण होतेहैं ॥ ३८६ ॥

वातिकोन्मादस्यनिदानपूर्विकांसंप्राप्तिमाह ॥

रूक्षोष्णशीतान्नविरेकधातुक्षयोपवासैरनिलोऽतिवृद्धः । चिन्तादिदुष्टंहृदयंप्रदूष्य बुद्धिंस्मृतिंचाप्युपहन्तिशीघ्रम्। प्रदूष्यप्रकर्षेणदूषयित्वा ॥ ३८७ ॥

बातज उन्मादकी निदान पूर्वक संप्राप्ति ॥

रूखे तथा अल्प शीतल अन्नके भोजन से विरेचन से धातुक्षयसे और लंघनों से बहुत बढ़ी हुई वायु चिन्ता आदि से व्याकुल हृदयको दूषित करके बुद्धि तथा स्मृतिको शीघ्र नष्ट करती है ३८७॥

तस्यैवरूपमाह ॥

अस्थानहास्यस्मितनृत्यगीतवागङ्गविक्षेपणरोदनानि। पारुष्यकार्श्यारुणवर्णताच जीर्णेबलञ्चानिलजस्यरूपम् ॥ अस्थानेऽनवसरे । हास्यादीनिरोदनान्तानिजीर्णेआहा रेबलंव्याधेः ॥ ३८८ ॥ बातज उन्मादका लक्षण ॥

बातज उन्मादमें बे कायदे हँसना मुसक्याना नाचना गाना बकना अंगोंका चलाना रोना कृशता कठोरता और रक्तवर्ण होना यह लक्षण होते हैं और भोजनके पचजाने पर यह रोग बढ़ताहै ३८८॥

पैत्तिकस्यनिदानपूर्विकांसंप्राप्तिमाह ॥

अजीर्णकट्वम्लविदाह्यशीतैर्भोज्यैश्चितंपित्तमुदीर्णवेगम् । उन्मादमत्युग्रमनात्मकस्यहृदिस्थितंपूर्ववदाशुकुर्यात् ॥ हृदिस्थितंपितंचित्तंसंचितंपुनःअजीर्णकट्वम्लविदाह्यशीतैर्भोज्यैरुदीर्णवेगंसत्उन्मादंकुर्यात्पूर्ववद्धृदयंप्रदूष्येत्यर्थः॥ ३८९ ॥

पित्तज उन्मादकी निदान पूर्व्वक संप्राप्ति ॥

अजीर्णकारी कड़वी खट्टी बिदाही तथा उष्ण बस्तुओंके भोजनसे हृदय में इकट्ठा हुआ पित्त कुपित होकर हृदयको दूषित करके बहुत शीघ्र उन्माद को उत्पन्न करता है ॥ ३८९ ॥

तस्यरूपमाह ॥

अमर्षसंरम्भविनग्नभावाःसन्तर्जनाभिद्रवणौष्ण्यरोषाः । प्रच्छायशीतान्नजलाभिलाषाःपित्ताचयापित्तकृतस्यलिंगम् ॥ अमर्षोऽसहिष्णुतासंरम्भआरम्भटोआडम्बरइतियावत् । सन्तर्जनंपरित्रासनं । अभिद्रवणंपलायनंऔष्ण्यंगात्रेचोष्णोदाहाविशेषः प्रच्छायइत्यादिच्छायायांशीतयोश्चान्नजलयोरभिलाषः ॥ ३९० ॥

पित्तज उन्मादके लक्षण ॥

पित्तज उन्मादमें असहनता आडंबर नंगापन डरावना भागना शरीरमें कुछदाह क्रोध और छाया तथा शीतल अन्नपान में अभिलाष यह लक्षण होते हैं ॥ ३९० ॥

श्लैष्मिकस्यनिदानपूर्विकांसंप्राप्तिमाह ॥

सम्पूरणैर्मन्दविचेष्टितस्यसोष्माकफोमर्मणिसंप्रवृद्धः । बुद्धिंस्मृतिञ्चाप्युपहन्तिचित्तंप्रमोहयन्संजनयेद्विकारम् ॥ सम्पूरणैः । भोजनादिभिःमन्दविचेष्टितस्यव्यायामरहितस्यसोष्माकफइतिकफोऽप्युन्मादंकरिष्यन् पित्तसहायमपेक्षते । व्याधिस्वभावात्मर्मणि अत्रमर्मशब्देनहृदयमुच्यतेविकारमुन्मादरूपम् ॥ ३९१ ॥

कफज उन्मादकी निदान पूर्व्वक संप्राप्ति ॥

व्यायामादिरहित मनुष्य का बहुत भोजन आदिकों से पित्त सहित बढ़ाहुआ कफ हृदयमें स्थितहोकर बुद्धि तथा स्मृति को नष्ट करताहुआ चित्तको मोहित करके उन्माद को उत्पन्न करता है ३९१॥

तस्यरूपमाह ॥

वाक्चेष्टितंमन्दमरोचकश्चनारी विविक्तप्रियताचनिद्रा। छर्दिश्चलालाचबलञ्चभुक्तेनखादिशौक्ल्यञ्चकफात्मकेस्यात् ॥ वाक्चेष्टितंमन्दंबचनमल्पंनारीविविक्तप्रियतानारीप्रियताविजनप्रियताचभुक्तेसतिबलंव्याधेः ॥ ३९२ ॥

कफज उन्माद का लक्षण ॥

कफज उन्मादमें थोड़ा बोलना अरुचि स्त्रीमें प्रेम निर्जन स्थानमें रहने की इच्छा अधिक निद्रा छर्दि लार बहना और नख आदिकों में स्वेतता यह लक्षण होते हैं यहरोग भोजनके उपरान्त बलवान होता है ॥ ३९२ ॥

सान्निपातिकस्य निदानपूर्वकं लक्षणमाह ॥

यःसन्निपातप्रभवोऽतिघोरःसर्वैःसमस्तैःसतुहेतुभिःस्यात् । सर्वाणिरूपाणिविभर्त्ति तादृक्विरुद्धभैषज्यविधिर्विवर्ज्यः ॥ ससान्निपातिकउन्मादःसन्निपातग्रहणेनैवसर्वात्मकत्वंलब्धंपुनःसर्वैरितियत्कृतंतद्रजस्तमःप्रापणार्थंतेनरजस्तमोमिलितइत्यर्थः । तेनवातादयोरजस्तमोभिर्मनोदोषैर्मिलिताः॥समस्तैश्चनिदानैःकुपिताउन्मादंजनयन्ति। सर्वैर्हेतुभिःसमस्तैर्मिलितैःस्यात्यतोऽन्योव्याधिःसर्वैर्हेतुभिर्मिलितैरेवभवतीतिनियमोनास्ति । अयंतुव्याधिप्रभावात्सर्वैर्हेतुभिर्मिलितैःस्यात् । तादृगुन्मादःविरुद्धभैषज्यविधिरितिकोऽर्थः ॥ त्रिदोषजेप्रत्येकंवातादेरप्रत्यनीकाकार्या । साचपरस्परविरोधिनीत्रिदोषंहन्ति किञ्चिदेवद्रव्यंआमलकादि । तच्चात्रयौगिकंव्याधिप्रभावादतएवविवर्ज्यःनचिकित्स्या इत्यर्थः ॥ ३९३ ॥ सन्निपातज उन्मादका निदानपूर्वक लक्षण ॥

ऊपर कहे हुए संपूर्ण कारणों से कुपित हुए रजो गुणतमोगुण मिले हुए वातादिकदोष सन्निपातज उन्माद को उत्पन्न करते हैं इसमें ऊपरकहे हुए संपूर्ण निदान मिले हुए होते हैं यह रोगका प्रभावहै और इसमें ऊपरकहे हुए सबलक्षण मिलते हैं इस प्रकारके विरुद्ध चिकित्सा वाले घोर सन्निपातज उन्माद वालेको वैद्य त्याग करदें ॥ ३९३ ॥

मनोदुःखजस्यविप्रकृष्टंनिदानमाह ॥

चौरैर्नरेन्द्रपुरुषैररिभिस्तथान्यैर्वित्रासितस्यधनबान्धवसंक्षयाद्वा । गाढंक्षतेमनसिचप्रिययारिरंसोर्जायेतचोत्कटतरोमनसोविकारः ॥ अन्यैःहिंस्रादिभिःगाढमतिशयेनक्षतेऽभिहतेप्रिययाप्राप्तुमशक्ययारिरंसोःपुरुषस्यविकारःउन्मादरूपः ॥ ३९४ ॥

मनके दुःखसे हुए उन्मादके दूर वाले कारण ॥

चोर राज पुरुष शत्रु अथवा अन्य हिंसक जीवों के भयसे धन तथा बन्धुओंके क्षयसे और बहुत काम से पीड़ित होकर अभिलाष की हुई स्त्रीके न मिलने से मनके क्षोभित होनेपर अत्यन्त भयंकर मानसिक उन्माद उत्पन्नहोताहै ॥ ३९४ ॥ तस्यरूपमाह ॥

चित्रंब्रवीतिचमनोऽनुगतंविसंज्ञोगायत्यथोहसतिरोदितिचातिमूढः । चित्रमाश्चर्यंमनोऽनुगतंगोप्यमपिविसंज्ञोविरुद्धज्ञानः ॥ अतीवमूढःअतीवज्ञानशून्यः । अत्रविकल्पो बोद्धव्यः ॥ ३९५ ॥ मनके दुःख से हुए उन्मादके लक्षण ॥

मानस उन्मादमें ज्ञानका विपरीत होना अथवा ज्ञानका न होना मनमें स्थित छिपाने के योग्य भी बातोंका कहना गाना हँसना और रोना यह लक्षण होतेहैं ॥ ३९५ ॥

विषजस्यरूपमाह ॥

रक्तेक्षणोहतबलेन्द्रियभाःसुदीनः। श्यावाननोविषकृतेतुभवेत्परासुः। परासुःमृतः ३९६॥

बिषज उन्मादके लक्षण ॥

बिषज उन्माद में नेत्रोंका लालहोना बल इन्द्री तथा कान्तिका नष्टहोना मुखका मलिन होना और अत्यन्त दीनता यह लक्षण होतेहैं इसमें रोगी मरजाताहै ॥ ३९६ ॥

अरिष्टमाह ॥

अवाङ्मुखस्तून्मुखोवाक्षीणमांसवलोनरः।जागरूकोह्यसन्देहमुन्मादेनविनश्यति३९७॥

उन्मादके अरिष्ट ॥

जो उन्मादी रोगी नीचेको अथवा ऊपरको मुख किये रहै और उसका मांस तथा बल क्षीण होजाय निद्रा न आवे तो वह मरजाता है॥ ३९७॥

अथदेवादिकृतस्योन्मादस्यसामान्यंलक्षणमाह ॥

अमर्त्यवाग्विक्रमवीर्यचेष्टोज्ञानादिविज्ञानबलादियुक्तः। प्रकोपकालोनियतश्चयस्य देवादिजन्मामनसोविकारः ॥ अमर्त्यवाग्विक्रमवीर्यचेष्टःनमर्त्यस्येववागादयोयत्रसःवि क्रमःपराक्रमःवीर्यंशौर्यंज्ञानादिविज्ञानबलादियुक्तःज्ञानंबुद्धिः आदिपदेनतद्भेदाः मेधावि चारणास्मृत्यादयोगृह्यन्ते। विज्ञानंशिल्पादिविषयकंज्ञानंबलंचेष्टापाटनम् ॥ आदिपदे नाभिमानादिगृह्यतेनियतःवक्ष्यमाणतिथ्यादिभिःमनोविकारउन्मादः ॥ ३९८ ॥

देवता आदिकों से हुए उन्मादका सामान्य लक्षण॥

जिस उन्मादमें बाणी पराक्रम शौर्य्य शरीरकी चेष्टा बुद्धि स्मृति मेधा बिचार शिल्पादि बिषयोंका ज्ञानतथा बल आदिक मनुष्यके से न होंय और रोगके कोपका समय निश्चित न होवे उसको देवादि कृत उन्माद कहतेहैं ॥ ३९८ ॥

तत्रदेवाविष्टस्यलक्षणमाह ॥

सन्तुष्टःशुचिरतिदिव्यमाल्यगन्धोनिस्तन्द्रोप्यवितथसंस्कृतप्रभाषी ॥ तेजस्वीस्थि रनयनोवरप्रदाता। ब्रह्मण्योभवतिनरःसदेवजुष्टः ॥ अतिदिव्यमाल्यगन्धः। अतिशये नदिव्यस्यमाल्यस्येवगन्धोयस्यसः ॥ निस्तन्द्रोनिद्रारहितःअवितथंसत्यंब्रह्मण्यःब्राह्म णभक्तः ॥ ३९९ ॥ देवताओं से हुए उन्माद के लक्षण ॥

देवताओं से हुए उन्माद में रोगी संतुष्ट पवित्र अत्यन्त दिव्यमालाओं कीसी सुगन्धि से युक्त निद्रारहित सत्य संस्कृत बोलने वाला तेजस्वी स्थिर नेत्रवाला ब्राह्मण भक्त और बरदान देनेवाला होताहै ॥ ३९९॥

दैत्याविष्टमाह ॥

संस्वेदोद्विजगुरुदेवदोषवक्ता। जिह्माक्षोविगतभयोविमार्गदृष्टिः ॥ सन्तुष्टोभवतिन चान्नपानजातैर्दुष्टात्माभवतिसदेवशत्रुजुष्टः । विमार्गदृष्टिःकुमार्गरतःदुष्टात्मादुष्टस्व भावः ॥ ४०० ॥ दैत्यों से हुए उन्मादका लक्षण॥

दैत्योंसे हुए उन्मादमें स्वेद नेत्रोंमें कुटिलता निर्भय होना कुमार्ग गामीहोना अन्न पानादिकों में संतुष्ट न होना दुष्टता और ब्राह्मण गुरू तथा देवताओं के दोषोंको कहना यह लक्षण होतेहैं ॥ ४००॥

गन्धर्वाविष्टमाह ॥

हृष्टात्मापुलिनवनान्तरोपसेवीस्वाचारःप्रियपरिगीतगन्धमाल्यः । नृत्यन्वैप्रहसति चारुचाल्पशब्दमृगन्धर्वग्रहपरिपीडितोमनुष्यः ॥ हृष्टात्माहृष्टजीवात्मापुलिनन्तोयोत्थि ततटंवनान्तरंवनमध्यन्तयोःसेवीचारुचाल्पशब्दमितिहसनक्रियाविशेषणम् ॥ ४०१ ॥

गन्धर्वोंसे हुए उन्माद का लक्षण ॥

गन्धर्व्वों से हुए उन्माद में अन्तःकरण की प्रसन्नता जलके किनारे तथा वनोंमें निवास करना अपने आचार में रहना गीत तथा सुगन्धित माला आदिकों में प्रीतिहोना सुन्दर नाचना और धीरे २ मनोहर हँसना यह लक्षण होतेहैं ॥ ४०१ ॥

यक्षाविष्टमाह ॥

ताम्राक्षःप्रियतनुरक्तवस्त्रधारीगम्भीरोद्रुतगतिरल्पवाक्सहिष्णुः । तेजस्वीवदतिच किंददामिकस्मैयोयक्षग्रहपरिपीडितोमनुष्यः ॥ ४०२ ॥

यक्षोंसे हुए उन्मादका लक्षण ॥

यक्षोंसे हुए उन्मादमें नेत्रोंका ताम्रवर्ण होना महीन तथा रक्त वस्त्रोंका पहरना गंभीरता जल्दी चलना थोड़ा बोलना सहन शीलता तेजस्वी होना और किसको क्या देदूं ऐसाकहना यह सब लक्षण होतेहैं ॥ ४०२ ॥

पित्राविष्टमाह ॥

प्रेतानांसदिशतिसंस्तरेषुपिण्डान् । शान्तात्माजलमपिचापसव्यवस्त्रः ॥ मांसेप्सुस्तिलगुड़पायसाभिलाषीतद्भक्तोभवतिपितृग्रहाभिजुष्टः । प्रेतानांमृतानांपितॄणांदिशति ददाति ॥ अपसव्यवस्त्रःदक्षिणस्कन्धकृतोत्तरीयः ॥ ४०३ ॥

पितरों के उन्माद के लक्षण ॥

पितरोंके उन्माद में रोगी शान्त होकर दक्षिण कन्धेमें यज्ञोपवीत रखकर और कुशोंको बिछाकर पितरोंको जल तथा पिंडदेता है पितरोंका भक्त और मांस तिल गुड़ तथा खीर खानेकी अभिलाषा किया करताहै ॥ ४०३ ॥

नागाविष्टमाह ॥

यस्तूर्व्यांप्रसरतिसर्प्पवत्कदाचित्सृक्किण्योमुहुरपिजिह्वयावलेढि ः क्रोधालुर्घृतमधुदुग्धपायसेप्सुर्विज्ञेयःसखलुभुजङ्गमेनजुष्टः ॥ प्रसरतिससर्पवत्उरसाचलतिसृक्किण्यो ओष्ठप्रान्तौ ॥ ४०४ ॥

सर्पोंसे हुए उन्माद के लक्षण ॥

सर्पोंके उन्मादमें सर्पोंके समान छातीसे पृथ्वीपर चलना जिह्वासे ओठोंके किनारोंको बारम्बार चाटना क्रोधयुक्तहोना और घी सहत दूध तथा खीरखानेकीइच्छाकरना यहलक्षण जाननेचाहिये ४०४॥

राक्षसाविष्टमाह ॥

मांसासृग्विविधसुराविकारलिप्सुर्निर्लज्जोभृशमतिनिष्ठुरोऽतिशूरः । क्रोधालुर्विविधवलोनिशाविहारीशौचद्विड्भवतिसदाराक्षसैर्गृहीतः ॥ अतिनिष्ठुरोनिर्दयः ॥ ४०५ ॥

राक्षसोंसे हुए उन्मादके लक्षण ॥

राक्षसों से हुए उन्माद में मांस रुधिर तथा अनेक प्रकारकी मदिराओं में इच्छा निर्लज्जता बहुत निर्दयता बहुत शूरता क्रोध बहुतबल रात्रिमें घूमना और पवित्र न रहना यह लक्षण होते हैं ४०५॥

ब्रह्मराक्षसाविष्टमाह ॥

देवविप्रगुरुद्वेषीवेदवेदाङ्गनिन्दकः ।आत्मपीड़ाकरोऽहिंस्रोब्रह्मराक्षससेवितःअहिंस्रः अहिंसाशीलः ॥ ४०६ ॥

ब्रह्मराक्षसोंसे हुए उन्मादका लक्षण ॥

ब्रह्मराक्षससे हुए उन्मादमें देवता ब्राह्मण तथा गुरुओंसे द्वेष करना वेद वेदांगोंकी निन्दा करना अपनेको पीडादेना और हिंसा न करना यह लक्षण होतेहैं ॥ ४०६ ॥

पिशाचाविष्टमाह ॥

उद्ध्वस्तः कृशपरुषोविरुद्धभाषीदुर्गन्धोभृशमशुचिस्तथातिलोलः । बह्वाशीविजनवनान्तरोपसेवीव्याचेष्टन्त्रसतिरुदन्पिशाचजुष्टः ॥ उद्ध्वस्तःनग्नःदिगम्बरइतिविदेहवचनात् कृशोनिर्मांसः। परुषोरूक्षः अतिलोलःसर्वस्मिन्नन्नपानादौलोलुपःव्याचेष्टन्विरुद्धमाचेष्टन् ॥ ४०७ ॥ पिशाचोंसे हुए उन्मादके लक्षण ॥

पिशाचोंसेहुए उन्मादमें रोगी नग्न कृश रूखा विरुद्ध बोलनेवाला सबप्रकारके अन्नपानादिमें लोभ युक्त दुर्गन्धित बहुत अपवित्र अत्यन्त खानेवाला निर्जन तथा वनमें रहनेवाला विरुद्ध चेष्टा युक्त तथा भयभीत होताहै और रोताहै ॥ ४०७ ॥

ग्रहाहिंसाक्रीडापूजार्थंगृह्णन्ति । अतएवोक्तम् अशुचिभिन्नमर्य्यादंक्षतंवायदिवाक्षतम् ॥ हिंस्रहिंसाविहारार्थंसत्कारार्थमथापिवा ॥ ४०८ ॥

ग्रह मनुष्योंको हिंसा क्रीडा अथवा पूजाके लिये ग्रहण करते हैं इसीसे कहागयाहै कि अपवित्र मर्य्यादा रहित घाव युक्त अथवा घाव रहित मनुष्यको देवादिग्रह हिंसा क्रीडा अथवा पूजनके लिये ग्रहण करतेहैं ॥ ४०८ ॥ तत्रहिंसार्थगृहीतस्यलक्षणमाह ॥

स्थूलाक्षोद्रुतमटनःसफेणवाग्मीनिद्रालुःपततिचकम्पतेचयोऽति । यश्चाद्रिद्विरदनगादिविच्युतःस्यात्सोऽसाध्योभवतितथात्रयोदशेऽब्दे ॥ यश्चाद्रिइत्यादियःपर्वतादिपतितःसनग्रहैर्गृह्यतइत्यर्थः। आदिशब्देनभित्तिप्रासादादयोगृह्यन्तेतथात्रयोदशेऽब्देसर्वएवदेवादिगृहीताऽसाध्याः ॥ ४०९ ॥

हिंसाके लिये ग्रहण कियेगयेके लक्षण ॥

जो उन्मादी रोगी फैलेहुए नेत्रवाला जल्दीचलनेवाला तथा फेनेसहित बमन करनेवालाहोताहै निद्राके वशीभूत होकर गिरताहै और कांपताहै वह असाध्यहै जो उन्मादवाला पर्व्वत हाथी वृक्ष अथवा घर आदिकों परसे गिरताहै वह असाध्यहै और जन्म से तेरहवें वर्षमें होनेवाले सब प्रकारके उन्माद असाध्य होतेहैं ॥ ४०९ ॥ देवादीनामावेशसमयमाह ॥

देवग्रहाःपौर्णमास्यामसुराःसन्ध्ययोरपि । गन्धर्वाःप्रायशोऽष्टम्यांयक्षाश्चप्रतिपद्यथा ॥ पितरःकृष्णपक्षेचपञ्चम्यामपिचोरगाः॥रक्षःपिशाचारात्रौचचतुर्दश्यांविशन्तिहि ॥ कृष्णपक्षेऽमावास्यायांप्रायशः यदन्यत्रापितिथ्यभिधानप्रयोजनंलक्षणार्थंतत्रतिथौचवलिदानार्थम्ननुयदिदेवादयोविशान्तितदाविशन्तस्तेकथंनेत्यतआह। दर्पणादीन्यथाछायाशीतोष्णंप्राणिनोयथा ॥ स्वमणिंभास्कराचिंश्चयथादेहंचदेहधृक् । विशन्तिचनदृश्यन्तेग्रहास्तद्वच्छरीरिणांदर्पणादीनित्यादिशब्देनान्यदपिनिर्मलद्रव्यंजलतैलादिद्रवद्रव्यंचगृह्यतेछायाप्रतिबिम्बंस्वमणिःसूर्य्यमणिःदेहधृक्जीवात्मा ॥ ४१० ॥

देवता आदिकोंके आवेशका समय ॥

देवग्रह पौर्णमासीको असुरग्रह दोनों संध्याओंमे गन्धर्व प्रायः अष्टमीको यक्षप्रतिपदाको पितर कृष्णपक्षमें अमावास्याको सर्प पंचमीको राक्षस रात्रिके समय और पिशाच चतुर्दशी को मनुष्य के शरीरमें प्रवेशकरतेहैं अब यह सन्देहहोताहै किजोदेवता आदिक मनुष्योंके शरीरमें जिससमय प्रवेश करतेहैं वह दिखाई क्योंनहींदेते इसका उत्तर यहहै कि जैसे किसी वस्तुकी छाया दर्पण निर्मल वस्तु तथा जल तैलादिकोंमें प्रवेशकरतीहै शीत तथा उष्ण मनुष्यके शरीरमें प्रवेश करताहै ज्वाला जैसे सूर्य्य कान्तिमणिमें प्रवेशकरतीहै और जीवात्मामनुष्यके शरीरमें प्रवेशकरताहै और दिखाईनहींदेता उसीप्रकार देवता आदिकभी मनुष्यके शरीरमें प्रवेशकरतेहैं और दिखाईनहींदेतेहैं ॥ ४१० ॥

अथोन्मादस्यचिकित्सा ॥

वातिकेस्नेहपानंप्राग्विरेकःपित्तसम्भवे । कफजेवमनंकार्य्यंपरोवस्त्यादिकःक्रमः ॥ यच्चोपवीक्ष्यतेकिञ्चिदपस्मारेचिकित्सितम् । उन्मादेतच्चकर्त्तव्यंसामान्यंदोषदूष्ययोः ॥ जलाग्निद्रुमशैलेभ्योविषमेभ्यश्चतंसदा । रक्षेदुन्मादिनंयत्नात्सद्यःप्राणहरंहितत् ॥ तज्जलादि ॥ ४११ ॥ उन्मादकी चिकित्सा ॥

वातज उन्मादमें पहले स्नेहपान पित्तज उन्मादमें विरेचन और कफज उन्मादमें वमन कराना चाहिये पीछेसे बस्ति आदिक देनी चाहिये मिर्गीरोगमें जो कुछचिकित्सा कहीगईहै वह उन्मादमेंभी करनी चाहिये क्योंकि इनकेदोष और दूष्य (हृदयादिक) समहैं जल अग्नि वृक्ष पर्व्वत और ऊंचे स्थानादिकों से यत्न पूर्वक उन्माद वालेकी रक्षा करनी चाहिये क्योंकि इनसे शीघ्रहीं प्राणजानेका सन्देह रहताहै ॥ ४११ ॥

ब्राह्मीकूष्माण्डफलषड्ग्रन्थाशङ्खपुष्पिकास्वरसाः । दृष्टाउन्मादहृतःपृथगेतेकुष्ठमधुमिश्राः ॥ अयमर्थःब्राह्मीरसःतोला ४कुष्ठचूर्णमासे२मधुअष्टौमासाः८पेयाः । इत्येको योगःकूष्माण्डबीजचूर्णमासा ८कुष्ठचूर्णमासा२अयंद्वितीयोयोगः ॥ शंखपुष्पीस्वरसंपलैकं१कुष्ठचूर्णमाषद्वयं२मधुनःअष्टौमाषाःपेयाःतृतीययोगः ॥ ४१२ ॥

ब्राह्मीकारस ४ तोले कूटकाचूर्ण २ माशे तथा सहत ८ माशे इनको पीनेसे कुंभड़ेकेबीजोंकाचूर्ण ८ माशे कूटकाचूर्ण २ माशे तथा सहत ८ माशे इनके सेवनसे अथवा शंखपुष्पीकारस १ पल कूटका चूर्ण २ माशे सहत ८ माशे इनकेपीनेसे या श्वेतबच ८ माशे कूटकाचूर्ण २ माशे तथा सहत ८ माशे इनके सेवनसे उन्मादका नाशहोताहै ॥ ४१२ ॥

सिद्धार्थकोहिंगुवचाकरञ्जोदेवदारुचामञ्जिष्ठात्रिफलाश्वेताकटभीत्वक्कटुत्रयम् ॥ समांशानिप्रियंगुश्चशिरीषोरजनीद्वयम् । वस्तमूत्रेणपिष्टोऽयमगदःपानमञ्जनम् ॥ नस्यमालेपनञ्चैवस्नानमुद्वर्त्तनंतथा । अपस्मारविषोन्मादकृत्यालक्ष्मीज्वरापहम् ॥ भूतेभ्यश्चभयंहन्तिराजद्वारेचशस्यते । सर्पिरेतेनसंसिद्धंसगोमूत्रंतदर्थकृत् ॥ सिद्धार्थकादि ॥ ४१३ ॥

सरसों हींग बच करंजुआ देवदारु मजीठ त्रिफला श्वेतविष्णुक्रान्ता त्रिकटु कटुभीकी छाल माल कांगनी सिरस दोनोंहल्दी इनसब औषधियोंको समभाग लेकर बकरेके मूत्रमें पीसकर पीनेसे अंजन

लगानेसे नासलेनेसे लेपकरनेसे स्नानकरनेसे और उबटनलगाने से मिर्गी विषउन्माद कृत्या अलक्ष्मी ज्वर तथा भूतोंके भयका नाशहोताहै और राजद्वारमें श्रेष्ठताहोतीहै ऊपर कहीहुई औषधियोंकेद्वारा गोमूत्र मिलाकर पाककिये घृतके सेवनसे यहीगुणहोतेहैं इति सिद्धार्थकादि ॥ ४१३ ॥

ब्रूयादिष्टविनाशञ्चादर्शयेदद्भुतानिच । वद्धंसर्षपतैलाक्तंरक्षेदुत्तानमातपे ॥ कपिकच्छ्वाथवातप्तैर्लौहतैलजलैःस्पृशेत् । कशाभिस्ताडयेत्तंवासुवद्धंविजनेगृहे ॥ सर्पेणोधृतदंतेनदंशेत्सिंहैर्गजैश्चतम् । त्रासयेत्शस्त्रहस्तैश्चशत्रुभिस्तस्करैस्तथा ॥ अथवाराजपुरुषावहिर्नीत्वासुसंयतम् । त्रासयेयुर्बधादेनंतर्जयन्तोनृपाज्ञया ॥ देहदुःखभयेभ्योहियतः प्राणभयंभवेत् । ततस्तस्यशमंयातिसर्वतोविप्लुतंमनः ॥ इष्टद्रव्यविनाशेन मनोयस्याभिहन्यते ॥ तस्यतत्सदृशप्राप्त्याज्ञात्वाश्वासैःशमन्नयेत् ॥ ४१४ ॥

उन्मादवालेको उसके इष्टपदार्थ कानाशहोजाना सुनावे अद्भुतपदार्थ दिखावे अथवा उसके शरीरमें कडुआतेल लगाकर बांधकर धूपमें चित्त सुलावे उन्मादवालेको किवांच गरम लोहा गरमजल तथा गरमतेलका स्पर्शकरावे निर्जन गृहमें बांधके कोड़ोंसे पीटे टूटेहुए दांतवाले सर्पसे कटावे सिंह हाथी शस्त्र धारणकियेहुए शत्रु अथवा चोरोंसे भयभीतकरावे अथवा राजाकीआज्ञासे राजाके पुरुषोंके द्वारा बाहर लेजाकर बधकरनेका भयदिखावे इस प्रकार शारीरक दुःख तथा प्राणोंके भयसे सब ओर से चलायमान चित्त शान्तहोजाताहै इष्ट वस्तुके नाशसे चित्तके बिकल होजानेपर उसीप्रकारके पदार्थ के देनेसे और समुझानेसे उसको शान्तकरे ॥ ४१४॥

त्र्यूषणंहिंगुलवणंवचाकटुकरोहिणी । शिरीषस्यकरञ्जस्यवीजंगौराश्चसर्षपाः ॥ गोमूत्रपिष्टैरेभिस्तुवर्तिर्नेत्राञ्जनेहिता । हन्त्युन्मादमपस्मारंतथाचातुर्थिकंज्वरम् ॥ त्र्यूषणमञ्जनम् ॥ ४१५ ॥

त्रिकट हींग सेंधानोन बच कुटकी सिरस करंजुआ और श्वेतसरसों इन सब औषधियों को गोमूत्र में पीसकर बत्तीबनाकर नेत्रोंमें अंजन लगाने से उन्माद मिर्गी और चातुर्थिक ज्वर का नाश होताहै इति त्र्यूषणाञ्जन ॥४१५ ॥

कुष्ठाश्वगन्धेलवणाजमोदेद्वेजीरकेत्री(ि)णिकटूनिपाठा । माङ्गल्यपुष्पीचसमान्यमूनिसर्वैःसमानाञ्चवचांविचूर्ण्य ॥ ब्राह्मीरसेनाखिलमेवभाव्यं बारत्रयंशुष्कमिदंहिचूर्णम् । अक्षप्रमाणंमधुनाघृतेनलिह्यान्नरःसप्तदिनानिचूर्णम् ॥ माङ्गल्यपुष्पीशंखपुष्पीतिलोके । सारस्वतमिदंचूर्णंब्रह्मणानिर्मितंपुराहितायसर्वलोकानांदुर्मेधानांविचेतसाम् ॥ एतस्याभ्यासतःपुंसांबुद्धिर्मेधाधृतिःस्मृतिः । सम्पत्तिःकविताशक्तिःप्रवर्द्धयेत्तोत्तरोत्तरम् ॥ सारस्वतञ्चूर्णम् ॥ ४१६ ॥

कूट असगन्ध सेंधानोन अजवाइन दोनों जीरे त्रिकटु पाठा और शंख पुष्पी यह सब समभाग और सबके बराबर बचके चूर्णको मिलाकर ब्राह्मी के रस में तीनबार भावना देवे फिर सूख जाने पर १ तोले चूर्ण घी और सहत के साथ सात दिनतक चाटे यह सारस्वत नाम चूर्ण निर्बुद्धि और बिकल चित्त वालोंके लिये ब्रह्माजीने पूर्वकाल में बनाया था इसके सेवनसे मनुष्योंकी बुद्धि मेधा धैर्य्य स्मृति सम्पत्ति और कविता शक्ति यह सब क्रम से बढ़ती हैं इति सारस्वत चूर्ण ॥ ४१६ ॥

विश्वाजमोदेरजनीद्वयसैन्धवोग्रायष्ट्याह्वकुष्ठमगधोद्भवजीरकाणाम्। चूर्णंप्रभातसमयेलिहतःससर्पिर्वाग्देवतानिवसतिस्वयमेववक्त्रे । विश्वाद्यञ्चूर्णम् ॥ ४१७ ॥

सोंठ अजवाइन दोनों हल्दी सेंधानोन बच मुलहठी कूट पीपल और जीरा इन सब औषधियोंको चूर्ण करके घीके साथ प्रातः काल सेवन करने से सरस्वती देवी आपही मुखमें बास करती हैं इति बिश्वाद्य चूर्ण ॥ ४१७ ॥

क्वाथेविचूर्णितेक्षिप्त्वातत्षोड़शगुणंजलम्।पादशेषंप्रकर्त्तव्यमेषक्वाथविधिःस्मृतः॥ दशमूलीतथारास्नावातारिस्त्रिवृतावला । मूर्वाशतावरीचेतिक्वाथैस्तुकुड़वैःपृथक् ॥ कृतैःक्वाथैर्घृतप्रस्थद्वयंमृद्वग्निनापचेत् । कल्कीकृतैर्वक्ष्यमाणद्रव्यैःसम्यक्पुनःपचेत् ॥ विशालात्रिफलाकौन्तीदेवदार्वेलवालुकम्। स्थिराऽनन्तारजन्यौद्वेप्रियंगुसारिवाद्वयम्॥ नीलोत्पलैलामञ्जिष्ठादन्तीदाड़िमकेसरम् । विडङ्गंहयेऽग्निपत्रीचकुष्ठंचन्दनपद्मके ॥ अग्निपत्रीअग्निनौतीतिलोकेअगियाइतिच। तालीसपत्रंबृहतीमालतीकुसुमंनवम्॥अष्टाविंशतिभिःकल्कैरेतैःकर्षमितैःपृथक् । चतुर्गुणंजलंदत्वापिष्टैस्तैर्विपचेद्घृतम्॥महाचेतसनामेदंसर्वचेतोविकारनुत् । अपस्मारेमहोन्मादेमन्देऽग्नौज्वरकासयोः ॥ वातरक्तेप्रतिश्यायेशोषेकार्श्येतृतीयके । मूत्रकृच्छ्रेकटीशूलेविसर्पाविहतेपुचपाण्डामयेतथाकण्ड्वां विषेमेहेगरेपिच ॥ देवादिहतचित्तानांगद्गदानामचेतसाम् । शस्तंस्त्रीणाञ्चवन्ध्यानांधन्यमायुर्वलप्रदम् ॥ अलक्ष्मीपापरक्षोघ्नंसर्वग्रहनिवारणम्। हन्तिभ्रमंमदंमूर्च्छांमेधास्मृतिमतिप्रदम् ॥ महाचैतसंघृतम् ॥ ४१८ ॥

औषधियोंको कूटकर सोलहगुनेजलमें पाककरके चौथाई बाकीरहनेपर उतारले यहकाढ़ेकी विधि है दशमूल रासना रेंड़ी निसोथ बरियारा मरोडफली और सतावर इनकेकाढ़े सोलह२तोले घी १२८ तोले इन सबको मिलाकर धीरे २ पाककरे फिर इन्द्रायण त्रिफला रेणुका देवदारु एलबालुक शालिपर्णी अनन्तमूल दोनों हल्दी मालकांगनी दोनों सारिवा नीलकमल इलायची मजीठ दन्ती अनार नागकेशर बायविंडग अगियाकूट लालचन्दन पद्माक तालीस भटकटैया और चमेलीकेफूल इन २८ औषधियों के एक २ तोले कल्क में चौगुना जल मिलाकर पीसके उसको मिलाकर पाककरे इस घृतके सेवन से सब प्रकार के चित्त के रोग मिर्गी उन्माद मन्दाग्नि ज्वर खांसी बातरक्त पीनस शोष कृशता तिजारी मूत्र कृच्छ्र कमर की पीड़ा विसर्प पांडु खुजली विष प्रमेह गरदोष भ्रम मद मूर्च्छा स्वरका गद्गदहोना देवता आदिकों से हुआ चित्तका बिकार चित्तकी शून्यता अलक्ष्मी पाप राक्षस तथा संपूर्णग्रह दोषोंका नाश होताहै बंध्यास्त्रियों कोहित और धनआयु बल [illegible] या स्मृति तथा बुद्धि की वृद्धि होतीहै इति महा चैतस घृत ॥ ४१८ ॥

अथदेवाद्याविष्टानांचिकित्सा ॥

पूजावल्युपहारेष्टिहोममन्त्राञ्जनादिभिः । जयेदागन्तुमुन्मादंयथाविधिशुचिर्भिषक्४१९

देवादिकों से उन्माद की चिकित्सा ॥

पवित्र बैद्य पूजाबलि उपहार होम इष्ट मंत्रकाजप और अंजनादिकों से आगन्तुक देवता आदिकों से हुए उन्माद को जीते ॥ ४१९ ॥

कृष्णामरिचासिन्धूत्थमधुगोरोचनाकृतम् । अञ्जनंसर्वदेवादिकृतोन्मादहरंपरम् ॥ कृष्णाद्यञ्जनम् ॥ ४२० ॥

पीपल मिर्च सेंधानोन सहत और गोरोचन इन सब औषधियों को पीसकर अंजन लगानेसे देवता आदिकों से हुए सब प्रकार के उन्माद नष्ट होतेहैं इति कृष्णाद्यंजन ॥ ४२० ॥

ऋक्षजम्बुकलोमानिशल्लकीलसुनंतथा । हिंगुमूत्रञ्चवस्तस्यधूममस्यप्रयोजयेत् ॥ एतेनशाम्यतिक्षिप्रंबलवानपियोग्रहः । ऋक्षलोमकोधूपः ॥ ४२१ ॥

रीछ तथा स्यारके रोम सेईका कांटा लहसन हींग और बकरे का मूत्र इन सबको मिलाकर धूनी देनेसे बलवान ग्रहदोष का भी शीघ्र नाश होताहै इति ऋक्षलोमक धूप ॥ ४२१ ॥

कल्याणकञ्चयुञ्जीतमहद्वाचैतसंघृतम् । तैलंनारायणंवाथमहानारायणंतथा ॥ ऋते पिशाचादन्येषुप्रतिकूलंनवाचरेद्व । रोगिणांभिषजंयस्मैकुद्धाहन्युर्महौजसः ॥ इत्युन्मादाधिकारः ॥ ४२२ ॥

कल्याण घृत महा चैतस घृत नारायण तैल अथवा महा नारायण तैल उन्माद रोगों में काममें लाना चाहिये पिशाचोंके सिवाय और किसी देवादिकों के बिरुद्ध कोई आचरण नकरे क्योंकि यह महा बलवान होनेके कारण रोगी अथवा वैद्यको मार डालते हैं इति उन्मादाधिकार ॥ ४२२ ॥

अथापस्माराधिकारः । तथापस्मारस्यनिदानपूर्विकांसम्प्राप्तिमाह ॥

चिन्ताशोकादिभिर्दोषाःक्रुद्धाहृत्स्रोतसिस्थिताः । कृत्वास्मृतेरपध्वंसमपस्मारंप्रकुर्वते ॥ तस्यसंख्यामाह । वातात्पित्तात्कफात्सर्वैर्दोषैःसस्याच्चतुर्विधः ॥ ४२३ ॥

मिर्गीका अधिकार मिर्गीकी निदान पूर्वक संप्राप्ति ॥

चिन्ता तथा शोकादिकोंकेद्वारा कुपितहुए दोष हृदयके स्रोतमें स्थितहोकर स्मृतिको नष्ट करके मिर्गीरोगको उत्पन्न करतेहैं मिर्गी चारप्रकारकी है जैसे बातज पित्तज कफज और सन्निपातज ४२३॥

अथापस्मारस्यसामान्यंलक्षणमाह ॥

तमःप्रवेशःसंरम्भोदोषोद्रेकहतस्मृतिः । अपस्मारइतिज्ञेयोगदोघोरतरोहिसः ॥ संरम्भःनेत्रविकृतिहस्तपादादिविक्षेपणादिकम् ॥ ४२४ ॥

मिर्गीका सामान्य लक्षण ॥

जिस रोगमें अन्धकार में घुसाहुआ सा मालूम पड़े नेत्रोंमें बिकार होय रोगी हाथ पैरोंको फेंके और दोषोंकी अधिकता से स्मृतिका नाश होय उस भयंकर रोगको मिर्गी कहतेहैं ॥ ४२४॥

अथपूर्वरूपमाह ॥

हृत्कम्पःशून्यतास्वेदोध्यानंमूर्च्छाप्रमूढता। निद्रानाशश्चतस्मिंश्चभविष्यतिभवत्यथ शून्यताहृदयस्यैवध्यानंविस्मापनंमूर्च्छा मनोमोहःप्रमूढताइन्द्रियमोहःभविष्यतिभाविनि तस्मिन्नपस्मारे ॥ ४२५ ॥ मिर्गीकापूर्वरूप ॥

मिर्गीहोनेसे पहले हृदयमें कंप तथा शून्यता स्वेद ध्यान मूर्च्छा इन्द्रियोंकामोह और निद्राका नाश यह लक्षण होते हैं ॥ ४२५ ॥

तत्रवातिकस्यलक्षणमाह ॥

कम्पतेप्रदशेद्दन्तान्फेनोद्वामीश्वनित्यपि । अभितोऽरुणवर्णानिपश्येद्रूपाणिचानिलात् ॥ ४२६ ॥

वातज मिर्गीका लक्षण ॥

वातज मिर्गीमें कंप दांतोंका रगड़ना फेने उगलने ऊंचीश्वासलेना और सब ओर लालरूपोंका देखना यह लक्षण होतेहैं ॥ ४२६ ॥

पैत्तिकस्यलक्षणमाह ॥

पीतफेनाङ्गवक्त्राक्षःपीतासृग्रूपदर्शनः । सतृष्णोष्णानलव्याप्तलोकदर्शीचपैत्तिके ॥ पीतस्थासृग्रूपस्यवावस्तुनोदर्शनं यस्यसपीतासृग्रूपदर्शनः ॥ ४२७ ॥

पित्तजमिर्गीके लक्षण ॥

पित्तजमिर्गीमें पीत अथवा लालरंगका देखना फेना शरीर मुख तथा नेत्रोंमें पीतता तृषा और सबवस्तु अग्निसे भरीहुई सी मालूम होना यहलक्षण होते हैं ॥ ४२७ ॥

श्लैष्मिकस्यलक्षणमाह ॥

शुक्लफेनाङ्गवक्त्राक्षःशीतोहृष्टाङ्गजोगुरुः । पश्येच्छुक्लानिरूपाणिश्लैष्मिकेमुच्यतेचिरात् ॥ शीतःशीताङ्गःहृष्टाङ्गजोहृष्टरोमागुरुःगुरुगात्रता ॥ ४२८ ॥

कफज मिर्गीकेलक्षण ॥

कफज मिर्गीमें फेना अंग मुख तथा नेत्रोंका श्वेतहोना शरीरमें भारीपन शीत तथा रोमांचका होना सब वस्तुओंका श्वेत देखना और बहुत देरमें होशआना यहलक्षण होते हैं ॥ ४२८ ॥

सान्निपातिकस्यलक्षण माह ॥

समस्तैर्लक्षणैरेतैर्विज्ञातव्यस्त्रिदोषजः । अपस्मारःसचासाध्योयःक्षीणस्यानवश्च यः ॥ सचत्रिदोषजःअसाध्यःतथाक्षीणस्यअनवश्चएकदोषजोऽप्यसाध्यइत्यर्थः४२९ ॥

सन्निपातज मिर्गीके लक्षण ॥

ऊपर कहेहुये संपूर्ण लक्षणोंसे सन्निपातज मिर्गी जाननी चाहिये यह असाध्य होती है और क्षीण मनुष्य के एकदोषसेभी हुई पुरानी मिर्गी असाध्य होतीहै ॥ ४२९ ॥

अपस्मारस्यारिष्टलक्षणमाह ॥

प्रस्फुरन्तञ्चवहुशःक्षीणंप्रचलितभ्रुवम् । नेत्राभ्याञ्चविकुर्वाणमपस्मारोविनाशयेत् ॥ प्रस्फुरन्तंगात्रस्फुरणयुक्तंनेत्राभ्याञ्चविकुर्वाणंनेत्रेविकृतेकुर्वतः ॥ ४३० ॥

मिर्गीके अरिष्ट ॥

जिस मिर्गीवालेके अंग बहुत फड़कते होंय नेत्रोंमें विकार होय भृकुटी चलायमान होवें और शरीर क्षीण होय उसकी मृत्यु होती है ॥ ४३०

प्रकोपकाल माह ॥

पक्षाद्वाद्वादशाहाद्वामासाद्वाकुपितामलाः । अपस्मारंप्रकुर्वन्तिवेगंकिञ्चिद्यथान्तरम् ॥ पक्षात्पित्तंद्वादशाहाद्वायुर्मासात्कफः । अपस्मारंकरोतीत्यर्थः ॥ वेगंकिञ्चिद्यथान्तरंकि

श्चितूस्वल्पंवेगंश्रान्तरम् । उक्तकालानामन्तरालेऽपिकुर्वन्तिननुहेतुभूतेषुदोषेषुविद्यमाने षुसदैवतद्व्याधिप्रकोपःकथंनस्यादतआह ॥ देवेवर्षत्यपियथाभूमौवीजानिकानिचित् । शरदिप्रतिरोहन्तितथाव्याधिसमुच्छ्रयः ॥ अयमर्थः यथोत्पत्तिकारणसामर्थ्यात्सत्याम पिवास्तुकादिवीजानिस्वभावाच्छरद्येवप्ररोहन्ति । तथाहेतुभूतेषुदोषेषुविद्यमानेष्वपिस्व भावादपस्मारोद्वादशाहादिष्वेववेगंकरोतीत्यर्थः ॥ ४३१ ॥

मिर्गीके कुपित होनेके समय ॥

पित्तज मिर्गी एक पक्षमें बातज बारह दिनमें और कफज महीने भरमें होतीहै और कुछ वेगकहे हुये समयके बीचमें भी होता है अब यह संदेह होताहै कि मिर्गीके कारण रूपदोषोंके सदैव वर्त्तमान रहनेपर मिर्गीभी सदैव क्योंनहीं रहती इसका उत्तर यहहै कि जैसे उत्पत्तिके कारण रूप वर्षाऋतु के होनेपर भी बथुईआदिके बीज स्वभावसे शरदऋतुमेंही उत्पन्न होतेहैं उसी प्रकार कारण रूपदो-षोंके वर्त्तमान होनेपर भी स्वभावसे मिर्गी बारहवें आदिकदिनोंमें कुपित होती है ॥ ४३१ ॥

अथापस्मारस्यचिकित्सा ॥

तैलेनलसुनःसेव्यःपयसाचशतावरी।ब्राह्मीरसश्चमधुनासर्व्वापस्मारभेषजम्॥४३२॥

मिर्गीकी चिकित्सा ॥

तेलके साथ लहसन दूधके साथ सतावर और सहतके साथ ब्राह्मीकारस सेवन करने से सब प्रकारकी मिर्गीका नाश होता है ॥ ४३२ ॥

चूर्णैःसिद्धार्थकादीनांभक्षितैरथवाऽपितैः। गोमूत्रपिष्टैःसर्वाङ्गलेपैःशाम्यत्यपस्मृतिः॥ सिद्धार्थशिग्रुकट्वङ्गकिणिहीभिःप्रलेपनम् । चतुर्गुणेगवांमूत्रेतैलमभ्यञ्जनेहितम् ॥ क ट्वङ्गःशोनापाठाकिणिहीचिरचिरी ॥ ४३३ ॥

सरसोंआदिके चूर्णके सेवनसे अथवा गोमूत्रमें पीसकर सबशरीरमें लेप करने से सरसोंसहजना सोना पाठा तथा लटजीरा इनसबके लेपसे अथवा इनमें गौके चौगुने मूत्रको मिलाकर बिधि पूर्व्वक तेलको पकाकर शरीरमें मलने से मिर्गीका नाश होताहै ॥ ४३३ ॥

निर्गुण्डीभववन्दाकनावनस्यप्रयोगतः । उपैतिसहसानाशमपस्मारोमहागदः ॥ म नोह्वाताक्ष्र्यविष्टाचशकृत्पारावतस्यच । अञ्जनाद्धन्त्यपस्मारमुन्मादञ्चविशेषतः ॥ मनो ह्वामनःशिलाशकृद्विष्टा ॥ ४३४ ॥

निर्गुण्डीके बांदेकी नासलेनेसे शीघ्रही बड़ेभारी मिर्गीका नाश होताहै मैनसिल रसौत गोबर और कबूतरकी बीठ इनसबको मिलाकर अंजन लगानेसे मिर्गी और उन्मादका नाशहोताहै ४३४॥

यःखादेत्क्षीरभक्ताशीमाक्षिकेणवचारजः।अपस्मारंमहाघोरंचिरोत्थंसजयेद्ध्रुवम् ॥ वचाघोरवच । कूष्माण्डकफलोत्थेनरसेनपरिपेषितम् ॥ अपस्मारविनाशाययष्ट्याह्वंस पिवेत्त्र्यहम्।त्र्यहमितिएकस्यपानाद्दिवसत्रयेणैवापस्मारोपशमोभवतीत्यभिप्रायः ४३५

वचके चूर्णको सहतके साथ चाटकर दूधभात खानेसे बहुत पुरानी मिर्गीकाभी नाश होताहै मुलहठीको पीसकर पेठेके रसकेसाथ एकदिन पीनेसे तीन दिनतक मिर्गी नहीं आतीहै ॥ ४३५ ॥

ब्राह्मीरसवचाकुष्ठंशङ्खपुष्पीश्रृतंघृतम् । पुराणंस्यादपस्मारोन्मादग्रहहरंपरम् ॥ तस्यप्रक्रिया । पुराणंगोघृतंप्रस्थमितम् ॥ वचाकुष्ठशङ्खपुष्पीनांसमुदितानांकुडवमितानाम् कल्कोप्रस्थमितब्राह्मीरसापिष्टेनपचेत् । ब्राह्मीघृतम् ॥ ४३६ ॥

गौका पुराना घी ६४ तोला वच कूट शंखपुष्पी यह तीनों सोलह २ तोले इन सबको ६४ तोले ब्राह्मी के रस में पीस कर उस के साथ घी को पाककर सेवन करने से मिर्गी उन्माद तथा ग्रह के दोषोंका नाश होता है इति ब्राह्मी घृत ॥ ४३६ ॥

कूष्माण्डकरसेसार्पिरष्टादशगुणेपचेत् । यष्ट्याह्वकल्कंतत्पानमपस्मारविनाशनम् ॥ कूष्माण्डकघृतं ॥ ४३७ ॥

अठारह गुने कुंभड़े के रस में घीको मुलहठी का कल्क डालकर पाक करके सेवन करने से मिर्गी का नाश होता है इति कूष्मांड घृत ॥ ४३७ ॥

हृत्कम्पोऽक्षिरुजायस्यस्वेदोहस्तादिशीतता । दशमूलीजलंतस्यकल्याणाख्यंप्रयोजयेत् ॥ पञ्चकोलंसमरिचंत्रिफलाविड़सैन्धवम् । कृष्णाविडङ्गपूतीकजवानीधान्यजरिकम् ॥ पीतमुष्णाम्बुनाचूर्णंवातश्लेष्मामयापहः॥ अपस्मारेतथोन्मादेऽप्यर्शसांग्रहणीगदे एततूकल्याणकंचूर्णंनष्टस्याग्नेश्चदीपनम् ॥ ४३८ ॥

जो मिर्गी में हृदय का कांपना नेत्रों में पीड़ा स्वेद और हाथ पैरों में शीतलता होय तो दश मूल का क्काथ और कल्यान चूर्ण देवे पीपल पीपलामूल चव्य चीता सोंठ मिर्च हड़ बहेड़ा आमला बिटनोन सेंधानोन पीपल बायबिड़ंग करंजुआ अजवाइन धनियां और जीरा इन सबके चूर्ण को गरम जल के साथ पीने से बात कफ के रोग मिर्गी उन्माद बवासीर ग्रहणी तथा मन्दाग्नि इन सबका नाशहोता है इति कल्याण चूर्ण ॥ ४३८ ॥

द्वौकीटसेद्धौविधिवदानीयरविवासरे । कण्ठेभुजेवासन्धार्य्यजयेदुग्रामपस्मृतिम् ॥ अयन्तुकीटोनदीतीरेसिकतामध्येतिष्ठति शिग्रुकुष्ठंजलाजाजीलसुनव्योषहिंगुभिः । वस्तमूत्रेश्रृतंतैलंनावनंस्यादपस्मृतौ ॥ जलंवालकंअजाजीरकःवस्तःछागःनावनंनस्यम् । उन्मादेषुयदुद्दिष्टंपथ्यंनस्याञ्जनौषधम्॥ अपस्मारेऽपितत्सर्वंप्रयोक्तव्यंभिषग्वरैः। मृतसूताभ्रलोहञ्चशिलागन्धश्चतालकम् ॥ रसाञ्जनञ्चतुल्यांशन्नरमूत्रेणमर्दयेत् । तद्गोलद्विगुणंगन्धंलोहपात्रेक्षणंपचेत् ॥ पञ्चगुञ्जोन्मितंभक्ष्यमपस्मारहरंपरम् । व्योषंसौवर्चलंहिंगुनरमूत्रेणसर्पिषा ॥ पिबेत्कर्षमितंपश्चाद्रसोऽयंभूतभैरवः। भूतभैरवनामरसः इत्यपस्माराधिकारः ॥ ४३९ ॥

रबि वारके दिन विधि पूर्बक नदी के किनारे बालूके भीतर रहने वाले दो कीड़ों को लाकर कंठ और भुजा में बांधने से भयंकर मिर्गीका भी नाश होता है सहँजना कूट सुगन्धवाला जारा लहसन त्रिकटु और हींग इन औषधियों के द्वारा और बकरे का मूत्र डालकर तेल को पकावे उसकी नास लेने से मिर्गी का नाश होता है उन्माद में जो पथ्य नस्य अंजन और औषध कही गई हैं वह सब मिर्गी में भी व्यवहार करनी चाहिये पारेकी भस्म अभ्रक की भस्म लोहे की भस्म मैनशिल ग-

न्धक हरिताल और रसौत इन सब को बराबर लेकर मनुष्य के मूत्रमें पीसे फिर इसका गोला बनाकर गोलेकी दूनी गन्धक के साथ लोहे के पात्र में क्षण भर पाककरे इसको पांच रत्ती खाने से मिर्गी का नाश होता है इसको खाकर त्रिकटु कालानोन और हींग इनसबको मनुष्य के मूत्र और घीके साथ १ तोले पिये इति भूतभैरव रस इति मिर्गी का अधिकार ॥ ४३९ ॥

अथ वातव्याध्यधिकारः । तत्रवातव्याधीनांसामान्यतो विप्रकृष्टानिनिदानान्याह ॥

कषायकटुतिक्तप्रमितरूक्षलघ्वन्नतः । पुरःपवनजागराप्रतरणाभिघातश्रमैः ॥ हिमादनशनात्तथानिधुवनाच्चधातुक्षयान्मलादिरवधारणान्मदनशोकचिन्ताभयैः ॥ अतिक्षतजमोक्षणाद्गदकृतातिमांसक्षयादतीववलनान्नृणामतिविरेचनादामतः ॥ पयोदसमयेदिनक्षणदयोस्तृतीयांशगोर्जरामतिगतेशिशिरसंज्ञकालेऽपिच ॥ देहस्रोतांसिरिक्तानिपूरयित्वाऽनिलोबली । करोतिविविधान्रोगान्सर्व्वाङ्गैकांगसंश्रयान् ॥ प्रमितअत्रवैपरीत्येनोपसर्गस्तेनअपरिमितइत्यर्थः । प्रकर्षेणमितमत्यल्पंवालघ्वन्नम् ॥ अतिपुराणंशाल्यादि । कतिचिदन्नानिनवान्यपिवातलानि॥यतआहगुणरत्नमालायाम् । नीवारस्त्रिपुटःसतीनचणकश्यामाकमुद्गाढ़की । निष्पावाश्चमकुष्ठकश्चवरटामङ्गल्यकैःकोद्रवः।एतेवातकराइतिशेषःनीवारःप्रसाधिकातीनीतिलोकेत्रिपुटःखेसारीसतीनःकलायः॥निष्पावोराजमाषःवोड़ाइतिलोके । मकुष्ठकःमोठइतिलोकेवरटावरटिकावरेइतिलोकेमङ्गल्यःमसूरी ॥ पुरःपवनःप्राग्वातःआमतः । आमेनमार्गावरणात् । यत्तुउक्तम् । वायोर्धातुक्षयात्कोपोमार्गस्यावरणेनचेतिपयोदसमयेवर्षासुजरामतिगते शितेभुक्तेऽतीवजीर्णतांगतेदेहेस्रोतांसिइत्यादिनासंप्राप्तिरुक्ताकषायादिभिर्हेतुभिः वर्षादौसमयेहेतुभूतेबलीअनिलःप्रवृद्धोवायुःकरोतिविविधान्रोगान् ॥ ४४० ॥

बात व्याधि का अधिकार । बात व्याधियों के सामान्यता से दूर वाले कारण ॥

कषाय कटु तथा तिक्तवस्तु अपरिमित रूखा तथा हलका अन्न पूर्व्वकी बायु जागरण तैरना चोट श्रम हिम लंघन मैथुन धातुक्षय मलमूत्रादि वेगोंका रोकना कामवेग शोक चिन्ता भय घाव से बहुत रुधिर का निकलना रोग केद्वारामांस की अत्यन्त क्षय बहुत बिरेचन तथा बमन आम दोष के द्वारा स्रोतों का रुकना वर्षा काल दिन तथा रात्रि का तीसरा भाग भोजनका अत्यन्त परिपाक होजाना और शिशिर ऋतु यह सब बायु के कोप होनेके कारण हैं यहां हलका अन्न कहनेसे बहुत पुराने शालि आदिक और कोई २ नवीन अन्नभी बातकारी जानने चाहिये क्योंकि गुणरत्नमाला में कहा है कि तिन्नी खिसारी मटर राजमाष मोठ चने सामा मूंग अरहड़ बेरें मसूर और कोदों यह सब बातकारी हैं ऊपर कहे हुये कारणों से कुपित हुआ बलवान बायु शरीर के खाली स्रोत को पूर्ण करके सब अंगोंमें अथवा एक २ अंगमें होने वाले अनेक प्रकार केरोगों को उत्पन्न करता है ४४० ॥

तेरोगाः कथ्यन्ते ॥

शिरोग्रहोऽल्पकृशताजृम्भात्यर्थहनुग्रहः । जिह्वास्तम्भोगद्गदत्वंमिन्मिनत्वञ्चमूकता॥वाचालताप्रलापश्चरसानामनभिज्ञता । वाधिर्य्यंकर्णनादश्चस्पर्शाज्ञत्वंतथार्दितम् ॥

मन्यास्तम्भोऽत्रगणितोबाहुशोषोऽपबाहुकः। वर्णिताचैवविश्वाचीऊर्ध्ववातउदीरितः॥ आध्मानञ्चप्रत्याध्मानंवातष्टीलाप्रतिष्टीला। तूनीचप्रतितूनीचवह्निवैषम्यमेवच॥ आटोपःपार्श्वशूलञ्चत्रिकशूलंतथैवच। मुहुश्चमूत्रणंमूत्रनिग्रहोमलगाढ़ता॥ पुरीषस्याप्रवृत्तिश्चगृध्रसीचततःपरा। कलापखञ्जतावापिखञ्जतापङ्गुतातथा॥ क्रोष्टुशीर्षकखल्यौचवातकण्टकएवच। पादहर्षःपाददाहआक्षेपोदण्डकाभिधः॥ वातपित्तकृताक्षेपस्तथादण्डापतानकः। अभिघातकृताक्षेपआयासोद्विविधःस्मृतः॥ आन्तरश्चतथावाह्योधनुर्वातश्चकुब्जकः। अपतन्त्रोपतानश्चपक्षाघातःखिलांगकः॥ कम्पःस्तम्भोव्यथातोदोभेदश्चस्फुरणंतथा। रौक्ष्यंकार्श्यंञ्चकार्ष्ण्यंञ्चशैत्यंलोम्नाञ्चहर्षणम्॥ अंगमर्दोऽङ्गविभ्रंशःशिरासङ्कोचएवच। अंगशोषश्चभीरुत्वंमोहश्चचलचित्तता॥निद्रानाशःस्वेदनाशोबलहानिस्तथैवच। शुक्रक्षयोरजोनाशोगर्भनाशःपरिभ्रमः॥ एतएवाशीतिसंख्यारोगायोगेनरूढितः। वातव्याधीतिनामानोमुनिभिःपरिकीर्त्तिताः॥ एतएवशिरोग्रहादयएवयोगेनवातेनवाताढ्याधिर्वातव्याधिरितिनिरुक्तया तदावातज्वरादिष्वपिप्रसंगःस्यादतआह। रूढ़ितःप्रसिद्धितःशिरोग्रहादयोऽशीतिरेववातव्याधिसंख्याप्रसिद्धानतुवातज्वरादयः॥ ४४१॥

इन अनेक प्रकारके रोगोंका वर्णन॥

शिरोग्रह अल्पकृशता अत्यन्त जंभाई जावड़ेका जकड़ना जिह्वास्तंभ गद्गदता मिन्मिनाहट मूकता बाचालता प्रलाप रसों का न जानना बहरापन कानोंमें शब्दहोना स्पर्श का न जानना अर्दित गले के पीछेकी नसका जकड़ना बाहुशोष अपबाहुक विश्वाची ऊर्ध्ववात आध्मान प्रत्याध्मान वातष्ठीला प्रतिष्ठीला तूनी प्रतितूनी अग्निकी विषमता आटोप पसली का शूल रीढ़के नीचे की हड्डियोंकाशूल बारंबारमूतना मूत्रका रुकना मलका गाढ़ाहोजाना मलका न निकलना गृध्रसी कलापखंजता खंजता पंगुता क्रोष्टुशीर्षक खल्ली बातकंटक पादहर्ष पाददाह आक्षेप दंडक कफ पित्त युक्त आक्षेप दंडापतानक अभिघातज आक्षेप बाह्य आयास आन्तर आयास धनुर्बात कुब्जक अपतन्त्रिक अपतान पक्षाघात खिलांग कंप स्तंभ व्यथा तोद भेद स्फुरण रौक्ष्य कृशता कृष्णता शीत रोमहर्ष अंग मर्द अंगबिभ्रंश शिरासंकोच अंगशोष भीरुत्व मोह चलचित्तता निद्रानाश स्वेदनाश बलहानि बीर्य्यक्षय रजोनाश गर्भनाश और परिभ्रमयही अस्सी रोगयोग और रूढ़ सेबात व्याधि कहलाते हैं यहां केवलयोग कहने से बातज्वरादि कों काभी बात व्याधियों में ग्रहण न होय इस लिये रूढ़िकहाहै॥ ४४१॥ अथ वातव्याधीनांसामान्यांचिकित्सामाह॥

मधुरलवणसाम्लस्निग्धनस्योष्णनिद्रागुरुरविकरवस्तिस्वेदसन्तर्पणानि। दहनजलदशोषाभ्यंगसंमर्द्दनानिप्रकुपितपवमानंशान्तमेतानिकुर्य्युः॥ ४४२॥

बातव्याधियों की सामान्य चिकित्सा॥

मधुर लवण अम्ल तथा स्निग्धवस्तु नासलेना उष्णक्रिया निद्रा भारीवस्तु भूखवस्तिक्रिया स्वेद संतर्पण अग्नि शरदृतु अभ्यंग और मर्दन यह सब कुपितहुई बायुको शान्त करते हैं॥ ४४२॥

अथविशिष्टानांवातव्याधीनांलक्षणानिचिकित्साञ्चाह । तत्रादौशिरोग्रहस्यलक्षणमाह॥

रक्तमाश्रित्यपवनःकुर्य्यान्मूर्द्धधराःशिराः । रूक्षाःसवेदनाःकृष्णाःसोऽसाध्यःस्याच्छिरोग्रहः ॥ मूर्द्धधराःग्रीवागताःसपवनःशिरोग्रहःस्यादित्यन्वयःसचासाध्यः ॥ ४४३ ॥

बातव्याधियोंके बिशेष लक्षण और चिकित्सा शिरोग्रह का लक्षण ॥

कुपित बायु रुधिर का आश्रय करके शिरके धारण करने वाली ग्रीवाकी नसों को रूखी बेदना युक्त और कृष्ण बर्ण करतीहै इसको शिरोग्रह कहते हैं यह रोग असाध्य है ॥ ४४३ ॥

अथ तस्यचिकित्सा ॥

शिरोग्रहेतुकर्तव्याशिरागतमरुत्क्रिया । दशमूलीकषायेणमातुलुंगरसेनच ॥ शृतेनतैलेनाभ्यंगःशिरोवस्तिश्चयुज्यते ॥ ४४४ ॥

शिरोग्रह की चिकित्सा ॥

शिरोग्रह में नसोंमें गई हुई बायुकी चिकित्सा करनीचाहियेदशमूल के काढ़े और नींबूके रससे तेल को पका कर लगाने से और शिरोवस्ति देनेसे शिरोग्रह शान्त होता है ॥ ४४४ ॥

अथ जृम्भायालक्षणमाह॥

पीत्वैकंश्वासमनिलःपुनस्त्यजतिवेगवान् । आलस्यनिद्रायुक्तश्चसजृम्भइतिकथ्यते ॥ जृम्भशब्दस्त्रिलिंगःतथाचजृम्भस्तुत्रिषुजृम्भणमित्यमरः ॥ ४४५ ॥

जंभाई का लक्षण ॥

एकबार श्वास लेकर फिरबेगसे श्वास छोड़ना आलस्य अधिक निद्रा यह जंभाके लक्षणहैं४४५ ॥

अथ तस्यचिकित्सा ॥

शुण्ठीपिप्पल्युषणंदीप्यकश्चासिन्धूद्भवंचेतिसर्व्वंपृथग्वा । तद्रूपंवासूक्ष्मचूर्णीकृतंवाजृम्भारम्भस्तम्भकृत्स्यात्तदेव। जृम्भावेगेसमुत्पन्नेशोभनेशयनेनरम् । स्वापयेत्तेननियमाज्जृम्भावेगःप्रशाम्यति ॥ जृम्भावेगःक्षयंयातिकटुतैलेनमर्दनात्। भोजनात्स्वादुभोज्यानांतथाताम्बूलभक्षणात् ॥ ४४६ ॥

जंभाकी चिकित्सा ॥

सोंठ पीपल मिर्च अजवाइन और सेंधानोन इन सबको एक साथ अथवा अलग २ सूक्ष्म चूर्ण कर के सेवन करने से सुन्दर शय्यापर शयन कराने से कड़ुआ तेल मलने से मधुर पदार्थोंके भोजन से और तांबूल खानेसे जंभाई रुकजातीहै ॥ ४४६ ॥

अथ हनुग्रहस्यसनिदानंलक्षणमाह ॥

जिह्वानिर्लेखनाच्छुष्कभक्षणादभिघाततः । कुपितोहनुमूलस्थःस्रंसयित्वाऽनिलोहनुम् ॥ करोतिविवृतास्यत्वमथवासंवृतास्यताम् । हनुग्रहःसतेनस्यात्कृच्छ्राच्चर्वणभाषणम् ॥ स्रंसयित्वाअधःकृत्वाविवृतास्यत्वंव्यात्तमुखत्वम् । निर्लेखनंकर्षणम्शुष्कंचणकादिसंवृतास्यत्वंदन्तलग्नताम् ॥ ४४७ ॥

हनुग्रह का निदानपूर्व्वक लक्षण ॥

जिह्वा के रगड़ने से सूखेचने आदिके खाने से और चोटसे जावड़ेके मूल में स्थित बायु कुपित होकर जावड़ों को नीचे करके मुखको खुलाहुआ अथवा बन्द करदेतीहै इसको हनुग्रह कहतेहैं हनुग्रह में भोजन और भाषण दोनों में क्लेश होताहै ॥ ४४७ ॥

अथ तस्यचिकित्सा ॥

संवृतंचिबुकंस्निग्धंस्विन्नमुन्नमयेद्भिषक्। विवृतंनमयित्वातुकुर्य्यात्प्राप्तामिहक्रियाम्॥ पिप्पलीमार्द्रकञ्चापिसंचर्व्यंचमुहुर्मुहुः । निष्ठीवेत्तत्ततोयेनशोधयेद्वदनांतरम् ॥ निष्कुलयलशुनंसम्यक्संक्षुद्यतिलतैलवत् । सैन्धवेनान्वितंखादेद्धनुस्तम्भार्दितोनरः ॥ रसोनगुटिकामाषविदलंपरिपेष्यच । योजयेत्पिष्टिकान्ताञ्चसैन्धवार्द्रकहिङ्गुभिः ॥ ततस्तु वटकान्कृत्वातिलतैलेपचेच्छनैः । भक्षयेत्तान्यथावह्निर्हनुस्तम्भात्सुखीभवेत् ॥ अभ्यज्यपक्वतैलेनस्वेदयेन्मृदुनाग्निना । वस्तिंविधारयेन्मूर्ध्नितैलेनपरिपूरितम् ॥ ४४८ ॥

हनुग्रह की चिकित्सा ॥

बैद्य बन्दहुए मुख वाले हनुग्रहमें स्निग्ध स्वेद देकर ऊपर वालेको उठावे और नीचे वालेको नीचे करे और खुलेहुए मुखवाले हनुग्रह में स्निग्ध स्वेद देकर जावड़ोंको झुकावे फिर पीपल और अदरकको चबाकर गरम जल के कुल्ले करके मुखको शुद्धकरे छिलेहुए लहसनको तिलके समान पेलकर अर्क निकाल सेंधानोन डालकर खाय तो हनुग्रह दूर होताहै लहसन का जवा तथा उर्द की दाल को पीसकर अदरक हींग तथा सेंधानोन मिलावे फिर उसके बड़े बनाकर तिलके तेलमें धीरे २ पाककरे इनकोअपनी अग्निके अनुसार खानेसे और पकेहुये तेलको लगाकर मन्दी आंचसे स्वेद देनेसे और तेलसे भरकर शिरमें वस्ति धारण करनेसेहनुस्तंभ दूरहोताहै ॥ ४४८ ॥

समूलपत्रशाखायाःप्रसारण्याःशतंफलम् । सम्यक्संक्षुद्यसलिलेद्रोणमात्रेपचेद्भिषक् ॥ सलिलस्यचतुर्थांशंकषायमवशेषयेत् । ततोपलशतेतैलेतंकषायंपुनःपचेत् ॥ पचेत्पलशतंमस्तुकाञ्जिकंमस्तुनःसमम् । ततःशुद्धंपचेद्दुग्धंगव्यंतैलाच्चतुर्गुणम् ॥ चित्रकंपिप्पलीमूलंमधुकंसैन्धवंवचा । शतपुष्पादेवदारुरास्नाचगजपिप्पली ॥ प्रसारणीभवंमूलंमांसीरक्तञ्चचन्दनम् । तथा वातारिमूलंचबलामूलंचनागरम् तैलस्यचाष्टमांशेनसर्वैकल्कानिसाधयेत् ॥ नाम्नाप्रसारणीतैलंविख्यातंतत्प्रयुज्यते । पानेनस्येशिरोवस्तौमर्दनेस्वेदनेतथा ॥ प्रयुक्तंवातजान्रोगान्सर्वानपिविनाशयेत् । विशेषतोहनुस्तम्भंजिह्वास्तम्भंतथार्दितम् ॥ गद्गदत्वञ्चविश्वाचींमन्यास्तम्भापबाहुकौ । त्रिकशूलंचगृध्रसीञ्चखञ्जतांपंगुतांतथा ॥ कलापखञ्जतांखञ्जंस्तम्भंसङ्कोचमेवच । आन्तरंबाह्यमायामंतथादण्डापतानकम् ॥ धनुर्वातञ्चकुब्जत्वंव्यपोहतिनसंशयः । क्षीणानांस्थविराणाञ्चवातसङ्कोचितात्मनाम् । प्रसारयेद्यतोऽङ्गानितदुक्तैषाप्रसारणी । (प्रसारणीतैलम्) ४४९॥

जड़ पत्ती तथा शाखा सहित सौ पल गन्धप्रसारणी को कूटकर १०२४ तोले जलमें पकावे फिर चौथाई बाकी रहजानेपर उसकाढ़ेमें ४०० तोले तेल डालकर फिर पाककरे इसके उपरान्त दही

का तोड़ तथा कांजी चार २ सौ तोले डालकर पाककरे फिर गौका बेपानी दूध तेलका चौगुना डालकर पाककरे चीता पीपलामूल मुलहठी सेंधानोन बच सौंफ देवदारु रासना गजपीपल गन्धप्रसारणीकी जड़ जटामांसी लालचन्दन अरंडकीजड़ बरियारा की जड़ और सोंठ इनसबका कल्क ५० तोले लेकर तेलमें डालकर पाककरे इस तेलके पीनेसे नासलेनेसे शिरोवस्तिसे मलनेसे और स्वेद देनेसे सब प्रकारके बातरोग हनुस्तंभ जिह्वास्तंभ अर्द्दित गद्गदता विश्वाची मन्यास्तंभ अपबाहुक रीड़के नीचेकी हड्डियोंका शूल गृध्रसी खंजता पंगुता कलाप खंजता खल्ली स्तंभसंकोच आन्तर तथा बाह्य आयास दंडापतानक धनुर्बात तथा कुब्जता इनसबका नाशहोताहै और इसके द्वारा क्षीण वृद्ध तथा बायुसे सुकड़ेहुये शरीरवाले मनुष्योंके अंग फैलतेहैं इसलिये इसको प्रसारणी कहतेहैं इति प्रसारणी तैल ॥ ४४९ ॥

जिह्वास्तम्भस्य लक्षणमाह ॥

वाग्वाहिनीशिरासंस्थोजिह्वांस्तम्भयतेऽनिलः । जिह्वास्तम्भःसतेनान्नपानवाक्येष्वनीशता ॥ अनीशताऽसामर्थ्यम् ॥ ४५० ॥

जिह्वास्तंभ का लक्षण ॥

बाणी की ले चलने वाली नस में स्थित बायु कुपित होकर जिह्वा को स्तंभित करती है इस जिह्वा स्तंभ से रोगी अन्न पान ग्रहण करने में और बोलने में असमर्थ होता है ॥ ४५० ॥

तस्यचिकित्सा ॥

जिह्वास्तम्भेयथावस्थंवातव्याधिचिकित्सितम् । सामान्योक्ताक्रियाचात्रार्द्दितस्यापिहितामता ॥ ४५१ ॥

जिह्वास्तंभ की चिकित्सा ॥

जिह्वास्तंभ में अवस्था के अनुसार बायु रोगों कोसी सामान्य चिकित्सा करनी चाहिये और अर्द्दित रोग की भी क्रिया इस में हितकारी है ॥ ४५१ ॥

अथ मूकगद्गदमिन्मिनानां लक्षणमाह ॥

आवृत्यवायुःसकफोधमनीशब्दवाहिनी । नरान्करोत्यवचनान्मूकामिन्मिनगद्गदान् ॥ अवचनात्अत्रईषदर्थेनञ्तेनईषद्वचनात्सएववायुःप्रबलश्चेत्तदामूकान्अवचनात्मिन्मिनान्सानुनासिकवचनात्गद्गदान्लुप्तपदव्यञ्जनाभिधायिनःकरोतीत्यन्वयःएषांसमानाधिकरणत्वेऽपिदुष्टेऽनुत्कर्षादिनाअदृष्टवशाद्वाभेदोबोद्धव्यः ॥ ४५२ ॥

मूक गद्गद और मिन्मिनों के लक्षण ॥

कफ सहित बायु शब्दके ले चलने वालीनसोंको ढककर मूक (बचनरहित) मिन्मिन (नाकसेबचन) और गद्गद (अव्यक्त बचन) इन ३ बाक्य नाशक रोगों को उत्पन्न करती है ॥ ४५२ ॥

अथतेषांचिकित्सा ॥

प्रस्थंघृतस्यपलिकैःशिग्रुवचालवणधातकीलोध्रैः । आजेपयसिसपाठैःसिद्धंसारस्वतंनाम्ना ॥ विधिवदुपयुज्यमानंजड़गद्गदमूकतांक्षणाज्जित्वा । स्मृतिमतिमेधाप्रतिभाःकुर्यात्सुस्पष्टभाग्भवति ॥ सारस्वतंघृतम् ॥ ४५३ ॥

इनकी चिकित्सा ॥

घी ६४ तोले सहजन बच सेंधानोन धवई लोध तथा पाढ़ा यह सब चार २ तोले घृत सहित इनसब को बकरी के दूध में डालकर विधि पूर्वक पाक करे इस घीके विधि पूर्वक सेवन करने से जड़ता गद्‌गदता तथा मूकता इनसबका शीघ्रही नाश होता है और स्मृति बुद्धि मेधा प्रतिभा तथा वाणी की स्पष्टता होती है इति सारस्वतघृत ॥ ४५३ ॥

सहरिद्रांवचांकुष्ठंपिप्पलींविश्वभेषजम्।अजाजीचाजमोदाचयष्टीमधुकसैन्धवम्॥एतानिसमभागानिसूक्ष्मचूर्णानिकारयेत्।तच्चूर्णंसर्पिषालेह्यंप्रत्यहंभक्षयेन्नरः।।एकविंशतिरात्रेणभवेच्छ्रुतिधरोनरः।मेघदुन्दुभिनिर्घोषोमत्तकोकिलनिस्वनः।कल्याणकावलेहः४५४॥

हल्दी बच कूट पीपल सोंठ कालाजीरा अजवाइन मुलहठी और सेंधानोन इनसबको बराबर लेके सूक्ष्म पीस प्रतिदिन घीके साथ चाटने से मनुष्य श्रुतिधर होता है और मेघों के समान शब्द तथा कोकिल के समान मधुर स्वर से युक्त होता है इति कल्याण का वलेह ॥ ४५४ ॥

अथप्रलापस्यलक्षणमाह ॥

स्वहेतुकुपिताद्वातादसंबद्धान्निरर्थकम् ॥ बचनंयन्नरोब्रूतेसप्रलापःप्रकीर्तितः॥ ४५५ ॥

प्रलाप का लक्षण ॥

अपने कारणों से कुपित वायु के द्वारा मनुष्य जो असंबद्ध और निरर्थक वचन बोलताहै उसको प्रलाप कहते हैं॥ ४५५ ॥

अथतस्यचिकित्सा ॥

सतगरवरतिक्तारेवताम्भोदतिक्तानलदतुरगगन्धाभारतीहारहूराः । मलयजदशमूलीशङ्खपुष्पीसुपक्वा ॥ प्रलपनमपहन्युःपानतोना।तिदूराद्‌वरतिक्तोत्रपर्पटःनलदमुशीरं भारतीब्राह्मी । हारहूराद्राक्षा ॥ ४५६ ॥

प्रलाप की चिकित्सा ॥

तगर पित्तपापड़ा अमलतास मोथा कुटकी खस असगन्ध ब्राह्मी दाख चन्दन दशमूल और शंखपुष्पी इन सबके काढ़े को पीनेसे प्रलाप का नाश होता है ॥ ४५६ ॥

अथरसाज्ञानस्यलक्षणमाह ॥

भुञ्जानस्यनरस्यान्नंमधुरप्रभृतीन्रसान् । रसज्ञोयन्नजानातिरसाज्ञानंतदुच्यते ४५७॥

रसके अज्ञान का लक्षण ॥

भोजनके समय जो मधुरादिक रसों का जिह्वा इन्द्री से ज्ञान न होय उसको रसाज्ञान कहतेहैं॥ ४५७॥

अथरसाज्ञानस्यचिकित्सा ॥

घर्षेज्जिह्वाञ्जड़ांसिन्धुत्र्यूषणैःसाम्लवेतसैः । अम्लवेतसकाभावेचुक्रंदातव्यमीरितम् ॥ किराततिक्तकाकट्वीकुटजस्यफलंवचा । ब्राह्मीफलञ्चपालाशंस्वर्जिकाकृष्णजीरकम् ॥ पिप्पलीपिप्पलीमूलंचित्रंनागरकोषणम् । एषांकल्कैर्मुहुर्घर्षेज्जिह्विकामार्द्रिकारसैः ॥ तेनसम्यग्विजानातिरसनासकलान्रसान् । कल्कःकिराततिक्तादिर्जिह्वायाःशून्यतांहरेत् ॥ ४५८ ॥

रसाज्ञान की चिकित्सा ॥

सेंधानोन त्रिकटु तथा अमलवेद (इसके अभावमें चूक)इनके द्वारा जिह्वाको रगड़ने से चिरायता कुटकी इन्द्र जौ बच ब्राह्मी ढाकके बीज सज्जी कालाजीरा पीपल पीपलामूल चीता सोंठ तथा मिर्च इन सब को पीसकर उससे जिह्वाके रगड़नेसे अथवा अदरकके रससे जिह्वारगड़ने से अच्छे प्रकारसे संपूर्ण रसों का ज्ञानहोताहै और इस किराततिकादि कल्कके द्वारा जिह्वाकी शून्यता नष्ट होती है ॥ ४५८ ॥

वाधिर्य्यकर्णनादयोर्लक्षणंचिकित्साचतदधिकारेवक्ष्यामः ॥ ४५९ ॥

बधिरता और कर्ण नादके लक्षण तथा चिकित्सा कर्ण रोगोंके अधिकारमें कहेंगे ॥ ४५९ ॥

अथत्वक्शून्यतायालक्षणमाह ॥

स्पृश्यमानात्वचायातुशीतोष्णंमृदुकर्कशम् । नजानातिबुधैस्त्वक्साशून्येतिपरिकीर्त्तिता ॥ ४६० ॥

त्वचाकी शून्यता का लक्षण ॥

स्पर्श करने से जो त्वचा में शीतलता उष्णता कोमलता तथा कठोरता न मालूम पड़े उसको त्वचाकी शून्यता कहते हैं ॥ ४६० ॥

अथतस्यचिकित्सा ॥

सुप्तवातेत्वसृड्मोक्षंकारयेद्बहुशोभिषक् । दद्याच्चलवणाङ्गारधूमैस्तैलसमन्वितैः ४६१ ॥

त्वचाकी शून्यता की चिकित्सा ॥

त्वचाकी शून्यता में बहुतसा रुधिर निकलवावे और तेल युक्त सेंधेनोन को अंगारो पर डालकर धूम देना चाहिये ॥ ४६१ ॥

अथार्दितस्यसम्प्राप्तिपूर्व्वकंलक्षणमाह ॥

उच्चैर्व्याहरतोऽत्यर्थंखादतःकठिनानिच । हसतोजृम्भतोभाराद्विषमाच्छयनासनात् ॥ शिरोनासौष्ठचिबुकललाटेक्षणसन्धिगः । अर्दयत्यनिलोवक्त्रमर्दितंजनयेत्ततः ॥ वक्त्रोभवतिवक्त्रार्द्धंग्रीवाचाप्यपवर्त्तते । शिरश्चलतिवाक्सङ्गोनेत्रादीनाञ्चवैकृतम् ॥ ग्रीवाचिबुकदन्तानांतस्मिन्पार्श्वेचवेदना । तमर्दितमितिप्राहुर्व्याधिव्याधिविशारदाः ॥ व्याहरतः बदतः कठिनानिपूगफलादीनिविषमात्शयनासनात्ग्रीवादिवैपरीत्येनशयनादासनाच्च अर्दयतिपीड़यतिततस्तदनन्तरम् अर्दितंजनयेत् अर्दितेजातेकिंस्यात्तदाह वक्त्रोभवतिइत्यादि अपवर्त्ततेवक्रोभवतिचलतिकम्पतेवाक्सङ्गः वाङ्निरोधःनेत्रादीनामित्यादिशब्देनभ्रूगण्डनासिकादीनांग्रहणम् वैकृत्यंवेदनास्फुरणवक्रत्वादिर्ग्रीवेत्यादीनांग्रहणम् । यस्मिन्पार्श्वेऽर्दितंतस्मिन्पार्श्वेग्रीवादीनांवेदना ॥ ४६२ ॥

अर्दितरोग का संप्राप्तिपूर्व्वक लक्षण ॥

बहुत उच्चस्वरसे बोलना कठोर वस्तु खाना हँसना जंभाईलेना भारउठानाग्रीवा आदिको विपरीत करके शयन करना अथवा बैठना इन कारणों से मस्तक नासिका ओष्ठ ठोड़ी ललाट तथा नेत्रकी संधियों में प्राप्त हुई बायु कुपित होकर मुखको पीड़ित करती हुई अर्दित रोगको उत्पन्न करतीहै इस रोग में आधा मुख तथा ग्रीवा टेढ़ी होजातीहै शिर कांपताहै वाक्य रुक जाताहै जिस ओर मुख टेढ़ा

होताहै उसी ओरका नेत्र भौं कपोल तथा नासिका आदिमें पीड़ा फड़कना तथा वक्रता आदि बिकार होतेहैं और उसी ओर ग्रीवा ठोड़ी तथा दांतोंमें पीड़ा होतीहै इस रोगको पंडितलोग अर्दितकहतेहैं ४६२॥

वातपित्तात्कफाच्चस्यात्त्रिविधंतत्समासतः । लालास्रावोव्यथाकम्पःस्फुरणंहनुवाग्ग्रहः ॥ ओष्ठयोःश्वयथुःशूलञ्चार्दितेवातजेभवेत् । पीतमास्यंज्वरस्तृष्णापित्तजेमोहकंपने ॥ गण्डेशिरसिमन्यायांस्रोतस्तम्भःकफात्मके ॥ ४६३ ॥

अर्दितरोग तीन प्रकार का होता है बातज पित्तज और कफज बातज अर्दितमें लार बहना पीड़ा कंप अंगफड़कना हनुस्तंभ वचनका रुकना ओठोंमें सूजन और शूलहोताहै पित्तज अर्दित में मुखका पीलापन ज्वर तृषा मोहतथा संताप होताहै और कफज अर्दित में कपोल मस्तक तथा गले के पीछेकी नसमें सूजन तथा स्तब्धताहोती है ॥ ॥ ४६३ ॥

तस्यासाध्यस्यलक्षणमाह ॥

क्षीणस्यानिमिषाक्षस्यप्रसक्ताव्यक्तभाषिणः । नसिध्यत्यर्दितंगाढंत्रिवर्षंवेपनस्यच ॥ अनिमिषाक्षस्यानिमेषासमर्थचक्षुषः प्रसक्तंप्रकर्षेणलग्नम्अव्यक्तञ्चभाषितुंशीलंयस्यतस्यअर्दितंनसिध्यातित्रिवर्षम्अतीतवर्षत्रयम्अथवात्रयाणांचक्षुर्नासामुखानांवर्षः स्रावोयत्रवेपनस्यकम्पनशीलस्यतस्यगाढमतिशयेनसिध्यतीत्यन्वयः ॥ ४६४ ॥

असाध्य अर्दित के लक्षण ॥

जिस अर्दित रोगवाले का शरीर क्षीण होजाय नेत्रोंके पलक नलगें और बहुत तुतलाकर अव्यक्त बचन बोले वह असाध्यहै तीन बर्षके व्यतीत होजानेपर अथवा नेत्र नासिका तथा मुखके बहनेपर और कंपहोने पर अर्दितरोग को असाध्य जानना चाहिये ॥ ४६४ ॥

अथतस्यचिकित्सा ॥

स्नेहपानानिनस्यञ्चभोज्यान्यनिलवास्तिच । उपनाहाश्चशस्यन्तेनावनंवस्तयोऽर्दिते ॥ वस्तिरत्रशिरोवस्तिरेव ॥ ४६५ ॥

अर्दितकी चिकित्सा ॥

अर्दितरोगमें स्नेहपान नस्य बात नाशक भोजन उपनाह (मल्हम) और शिरोवस्ति श्रेष्ठहै ४६५॥

दशमूलकषायेणमातुलङ्गरसेनवा । वलायापञ्चमूल्यावाक्षीरिवाज्ञातमकोहितम् ॥ पिष्टंमांसघृतंजग्ध्वानवनीतेनसोर्दिती । क्षीरमांसरसैर्भुक्त्वादशमूलीरसंपिवेत् ॥ अर्दितेपित्तजेशीतान्स्नेहांश्चैवबिनिर्दिशेत् । घृतवस्तिप्रसेकञ्चक्षीरसेकंतथैवच ॥ जिह्मभूताननोमूकोदाहवान्योर्दितोभवेत् । कुर्य्यात् प्रतिक्रियान्तस्यवातपित्तविनाशनीम् ॥ श्लेष्मभागेक्षयंनीतेबृंहणैःसमुपाचरेत् । अर्दितेशोथसंयुक्तेवमनंचप्रशस्यते ॥ ४६६ ॥

दश मूलके काढ़ेसे नींबूके रससे बरियारा अथवा पंचमूलके द्वारा सिद्धहुए दूध के पीने से पीठी मांस तथा घृतको मक्खन के साथ खाके अथवा दूध तथा मांसके रसकेसाथ भोजनकरके दशमूलका काढ़ा पीनेसे बातज अर्दितरोग का नाश होताहै पित्तज अर्दित रोगमें शीतल स्नेह बस्तुओंका भोजन करे और घी अथवा दूधके द्वारा वस्तिक्रिया तथा प्रसेक करे जो अर्दित रोगमें मुखका टेढ़ापन मूकता

और दाह होवे तो वात पित्त नाशक क्रियाकरे अर्दितरोग में पहले कफको नष्ट करके बृंहण औषधियों से चिकित्सा करे और जो सूजन भी होय तो वमन करावे ॥ ४६६ ॥

रसोनकल्कंतिलतैलमिश्रंखादेन्नरोयोर्दितरोगयुक्तः। तस्यार्दितंनाशमुपैतिशीघ्रंवृन्दं वनानामिववायुवेगात् ॥ ४६७ ॥

जैसे वायु के वेगसे मेघोंके समूह शीघ्रही नाशको प्राप्त होतेहैं उसी प्रकार लहसनके कल्कमें तिल का तेल मिलाकर खानेसे अर्दितरोग का नाश होताहै ॥ ४६७॥

अथमन्यास्तम्भस्यनिदानपूर्वकंलक्षणमाह ॥

दिवास्वप्नासनस्थानविकृतोर्ध्वनिरीक्षणैः। मन्यास्तंभंप्रकुरुतेसएवश्लेष्मणावृतः ॥ आसनस्थानविकृतोर्ध्वनिरीक्षणैः। आसनेनस्थानेनवातिशयेनविकृतंग्रीवादिविकृतंयथा स्यादेवउपसमीपस्ययन्निरीक्षणंतेनसएवकुपितोवातः श्लेष्मणावृतःमन्यास्तंम्भंकरोति ग्रीवायाःपश्चाद्भागे चतुर्दशशिरामन्यासंज्ञातथाचामरसिंहः। पश्चाद्ग्रीवाशिरामन्यास्ता सांस्तम्भंकरोतिच॥४६८ ॥ मन्यास्तंभ का निदान पूर्वक लक्षण ॥

दिनमें सोनेसे शयन अथवा बैठने के स्थानके बिकार युक्त होनेके कारण ग्रीवा आदिकों के बिकार युक्त होनेसे और ऊपरको देखनेसे कुपितहुई बायु कफ युक्तहोके मन्यास्तंभको उत्पन्न करती है ग्रीवाके पीछेकी नसको मन्या कहतेहैं ४६८ ॥ अथतस्यचिकित्सा ॥

दशमूलीकृतंक्वाथंपञ्चमूल्यापिकंल्पितम्। रूक्षंस्वेदंतथानस्यंमन्यास्तम्भेप्रयोजयेत्। तैलेनाज्येनवाग्रीवामभ्यज्यार्कदलैरथ। एरण्डपत्रैर्वाछाद्यस्वेदयेद्बहुशोभिषक् ॥ कुक्कुटाण्डद्रवैरुष्णैःसैन्धवाज्यसमन्वितैः ग्रीवांसम्मर्दयेत्तेनमन्यास्तम्भःप्रशाम्यति॥४६९॥

मन्यास्तंभ की चिकित्सा ॥

दश मूलका काढा अथवा बड़े पंचमूलका काढा पीनेसे रुक्ष स्वेदतथा नास लेनेसे तेल अथवा घी से मलकर आक अथवा अरंडके पत्तोंसे ढककर वारंबार स्वेद देनेसे मुर्गेके अण्डे के रसमें सेंधानोन तथा घी मिलाकर कुछ गरम २ ग्रीवापर मलनेसे मन्यास्तंभ का नाश होताहै ॥ ४६९ ॥

अथ वाहुशोषस्यलक्षणमाह ॥

अंसदेशेस्थितोवायुःशोषयेदंसवन्धनम्। अंसवन्धनशोषात्स्याद्वाहुशोषःसवेदनः ॥ ४७० ॥ वाहु शोषका लक्षण ॥

कन्धोंमें स्थित वायु कन्धोंके बन्धनोंको सुखातीहै इस्से पीड़ा सहित बाहु सूखतीहै ॥ ४७० ॥

तस्य चिकित्सा ॥

वाहुशोषेपिवेत्भुक्त्वासर्पिःकल्याणकंमहत्। वलामूलश्टतंतोयं सैन्धवेनसमन्वितम्॥ वाहुशोषकरेवातेमन्यास्तम्भेचशस्यते ॥ ४७१ ॥

बाहु शोषकी चिकित्सा ॥

वाहुशोष में भोजन करके महा कल्याणकघृत पीना चाहिये बरियारा की जड़के काढ़ेमें सेंधानोन डालकर पीनेसे वाहुशोष और मन्यास्तंभ शान्त होताहै ॥ ४७१ ॥

अथापबाहुकस्यलक्षणमाह ॥

शिराःसङ्कोच्यबाहुस्थाःसकुर्य्यादपबाहुकम्।सवायुःबाहुस्थःशिराःबाहुस्थशिराः४७२ ॥

अपबाहुक का लक्षण ॥

कुपित हुई बायु भुजाकी नसोंको संकुचित करके अपबाहुक रोगको उत्पन्न करतीहै ॥ ४७२ ॥

तस्यचिकित्सा ॥

परमौषधमपबाहुकमन्यास्तम्भोर्ध्वजत्रुगतरोगे । शीतलजलेननस्यन्तदुपशमेजिङ्गिनीचपुरः॥मूलंबलायास्त्वथपारिभद्रंजंतथात्मगुप्तास्वरसंपिवेद्वा । युञ्जीतयोमाषरसेननस्यंभवेदसौवज्रसमानबाहुः ॥ बलायामूलंकल्कीकृतंपिवेत्तथापारिभद्रमूलञ्च । पारिभद्रोऽत्रफरहदवातहरत्वात् ॥ ४७३ ॥ अपबाहुक की चिकित्सा ॥

अपबाहुक मन्यास्तंभ और ऊर्द्ध जत्रुमें हुएरोगों में पहले जिंगनी वृक्षकी जडको पीसकर शीतलजलके साथ नासलेने से यहसब रोग शान्त होतेहैं बरियारा की जडको अथवा फर्हदकीजडको पीसकर शीतलजलके साथ पीनेसे अथवा किवांच के रसको पीने से अथवा उर्दके काढेकी नास लेने से बज्रके समान भुजा होती है ॥ ४७३ ॥

माषातसीयवकुरण्टककण्टकारीगोकण्टटुण्टुकजटाकपिकच्छुतोयैः । कार्पासकास्थिशणबीजकुलत्थकोलक्काथेनवस्तपिशितस्यरसेनवापि ॥ शुण्ठ्याममागधिकयाशतपुष्पयाच सैरण्डमूलकपुनर्नवयासरण्या ॥ रास्नाबलामृतलताकटुकैर्विपक्वं माषाख्यमेतदपबाहुहरंहितैलम् ॥ ४७४ ॥

उर्द अलसी जौ पीली झिंटी भटकटैया गोखुरू सोनापाठा जटामांसी तथा किवांच का रस कपासके बीज सनकेबीज कुलथी तथा बेरकाकाढा बकरेके मांसका रस सोंठ पीपल सौंफ अरंडकी जड पुनर्नवा गन्ध प्रसारणी रासना बरियारा गिलोय और मिर्च इनसब औषधियों को मिलाकर तेलका पाककर के सेवन करने से अपबाहुक रोग का नाशहोताहै इतिमाषतैल ॥ ४७४ ॥

अथविश्वाचीलक्षणमाह ॥

तलप्रत्यंगुलीनांयाकण्डराबाहुपृष्ठतः । बाह्वोःकर्मक्षयकरीविश्वाचीसानिगद्यते ॥ कण्डरामहास्नायुः तलंहस्तस्योपरिभागंतलशब्दोऽत्रउपरिवाचकःयथाभूमितलमिति तेनायमर्थः । बाहुपृष्ठतःबाह्वोःपृष्ठंबाहुपृष्ठमारभ्यतलंप्रतिहस्ततलं यावल्लक्षीकृत्यअंगुलीनांपाण्डरास्ताः सन्दूष्यबाह्वोःप्रसारणाकुञ्चनादिकर्मक्षयकरीभवंति साइहवातव्याधिषुविश्वाचीत्युच्यतेबाह्वोरितिद्वित्वंसम्भवपरम्एकस्मिन्नपिबाहौवि[illegible]चीभवति४७५

विश्वाची का लक्षण ॥

जिस रोगमें भुजाकी पीठपरसे हाथ के ऊपर अंगुलियों तक रहनेवाली क[illegible] बडीनस दूषित होकर भुजाके सकोड़ने तथा फैलाने आदिकामों को नष्टकरे उसको बिश्व[illegible] हते हैं ॥ ४७५ ॥

अथतस्य चिकित्सा ॥

दशमूलीबलामाषक्काथतैलाज्यमिश्रितम्।सायंभुक्त्वापिवेन्नस्यं[illegible]पबाहुके४७६

विश्वाची की चिकित्सा ॥

भोजनके उपरान्त सायंकालके समय दशमूल बरियारा तथा उर्द के काढ़ेमें घी और तेल मिला कर नासिका के द्वारापीने से विश्वाची और अपबाहुक का नाश होता है ॥ ४७६ ॥

माषसिन्धुबलारास्नादशमूलकहिंगुभिः । वचाशिवजटाख्याभिःसिद्धंतैलंसनागरम् ॥ ऊर्ध्वंभक्ताशनाद्धन्याद्बाहुशोषापबाहुकौ । विश्वाचीमुद्धताञ्चापिपक्षाघातंतथार्द्दितम् । माषादितैलम् ॥४७७॥

उर्द सेंधानोन बरियारा रासना दशमूल हींग सोंठ बच और शिवजटा इन सबके द्वारा तेल को पका कर भोजनके उपरान्त सेवन करने से बाहुशोष अपबाहुक विश्वाची पक्षाघात और अर्द्दित रोगका नाशहोताहै इति माषादि तैल ॥ ४७७ ॥

अथोर्ध्ववातस्यलक्षणमाह ॥

अधःप्रतिहतोवायुःश्लेष्मणामारुतेनच । करोत्युद्गारबाहुल्यमूर्ध्ववातःसउच्यते ॥ वायुःसमानवायुःमारुतेनापानवायुनास्वदेहेतुदुष्टेनअधःप्रतिहतःअधोनिरुद्धः॥४७८॥

ऊर्ध्वबात का लक्षण ॥

कफ और अपान बायुके द्वारा नीचे से रुकीहुई समान बायु बहुत सी डकारों को करती है उसको ऊर्ध्व बात कहते हैं ॥ ४७८ ॥ अथतस्य चिकित्सा ॥

भागादशविश्वायास्तत्तुल्योवृद्धदारकस्यापि । त्रयएवचपथ्यायाःचतुरंशंहिंगुसंमृष्टम ॥ एकःसैन्धवभागस्तत्तुल्यंचित्रकञ्चात्र । संवृद्धमूर्ध्ववातंहन्त्येतच्चूर्णितंभुक्तम् ॥ अथवृद्धदारकालाभेत्रिवृन्मूलंग्राह्यम् ॥ ४७९ ॥

ऊर्ध्व बातकी चिकित्सा ॥

सोंठ १० भाग बिधारेके बीज १० भाग (बिधारा नमिलेतो निसोतकी जड़) हड़ ३ भाग भुनी हींग ४ भाग और सेंधानोन तथा चीता एक २ भाग इनसबको चूर्ण करके खानेसे बढ़े हुए ऊर्ध्व बात का नाशहोता है ॥ ४७९ ॥ अथाध्मानस्य लक्षणमाह ॥

साटोपमत्युग्ररुजमाध्मातमुदरंभृशम् । आध्मानमितिजानीयात्घोरंवातनिरोधजम् ॥ आटोपोगुड़गुड़ाशब्दः भृशमाध्मानंवातपूर्णभस्तावत्वातनिरोधजम् अधोवातनिरोधजम् ॥ ४८० ॥ आध्मान का लक्षण ॥

जिसरोग में नीचे की वायु के रुकने से उदरमें बहुत पीड़ा गड़गड़ाहट और बहुत पेटफूल नाहोय उस को आध्मान [illegible]ते हैं ॥ ४८० ॥

अथतस्य चिकित्सा ॥

आध्माने[illegible] दीपनंपाचनंततःफलवर्त्तिक्रियांकुर्य्याद्वस्तिकर्मचशोधनम् ॥ ४८१ ॥

आध्मान की चिकित्सा ॥

अधमान रोग[illegible] [illegible]न फिर दीपन तथा पाचन औषधियों का सेवन फलवर्ति (गुदामें बत्ती खाना) बस्ति [illegible] [illegible]धन औषध हित कारी हैं ॥ ४८१ ॥

कर्षमात्राभवेत्कृष्णात्रिवृतास्यात्पलोन्मिता । खण्डादपिपलंग्राह्यंचूर्णमेकत्रकारयेत् ॥ मधुनाक्षमितंलिह्याच्चूर्णमाध्माननाशनम् । नारायणचूर्णम् ॥ ४८२ ॥

पीपल १ तोला और निसोत तथा शक्कर चार २ तोले इनसबको एकसाथ पीसकर एक तोला चूर्णसहत के साथ चाटने से आध्मान का नाशहोता है इति नारायणचूर्ण ॥ ४८२ ॥

दारुहैमवतीकुष्ठशताह्वाहिंगुसैन्धवैः । लिम्पेदुष्णैरम्लपिष्टैःशूलाध्मानयुतोदरम् ॥ हैमवतीवचा । दारुषट्कलेपः ॥ ४८३ ॥

देवदारु बच कूट सौंफ हींग और सेंधानोन इनसबको काँजीमें पीसकर कुछ गरम २ शूल और आध्मान युक्त पेटपर लेप करे इति दारुषट्क लेप ॥ ४८३ ॥

अभयारग्वधोधात्रीदन्तीतिक्तास्नुहीत्रिवृत्। मुस्ताप्रत्येकमेतानिग्राह्यानिपलमात्रया ॥ तानिसङ्कुट्यसर्वाणिजलाढकयुगेपचेत् । तत्रतोयेऽष्टमंभागंकषायमवशेषयेत् ॥ निस्त्वक्जैपालबीजानिनवानिपलमात्रया।तनुवस्त्रधृतान्येवतस्मिन्क्वाथेशनैःपचेत्॥ज्वालयेदनलंमन्दंयावत्क्वाथोघनोभवेत् । ततःखल्वेक्षिपेद्भागानष्टौजैपालबीजतः॥ भागान्त्रीन्नागरात्द्वौचमरिचाद्द्वौचपारदात्। गन्धकाद्द्वौचतानीहयावद्यामंविमर्दयेत् ॥ रसोनाराचनामायंभक्षितोरत्तिकामितः। जलेनशीतलेनैवरोगानेतान्विनाशयेत् ॥ आध्मानंशूलमानाहंप्रत्याध्मानंतथैवच। उदावर्त्तंतथागुल्ममुदराणिहरत्यसौ ॥ वेगेशान्तेतुभुंजीतशर्करासहितंदधि।ततस्ततसैन्धवेनापितितोदध्योदनंमनाक्॥महानाराचोरसः ४८४ ॥

हड़ अमलतास आमला दन्ती कुटकी थूहर निसोत तथा मोथा इन सबकोचार ४तोले लेकर कूटकर ५१२ तोले जलमें पाककरे और चौथाई बाकी रहजाने पर उतार कर छानले फिर छिले हुए नये जमालगोटे के ४ तोले बीज महीन कपड़े में बांधकर उसीकाढ़े में डाल कर मन्दाग्निसे पकावे और काढ़ेके गाढ़े होजाने पर वही जमालगोटे के बीज ८ भाग सोंठ ३ भाग मिर्च २ भाग और पारा तथा गन्धक दो२ भाग इनसबको खरलमें एक साथ एक पहरपीसकर एकरत्ती रस शीतल जल के साथ खाने से दस्त आकर आध्मान शूल आनाह प्रत्याध्मान उदावर्त्त गोला और उदर रोगों का नाश होताहै और दस्तों केबन्द होजाने पर शक्कर समेत दहीखाय फिर सेंधानोन मिले हुए दही के साथ भातखाय इतिमहानाराच रस ॥ ४८४ ॥

अथप्रत्याध्मानस्यलक्षणमाह ॥

विमुक्तपार्श्वहृदयंतदेवामाशयोत्थितम् । प्रत्याध्मानंविजानीयात्कफव्याकुलतानिलम् ॥ विमुक्तपार्श्वहृदयंपार्श्वहृदयेविहायजातं तदेवाध्मानंकफव्याकुलितानिलंकफेनावरुद्धवातम् ॥४८५ ॥

प्रत्याध्मान का लक्षण ॥

कफसे रुकीहुई बायुके द्वारा पसली और हृदय को छोड़कर आमाशयमें उत्पन्नहुए आध्मानको प्रत्याध्मान कहते हैं ॥ ४८५ ॥

अथतस्यचिकित्सा ॥

प्रत्याध्मानेसमुत्पन्नेकुर्याद्वमनलङ्घनं । दीपनादीनियुञ्जीत [illegible] कर्मच॥४८६॥

प्रत्याध्मान की चिकित्सा ॥

प्रत्याध्मान में पहले बमन तथा लंघन कराके फिर दीपन औषध देनी चाहिये और पहले के समान वस्ति क्रिया करनी चाहिये ॥ ४८६ ॥

अथवातष्ठीलायालक्षणमाह ॥

नाभेरधस्तात्सञ्जातःसञ्चारीयदिवाचलः । अष्ठीलावद्धनोग्रन्थिरूर्ध्वमायतउन्नतः ॥ वातष्ठीलांविजानीयाद्बहिर्मार्गनिरोधिनीम् । अष्ठीला वर्त्तुलापाषाणखण्डःआयतःदीर्घः वातष्ठीलावातष्ठीलेतिस्वरूपपरंनतु विशेषपरंव्यावर्त्तकाभावात्बहिर्मार्गनिरोधिनींशि श्नभगगुदनिरोधिनींतेनमूत्रमरुन्मलावरोधःसूचितः ॥ ४८७॥

वातष्ठीला का लक्षण ॥

नाभिके नीचे बटियाके समान कठोर जो गांठउत्पन्न होती है और ऊपरकी ओर लंबी तथा ऊंची मलमूत्रकी रोकने वाली होतीहै वह चंचल अथवास्थिर होतीहै इसको वाताष्ठीला कहते हैं ॥४८७॥

अथप्रत्यष्ठीलायालक्षणमाह ॥

एतामेवरुजायुक्तांवातविण्मूत्ररोधिनीम् । प्रत्यष्ठीलामितिवदेज्जठरेतिर्य्यगुत्थिताम् ॥ एतामेवअष्ठीलामेवजठरेतिर्य्यगुत्थितामितिभेदः ॥ ४८८॥

प्रत्यष्ठीलाका लक्षण ॥

उदरमें तिरछी उठीहुई पीड़ायुक्त वायु तथा मलमूत्रकी रोकनेवाली बातष्ठीलाको प्रत्यष्ठीला कहते हैं ॥ ४८८ ॥

तयोश्चिकित्सा ॥

अष्ठीलायाःक्रियाकार्य्यागुल्मस्यान्तरविद्रधेः । चूर्णंहिङ्ग्वादिकञ्चात्रपिवेदुष्णेनवारिणा ॥ हिङ्ग्वादिचूर्णंयथा हिङ्गुग्रन्थिकधान्यजीरकवचाचव्याग्निपाठाशटीवृक्षाम्लंलवणत्रयंत्रिकटुकंक्षारद्वयंदाडिमम् ॥ पथ्यापौष्करवेतसाम्लहवुषायोज्यस्तदेभिः कृतंचूर्णंभावितमेतदार्द्रकरसैःस्याद्बीजपूरद्रवैरिति ॥ ४८९ ॥

वातष्ठीला और प्रत्यष्ठीला की चिकित्सा ॥

वातष्ठीला और प्रत्यष्ठीलामें गुल्म और अन्तर्विद्रधिके समान चिकित्सा करनी चाहिये और आगे कहाहुआ हिंग्वादि चूर्ण गरम जलके साथपीना चाहिये हींग पीपलामूल धनियाँ जीरा बच चव्य चीता पाठा कचूर चूक कालानोन सेंधानोन विट्नोन त्रिकटु जवाखार सज्जी अनार हड़ पुष्करमूल अमलवेत और हाऊबेर इनसबको चूर्ण करके एकदिन अदरक के रसमें और एकदिन नींबूके रसमें भावना देवे यह हिंग्वादिचूर्ण कहलाताहै ॥ ४८९ ॥

अथतूनीलक्षणमाह ॥

अधोयावेदनायातिवर्चोमूत्राशयोत्थिता । भिन्दतीवगुदोपस्थंसातूनीनामतोमता ॥ उपस्थंशिश्नंभगञ्च ॥ ४९० ॥

तूनीका लक्षण ॥

मलाशय और मूत्राशयसे उठीहुई जो पीड़ा गुदा और लिंग अथवा भगमें चीरनेके समान पीड़ा करतीहुई नीचेको जाय उसको तूनी कहतेहैं ॥ ४९० ॥

अथप्रतूनीलक्षणमाह ॥

गुदोपस्थोत्थितासैवप्रतिलोमंविधाविता । वेगैःपक्वाशयंयातिप्रतितूनीतिसोच्यते ॥ अधस्ताद्रुत्थितोर्ध्वगामिनीवेगैर्वेदनावेगैर्मुहुर्मुहुःस्वभावोपशमोपलक्षितैः सात्वनेनाभिधेतिद्दश्यतेसानामतःप्रतितूनीसैववेदनावेगैःउत्पत्तिप्रशमलक्षितैः ॥ ४९१ ॥

प्रति तूनीका लक्षण ॥

गुदा और लिंग अथवा योनिसे उत्पन्न हुई पीड़ा उलटेक्रमसे बारंबार बहुत बेगों के साथ ऊर्ध्वगामी होकर पक्काशय और मूत्राशयमें जाय उसको प्रत्यूनी कहतेहैं ॥ ४९१ ॥

अथतयोश्चिकित्सा ॥

तून्याञ्चप्रतितून्याञ्चप्रशस्ताःस्नेहवस्तयः । पिवेद्वास्नेहलवणंपिप्पल्यादिमथाम्बुना ॥ उष्णंवारामठक्षारंप्रगाढमथवाघृतम् ॥ ४९२ ॥

तूनीऔर प्रत्यूनीकी चिकित्सा ॥

तूनी और प्रत्यूनीमें स्नेह वास्तिदेवे स्नेहयुक्त सेंधानोन अथवा जलके साथ पिप्पल्यादि गण या हींग तथा जवाखार उष्ण करके सेवनकरे अथवा बहुत सा घीपिये ॥ ४९२ ॥

अथत्रिकशूलस्य लक्षणमाह ॥

स्फिगस्थ्नोःपृष्ठवंशास्थ्नोर्यःसन्धिस्तत्त्रिकंमतम् । तत्रवातेनयापीडात्रिकशूलंतदुच्यते ॥ ४९३ ॥

त्रिकशूलका लक्षण ॥

चूतड़ोंकी हड्डी और रीड़की हड्डी इनदोनोंकी सन्धिको त्रिक कहतेहैं इनमेंजो बायुके द्वारा पीड़ा होती है उसको त्रिकशूल कहते हैं ॥ ४९३ ॥

अथतस्य चिकित्सा ॥

कारयेद्वालुकास्वेदंत्रिकशूलेप्रयत्नतः । यद्वाधस्तात्करीषाग्निंधारयेत्सततंनरः ४९४ ॥

त्रिकशूलकी चिकित्सा ॥

त्रिकशूलमें यत्नपूर्व्वक बालुका स्वेदकरावे अथवा करसीकी आंच बराबर नीचेरक्खे ॥ ४९४ ॥

आभाश्वगन्धाहवुषागुडूचीशतावरीगोक्षुरकश्चरास्ना । श्यामाशताह्वाचशठीयवानीसनागराचेतिसमंविचूर्ण्या ॥ सर्वैःसमंगुग्गुलुमत्रदद्यात्क्षिपेदिहाज्यञ्चतदर्द्धभागम् । तद्भक्षयेदर्द्धपिचुप्रमाणंप्रभातकालेपयसाथयूषैः ॥ मद्येनवाकोष्णजलेनचाथक्षीरेणवामांसरसेनवापि । त्रिकग्रहेजानुहनुग्रहेचवातेभुजस्थेचरणस्थितेच ॥ सन्धिस्थितेचास्थिगतेचतस्मिन्मज्जास्थितेस्नायुगतेचकोष्ठे । रोगान्हरेद्वातकफानुविद्धान्वातेरितान्हृद्ग्रहयोनिदोषान् ॥ भग्नास्थिविद्धेषुचखञ्जतायांसगृध्रसीकेखलुपक्षघाते । षधंगुग्गुलुमेतमाहुस्त्रयोदशांगंभिषजःपुराणाः ॥ आभावव्वूलः । तथाच पुराणव्वूलपर्यायःकथितःकोविदैरिहेति । इतित्रयोदशांगगुग्गुलुः ॥ ४९५ ॥

(हाशिया: होता वारि ...त ...करपीनेसे)

बबूल असगन्ध हाऊबेर गिलोय सतावर गोखुरू रासना श्यामा सौंफ कचूर गुंडीके पत्ते और सोंठि इनसब औषधियोंको समभाग लेकर पीसे और सबकी बराबर गूगुल मि[illegible] का आधा घी

मिलावे फिर प्रातःकाल ६ मासे औषध जल यूष मद्य उष्णजल दूध अथवा मांसकारस इनमें से किसीके साथ सेवनकरनेसे त्रिकशूल जानुशूल हनुस्तंभ भुजा संधि चरण हड्डी मज्जा नस तथा कोष्ठमें गईहुई वायु बात कफजरोग बातजनित हृदयकेरोग योनिदोष हड्डीका टूटना घावकी पीड़ा खंजिता गृध्रसी और पक्षाघात इनसबका नाश होताहै इस त्रयोदशांग नाम गूगुलको प्राचीन वैद्य लोग इनरोगोंकी महौषध कहतेहैं ॥ इतित्रयोदशांगगूगुल ॥ ४९५ ॥

अथवस्तिवातस्य लक्षणमाह ॥

मारुतेऽविगुणेवस्तौमूत्रंसम्यक्प्रवर्त्तते।विकाराविविधाश्चापितस्मिन्दुष्टेभवन्तिहि॥ अविगुणेअनुलोमेविकाराःविविधाःमुहुर्मुहुर्मूत्रनिग्रहः ॥ ४९६ ॥

बस्तिबातका लक्षण ॥

मूत्राशयमें दोषरहित बायुके स्थितरहनेपर अच्छेप्रकारसे मूत्र निकलताहै और मूत्राशयमें दूषित बायुके स्थित रहनेपर बारम्बार मूतना और मूत्रका रुकना यह बिकार उत्पन्नहोतेहैं ॥ ४९६ ॥

तस्यचिकित्सा ॥

वलामूर्वात्वचंचूर्णंससितंकर्षसम्मितम्। पिबेत्कुड़वदुग्धेनमुहुर्मूत्रणशान्तये ॥ पथ्याविभीतधात्रीणांचूर्णंचूर्णमृतायसः।मधुनासहसंलीढंमुहुर्मूत्रणशान्तिकृत्॥यवक्षारस्य चूर्णन्तुसंयोज्यसितयासह।भक्षयेन्नियतंतस्यप्रशमेन्मूत्रनिग्रहः॥ कूष्माण्डस्यतुबीजानि बीजानित्रपुसस्यच।वस्तौसन्धारयेत्तेनप्रशाम्येन्मूत्रनिग्रहः। आमलक्याश्चकल्केनबस्तिभागंप्रलपेयेत् ॥ तेनप्रशाम्यतिक्षिप्रंनियमान्मूत्रनिग्रहः। मेहनस्याथयोनेर्वामुखस्याभ्यन्तरेशनैः ॥ घनसारयुतांवर्त्तिंधारयेन्मूत्रनिग्रहे ॥ ४९७ ॥

बस्तिबातकी चिकित्सा ॥

बरियारा मरोड़फली तथा दालचीनी इनसब औषधियोंके समान शक्करमिलाकर एकतोले चूर्ण १६तोले दूधकेसाथपीनेसे अथवा हड़ बहेडा आमला तथा लोहे की भस्म इनसबको सहतके साथ चाटनेसे बारम्बार मूत्रआनाबन्दहोताहै जवाखारके चूर्णको मिश्रीमिलाकरखानेसे कुँभड़े तथा खीरे के बीजोंको पेड़ूपर रखनेसे आमलेको पीसकर पेड़ूपर लेपकरने से अथवा लिंग वा योनि के भीतर कपूर युक्त बत्तीको धारणकरनेसे मूत्रके रुकावका नाशहोताहै ॥ ४९७ ॥

गृध्रसीलक्षण माह ॥

स्फिक्पूर्वोरुकटीपृष्ठजानुजङ्घपदंक्रमात् । गृध्रसीस्तम्भरुक्तोदैर्गृह्णातिस्पन्दते मुहुः ॥ वाताद्वातकफाभ्यांसाविज्ञेयाद्विविधापुनः। वातजायांभवेत्तोदोदेहस्यातीववक्रता ॥ जानुज[illegible]सन्धीनांस्फुरणंस्तम्भताभृशम्। वातश्लेष्मोद्भवायान्तुगौरवंवह्निमार्दवम् ॥ तन्द्र[illegible]सेकश्चभक्तद्वेषस्तथैवच। गृध्रसीवातजाकेवलास्फिगादिपर्य्यन्तम् स्तम्भरुक्तोदैनाय[illegible]ातिक्रमात्वृद्धिक्रमात् ॥ तेनयथायथावर्द्धतेतथातथास्फिगादी न्याक्रामतिना[illegible]गश्च निर्देशक्रमानियमः । तथामुहुःस्पन्दतेस्फिगादिषुशिराकम्पंकरो तीत्यर्थः ॥ ४[illegible] मूत्राश[illegible] जाय उ

गृध्रसीकालक्षण ॥

गृध्रसी रोगमें कुपितहुई वायु पहले नितम्बों में स्तब्धता वेदना तथा सूईगडनेकीसी पीडा और नसोंके फड़कनेको उत्पन्न करतीहै फिर रोगके बढ़जानेपर क्रमसे जंघा कमर पीठ घुटने पिंडलीतथा पैरोंमें प्राप्तहोकर स्तब्धता पीड़ा और अंग फड़कना उत्पन्न करतीहै केवल वातजन्य और वात कफ जन्य भेदोंसे गृध्रसीदो प्रकारकीहै वातज गृध्रसीमें पीड़ा शरीरका बहुत टेढ़ापन घुटने पिंडली जंघा तथा सन्धियोंकाबहुतफड़कना तथा स्तब्धताहोतीहै कफयुक्त गृध्रसीरोगमें शरीरकाभारीपन मन्दाग्नि तन्द्रा मुखसेलारगिरना और भोजनमें अरुचि यह लक्षणहोतेहैं ॥ ४६८ ॥

तस्य चिकित्सा ॥

गृध्रस्यार्त्तंनरंसम्यक्रेकेनवमनेनवा । ज्ञात्वानिरामंदीप्ताग्निंवस्तिभिःसमुपाचरेत् ॥ नादौवस्तिविधिंकुर्य्याद्यावदूर्द्ध्वंनशुध्यति । स्नेहोनिरर्थकःसस्याद्भस्मन्यवहुतंयथा ॥ तैलमेरण्डजंप्रातर्गोमूत्रेणपिवेन्नरः । मासमेकंप्रयोगोऽयंगृध्रस्युरुग्रहापहः ॥ तैलंघृत आर्द्रकमातुलुङ्गरसंसचुक्रंसगुडंपिवेद्वा । कट्यूरुपृष्ठत्रिकशूलगुल्मगृध्रस्युदावर्त्तहरःप्रयोगः ॥ निष्कुष्यैरण्डवीजानिपिष्ट्वाक्षीरेविपाचयेत् । तत्पानन्तुकटीशूलेगृध्रस्यांपरमौषधम् । एरण्डमूलंविल्वंञ्चवृहतीकण्टकारिका ॥ कषायोरुचकोपेतःपीतोवंक्षणवस्तिजम् । गृध्रसीजंहरेत्शूलंचिरकालानुवन्धिच । रुचकंसौवर्चलं । गोमूत्रैरण्डतैलाभ्यां कृष्णाचूर्णंपिवेन्नरः । दीर्घकालोत्थितांहन्तिगृध्रसींकफवातजाम् ॥ सिंहास्यदन्तीकृतमालकानांपिवेत्कषायमरुवुतैलमिश्रम् । योगृध्रसीनष्टगतिःप्रसुप्तःसशीघ्रगःस्याद्विकिमत्रचित्रम् ॥ वृहन्निम्बतरोःसारोवारिणापरिपेषितः । सपीतोनाशयेत्तीव्रमसाध्यामपि गृध्रसीम् ॥ शेफालिकादलैःक्वाथोमृद्वग्निपरिपाचितः । दुर्वारंगृध्रसीरोगंपीतमात्रःप्रणाशयेत् ॥ इतिशेफालिकानिर्गुण्डी ॥ ४६९ ॥

गृध्रसीकी चिकित्सा ॥

गृध्रसीरोगवालेको पहले विरेचन अथवा वमनसेशुद्धकरके आमकानाश तथा अग्निकी दीप्तिहोजाने पर बस्तिक्रियाकरे बमनादिके द्वारा बिना शुद्धकिये बस्ति न देवे क्योंकि शुद्धताकिये बिना दिया हुआ स्नेह भस्ममें हवन कियेहुएके समान निरर्थक होताहै गोमूत्रके साथ रेंड़ीकेतेलको प्रातःकाल महीने भरतकपीनेसे गृध्रसी और ऊरुस्तंभका नाशहोताहै अदरककारस नींबूकारस चूक और गुड़ इनमेंतेल तथा घीडालकरपीनेसे कमर जंघा पीठ तथा त्रिकका शूल गोला गृध्रसी और उदावर्त्तकानाशहोताहै छिलेहुए अरंडके बीजोंको दूधमें पकाकर पीनेसे कमरके शूल और गृध्रसीकानाशहोताहै अरंडकीजड़ बेल दोनों भटकटैया इनसबके काढ़े में कालानोन डालकर पीनेसे बंक्षण तथा बस्तिके शूल और गृध्रसीकानाशहोताहै गोमूत्र और रेंड़ीकेतेलके साथ पीपलका चूर्णपीनेसे बहुत पुरानी कफ वातज गृध्रसीकानाशहोताहै बांसा दंती और अमलतासके काढ़ेमें रेंड़ीकातेल डालकरपीनेसे गृध्रसीकेद्वारा जकड़ेहुए पैरखुलजातेहैं बड़ेनींबके सारको जलमें पीसकर पीनेसे और निर्गुंडीके पत्तों के काढ़े को पीनेसे असाध्य भी गृध्रसीकाशीघ्रनाशहोताहै ॥ ४६९ ॥

रास्नायास्तुपलञ्चैकंपञ्चकर्षाणिगुग्गुलुः । सर्पिषावटिकांकृत्वाभक्षयेत्गृध्रसीहरी-म् । रास्नागुग्गुलुः ॥ ५०० ॥

रासना ४ तोला और गूगुल ५ तोला इन दोनों को पीस घी मिलाकर गोली बनावे इसके खाने से गृध्रसीका नाशहोता है ॥ इतिरासनागूगुल ॥ ५०० ॥

रास्नामृतारग्वधदेवदारुत्रिकण्टकैरण्डपुनर्नवानाम् । क्वाथंपिबेन्नागरचूर्णमिश्रंजङ्घोरुपृष्ठत्रिकपार्श्वशूली ॥ इतिरास्नासप्तकक्वाथः ॥ ५०१ ॥

रासना गिलोय अमलतास देवदारु गोखुरू अरंडकी जड़ और पुनर्नवा इनके काढ़े में सोंठका चूर्ण मिलाकर पीनेसे पिंडली जंघा पीठ त्रिक और पसलियोंकी पीड़ाका नाशहोताहै ॥इति रासना सप्तक क्वाथ ॥ ५०१ ॥

पथ्याविभीतामलकीपलानांशतंक्रमेणद्विगुणाभिवृद्धम् । प्रस्थेनयुक्तञ्चपलंकषाणांद्रोणेजलेसंस्थितमेकरात्रम् ॥ अर्द्धावशिष्टंक्वथितंकषायंभाण्डेपचेत्ततपुनरेवलौहे । अमूनिवह्नेरवतार्य्यदद्याद्द्रव्याणिसञ्चूर्ण्यपलार्द्धकानि ॥विडङ्गदन्तीत्रिफलागुडूचीकृष्णात्रिवृन्नागरकोषणानि । यथेष्टचेष्टस्य भवत्यशीघ्रंहिमाम्बुपानानिचभोजनानि ॥ निषेव्यमाणोविनिहन्तिरोगान्सगृध्रसीनूतनःखञ्जताञ्च । प्लीहानमुग्रंजठराग्निगुल्मं पाण्डुत्वकण्डूवमिवातरक्तम् ॥ पथ्यादिकोगुग्गुलुरेषनाम्नाख्यातःक्षितावप्रमितप्रभावः । बलेननागेनसमंमनुष्यंजवेनकुर्य्यात्तुरगेणतुल्यम् ॥ आयुःप्रकर्षंविदधातिचक्षुर्बलंतथापुष्टिकरोविषघ्नः । क्षतस्यसन्धानकरोविशेषाद्रोगेषुशस्तःसकलेषुतज्ज्ञैः ॥ इतिपथ्यादिगुग्गुलुः ॥ ५०२ ॥

हड़ १०० बहेड़ा २०० आमला ४०० और गूगुल ६४ तोले इन सबको १०२४ तोले जल में रात्रिभर भिगोकर पाककरे फिर आधारह जानेपर उतार कर छानले और फिर इसी काढ़ेको लोहे के पात्र में औटावे जब गाढ़ा होजाय तब उतारकर बायबिड़ंग दन्ती त्रिफला गिलोय पीपल नि-सोत सोंठ और मिर्च इन सब औषधियोंका दो २ तोले चूर्ण छोड़े इसको मात्राके अनुसार सेवन करके शीतल जलपिये और अपनी इच्छाके अनुसार आहार विहारकरे इससे गृध्रसी खंजिता प्लीहा अग्नि वृद्धि गोला विष पांडु खुजली छर्दि तथा वातरक्त का नाश होताहै और हाथीके समान बल घोड़ेके समान बेग आयुकी वृद्धि नेत्रोंमें बल शरीरमें पुष्टता तथा घावका भरना यह सब होतेहैं यह सब रोगोंमें हितकारी है ॥ इति पथ्यादि गूगुल ॥ ५०२ ॥

अथखञ्जस्यपङ्गोश्चलक्षणमाह ॥

वायुःकट्याश्रितःसक्थ्नःकण्डरामाक्षिपेत्यदा । खञ्जस्तदाभवेज्जन्तुःपंगुःसक्थ्नोर्द्वयोर्वधात् ॥ सक्थ्नःकट्यादिगुल्फस्तस्यकण्डरांमहास्नायुंआक्षिपेत् । गमनादौकम्पयेत्वधात्गमनादिक्रियाघातात् ॥ ५०३ ॥

खंज और पंगुके लक्षण ॥

कमरमें स्थित वायु कुपित होकर जो जंघाओंमें स्थित कंडराओं को गमनके समय कंपितकरे

तो मनुष्य खंज (लँगड़ा) होताहै और जो दोनों जंघाओंकी गमनादिक क्रिया नष्ट होजायँ तो मनुष्य पंगुहोताहै ॥ ५०३ ॥ अथतस्यचिकित्सा ॥

उपाचरेदभिनवंखञ्जंपंगुमथापिच । विरेकास्थापनस्वेदगुग्गुलुस्नेहवस्तिभिः ५०४॥

खंज और पंगुकी चिकित्सा ॥

नवीन खंज और पंगुकी विरेचन निरोहवस्ति स्वेद गूगुल और स्नेह वस्तिके द्वारा चिकित्सा करनी चाहिये ॥ ५०४ ॥ अथकलापखञ्जस्यलक्षणमाह ॥

कम्पतेगमनारम्भेखञ्जन्निवचलक्ष्यते । कलापखञ्जन्तंविद्यान्मुक्तसन्धिप्रबन्धनम् ॥ गमनारम्भेकम्पतेएतस्यखञ्जादयएवभेदाः । कलापखञ्जइतिशास्त्रेरूढासंज्ञानतुयौगिके ॥ ५०५ ॥ कलाप खंजका लक्षण ॥

चलने के आरंभमें कंपहोवे और लँगड़ेके समान चालचले तो उसको कलाप खंज जाननाचाहिये इसमें संपूर्ण सन्धियोंके बन्ध शिथिल होजाते हैं ॥ ५०५ ॥

अथतस्यचिकित्सा ॥

क्रमःकलापखञ्जस्यखञ्जपङ्गोरिवस्मृतः । विशेषात्स्नेहनंकर्म्मकार्य्यमत्रविचक्षणैः ॥ ५०६ ॥ कलाप खंजकी चिकित्सा॥

कलाप खंजमें खंज और पंगुके समान चिकित्सा करनी चाहिये और इसमें स्नेह क्रिया विशेषतासे करनी चाहिये ॥ ५०६ ॥

अथक्रोष्टुकशीर्षस्यलक्षणमाह ॥

वातशोणितजःशोथोजानुमध्येमहारुजः । ज्ञेयःक्रोष्टुकशीर्षस्तुस्थूलःक्रोष्टुकशीर्षवत् । क्रोष्टुःशृगालः ॥ ५०७ ॥

क्रोष्टुक शीर्षका लक्षण ॥

घुटने के बीचमें वातरक्त से उत्पन्नहुई जो सूजन शियारके शिरके समान स्थूल और अत्यन्त पीड़ा युक्त होती है उसको क्रोष्टुक शीर्ष कहतेहैं ॥ ५०७ ॥

अथतस्यचिकित्सा ॥

गुग्गुलुंक्रोष्टुशीर्षेतुगुडूचीत्रिफलाम्भसा । क्षीरेणैरण्डतैलंवापिबेद्वावृद्धदारकम् ॥ गुग्गुलुशुद्धंकर्षमितंगुडूचीत्रिफलाम्भसा । गुडूचीपथ्याविभीतामलकैःसमुदितैश्चतुःकर्षमितैःप्रस्थमितेनजलेनपक्त्वाक्काथेनोष्णेनपलद्वयमितेनगुग्गुलुंपिवेत् ॥ एरण्डतैलंकर्षमितंक्षीरेणगव्येनपलपरिमितेनपिवेत् । वृद्धदारकचूर्णंवादुग्धेनगव्येनपलचतुष्टयमितेनपिवेत् ॥ रसैस्तित्तिरमांसस्यपोतैर्गुग्गुलुसंयुतैः । वातरक्तक्रियाभिश्चजयेज्जम्बूकमस्तकम् ॥ ५०८ ॥ क्रोष्टुक शीर्षकी चिकित्सा ॥

गिलोय हड़ बहेड़ा तथा आमला यह सब एक२ तोले इन सबका ६४ तोले जलमें काढ़ा करके जब ८ तोले बाकीरहै तब कुछ गरम उस काढ़ेके साथ एक तोले शुद्ध गूगुल सेवनकरे चार तोले गौके दूधके साथ १ तोले रेंड़ीकातेल पिये १६तोले गौके दूधकेसाथ बिधारेकाचूर्ण पिये अथवा तीतरके

मांसके रसके साथ गूगुलको पिये इस्से क्रोष्टुकशीर्ष का नाशहोताहै और इस रोगमें बात नाशक चिकित्सा करनी चाहिये ॥ ५०८ ॥

अथखल्लीलक्षणमाह ॥

खल्लीतुपादजङ्घोरुकरमूलावमोटिनी । अवमोटिनीपरिवर्त्तनशीला ॥ ५०९ ॥

खल्लीका लक्षण ॥

पैर पिंडली जंघा और हाथके मूलोंके ऐंठनेको खल्ली कहतेहैं ॥ ५०९ ॥

अथतस्यचिकित्सा ॥

कुष्ठसैन्धवयोःकल्कश्चुक्रतैलसमन्वितः।सुखोष्णोमर्द्दनेयोज्यःखल्लीशूलनिवारणः ५१०

खल्लीकी चिकित्सा ॥

कूट और सेंधेनोन के कल्कमें चूक और तेल मिलाकर कुछ गरम२ रगड़नेसे खल्ली और शूल का नाश होताहै ॥ ५१० ॥ अथवातकण्टकस्यलक्षणमाह ॥

रुक्पादेविषमेन्यस्तेश्रमाद्वाजायतेयदा।वातेनगुल्फमाश्रित्यतमाहुर्वातकण्टकम् ५११॥

बातकंटक का लक्षण ॥

पैरोंके टेढ़ेमेढ़े रखने से अथवा बहुत श्रमसे बायुके द्वारा टखनोंमें जो पीड़ा उत्पन्न होतीहै उस को बात कंटक कहतेहैं ॥ ५११ ॥

अथतस्यचिकित्सा ॥

रक्तावसेचनंकुर्य्यादभीक्ष्णंवातकण्टके । पिबेदेरण्डतैलंवादहेत्सूचीभिरेवच॥अभीक्ष्णंपुनः ॥ ५१२ ॥

बातकंटक की चिकित्सा ॥

बात कंटक रोगमें बारम्बार रुधिर निकलवावे रेंड़ीका तेल पिये अथवा सुइयोंसे जलावे ॥५१२॥

अथपाददाहस्यलक्षणमाह ॥

पादयोःकुरुतेदाहंपित्तासृक्सहितोऽनिलः।विशेषतश्चंक्रमणेपाददाहंतमादिशेत् ५१३॥

पाददाह का लक्षण ॥

पित्त तथा रुधिर सहित बायु दोनों पैरोंमें दाह उत्पन्न करतीहै और चलने के समय बिशेष करके दाह होताहै इसको पाददाह कहतेहैं ॥ ५१३ ॥

अथतस्यचिकित्सा ॥

वातरक्तक्रमंकुर्य्यात्पाददाहेविशेषतः । मसूरविदलैःपिष्टैःश्रृतशीतेनवारिणा ॥ चरणौलेपयेत्सम्यक्पाददाहप्रशान्तये । नवनीतेनसंलिप्तौवह्निनापरितापितौ ॥ मुच्येते चरणौक्षिप्रंपरितापात्सुदारुणात ॥ ५१४ ॥

पाददाह की चिकित्सा ॥

पाददाह रोगमें बात रक्तके समान चिकित्सा करनी चाहिये मसूरकी दालको पीसकर जल में पाककरे फिर शीतल करके उसका पैरोंमें लेपकरने से अथवा पैरोंमें मक्खन लगाकर आगमें सेकने से शीघ्रही दाह निवृत्त होताहै ॥ ५१४ ॥

अथ पादहर्षस्यलक्षणमाह ॥

हृष्येतेचरणौयस्यभवतश्चप्रसुप्तकौ । पादहर्षःसविज्ञेयःकफवातप्रकोपजः ॥ हृष्येते रोमाञ्चितौभवतःप्रसुप्तकौतिनिसिनीयुक्तौ ॥ ५१५ ॥

पादहर्षका लक्षण ॥

कफ युक्त बायुके कोपसे झंझनाहट सहित जो पैरोंमें रोमांच होताहै उसको पादहर्षकहतेहैं॥५१५॥

अथ तस्यचिकित्सा

पादहर्षेतुकर्त्तव्यःकफवातहरोविधिः ५१६ (अथा क्षेपकस्यसामान्यंलक्षणमाह) यदातुधमनीः सर्वाः कुपितोऽभ्येतिमारुतः । तदाक्षिपत्याशुमुहुर्मुहुर्देहंमुहुश्चलः ॥ मुहुराक्षेपणाद्वायुराक्षेपकइतिस्मृतः । मुहुर्मुहुर्देहमाक्षिपतिगजारूढस्येवपुरुषस्यगात्रं दोलयति ॥ किंविशिष्टोमारुतःमुहुश्चलःवारंवारंसञ्चरणशीलःअयंवायुराक्षेपकइतिस्मृतःदेहस्ययन्मुहुराक्षेपणञ्चालनंततः ॥ ५१७ ॥

पादहर्ष की चिकित्सा ॥

पादहर्ष में कफ बात नाशक चिकित्सा करनी चाहिये ॥ ५१६ (आक्षेपका सामान्य लक्षण) जो बारम्बार घूमनेवाली वायु कुपित होके और नाड़ियोंमें प्राप्त होके मनुष्य के शरीरको हाथीपर चढ़ेहुएके समान बारंबार कंपातीहै उसको आक्षेप कहतेहैं ॥ ५१७ ॥

आक्षेपकस्यचतुरोभेदानाह ॥

पित्तश्लेष्मान्वितोवायुर्वायुरेवचकेवलः । कुर्य्यादाक्षेपकञ्चान्यञ्चतुर्थमभिघातजम्॥ पित्तान्वित्तःश्लोष्मान्वितश्चकवलश्चवायुःआक्षेपकत्रितयंकुर्य्यात् । अन्यञ्चतुर्थमभिघातजम् ॥ अन्योदण्डाद्यभिघातजोवायुश्चतुर्थमाक्षेपकंकुर्य्यादित्यर्थः ॥ ५१८ ॥

आक्षेपके चारभेद ॥

एक कफ युक्त बातजनित दूसरा पित्त युक्त बात जनित तीसरा केवल बात जनित और चौथा लाठी आदिकी चोटसे उत्पन्न हुई बायु जनित होताहै ॥ ५१८ ॥

तत्रकेवलवातजस्याक्षेपकस्यलक्षणमाह ॥

पाणिपादशिरःपृष्ठश्रोणीस्तम्भातिमारुतः । दण्डवत्स्तब्धगात्रस्यदण्डकःसोनुप्रक्रमः ॥ सस्वभावादेवसाध्यःअत्रचमुहुर्मुहुराक्षेपणंवोद्धव्यम् ॥ ५१९ ॥

केवल बातजनित आक्षेपका लक्षण ॥

कुपित वायु हाथ पैर शिर पठि तथा नितंबोंको जकड़तीहै और शरीर दंडके समान जकड़ कर बारम्बार हिलताहै इसको दंडक कहतेहैं यह रोग असाध्यहै ॥ ५१९ ॥

श्लेष्मान्वितस्यलक्षणमाह ॥

कफावृतोयदावायुर्धमनीष्वेवतिष्ठति । सदण्डवत्स्तम्भयतिकृच्छ्रोदण्डापतानकः ॥ दण्डापतानकःसआक्षेपकोदण्डापतान ख्यःकृच्छ्रःकष्टसाध्यःअत्रचमुहुर्मुहुराक्षेपणंवोद्धव्यम् आगन्तुजाक्षेपकस्यलक्षणंसामान्यमेववोद्धव्यम् ॥ ५२० ॥

कफ युक्त वातजनित आक्षेपका लक्षण ॥

कफ युक्त वायु कुपित होकर नाड़ियों में स्थित होकर शरीरको दंडके समान जकड़ती है और बारम्बार हिलाती है इसको दंडापतानक कहतेहैं यह कृच्छ्रसाध्यहै आगन्तुक आक्षेपका लक्षण सामान्य आक्षेपके समान जानना चाहिये ॥ ५२० ॥

अथ तस्यचिकित्सा ॥

वलामूलकषायस्यदशमूलीशृतस्यच। यवकोलकुलत्थानांक्वाथस्यपयसस्तथा ॥ अष्टावष्टौस्मृताभागास्तैलादेकस्तदेकतः। पचेदवाप्यमधुरंगणंसैन्धवसंयुतम् ॥ तथागुरुंसर्ज्जरसंसरलंदेवदारुच । मञ्जिष्ठांपद्मकंकुष्ठमेलांकालाञ्चसारिवाम् ॥ मांसींशैलेयकंपत्रंतगरंसारिवांवचाम्। शतावरीमश्वगन्धांशतपुष्पांपुनर्नवाम् ॥ ततसाधुसिद्धंसौवर्णेराजतेमृण्मयेऽपिवा । प्रक्षिप्यकलशेसम्यक्स्वनुगुप्तंनिधापयेत् ॥ एतन्महाबलातैलंप्रयुक्तमविलम्बितम् । सर्वानाक्षेपकादींस्तुवातव्याधीन्व्यपोहति ॥ हिक्कांश्वासमधीमन्थंगुल्मंकासंसुदुस्तरम्। षण्मासाद्रुपयुक्तंतदन्त्रवृद्धिंचनाशयेत् ॥ यथाबलानलंमात्रंसूतिकायैचदापयेत्। याचगर्भार्थिनीनारीक्षीणशुक्रश्चयःपुमान् ॥ क्षीणवातेमर्महतेह्यभिघातहतेतथा। भग्नेश्रमाभिपन्नेचसर्वथैतत्प्रयुज्यते ॥ एतद्धिराज्ञाकर्त्तव्यं कर्त्तव्यंराजपूजितैः । सुखिभिःसुकुमारैश्चधनिभिर्मानवैःसदा ॥ एकतःएकत्रअवाप्यप्रक्षिप्य इति महाबलातैलम् ॥ ५२१ ॥ आक्षेपकी चिकित्सा ॥

बरियारे की जड़ दशमूल जौ बेरतथा कुलथी इनसब का आठ २ भाग काढ़ा तिलकातेल १ भाग दूध ८ भाग इन सबको एकमें मिलायके पाककरे और मधुरगण सेंधानोन अगर लाख खरल देवदारु मजीठ पद्माक कूट इलायची तगर जटामांसी सिलाजीत तेजपात कालीसारिवा बच सतावर असगन्ध सौंफ तथा पुनर्नवा इनसबको डालकर अच्छे प्रकारसे पाककरे पाकहोजाने पर सोना चांदी अथवा मिट्टीके कलशे में बहुत गुप्तकरके रक्खे इसके सेवन से सब प्रकार के आक्षेप आदिकवात रोग हिचकी श्वास अधिमन्थ गोला तथा खांसी का नाश होताहै इसको छःमास सेवन करने से आंतकी वृद्धिका नाश होताहै बलके अनुसार इसकी मात्रा सौरवाली स्त्री को देनी चाहिये गर्भ चाहने वाली स्त्री और क्षीण वीर्य क्षीणवात मर्ममें चोटवाले चोटसेव्याकुल टूटीहुई हड्डी से युक्त तथा श्रमसे क्षीण पुरुषोंको यह हितकारी है यह तेल राजाराज पुरुष सुकुमार और सुखी धनवान् पुरुषों को बनवाना चाहिये ॥ इति महाबला तैल ॥ ५२१ ॥

अथान्तरायामस्यलक्षणमाह ॥

अंगुलीगुल्फजठरहृद्वक्षोगलसंश्रितः । स्नायुप्रतानमनिलस्तदाक्षिपतिवेगवान् ॥ विष्टब्धाक्षस्तब्धहनुर्भग्नपार्श्वःकफंवमन् । अभ्यन्तरेधनुरिवयदानमतिमानवः ॥ तदास्तेऽभ्यन्तरायामंकुरुतेमारुतोबली । यदासबलमिारुतोऽभ्यन्तरायामंकुरुतेतदंगुल्यादिसंश्रितोऽनिलंस्नायुरत्नोपलक्षणंशिराकण्ठयोरपिग्रहणम् ॥ आक्षिपतिकम्पयतितदा समानवःविष्टब्धाक्षःस्तब्धनेत्रःभग्नपार्श्वःभग्नइवपार्श्वेयस्यसः ॥ ५२२ ॥

अन्तरायाम का लक्षण ॥

उंगली टकने उदर हृदय छाती और गलेमें स्थित बढ़ीहुई वायु जब इन स्थानों की स्नायु शिरा तथा कण्डराओं को कंपित करती है तब मनुष्य के नेत्र तथा जावड़े सब जकड़ जाते हैं पसलियां टूटसी जाती हैं कफका बमन होताहै और भीतर धनुष के समान मनुष्य झुक जाताहै इसको अन्तरायाम कहते हैं ॥ ५२२ ॥ अथवाह्यायामस्यलक्षणमाह ॥

महाहेतुर्बलीवायुःसशिराःस्नायुकण्डरा।मन्यापृष्ठाश्रितावाह्याःसंशोष्यानामयेद्वहिः॥ यत्रतंवहिरायामंप्रवदन्तिभिषग्वराः । तमसाध्यंवुधाःप्राहुर्वक्षःकट्यूरुभञ्जनम्॥तत्रापि योवक्षःकट्यूरून् भुनक्ति संमर्दयतितमसाध्यंप्राहुः ॥ ५२३ ॥

वाह्यायामका लक्षण ॥

बड़े कारणों से कुपित बलवान् वायु शिरा स्नायु कण्डरा और गलेके पीछेकी नसको सुखाकर बाहर की ओर मनुष्य को झुकाती है उसको वाह्यायाम कहते हैं इस में जो छाती कमर तथा जंघाओं में टूटने की सी पीड़ा होय तो इसको असाध्य जानना चाहिये ॥ ५२३ ॥

तयोश्चिकित्सा ॥

वाह्यायामेऽन्तरायामे विधेयार्दितवत्क्रिया ॥ ५२४ ॥

वाह्यायाम और अन्तरायाम की चिकित्सा ॥

अन्तरायाम और वाह्यायाम में अर्दित रोग कीसी चिकित्सा करनी चाहिये ॥ ५२४ ॥

अथधनुस्तम्भस्यलक्षणमाह ॥

धनुस्तुल्योनमेद्यस्तुसधनुस्तम्भसंज्ञिता। विवर्णवद्धवदनःस्रस्ताङ्गोनष्टचेतनः ॥ प्रस्विद्यश्चधनुस्तम्भोदशरात्रंनजीवति । अन्तरायामेऽङ्गुल्यादिष्वाक्षेपस्तब्धाक्षत्वादिकंचभवति ॥ धनुस्तम्भेतुधनुर्वत्नमनमात्रमित्येतयोर्भेदः । विवर्णवद्धवदनःवद्धोऽत्र चिवुकस्यज्ञेयः ॥ ५२५ ॥ धनुस्तंभका लक्षण ॥

जिस रोग में मनुष्य धनुष के समान झुकजाय उसको धनुस्तंभ कहते हैं विवर्ण ठोढ़ी के जकड़नेसे युक्त शिथिलांग चैतन्यता रहित और स्वेदयुक्त धनुस्तंभ वाला दशरात्रिमें मरजाताहै अन्तरायाम रोग में उंगली आदिकों में कम्प तथा नेत्रादिकों में स्तब्धता होतीहै और धनुस्तंभ में केवल धनुष के समान झुकना होताहै यही इन दोनों में भेदहै ॥ ५२५ ॥

अथ कुब्जस्यलक्षणमाह ॥

हृदयंयदिवापृष्ठमुन्नतंक्रमशःसरुक्। क्रुद्धोवायुर्यदाकुर्यात्तदातंकुब्जमादिशेत् ॥ यदेत्युक्त्वायदिवेतिविकल्पार्थस्तेननपुनरुक्तिदोषः। ननुअन्तरायामःक्रोडनतोभवति ॥ वहिरायामःपृष्ठतोभवतिताभ्यामस्यकोभेदःउच्यते।अन्तरायामवहिरायामयोःप्रकृतस्यवान्तःशरीरस्यवहिःशरीरस्यचनमनमत्रतुहृदयंपृष्ठंवाशरीराद्वहिर्भवतीतिभेदः ॥ ५२६ ॥

कुब्जका लक्षण ॥

जो कुपित वायुके द्वारा हृदय अथवा पीठ पीड़ा सहित क्रमसे ऊंचे होयँ तोउसको कुब्ज कहतेहैं

अब यह सन्देह होता है कि अन्तरायाम हृदयकी ओर और बाह्यायाम पीठ की ओर झुका हुआ होता है तो इन दोनों में और कुब्ज में क्या भेद है इसका उत्तर यहहै कि अन्तरायाम और बाह्यायाममें स्वभावहीसे भीतरका और बाहरका शरीर झुकाहुआ होताहै और कुब्जमें हृदय अथवा पीठ शरीर से बाहर निकली हुई होती है ॥ ५२६ ॥

अथ तस्यचिकित्सा ॥

बाह्यायामेऽन्तरायामेधनुःस्तम्भेचकुब्जके।योज्यंप्रसारणीतैलंतेनतेषांशमोभवेत् ॥वातव्याधिषुसामान्ययाः क्रियाःकथिताःपुरा।कर्त्तव्याएवताःसर्वास्तैलमेतद्विशेषतः ५२७॥

कुब्ज की चिकित्सा ॥

बाह्यायाम अन्तरायाम धनुस्तंभ और कुब्ज रोगमें प्रसारणी तैलउपकारी होता है बातव्याधियों में जो सामान्य चिकित्सा पहले कही गई हैं वह संपूर्ण इन रोगों में करनी चाहिये और प्रसारणी कातेल विशेष करके काममें लाना चाहिये ॥ ५२७ ॥

अथापतन्त्रकस्य लक्षणमाह ॥

क्रुद्धःस्वैःकोपनैर्वायुःस्थानादूर्ध्वंप्रपद्यते।पीड़यन्हृदयंगत्वाशिरःशङ्खौचपीड़ियन्॥धनुर्वन्नमयेद्गात्राण्याक्षिपेत्मोहयेत्तथा । सकृच्छ्रादुच्छ्वसेदुच्चैःस्तब्धाक्षोऽथनिमीलकः॥ कपोतइवकूजेच्चनिःसंज्ञःसोऽपतन्त्रकः । स्थानात्पक्वाशयादूर्ध्वंशिरउद्दिश्यआक्षिपेत् चालयेत्अथनिमीलकः ॥ अथवानिमीलिताक्षःयत्रैतानिभवन्तिसोऽपतन्त्रकः॥ ५२८॥

अपतंत्रक का लक्षण ॥

जिस रोग में अपने कारणों से कुपित वायु पक्वाशय से शिरकी ओर जाकर हृदय मस्तक तथा कपाल की हड्डियों को पीड़ित करती हुई शरीर को धनुष के समान झुकावे कंप तथा मोह उत्पन्न होवे दोनों नेत्र स्तब्ध होयँ अथवा बन्द होजावें बहुत कष्ट के साथ श्वास निकले और रोगी संज्ञा रहित होकर कबूतर के समान अव्यक्त शब्द करे उसको अपतन्त्रक कहते हैं ॥ ५२८ ॥

तस्यचिकित्सा ॥

अथापतंत्रकेनार्त्तमातुरंनापतर्पयेत् । निरुद्धवस्तिवमनंसेवयेन्नकदाचन ॥ श्वसनातःकफवाताभ्यांरुद्धास्तस्यविमोक्षयेत् । तीक्ष्णैःप्रधमनैःसंज्ञातासुभुक्तासुविन्दति॥ श्वसनाःप्रश्वासोच्छ्वासवहाधमनीः। मरिचंशिग्रुवीजानिविडङ्गाश्चफणिज्जकम् ॥ एतानि सूक्ष्मचूर्णानिदद्यात्शीर्षविरेचने । फणिज्जकोमरुवकःइतिमरिचादिनस्यम् ॥ ५२९ ।

अपतन्त्रक की चिकित्सा ॥

अपतन्त्रक रोगवाला मनुष्य अपतर्पण निरूह वस्ति और बमनको कभी न करे कफ तथा वायु के द्वारा रुकी हुई श्वास प्रतिश्वासकी खेचलने वाली नाड़ियों को तीक्ष्ण चूर्णको नासिका में देने से खोले इनके खुलजाने पर चैतन्यता आजाती है मिर्च सहँजने के बीज वायविडंग और मरुआ इन सबको पीसकर नासलेने से अपतन्त्रक का नाश होताहै इति मरिचादिनस्य ५२९ ॥

हरीतकीवचारास्नासैन्धवंसाम्लवेतसम्। घृतमार्द्रकसंयुक्तमपतन्त्रकनाशनम्॥अम्लवेतसकाभविचुक्रंदातव्यमी रितम् ॥ ५३० ॥

हड बच रासना सेंधानोन अमलवेत इन सबको घी और अदरक के साथ सेवन करने से अपतन्त्रक का नाश होताहै यहां अमलवेत न मिलै तो चूक डालना चाहिये ॥ ५३० ॥

अथापतानकस्य लक्षणमाह ॥

दृष्टिंसंस्तभ्यसंज्ञाञ्चहत्वाकण्ठेनकूजति। हृदिमुक्तेनरःस्वास्थ्यंयातिमोहवृतेपुनः॥ वायुनादारुणंप्राहुरेकेतमपतानकम्। गर्भजातनिमित्तश्चशोणितातिस्रवाच्चयः॥ अभिघातनिमित्तश्चनसिद्ध्यत्यपतानकः। दृष्टिंरूपग्रहणशक्तिंसंस्तभ्यनाशयित्वा॥ ५३१ ॥

अपतानक का लक्षण ॥

जिस रोगमें देखने की शक्ति तथा ज्ञानका नाशहोकर गले से अव्यक्त शब्द निकले और वायुके द्वारा हृदयके ढके होने पर मोह होय और हृदय से वायुके हटजाने पर स्वस्थताहोवे इस को अत्यन्तभयंकर अपतानक रोग कहते हैं जो गर्भपात बहुत रुधिर का बहनाअथवा चोट से अपतानक हुआहोवे उसको असाध्य जानना चाहिये ॥ ५३१ ॥

अथ तस्यचिकित्सा ॥

अथापतानकेनार्त्तमश्रुताक्षमवेपनम्। अखट्वापातिनंचैवत्वरयासमुपाचरेत्॥ अपतानकिनेशस्तंदशमूलीश्रृतंजलम्। पिप्पलीचूर्णसंयुक्तंजीर्णेमांसरसौदनम्॥ तैलेनमर्दनंचैवतथातीक्ष्णंविरेचनम्। स्रोतोविशोधनंपश्चात्सर्पिःपानंहितंस्मृतम्॥ हन्त्यभुक्तवतांपीतमम्लंदध्यपतानकम्। मरिचेनसमायुक्तंस्नेहवस्तिस्तथापिवा॥ ५३२ ॥

अपतानक की चिकित्सा ॥

अपतानक रोग वाले को जोनेत्रोंसे जलबहना कम्प तथा मूर्च्छायह सब न उत्पन्नहुएहोवें वह शीघ्रही उसकी चिकित्सा करे दशमूल के काढ़े में पीपल का चूर्ण डालकर पिवै फिर उसके पच जाने पर मांसके रस के साथ भातखाय इससे अपतानक रोगनष्टहोताहै तैलमर्दन तीक्ष्णविरेचन पीछे से स्रोतों के शुद्ध करने वाले घीका पीना अपतानक में हितकारी है भोजन के पहले मिर्च युक्त खट्टे दही के पीनेसे अथवा स्नेह बस्ति लेनेसे अपतानक का नाश होताहै ॥ ५३२ ॥

अथ पक्षाघातस्यलक्षणमाह ॥

गृहीत्वार्द्धंतनोर्वायुःशिराःस्नायुर्विशोष्यच। पक्षमन्यतमंहन्तिसन्धिबन्धान्विमोक्षयन्॥ कृत्स्नोऽर्द्धकायस्तस्यस्यादकर्मण्याविचेतनः। एकाङ्गवातन्तंकेचिदन्येपक्षवधं विदुः॥अर्द्धम्अर्द्धनारीश्वरवत्पक्षबाहुपार्श्वोरुजङ्घादिभागम्। अन्यतमंवामंदक्षिणंवा विमोक्षयन्शिथिलीकुर्वन्अकर्मण्यःकर्मासमर्थःविचेतनःईषत्स्पर्शादिज्ञानयुक्तः ५३३

पक्षाघात का लक्षण ॥

कुपित वायु शरीरके आधे भागको ग्रहण करके और शिरा तथा स्नायुको सुखा के संधि बंधनों को शिथिल करती हुई शरीरके दक्षिण अथवा बामभाग में से एकपक्ष (भुजा पसली जंघा तथा पिंडली आदिक)कोनष्ट करतीहै इसरोगमें शरीरका संपूर्ण आधाभाग कार्य्य करने में असमर्थ और कुछ स्पर्श आदिके ज्ञानसे युक्त होताहै इसरोग को कोई एकांग बात और कोई पक्षाघात कहतेहैं ५३३॥

अथ साध्यासाध्यज्ञानार्थमाह ॥

दाहसन्तापमूर्च्छाःस्युर्वायौपित्तसमन्विते । शैत्यशोथगुरुत्वानितस्मिन्नेवकफावृते ॥ दाहोवाह्यःसन्तापःआभ्यन्तरः । एतल्लक्षणमन्यत्रापिवातव्याधौवोद्धव्यं सामान्यतोवा यावितिनिर्दिष्टत्वात्पक्षाघातस्यसाध्यत्वादिकमाह।शुद्धवातहतंपक्षंकृच्छ्रसाध्यतमंविदुः। साध्यमन्येनसंयुक्तमसाध्यंक्षयहेतुकम् ॥ शुद्धःकेवलः । अन्येनपित्तेनकफेनवाक्षयहेतु कंक्षयोधातुक्षयस्तत्कुपितवातनिमित्तकम् ॥ अपरमसाध्यलक्षणमाह । गर्भिणीसूतिका बालवृद्धक्षीणेष्वसृक्क्षये ॥ पक्षाघातंपरिहरेद्वेदनारहितोयदि । वेदनारहितोयदीतिभि न्नमसाध्यलक्षणम् ॥ ५३४ ॥

पक्षाघात के साध्यासाध्य के लक्षण ॥

पित्तयुक्त बातजनित पक्षाघातमें शरीर में दाह भीतर सन्ताप तथा मूर्च्छा होती है और कफयुक्त बातजनित पक्षाघातमें शीत सूजन तथा भारीपन होताहै केवल बात जनित पक्षाघात कृच्छ्र साध्य कफ अथवा पित्तयुक्त बातजनित पक्षाघात साध्य और धातुक्षय से कुपित बात जनित पक्षाघात असाध्य होताहै गर्भिणी सूतिका बालक वृद्ध और रक्त क्षयवाले मनुष्यों का पक्षाघात असाध्य है औरपीड़ा रहित पक्षाघात भी असाध्य होताहै ॥ ५३४ ॥

तस्यचिकित्सा ॥

माषात्मगुप्तोवातारिवाट्यालकजटाश्रृतम् । हिंगुसैन्धवसंयुक्तंपक्षाघातंविनाशयेत्॥ माषिकेहिंगुसिन्धूत्थेजरणाद्यास्तुशाणिकाः । माषादिक्वाथः ॥ ५३५ ॥

पक्षाघात की चिकित्सा ॥

उर्द किवांच अरंड की जड़ सहदेई और जटा मांसी इन सब के काढ़े में हींग तथा सेंधानोन माशे २ भरडालकर पीने से पक्षाघात का नाशहोताहै इति माषादि क्वाथ ॥ ५३५ ॥

ग्रन्थिकाग्निकणाशुण्ठीरास्नासैन्धवकल्कितम् । माषक्वाथश्रृतंतैलंपक्षाघातंव्यपोहति ॥ ग्रन्थिकादितैलम् ॥ ५३६ ॥

पिपलामूल चीता पीपल सोंठ रासना तथा सेंधानोन इन सबके कल्क के साथ उर्द का काढ़ा डाल कर परिपाक किये हुए तेलके सेवनसे पक्षाघात का नाशहोताहै इतिग्रंथिकादितैल ॥५३६ ॥

माषात्मगुप्तातिविषारुवूकूचरास्नाशताह्वालवणैःसुपिष्टैः।चतुर्गुणेमाषवलाकषाये तैलंश्रृतंहन्तिहिपक्षघातम् ॥ इतिमाषादितैलम् ॥ ५३७ ॥

उर्द किवांच के बीज अतीस रेंडी रासना सतावर और सेंधानोन इन सब का कल्क तिलकातेल और तेल का चौगुना उर्द तथा बरियारे का काढ़ा इन सब के साथ बिधि पूर्वक पाक किये हुए तेलको सेवनसे पक्षाघात का नाशहोताहै इति माषादि तैल ॥ ५३७ ॥

अथ सर्वांगवातस्यलक्षणमाह ॥

सर्वांगपवनेक्रुद्धेगात्रस्फुरणभञ्जने । वेदनाभिःपरीताश्चस्फुटन्तीचास्यसन्धयः ॥ सन्धयोवेदनापरीतायुतास्फुटन्तीच ॥ ५३८ ॥

सर्वाङ्ग बातका लक्षण ॥

सम्पूर्ण शरीरमें रहनेवाली बातके कुपित होने से शरीर फड़कताहै तथा पीड़ायुक्त होताहै और सन्धि २ में पीड़ा होकर संधि फड़कती हैं ॥ ५३८ ॥

अथ तस्यचिकित्सा ॥

सर्व्वाङ्गगतमेकाङ्गगतञ्चापिसमीरणम्। तैलावगाहनंहन्तितोयवेगमिवाचलः॥५३९॥

सर्वाङ्ग बातकी चिकित्सा ॥

जैसे पर्व्वत से जलके बेगका नाशहोता है उसी प्रकार बात नाशक तेलों के मँझाने से सर्वाङ्ग और एकाङ्ग बात का नाश होताहै ॥ ५३९ ॥

अथ स्थाननाम लक्ष्यलक्षणान् वातव्याधीनाह ॥

स्थाननामानुरूपैश्चलिंगैःशेषान्विनिर्दिशेत् । सर्व्वेष्वेतेषुसंसर्गंपित्ताद्यैरुपलक्षयेत् ॥ प्रथमंह्रस्वकेशत्वंततोवाचालितापिच। आटोपःपार्श्वशूलञ्चपुरीषस्यातिगाढ़ता॥ तथामलाप्रवृत्तिश्चकम्पस्तम्भश्चरूक्षता ॥ कार्श्यंकार्ष्ण्यञ्चशैत्यञ्चलोमहर्षोव्यथातथा ॥ तोदोभेदःशिरास्फूर्तिरंगमर्दोऽङ्गशुष्कता । सङ्कोचश्चाङ्गविभ्रंशोमोहश्चञ्चलचित्तता ॥ निद्रानाशःस्वेदनाशोबलहानिश्चभीरुता । शुक्रक्षयोरजोनाशोगर्भनाशःपरिश्रमः ॥ आटोपोगुड़गुड़ाशब्दःतोदःसूचीव्यधनेनेवपीड़ाभेदोविदारणेनेवव्यथा । अङ्गविभ्रंशः अंगस्यस्थानत्यागेनसवलन्तंनिद्रानाशोनिद्राल्पत्वमपिगर्भनाशः आमगर्भपातः गर्भशय्यायांवाताधिष्ठानाद्गर्भाग्रहणमितिजैय्यटः। परिश्रमःआयासंविनाश्रमः॥५४०॥

स्थान और नामके अनुसार लक्षण वाली बातव्याधियों का वर्णन ॥

जो बातव्याधि यहाँ नहीं कहीगई हैं वह स्थान तथा नामके अनुरूप लक्षणों से जाननी चाहिये और इनसबमें पित्त आदिकोंके संसर्ग का भी निर्धार करना चाहिये बालों की अल्पता गंजापन-आटोप (गुड़गुड़शब्द) पार्श्व शूल मलकी कठिनता मलका न निकलना कंपस्तंभ रूक्षता कृशता कृष्णता शीत रोमांच व्यथा सुई गड़ाने कीसी पीड़ा फटने कीसी पीड़ा नसोंका फड़कना अंगमर्द अंगों का सूखना संकोच अंग बिभ्रंश (अंगों का अपने स्थान से हटना) मोह चित्तकी चंचलता निद्रा की कमी स्वेदनाश बलहानि भीरुता शुक्रक्षय रजोनाश गर्भपात और बिना परिश्रमके श्रम मालूम होना यह सब स्थान तथा नामके लक्षण वाले रोगहैं ५४० ॥

अथतेषांचिकित्सा ॥

सामान्यवातरोगाणांयाचिकित्साप्रचक्षते। एषांह्योविधातव्यातयैतेयांतिसंक्षयम् ५४१॥

इनकी चिकित्सा ॥

सामान्य बात रोगों में जो चिकित्सा कही गई है उसी से यह संपूर्ण रोग शान्त होते हैं५४१॥

एवंविधानिरूपाणिकरोतिकुपितोऽनिलः।हेतुस्थानविशेषेणभवेद्रोगविशेषकृत् ॥ एवंविधानिरूपाणिशिरोग्रहादीनि। अशीतिहेत्वित्यादिहेतुविशेषःपित्तश्लेष्माद्यावृतत्वादिः। यथाश्लेष्मावृतोवायुःमन्यास्तम्भंकरोतिस्थानविशेषःकोष्ठादिः ॥ यथातत्रकोष्ठाश्रितेनिग्रहोमूत्रवर्चसोरित्यादि ॥ ५४२ ॥

कुपित बायु इस प्रकारके पूर्वोक्त शिरोग्रह आदिक रोगों को हेतु बिशेष (पित्त तथा कफादिकों से युक्तहोना जैसे कफ युक्त बायु मन्यास्तंभको करती है) और स्थान विशेष (कोष्ठआदि जैसे कोष्ठमें स्थित बायु के दूषित होने पर मल मूत्र का रुकना आदि होताहै) से उत्पन्न करती है ॥ ५४२ ॥

तत्रहेतुविशेषेणवातव्याधिविशेषोयथा ॥

उदानपित्तसंयुक्तेदाहोमूर्च्छाभ्रमःक्लमः । अस्वेदहर्षौमन्दाग्निःशीतताचकफावृते ॥ प्राणोपित्तावृतेछर्दिदाहश्चैवोपजायते । दौर्बल्यंसदनंतन्द्रावैरस्यञ्चकफावृते ॥ प्राणोहृद्याश्रयोवायुः । स्वेदोदाहस्तृषामूर्च्छासमानेपित्तसंयुते ॥ कफेनसक्तेविण्मूत्रेगात्रहर्षश्च जायते । कफेनसंयुक्तेसमानेविण्मूत्रेसक्तेऽवरुद्धेभवतःगात्रहर्षोरोमाञ्चः ॥ अपानेपित्तसंयुक्तेदाहौष्ण्यंरक्तमूत्रता । अधःकायेगुरुत्वञ्चशीतताचकफावृते ॥ गुदाश्रयोअपानः । व्यानेपित्तावृतेदाहोगात्रविक्षेपणंक्लमः ॥ स्तम्भोऽथदण्डकश्चापिशूलशोथौकफावृते । दण्डकःआक्षेपकभेदः ॥ ५४३ ॥

हेतु बिशेष से बात व्याधि विशेष ॥

उदान बायु के पित्त युक्तहोने पर दाह मूर्च्छा भ्रम तथा ग्लानि होती है और कफ युक्त होने पर स्वेदका न होना रोमांच मन्दाग्नि तथा शीत होताहै प्राण बायु के पित्त युक्त होनेपर छर्दि तथा दाह होता है और कफ युक्त होने पर दुर्बलता शिथिलता तन्द्रा तथा मुख में बिरसता होती है समान बायु के पित्त युक्त होने पर स्वेद दाह तृषा तथा मूर्च्छा होती है और कफ युक्त होनेपर मल मूत्र का अवरोध तथा रोमांच होते हैं अपान बायु के पित्त युक्त होने पर दाह उष्णता तथा मूत्र में रक्तता होती है और कफ युक्त होने पर शरीरके नीचेके भागमें भारीपन तथा शीतलता होतीहैव्यान बायु के पित्त युक्त होने पर दाह अंगों का पटकना तथा ग्लानि होतीहै और कफ युक्त होनेपर स्तंभ दंडक शूल तथा सूजन होती है ॥ ५४३ ॥

अथतेषांचिकित्सा ॥

वातेसपित्तेकुर्वतिवातपित्तहरींक्रियाम्। सकफेतत्रकुर्वीतवातश्लेष्महरींक्रियाम्५४४॥

इनकी चिकित्सा ॥

पित्तसंयुक्तबायुमें वातपित्तनाशकऔर कफयुक्त बायुमें बातकफनाशक चिकित्साकरनीचाहिये५४४॥

अथरसादिधातुगतानांवातानांलक्षणान्याह ॥

त्वग्रूक्षास्फुटितासुप्ताकृशाकृष्णाचतुद्यते । आतन्यतेसरागाचसर्वरुक्त्वग्गतेऽनिले ॥ सर्वरुक्सप्तत्वग्यथात्वग्गतेत्वक्शब्देनात्ररसउच्यते । त्वगाधार्य्यचात्तेनरसगतेत्यर्थः ॥ ५४५ ॥ रसादि धातुओं में प्राप्त होनेवाली वायु के लक्षण ॥

रसधातुमें कुपित वायुकेप्राप्तहोनेपर रूखीफटीहुई स्पर्शकेज्ञानसे रहित कठोरकृष्ण अथवा रक्तवर्ण सुईगड़नेकी सी पीड़ासेयुक्त तथा फैलीहुई त्वचा होतीहै और सातोंत्वचाओंमें पीड़ाहोतीहै ॥ ५४५॥

रुजस्तीव्राःससन्तापोवैवर्ण्यंकृशतारुचिः । गात्रेचारूंषिभुक्तस्यस्तम्भश्चासृग्गतेऽनिले॥ अरूंषिव्रणानिभुक्तस्यमुक्तेत्यत्राध्यवसितादित्वात्कर्त्तरिक्तः। तेनभुक्तवतस्तम्भः सन्तर्पणेनरक्तवृद्धेः ॥ ५४६ ॥

रुधिर धातुमें कुपित वायुके प्राप्तहोनेपर अत्यन्त पीड़ा सन्ताप विवर्णता कृशता अरुचि शरीरमें घाव और भोजन करने पर स्तंभ होताहै ॥ ५४६ ॥

गुर्वङ्गन्तुद्यतेस्तब्धंदण्डमुष्टिहतंयथा। सरुक्स्तिमितमत्यर्थंवातेमांससमाश्रिते॥ दण्डमुष्टिताड़ितमिवतुद्यतेस्तिमितंनिश्चलमित्यर्थः । मांसमेदसोर्गतवातयोरेकोलिङ्गत्वमदूरान्तरेण ॥ प्रत्यासत्तेराश्रयाभावात् । तथामेदश्रितःकुर्य्यात्ग्रन्थीन्मन्दरुजोव्रणान् ॥ तथामेदःश्रितःमांसगतवत्। अदूरेणप्रत्यासन्नेरस्थिरूपायामेदाञ्चकुर्य्याद्ग्रन्थीनित्यादिर्विशेषः ॥ ५४७ ॥

मांस धातुमें कुपित वायुके प्राप्त होनेपर शरीरमें भारीपन स्तम्भ लाठी अथवा घूसोंकी चोटकी सी पीड़ा और शरीरमें पीड़ायुक्त निश्चलता होती है वायुके मेदमें प्राप्त होनेपर भी मांसमें स्थित वायुकेसे लक्षण होतेहैं और विशेषता यहहै कि शरीरमें ग्रन्थि घाव तथा थोड़ीसी पीड़ा होती है५४७॥

भेदोऽस्थिपर्वणांसन्धिशूलंमांसबलक्षयः। अस्वप्नंसततारुक्चवातेदुष्टेऽस्थिसंस्थिते॥ वातेमज्जगतेपीड़ानकदाचित्प्रशाम्यति। मज्जगतेऽस्थिगतवत् ॥ ५४८ ॥

अस्थि धातुमें कुपित वायुके प्राप्त होनेपर हड्डी तथा पोरुओं की संधियोंमें पीड़ा मांस तथा बल का नाश निद्राकी कमी और सदैव पीड़ा होती है मज्जागत वायुमें भी यही लक्षण होते हैं और उसकी पीड़ा कभी शान्तनहीं होती है ॥ ५४८ ॥

क्षिप्रंमुञ्चतिबध्नातिशुक्रंगर्भमथापिवा। विकृतिंजनयेच्चापिशुक्रस्थःकुपितोऽनिलः॥ शुक्रंबध्नातिस्खलयत्येवनगर्भंक्षिप्रंमुञ्चति । आममेवपातयतिबध्नातिमूढ़ंकरोतिवातदुष्टः शुक्रारब्धत्वात्विकृतिंशुक्रस्यवर्णान्तरत्वादिरूपाम्गर्भस्यविकृताङ्गत्वादिरूपाञ्जनयति ॥ ५४९ ॥

शुक्र धातु में कुपित बायु के प्राप्त होने पर बहुत शीघ्र वीर्य्यपात अथवा वीर्य्यका थँभना होताहै स्त्रियोंका गर्भपात अथवा गर्भ सूखजाता है और बीर्य्य अथवा गर्भ में विकार उत्पन्नहोताहै ५४९॥

अथतेषांचिकित्सा ॥

वायौत्वगाश्रितेस्नेहाभ्यंगंस्वेदञ्चकारयेत्। रक्तस्थेशीतलान्लेपान्विरेकंरक्तमोक्षणम्॥ मांसमेदगतेवातेसविरेकंनिरूहणम्। अस्थिमज्जगतेस्नेहंवहिरन्तश्चयोजयेत्५५० ॥

इनकी चिकित्सा ॥

रसगत बायुमें तैल मर्दन तथा स्वेद करना चाहिये रक्तगत वायुमें शीतल लेप विरेचन तथा रुधिर निकलवाना अच्छाहै मांस तथा मेद गत बायुमें विरेचन तथा निरूहवस्ति देनीचाहिये और अस्थि तथा मज्जागत बायुमें शरीरके भीतर तथा बाहरतैलादि स्नेहका व्यवहार करनाचाहिये५५०॥

केतकनागबलातिबलानांयद्बहुलेनरसेनविपक्कम्। तैलमनल्पतुषोदकसिद्धंमारुतमस्थिगतंविनिहन्ति ॥ इतिकेतकादितैलम् ॥ ५५१ ॥

केतकी गलशकरी तथा बरियारा इनके रस और चावलों की भूसीके जलके साथ पाककिया गया तेल हड्डियों में घुसीहुई बायुका नाशकरताहै इति केतकादि तैल ॥ ५५१ ॥

हर्षोऽन्नपानंशुक्रस्थेबलशुक्रकरंहितम् ॥ ५५२ ॥

शुक्रगत बायुमें मनकी प्रसन्नता और बलतथा वीर्य्य कारक वस्तुओंका सेवन हितकारीहै ५५२ ॥

अथ स्थानविशेषेणवातव्याधिविशेषोयथा । तत्र कोष्ठगतस्य वातस्यलक्षणमाह॥

वातेकोष्ठाश्रितेदुष्टेनिग्रहोमूत्रवर्च्चसोः। बधहृद्रोगगुल्मार्शःपार्श्वशूलञ्चजायते५५३॥

स्थान विशेषसे वातव्याधि विशेष। कोष्ठगत वायुका लक्षण ॥

कोष्ठमें दूषित वायुके प्राप्त होनेपर मलमूत्र का रुकना व्रध्न हृदय के रोग गोला बवासीर और पसलियों में पीड़ा होती है ॥ ५५३ ॥

कोष्ठलक्षणमाह ॥

स्थानान्यामाग्निपक्वानांमूत्रस्यरुधिरस्यच । हृदुन्द्रकःफुप्फुसश्चकोष्ठइत्यभिधीयते॥ उन्द्रकःपोठइतिलोके ॥ एतेनकोष्ठशब्देनसर्वएवाशयाःकथ्यन्ते । तथापिविशेषार्थमा माशयादिगतवातलक्षणान्यपिपृथक्वक्ष्यन्ते ॥ ५५४ ॥

कोष्ठका लक्षण ॥

आमाशय अग्न्याशय पक्वाशय मूत्राशय रुधिराशय हृदय उन्द्रक और फुप्फुस इन सबको कोष्ठ कहते हैं यद्यपि कोष्ठ शब्द से संपूर्ण आशयों का ग्रहण होताहै तथापि बिशेषताके लिये आमाशय आदिकोंमें गई हुई बायु के लक्षण अलग अलग कहेंगे ॥ ५५४ ॥

अथ तस्यचिकित्सा ॥

पाचनीयैरसैर्युक्तैरन्यैर्वापाचयेन्मलान् । विशेषतःपिबेत्क्षीरंनरःकोष्ठगतेऽनिले॥५५५॥

कोष्ठगत बायुकी चिकित्सा ॥

कोष्ठ गतबायु में पाचन औषधों के द्वारा पाककिये गये मांसके रसों से अथवा अन्य पाचन औषधियों से दोषों का पाककरे और इसमें बिशेष करके दूधपीना चाहिये ॥५५५ ॥

अथामाशयगतस्यवातस्य लक्षणमाह चरकः ॥

हृत्पार्श्वोदरनाभीरुक्तृष्णोद्गारविसूचिकाः । कासःकण्ठस्यशोषश्चश्वासश्चामा शयेऽनिले ॥ ५५६ ॥

आमाशयमें प्राप्त बायुके लक्षण ॥

दूषित बायुके आमाशयमें प्राप्तहोनेपर हृदय पसली उदर तथा नाभिमें पीड़ा तृषा डकार विसूचिका खांसी गला सूखना और श्वास यह रोग उत्पन्नहोतेहैं ॥ ५५६ ॥

आमाशयस्यलक्षणमाहचरकः ॥

नाभिस्तनान्तरंजन्तोराहुरामाशयंबुधाः । इति ॥ ५५७ ॥

आमाशय का लक्षण ॥

नाभि और स्तनोंके बीचमें आमाशय होताहै ॥५५७ ॥

अथतस्यचिकित्सा ॥

आमाशयस्थेत्वनिलेप्रशस्तंप्राग्लङ्घनंदीपनपाचनञ्च । प्रच्छर्दनंतीक्ष्णविरेचनंवा मुद्गायवाःशालियुताःपुराणाः ॥ भृतीकपथ्याशटीपुष्कराणिबिल्वामृतादारुकनागराणि।

उग्राविषामागधिकाविड़ानिकाथास्त्रयःसामसमीरणघ्नाः ॥ भूतीकःरोषःसुगन्धतृण-विशेषस्तदलाभेउशीरंग्राह्यम् । पुष्करंपुष्करमूलम् ॥ दारुकंदेवदारुउग्रावचाविषाअ तिविषा ॥ ५५८ ॥ आमाशय में प्राप्त बायुकी चिकित्सा ॥

बायुके आमाशय में प्राप्त होनेपर पहले लंघन फिर दीपन पाचन औषधदेनी चाहिये और वमन अथवा तीक्ष्ण विरेचन देकर भोजनके लिये पुराने जौ चावल तथा मूंग देनीचाहिये भूतीक (सुगंधित तृणविशेष) हड़ कचूर तथा पुष्कर मूल १ वेल गिलोय देवदारु तथा सोंठ२ बच अतीस पीपल तथा बिट्नोन ३ यह तीनोंकाढ़े आमयुक्त बातको नाश करतेहैं ॥ ५५८ ॥

चित्रकेन्द्रयवौपाठाकटुकातिविषाभया । आमाशयोत्थवातघ्नंचूर्णंपेयंसुखाम्बुना ॥ योगेऽस्मिन्भिषजाग्राह्याःषरणषट्धरणाःपृथक् । दिनेषुषट्सुदातव्यास्तेनषट्धरणास्मृताः ॥ अत्रषरणसमुदितानांषट्धरणमितानांचूर्णीकृतानामेकस्मिन्नहनिएकटङ्कोदेयः ॥ अन्यथाआमाशयगतेवातेछर्दितापंयथाक्रमम् । देयःषट्धरणोयोगःसप्तरात्रंसुखाम्बुना ॥ अयमर्थः । प्रथमदिवसेवमनंकारयितव्यंततोद्वितीयदिनमारभ्यषट्दिनपर्य्यन्तंपाठक्रमेणैकैकस्यचूर्णंटङ्कमितंदेयमित्यर्थः । इतिषट्धरणोयोगः ॥ ५५९ ॥

चीता इन्द्रजौ पाठा कुटकी अतीस और हड़ यह सब औषधी एक२ धरण अर्थात् चार २ मासे लेकर चूर्ण करके गरम जलके साथ प्रतिदिन चार मासे खानेसे आमाशय में गई हुई बातका नाश होताहै अन्य प्रकार पहले दिन बमन कराके फिर दूसरे दिनसे छः दिनतक ऊपर कहीहुई औषधियों में से एक २ औषधिका चूर्ण ऊपर लिखेहुए क्रमसे चार २ मासे रोज देना चाहिये ॥ इतिषट् धरण योग ॥ ५५९ ॥ अथ पक्वाशय गतस्यवातस्यलक्षणमाह ॥

पक्वाशयस्थोऽन्त्रकूजंशूलाटोपौकरोतिच । कृच्छ्रमूत्रपुरीषत्वमानाहंत्रिकवेदनम् ॥ आटोपोवातस्यक्षुब्धत्वम् । नतुगुडुगुड़ाशब्दस्तस्यान्त्रकूजनोक्तत्वात् ॥ ५६० ॥

पक्वाशयमें गईहुई बायुके लक्षण ॥

दूषित बायु के पक्वाशय में प्राप्त होनेपर पेटमें गड़गड़ाहट शूल बायुका कोप मूत्रकृच्छ्र मलका रुकना आनाह और त्रिकमें पीड़ा यह रोग उत्पन्न होतेहैं ॥ ५६० ॥

अथ तस्यचिकित्सा ॥

वह्नेःसंवर्द्धनंकार्य्यंकर्मोदावर्त्तकंतथा । देयःस्नेहविरेकश्चपक्वाशयगतेऽनिले ॥ वाते जठरगेदद्यात्क्षारचूर्णादिदीपनम् । शुण्ठीकुटजबीजाग्निचूर्णंकोष्णाम्बुकुक्षिगे ॥ ५६१ ॥

पक्वाशयमें गईहुई बायुकी चिकित्सा ॥

बायुके पक्वाशय में प्राप्त होनेपर अग्निवर्द्धक तथा उदावर्त्त नाशक चिकित्सा करनी चाहिये और स्नेहके द्वारा विरेचन देना चाहिये उदरगत बायुमें क्षार तथा चूर्ण आदिक दीपन बस्तुदेनी चाहिये कुक्षिगत बायु में सोंठ इन्द्रजौ तथा चीतेके चूर्णको कुछ गरम जलके साथ सेवनकरे ॥ ५६१ ॥

अथ गुदगतस्यवातस्यलक्षणमाह ॥

ग्रहोविण्मूत्रवातानांशूलाध्मानाश्मशर्कराःजङ्घोरुत्रिकपार्श्वांसपृष्ठरोगोगुदेऽनिले ॥

रोगोऽत्ररुजापीड़ेतियावत् (अथतस्यचिकित्सा) वातेगुदगतेदुष्टेकर्मोदावर्त्तकं हितम् ॥ ५६२ ॥ गुदामें गईहुई बायुके लक्षण तथा चिकित्सा ॥

बायुके गुदामें प्राप्त होनेपर मलमूत्र तथा वायुका अवरोध शूल अफरा पथरी शर्करा और जंघा पिंडली पसली कन्धे त्रिकतथा पीठमें पीड़ा होतीहै गुदामें गईहुई बायुमें उदावर्त्त में कहीहुई चिकित्सा करनी चाहिये ॥ ५६२ ॥

अथ हृदयवातस्यचिकित्सा ॥

हृदयानिलनाशायगुडूचींमरिचान्विताम् । पिबेत्प्रातःप्रयत्नेनसुखंतप्ताम्भसासह ॥ पिबेदुष्णाम्भसापिष्टमाश्वगन्धंविभीतकम् । गुड़युक्तंप्रयत्नेनहृदयानिलनाशनम् ॥ देव दारुसमायुक्तंनागरंपरिपेषितम् । हृद्वातवेदनायुक्तःपीत्वासुखमवाप्नुयात् ॥ ५६३ ॥

हृदयगत बायुकी चिकित्सा ॥

हृदय में बायु के प्राप्त होनेपर मिर्च युक्त गिलोय कुछ गरम जल के साथ प्रातःकाल पिये असगंध बहेड़ा तथा गुड़को एक साथ पीसकर उष्ण जल से पिये अथवा देवदारु तथा सोंठको पीसकर उष्ण जल के साथ पिये इस्से हृदय में गईहुई बात शान्त होतीहै ॥ ५६३ ॥

अथ श्रोत्रादिगस्यवातस्य लक्षणमाह ॥

श्रोत्रादिष्विन्द्रियबधंकुर्य्यात्क्रुद्धःसमीरणः (अथतस्यचिकित्सा) श्रोत्रादिष्वनिलेदुष्टेकार्य्योवातहरःक्रमः । स्नेहाभ्यंगावगाहाश्चमर्द्दनालेपनानिच ॥ ५६४ ॥

श्रोत्रादिमें प्राप्तहुई वायुके लक्षण और चिकित्सा ॥

कुपित हुई बायु श्रोत्रादि जिस इन्द्रीमें प्राप्त होतीहै उसीके कामको नष्ट करतीहै श्रोत्रादिमें दूषित वायुके प्राप्त होनेपर बात नाशक प्रयोग और स्नेह अभ्यंग स्नान मर्दनतथा लेपनकरना चाहिये५६४॥

अथ शिरागतस्यवातस्य लक्षणमाह ॥

कुर्य्याच्छिरागतःशूलंशिराकुञ्चनपूरणम् । सव्यथाभ्यन्तरायामंखल्लींकुब्जत्वमेवच ॥ कुञ्चनंसङ्कोचःवाह्यायामंपृष्ठेननतम् । अभ्यन्तरायामंक्रोड़ेनतंशूलंशिरायामेवपूरणंस्थूलत्वम् ॥ ५६५ ॥ शिराओं में गईहुई वायुके लक्षण ॥

दूषित वायुके शिराओं में प्राप्त होने पर शिराओं में शूल संकोच तथा स्थूलता होती है और आगेकी ओर तथा पीठ की ओर झुकना खल्ली तथा कुब्ज रोग होताहै ॥ ५६५ ॥

अथतस्यचिकित्सा ॥

स्नेहाभ्यंगोपनाहश्चमर्द्दनालेपनानिच।वातेशिरागतेकुर्य्यात्तथाचासृग्विमोक्षणम् ५६६

शिराओं में गईहुई वायुकी चिकित्सा ॥

शिराओं में वायुके प्राप्त होनेपर तैलादिकस्नेह मर्दन मल्हममर्द्दनलेप और रुधिर निकलवाना हितकारी है ॥ ५६६ ॥ अथ स्नायुगतस्यलक्षणमाह ॥

शूलमाक्षेपकःकम्पःस्तम्भःस्नाय्वनिलाद्भवेत् (अथ तस्यचिकित्सा) स्वेदोपनाहाग्निकर्मबन्धनोन्मर्द्दनानिच । क्रुद्धेस्नायुगतेवातेकारयेत्कुशलोभिषक् ॥ ५६७ ॥

स्नायुमें प्राप्त वायुके लक्षण और चिकित्सा ॥

स्नायुमें दूषित वायुके प्राप्त होनेपर शूल आक्षेप कम्प और स्तंभ होताहै इसमें स्वेद मल्हमसेक बन्धन और मर्दन करवाना चाहिये ॥ ५६७ ॥

अथ सन्धिगतस्य लक्षणमाह ॥

हन्तिसन्धिगतःसन्धीन्शूलशोथौकरोतिच।हन्तिविश्लेषयति(अथतस्यचिकित्सा) कुर्य्यात्सन्धिगतेवातेदाहस्नेहोपनाहनम् ॥ इन्द्रवारुणिकामूलमागधीगुड़संयुतम् । भक्षयेत्कर्षमात्रंतत्सन्धिवातंव्यपोहति ॥ ५६८ ॥

सन्धिगत वायुके लक्षण और चिकित्सा ॥

सन्धियोंमें दूषित वायुके प्राप्त होनेपर सन्धियोंके बन्धन शिथिल होतेहैं और शूल तथा सूजन होती है सन्धिगत वायुमें दाह स्नेह तथा मल्हम और इन्द्रायण की जड़ पीपल तथा गुड़ इनतीनों को बराबर मिलाकर एकतोले रोजखानेसे सन्धिगत वायुका नाश होताहै ॥ ५६८ ॥

उक्त रोगाणांकृच्छ्रसाध्यत्वमाह ॥

हनुस्तम्भार्द्दिताक्षेपपक्षाघातापतानकाः । कालेनमहतायत्नात्सिध्यन्तिचवानवा ॥ सतेष्वेकःकश्चिन्मुच्यतइत्यर्थःपरंकः सिध्यातियस्तरुणोभवतितथाबलवानुपद्रवरहित श्च ॥ ५६९ ॥ ऊपर कहेहुये रोगोंकी कष्टसाध्यता ॥

हनुस्तम्भ अर्दित आक्षेप पक्षाघात और अपतानक यह रोग बहुत देरमें बड़े यत्नसे चिकित्सा करने से किसी २ बलवान् युवावस्था वाले मनुष्य के उपद्रव रहित होनेपर अच्छे होतेहैं ॥५६९॥

तानेववातोपद्रवानाह ॥

विसर्पदाहरुग्भङ्गमूर्च्छारुच्यग्निमार्द्दवैः । क्षीणमांसबलंवाताघ्नन्तिपक्षवधादयः॥ वातावातविकाराःकार्य्यकारणयोरभेदोपचारात् । वदितिपाठेतत्रत्पेपक्षवधाइतियोज्य म् ॥ शूनंसुप्तत्वचम्भानंकम्पाध्माननिपीड़ितम् । रुजार्त्तिमन्तञ्चनरंवातव्याधिर्विना शयेत् ॥ ५७० ॥ वायुके उपद्रव ॥

विसर्प दाह पीड़ा मलमूत्रका रुकना मूर्च्छा अरुचि तथा मन्दाग्निसे क्षीणमांस बलवाले पक्षाघातादि रोगी मरजातेहैं और सूजन त्वचाके स्पर्शका ज्ञान रहित होना अंगोंका टूटना कम्प आध्मान और बहुत पीड़ा इनसे युक्त होकर वात व्याधिवाला मनुष्य मरजाताहै ॥ ५७० ॥

इदानींपञ्चविधस्यप्रकृतस्यवायोःकार्य्यलिङ्गञ्चाह ॥

अव्याहतगतिर्यस्यस्थानस्थःप्रकृतौस्थितः । वायुः स्यात्सोऽधिकंजीवेद्वीतरोग समाशतम् ॥ ५७१ ॥ पांचप्रकार की वायुके कार्य्य और चिह्न ॥

जिनकी वायु मार्गोंके न रुकनेसे सब कहीं जानेवाली अपने स्थानमें स्थित और स्वाभाविक होय वह रोग रहित होकर सौ वर्षसे अधिक जीते हैं ॥ ५७१ ॥

अथ वातव्याधीनां सामान्यानिभेषजानि ॥

माषस्यार्द्धाढकंदेयंतुलार्द्धंदशमूलतः । पलानिछागमांसस्यत्रिंशद्द्रोणेऽम्भसःपचेत् ॥

चतुर्भागावशेषंतंकषायमवतारयेत् । प्रस्थेद्वेतिलतैलस्यपयोदद्याच्चतुर्गुणम् ॥ जीवनीयानिमञ्जिष्ठाचव्यंचित्रकट्फलम् । सव्योषंपिप्पलीमूलंरास्नामलकगोक्षुरम् ॥ आत्मगुप्तातथैरण्डःशताह्वलवणत्रयम् । देवदार्वमृताकुष्ठमश्वगन्धावचाशटी ॥ एतैरक्षभितैःकल्कैःपाचयेन्मृदुनाग्निना । पक्षाघातार्दितेपुंसिहनुस्तम्भार्दितेतथा ॥ कर्णशूलेशिरःशूलेतिमिरेचत्रिदोषजे । पाणिपादशिरोग्रीवाश्रवणेमन्दएवच ॥ कलापखञ्जेपङ्गौच गृध्रस्यामपबाहुके । पानेवस्तौतथाभ्यंगेनस्येकर्णादिपूरणे ॥ तैलमेतत्प्रशंसन्तिसर्ववातविकारनुत् । महामाषादिनामेदंभाषितंमुनिभिःपुरा ॥ इतिमहामाषादितैलम् । चक्रदत्तात् ॥ ५७२ ॥

वातव्याधियों की सामान्य औषध ॥

उर्द १२८ तोले दशमूल २०० तोले बकरेका मांस १२० तोले इन सबको १०२८ तोले जलमें पाककरे फिर चौथाई बाकी रहजानेपर उतारले इसके उपरान्त यहक्काथ तिलोंका तेल १२८ तोले उसका चौगुना दूध इन सबमें जीवनीय गण मजीठ चव्य चीता कायफल सोंठ पीपलामूल पीपल मिर्च रासना आमला गोखुरू केवांच के बीज रेड़ी सतावर कालानोन सेंधानोन देवदारु बिटनोन गिलोय कूट असगन्ध वच और कचूर इन सबकोएक २ तोले डालकर मन्दाग्निमें पकावे इसके सेवनसे पक्षाघात अर्दित हनुस्तम्भ कर्णशूल शिरकी पीड़ा तींगुर त्रिदोष हाथ पैर तथा ग्रीवाका कंपना चलने की शक्तिका कमहोना कलापखंज पंगु गृध्रसी तथा अपबाहुक यह सब रोग नष्ट होतेहैं यह तेल पीने में वस्तिक्रियामें शररिके मलने में नस्यमें और कर्ण आदिकों में छोड़ने के लिये श्रेष्ठ है इस महा माषादि तैल से सम्पुर्ण वात व्याधियोंका नाश होता है ॥ इति महा माषादि तैल ॥ ५७२ ।

माषायवातसीक्षुद्रामर्कटीचकुरण्टकः । गोकण्टःटुण्टकश्चैषांप्रत्येकंपलसप्तकम् ॥ चतुर्गुणाम्बुनापक्त्वापादशेषंशृतंनयेत् । कार्पासकास्थिवदरंशणबीजंकुलत्थकम् ॥ पृथक्चतुर्दशपलंचतुर्गुणजलेपचेत् । कषायंतत्रगृह्णीयाच्चतुर्थांशावशेषितम् ॥ प्रस्थश्चछागमांसस्यचतुःषष्टिपलेजले । प्रक्षिप्यपाचयेद्धीमान्पादशेषंरसंनयेत् ॥ तैलप्रस्थेततःक्काथान्सर्वांस्तान्क्रमशःपचेत् । कल्कद्रव्यैःपचेदेभि रमृताकुष्ठसैन्धवैः ॥ रास्नापुनर्नवैरण्डैःपिप्पल्याशतपुष्पया । बलाप्रसारणीभ्याञ्चमांस्याकटुकयातथा ॥ पृथक्कर्षमितैरेतैःसाधयेन्मृदुनाग्निना । हन्यात्तैलमिदंशीघ्रंवातव्याधीनशेषतः ॥ आक्षेपकंपक्षघातमुरुस्तम्भापबाहुकौ । हस्तकम्पंशिरःकम्पंविश्वाचीमर्दितंतथा ॥ इति द्वितीयमाषादितैलम् । शार्ङ्गधरात् ॥ ५७३ ॥

उर्द जौ अलसी भटकटैया किवांचके बीज झिंटी गोखुरूतथा सोनापाठा इनसबको अट्ठाईस २ तोलेलेकर चौगुनेजलमें पाककरके जबचौथाई बाकीरहै तबछानले कपासकेबीज बेरसनके बीज तथा कुलथी इनसबको छप्पन २ तोले लेकर चौगुने जल में पाककरे जब चौथाई बाकी रहै तब छानले ६४ तोले बकरे के मांसको चौगुने जल में पकाकर चौथाई रहने पर छानले गिलोय कूट सेंधा नोन रासना पुनर्नवा रेड़ी पीपल सौंफ बरियारा गन्धप्रसारणी जटामांसी तथा मिर्च इनसब औषधियोंका एक२ तोला कल्क ऊपर कहेहुए संपूर्णक्वाथों को ६४ तोले तेल में डालकर विधि पूर्व्वक

मंदाग्निमें पाककरे इसतेल के सेवनसे पक्षाघात ऊरुस्तंभ अपबाहुक हाथतथा शिरकाकंपना वि-श्वाची तथा अर्दित आदिक संपूर्ण बात रोग नष्ट होते हैं ॥ इतिद्वितीय माषादि तैल ॥ ५७३ ॥

अश्वगन्धावलाविल्वंपाटलावृहतीद्वयम् । श्वदंष्ट्रातिवलानिम्वाश्योनाकञ्चपुनर्नवाम् ॥ प्रसारिणीमग्निमन्थंकुर्य्याद्दशपलंपृथक् । चतुर्द्रोणेजलेपक्त्वापादशेषंशृतंनयेत् ॥ तैलाढ़केनसंयोज्यशतावर्य्याःरसाढ़कम् । प्रक्षिपेत्तत्रगोक्षीरंततस्तैलाच्चतुर्गुणम् ॥ पृथक्पलमितैःकल्कैर्द्रव्यैरेभिःपचेद्भिषक् ॥ वचाचन्दनकुष्ठैलामांसीशैलेयसैन्धवैः । अश्वगन्धावलारास्नाशतपुष्पेन्द्रदारुभिः । पर्णीचतुष्टयेनैवतगरेणप्रसाधयेत् ॥ तत्तैलंभोजनेऽभ्यंगेपानेवस्तौचयोजयेत् । पक्षाघातंहनुस्तम्भंमन्यास्तम्भंगलग्रहम् । कुब्जत्वंवधिरत्वञ्चगतिभंगंकटीग्रहम् । गात्रशोषेन्द्रियध्वंसंशुक्रनाशंज्वरक्षयम् ॥ अन्त्रवृद्धिंकुरण्डञ्चदन्तरोगंशिरोग्रहम् । पार्श्वशूलञ्चपङ्गुत्वंवुद्धिनाशञ्चगृध्रसीम् ॥ अन्यांश्चविविधान्वातान्हरेत्सर्वांगसंश्रयान् । अस्याप्रभावात्वन्ध्यापिनारीपुत्रंप्रसूयते ॥ यथानारायणोदेवोदुष्टदैत्यविनाशनः । तथेदंवातरोगाणांनाशनंतैलमुत्तमम् ॥ इतिमध्यमनारायणतैलम् ॥ ५७४ ॥

असगंध बरियारा बेल पाटला दोनोंभटकटैया गोखुरू अतिवला नींब सोनापाठा पुनर्नवा गंधप्रसारणी तथा अरणी इनसब औषधियों के चालीस २ तोले चूर्णको लेकर ४९६ तोले जलमें पकाकर चौथाई रहजाने पर उतारले फिरयहकाढ़ा और २५६ तोले सतावर का रस २५६ तोले तिलका तेल और तेलका चौगुना गौका दूध इन सब में वच चंदन कूट इलायची जटामासी सिलाजीत सेंधानोन असगंध बरियारा रासना सौंफ देवदारु मुद्गपर्णी माषपर्णी शालिपर्णी पृष्ठपर्णी और तगर इन सबके चार२ तोले कल्क को डालकर विधिपूर्वक पाककरे इसतेलको भोजन अंगमर्दन पानतथा बस्ति क्रिया में व्यवहार करनेसे पक्षाघात हनुस्तंभ मन्यास्तंभ गलग्रह कुब्जता बधिरता गतिभंग कटिग्रह पार्श्व शूल अंगोंका सूखना इन्द्रियध्वंस बीर्य्यनाश ज्वर राजयक्ष्मा अंत्रवृद्धि कुरंड दन्त-रोग शिरोग्रह पंगुता बुद्धिनाश तथा गृध्रसी आदिक अनेक सर्वांग में होनेवाले बातरोग नष्ट होतेहैं इसतेल के प्रभाव से वन्ध्या स्त्री भी पुत्रको उत्पन्न करती है जैसे श्रीनारायण संपूर्ण दुष्ट दैत्यों कानाश करतेहैं इसीप्रकार यहतैल संपूर्ण बात रोगोंको नष्टकरताहै इतिमध्यम नारायणतैल ५७४॥

अथमहानारायणतैलम् ॥

तिलतैलंसमादायचतुराढ़कसम्मितम् । पञ्चपल्लवकल्केनशोधयेद्दोषशान्तये ॥ तत्राजंदुग्धमथवागव्यंतैलसमंपचेत् । शतावरीरसञ्चापितैलतुल्यंपचेद्भिषक् ॥ दशमूलीबलारास्नाशिग्रूत्पलपुनर्नवा । शेफालिकानागवलावलाचैवप्रसारिणी ॥ अश्वगन्धासहचरोदर्भमूलंकरञ्जकः । खदिरंचन्दनंलोध्रंबचाशनपलाशकम् ॥ वकुलैरण्डवरुणशालयुग्मकटम्भराः । शिरीषःशिखरीवासाहिंस्राजम्बूविभीतकम् ॥ काञ्चनारःकपित्थश्चपारिभद्रःप्रियालकम् । पाषाणभेदशम्पाकदुग्धिकादाड़िमीफलम् ॥ उदुम्बरःसप्तलाचकन्यकामालतीत्वचम् । मागधीनलमूलञ्चयवकोलकुलत्थकम् ॥ आत्मगुप्तार्क

कार्पासवीजंवस्त्रादनीस्तुही । केतकीमूलधत्तूरलाङ्गलीगर्दभाण्डकम्॥चित्रकञ्चमहानिम्बं पञ्चवल्कलमेवच । मुण्डीटेकारिमुसलीहंसपादीविशल्यकम् ॥ एषांदशपलान्भागान् वारिण्यष्टगुणेपचेत् । पादशेषंपरिश्राव्यतत्रतैलंपुनःपचेत् ॥ छागोमेषश्चहरिणएणश्च बहुशृंगकः । शशःशल्यःशिवागोधासिंहोव्याघ्रश्चभल्लुकः ॥ वन्यौवराहखड्गौचम हिषोघोटकस्तथा । कपिर्वभ्रुर्विडालश्चमूषकश्चोरुदर्दरः ॥ वर्त्तीकरितित्तिरिर्लावःखञ्ज रीटश्चकोरकः । उलूकोनीलकण्ठश्चवनकुक्कुटएवच । गृध्रश्चगरुड़ोहंसश्चक्रकारण्ड वोऽपिच । कपोतःसारसःक्रौञ्चोवन्यःपारावतस्तथा ॥ रोहितोमद्गुरश्चापिशिलीन्ध्रःशृंग कस्तथा । इल्लीसोगर्गरोवर्मिःक्रथकाकःपिकापिच । महामत्स्यःकच्छपश्चशिशुमारश्च सांकुचिः ॥ मकरोघण्टिकाकारस्तदलाभेतुगोधिका । यथालाभममीषाञ्चक्राथंतैलसमं पचेत् ॥ रास्नाश्वगन्धामिसिदारुकुष्ठपर्णीचतुष्कागुरुकेसराणि । सिन्धूत्थमांसीरजनी द्वयञ्चशैलेयकंचन्दनपुष्करञ्च॥एलासयष्टीतगराब्दपत्रंभृंगोष्टवर्गस्तुवचापलांसी ॥ स्थौणेयवृश्चीवकचोरकाख्यंमूर्वात्वचंकट्फलपद्मकञ्च । मृणालजातीफलकेतकाख्यं सनागपुष्पंसरलंमुराच ॥ जीवन्तिकोशीरवरास्तथैवदुरालभावानरिकानखश्च । कैव र्त्तमुस्तार्जुनतिक्तकञ्चवातामखर्जूरकतुम्बराश्च । सधातकीग्रन्थिकपर्पटाश्चपटोलहेमा ह्वजयन्तिकाश्च ॥ त्रायन्तिकालम्बुषशक्रवीजंरसाञ्जनाभातिव्रतारुणाच । द्राक्षाकणा द्रोणपुनर्नवाश्च कौन्तीक्रिमिघ्नोहयमारकश्च । नीलोत्पलंपद्मककारवीभ्यांरम्भानलो गोक्षुरकःक्षुरश्च । कङ्कोलकालेयकुसुम्भपुष्पन्तुरुष्ककाश्मीरकसिक्थकञ्च ॥ लवंगक पूररसालकाण्डकस्तूरिकाबालकमम्बरञ्च ॥ दारु देवदारु पर्णीचतुष्कं शालिपर्णी पृष्ठपर्णी मुद्गपर्णी माषपर्णी केशरः पुन्नागस्तस्य पुष्पं ग्राह्यम् । तदलाभेनागकेसरंग्राह्य म् । शैलेयकं छरीला । चन्दनमत्रश्वेतं पुष्करं पुष्करमूलंतगरस्याप्यलाभेतुकुष्ठंदद्या द्भिषग्वरः । भृंगस्त्वक् । अष्टवर्गालाभे शतावरीविदार्यश्वगन्धावाराहीद्विगुणादद्यात् । वाराहिगेंठिइतिलोके । पालासी कर्चूर भेदःगन्धपलाशीतिकाश्मीरेप्रसिद्धा तदलाभेक र्चूरएवदेयः ।स्थौणेय गठिवनभेदः । ईषत् सुगन्धि थुनेर इतिलोके । वृश्चीवः श्वेत मूला पुनर्नवा । चोरकः ग्रन्थि पर्णस्यैवभेदः भड़िउर इति नैपालदेशे प्रसिद्धः । केत कस्य मूलं पुष्पञ्च दद्यात् । कैवर्तमुस्ताकेवटी मोथा गुड़तजी इतिचनाम । तिक्तकः किराततिक्तकः वातामं वादाम । हेमाह्वं धत्तूरस्यफलंमूलंपत्रञ्च । जयन्तिका जैतित्व क । त्रायन्तिका अत्रलभ्यतएवनअलम्बुषा लज्जालू भेदः । पञ्चाङ्ग । आभा बब्बूलः तस्यत्वक् । अरुणा मञ्जिष्ठाद्रोणः द्रोणपुष्पी । मारुक् पञ्चांगः पुनर्नवा रक्तपुष्पा । हयमार कः करवीरस्तस्यमूलम् । पद्मकं नीलोत्पलादन्योत्पलम् । पद्मकाष्ठमुक्तमेव । कारवी मगरैला । रम्भयाकन्दम् । क्षुरस्यफलानि सपाल काण्डम् । आण्डी सुगन्धद्रव्यम् ।

कल्कानमीषांविपचेत्सुवैद्यः पृथक्पृथक्कर्षयुगोन्मितानाम् । शुभेचनक्षत्रमुहूर्त्तलग्ने सन्तोष्यविप्रांश्चभिषग्वरांश्च ॥ सम्पूज्यनारायणनामधेयंदेवंत्रिनेत्रंजगतामधीशम् । पात्रेतुहेम्नःखलुराजतेवाताम्रेऽथवालोहमयेऽपिरक्षेत् ॥ अभ्यञ्जनेऽञ्जनेनस्येनिरूहेचावगाहने । पानेचैतद्यथाव्याधिप्रयुञ्जीतचिकित्सकः ॥ बहुनात्रकिमुक्तेनतैलमेतत्प्रयोजितम्॥अवश्यं वातजान् व्याधीनशीतिमपिनाशयेत् । एतस्याभ्यासतोजन्तोर्जराजातु न जायते ॥ पतन्तिबलयोनैवपलितञ्चनजायते । नेत्रंतेजस्विनितरां गरुडस्येव जायते ॥ नोच्चैःश्रुतिर्नबाधिर्य्यं कर्णनादोनजायते । पाणिकम्पःशिरःकम्पः प्रलापश्चनजायते ॥ बुद्धिभ्रंशोनजायेत तस्मात्कर्म्मसुपाटवम् । यथाजलेनसिक्तस्यशाखिनःपल्लवादयः ॥ वर्द्धन्तेधातवस्तद्वद् देहिनोऽनेननित्यशः । आमंगर्भन्त्यजेत्यातुसूतिकारुग्युताचया ॥ याचदुःप्रसवक्षीणाताभ्यएतद्धितंपरम् । वन्ध्याचलभतेपुत्रंगर्भपातोनजायते॥ योनिरोगाःप्रणश्यन्तिप्रदरश्चप्रशाम्यति। अस्मात्तैलवरादन्यत्कुत्रचिन्नास्तिभेषजम्॥बल्यंवृष्यंबृंहणञ्चरसायनमिदंमहत्। पुरादेवासुरेयुद्धेदैत्यैरभिहतान्सुरान्॥ भिन्नान्भग्नास्थिकान्विद्धान्पिचितान्व्यथयार्द्दितान् । दृष्ट्वाहितायदेवानांनराणाञ्च ब्रवीदिदम् । तैलंनारायणोदेवोमहानारायणाभिधम्॥ इतिमहानारायणतैलम् ॥ ५७५॥

अथ महानारायण तैल ॥

तिलकातेल १०२४ तोले लेकर पंचपल्लवके कल्ककेसाथ पाककरके तेलके दोषोंको नष्टकरे फिर बकरीका दूध तेलके समान इतनाही सतावरका रस दशमूल बरियारा रासना सहँजन उत्पल पुनर्नवा संभालू नागबला बला असगन्ध भिंटी गंधप्रसारणी कुशकीजड़ करंजुआ कत्था चन्दन लोध वच ढाक मुहासिली रेंडी बरुणा आसन दोनोंशाल कुटकी सिरस लटजीरा बांसा बालछड़ जामन बहेड़ा कचनार कैथा नीब चिरौंजी पाषाणभेद अमलतास दूधी अनार गूलर शातला बीकार चमेली तज पीपल नरकुलकीजड़ जौ बेर कुलथी किवांचके बीज आक कपासके बीज गिलोय थूहर केतकीकी जड़ धतूरा करिहारी पिलखन चीता बड़ानींब पंचवल्कल सुंडी टिकारी मुसली हंसपदी तथा विशल्यक इन सबको चालिस२ तोले लेकर दूने जल में पाककरे और चौथाई रहनेपर उतार लेवे बकरा मेढ़ा हिरन एणनाम हिरण बारहसिंहा खरगोश सेई स्यार गोह सिंह व्याघ्र रीछ बडेलासूअर गैंड़ा भैंसा घोड़ा बन्दर नौला बिलाव मूसा मेढक बटेर तीतर लवा खंजन चकोर उल्लू मोर जंगलीमुर्गी गिद्ध गरुड़ हंस चकवीचकवा कारंडव कबूतर सारस बगला जंगलीकबूतर रोहूमछली मद्गुरु शिलीन्ध्र शृंगक इल्लीस गर्गर वर्भि कथ काक पिक महामत्स्य कछुआ सूस सांकुच मगर घड़ियाल (घड़ियाल नमिलेतोगोह) इनमेंसे जहांतक मिलसकें इनके मांस का काढ़ा बनावे ऊपर कहेहुए तेल दूध और काढ़ोंमें रासना असगन्ध सौंफ देवदारु कूट शालिपर्णी पृष्ठपर्णी मुद्गपर्णी माषपर्णी सिलाजीत श्वेतचन्दन पुष्कर मूल अगर नागकेशर सेंधानोन जटामांसी दोनोंहल्दी इलायची मुलहठी तगर मोथा तेजपात दालचीनी अष्टकवर्ग (इनके अभाव में सतावर असगंध बिलारीकन्द और बाराहीकंदके दो२ भाग) वच गंधपलासी भटेउर श्वेत पुनर्नवा चोरक मरोरफली तज कायफल पद्माक कमलकीडंडी जावफल केतकी कीजड तथा फूल नागकेशर सरलमुरा जीवन्ती खस त्रिफला जवासा किवांचकेबीज

नखी कैवर्त्तमोथा अर्जुन चिरायता बदाम खजूर धनियां धवई पीपलामूल पित्तपापड़ा परवल धतूरेके फल मूल तथापत्ते जयन्ती (यह नहीं मिलता) त्रायमाणा लजालू इन्द्रजौ रसोत बबूलकी छाल निसोत मजीठ दाख पीपल गूमा लालपुनर्नवा रेणुका बायविडंग कनेरकीजड़ नीलकमल कमल कालीजीरी केलेकीजड़ चीता गोखुरू ताल मखाना कंकोल पीतचन्दन कुसुम काफूल लोबान केशर मोम लौंग कपूर शिलारस आंडी लताकस्तूरी सुगंधबाला और अंबर इनसबके दो२ तोले कल्क डालकर अच्छे नक्षत्र मुहूर्त्त तथा लग्नमें ब्राह्मण देवता तथा बैद्योंको संतुष्ट करके और नारायण तथा श्री शिवजीका पूजनकरके बिधि पूर्व्वक पाककरे इसतेलको सोने चांदी अथवा लोहेके पात्रमें अच्छे प्रकार से रक्खे बैद्य रोगके अनुसार मर्दन अंजन नस्य निरूहवस्ति अवगाहन अथवा पानमें इसका सेवन करावे इसके सेवनसे अस्सी प्रकारकी बात व्याधि नाश होतीहै इसके अभ्याससे वृद्धावस्थाफुरीतथा बालोंका पकना नहीं होताहै गरुड़के समान दृष्टि होती उच्चस्वरका सुनना बधिरता कर्णनाद हाथ तथा शिरका कांपना प्रलाप तथाबुद्धिभ्रंस नष्टहोताहै और कामों में सामर्थ्य होतीहै जैसे वृक्षकी जड़ में जल के सींचनेसे वृक्षकी शाखा तथा पत्ते बढ़तेहैं इसीप्रकार इसकेनित्य सेवनकरने से मनुष्यकी धातुबढ़ती हैं जिनस्त्रियों के गर्भ गिरपड़ते हैं प्रसव के समय अत्यन्त पीड़ा होतीहै अथवा जिनको प्रसूतका रोग होताहै उनके लिये यह अत्यन्त हितकारी है इस के सेवन से बन्ध्याओं के भी पुत्रहोताहै गर्भपात नहीं होता योनि के रोगतथा प्रदरका नाशहोताहै इस तेलसे बढ़कर और कोई औषध नहीं है यह बलकारी वीर्य्य बर्द्धक धातु वर्द्धक तथा अत्यन्त रसायन है पूर्व काल में देवता और दैत्यों के युद्धमें दैत्योंके द्वारा मारे हुए देवताओं को भिन्न टूटी हुई हड्डीवाले विधेहुये पके घाववाले और पीड़ासे व्याकुल देखकर देवता और मनुष्यों के हितके अर्थ श्रीनारायणने यहमहानारायण नामतेल कहाथा इतिमहानारायण तैल॥ ५७५॥

नागरंपिप्पलीमूलञ्चव्यमूषणचित्रकम् ॥ भृष्टंहिंग्वजमोदाचसर्षपोजीरकद्वयम् ॥ रेणुकेन्द्रयवौपाठाविडङ्गंगजपिप्पली। कटुकातिविषाभार्ग्गीवचामूर्वाचपत्रकम् ॥ देवदारुकणाकुष्ठंरास्नामुस्ताचसैन्धवम् । एलात्रिकण्टकंपथ्याधान्यकञ्चविभीतकम् ॥ धात्रीचत्वगुशीरञ्चयवक्षारोऽखिलान्यपि।एतानिसमभगानिसूक्ष्मचूर्णानिकारयेत्॥यावन्त्येतानिचूर्णानितावानेवात्रगुग्गुलुः । संमर्द्यसर्पिषापश्चात्सर्वंसंमिश्रयेच्चतत् ॥ एकंपिण्डञ्चतत्कृत्वाधारयेत्घृतभाजने । गुटिकाटङ्कमात्रास्तुखादेत्तास्तुयथोचिताः ॥ दोषकालाद्यपेक्षया (परिभाषा) आदौशाणोन्मितंखादेत्सार्द्धशाणंततःपरम् ॥ तदग्रेकर्षमर्द्धन्तुपूर्णंकर्षन्ततःपरम्। गुग्गुलुर्योगराजोऽयंमहामुख्योरसायनम्। मैथुनाहारपानानांनियमोनात्रविद्यते । अर्शांसिग्रहणीरोगंप्लीहगुल्मोदरानपि । आनाहंमन्दमग्निञ्चश्वासंकासमरोचकम् । प्रमेहंनाभिशूलञ्चकृमिक्षयमुरोग्रहम् । सर्वान्वातामयान्हन्यादामवातमपस्मृतिम् । वातरक्तंतथाकुष्ठंतथादुष्टव्रणानपि । शुक्रदोषंरजोदोषमुदावर्त्तभगन्दरम् ॥ रास्नादिक्काथसंयुक्तःसर्व्ववातामयान्हरेत् । काकोल्यादिशृतात्पित्तंकफमारग्वधादिना । दार्वीशृतेनमेहांश्चगोमूत्रेणचपाण्डुताम्।मधुनामेदसोवृद्धिंकुष्ठंनिम्बशृतेनच ॥ छिन्नाक्काथेनवातास्रंशोथं मूलकजातशृतात्।पाटलाक्काथसहितोवि

षंमूषकसम्भवम् ॥ त्रिफलाक्काथसंयुक्तोदारुणांनेत्रवेदनाम् । पुनर्नवादिकाथेनहन्ति सर्वोदराण्यपि ॥ अथरास्नादिक्काथोयथा ॥ रास्नापुनर्नवाशुण्ठीगुडूच्येरण्डजंशृतम्। सप्तधातुगतेवातेसमेसर्वाङ्गेऽपिचेत्॥इतिमहायोगराजगुग्गुलुः ॥ ५७६ ॥

सोंठ पीपलामूल चव्य मिर्च चीता भुनीहींग अजवाइन सरसों दोनोंजीरे रेणुका इन्द्रयव पाठा वायविड़ंग गजपीपल कुटकी अतीस भारंगी बच मरोड़फली तेजपात देवदारु पीपल कूट रासना मोथा सेंधानोन इलायची गोखुरू हड़ धनियां बहेडा आमला दालचीनी खस तथा जवाखार इनसब बराबर औषधियोंका चूर्ण करके इन सबके बराबर गूगुलको घीमें मलकर इन औषधियोंमेंमिलावे फिर पिंडसा बनाकर किसी घृतके पात्र में रखछोड़े और चारमासे की गोली बनाकर यथोचित दोष और कालके अनुसार खाय॥परिभाषा॥ पहले ३मासे फिर ४॥मासे इसके पीछे ६ मासे तदनन्तर १ तोला रोजखाय यह योगराज गूगुल महामुख्य रसायनहै इसके सेवनमें मैथुन तथा आहार पानका कोई नियम नहींहै इसके द्वारा बवासीर ग्रहणी प्लीहा गोला उदर आनाह मन्दाग्नि श्वास खांसी अरुचि प्रमेह नाभिकी पीड़ा कृमि क्षय उरोग्रह सबप्रकारके वातरोग आमवात मिर्गी कुष्ठ बातरक्त दुष्ट व्रण वीर्य तथा रजके दोष उदावर्त्त और भगन्दर इनरोगोंका नाश होताहै रासनादि क्वाथके साथ इस के सेवनसे सबप्रकारके बात रोगकाकोल्यादि गणके काढ़ेके साथ सेवन करने से पित्त आरग्वधादि गणके काढ़ेकेसाथ सेवनकरनेसे कफ दारुहल्दीके काढ़ेके साथ सेवन करने से प्रमेह गोमूत्रके साथ सेवन करने से पांडुरोग सहतके साथ सेवन करनेसे मेदकी वृद्धि नींबके काढ़ेके साथ सेवन करनेसे कुष्ठ गिलोयके काढ़ेके साथ सेवन करनेसे बातरक्त सूखीमूली के काढ़ेके साथ सेवन करने से सूजन पाटलाके काढ़ेके साथ सेवन करनेसे मूसेका विष त्रिफलाके काढ़ेके साथ सेवन करने से भयंकर नेत्ररोग और पुनर्नवाके काढ़ेके साथ सेवन करनेसे संपूर्ण उदररोग नष्ट होते हैं रासना पुनर्नवा सोंठ गिलोय और रेंड़ी इनके काढ़ेको रासनादि क्वाथ कहतेहैं ॥ इतिमहायोगराज गुग्गुलु ॥५७६ ॥

युक्तःकल्कोरसोनस्यतिलतैलेनसिन्धुना । वातरोगान्हरेत्सर्वांज्वरांश्चविषमानपि रसोनकल्कः ॥ ५७७ ॥

तिलके तेल और सेंधेनोनके साथ लहसन के कल्कको सेवन करने से सब प्रकार के बात रोग और विषमज्वरोंका नाश होताहै ॥ इतिरसोनकल्क ॥ ५७७ ॥

क्षीरेणतैलेनघृतेनवापिमांसेनसार्द्धंलशुनानिखादेत् । शाल्योदनेनापिचषष्टिकेनप लार्द्धवृद्ध्यादिवसानिसप्त ॥ वातोत्थरोगान्विषमज्वरांश्चशूलान्सगुल्मान्दहनस्यमा न्द्यम्। प्लीहानमुग्रंभुजपार्श्वशूलंशिरोव्यथांकृन्ततिशुक्रदोषान् ॥ रसोनकल्कः॥ ५७८॥

दूध तेल घी मांस भात अथवा सांठी के चावलों के साथ लहसन का कल्क सात दिनतक दो २ तोले नित्यबढ़ाकर खाने से बात रोग बिषमज्वर शूल गोला मन्दाग्नि प्लीहा भुजा तथा पसली की पीड़ा शिरकी पीड़ा और वीर्य्य दोषका नाश होताहै इतिरसोनकल्क ॥ ५७८ ॥

अन्नप्रकारैःपललप्रकारैर्गोधूमकैर्वायवशक्तुभिर्वा । दुग्धेनतैलेनघृतेनवापियुक्तानि शीतेलशुनानिखादेत् ॥ संवर्त्तकैर्लावकपिञ्जलैर्वामृग्याःपलैर्वाप्यथकौक्कुटैर्वा । वराह वार्त्तीरकहारिणैर्वासुसंस्कृतैरग्निबलंसमीक्ष्य ॥ ५७९ ॥

अन्नके प्रकार मांसके प्रकार गेहूं के बनेहुए पदार्थ जौके सत्तू दूध तेल अथवा घीकेसाथ शीतकालमें लहसन खाना चाहिये बत्तक लवा सफेदतीतर मृगी मुर्गा शूकर बटेर अथवा हिरन इनके मांस के साथ अग्नि बलके अनुसार लहसन सेवन करे ॥ ५७९ ॥

रसोनपक्वकन्दस्यगुलिकानिस्तुषीकृताः।पाटयित्वाचमध्यस्थंदूरीकुर्य्यात्तदंकुरम् ॥ निश्युग्रगन्धनाशायदध्नासन्नायरक्षयेत् । ततःप्रक्षाल्यसंशोष्यशिलायांपरिपेषयेत् ॥ कल्कस्यपञ्चमंभागंचूर्णमेषांविनिःक्षिपेत् । सौवर्चलंयवानींचभर्जितंहिंगुसैन्धवम् ॥ कटुत्रिकंजीरकञ्चसमभागानिचूर्णयेत् । तिलतैलञ्चकल्कस्यतुर्य्यांशंतत्रामिश्रयेत् ॥ खादेत्कर्षमितंप्रातःकिंवादोषाद्यपेक्षया । अनुपानंप्रकुर्वीतवातारिश्टतमन्वहम् ॥ सर्वाङ्गैकांगजंवातमर्दितञ्चापतन्त्रकम् । अपस्मारंतथोन्मादमूरुस्तम्भञ्चगृध्रसीम् ॥ उरःपृष्ठकटीपार्श्वकुक्षिपीड़ांकृमीन्हरेत । मद्यंमांसंतथाम्लञ्चरसंसेवेतनित्यशः ॥ आयासमातपंरोषमतिनीरंगुड़ंस्त्रियम् । रसोनमश्नन्पुरुषस्त्यजेदेतन्निरन्तरम् ॥ वर्जयेत्तदतीसारीप्रमेहीपांडुरोगवान् । अरोचकीगर्भिणीचमूर्च्छार्शोरोगसंयुतः ॥ रक्तपित्तीचशोषीचयक्ष्मीछर्दितोनरः । पित्तेतुपथ्यभुक्कुर्य्यात्प्रयोगान्तेविरेचनम् ॥ अन्यथातस्यजायन्तेकुष्ठपाण्ड्वामयादयः । स्त्रीस्तन्यंत्वरितंदद्याद्बालानामप्यनिच्छताम् ॥ तथाचलभतेसिद्धिंमहावीर्य्यात्रसोनतः ॥ रसोनाष्टकम् ॥ ५८० ॥

पक्के लहसन के छिलके छीलकर जवोंके भीतर के अंकुर निकालगेरै फिर उसकी दुर्गन्धि के नाशके लिये दही मिलाकर रात्रिभर रक्खे इसके उपरान्त धोकर और सुखाके सिलपर पीसले फिर कालानोन अजवाइन भुनीहींग सेंधानोन त्रिकुटु तथाजीरा इनसब को बराबर लेकर चूर्णकर के जितनी लहसनकी चटनी होय उसका पंचमांश मिलावे और चौथाई तिलका तेल मिलावे फिर१ तोले अथवा अग्निबल के अनुसार उस औषध को खाकर रेंड़ीके काढ़ेका अनुपान करे इसके द्वारा सर्वाङ्ग तथा एकांग बात अर्दित अपतन्त्रक मिर्गी उन्माद ऊरुस्तंभ गृध्रसी कृमि और हृदयपठि कमर पसली तथा कोखकी पीड़ा नष्ट होतीहै इस औषध का सेवन करनेवाला नित्य मद्य मांस खटाई तथा मांसका रस भोजन करे और परिश्रम धूप क्रोध बहुत जल गुड़ तथा मैथुनका त्याग करे अतीसार प्रमेह पांडु अरुचि मूर्च्छा बवासीर रक्तपित्त शोष यक्ष्मातथा छर्दिरोग वाले और गर्भिणी स्त्री इस औषध का सेवन नकरे पित्तरोग में पथ्य सहित इस औषधका सेवन करके अन्तमें बिरेचन करना चाहिये नहीं तो कुष्ठतथा पांडु आदिक रोग उत्पन्न होतेहैं बालकों को इस औषधका सेवन कराकर अनिच्छा होनेपर भी स्त्रियोंका दूध पिलाना चाहिये इस प्रकार करनेसे महावीर्य वाले इस लहसन से कार्य्य सिद्ध होताहै ॥ इतिरसोनाष्टक ॥ ५८० ॥

अथ वातव्याधिषुरसाः ॥

रसोगन्धोवरावह्निगुग्गुलुःक्रमवर्द्धितः । तत्रैकभागःसूतःस्याद्गन्धकोद्विगुणःस्मृतः ॥ त्रिभागात्रिफलायोज्याचतुर्भागस्तुचित्रकः । गुग्गुलुःपञ्चभागःस्याद्रुवुतैलेनमर्द्दितः ॥ क्षिप्त्वातत्रोदितंचूर्णंतेनतैलेनमर्द्दयेत् । गुटिकांकर्षमात्रान्तुभक्षयेत्प्रातरेवहि ॥ नागरै

रण्डमूलानांकषायंप्रपिवेदनु। अभ्यज्यैरण्डतैलेनस्वेदयेत्पृष्ठदेशकम्॥ विरेकपरिणामातुस्निग्धमुष्णञ्चभोजयेत्। वातारिसंज्ञकोह्येषरसोनियतसेवितः॥ मासेनमरुतोरोगान्हरेत्सुरतवर्जितः॥ वातारिरसः॥ ५८१॥

वातव्याधियोंपररस॥

पारा १ भाग गंधक २ भाग त्रिफला ३ भाग चीता ४ भाग और गूगुल ५ भाग इनसब औषधियों के चूर्णको रेंडीकेतेलके द्वारा मलकर एक २ तोलेकी गोली बनावे प्रातःकाल एकगोलीरोजखाकर सोंठ और अरंडकीजड़का काढ़ा पिये फिर रेंडीकेतेलको शरीरमें मलके पीठमें स्वेददेवे इसके उपरान्त दस्तआजाने पर स्निग्ध तथा उष्ण भोजन करावे इननियमोंके अनुसार महीनेभरतक मैथुन छोड़कर इसवातारि रसके सेवनसे वातरोगनष्टहोतेहैं॥ इति वातारिरस॥ ५८१॥

अथोरुस्तम्भाधिकारः॥

तत्रोरुस्तम्भस्यविप्रकृष्टं सन्निकृष्टंनिदानसंप्राप्तिपूर्वकं लक्षणमाह॥

शीतोष्णद्रवसंशुष्कगुरुस्निग्धैर्निषेवितैः। जीर्णाजीर्णेतथायाससंक्षोभस्वप्नजागरैः॥ सश्लेष्ममेदःपवनःसाममत्यर्थसञ्चितम्। अभिभूयेतरंदोषमूरूचेत्प्रतिपद्यते॥ सक्थ्यस्थिनीप्रपूर्य्यान्तःश्लेष्मणास्तिमितेनसः। तदास्तम्भातितेनोरुस्तब्धौशीतावचेतनौ॥ परकीयाविवगुरुस्यातामतिशयेनतौ। ध्यानाङ्गमर्दस्तैमित्यंतन्द्राच्छर्द्यरुचिज्वरैः॥ संयुतौपादसदनकृच्छ्रोद्धरणसुप्तिभिः। तमूरुस्तम्भमित्याहुआमवातमथापरे॥ जीर्णाजीर्णेकिञ्चिज्जीर्णेकिञ्चिदजीर्णेशीतादिभिर्निषेवितैः भुक्तैःसंक्षोभेणसंचलनेनदिवास्वप्नेनरात्रौजागरणेनअभिभूयदूषयित्वाइतरंदोषंकफंपित्तञ्च। स्तिमितेनआर्द्रेणावृतेनेतियावत्॥ नतुघनेन। सपवनःतदाऊरुंस्तम्भाति। तेनस्तम्भेनअचेतनौशून्यौपरकीयाविव। अक्रियावित्यर्थः। ध्यानम्मूढ़ता। पादसम्बन्धिनीभिःसदनकृच्छ्रोद्धरणसुप्तिभिश्चसंयुक्तौअयंसुश्रुतेनमहावातव्याधिषुपठितः॥ ५८२॥

ऊरुस्तंभका अधिकार। ऊरुस्तंभके दूरवाले और समीपीकारणों समेत संप्राप्ति और लक्षण॥

शीतल उष्ण द्रव सूखी भारी तथा स्निग्ध बस्तुओंके सेवन से कुछ जीर्ण तथा कुछ अजीर्ण में भोजनकरनेसे परिश्रमसे चलनेसे दिनमेंसोनेसे रात्रिमेंजागनेसे कफ तथा मेदयुक्त वायुबहुतसंचित आमयुक्त पित्त तथा कफको दूषितकरके जब जंघाओं में प्राप्त होतीहै और पतले कफ से जंघाओं की हड्डियोंको पूर्णकरतीहै तब जंघाओंको जकड़लेतीहै इसरोगमें जंघास्तब्ध शीतल शून्य कार्य्य रहित और बहुतभारीहोजातीहैं और रोगीको शरीरमें पीड़ागीलेवस्त्र से शरीर लिपटाहुआसा मालूमहोना तन्द्रा छर्द्दि अरुचि मूढ़ताज्वर और पैरोंमेंशिथिलता शून्यता तथा बहुत कष्टसे उठाना यहसब रोग होतेहैं इसको ऊरुस्तंभ और कोई२आढ्य वात कहते हैं सुश्रुतने इसको महा वात रोगोंमें कहाहै५८२

पूर्वरूप माह॥

प्राग्रूपंतस्यनिद्रातिध्यानंस्तिमितताज्वरः। रोमहर्षोऽरुचिच्छर्दिर्जङ्घोर्वोःसदनंतथा५८३

ऊरुस्तंभका पूर्वरूप ॥

ऊरुस्तंभ होनेसे पहले बहुत निद्रा मूढता शरीर गीलेबस्त्रसे ढकाहुआसा मालूमहोना ज्वररोमांच अरुचि छर्दि और पिंडली तथा जंघाओंमें शिथिलताहोतीहै ॥ ५८३ ॥

तस्यारूपमाह ॥

वातशङ्किभिरज्ञानात्तत्रस्यात्स्नेहनात्पुनः। पादयोःसदनंसुप्तिःकृच्छ्रादुद्धरणंतथा॥ जङ्घोरुग्लानिरत्यर्थंशश्वद्दाहवेदना। पादञ्चव्यथतेन्यस्तंशीतस्पर्शनवेत्तिच ॥ संस्थानेपीडनेगत्यांचालनेचाप्यनीश्वरः। अन्यनेयौहिसम्भग्नावूरुपादौचमन्यते ॥ अन्यनेयौअन्यचाल्यौभवतःअज्ञानात्अनिश्चयात्। स्तम्भसुप्तिकर्म्मराहतमपाददर्शने नवातशङ्किभिःवातव्याधिशङ्किभिः ॥ तत्रऊरुस्तम्भेस्नेहनात्स्नेहदानात्। स्नेहादिना स्नेहन्याचिकित्सयाःपादसदनादयःऊरुभग्नोपमत्वात्ताविकाराः स्युःजङ्घोर्वोर्गमनादावशक्तिः। अदाहवेदनाईषद्दाहेनसहवेदना ॥ ५८४ ॥

ऊरुस्तंभका अनुपशय ॥

जो बातरोगके लक्षणोंको देखकर ऊरुस्तंभका निश्चय न होसके तो वहां स्नेहन क्रिया करके निश्चयकरना चाहिये इसमें स्नेह न करनेसे पैरोंमें शिथिलता शून्यता तथा बहुतकष्टसे उठायाजाना होताहै पिंडलियोंमें अत्यन्त ग्लानि तथा बारम्बार कुछ दाह सहित पीड़ा होतीहै पैररखने में क्लेश होताहै शीतल स्पर्श नहीं मालूम होता पैरोंके रखनेमें दबानेमें चलनेमें तथा हिलाने डुलानेमेंशक्ति नहींरहती और जंघा तथा पैरटूटेहुएसे मालूमपड़तेहैं और दूसरोंसे उठानेकेयोग्यहोजातेहैं ५८४ ॥

अथोरुस्तम्भस्यारिष्ट लक्षणमाह ॥

यदादाहार्दितोदार्तोवेपनःपुरुषोभवेत्। ऊरुस्तंभस्तदाहन्यात्साधयेदन्यथानवम्॥ अन्यथादाहाद्युपद्रवरहितंतमपिनवम्उत्पन्नमात्रंसाधयेत् ॥ ५८५ ॥

ऊरुस्तंभ के अरिष्ट ॥

ऊरुस्तंभ में जो दाह पीडा तथा कंपहोय तो उसको असाध्य जानना चाहिये और जो दाहादिक उपद्रव न होयँ तो नवीन ऊरुस्तंभ की चिकित्सा करे ॥ ५८५ ॥

अथ तस्यचिकित्सा ॥

स्नेहास्रुक्स्राववमनंवस्तिकर्म्मविरेचनम्। वर्जयेदामवातेतुयतस्तैस्तस्यकोपनम् ॥ तस्मादत्रसदाकार्यंस्वेदलङ्घनरूक्षणम् ॥ आममेदःकफाधिक्यान्मारुतंपरिरक्षता । यस्यात्कफप्रशमनंनतुमारुतकोपनम् ॥ तत्सर्वंसर्वदाकार्य्यमूरुस्तम्भस्यभेषजम्। सर्वोरूक्षःक्रमःकार्य्यस्तत्रादौकफनाशनः ॥ पश्चाद्वातविनाशायविधातव्याखिलाःक्रियाः। भोज्याःपुराणाःश्यामाककोद्रवोद्दालशालयः ॥ जाङ्गलैरघृतैर्म्मांसैःशाकैश्चालवणैर्हितैः। शाकैरलवणैर्दद्याज्जलतैलाज्यसाधितैः॥ सुनिषण्णकनिम्बार्कवृन्तारग्वधपल्लवैः। वायसोवास्तुकाद्यैश्चसाधितैःशाकमूलकैः॥ शाकैरलवणैर्युक्तंजीर्णशाल्योदनंभिषक्५८६॥

ऊरुस्तंभकी चिकित्सा ॥

ऊरुस्तंभ में स्नेह रुधिर निकलवाना वमन वस्ति कर्म तथा विरेचनको त्याग करे क्यों कि इन के द्वारा ऊरुस्तंभ बढ़ताहै स्वेद लंघन तथा रूखापन ऊरुस्तंभ में आममेद तथा कफकी अधिकता होतीहै इसलिये हितकारी हैं परन्तु वायुके कोपपर दृष्टि रखनी चाहिये जो संपूर्ण वस्तु कफ नाशक होंय और वायुको कुपित न करें वह सब सदैव ऊरुस्तंभ में सेवन करनी चाहियें पहले कफ नाशक सब प्रकार की रूखी चिकित्सा करके पीछे वातनाशक चिकित्सा करनी चाहिये भोजन के लिये पुराना सामा कोदों वनकोदों शालि धान्यघृत रहित जंगली जीवोंका मांस तथा लवण रहित शाक देना चाहिये जल तेल तथा घीके द्वारा लवण रहित शाकों को पाक करके भोजनके लिये देवे चौपतिया नींब आक वेंगन अमलतास काकमांची मूली तथा वथुई आदिके शाक बिना नोन पाक करके इनके साथ शालि धान्यके चावलों का भात खिलावे ॥ ५८६ ॥

रूक्षणाद्वातकोपश्चेन्निद्रानाशार्त्तिपूर्वकः स्नेहस्वेदक्रमस्तत्रकार्योवातामयापहः । प्रतारयेत्प्रतिस्रोतोनदींशीतजलांशिवाम् ॥ सरश्चविमलंशीतंस्थिरतोयंपुनःपुनः । यथा विशुष्केऽस्यकफेशान्तिमूरुग्रहोव्रजेत् ॥ शरीरबलमग्निञ्चकार्य्यैषारक्षताक्रिया । सक्षारमूत्रस्वेदांश्चरूक्षाएयुत्सादनानिच ॥ ५८७ ॥

अधिक रूखी क्रियाके द्वारा वायु के कोपसेजो निद्राका नाशहोजाय तो वात नाशक स्निग्धस्वेद उसकोदेना चाहिये शीतल जलवाली नदियोंमें प्रवाहकी ओर रोगी को तैरावे और स्थिर शीतल तथा निर्मल जलवाले तालाब में बारं बार रोगी को तैरावे इस क्रिया से कफके सूखजाने पर ऊरुस्तंभ शान्त होताहै शरीर बल तथा अग्नि के अनुसार यह रूखी क्रिया करनी चाहिये क्षार मूत्र स्वेद तथा रूखे उबटन प्रयोग करने चाहिये ॥ ५८७ ॥

कुर्य्याद्दाहेचमूत्राद्यैःकरञ्जफलसर्षपैः । मूलैर्वाप्यश्वगन्धायामूलैरर्कस्यवाभिषक् ॥ पिचुमर्दस्यवामूलैरथवादेवदारुणः । क्षौद्रसर्षपवल्मीकमृत्तिकासंप्रतैर्भिषक् ॥ गाढमुत्सादनंकुर्य्यादूरुस्तम्भेसवेदने । दन्तीद्रवन्तीसुरसासर्षपैश्चापिबुद्धिमान् ॥ तर्कारीसुरसाशिग्रुवचावत्सकनिम्बकैः । पत्रमूलफलैस्तोयंश्रृतमुष्णञ्चसेचनम् ॥ भल्लातकामृताशुण्ठीदारुपथ्यापुनर्नवा । पञ्चमूलीद्वयोन्मिश्राऊरुस्तम्भनिवर्हणाः ॥ पिप्पलीपिप्पलीमूलंभल्लातकफलानिच । कल्कंमधुयुतंपीत्वाऊरुस्तम्भाद्विमुच्यते ॥ ५८८ ॥

अत्यन्त पीड़ा युक्त ऊरुस्तंभ में करंजुआ तथा सरसों को गोमूत्रमें पीस कर लेपकरे अथवा असगन्ध आक नींब तथा देवदारुकी जड़को गोमूत्र में पीसि कर लेपकरे या सहत युक्त सरसों तथा वामी की मिट्टी से खूब उबटन करेदंती मूषाकरनी रासना तथा सरसोंके द्वारा अथवा जयन्ती रासना सहँजन वच कुरैया तथा नींब इनके पत्ते जड़ तथा फलोंके द्वारा काढ़ा बनाकर कुछगरम २ पनिसे भिलावाँ गिलोय सोंठ देवदारु हड़पुनर्नवा तथा दशमूल इनके काढ़ेसे अथवा पीपल पीपलामूल तथा भिलावें के फल इनके कल्क को सहतडाल कर पीनेसे ऊरुस्तंभ का नाश होताहै ॥ ५८८ ॥

रास्नांशंपाकपथ्यामरिचमिसिशिवावेल्लशट्वश्वगन्धाः । यासच्छिन्नाजमोदासुमुषमतिविषाव्द्वदारीव्हत्यौ ॥ शुण्ठीतिक्तायवानीसहचरचविकैरण्डदार्व्याजकण्यंऊ

रुस्तम्भामवातकफपवनरुजंदण्डकांश्चाशुहन्यात् । इतिरास्नादिक्काथः ॥ ५८९ ॥

रासना सामा हड मिर्च सौंफ आमला बेलगिरी असगन्ध जवासा गिलोय अजवाइन सफेद तुलसी अतीस विधारा दोनों भटकटैया सोंठ कुटकी अजमोद भिंटी चव्य रेंडी दारुहल्दी और शालवृक्ष इनके काढ़ेके सेवन से हनुस्तंभ आमवात कफ वायुकी पीड़ा और दंडकरोग का नाश होता है इति रासनादि काथ ॥ ५८९ ॥

ग्रन्थिकारुष्ककृष्णानांक्काथक्षौद्रान्वितंपिबेत् । लिह्याद्वात्रिफलाचूर्णंक्षौद्रेणकटुकायुतम् ॥ सुखाम्बुनापिबेद्वापिचूर्णंकट्वरणंनरः । पिप्पलीवर्द्धमानंवामाक्षिकेणगुडेनवा ॥ ऊरुस्तम्भेप्रशंसन्तिगम्भीरारिष्टमेवच । शिलाजतुंगुग्गुलुंवापिप्पलीमथनागरम् ॥ ऊरुस्तम्भेपिबेन्मूत्रैर्दशमूलीरसेनवा । त्रिफलापिप्पलीमुस्तंचव्यंकटुकरोहिणी ॥ लिह्याद्वामधुनाचूर्णमूरुस्तम्भार्दितोनरः । घृतंसौरेश्वरंदद्यादूरुस्तम्भेकफोत्तरे ॥ दद्यात्शुण्ठीघृतंवापिवैश्वानरमथापिवा । सैन्धवाद्यंहितंतैलममृताख्योऽपिगुग्गुलुः ॥ ५९० ॥

पीपलामूल भिलावाँ तथा पीपल के काढ़े में सहत डालकर पीनेसे त्रिफले का चूर्ण तथा कुटकी इनमें सहत मिलाकर चाटने से षट्धरण चूर्ण को कुछ गरमजल के साथ पीने से सहत अथवा गुड़ के साथ बर्द्धमान पिप्पली के सेवन से गंभीरारिष्ट के पीने से शिलाजीत गूगल पीपल अथवा सोंठ इनमेंसे किसीको गोमूत्र अथवा दशमूलके काढ़ेके साथ पीनेसे त्रिफला पीपल मोथा चव्य और कुटकी इनके चूर्ण को सहतके साथ चाटने से ऊरुस्तंभका नाशहोताहै अधिक कफवाले ऊरुस्तंभमें सौरेश्वर घृत शुंठीघृत वैश्वानरघृत सैंधवादि तैल तथा अमृतागुग्गुल सेवन करना चाहिये ॥५९० ॥

कुष्ठश्रीवेष्टकोदीच्यसरलंदारुकेशरम् । अजगन्धाश्वगन्धाचतैलंतैःसार्षपंपचेत् ॥ सक्षौद्रंमात्रयातस्मादूरुस्तम्भार्दितःपिबेत् ॥ इतिकुष्ठाद्यंतैलम् ॥ ५९१ ॥

कूट सरलनिर्यास सुगन्धबाला सरलकाष्ठ देवदारु नागकेशर अजमोद और असगंध इन औषधियों के द्वारा सरसों के तेल को पकाकर सहत मिलाके मात्राके अनुसार ऊरुस्तंभ में पान करे इति कुष्ठादितैल ॥ ५९१ ॥

पलाभ्यांपिप्पलीमूलान्नागरादष्टकट्वरम् । तैलप्रस्थसमंदध्नागृध्रस्यूरुग्रहापहम् ॥ सस्नेहदधिसम्भूतंतत्कट्वरमुच्यते । अष्टकट्वरतैलेचतैलंसार्षपमिष्यते ॥ पिप्पलीमूलशुण्ठ्याश्चप्रत्येकंद्विपलंकृतम् ॥ इतिअष्टकट्वरंतैलम् ॥ ५९२ ॥

पीपलामूल तथा सोंठ आठ२ तोले बिनामक्खन निकले दही का मट्ठा ३२ तोले और कडुवा तेल तथा दही चौंसठ२ तोले इनसबको विधि पूर्वक पाक करके इसतैलके सेवनसे गृध्रसी और ऊरुस्तंभ का नाशहोता है इति अष्ट कट्वर तैल ॥ ५९२ ॥

द्विपञ्चमूलीत्रिफलाचित्रकंदेवदारुच । एकाष्ठीलात्वपामार्गश्रेयसीवायसीशुभा ॥ बलाभार्गीपृथक्पर्णीसुवहामदयन्तिका । विशालोशीरकाश्मर्यातिस्त्रोदेयातथाग्निकः ॥ चिरविल्वोह्यशोकश्चकलस्यंशुमतीतथा । पयस्यापीलुपर्ण्यश्चगुडूचीचशतावरी ॥ एषांपञ्चपलान्भागान्जलद्रोणेषुसप्तसु । अष्टभागावशेषेणपचेत्तैलाढकंशतम् ॥ कुष्ठञ्च

शतपुष्पाचत्र्यूषणंचित्रकावरा। देवदार्व्वागुरुश्रेष्ठंविडंगंमुस्तमेवच ॥ अश्वगन्धास्थिशपाढ़ामूलीश्यामाकमेवच। पिप्पल्यःशृंगवेरञ्चदन्तीहिंग्वम्लवेतसम् ॥ अनेनगर्भेण भिषक्कषायेणचसाधयेत्। सिद्धशीतञ्चपूतञ्चक्षौद्रेणसहसंसृजेत् ॥ तदस्यनस्यपानार्थंतदेवाभ्यञ्जनेभवेत् । ऊरुस्तम्भश्चिरोद्भूतस्तैलेनानेनशाम्यति ॥ आमवातंशीतवातंक्षुद्रवातञ्चनाशयेत् ॥ इति द्विपञ्चमूलाद्यंतैलम् ॥ ५९३ ॥

दशमूल त्रिफला चीता देवदारु पाठा लटजीरा गजपीपल कौआटोंटी मालकांगनी बरियारा भारंगी पृष्ठपर्णी रासना मल्लिका खसगंभारी करंजुआ अशोक शालिपर्णी ककुनी क्षीरकाकोली पीलुपर्णी गिलोय और सतावर इनसबको वीस२ तोले लेकर सातद्रोण जल में पाक करे जब अष्टमांश बाकी रहै तबउतार कर एक आढ़क तिलका तेल मिलावे फिर कूट सौंफ त्रिकटु चीता त्रिफला देवदारु अगर बायबिड़ंग मोथा असगंध शालिपर्णी पाठा तालमूली श्यामा पीपल अदरक दन्ती हींग और अमलवेद इनकेकल्क मिलाकर विधि पूर्वक तेलका पाक करे फिरशीतल होजाने पर नस्य पान अथवा मर्दन में इसके सेवनसे बहुत पुराना ऊरुस्तंभ आमबात शीतवात और क्षुद्रबात नष्ट होते हैं इति द्विपंच मूलादि तैल ॥ ५९३ ॥

सिन्धुरुग्विश्वजासोग्राभार्गीयष्टीस्थिराफलैः । दारुविश्वशटीधान्यकृष्णाकट्फलपौष्करैः ॥ दीप्यकातिविषैरण्डनालानीलाम्बुजैःपचेत् । तैलंसकांजिकंहन्तिपानाभ्यंजननावनैः ॥ आमवातंकृमीन्गुल्मान्प्लीहोदरशिरोरुजः । मन्दाग्निपक्षसन्ध्यण्डवातस्तम्भगदानपि ॥ इति महासैन्धवाद्यंतैलम् ॥ ५९४ ॥

सैंधानोन कूट सोंठ वच भारंगी मुलहठी शालिपर्णी जायफल देवदारु कचूर धनियां पीपल कायफल पुष्करमूल अजवाइन अतीस रेंड़ी नील नीलकमल इनसबकेद्वारा काँजी सहित तेलको पाक करके पान नस्य तथा मर्दन करनेसे आमबात कृमिवायगोला प्लीहा उदर शिरकेरोग मंदाग्नि पक्षाघात सन्धि तथा अंडकोशोंमें गईहुई बात और ऊरुस्तंभकानाश होताहै इतिमहा सैंधवादि तैल॥ ५९४॥

द्वेपलेसैन्धवात्पञ्चशुण्ठ्याग्रन्थिकचित्रकात् । द्वेद्वेभल्लातकास्थीनिविंशतिर्द्वेतथाऽढ़के ॥ आरनालात्पञ्चप्रस्थंतैलस्यैरण्डजस्यच।गृध्रस्यूरुग्रहास्यार्तिसर्ववातविकारनुत् ॥ इति सैन्धवाद्यंतैलम् ॥ इति ऊरुस्तम्भनिदानचिकित्साधिकारः ॥ ५९५ ॥

सैंधानोन २ पल सोंठ ५ पल पीपलामूल तथा चीता दो २ पल भिलावेंके बीज २० आरनाल २ आढ़क इनसब औषधियोंके द्वारा एक प्रस्थ रेंड़ीके तेलको विधि पूर्वक पाक करके सेवनकरनेसे गृध्रसी ऊरुस्तंभ और सबप्रकारके बातरोग नष्ट होते हैं इति सैंधवादि तैल इति ऊरुस्तंभ निदान चिकित्साधिकार ॥ ५९५ ॥

अथाऽमबाताधिकारः। तत्रामवातस्यनिदानपूर्व्विकांसम्प्राप्तिमाह ॥

विरुद्धाहारचेष्टाभ्यांमन्दाग्नेर्लोलुपस्यच । स्निग्धंभुक्तवतोह्यन्नंव्यायामंकुर्वतस्तथा ॥ वायुनाप्रेरितोह्यामश्लेष्मस्थानंप्रधावति । तेनात्यर्थमपक्वोऽसौधमनीभिःप्रपद्यते ॥ वातपित्तकफैर्भूयोदूषितःसोऽन्नजोरसः । स्रोतांस्यभिष्पन्दयतिनानावर्णोतिपिच्छि

लः ॥ जनयत्यग्निदौर्बल्यंहृदयस्यचगौरवम् । व्याधीनामाश्रयंह्येषआमसंज्ञोऽतिदारुणः ॥ विरुद्धाहारचेष्टस्यविरुद्धाहारःक्षीरमत्स्यादिः विरुद्धचेष्टाभुक्ताव्यायामादितयायुक्तस्यानिश्चलस्यानिर्व्यायामपरस्य । स्निग्धंभुक्तवतोह्यन्नंव्यायामंकुर्वतइतिमिलितोहेतुः ॥ श्लेष्मस्थानम्आमाश्रयसन्ध्यादि तेनश्लेष्मस्थानगमनेन । अत्यन्तअपक्कः ॥ पित्तस्थानगमनेनपक्कोभविष्यति । इत्यभिप्रायः ॥ असौआमःधमनीभिःप्रपद्यते । धमनीमार्गैश्चलति ॥ भूयोदूषितःअतिशयेनदूषितः । सोऽन्नजोरसःआमाःस्रोतांसिअभिष्पन्दयतिसंस्रित्यरसवहाशिरावरोधंकृत्वास्रोतांसिगुरूणिकुर्यात् ॥ नानावर्णःवातादिजनितवर्णभेदान्नानावर्णः ॥५९६॥

आमबातका अधिकार । आमबातकी निदान पूर्व्वक संप्राप्ति ॥

मिलेहुये दूध मछली आदि विरुद्ध भोजनसे भोजनके अन्तमें व्यायामआदि विरुद्ध चेष्टाओंसे मंदाग्निसे व्यायाम न करने से और स्निग्ध भोजन करके व्यायाम करने से बायुके द्वारा प्रेरणा कियागया आमरस कफके स्थान आमाशय तथा सन्धि आदिकोंमें प्राप्त होताहै फिर कफके स्थान में जानेसे अत्यन्त नहीं पकाहुआ यह आमरस नाडियोंके द्वारा चलकर बात पित्त तथा कफकेद्वारा फिर अत्यन्त दूषित होकर स्रोतोंमें स्थित होताहुआ रसकी लेचलनेवाली नाडियोंको रोकता है और भारीपन अनेक प्रकारके रंग तथा चिकनेपनको धारण करता है इसमें मंदाग्नि दुर्बलता तथा हृदयमें भारीपन यहसब होतेहैं और यहभयंकर आम अनेक प्रकारके रोगोंका स्थान है ॥ ५९६ ॥

अथामस्य लक्षणमाह ॥

अजीर्णात्तयोरसोजातःसञ्चितोहिक्रमेणवै।आमसंज्ञाःसलभतेशिरोगात्ररुजाकरः॥ अजीर्णात्भुक्तादजीर्णात्॥५९७॥ आमका लक्षण ॥

अजीर्ण से उत्पन्न हुआ जो रस क्रमसे इकट्ठा होकर मस्तक तथा शरीर में पीड़ा को उत्पन्न करता है उसको आम कहते हैं ॥ ५९७ ॥

अथामवातस्यसामान्य लक्षणमाह ॥

युगपत्कुपितावेतौत्रिकसन्धिप्रवेशकौ । स्तब्धञ्चकुरुतोगात्रमामवातःसउच्यते॥ एतौवातकफौत्रिकसन्धिप्रवेशकौवेदनयेतिबोद्धव्यम् । तंत्रान्तरेतस्यैवलक्षणमाह ॥ अङ्गमर्दोऽरुचिस्तृष्णाआलस्यंगौरवंज्वरः । अपाकःशून्यताङ्गानामामवातस्यलक्षणम्॥ विशेषार्थमस्यसंग्रहः ॥ ५९८ ॥

आम वातका सामान्य लक्षण ॥

कफ और बात एक साथ कुपित होकर त्रिक् संधियों में पीड़ा सहित प्रवेश करते हुए शरीरमें स्तब्धता उत्पन्न करतेहैं इसको आमबात कहते हैं तन्त्रान्तरमें कहा हुआ है कि शरीर में पीड़ा अरुचि तृषा आलस्य शरीरका भारीपन ज्वर अन्नका न पकना और अंगों में सूजन यह आमबात के लक्षण हैं ॥ ५९८ ॥

अस्यैववाताधिकस्य लक्षणमाह ॥

सकष्टःसर्वरोगाणांयदाप्रकुपितोभवेत् । हस्तपादशिरोगुल्फत्रिकजानूरुसन्धिषु ॥

करोतिसरुजंशोथंयत्रदोषःप्रपद्यते। सदेशोरुज्यतेऽत्यर्थंव्याविद्धःइवचृश्चिकैः ॥ जनयेत्सोऽग्निदौर्बल्यंप्रसेकारुचिगौरवम्। उत्साहहानिर्वैरस्यंदाहञ्चबहुमूत्रताम्। कुक्षौकठिनतांशूलंतथानिद्राविपर्ययम् ॥ तृट्छर्दिभ्रममूर्च्छाचहृद्ग्रहंविड्विबद्धताम्। जाड्यान्त्रकूजमानाहंकष्टांश्चान्यानुपद्रवान् ॥ यदाप्रकुपितोभवत्प्रकर्षेणकुपितःस्यात् तदावक्ष्यमाणानुपद्रवान्करोति। हस्तेयेतादियत्रदोषःदुष्टःआमःप्रपद्यतेगच्छति ॥ तानाहजाड्यम्। अकर्मण्यत्वम्॥ अन्यानुपद्रवान्। कलापखञ्जत्वादीन् ॥ ५९९ ॥

बहुत बढेहुये आमबात के लक्षण ॥

आमबात जब बहुत बढता है तब आगे कहे हुये उपद्रव होते हैं और उपद्रव सहित आम बात सबरोगोंकी अपेक्षा अधिक कष्ट साध्य होताहै हाथपैर मस्तक टकना त्रिकघुटने जंघातथा सन्धियोंमें पीड़ा सहित सूजन जिस जिस स्थानमें दूषित आमजाय उस उस स्थानमें बिच्छू काटने कीसी पीड़ा मंदाग्नि मुखसे पानी बहना अरुचि शरीर का भारीपन उत्साह कानाश मुखकी बिरसता दाहबहुत मूत्र कोखमें कठिनतातथा शूल निद्राका नाश तृषा छर्दि भ्रम मूर्च्छा हृदयमें पीड़ा मलका रुकना शरीरमें जडता उदरमें गडगडाहट आनाह और कलापखंज आदिक अन्य दुखदायी उपद्रव होतेहैं ५९९॥

तस्यैवविशिष्टानि लक्षणान्याह ॥

पित्तात्सदाहरोगञ्चसशूलंपवनात्मकम्। स्तिमितंगुरुकण्डूकंकफजुष्टंतमादिशेत्॥ गुरुकण्डूकम्बहुकण्डूकम् ॥ ६०० ॥

आमबात के बिशेष लक्षण ॥

पित्त से हुये आमबात में दाह तथा शरीरका रक्तवर्ण होना बातज में अत्यन्त पीड़ा और कफज आमबातमें शरीरकागीले कपड़ेसे ढकाहुआ सा मालूमपड़ना तथाबहुत खुजली होतीहै ६०० ॥

तस्यसाध्यत्वादिकमाह ॥

एकदोषानुगःसाध्योद्विदोषोयाप्यउच्यते। सर्वदेहचरैःशोथैःसकष्टःसान्निपातकः॥६०१॥

आमबात के साध्यादि लक्षण ॥

एकदोष वाला साध्य दोदोष वाला याप्य और संपूर्ण अंगोंमें सूजन सहित तीन दोषवाला आमबात असाध्य होता है ॥ ६०१ ॥ तत्रआमवातस्यचिकित्सा ॥

लंघनंस्वेदनंतिक्तंदीपनानिकटूनिचविरेचनंस्नेहनञ्चवस्तयश्चाममारुते ॥ रूक्षःस्वेदोविधातव्योवालुकापुटकैस्तथा। उपनाहाश्चकर्तव्यास्तेऽपिस्नेहाविवर्जिताः ॥ आमवाताभिभूतायपीडितायपिपासया। पञ्चकोलेनसंसिद्धंपानीयंहितमुच्यते ॥ शुष्कमूलकयूषंवायूषंवापाञ्चमौलिकम्। रसकंकाञ्जिकंवापिशुण्ठीचूर्णावचूर्णितम् ॥ सौवीरंश्विन्नवार्त्ताकिंतथातिक्तफलानिच। वास्तूकशाकंसारिष्टशाकंपौनर्नवंहितम् ॥ पटोलंगोक्षुरञ्चैववरुणंकारवेल्लकम्। यवान्नंकोरदूषान्नंपुराणंशालिषष्ठिकम् ॥ लावकानांतथामांसंहितंतक्रेणसंस्कृतम्। हितश्चयूषःकौलत्थःकलायश्चणकस्यच ॥ रुच्यंदद्याद्यथासात्म्यमामवातहितञ्चयत् ॥ ६०२ ॥

आमबातकी चिकित्सा ॥

लंघन स्वेदन तिक्त कटु तथा दीपनबस्तुविरेचन स्नेहपान और बस्तिक्रिया आम बातमें हितकारी हैं बालूकी पोटलियों से रूखा स्वेद और स्नेह रहित बस्तुओंका उबटन करना चाहिये आमबात में तृषा अधिक होनेपर पंचकोलके द्वारा पाक किया हुआ जल सूखी मूली का यूष पंचमूल का यूष मांसका रस अथवा सोंठके चूर्णसे युक्त काँजी का पान कराना चाहिये सौवीर गिलोय बैंगन तिक्त फल बथुई नींब पुनर्नवाका शाक परवल गोखुरू बरुणा करेला जो कोदों पुराने शालिधान्य तथा सांठी मट्ठे में पाक किया हुआ लवाका मांस और कुलथी मटर तथा चनेका यूष और अन्य हित-कारी तथा रुचिकारी बस्तु आमबात में देनी चाहिये ॥ ६०२ ॥

शतपुष्पावचाविश्वश्वदंष्ट्रावरुणात्वचः । पुनर्नवासदेवाङ्कसटीमुण्डितिकाःसमाः ॥ प्रसारणीवतर्क्कारी फलञ्चमदनस्यच । सुक्तकाञ्जिकपिष्टाच कोष्णाचलेपनेहिता ॥ अ हिंस्राकेबुकान्मूलं शिग्रूर्वल्मीकमृत्तिका । मूत्रपिष्टैश्चकर्त्तव्यमुपनाहः प्रलेपनम् ६०३॥

सौंफ बच सोंठ गोखुरू बरुणाकी छाल पुनर्नवा देवदारु कचूरमुंडी गन्धप्रसारणी जयन्ती तथा मैनफल इनको सिरकेमें तथा कांजीमें पीसकर गरम २ लेपकरनेसे और कुलेखाड़ा केतकीकीजड़ सहजना तथा बामीकीमिट्टी इनसबको गोमूत्रमें पीसकर लेपकरनेसे आमबातका नाशहोताहै ६०३॥

चित्रकंकटुकापाठा कलिंगातिविषामृता देरुदारुवचामुस्तनागरातिविषाभया । पि वेदुष्णाम्बुनानित्यमामवातस्यभेषजम् ॥ शटीशुंठ्यभयाचोग्रादेवाह्वातिविषामृताः । क षायमामवातस्य पाचनंरूक्षभोजनम् ॥ पुनर्नवाचबृहती बर्द्धमानकणिज्जकैः । कल्पये त्क्काथमामेमूर्वाशिग्रुद्रुमैर्भिषक् ॥ सेचनञ्चामवातस्य रूबुकपयसापिवा ।लिह्यात्पथ्यां सविश्वांवा मूत्रैर्व्वागुग्गुलुंपिवेत् ॥ विश्वालम्बुषयोःकल्कमद्याद्वातिलविश्वयोः । विश्व पथ्यामृताक्काथं कवोष्णंकौसिकान्वितम्॥कटीजङ्घोरुपृष्ठानां रुजंपीतंनिवर्त्तयेत्६०४॥

चीता कुटकी पाठा इन्द्रयव अतीस तथा गिलोय अथवा देवदारु बच मोथा सोंठ अतीस तथा हड इनसबको पीसकर गरमजलके साथ नित्य पीनेसे कचूर सोंठ हड बच देवदारु अतीस तथा गिलोय इनसबके काढ़ेको पीनेसे पुनर्नवा भटकटैया रेंडी तथा मरुआ अथवा मरोड़फली सहजन तथा पारिजात के द्वारा काढ़ा बनाकर पीनेसे रेंडीको दूधमें पाककर सेवन करने से अथवा गोमूत्र के साथ गूगुलपीने से हड़ तथा सोंठके चाटने से और सोंठ तथा लजालूका चूर्ण अथवा तिल तथा सोंठके कल्कको खानेसे आमबातका नाश होता है सोंठ हड़ तथा गिलोय इनके काढ़ेमें गूगुल डालकर कुछ गरम २ पीनेसे कमर पिंडली जंघा तथा पीठकी पीड़ाका नाश होता है ॥ ६०४ ॥

हिंगुचव्यंविड़ंशुण्ठी कृष्णाजाजीसपुष्करम्। भागोत्तरमिदंचूर्णंपीतंवातामाजिद्भवेत् इतिहिंग्वाद्यंचूर्णम् ६०५ ॥

हींग १ भा० चव्य २ भा० विट्नौन ३ भा० सोंठ ४ भा० पीपल ५ भा० कालीजीरी ६ भा० और पुष्करमूल ७ भा० इनसबके चूर्णको गरम जलके साथ पीने से आमबातका नाश होता है इति हिंग्वादि चूर्ण ॥ ६०५ ॥

पिप्पलीपिप्पलीमूलंसैन्धवंकृष्णजीरकम् । चव्यचित्रकतालीसपत्रकंनागकेशरम्॥

एषांद्विपलिकान्भागान् पंचसौवर्च्चलस्यच । मरिचाजाजिशुण्ठीनामेकैकस्यपल्लंपलम् ॥ दाडिमात्कुडवञ्चैव द्वेपलेचाम्लवेतसात् । सर्व्वमेकत्रसंक्षुद्य योजयेत्कुशलो भिषक् ॥ पिप्पल्यादिमितिख्यातं नष्टस्याग्नेश्चदीपनम् । अर्शांसिग्रहणीगुल्ममुदरंसभगंदरम् ॥ क्रिमिकण्ड्वरुचींहन्यात् सुरयोष्णोदकेनवा ॥ नातःपरतरंकिञ्चिदामवातस्यभेषजम् । इतिपिप्पल्याद्यं चूर्णम् ६०६ ॥

पीपल पीपलामूल सेंधानोन कालाजीरा चव्य चीता तालीस तथा नागकेशर यहसब आठ २ तोले कालानोन २० तोले मिर्च कालीजीर तथा सोंठ एक २ पल अनार १ कुड़व और अमलबेद २ पल इनसब औषधियोंको एक साथ कूटकर सुरा अथवा गरम जलके साथपीने से मन्दाग्नि बवासीर ग्रहणी गोला उदर भगन्दर क्रमि खुजली तथा अरुचिका नाशहोता है इस्से बढ़कर आमवात की कोई औषधि नहींहै इति पिप्पल्यादिचूर्ण ॥ ६०६ ॥

पथ्याविश्वयवानीभिस्तुल्याभिश्चूर्णितंपिवेत् । तक्रेणोष्णोदकेनापिकाञ्जिकेनाथवा पुनः ॥ आमवातंनिहन्त्याशु शोथंमन्दाग्नितामपि । पीनसंकासहृद्रोगं स्वरभेदमरोचकम् इति पथ्याद्यं चूर्णम् ॥ ६०७ ॥

हड़ सोंठ तथा अजवाइन इनसबको बराबर लेकर चूर्ण करके मट्ठे उष्ण जल अथवा कांजी के साथ पीनेसे आमबात सूजन मन्दाग्नि पीनस खांसी हृदयके रोग स्वर भेद तथा अरुचिका नाश होताहै इति पथ्यादि चूर्ण ॥ ६०७ ॥

रसोनविश्वनिर्गुण्डी क्वाथमामार्दितःपिवेत् । नातःपरतरंकिञ्चिदामवातस्यभेषजम् इति रसोनादि कषायः ॥ ६०८ ॥

लहसन सोंठ और निर्गुंडीके काढ़ेके पीनेसे आमबातका नाशहोताहै इस्से बढ़कर आमबात की और औषधि नहींहै इति रसोनादिकषाय ॥ ६०८ ॥

रास्नांगुडूचीमेरण्डं देवदारुमहौषधम् । पिवेत्सर्वांगिके वाते सामेसन्ध्यास्थिमज्जगे ॥ इति रास्नापञ्चकः ॥ ६०९ ॥

रासना गिलोय रेंड़ी देवदारु और सोंठ इनकेकाढ़ेको पीनेसे सर्वांग संधि अस्थि तथा मज्जा में प्राप्तहुए आमबातका नाशहोता है इति रासना पंचक ॥ ६०९ ॥

पिप्पलीपिप्पलीमूलचव्यचित्रकनागरैः । क्वथितंवारितत्पेयमामवातविनाशनम् ॥ शठीविश्वौषधीकल्कं वर्षाभूक्वाथसंयुतम् । सप्तरात्रंपिवेज्जन्तुरामवातविनाशनम् ॥ इति शट्यादिः ॥ ६१० ॥

पीपल पीपलामूल चव्य चीता तथा सोंठ इनके काढ़ेके पीनेसे आमबातका नाशहोता है कचूर औरसोंठके कल्कको पुनर्नवाके काढ़ेकेसाथ सातदिनपीनेसे आमबातकानाशहोताहै इतिशट्यादिः६१०

रास्नामृतारग्वधदेवदारुत्रिकण्टकैरण्डपुनर्नवानाम् । क्वाथंपिवेन्नागरचूर्णमिश्रंजङ्घोरुपार्श्वत्रिकपृष्ठशूली ॥ इति रास्नासप्तकः ॥ ६११ ॥

रासना गिलोय अमलतास देवदारु गोखुरू रेंड़ी और पुनर्नवा इनकेकाढ़ेमें सोंठका चूर्णमिलाने से पिंडली जंघा पसली त्रिक तथा पीठकाशूल नष्टहोताहै इतिरासनासप्तक ॥ ६११ ॥

आमवातेकणायुक्तंदशमूलीजलंपिवेत् । खादेद्वाप्यभयाविश्वंगुडूचीनागरेणवा ॥ चित्रकेन्द्रयवापाठाकटुकातिविषाभया । आमाशयोत्थवातघ्नंचूर्णपेयंसुखाम्बुना६१२॥

दशमूल के काढ़ेमें पीपल डालकर पीने से सोंठ तथा हड़के खाने से अथवा सोंठ के साथ गिलोय के सेवनसे चीता इन्द्रयव पाठा कुटकी अतीस तथा हड़ इनके चूर्णको गरम जलके साथ पीने से आमबात का नाश होताहै ॥ ६१२ ॥

पुनर्नवामृताशुण्ठीशताह्वाव्हदारकम् । शटीमुण्डितिकाचूर्णमारनालेनपाययेत् ॥ आमाशयोत्थवातघ्नंचूर्णंपेयंसुखाम्बुना । आमवातंनिहन्त्याशुगृध्रसीमुद्धतामपि ॥ इति पुनर्नवादिचूर्णम् ॥ ६१३ ॥

पुनर्नवा गिलोय सोंठ सौंफ बिधारा कचूर और मुंडी इनसबके चूर्णको आरनाल अथवा गरम जलके साथ पीनेसे आमबात तथा बढ़ीहुई गृध्रसीका शीघ्रनाश होताहै इतिपुनर्नवादि चूर्ण६१३॥

कर्षनागरचूर्णस्यकाञ्जिकेनपिबेत्सदा । आमवातप्रशमनंकफवातहरंपरम् ॥ पंचकोलकचूर्णन्तुपिबेदुष्णेनवारिणा । मन्दाग्निशूलगुल्मामकफारोचकनाशनम् ॥ आमवातगजेन्द्रस्यशरीरवनचारिणः । एकएवनिहन्त्याशुएरण्डस्तैलकेशरी ॥ एरण्डतैलयुक्तांहरीतकींभक्षयेन्नरोविधिवत् । आमानिलार्तियुक्तोगृध्रसीवृद्ध्यर्दितोनियतम् ॥ आरग्वधस्यपत्राणिभृष्टानिकटुतैलतः । आमघ्नानिनरःकुर्यात्सायंभक्ताव्हतानिच ॥६१४॥

१ तोले सोंठ के चूर्णको कांजीके साथ नित्यपीने से आमबात कफ तथा बातका नाश होताहै पंचकोलके चूर्णको गरम जल के साथ पीनेसे मंदाग्नि शूल गोला आमदोष कफ तथा अरुचि का नाश होताहै शरीर रूपीवनमें बिचरने वाले आमबात रूपी हाथीको केवल रेंड़ीका तेल रूपी सिंह मारता है रेंड़ीके तेलके साथ हड़के चूर्णको खानेसे आमबात गृध्रसी वृद्धि तथा अर्दित रोगका नाश होताहै अमलतास के पत्तोंको कडुए तेलमें भूनकर सायंकालके भोजनके साथ खानेसे आमबात का नाश होताहै ॥ ६१४ ॥

वायुकट्याश्रितःशुद्धःसामोवाजनयेद्रुजम् । कटीग्रहःसएवोक्तःपंगुसक्थोर्द्वयोर्वधात् ॥ शुण्ठीगोक्षुरकक्काथःप्रातःप्रातर्निषेवितः । सामेवातकटीशूलेपाचनंरुक्प्रणाशनम् ॥ यवक्षारसमायुक्तंमूत्रकृच्छ्रविनाशनम् । दशमूलीकषायेणपिवेद्वानागरम्भसा ॥ कटीशूलेषुपातव्यंतैलमेरण्डसम्भवम् । महौषधगुडूच्योश्चक्काथंपिप्पलिसंयुतम् ॥ पिबेदामेसरुक्कोष्ठेकटीशूलेविशेषतः । विशोध्यैरण्डबीजानिपिष्ट्वाक्षीरेविपाचयेत् ॥ तत्पायसंकटीशूलेगृध्रस्यांपरमौषधम् । सर्पिस्तैलंगुडंसुक्तंपञ्चमंविश्वभेषजम् ॥ पीतमेतद्भवेत्सद्यस्तर्पणंकटिशूलनुत् । नहिचैतत्समंकिंचिन्निरामेकटिमारुते ॥ शुक्तरुवल्कलसहितंगोमूत्रंस्थापितन्तुसप्ताहम् । हिंगुवचाशतपुष्पासैन्धवयुक्तेनतेनाथ ॥ तत्पुटपक्कंहन्यात्कटीरुजंदारुणंपुंसाम् । आममेदोवृद्धिभवान्विकारांश्चानिलोद्भवान् ॥ ६१५ ॥

आमयुक्त अथवा केवल वात कमरमें स्थित होकर जो पीड़ाको उत्पन्न करती है उसको कटिग्रह कहतेहैं और दोनों जंघाओंके नाशहोनेसे पंगुता होतीहै सोंठ तथा गोखुरूके काढ़ेको प्रातःकाल पीने से आमवात में आम का पाक और कटिग्रह में पीड़ा का नाश होताहै और इसमें जवाखार डालकर पीने से मूत्रकृच्छ्र का नाश होताहै दशमूल का काढ़ा सोंठका काढ़ा अथवा रेंडी का तेल पीने से आमवात का नाश होता है सोंठ और गिलोय के काढ़े में पीपल डालकर पीने से आमवात कोष्ठ की पीड़ा और विशेष करके कमर के शूल का नाश होता है रेंडी के बीजों को छील कर पीसकर दूध में खीर बनाकर खाने से गृध्रसी तथा कटिशूल का नाश होता है घी तेल गुड़ सिरका और सोंठ इनको पीने से शीघ्रही तृप्ति और कमर के शूल का नाश होताहै आम रहित कमर के शूल की इस्से बढ़कर और कोई औषधि नहीं है सिरसकी छालको सातदिन तक गोमूत्र में भिगोवे फिर इस में हींग वच सौंफ और सेंधानोन मिलाकर पुटपाक करे इसके सेवन से भयंकर कमर की पीड़ा आम दोष मेदकी वृद्धि से हुए रोग और वातके विकार नष्टहोते हैं ॥ ६१५॥

अमृतानागरगोक्षुरुमुण्डितिकावरुणकैःकृतंचूर्णम् । मस्त्वारनालपीतंसामानिलनाशनंस्यातम् ॥ इतिअमृताद्यंचूर्णम् ॥ ६१६ ॥

गिलोय सोंठ गोखुरू मुंडी और वरुणाकी छाल इनसबके चूर्णको दहीके तोड़ अथवा आरनाल के साथ पीने से आमवातका नाशहोताहै ॥ इतिअमृतादि चूर्ण ॥ ६१६ ॥

अलम्बुषागोक्षुरकंत्रिफलानागरामृताः । यथोत्तरंभागवृद्ध्याश्यामाचूर्णञ्चतत्समम् ॥ पिवेन्मस्तुसुरांतत्रकाञ्जिकोष्णोदकेनवा । आमवातंजयत्याशुसशोथंवातशोणितम् ॥ त्रिकजानूरुसन्धिस्थज्वरारोचकनाशनम् । अलम्बुषादिकंचूर्णरोगानीकविनाशनम् ॥ हरीतक्यक्षधात्रीभिःप्रसिद्धाःत्रिफलाक्रमात् । प्रत्येकंतेनवायुज्याद्भागवृद्धिंयथोत्तरम् ॥ इतिअलम्बुषादिचूर्णम् ॥ ६१७ ॥

मुंडी १ भाग गोखुरू २ भाग हड़ ३ भाग बहेड़ा ४ भाग आमला ५ भाग सोंठ ६ भाग और गिलोय ७ भाग इन संपूर्ण औषधियोंको पीसकर सबकी बराबर काली सारिवामिलावे दहीका तोड़ मद्य कांजी अथवा गरमजल के साथ इसके सेवन से सूजन सहित आमवात ज्वर अरुचि और त्रिक घुटने जंघातथा संधियों की पीड़ा का नाश होताहै ॥ इति अलंबुषादिचूर्ण ॥ ६१७ ॥

अलम्बुषागोक्षुरकंमूलंवरुणकस्यच । गुडूचीनागरंचेतिसमभागानिकारयेत् ॥ काञ्जिकेनतुतत्पेयंविड़ालपदमात्रकम् । आमवातेप्रवृद्धेचयोगोयममृतोपमः ॥ इतिअलम्बुषाद्यंचूर्णम् ॥ ६१८ ॥

मुंडी गोखुरू बरुणा की जड़ गिलोय और सोंठ इन सब बराबर औषधियोंको पीसकर कांजी के साथ पीनेसे बहुत बढ़ी हुई आमवात का नाश होता है ॥ इति अलंबुषादि चूर्ण ॥ ६१८ ॥

अलम्बुषागोक्षुरकंगुडूचीवृद्धदारुकम् । पिप्पलीत्रिवृतामुस्तावरुणंसपुनर्नवम् ॥ त्रिफलानागरञ्चेतिसूक्ष्मचूर्णानिकारयेत् । मस्त्वारनालतक्रेणपयोमांसरसेनवा ॥ आमवातंनिहन्त्याशुश्वयथुंसन्धिसंस्थितम् । इतिअलम्बुषाद्यंचूर्णम् ॥ ६१९ ॥

मुंडी गोखुरू गिलोय बिधारा पीपल रसौत मोथा बरुणा पुनर्नवा त्रिफला और सोंठ इन सम

भाग औषधियों को महीन पीसके दहीका तोड़ काँजी मट्ठा दूध तथा मांसके रसकेसाथ सेवन करने से आमबात और संधियों की सूजन का नाश होताहै ॥ इति अलंबुषादि चूर्ण ॥ ६१६ ॥

मणिमन्थस्यभागौद्वौयवान्यास्तद्वदेवतु । भागास्त्रयोऽजमोदायानागराद्भागपञ्चकम् ॥ दशद्वौचहरीतक्याःसूक्ष्मचूर्णीकृतंशुभम् । मस्त्वारनालतक्रेणसर्पिषोष्णोदकेनवा॥ पीतञ्जयत्यामवातंगुल्महृद्वास्तिजानूगदान् । प्लीहानंग्रन्थिशूलादीनानाहंगुदजानिच ॥ विबन्धंजाठरानूरोगानूकटीवस्तिसमुत्थितान् । वातानुलोमनमिदंचूर्णंवैश्वानरंस्मृतम् इतिवैश्वानरचूर्णम् ॥ ६२० ॥

सेंधानोन तथा अजवाइन दोदो भाग अजमोद ३ भाग सोंठ ५ भाग और हड़ १२ भाग इन सबको महीन पीसकर दहीकातोड़ आरनाल मट्ठा घी अथवा गरम जलके साथ पीनेसे आम बात गोला हृदय तथा बस्तिके रोग प्लीहा ग्रन्थि शूल आनाह बवासीर बिबन्ध और उदर तथा कमर के रोग यह सब नष्ट होते हैं यह चूर्ण बातको अधोगामी करता है ॥ इति वैश्वानर चूर्ण ॥ ६२० ॥

असीतकंमागधिकागुडूचीश्यामावराहीगजकर्णशुण्ठीः । समाधृताःकृत्स्नमिदन्तु चूर्णंपिवेत्तदुष्णोदकमण्डयूषैः ॥ तक्रैरसैर्म्मद्यसमस्तुभिर्वायथेष्टचेष्टस्यचभोजनस्य । अबाहुकंगृध्रसिखञ्जवातंविश्वाचितूनीप्रतितूनिरोगान् ॥ जंघामवातार्दितवातरक्तंकटीग्रहंगुल्मगुदामयञ्च ॥ सक्रोष्टुकंपाण्डुगरोग्रशोफंहन्यादूरुस्तम्भमुदीर्णवेगम् ॥ इति असीतकं चूर्णम्) ६२१ ॥

असीतक पीपल गिलोय कालीसारिवा बाराहीकन्द गजकर्ण और सोंठ इनसबकोसमभाग लेकर चूर्ण करके गरम जल मांड यूष मट्ठा मांस रस मद्य तथा दहीके तोड़के साथ सेवन करे इसके सेवन में कुछ भोजनादि का नियम नहीं है इसके सेवन से अपबाहुक गृध्रसी खंजबात बिश्वाची तूनी प्रतितूनी पंगु आमबात अर्द्दित बातरक्त कटिग्रह गोला बवासीर क्रोष्टुशीर्ष पांडु गरदोष सूजन और बहुत बढ़ा हुआ ऊरुस्तंभ यह सब नष्ट होते हैं ॥ इति असीतक चूर्ण ॥ ६२१ ॥

शुण्ठीनांषट्पलंपिष्टंधान्याकंद्विपलंतथा । चतुर्गुणंजलंदत्वा घृतप्रस्थंविपाचयेत ॥ वातश्लेष्मामयान् हन्यादग्निवृद्धिकरंपरम् । दुर्नामश्वासकासघ्नंबलवर्णाग्निवर्द्धनम्॥ शुण्ठीधान्यकघृतम् ६२२ ॥

सोंठ २४ तोले धनियां ८ तोले घी ६४ तोले और घीकाचौगुना जल इनसबको बिधिपूर्वक पाक करके इसघृत के सेवन से बातकफ के रोग बवासीर श्वास तथा खांसी नष्ट होती है और बलबर्ण तथा अग्नि की वृद्धि होती है ॥ इति शुंठीधान्यक घृत ॥ ६२२ ॥

सर्पिर्नागरकल्केनसौवीरं तच्चतुर्गुणम् । सिद्धमग्निकरंश्रेष्ठमामवातहरंपरम् ॥ इति शुण्ठी घृतम् ६२३ ॥

चौगुनी काँजी और सोंठ के कल्क के साथ पाक कियेहुये घीके सेवन से अग्नि की वृद्धि और आमबात का नाश होता है इतिशुंठी घृत ॥ ६२३ ॥

नागरक्वाथकल्काभ्यां घृतप्रस्थंविपाचयेत् । चतुर्गुणेनतेनाथ केवलेनजलेनवा ॥

वातश्लेष्मप्रशमनमग्निसन्दीपनंपरम् । नागरंघृतमित्युक्तंकटीशूलामनाशनम् ॥ इति शुण्ठी घृतम् ६२४ ॥

६४ तोले घीको सोंठ का कल्क डालकर चौगुने सोंठ के काढ़े अथवा केवल जलके साथ पाक करके पीने से बात कफ कमरकी पीड़ा तथा आमबात का नाश होता है और अग्निदीप्त होती है ॥ इति शुंठी घृत ६२४ ॥

हिंगुत्रिकटुकंचव्यं माणिमन्थंतथैवच । कल्कान्कृत्वातुपलिकान् घृतप्रस्थंविपाचयेत् ॥ आरनालाढ़कंदत्त्वा तत्सर्पिर्जठरापहम् । शूलंविबन्धमानाह मामवातकटीग्रहम् ॥ नाशयेद्ग्रहणीदोष मन्दाग्नेर्दीपनंपरम् । पुष्ट्यर्थंपयसासाध्यंदध्नाविण्मूत्रसंग्रहे । दीपनार्थमतिमतामस्तुनाचप्रकीर्तितं ॥ इति कांजिकषट्पलघृतम् ६२५ ॥

हींग सोंठ पीपल मिर्च चव्यतथा सेंधानोन इनसब के चार२ तोले कल्क और २५६ तोले आरनाल के द्वारा ६४ तोले घीका पाक करके सेवनकरने से उदरशूल विबन्ध आनाह आमबात कमर की पीड़ा तथाग्रहणी का नाशहोता है और अग्नि की दीप्ति होती है इसघी को चौगुने दूध के साथ पाककरने से पुष्टता दहीके साथ पाककरने से मलमूत्र के अवरोध का नाश और दही के तोड़ के साथ पाक करने से अग्नि की वृद्धि होती है ॥ इति कांजिकषट्पल घृत ॥ ६२५ ॥

शृंगवेरयवक्षारपिप्पलीमूलपिप्पलीः । पिष्ट्वाविपाचयेत्सर्पिरारनालंचतुर्गुणं ॥ शूलं विबन्धमानाहमामवातंकटीग्रहम् । नाशयेद्ग्रहणीदोषमग्निसन्दीपनंपरम् ॥ इति शृंगवेराद्यघृतम् ६२६ ॥

सोंठ जवाखार पीपलामूल और पीपल इनसबके समभाग चूर्णके द्वारा चौगुने आरनाल के साथ घीका पाककरके सेवन करने से शूल विबंध आनाह आमबात कटिग्रह तथा ग्रहणीका नाश होताहै और अग्नि दीप्त होतीहै ॥ इति शृंगबेरादिघृत ॥ ६२६ ॥

पिवेद्बिन्दुघृतंवापिधान्वन्तरमथापिवा । महाशुण्ठीघृतंवापिआमवातेपुनःपुनः ॥ यत्किञ्चिल्लेखनंसर्पिर्दीपनंपाचनञ्चयत् । ततसर्वमामवातेषुयोज्यंवामस्तुषट्पलम् ६२७

बिन्दुघृत धान्वन्तरघृत अथवा महाशुंठीघृत आमबातमें बारंबार पीना चाहिये जोघृत लेखन दीपन तथा पाचनहोय वहसब घृत और मस्तुषट्पल घृत आमबातमें देना चाहिये ॥ ६२७ ॥

अजमोदमरिचपिप्पलीविडङ्गसुरदारुचित्रकशताह्वाः । सैन्धवंपिप्पलीमूलंभागानवकस्यपलिकाःस्युः ॥ शुण्ठीदशपलिकास्यात्पलानितावन्तिवृद्धदारस्य । पथ्यापलानिपञ्चचसर्वाण्येकत्रकारयेच्चूर्णम् ॥ समगुड़वटकानदतश्चूर्णंवात्युष्णवारिणापिवतः । नश्यन्त्यामाश्वानिलजाःसर्वेरोगाःसुकष्टाश्च ॥ प्रतितूनीविश्वाचीरोगाश्चान्येऽपिगृध्रसीचोग्राः । कटिपृष्ठगुदस्फुटनञ्चैवातिजङ्घयोस्तीव्रम् ॥ श्वयथुश्चसर्वसन्धिषुयेचान्येत्वामवातसम्भूताः । सर्वेप्रयान्तिनाशन्तमइवसुर्य्यांशुविध्वस्तम् ॥ क्षुद्बोधमरोगित्वंस्थिरयौवनमथबलीपलितनाशम् । कुरुतेचतथाभ्यासाद्गुणानथान्यांस्तथासुबहून् ॥ इति अजमोदादिः ॥ ६२८ ॥

अजमोद मिर्च पीपल बायबिड़ंग देवदारु चीता सौंफ सेंधानोन तथा पीपलामूल यहसब चार२ तोले सोंठ तथा बिधारा चालीस २ तोले और हड़ २० तोले इनसब बराबर औषधियोंको पीसकर और सबका बराबर गुड़ मिलायके बड़े बनाकर खानेसे अथवा गरम जलके साथ केवलचूर्ण पीनेसे बहुत कठिन आमबात प्रतितूनी विश्वाची गृध्रसी सब संधियोंकी सूजन आमबात जनित रोग वातजरोग और कमर पीठ गुदा तथा जंघाओंकी पीड़ा इनसबका नाश होताहै और क्षुधाकी वृद्धि आरोग्यता युवावस्थाकी स्थिरता भुर्री तथा श्वेत बालोंका नाश और अन्य अन्य अनेक गुण होतेहैं इति अजमोदादि ॥ ६२८ ॥

चित्रकंपिप्पलीमूलंयवानींकारवींतथा। बिड़ङ्गमजमोदाञ्चजीरकेसुरदारुच ॥ चव्यै लासैन्धवंकुष्ठंरास्ना गोक्षुरधान्यकम् । त्रिफलामुस्तकंव्योषन्त्वगुशीरंयवाग्रजम् ॥ ता लीसपत्रंपत्रञ्च सूक्ष्मचूर्णानिकारयेत् ॥ यावन्त्येतानिचूर्णानि तावन्मात्रन्तुगुग्गुलम् । संमर्द्यसर्पिषागाढं स्निग्धेभाण्डेनिधापयेत् ॥ अतोमात्रांप्रयुञ्जीत यथेष्टाहारवानपि । अग्निमान्द्यामवातादीन्कृमिदुष्टव्रणानपि । प्लीहगुल्मोदरानाहदुर्नामानिविनाशयेत् ॥ अग्निञ्चकुरुतेदीप्तंतेजोवृद्धिंबलंतथा । वातरोगान्जयत्येषसन्धिमज्जागतानपि ॥ इ तियोगराजगुग्गुलुः ॥ ६२९ ॥

चीता पीपलामूल अजवाइन कालीजीरी बाय बिड़ंग अजमोद जीरा देवदारु चव्य इलायची सेंधानोन कूट रासना गोखुरू धनियां हड़ बहेड़ा आमला मोथा त्रिकटु दालचीनी खस जवाखार तालीस और तेजपात इनसब को समभाग सूक्ष्म पीसकर इसके बराबर गूगुल मिलावे और घीमें खूब मलकर चिकने पात्र में रखछोड़े इस औषधिको मात्राके अनुसार सेवनकर के इच्छाके अनुसार आहार करे इससे मंदाग्नि आमबात कृमि दुष्टव्रण प्लीहा गोला उदर आनाह बवासीर और संधि तथा मज्जा में गईहुई बायुके रोग यह सब नष्टहोते हैं अग्नि दीप्त होती है और तेज तथा बलकी वृद्धि होती है इति योगराज गुग्गुल ॥ ६२९ ॥

प्रसारण्याढ़केक्काथेप्रस्थोगुड़रसोमतः । पक्वःपञ्चोषणरजःयश्चस्यादामवातहाः ॥ इतिप्रसारणीलेहः ॥ ६३० ॥

गंध प्रसारणीके २५६तोलेकाढ़े में६४तो० गुड़का शर्बत पीपलामूल चीता सोंठ पीपलतथामिर्चके चूर्णको मिलाकर अवलेह पाककरे इसके सेवनसे आमबातका नाशहोताहै इतिप्रसारणीलेह ॥ ६३०

नागरस्यपलान्यष्टौघृतस्यपलविंशतिम् ।क्षीरद्विप्रस्थसंयुक्तंखण्डस्यार्द्धशतंपचेत् ॥ व्योषत्रिजातकद्रव्यात्प्रत्येकञ्चपलंपलम् । निदध्याच्चूर्णितंतत्रखादेदग्निबलंप्रति ॥ आमवातप्रशमनंबलपुष्टिविवर्द्धनम् । बल्यमायुष्यमोजस्यंबलीपलितनाशनम् ॥ आम वातप्रशमनंसौभाग्यकरमुत्तमम् इतिखण्डशुण्ठी ॥ ६३१ ॥

सोंठ ३२ तो० घी ८० तो० दूध १२८ तो० सोंठ पीपल मिर्च दालचीनी इलायचीतथा तेजपात यह सब चार २ तो० और शक्कर २०० तो० इन सबको बिधि पूर्वक पाक करके अग्निबल के अनु- सार सेवन करने से आमबात भुर्री तथा बालोंका पकना यह सब नष्ट होते हैं और बल पुष्टि आयु तथा ओज इन सबकी वृद्धि होती है और सौभाग्य होता है इति खण्ड शुंठी ॥ ६३१ ॥

पलंशतंरसोनस्यतिलस्यकुडवंतथा । हिंगुत्रिकटुकंक्षारौद्वौपञ्चलवणानिच ॥ शतपुष्पानिशाकुष्ठंपिप्पलीमूलचित्रकौ । अजमोदाजवानीचधान्यकञ्चापिबुद्धिमान् ॥ प्रत्येकञ्चपलञ्चैषांश्लक्ष्णचूर्णानिकारयेत् । घृतभाण्डेदृढेचैवस्थापयेद्दिनषोडशम् ॥ प्रक्षिप्यतैलमानीञ्चप्रस्थार्द्धंकाञ्जिकस्यच । खादेत्कर्षप्रमाणन्तुतोयंमद्यंपिबेदनु ॥ आमवातेरक्तवातेसंर्वाङ्गैकाङ्गसंस्थिते । अपस्मारेऽनलेमन्देकासेश्वासेगरेषुच ॥ सोन्मादेवातभग्नेचशूलेजंतुषुशस्यते इतिरसोनपिण्डः ॥ ६३२ ॥

लहसन ४०० तो० तिल १६ तो० हींग त्रिकटु जवाखार सज्जी पांचोंनोन सौंफ हल्दी त्रिकूट पीपलामूल चीता अजमोद अजवाइन तथा धनियां चार २ तोले इनसब औषधियों को महीन चूर्ण करके सोलह दिनतक घीके पात्रमें रक्खे फिर तेल तथा कांजी बत्तीस २ तोले उसमें मिलाकर १ तोला रोज़खाय और जल अथवा मद्य पानका अनुपान करे इसके द्वारा आमवात रक्तवात सर्वांग तथा एकांग गतवात मिर्गी मंदाग्नि खांसी श्वास गरदोष उन्माद बात भग्न शूल और कृमिरोगका नाश होताहै इतिरसोनपिण्ड ॥ ६३२ ॥

प्रसारण्यारसंसिद्धंतैलमेरण्डजंपिबेत् । सर्वदोषहरञ्चैवकफरोगहरंपरम् ॥ इतिप्रसारणीतैलम् ॥ ६३३ ॥

गंध प्रसारणी के रसके साथ पाककियेहुए रेड़ीके तेल के पीनेसे सब प्रकारके रोग और विशेष करके कफ के रोग नष्टहोतेहैं इति प्रसारणी तैल ॥ ६३३ ॥

द्विपञ्चमूलीनिर्य्यासिफलदध्यम्लकाञ्जिकैः । तैलंकट्यूरुपार्श्वार्तिकफवातामयान्ग्रहान् ॥ हन्तिवस्तिप्रदानेनकरोत्यग्निबलंमहत् । इतिद्विपञ्चमूलाद्यंतैलम् ॥ ६३४ ॥

दशमूल का काढ़ा त्रिफला खट्टादही और कांजीके द्वारा पाककिये तेलकी वस्ति देनेसे कमर जंघा तथा पसलियों की पीड़ा और कफ तथा बातके रोग निवृत्त होते हैं और अत्यन्त अग्निकी वृद्धि होतीहै इति द्विपंचमूलादि तेल ॥ ६३४ ॥

सैन्धवंश्रेयसीरास्नाशतपुष्पाजवानिका । स्वर्ज्जिकामरिचंकुष्ठंशुण्ठीसौवर्च्चलंविड़म् ॥ वचाजमोदासरणीपौष्करंमधुकंकणाम् । एतान्यर्द्धपलांशानिसूक्ष्मपिष्टानिकारयेत् ॥ प्रस्थमेरण्डतैलस्यप्रस्थन्तुशतपुष्पजम् । काञ्जिकंद्विगुणंदत्त्वामस्तुचद्विगुणंतथा ॥ एतत्सम्भृत्यसम्भारंशनैर्मृद्वग्निनापचेत् । सिद्धमेतत्प्रयोक्तव्यमामवातहरंपरम् ॥ पानाभ्यञ्जनवस्तौचकुरुतेऽग्निबलंभृशम् । वातार्त्तिवंक्षणेशस्तंकटीजानूरुसान्धिजे ॥ शूलेहृत्पार्श्वजेतद्वत्वृद्धेश्लेष्माणिपीड़िते ॥ वाह्यायामार्दितानाहैरन्त्रवृद्धिनिपीड़िते । अन्यांश्चानिलजानूरोगान्नाशयत्याशुदेहिनाम् ॥ इतिवृहत्सैन्धवाद्यंतैलम् ॥ ६३५ ॥

सेंधानोन गजपीपल रासना सौंफ अजवाइन सज्जी मिर्च कूट सोंठ कालानोन बिट्नोन बच अजमोद गंधप्रसारणी पुष्करमूल मुलहठी तथा पीपल यहसब दो २ तोले महीन पीसकर ६४ तोले सौंफका काढ़ा और कांजी तथा दहीका तोड़ एकसौ अट्ठाईस २ तोले ऊपर कहीहुई संपूर्ण वस्तुओं के साथ ६४ तोले रेडी का तेल मंदाग्नि में पाककरके पान अभ्यंग तथा वस्तिमें व्यवहार करने से

आमबात बातकेरोग बंक्षण कमर घुटने जंघा संधि हृदय तथा पसली की पीड़ा बढ़ाहुआ कफ बाह्यायाम अर्दित आनाह अन्त्रवृद्धि और अन्य २ बातरोगोंका नाश होताहै और अत्यन्त अग्निकी वृद्धि होती है इति वृहत्सैंधवादि तैल ॥ ६३५ ॥

स्वल्पप्रसारणीतैलंतैलंवासैन्धवादिकम् । दशमूलाद्यतैलेनवस्तिदानंप्रशस्यते ६३६ ॥

छोटाप्रसारणीतैल सैंधवादि तैल अथवा दश मूलादि तैलकेद्वारा बस्ति देना आमबातमेंश्रेष्ठहै६३६॥

तैलस्यद्विपलंदद्यात्काञ्जिकस्यचतुःपलम् । दशमूलरसंमूत्रंपृथक्पञ्चपलानितु ॥ वचामदनवाट्यावाशताह्वाकुष्ठसैन्धवैः । पिप्पल्यतिविषामुस्तरास्नाकट्फलपौष्करैः ॥ अक्षांशिकैश्चतत्सर्व्वमन्थयीतविचक्षणः । प्रस्थार्द्धप्रथमंदेयोवस्तिर्निरभिशङ्कितः ॥ द्वितीयेचतृतीयेचवर्जयेत्प्रसृतद्वयम् । सर्व्ववातविकारेषुमेहेषुवृषणामये ॥ कुक्षौहृत्पृष्ठपार्श्वेषुजानुजंघाकटीग्रहे । विबन्धानाहरोगेषुशर्कराश्मरिपीड़िते ॥ भग्नविश्लिष्टगात्रेषुपिच्चितेषुक्षतेषुच । एतन्निरूहवत्प्राज्ञोनिरायासोमहागुणः ॥ ६३७ ॥

तेल८तोले कांजी १६ तोले दशमूल का काढ़ा तथा गोमूत्र बीस२तोले वच मैनफल बरियारा सौंफ कूट सैंधानोन पीपल अतीस मोथा रासना कायफल और पुष्करमूल यह सब एक २ तोले इनसब औषधियोंको एक साथ मथकर पहलीबार बत्तीस तोले और दूसरी तथा तीसरीबार सोलह तोले औषधके द्वारा निरूह वस्ति देनी चाहिये इस्से सब प्रकारके बातरोग प्रमेह अण्डवृद्धि विबन्ध आनाह शर्करा पथरी अंगोंका टूटना तथा उतरना पिच्चित क्षत और कुक्षि हृदय पीठ पसली घुटने जंघा तथा कमर की पीड़ा यह सब नष्ट होतेहैं ॥ ६३७ ॥

दधिमत्स्यगुड़क्षीरंपोतकीमाषपिष्टकम् । वर्जयेदामवातार्तोमांसमानूपसम्भवम् ॥ अभिष्पन्दकरायेचयेचान्येगुरुपिच्छिलाः । वर्जनीयाःप्रयत्नेनआमवातार्द्दितैर्नरैः ६३८

दही मछली गुड़ दूध पोय उर्द पीठी अनूपमांस अभिष्पन्दी भारी तथा सचिक्कणवस्तु आमवात में यत्नपूर्वक छोड़देनीचाहियें ॥ ६३८ ॥

रास्नैरण्डशतावरीसहचरादुस्पर्शवासामृता । देवाह्वातिविषाभयाघनशटीशुण्ठीकषायःकृतः ॥ पीतःसोरुवतैलएषविहितःसामेसशूलेऽनिले । कट्यूरुत्रिकपृष्ठकोष्ठजठरःक्रोड़ेषुवामार्त्तिजित् ॥ इतिमध्यमरास्नादिक्काथः ॥ ६३९ ॥

रास्ना रेंड़ी सतावर झिंटी जवासा बांसा गिलोय देवदारु अतीस हड़ मोथा कचूर और सोंठ इनसबके काढ़े में रेंड़ीका तेलडालकर पीनेसे आमबात बातकी पीड़ा और कमर जंघा त्रिक पीठ कोष्ठ उदर तथा क्रोड़में प्राप्तहोनेवाली आमकी पीड़ाका नाशहोताहै॥इतिमध्यमरासनादिक्काथ६३९॥

रास्नावातारिमूलञ्चवासकञ्चदुरालभम् । शटीदारुबलामुस्तनागशातिविषाभयाः श्वदंष्ट्राव्याधिघातञ्चमिसिधान्यपुनर्न्नवाः । अश्वगन्धामृताकृष्णावृद्धदारुशतावरी ॥ वचासहचरश्चैवचविकाबृहतीद्वयम् । समभागान्वितैरेतैरास्नाद्विगुणभागिकैः ॥ कषायंपाययेत्सिद्धमष्टभागावशेषितम् । शुण्ठीचूर्णसमायुक्तमामाद्येनयुतंतथा ॥ अलम्बुषादिसंयक्तमजमोदादिसंयुतम् । यथादोषंयथाव्याधिप्रक्षेपंकारयेद्भिषक्॥सर्वेषुवातरोगेषु

सन्धिमज्जगतेषुच । आनाहेषुचसर्वेषुसर्वगात्रानुकम्पने॥ कुब्जकेवामनेचैवपक्षाघातेतथार्दिते। जानुजंघास्थिपीडायांगृध्रस्यांचहनुग्रहे॥ प्रशस्तंवातरक्तेस्यादूरुस्तम्भेतथार्शसि । विश्वाचीगुल्महृद्रोगविसूचीक्रोष्टुशीर्षके॥ अन्त्रवृद्धावलीपदेचयोनिशुक्रामयेतथा। पुंसांमेढ्रगतेरोगेस्त्रीणांवन्ध्यामयेतथा ॥ योषितांगर्भदंमुख्यंनास्तिकिञ्चिदतःपरम् । सर्वेषांपाचनानान्तुश्रेष्ठमेतद्धिपाचनम्॥ महारास्नादिकंनामप्रजापतिविनिर्मितम्॥ इतिमहारास्नादिक्काथः॥ ६४०॥

रासना अरंडकीजड़ बांसा जवासा कचूर देवदारु बरियारा मोथा सोंठ अतीस हड़ गोखुरू अमलतास सौंफ पुनर्नवा असगन्ध गिलोय पीपल विधारा सतावर बच भिंटी चव्य तथा दोनोंभटकटैया यह सब समभाग और रासना के दोभाग इनके अष्टमांश काढ़े में शुंठी चूर्ण आभादि चूर्ण अलंबुषादि चूर्ण अथवा अजमोदादि चूर्ण दोष तथा रोगके अनुसार डालकर पीने से संधि तथा मज्जागत सबप्रकार के वातरोग आनाह गात्रकंप कुब्जता बौनापन पक्षाघात अर्दित घुटने पिंडली तथा हड्डियों की पीड़ा गृध्रसी हनुग्रह बातरक्त ऊरुस्तंभ बवासीर विश्वाची गुल्म हृदयके रोग विशूचिका क्रोष्टुशीर्ष अन्त्रवृद्धि श्लीपद योनिरोग बीर्य्यरोग लिंगरोग तथा बंध्यापन इनसबकानाश होता है इसके द्वारास्त्रियों के गर्भरहता है और संपूर्ण पाचन औषधियों में यह अत्यन्त श्रेष्ठहै यह महारासनादिकाथ प्रजापतिने बनाया है॥ इतिमहारासनादि क्वाथ॥ ६४०॥

रास्नाविश्वविडङ्गानिरुबुकांत्रिफलातथा। दशमूलंपृथक्श्यामाक्वाथोवातामयापहः॥ अर्द्धावभेदकेत्वाढ्येअर्दितेवातखञ्जके । नेत्ररोगेशिरःशूलेज्वरापस्मारयोस्तथा ॥ मनोभ्रंशेचविविधेकथितश्चशुभप्रदम् । इतिरास्नादशमूलम् इतिआमवातनिदानचिकित्साधिकारः॥ ६४१॥

रासना सोंठ बायबिड़ंग रेंड़ी त्रिफला दशमूल और कालीसारिवा इनसबका काढ़ाबनाकर पीने से बातरोग आधासीसी ऊरुस्तंभ अर्दित बातखंज नेत्ररोग शिरकीपीड़ा ज्वर मिर्गी और उन्माद इनसबरोगोंका नाशहोता है॥ इति रासनादशमूल ॥ इति आमवातचिकित्साधिकार॥ ६४१॥

अथपित्तव्याध्यधिकारस्तत्रपित्तव्याधीनांविप्रकृष्टंनिदानमाह॥

कट्वम्लोष्णविदाहितीक्ष्णलवणक्रोधोपवासातप स्त्रीसम्भोगतृषाक्षुधाभिहननव्यायाममद्यादिभिः॥ मध्येचापिहिभोजनस्यजरताभुक्तेनमध्यक्षणे॥ मध्याह्नेरजनीनिदाघशरदोःपित्तंकरोत्यामयान् । मद्यादिभिरित्यादिशब्देनदधिमत्स्यमाषतिलातसीकाञ्जिकादीनिसंगृह्यन्ते॥ तीक्ष्णंराजिकादि । मध्येचापिहिभोजनस्ययावत्कालेनभुङ्क्तेतस्यकालस्यमध्यमभागे॥ जरताभुक्तेनभुक्तस्यजरणकालमध्येमध्यन्दिनेदिनमध्यांशे। रजनीत्रिधाविभक्तस्यदिवसस्यतथारात्रेर्मध्यमेंऽशे॥ ६४२॥

पित्तव्याधियोंका अधिकार। पित्तव्याधियों के दूरवालेकारण॥

कटु अम्ल उष्ण विदाही तीक्ष्ण तथा निमकीन वस्तु क्रोध लंघन धूप मैथुन तृषा तथा क्षुधा का रोकना व्यायाम मद्य दही मछली उर्द तिल अलसी तथा काँजी आदि भोजन का मध्य भो-

जनके पचनेका समय मध्याह्न अर्द्धरात्रि और ग्रीष्म तथा शरदऋतु ॥ इनसब कारणों से कुपित पित्तरोगोंको उत्पन्न करता है ॥ ६४२ ॥

अथ पित्तामयान्याह ॥

अकालपलितंनेत्ररक्तत्वंतस्यपीतिमा । तद्वन्मूत्रस्यपीतत्वंमलस्यापिचपीतता ॥ नखानामामरक्तत्वंतेषामपिचपीतता । दन्तानाञ्चापिपीतत्वंपीतत्वंवपुषस्तथा ॥ तमसोदर्शनञ्चापितथाचवदनाम्लता । उच्छ्वासस्योष्णताचापिधूमोद्गारस्तथैवच ॥ भ्रमःक्लमस्तथाक्रोधोदाहोभेदसमन्वितः । तेजोद्वेषश्चशीतेच्छाह्यतृप्तिररतिस्तथा ॥ भक्षितस्यविदाहश्च जठरानलतीक्ष्णता । रक्तप्रवृत्तिर्विड्भेदःपुरीषस्योष्णतातथा । मूत्रोष्णतामूत्रकृच्छ्रंशुक्राल्पत्वन्तनूष्णता ॥ स्वेदस्यचापिदौर्गन्ध्यंदेहप्रावरणंतथा । शरीरस्यावसादश्चपाकश्चवपुषस्तथा ॥ चत्वारिंशदमीपित्तव्याधयोमुनिभिर्मताः । एषांचिकित्सातु स्वप्रकरणेबोद्धव्या ॥ इतिपित्तव्याध्यधिकारः ॥ ६४३ ॥

पित्तकेरोग ॥

समयके विनाबालों का पकना नेत्रोंका लालहोना नेत्र मल तथा मूत्रका पीलापन नखों में रक्तता तथा पीतता दांत तथा शरीर का पीलापन अन्धकार सा दीखना मुखका खट्टापन श्वासकी उष्णता धुमैली डकार भ्रम ग्लानि क्रोध दाह भेद तेजसे द्वेष शीतकीइच्छा तृप्तिका न होना बेचैनी भोजन का विदाह अग्निकी तीक्ष्णता रुधिर निकलना मलभेद मल तथा मूत्रकी उष्णता मूत्रकृच्छ्र वीर्यकी अल्पता पतलापन तथा उष्णता स्वेदमें दुर्गन्ध कपड़ों में दुर्गन्ध शरीर में शिथिलता और शरीर का पकना यह चालीस पित्तके रोग मुनि लोगोंने कहेहैं इनकी चिकित्सा अपने २ प्रकरण में जाननी चाहिये इति पित्तव्याधि अधिकार ॥ ६४३ ॥

तत्र श्लेष्मव्याधीनां सामान्यतोविप्रकृष्टंनिदानान्याह ॥

गुरुमधुररसादिस्निग्धमन्दोदराग्निद्रवदधिदिननिद्राशीतनिश्चेष्टितानि । प्रथमदिवसभागेभुक्तमात्रेवसन्ते भवतिहिकफरोगोरात्रिभागेऽपिचाद्ये । मधुररसादिइत्यादिशब्देनाम्ललवणौगृह्येते ॥ निश्चेष्टितानिकायिकव्यापाराकरणम्प्रथमदिवसभागेत्रिधाविभक्तस्यंदिवसस्याद्यभागेभुक्तमात्रभुक्तस्यपाककालस्य त्रिधाविभक्तस्यप्रथमकाले कफरोगोभवति ॥ ६४४ ॥

कफ व्याधियोंके सामान्यतासे दूरवाले कारण ॥

भारी मधुर खट्टी निमकीन स्निग्ध तथा पतली बस्तु दही दिनमें सोना शीत व्यायामन करना जठराग्नि की मन्दता दिनका प्रथमभाग भोजनका अन्त वसन्तऋतु और रात्रिका पहलाभाग इन कारणोंसे कफके रोग होतेहैं ॥ ६४४ ॥ तेचोच्यन्ते ॥

प्रथमंमुखमाधुर्य्यंतथैवमुखालिप्तता । मुखप्रसेकश्चतथानिद्राधिक्यंतथैवच ॥ कण्ठघुर्घुरताचापिकटुकांक्षोष्णकामिता । बुद्धिमान्द्यमचैतन्यमालस्यंतृप्तिरेवच ॥ अग्निमान्द्यमलाधिक्यंमलशैत्यंतथैवच । मूत्राधिक्यंमूत्रशौक्ल्यंशुक्राधिक्यंतथैवच ॥ स्तैमित्यं

गौरवंशैत्यमेतएवहिविंशतिः। योगतोरूढितःप्रोक्तामुनिभिःश्लेष्मिकागदाः॥ एषांचिकित्सातुस्वप्रकरणेबोद्धव्या। इतिश्लेष्मव्याध्यधिकारः॥ ६४५॥

कफके रोग॥

मुखकी मधुरता तथा लिपाहुआ सा होना मुखसेलार बहना निद्रा की अधिकता कंठ में घुर्घुराहट कड़वी वस्तुओंमें इच्छा उष्णताकी इच्छा बुद्धिकी मन्दता अचेतन्यता आलस्य तृप्ति मन्दाग्नि मलकी अधिकता तथा शीतलता मूत्रकी अधिकता तथा शुक्लता वीर्य्यकी अधिकता शरीरका भारीपन तथा गीले कपड़ेसे ढकाहुआ सा मालूम पड़ना शीतलता यह बीसरोग मुनि लोगोंने योग तथा रूढ़िसे कफके कहे हैं इनकी चिकित्सा अपने २ प्रकरण में जाननी चाहिये इति कफ व्याधिका अधिकार॥ ६४५॥

अथ वातरक्ताधिकारमाह तत्र वातरक्तस्यविप्रकृष्टनिदानमाह॥

लवणाम्लकटुक्षारस्निग्धोष्णाजीर्णभोजनैः। क्लिन्नशुष्काम्बुजानूपमांसपिण्याकमूलकैः॥ कुलत्थमाषनिष्पावशाकादिपललेक्षुभिः। दध्यारनालसौवीरशुक्ततक्रसुरासवैः॥ विरुद्धाध्यशनाक्रोधदिवास्वप्नातिजागरैः। प्रायशःसुकुमाराणांमिथ्याहारविहारिणाम्॥ स्थूलानांसुखिनाञ्चापिप्रकुप्येद्वातशोणितम्। हस्त्यश्वोष्ट्रैर्गच्छतश्चाश्नतश्चविदाह्यन्नं सविदाहाशनस्य। कृत्स्नंरक्तंविदहत्याशुतच्चदुष्टंशीघ्रंपादयोश्चीयतेतु॥तत्संपृक्तंवायुनादूषितेनतत्प्राबल्यादुच्यतेवातरक्तम्। क्षारायवक्षारादि। अजीर्णभोजनैः अजीर्णे भोजनैः अतिमात्रभोजनैरित्यर्थः। क्लिन्नादीनि मांसविशेषणानि। शुष्कमातपे शोषितम्। अम्बुजं मत्स्यादिमांसं आनूपञ्चौड़ादिपूर्वदेशजम्। पिण्याकंतिलखलिः। मूलकं प्रसिद्धमेव। निष्पावःबोड़ा। शाकं पत्रशाकम् आदिशब्देन वृन्ताकादीन् फलशाकादीनां गृह्यते फलम्। दोषरहितमपि मांसवातशोणितं प्रकोपयेत्। शटीतादितु मांस विशेषतो वातशोणितं प्रकोपयेत्। आरनाल सौवीरशुक्तानि सन्धानभेदाः। तक्रम् चतुर्थांशं जलयुक्तं वस्त्रपूतंदधिसुरा सन्धानभेदः। विरुद्धं क्षीरमत्स्यादि। अध्यशनम् अजीर्णे भुज्यते यत्तु तदध्यशनमुच्यते। अतिजागरोनिशि। प्रायशःबाहुल्येन सुकुमाराणां। अल्पतरकाय व्यापाराणाम्। अथ च मिथ्याहारविहारिणाम्। अथाहार विहाराणां स्थूलानाम् सुखिनां रक्तवृद्ध्या। हस्त्यश्वोष्ट्रैर्गच्छतः यतःवायुर्वर्द्धतेरुधिरञ्च अधोगच्छति। हस्त्यादय उपलक्षणानि। पद्भ्यामपि चलतःअश्नतश्च विदाह्यन्नम्। विदाहि निष्पावकुलत्थसर्षपशाकादि। सविदाहाशनस्य सविदाहि अशनंयस्य। भक्तेऽविदग्धे तदुपरिभुञ्जानस्येत्यर्थःअध्यशनमुक्ताप्येतद्वचनंविदग्धंजीर्णम् भोजनस्य विशेषतोहेतुत्वार्थम्। पश्चात्वातशोणितं प्रकुप्यति इत्यन्वयः। एतेषांकारणानां मध्ये केनचिद्वायुः केनचिद्रक्तं केनचिदुभयमपि प्रकुप्येत्॥ ६४६॥

वातरक्तका अधिकार वातरक्तके दूरवाले कारण॥

लवण अम्ल तथा कटुरस जवाखारा दिक्खार स्निग्ध तथाउष्णवस्तु अधिक भोजन गलाहुआ

तथा सूखामांस मछली आदि जलके जीवोंकामांस गौड़आदि पूर्व देशकामांस तिलकी खली मूली कुलथी उर्द लोबिया पत्रशाक बैंगन आदिशाक मांस ईख दही आरनाल सौबीर सिरका तक्र सुरा आसव दूध मछलीआदि विरुद्धभोजन अजीर्णमेंभोजन क्रोध दिनमेंसोना और रात्रिमेंजागना इनसब कारणोंके द्वारा प्रायः नियमरहित आहार विहार करनेवाले सुकुमार स्थूल और सुखी हाथी घोड़े ऊंट तथा पैरोंसे चलनेवाले बिदाही अन्नखानेवाले और विदग्धा जर्णिमें भोजनकरनेवाले पुरुषोंका सम्पूर्ण रुधिर शीघ्र विदाहको प्राप्तहुआ दूषितहोकर शीघ्र पैरोंमें इकट्ठा होताहै ॥ ६४६ ॥

सम्प्राप्तिमाह ॥

कृत्स्नंरक्तंविदहत्याशु तच्च दुष्टंस्रस्तंपादयोश्चीयतेतु । तत्सम्पृक्तंवायुना दूषितेन तत् प्राबल्यादुच्यतेवातरक्तम् ॥ पूर्वोक्तैर्हेतुभिःकृत्स्नंसमस्तम् । अधोगतम् पादयोः चीयतेसञ्चितं भवति, ततरुधिरम् दूषितेन स्वहेतुभिर्वायुना सम्पृक्तं मिलितम् वात रक्तं उच्यते । ननुचैतस्यसम्प्राप्तिरुक्ता सुश्रुतेन । शीघ्रंरक्तंदुष्टिमायातितच्च वायोर्मार्गं संरुणद्ध्याशु वातं । क्रुद्धोऽत्यर्थं मार्गरोधात् सवायुरत्युद्रिक्तं दूषयेद्रक्तमाशु ॥ अत्र प्रथमंरक्तस्य दुष्टिरतो रक्तवातमिति व्यपदेष्टुमुचितं भवति । तत्राह ततप्राबल्यादिति । तस्यवातस्य दोषत्वेन प्राधान्याद्वातरक्तमिति । व्यपदिश्यते ॥ ६४७ ॥

बातरक्तकी संप्राप्ति ॥

पहले कहेहुए कारणोंसे संपूर्ण रुधिर विदग्ध तथा दूषित होकर नीचेगयाहुआ पैरोंमें इकट्ठा होताहै फिरवह रुधिर अपने कारणोंसे दूषितहुई बायुसे मिलकर बातरक्त कहलाताहै सुश्रुतने कहाहै कि शीघ्रही दूषितहुआ रुधिर बायुके मार्गोंको रोकताहै और मार्गकेरुकनेसे कुपितहुई बायु बहुत बढ़ेहुए रुधिरको दूषित करतीहै यहाँ पहले रुधिरका कोपहोताहै इसलिये रक्तबात कहना उचितहै परन्तु बायुके दोषहोनेकेकारण प्रधानतासे बातरक्त कहतेहैं ॥ ६४७ ॥

पूर्व्वरूपमाह ॥

स्वेदोऽत्यर्थंनवाकार्श्यं स्पर्शाज्ञत्वंक्षतेऽतिरुक् । सन्धिशैथिल्यमालस्यं सदनंपिड़िकोद्गमः ॥ जानुजङ्घोरुकट्यंसहस्तपादाङ्गसन्धिषु । निस्तोदःस्फुरणंभेदो गुरुत्वंसुप्तिरेवच ॥ कण्डूसन्धिषुरुग्दाहो भूत्वानश्यतिचासकृत् । वैवर्ण्यंमण्डलोत्पत्तिर्वातासृक्पूर्वलक्षणम् ॥ धर्मागमनमत्यर्थं भवतिनवासर्वथा भवति एतच्च व्याधिमहिम्ना कुष्ठवद्बोद्धव्यम् क्षतेऽतिरुक् यदिक्षतंस्यात् तदातत्रातिरुक् । सदनंसुप्तिः अंगानां पिड़िकाप्रादुर्भावः जान्वादिषु निस्तोदः पीड़ाविशेषः । त्वक् कान्तिक्षयः ॥ ६४८ ॥

वातरक्तका पूर्वरूप ॥

वातरक्त होनेसे पहले बहुत स्वेद निकलना अथवा न निकलना शरीरका कालापन स्पर्शका न जानना शून्यता घावमें बहुत पीड़ा इन्द्रियों में शिथिलता आलस्य फुंसी निकलना घुटने पिंडली जंघा कमर कंधे हाथ पैर तथा सन्धियों में पीड़ा अंगोंका फड़कना भेद भारीपन सुन्न होजाना खुजली सन्धियों में पीड़ा कभी कभी दाह विवर्णता और मंडलों की उत्पत्ति यह लक्षण होतेहैं ॥ ६४८ ॥

अथ वातरक्तस्य लक्षणमाह ॥

वातेऽधिकंतत्रशूलं स्फुरणंतोदनंतथा । शोथस्यरौक्ष्यंकृष्णत्वं श्यावतावृद्धिहानयः॥ धमन्यंगुलिसन्धीनां सङ्कोचोऽङ्गग्रहोऽतिरुक् । शीतद्वेषानुपशयौस्तम्भवेपथुसुप्तयः ॥ तत्र पादयोःशूलादिकम् । यतश्चाह सुश्रुतः । स्पर्शोद्विग्नौ तोदभेदप्रशोफौ स्वापोपेतौ वात रक्तेन पादाविति । तथा शोथस्य रौक्ष्यादिकं वृद्धिहानयश्च विज्ञेयाः अथ सुप्तिः स्पर्शाज्ञता ॥ ६४९ ॥ वातरक्तके लक्षण ॥

अधिक वात वाले वातरक्तमें दोनों पैरोंमें बहुत शूल फड़कना सुई गड़ने कीसी पीड़ा होतीहै रूखी काली तथा धुमैली सूजन कभीबढ़ीहुई अथवा कभी घटीहुई होती है उंगलियों की सन्धिकी नाड़ी संकुचित होती हैं शरीरमें पीड़ा जकड़ना कम्प तथा शून्यता होती है और शीत तथा द्वेषसे यह रोग बढ़ताहै ॥ ६४९ ॥ अधिकं रक्तवातरक्तमाह ॥

रक्तेशोथोऽतिरुक्तोदस्ताम्रश्चिमिचिमायते । स्निग्धरूक्षैःशमंनैतिकण्डूक्लेदसमन्वितः ॥ रक्तेऽधिके इत्यनुवर्त्तनीयम् । एवंवक्ष्यमाणपित्तादिष्विति एतच्चारम्भकंरक्ताद्रक्तान्तरंवोद्धव्यंरक्तमपिरक्तान्तरदूषकंभवति ॥ यदुक्तंदुष्टरक्तलक्षणम् । पित्तवद्रक्तेनातिकृष्णञ्चेति ॥ अतिरुक्तोदःअतिरक्तादौयत्रसःशोथःचिमचिमायते । चिमचिमेति कण्डूभेदःस्पर्शप्रियेतियावत्चुहचुहाइतिलोकेतद्युक्तः । क्लेदसमन्वितःक्लेदआर्द्रतातद्युक्तः ॥ ६५० ॥ अधिक रक्तवाले वातरक्तका लक्षण ॥

अधिक रक्तवाले वातरक्तमें सूजन बहुत पीड़ा सुईकासा गड़ना चिमचिमाहट ताम्रवर्ण खुजली और गीलापन होताहै यह रोग स्निग्ध और रूखे उपायों से शान्त नहीं होताहै ॥ ६५० ॥

अधिकपित्तंतदाह ॥

पित्तेविदाहःसंमोहःस्वेदोमूर्च्छामदस्तृषा । स्पर्शासहत्वंरुग्दाहःशोथःपाकोभृशोष्णता ॥ पित्तेअधिकेविदाहःविशेषेणदाहः । विदाहादयश्चपादयोरेववोद्धव्याः॥ यतश्चाहसुश्रुतःपित्तासृग्भ्यामुग्रदाहौभवेतामत्यर्थोष्णरक्तशोथौमृदूच ।पादाविति शेषःसंमोहः आतुरस्यस्वेदःपादयोःमूर्च्छापादयोःसमुच्छ्रायः शोथइतियावत् नतुमूर्च्छामोहःसंमोहस्योक्तत्वात ॥ ६५१ ॥

अधिक पित्त वाले वातरक्तका लक्षण ॥

अधिक पित्तवाले वातरक्त में पैरोंमें बहुत दाह सूजन स्वेद और पीड़ायुक्त नहीं छूनेके योग्य बहुत उष्णता युक्त पकीहुई सूजन होती है और रोगीके दाह सूजन मोह मद तथा तृषा उत्पन्न होती है ॥ ६५१ ॥ अधिककफमधिकद्विदोषमधिकत्रिदोषञ्चतदाह ॥

कफेस्तैमित्यगुरुतासुप्तिःस्निग्धत्वशीतता । कण्डूर्मन्दाचरुग्द्वन्द्वसर्वलिङ्गञ्चसङ्करे ॥ कफेअधिकेस्तैमित्यम् शरीरस्यार्द्रचर्म्मावगुण्ठितत्वमिव। गुरुतादयःपादयोरेव॥ यतआहसुश्रुतः कण्डूमन्तौश्वेतशीतौसशोथौपीनौस्तब्धौश्लेष्मदुष्टेतुरक्ते । पादा

वितिशेषः ॥ अधिकद्विदोषम्अधिकत्रिदोषम्। च तदाहद्वन्द्वेसर्वलिङ्गञ्चसङ्करेद्वित्रि दोषसंसर्गे ॥ ६५२ ॥

अधिक कफ वाले अधिक दो दोष वाले और अधिक तीनों दोष वाले वातरक्त के लक्षण ॥

अधिक कफ वाले वातरक्तमें शरीर गीले कपड़े से ढका हुआ सामालूम होताहै और दोनों पैर भारी शून्य स्निग्ध शीतल खुजली युक्त तथा कुछ २ पीड़ासे युक्त होतेहैं ऊपर कहे हुए दोदोषों के लक्षणों के मिलने से द्वंद्वज और तीनों दोषों के लक्षण मिलने से त्रिदोषज वातरक्त जानना चाहिये ॥ ६५२ ॥ पद्भ्यामन्यदप्यंगमारभ्यस्थानमाह ॥

पादयोर्म्मूलमास्थायकदाचिद्धस्तयोरपि । आखोर्विषमिवक्रुद्धंतद्देहमनुसर्प्पति ॥ आखोर्मूषकस्यआखोर्विषमिवेत्यनेनमन्दविसर्प्पत्वंबोधितम् । देहमनुपसर्प्पतिअप्रति क्रियाणाम् ॥ ६५३ ॥

पैरोंसे अन्य अंगमें ही वात रक्त होतेहैं जैसे वातरक्त कभी पैरों में अथवा कभी हाथों में उत्पन्न होकर उपाय न करनेसे कुपित होकर मूषेके विषके समानधीरे २ संपूर्ण शरीरमें फैलताहै ॥६५३॥

अथवातरक्तस्योपद्रवानाह ॥

अस्वप्नारोचकश्वासमांसकोऽथशिरोग्रहः। मूर्च्छाचाथमदस्तृष्णाज्वरमोहप्रक्षेपकाः ॥ हिक्कायांगुल्मवीसर्प्पपाकतोदभ्रमक्लमाः । अंगुलीवक्रतास्फोटदाहमर्म्मग्रहार्बुदाः ॥ मांसकोथोमांसगलनम्। मूर्च्छातदंगसमुच्छ्रायः॥ अमन्दरुक्पीड़ाबाहुल्यं। प्रवेपकःकम्पः प्रवेपनंप्रवेपःततःस्वार्थेकः ॥ ६५४ ॥

वात रक्तके उपद्रव ॥

निद्राका नाश अरुचि श्वास मांसकागलना शिरमें पीड़ा जिस अंग में वातरक्तहोय उसकी शून्यता मद तृषा ज्वर मोह कंप हिचकी पंगुता वीसर्प मांस का पकना सुई गड़ने की सी पीड़ाभ्रम ग्लानि उंगलियों काटेढ़ा पन स्फोटक दाह मर्मोंका जकड़ना और अर्बुद यह सब वातरक्तके उपद्रव हैं ॥ ६५४ ॥ अथासाध्यत्वादिकमाह ॥

एतैरुपद्रवैर्वर्ज्यंमोहेनैकेनचापितत् । अकृत्स्नोपद्रवंयाप्यंसाध्यंस्यान्निरुपद्रवम् ॥ मोहेनैकेनेतिवचनमस्वप्नादिभिः समस्तैरसाध्यत्वंबोधयति । एकदोषानुगंसाध्यंनवं याप्यंद्विदोषजम् । त्रिदोषजमसाध्यंस्याद्यस्यचस्युरुपद्रवाः ॥ नवंसम्वत्सरादर्वाचीनं तत्साध्यम्। आजानुस्फुटितंयच्चप्रभिन्नंप्रस्रुतञ्चयत् ॥ उपद्रवैश्चयज्जुष्टंप्राणमांसक्षयादिभिः । वातरक्तमसाध्यंस्यात्याप्यंसम्वत्सरोत्थितम् ॥ आजानुपद्भ्यांजानुपर्य्यन्तं यद्भवतितदसाध्यंस्यात् । स्फुटितंयच्चत्वङ्मात्रेशीतेनैवकिंचिद्विदीर्णम् ॥ प्रभिन्नम् अधिकविदीर्णम्। प्रस्रुतम्वहत् ॥ ६५५ ॥

वात रक्तके साध्य असाध्यादि लक्षण ॥

संपूर्ण उपद्रवोंसे युक्त अथवा केवल मोहही से युक्त वातरक्त असाध्य होताहै थोड़े उपद्रव वाला वात रक्त याप्य है उपद्रव रहित तथा एक दोषसे उत्पन्न हुआ नवीन वात रक्त साध्य है

द्वन्द्वज वात रक्त याप्य है और त्रिदोषज तथा संपूर्ण उपद्रवों से युक्त वात रक्तअसाध्य है जिसवात रक्त वाले के घुटने तक पैर फटगये होंय तथा बहते होंय और उपद्रवों से बल तथा मांस का क्षय होगया हो वह असाध्यहै एकवर्षका पुराना यह रोग याप्यहै ॥ ६५५ ॥

अथवातरक्तचिकित्सा ॥

वातशोणितिनोरक्तंस्निग्धस्यबहुशोहरेत्। अल्पाल्पंरक्षयेद्वायुंयथादोषंयथावलम्॥ रक्षयेद्वायुंयथावायुर्नवर्द्धतेतथारक्तंहरेदित्यर्थः । उग्रांगदाहतोदेषुजलौकोभिर्विनिर्हरेत् ॥ शृंगन्तुवैचिमचिमाकण्डूरुग्वेपनान्वितम्। प्रच्छन्नेनशिराभिर्वादेशाद्देशान्तरंव्रजेत् ॥ निर्हरेन्निष्काशयेत्चिमिचिमारचुहचुरावइतिलोके। प्रच्छन्नंपच्छनाइतिलोके। व्रजेदितिरक्तविशेषणम् । अंगेग्लानेतुनस्राव्यंरक्षेद्वातोत्तरञ्चयत् । गम्भीरंश्वयथुंस्तम्भंकम्पवायुशिरामयान् ॥ ग्लानिमन्यांश्चवातोत्थान्कुर्याद्वायुरसृक्क्षयात् । खञ्जादीन्वातरोगांश्चमृत्युञ्चानवशोषितम्॥ कुर्यात्तस्मात्प्रमाणेनस्निग्धाद्रक्तंविनिर्हरेत्६५६॥

वातरक्तकीचिकित्सा ॥

वातरक्त वाले को दोष तथा बलके अनुसार स्नेहप्रयोग करके बहुतसा रुधिर निकलवानाचाहिये परन्तु वायु न बढ़ने देवे बहुतदाह तथा सुईगडनेकीसी पीड़ा युक्त वातरक्तमें जोंकें लगवानी चाहिये चिमचिमाहट खुजली तथा कंपयुक्त वातरक्त में सिंगी लगवाना उचितहै जोरुधिर एकस्थान से दूसरे स्थानमें जाताहोय तो पछना अथवा फस्तसे रुधिरनिकलवाना चाहिये वातरक्तमें शरीरके ग्लान होनेपर और अधिकबातवाले वातरक्तमें रुधिरनहींनिकलवाना चाहिये क्योंकि रुधिरकेनाश से बढ़ी हुईवायु बहुत सूजन कंप स्तंभ वातजन्य शिरारोग ग्लानि तथा अन्यवात रोग उत्पन्न करती है बिलकुल रुधिरके निकलजानेसे खंजादिक वातरोग और मृत्युभीहोतीहै इसलिये स्नेहकासेवन करके प्रमाणके अनुसार रुधिर निकलवाना चाहिये ॥ ६५६ ॥

विरेच्यःस्नेहयित्वादौस्नेहयुक्तैर्विरेचनैः। रूक्षैर्वामृदुभिःशस्तमसकृद्वस्तिकर्म्मच ॥ नहिवस्तिसमंकिञ्चिद्वातरक्तचिकित्सितम्। वाह्यमालेपनाभ्यंगपरिषेकोपनाहनैः॥ विरेकास्थापनस्नेहपानैर्गम्भीरमाचरेत् । दिवास्वप्नंससन्तापंव्यायामंमैथुनंतथा ॥ कटूष्णगुर्वभिष्पन्दिलवणाम्लौचवर्जयेत् ॥ ६५७ ॥

वातरक्त में विरेचन तथा स्नेह प्रयोग करके स्नेहयुक्त अथवा रूखी स्वल्प विरेचन करानेवाली औषधियों के द्वाराबारंबारवस्ति देनीचाहिये क्योंकि वस्ति के समान और कोई इसकी औषधि नहीं है बाहरवाले वातरक्त में लेप अभ्यंग परिषेक तथा मल्हम के द्वारा और गंभीर वात रक्तमें विरेचन आस्थापन तथा स्नेह,पानकेद्वारा चिकित्सा करनीचाहिये दिनमें सोना संताप व्यायाम मैथुन और कटु उष्ण भारी अभिष्पन्दी निमकीन तथा खट्टीवस्तु यहसब वातरक्तमें छोड़देनी चाहिये ॥६५७ ॥

पुराणायवगोधूमानीवाराःशालिषष्टिकाः। भोजनार्थेरसार्थेतुविष्किराःप्रतुदाहिताः॥ आढ़क्यश्चणकामुद्गामसूराःसकुलत्थकाः। यूषार्थेबहुसर्पिष्काःप्रशस्तावातशोणिते ॥ सुनिषण्णकवेत्राग्रकाकमाचीशतावरी। वास्तुकोपोदिकाशाकंशाकंसौवर्च्चलंतथा॥ घृत

मांसरसैर्भृष्टंशाकंसात्म्यायदापयेत् । सुनिषण्णःचांगेरीसदृशंचतुःपत्रशाकःसजलेस्थले भवतिसूसुनइतिलोके । धवंलोचिल्मीइतिकाचित् ॥ ६५८ ॥

पुराने जौ गेहूं तिन्नी शालिधान्य तथा साँठी यहभोजनके लिये और विष्किर तथा प्रतुदजीवोंके मांसकारस यहसब रसकेलिये देनाचाहिये अरहड़ चना मूंग मसूर तथाकुलथीके यूषमें बहुत घी मिलाकर बातरक्तमें देना श्रेष्ठहै शाकके अभ्यासवाले वातरक्तवाले को चौपतिया बेतका अग्रभाग काकमाची सतावर बथुआ पोय तथा सौबर्चल शाक घीमें भूनकर मांसके रसकेसाथ देनाचाहिये ॥६५८॥

सर्पिस्तैलवसामज्जापानाभ्यञ्जनवस्तिभिः । सुखोष्णैरुपनाहैश्चवातोत्तरमुपाचरेत् ॥ हितोगोधूमचूर्णश्चछागक्षीरघृतप्लुतैः । लेपस्तद्वत्तिलाभृष्टाःपिष्टाःपयसिनिर्वृताः ॥ क्षीरपिष्टातसीलेपोवर्द्धमानफलेनवा ॥ ६५९ ॥

अधिक बातवाले बातरक्तमें घी तेल चर्बी तथा मज्जा पान मर्दन तथा वस्तिक्रियामें देनेचाहिये और कुछ गरमलेप करना चाहिये गेहूंके आटेको बकरीके दूध तथा घी में मिलाकर लेपकरने से भुने हुए तिलोंको दूधमें पीसकर लेपकरने से अलसी को दूधमें पीसकर लेपकरने से अथवा रेंड़ीको दूधमें पीसकर लेपकरने से बातरक्तका नाश होताहै ॥ ६५९ ॥

उभेशताह्वेमधुकंबलाञ्चप्रियालकञ्चापिकसेरुकञ्च । घृतंविदारीञ्चशितोपलाञ्चकुर्यात्प्रदेहंपवनेसरक्ते ॥ रास्नागुडूचीमधुकंबलेद्वेसजीवकंसर्षभकंपयश्च । घृतञ्चसिद्धंमधुशेषयुक्तंरक्तानिलार्त्तिप्रणुदेत्प्रदेहः ॥ वासागुडूचीचतुरंगुलानामैरण्डतैलेन पिबेत्कषायम् । क्रमेणसर्वांगजमप्यशेषंजयेदसृग्वातभवंविकारम् ॥ दशमूलीशृतंक्षीरं सद्यःशूलनिवारणम् । परिषेकोऽनिलप्रायेतद्वत्कोष्णेनसर्पिषा ॥ ६६० ॥

सतावर सौंफ बरियारा मुलहठी चिरौंजी कसेरू घी बिलारीकन्द तथा मिश्री इनसबको पीसकर लेपकरनेसे रासना गिलोय मुलहठी दोनोंबला जीवकऋषभक दूध तथा घी इनसबको पकाकर सहत मिलाकर लेपकरनेसे बातरक्तका नाशहोताहै बांसा गिलोय तथा अमलतास इनकेकाढ़ेमें रेंड़ीकातेल मिलाकर पीनेसे सर्वाङ्गमें गयेहुएभी बातरक्तका क्रमसेनाश होताहै अधिक बातवाले बातरक्तमें दशमूल के साथ दूधका पाककरके सींचने से अथवा कुछ गरम घी के द्वारा सींचने से पीड़ाका नाशहोता है ॥ ६६० ॥

पटोलकटुकाभीरुत्रिफलामृतसाधितम् । क्वाथंपीत्वाजयेज्जन्तुःसदाहंबातशोणितम् ॥ त्रिवृद्विदारीक्षुरकंक्वाथोबातास्रनाशनः । अमृताकफबातघ्नीकफमेदोविशोषिणी ॥ बातरक्तप्रशमनीकण्डूवीसर्पनाशिनी । गुडूच्याःस्वरसंकल्कंचूर्णंवाक्वाथमेवच ॥ प्रभूतकालमासेव्यमुच्यतेबातशोणितात् । अमृतानागरधान्याककर्षत्रितयेनपाचनंसिद्धम् ॥ जयतिसरक्तंवातंसामंकुष्ठान्यशेषाणि । बत्सादन्युद्भवःक्वाथःपीतोगुग्गुलुमिश्रितः । समीरणसमायुक्तंशोणितंसंप्रणाशयेत् । तिस्रोऽथवापञ्चगुडेनपथ्याजग्ध्वापिबेच्छिन्नरुहाकषायम् ॥ तद्वातरक्तंशमयत्युदीर्णमाजानुभिन्नंच्युतमप्यवश्यम् ॥ ६६१ ॥

परबल कुटकी सतावर त्रिफला तथा गिलोय इनके काढ़े को पीने से दाहसहित बातरक्तका

नाशहोताहै रसौत बिलारीकन्द तथा गोखुरूका काढ़ा बातरक्त का नाशकहै गिलोय कफ तथा मेदकी सुखानेवाली और कफ बात बातरक्त खुजली तथा बिसर्प इनसबकी नाशक है इसलिये गिलोयका स्वरस कल्कचूर्ण अथवा काढ़ा बहुत कालतक सेवनकरने से बातरक्त का नाशहोताहै गिलोय सोंठ तथा धनियां इनसबको एक २ तोले लेकर काढ़ाकरके पीने से बातरक्त आमबात और अनेक प्रकार के कुष्ठोंकानाशहोता है गिलोयके काढ़े में गूगुल डालकर पीने से बातरक्त का नाशहोताहै तीनअथवा पांच हड़ गुड़के साथ खाकर गिलोयका काढ़ा पीनेसे बहुत बढ़ेहुए घुटनोंतक फटेहुये और बहतेहुए भी बातरक्त का नाशहोताहै ६६१ ॥

गुग्गुलवमृतवल्लीभिर्द्राक्षातुङ्गरसेनवा । त्रिफलायारसैर्युक्तागुटिकाःकोलसम्मिताः । भक्षयेन्मधुनालोड्यशृणुकुर्वन्तियत्फलम् । पादस्फोटंमहाघोरंस्फुटनंसर्वाङ्गसञ्चयम् ॥ तत्सर्वंनाशयेत्याशुसाध्यंचैवसशोणितम् इतिगुग्गुलुगुटिका ॥ ६६२ ॥

गूगुल गिलोय दाख पुन्नागकारस और त्रिफलेका काढ़ा इनसबको पीस छः २ मासेकी गोली बनाकर सहतमें मिलाकरखाय इस्से अत्यन्त भयंकर पैरोंका फटना सबअंगोंका फटना और बातरक्त का नाशहोता है ॥ इतिगूगुलगुटिका ॥ ६६२ ॥

माहिषंनवनीतन्तुवह्निना परिमिश्रितम् । गोमूत्रमिश्रितंकृत्वाक्षीरेणलवणेनच ॥ तदेकत्र समालोड्यवह्निनाभावयेच्छनैः । गात्रमुद्वर्त्तयेत्तेनदेहस्फुटनशान्तये ॥ घृतेनवातंसगुड़ाविवन्धंपित्तंशिताढ्यामधुनाकफञ्च । वातासृगुग्रंरुवुतैलमिश्राशुण्ठ्यामवातंशमयेद्गुडूची ॥ सिंहास्यपञ्चमूलीछिन्नरुहैरण्डगोक्षुरक्काथः । एरण्डतैलरामठसैन्धवचूर्णान्वितःपीतः ॥ प्रशमयतिवातरक्तंतथामवातंकटीशूलम् । मूत्रपुरीषविवन्धंव्रध्नविकारंसुदुर्वारम् ॥ गन्धर्वहस्तवृषगोक्षुरकामृतानांमूलंवलेक्षुरकयोश्चपचेत्तुधीमान् । वातासृगाशुविनिहन्ति चिरप्ररूढ़म् आजानुगंस्फुटितमूर्द्ध्वगतन्तुधीमान् ॥ कफपित्तप्रशमनंकच्छूवीसर्पनाशनम् । वातरक्तप्रशमनंहृद्यंगुड़घृतंस्मृतम् ॥ पिप्पलीवर्द्धमानंवासेव्यंपथ्यागुड़ेनवा ६६३ ॥

भैंसके मक्खनके साथ गन्धक गोमूत्र दूध तथा सेंधानोन इनसबको मिलाकर अग्निमें थोड़ागरमकरे इसकेलेपकरनेसे देहका फटना शान्त होताहै गिलोय घीके साथ सेवन करनेसे वातरोग गुड़के साथ विबंध शक्करके साथ पित्त सहतकेसाथ कफ रेंड़ी के तेलकेसाथ वातरक्त और सोंठकेसाथ सेवनकरने से आमवात को नष्टकरती है बांसा पंचमूल गिलोय रेंड़ी तथा गोखुरू इनसबके काढ़ेमें रेंड़ीका तेल हींग तथा सेंधानोन डालकर पीनेसे वातरक्त आमवात कमरकीपीड़ा मलमूत्रकारुकना और बढ़ाहुआ व्रध्न रोग नष्टहोताहै रेंड़ीकी जड़ बांसा गोखुरू गिलोय बरियाराकीजड़ और तालमखाना इनसबके काढ़ेके सेवनसे बहुतपुराना वातरक्त घुटनोंतक फटाहुआ तथा ऊर्ध्वगत वातरक्त कफ पित्त कच्छू (खुजली) और विसर्पका नाशहोताहै गुड़केसाथ घीके सेवनसे वर्द्धमानपिप्पली के सेवनसे तथा गुड़के साथहड़के सेवनसे वातरक्तकानाशहोताहै ॥ ६६३ ॥

कोकिलाक्षामृताक्काथेपिवेत्कृष्णांयथावलम् । पथ्यभोजीत्रिसप्ताहान्मुच्यतेवातशोणितात् ॥ मधुकाद्द्विगुणंतैलंतैलादाजंपयोभवेत् । तद्यथाग्निवलंपेयंवातरक्तरुजापहम् ॥ अगस्तिपुष्पचूर्णेनमाहिषंजनयेद्दधि । तदुत्थनवनीतेनदेहजंस्फुटनंजयेत् ॥ ६६४ ॥

तालमखाने तथा गिलोय के काढ़ेमें पीपलकाचूर्ण छोड़कर बलके अनुसार पीनेसे और पथ्य भोजनकरनेसे तीन सप्ताह में वातरक्तका नाश होताहै एकभाग सहत दोभाग तेल चारभाग बकरीका दूध इनतीनोंको मिलाकर अग्निबलके अनुसार पीने से वातरक्त कानाशहोताहै अगस्तके फूलों का चूर्ण भैंस के दूध में मिलाकर दही जमावे उसके द्वारा जो मक्खन निकालाजाता है वह देह के फटनेका नाश करता है ६६४ ॥

त्रिफलानिम्बमञ्जिष्ठावचाकटुकरोहिणी । वत्सादनीदारुनिशाकषायोनवकार्षिकः ॥ वातरक्तंतथाकुष्ठंपामानंरक्तमण्डलम् । कण्डूकपालिकाकुष्ठंपानादेवापकर्षति ॥ पञ्चरक्तिकमाषेणकषायोनवकार्षिकः । किञ्चैवंसाधितंक्काथेयोग्यमात्राप्रदीयते ॥ कर्षादौतुपलं यावत्दद्यात्षोड़शिकंजलम् । ततस्तुकुड़वंयावदष्टादशगुणंजलम् ॥ चतुर्गुणमतश्चोर्द्ध्वंयावत्प्रस्थादिकंभवेत् ॥ ६६५ ॥

त्रिफला नींबकीछाल मजीठ बच कुटकी गिलोय तथा दारुहल्दी इन नौ औषधियों को एक २ तोला लेकर काढ़ा करके पिये इसके सेवनसे वातरक्त कुष्ठ गीली खुजली रक्तमंडल खुजली और कपालिका कुष्ठका नाश होताहै इस ९ कर्षके काढ़ेमें पांचरत्तीका मासा लेना चाहिये और इस काढ़े की योग्य मात्रा देनी चाहिये एक कर्षसे लेकर पल पर्य्यन्त औषधियों का काढ़ा सोलह गुने जल में करना चाहिये कुड़व पर्य्यन्त में अठारह गुना डालना चाहिये और इसके उपरान्त प्रस्थादि पर्य्यन्त चौगुना जल डालना चाहिये ॥ ६६५ ॥

विरेचनैर्घृतक्षीरपानैःसेकैःसवास्तिभिः । लेपनंशाल्मलीकल्कमविक्षीरेणसंयुतम् ६६६ ॥

विरेचन घृततथा दुग्धपान सींचना और बस्ति क्रिया इन सबसे वातरक्त का नाश होताहै शाल्मली की छालको भेड़ीके दूधमें पीसकर लेपकरने से वातरक्त नष्ट होताहै ॥ ६६६ ॥

रक्तोत्तरंक्षीरघृतंमधुकोशीरवारिभिः । सेचनंचात्रकर्तव्यमविक्षीरैःक्षणंक्षणम् ॥ सहस्रशतधौतेनघृतेनरुधिरोत्तरे । लेपनंसुष्ठुशीतेनघृतसर्ज्जरसेनवा ॥ शीतैर्निर्वापणैश्चापिरक्तपित्तोत्तरंजयेत् । रक्तोत्तरंक्षीरघृतंमधुकोशीरवारिभिः ॥ सरोगेसरुजेदाहेरक्तेविश्राव्यलेपयेत् । तिलाःप्रियालंमधुकंबिशमूलञ्चवेतसम् ॥ सघृतंपयसापिष्टंप्रलेपोदाहरोगनुत् ॥ ६६७ ॥

अधिक रक्तवाले वातरक्तमें दूध घी मुलहठी खस सुगन्धवाला और भेड़ीका दूध इन सबको मिलाकर उस मिलेहुए से बारंबार सींचना चाहिये हजारबार अथवा सौबार धोयेहुए घी से लेपकरना चाहिये अधिक रुधिर तथा पित्तवाले वातरक्त में अत्यन्त शीतल औषधि अथवा घी तथा राल के लेपसे या शीतल वस्तुओंके सींचने से हितहोताहै दाह तथा पीडायुक्त रक्तवर्ण वातरक्त में रुधिर निकलवाकर दूध घी मुलहठी खस तथा सुगंधबालाका लेपकरना चाहिये तिल चिरौंजी मुलहठी कमलकीजड़ वेत घी इन सबको दूधके साथ पीसकर लेपकरने से दाहका नाश होताहै ॥ ६६७ ॥

पित्तोत्तरंतुकाश्मर्य्यद्राक्षारग्वधचन्दनैः । मधुकक्षीरकाकोलीयुक्तैःक्काथंसुशीतलम् ॥ शर्करामधुसंयुक्तंवातरक्तेपिबेन्नरः ॥ धारोष्णंमूत्रसंयुक्तंक्षीरंदोषोनुलोमनम् । पिवेद्वासत्रिवृच्चूर्णम्पित्तरक्तावृतानिले ॥ क्षीरेणैरण्डतैलंवाप्रयोगेनपिबेन्नरः । बहुदोषोविरेकार्थञ्जी

क्षीरोदनाशनः ॥ पटोलंत्रिफलाभीरुगुडूचीकटुरोहिणी । क्काथःपित्ताधिकेशस्तःशर्करामधुसंयुतः ॥ ६६८ ॥

गंभारी दाख अमलतास चन्दन मुलहठी तथा क्षीरकाकोली इन सबके शीतल हुए काढ़े में शक्कर तथा सहत मिलाकर पीने से अधिक पित्तवाले वातरक्त का नाश होता है धारोष्ण दूध में गोमूत्र मिला कर पीनेसे वायु अपने मार्गके अनुसार होजाती है निसोत के चूर्ण सहित धारोष्ण दूध पीने से पित्त तथा रुधिर युक्त वात शान्त होतीहै बहुत दोष वाले वातरक्त में बिरेचनके लिये दूध सहित रेड़ीका तेल पिये और ओषधि के पचने पर दूध भात खाय परवल त्रिफला सतावर गिलोय तथा कुटकी इनके काढ़े में शक्कर और सहत डालकर पीने से अधिक पित्त वाले वातरक्त का नाशहोताहै ॥ ६६८ ॥

तिक्तस्यसर्पिषःपानंबहुशश्चविरेचनम् । वमनंमृदुनात्यर्थंस्नेहसेकोविलंघनम् ॥ कोष्णासेकाश्चशस्यन्तेवातरक्तेकफोत्तरे । तैलमूत्रसुरासुक्तैःपरिषेकाःसदाहिताः ॥ गौरसर्षपकल्केनप्रदेहोवारुजापहः । शिग्रुःसवरुणःकल्कोधान्याम्लेनानिलार्तिजिल्लेपात् ॥ भवलिनचेलिविकल्पोनविधेयःसिद्धयोगेऽस्मिन् । कल्कःश्लेष्मोत्तरेलेपोवाजिगन्धातिलोद्भवः ॥ लेपःसर्षपनिम्बार्कहिंस्राक्षारतिलैर्हितः ॥ ६६९ ॥

तिक्त घृत का पीना बारम्बार विरेचन कोमल ओषधियों के द्वारा वमन स्नेहसे सींचना लंघन और गरम वस्तुओं से सींचना यह कफज वातरक्त में श्रेष्ठ उपायहैं तेल गोमूत्र सुरा तथा सिरके के द्वारा सींचना और सुफेद सरसों के कल्क का लेप वात रक्त की पीड़ा को नष्ट करताहै सहजन तथा बरुणा की छाल को धान्याम्लमें पीस करलेप करने से निस्सन्देह वातकी पीड़ाका नाशहोता है असगंध तथा तिलके कल्क के द्वारा लेप करने से अथवा सरसों नींब आक बाँसा जवाखार और तिलके द्वारा लेप करने से अधिक कफ वाले वातरक्त का नाशहोताहै ॥ ६६९ ॥

श्रेष्ठःशक्तुघृतक्षारःकपित्थत्वग्भिरेवच । मसूरशिग्रोस्तद्बीजंहितंधान्याम्लसंयुतम् । मुहूर्ताल्लिप्तमम्लैश्चासिञ्चेद्वातकफोत्तरे । मुस्तामलकनिशाभिःक्वथितंतोयंसमाक्षिकंपेयम् ॥ जयतिसदागतिरक्तंसकफंत्वासततयोगेन । हरिद्रामृतकक्काथंमधुनामधुरीकृतम् ॥ पिवेद्वात्रिफलाक्काथंवातरक्तेकफाधिके । हरीतकींवातक्रेणपाययेदुदकेनवा ॥ ६७० ॥

सत्तू घी जवाखार कैथा तज मसूर तथा सहजनकेबीज इनसबको धान्याम्लमें पीसकर लेपकरके एक मुहूर्त्तके पीछे कांजीके सींचनेसे अधिक कफवाले बातरक्तका नाशहोताहै मोथा आमला तथा हल्दीके काढ़ेमें सहतडालकर पीनेसे अधिक कफवाले बातरक्तका नाशहोताहै हल्दी और गिलोयके काढ़ेमें सहतडाल करपीनेसे त्रिफलाके काढ़ेके पीनेसे अथवा मट्ठा या गरम जलके साथहड़के पीनेसे अधिक कफवाले बातरक्तका नाशहोताहै ॥ ६७० ॥

गृहधूमोवचःकुष्ठंशताह्वारजनीद्वयम् । प्रलेपःशूलनुद्वातरक्तेवातकफोत्तरे ॥ अमृताकटुकायष्टीशुण्ठीकल्कंसमाक्षिकम् । गोमूत्रपीतंजयतिसकफंवातशोणितम् ॥ धात्रीहरिद्रामुस्तानांकषायंवासमाक्षिकम् ॥ ६७१ ॥

घरकाधुआं बच कूट सोंफ तथा दोनों हल्दी इनके लेपसे बात कफज वातरक्तकी पीड़ाका नाश होताहै गिलोय कुटकी मुलहठी तथा सोंठके कल्कको सहतयुक्त गामूत्रके साथ पीनेसे अथवा आमला हल्दी तथा मोथाके काढ़ेमें सहतडाल कर पीनेसे कफसहित बातरक्त का नाश होताहै ॥ ६७१ ॥

लांगल्यास्त्वमृतातुल्यंकन्दमुद्धृत्ययत्नतः। योजयेत्त्रिफलालौहरजस्त्रिकटुकैःसमैः ॥ गुग्गुल्वमृतवल्लीभिर्द्राक्षालुंगरसेनवा। त्रिफलायारसैर्युक्ताःगुटिकाःकोलसम्मिताः ॥ भक्षयेन्मधुनालोड्यश्शृणुकुर्वन्तियत्फलम्। पादस्फुटितंदुर्भग्नंजानुप्राप्तंचयद्भवेत् ॥ यच्च देहोद्गतंरक्तंयच्चासाध्यंप्रकीर्तितम्। घ्नन्त्येताभक्ष्यमाणस्यप्रबलंबातशोणितम् ॥ इति लांगलीगुटिका ॥ ६७२ ॥

करिहारीकीजड़ गिलोय त्रिफला लोहचूर्ण त्रिकटु गूगल तथा गिलोय इनसबके चूर्णको दाख नींबू अथवा त्रिफलाके काढ़ेके साथ छः २ मासेकी गोलीबनाकर सहतमें मिलाकर चाटनेसे पैरोंका फटना दुर्भग्न घुटनोंतक प्राप्त अथवा देहमें व्याप्त असाध्य बातरक्तकाभी नाश होताहै इति लांगली गुटिका ॥ ६७२ ॥

संसर्गेसन्निपातेचक्रियापथमुक्तांमिश्रंकुर्य्यात् ॥ ६७३ ॥

द्वन्द्वज और त्रिदोषज वातरक्तमें कहीहुई चिकित्सा मिलाकर करना चाहिये ॥ ६७३ ॥

बलामतिबलांमेदामात्मगुप्तांशतावरीम्। काकोलींक्षीरकाकोलींरास्नांमृद्वीञ्चपेषयेत् ॥ घृतंचतुर्गुणंक्षीरंतैःसिद्धंवातरक्तनुत्। हृत्पांडुरोगवीसर्प्पकामलादाहनाशनम् ॥ इतिबलाघृतम् ॥ ६७४ ॥

बला अतिबला मेदा किवाँच सतावर काकोली क्षीरकाकोली रास्ना तथा दाख इन सबको पीस कर इनके द्वारा चौगुने दूधसे युक्त घीका पाक करके सेवन करने से बातरक्त हृदय के रोग पांडु वीसर्प कामला और दाह का नाश होता है इतिबलाघृत ॥ ६७४ ॥

बलास्थिरानागबलागुडूचीशतावरीकल्ककषायसिद्धम्। तैलंविदध्यादनुवासनेषुतद्वातरक्तंशमयत्युदीर्णम् ॥ अपरपिंडतैलम् ॥ ६७५ ॥

बला शालिपर्णी नागबला गिलोय सतावर इनसबके कल्क और काढे के द्वारा तेलका पाककरके अनुवासन वस्ति लेनेसे बहुत बढ़ाहुआ बातरक्त शान्तहोता है इति अपरपिंडतैल ॥ ६७५ ॥

त्रायन्तिकाचामलकीद्विकाकोलीशतावरी।कसेरुकाकषायेणकल्कैरेभिःपचेद्घृतम् ६७६

त्रायमाणा आमला काकोली क्षीरकाकोली सतावर तथा कसेरू इनसबके कल्क तथा कषाय के द्वारा पाककिये हुए घृत के सेवन से बातरक्तका नाशहोता है ॥ ६७६ ॥

उभेपरूषकेद्राक्षाकाश्मर्य्यंससुरद्रुमान्। पृथग्विदार्य्याःस्वरसंतथाक्षीरंचतुर्गुणम् ॥ एतदायोजितंसर्पिःपारूषकमितिस्मृतम्। वातरक्तेक्षतेक्षीणेविसर्पेपैत्तिकेज्वरे ॥ पारूषकंघृतम् ॥ ६७७ ॥

दोनों फालसे दाख गंभारी तथा देवदारु इन सब के द्वारा चौगुने बिलारी कन्दके रस तथा दूध के साथ घी का पाक करके सेवन करनेसे वातरक्त चतसे क्षीण वीसर्प और पित्तज्वर नष्ट होता है इति पारूषकघृत ॥ ६७७ ॥

शतावरीकल्कगर्भरसंतस्याश्चतुर्गुणे। क्षीरंतुल्यंघृतंसिद्धंवातशोणितनाशनम्॥ इतिशतावरीघृतम्॥ ६७८॥

सतावरके कल्क के द्वारा सतावरके चौगुने रस तथादूध के साथ पाक किये हुए घीके सेवनसे वातरक्त का नाशहोता है इति शतावरीघृत॥ ६७८॥

श्रावणीक्षीरकाकोलीक्षीरिकाजीवकैःसमैः। सिद्धंऋषभकंसर्प्पिःसक्षीरंवातरक्तनुत्॥ अत्रक्षीरंचतुर्गुणम्। इतिऋषभघृतम्॥ ६७९॥

ऋषभक क्षीरकाकोली खिन्नी तथा जीवक इन सबके कल्कके द्वारा चौगुने दूध के साथपाक किये हुए घीसे वातरक्त का नाश होताहै इति ऋषभ घृत॥ ६७९॥

गुडूचीक्काथकल्काभ्यांसपयस्कंघृतंशृतम्। हन्तिवातंतथारक्तंकुष्ठंजयतिदुस्तरम्॥ क्षीरंस्नेहसमंदद्याच्चतुर्भिश्चचतुर्गुणम्। एकद्वित्रिद्रवैर्द्रव्यैःकुर्य्यात्स्नेहाच्चतुर्गुणम्॥ इतिगुडूचीघृतम्॥ ६८०॥

गिलोयकेक्काथ तथा कल्ककेद्वारा समभाग दूधसहित पाककियेहुए घीसे वातरक्त तथा दुस्तर कुष्ठका नाशहोताहै इतिगुडूचीघृत॥ ६८०॥

अमृतायाःकषायेणकल्केनचमहौषधात्। मृद्वग्निनाघृतंसिद्धंवातरक्तहरंपरम्॥ आमवाताढ्यवातादीनृक्रिमिकुष्ठव्रणानपि। अर्शांसिगुल्मांश्चतथानाशयेदाशुयोजितम्॥ इतिगुडूचीघृतम्॥ ६८१॥

सोंठके कल्क तथा गिलोयके काढेकेसाथ मंदाग्निमें पाककियेहुए घीके सेवनसे वातरक्त आमवात ऊरुस्तंभ क्रमि कुष्ठ व्रण ववासीर और गोलेका शीघ्रनाशहोताहै इतिगुडूचीघृत॥ ६८१॥

अमृतास्वरसविपक्कंसर्प्पिस्तत्कल्कसाधितंपीतम्। अपहरतिवातरक्तमुत्तानञ्चावगाढ़ञ्च॥ इतिगुडूचीघृतम्॥ ६८२॥

गिलोय के रस तथा कल्कके साथ पाककियेहुए घीके पीने से ऊपरवाले तथा गंभीर वातरक्त का नाशहोताहै इतिगुडूचघृत॥ ६८२॥

अमृतायाःपलशतंजलद्रोणावशेषितम्। घृतप्रस्थंविपक्तव्यंकल्कादष्टौपलानिच॥ चतुर्गुणेनपयसावातासृक्कुष्ठनाशनम्। कामलापाण्डुरोगघ्नप्लीहकासज्वरापहम्॥ इतिगुडूचीघृतम्॥ ६८३॥

बत्तीसतोले गिलोय के कल्ककेद्वारा चारसौतोले गिलोय के ६२४ तोले काढे और २५६ तोले दूधके साथ ६४ तोले घी का पाककरके सेवनकरने से वातरक्त कुष्ठ कामला पांडु प्लीहा स्वांसी तथा ज्वर का नाश होताहै इति गुडूची घृत॥ ६८३॥

अमृतामधुकद्राक्षात्रिफलानागरंबला। वासारग्बधवृश्चीवदेवदारुत्रिकण्टकम्॥ कटुकारोहिणीकृष्णाकाश्मर्यस्यफलानिच। रास्नाक्षुरकगन्धर्व्ववृद्धदारघनोत्पलैः॥ कल्कैरेभिःसमैःकृत्वासर्पिःप्रस्थंविपाचयेत्। धात्रीरसःसमोदेयोवारित्रिगुणसंयुतः॥ सम्यक्सिद्धञ्चविज्ञायभोज्येपानेचशस्यते। बहुदोषोत्थितंवातरक्तेनसहमूर्च्छितम्॥ उत्तानं

ञातिगम्भीरंत्रिकजंघोरुजानुकम् । क्रोष्टुशीर्षमहामूलेऽआमवातेसुदारुणे ॥ दाहरोगेो पसृष्टस्यवेदनाञातिदुस्तराम् । मूत्रकृच्छ्रमुदावर्तंप्रमेहंविषमज्वरान् ॥ एतान्सर्व्वान् निहन्त्याशुवातपित्तकफोत्थितान् ॥ सर्व्वकालोपयोगेनवर्णायुर्बलवर्द्धनम् । अश्विभ्यां निर्मितंश्रेष्ठंघृतमेतदनुत्तमम् ॥ इतिअमृताद्यंघृतम् ॥ ६८४ ॥

गिलोय मुलहठी दाख त्रिफला सोंठ बरियारा बांसा अमलतास श्वेत पुनर्नवा देवदारु गोखुरू कुटकी पीपल गंभारी रासना तालमखाना एरंड बिधारा मोथा तथा उत्पल इनसब का कल्क आमलेकारस और तिगुना जल इनसबकोद्वारा ६४ तोले घीकापाक करे इसघृतके भोजन तथा पीनेसे वाह्य तथा गंभीर बहुदोषज बातरक्त और त्रिक जंघा पिंडली तथा घुटनों में प्राप्त बातरक्त नाशहोता है और क्रोष्ठुशीर्ष बहुत पीड़ा युक्त भयंकर आमबात दाहजकठिन पीड़ा मूत्रकृच्छ्र उदावर्त प्रमेह विषम ज्वर बातजनित तथा कफजनित यह सबरोग नष्ट होते हैं अश्विनीकुमारके बनायेहुए इस घीके सदैव सेवनसे बल वर्ण तथा आयुकीवृद्धिहोतीहै इतिअमृतादिघृत ॥ ६८४ ॥

गुडूचीस्वरसेसर्पिर्जीवनीयैश्चसाधितम् । कल्कश्चतुर्गुणैःक्षीरैःसिद्धंवाजस्त्रवातनुत इतिगुडूचीघृतम् ॥ ६८५ ॥

जीवनीयगणके कल्ककेद्वारा गिलोयकेरस और चौगुनेदूधके साथ पाककियेहुए घीकेसेवनसे बातरक्तकानाश होताहै इति गुडूचीघृत ॥ ६८५ ॥

अमृतायाःशतंप्राप्यजलद्रोणेविपाचयेत् । चतुर्भागावशिष्टन्तुघृतप्रस्थंविपाचयेत् क्षीरंचतुर्गुणंतत्रदापयेन्मतिमान्भिषक् । कल्कञ्चात्रप्रवक्ष्यामियथावदनुपूर्वशः ॥ काकोलीक्षीरकाकोलीजीवकर्षभकौचयत् । शतावरीपयस्याञ्चमधुकंनीलमुत्पलम् ॥ अश्वकन्दस्यमूलानिस्थिरंवाकटुरोहिणीम् । ऋद्धिवृद्धितथामेदेश्वदंष्ट्रांबृहतीद्वयम् ॥ गुडूचींपिप्पलींरास्नांवासकञ्चापिसंहरेत् । तदेकस्थंसमैर्भागैः पाचयेन्मृदुनाग्निना । पानाभ्यञ्जननस्येषु परिषेकेचदापयेत् ॥ वातरक्तंसशोषाढ्यं सदाहंक्रोष्टुशीर्षकम् । खञ्जोरुस्तम्भवातञ्च वातरक्तंसुदारुणम् ॥ बह्लादितंवातकृच्छ्रं गृध्रसीवातकण्टकम् । नाशयेद्योजितंसर्पिर्द्धन्वन्तरिवचोयथा ॥ इति महागुडूचीघृतम् ॥ ६८६ ॥

४०० तोले गिलोयको ६२४ तोले जलमें पाककरके चौथाई बाकी रहनेपरउतारले फिर उसके साथ २५६ तोले दूध और ६४ तोले घी मिलावे इसके उपरान्त इससबमें काकोली क्षीरकाकोली जीवक ऋषभक सतावर दूधी मुलहठी नीलकमल असगन्धकी जड़ शालिपर्णी कुटकी ऋद्धि वृद्धि मेदा महामेदा गोखरू दोनोंभटकटैया गिलोय पीपल रासनातथावांसा इनसबऔषधियोंके समभाग कल्क डालकर मंदाग्निमें पाककरे इसघृतको पान मर्द्दन नस्य तथा सींचनेके काममेंलानेसे बातरक्त शोष दाह क्रोष्टुशीर्ष खंज ऊरुस्तंभ दुस्साध्य बातरक्त बातज मूत्रकृच्छ्र गृध्रसी और बातकंटकरोगका नाशहोताहै यह धन्वन्तरिका बचनहै इति महागुडूचीघृत ॥ ६८६ ॥

क्वाथेनशतपुष्पायाः कुष्ठस्यमधुकस्यच । एकैकंसाधयेत्तैलं वातरक्तरुजापहम् ॥ इति शताह्वादितैलम् ॥ ६८७ ॥

सौंफ कूट अथवा मुलहठीके क्वाथके द्वारा पाककियेहुए तेलके सेवनसे बातरक्तका नाशहोताहै इति शताह्वादि तैल ॥ ६८७ ॥

सारिवारिष्टकुष्माण्ड पोतकीभस्मजाम्बुना । गुडूचीगव्यदुग्धाभ्यांकर्मरंगरसेनच ॥ विपचेत्तिलजंतैलं दत्त्वैतानिभिषग्वरः । काकोल्यौजीवकंमेदे शताह्वाक्षीरिणीयुतैः ॥ जिंगीसिक्थामृतानन्ता सार्जसैन्धवचन्दनैः । हन्याद्वातास्रजंघोरं स्फुटितंगलितंतथा ॥ चर्मदलाख्यंपामादीं स्त्वग्दोषञ्चविपादिकाम् । कुष्ठान्यर्शांसिवीसर्पं व्रणशोथंभगन्दरम् ॥ नसोऽस्तिवातरक्तस्य विकारोयोऽभिवार्द्धितः । यन्नहन्यात्प्रसह्यैतत् पिण्डतैलं महत्स्मृतम् ॥ इति महापिण्डतैलम् ॥ ६८८ ॥

सारिवा नींब पेठा पोयकीभस्म गिलोय तथा कमरख इनकेरसऔर तिलकातेलइनसबमें काकोली क्षीरकाकोली जीवक मेदा महामेदा सौंफ खिन्नी मजीठ मोंम गिलोय अनन्तमूल राल सेंधानोन ओर चन्दन इन सब औषधियों का कल्क डालकर पाक करे इस तेलके सेवन से बात रक्त स्फुटित तथा गलित चर्म्मदलरोग खुजली त्वचाकेदोष बिवाई कुष्ठ बवासीर विसर्प व्रण सूजन तथा भगन्दर का नाशहोताहै ऐसाकोईभी बहुत बढ़ाहुआ बातरक्तका विकारनहीं है जो इसमहापिंड तैलसे नष्ट न होसके ॥ इति महापिंडतैल ॥ ६८८ ॥

सारिवासर्जमञ्जिष्ठायष्टी सिक्थैःपयोन्वितैः । तैलपक्वंप्रयोक्तव्यं पिण्डाख्यंवातशोणिते ॥ इति पिण्डतैलम् ॥६८९ ॥

सारिवा राल मजीठ मुलहठी तथा मोंम इनसब के द्वारा दूध सहित तेलका पाककरके सेवन करने से वातरक्तका नाशहोताहै ॥ इति पिंडतैल ॥ ६८९ ॥

सारिवासर्जयष्ट्याह्व मधुशिक्थैःपयोन्वितैः । सिद्धमेरण्डजंतैलं वातरक्तरुजापहम् ॥ अपूतमथितस्यास्य पिण्डतैलस्ययोगतः ॥ इति पिण्डतैलम् ॥ ६९० ॥

सारिवा राल मुलहठी तथा मोंम इनसब के द्वारा दूध सहित रेंडीके तेलका पाककरके विनाछाने मथले इस तेलसे वातरक्त की पीडाका नाश होताहै ॥ इति पिंडतेल ॥ ६९० ॥

पद्मकेशरयष्ट्याह्वफेनिलापद्मकोत्पलैः । पृथक्पञ्चदलैर्दत्तं बलाकिंशुकचन्दनैः ॥ जलेश्रृतंपचेत्तैलंप्रस्थंसौवीरसम्मितम् । लोध्रकाकोलिकोशीरजीवकर्षभकेशरैः ॥ मदयन्तिलतापत्रपद्मकेशरपद्मकैः । प्रपौण्डरीककालीयमेदमांसीप्रियङ्गुभिः ॥ कुङ्कुमैर्द्विगुणैःकर्षैःमञ्जिष्ठायाःपलेनच । महापद्मकमिदंतैलंवातासृग्ज्वरनाशनम् ॥ इतिमहापद्मकंतैलम् ॥ ६९१ ॥

पद्म केशर मुलहठी नींब पद्माक उत्पलबला टेसू तथा चन्दन यह सब बीस २ तोले इनसबका काढा सौबीर ६४ तोले और तेल ६४ तोले इनसबमें लोध काकोली खस जीवक ऋषभक नागकेशर चमेलीकेपत्ते गिलोय तेजपात पद्मकेशर पद्माक स्थूल कमल पीतचन्दन मेदा जटामांसी प्रियंगु तथा केशर यह सबदो२ तोले और मजीठ ४ तोले इनसब को मिलाकर पाककरे इस तेल के सेवनसे बातरक्त का नाश होताहै इति महापद्मकतैल ॥ ६९१ ॥

पद्मकोशीरयष्ट्याह्वरजनीक्वाथसाधितम्॥स्यात्पिष्टैःसर्वमञ्जिष्ठावरीकाकोलिचन्दनैः॥ खड़ाकपद्मकमिदंतैलंवातास्रपित्तनुत्॥ इतिखड़ाकपद्मकतैलम्॥ ६९२॥

पद्माक खस मुलहठी तथा हल्दी इनका काढ़ा और तेल इनसब में राल मजीठ काकोली क्षीर काकोली तथा चन्दन के कल्क को डालकर पाककरे इस तेलके सेवनसे बातरक्त का नाश होताहै॥ इति खड़ाकपद्मक तैल॥ ६९२॥

तुलांपचेज्जलद्रोणेगुडूच्याःपादशेषितम्॥क्षीरद्रोणन्तुताभ्याञ्चपचेत्तैलाढकंशनैः॥ कल्कैर्मधुकमञ्जिष्ठाजीवनीयगणोत्थितैः। कुष्ठैलागुरुमृद्वीकामांसीव्याघ्रनखंनखी॥ हरेणुश्रावणीव्योषशताह्वाश्रृंगिसारिवे। त्वक्पत्रागुरुविक्रान्तास्थिरातामलकीतथा॥ नतकेशरह्रीबेरपद्मकोत्पलचन्दनम्। सिद्धंकर्षसमैर्भागैःपानाभ्यङ्गानुवासनैः॥ सेव्यं वातास्रजान्हन्तिस्रोतोधात्वन्तराश्रितान्। धन्यंपुंसवनंस्त्रीणांगर्भदंवातपित्तनुत्॥ स्वेदकण्डूरुजायामशिरःकम्पामयार्दितान्। हन्याद्व्रणकृतान्दोषान्गुडूचीतैलमुत्तमम्॥ इतिगुडूचीतैलम्॥ ६९३॥

६२४ तोले जल में ४०० तोले गिलोय का चौथाई बचाहुआ काढ़ा ६२४ तोले दूध और २५६ तोले तेल इनसब में मुलहठी मजीठ जीवनीयगण कूट इलायची अगर दाख जटामांसी बघनखी नखी रेणुका मुंडी त्रिकटु सौंफ काकड़ासिंगी सारिवा दालचीनी तेजपात बिक्रान्त शालिपर्णी भुइँ आमला तगर नागकेशर सुगन्धबाला पद्माक उत्पल और चन्दन इनसबका एक २ तोले कल्क छोड़ कर मन्दाग्निमें बिधिपूर्वक पाककरे इस तेलके पान मर्दन तथा अनुवासन वस्तिमें व्यवहार करने से स्रोत तथा धातुओंमें स्थित बातरक्त बातपित्त स्वेद खुजली पीड़ा आयास शिरका कांपना अर्दित तथा घावका नाश होताहै और यह तेल बलकारी गर्भदायक और पुत्रकारी है॥इति गुडूचीतैल ६९३॥

गुडूचीमधुकंह्रस्वपञ्चमूलपुनर्नवा। रास्नामेरण्डमूलञ्चजीवनीयानिलाभतः॥ पलानांशतिकैर्भागैर्बलापञ्चशतंभवेत्। कोलंविल्वंयवान्माषान्कुलत्थांश्चाढकोन्मितान्॥ काश्मर्य्याणाञ्चशुष्काणांद्रोणंद्रोणशताम्भसा। साधयेज्जर्जरंपूतंचतुर्द्रोणञ्चशेषयेत्॥ तैलद्रोणंपचेत्तेनदत्त्वापञ्चगुणंपयः। पिष्ट्वात्रिपलिकंचैवचन्दनोशीरकेशरम्॥ पत्रैलागुरुकुष्ठानितगरंमधुयष्टिका। मञ्जिष्ठार्द्धपलंचैवतत्सिद्धंसर्वयौगिकम्॥ वातरक्ते क्षतेक्षीणेभारार्तेक्षीणरेतसी। वेपनोक्षिप्तभग्नानांसर्वकाङ्गजरोगिणाम्॥ योनिदोषमपस्मारमुन्मादंविषमज्वरम्। हन्यात्पुंसवनञ्चैवतैलाग्र्यममृताह्वयम्॥ इतिअमृताह्वय तैलम्॥ ६९४॥

गिलोय मुलहठी छोटा पंचमूल पुनर्नवा रासना अरंडकी जड़ जीवनीयगण यह सब चार २सौ तोले बरियारा २००० तोले बेर बेल जौउर्द कुलथी यह सब दोसै छप्पन २ तोले और गंभारी ६२४ तोले इन सब औषधियोंको १०० द्रोण जल में पाककरके जब चार द्रोण बाकीरहै तब छानले इस के साथ ६२४ तोले तेल और तेलका पंचगुना दूध मिलावे फिर इनसब में चन्दन खस नागकेशर तेजपात अगर इलायची कूट तगर और मुलहठी यहसब बारह२ तोले और मजीठ २ तोले इनसब

ओषधियोंके कल्क मिलाकर विधि पूर्व्वक पाककरे इसतैलके सेवनसे बातरक्त क्षतसे हुई क्षीणता कम्प भारसे हुई क्षीणता वीर्य्यकी क्षीणता उछलना हड्डी आदिका टूटना सर्वाङ्ग तथा एकांगगतरोग योनिरोग मिर्गी उन्माद तथा विषमज्वर इनसब का नाश होताहै और पुत्रकी उत्पत्ति होतीहै॥इति अमृताह्वय तैल ॥ ६९४ ॥

मृणालोत्पलशालूकसारिवोदीच्यकेशरैः । चन्दनद्वयभूनिम्बपद्मबीजकसेरुकैः ॥ पटोलकटुकानन्तागुन्द्रापर्पटवासकैः । पिष्ट्वातैलंघृतंपक्कंतृणमूलरसेनवा॥ क्षीरद्विगुण संयुक्तंवस्तिकर्म्मसुयोजितम् । नस्याभ्यञ्जनपानैर्वाहन्यात्पित्तगदानिदम् ॥ इतिमृणालाद्यंतैलम् ॥ ६९५ ॥

कमलकीडंडी उत्पल कमलकीजड़ सारिवा सुगन्धवाला नागकेशर दोनोंचन्दन चिरायता कमल गट्टे कसेरू पर्व्वल कुटकी अनन्तमूल गोंदी पित्तपापड़ा तथा बांसा इनसबको पीसकर तेल अथवा घी तृणमूलका रस और दूनादूध इनसबमें मिलाकर बिधिपूर्व्वक पाककरे इसकोवस्तिक्रिया नस्य मर्दन तथा पानकरनेमें प्रयोगकरनेसे पित्तकेरोगनष्टहोतेहैं ॥ इतिमृणालादितैल ॥ ६९५ ॥

कनकशिखरिमानक्षारसंसिद्धतोयेकुसुमलवणयुक्तैःसर्जनीर्य्यासचूर्णैः । विधिशृततिलतैलंकल्कयुक्तंनिहन्तिप्रचुरतरमिदानीमिन्द्रलुप्तास्रवातम्॥धत्तूराद्यंतैलम् ॥ ६९६ ॥

धतूरा लटजीरा तथा मानकेचू इनकेक्षारकेजल और तेलमें धवई के फूल सेंधानोन तथा राल इन समभाग के चूर्ण को डालकर पाककरे इसके सेवन से इन्द्रलुप्त और बातका नाश होताहै ॥ इति धतूरादि तैल ॥ ६९६ ॥

शुद्धांपचेन्नागबलातुलान्तुजलार्मणेपादकषायसिद्धम् । विस्राव्यतैलाढ़कमत्रदेयमजापयस्तैलविमिश्रितन्तु ॥ नतंसयष्टिंमधुकंचकल्कंदद्यात्पृथक्पञ्चपलंविपक्कम् । तद्वातरक्तंशमयत्युदीर्णंवस्तिप्रदानेनहिसप्तरात्रात् ॥ दशाहयोगेनकरोत्यरोगंपीतञ्चतैलोत्तममश्विनोक्तम् ॥ इतिनागबलातैलम् ॥ ६९७ ॥

४०० तोले गुलशकरीको चौगुनेजलमें पाककरके चौथाई रहनेपरछानले इसकेसाथ तिलकातेल २५६तोले और उतनाही बकरीकादूध मिलायके इनसबमें तगर मुलहठीका बीस२ तोले कल्क मिला कर बिधिपूर्वक पाककरे इसकेद्वारा बस्तिलेने से सातदिनमें बहुत बढ़ेहुए बातरक्त का नाश होताहै और अश्विनीकुमारकेकहेहुए इसतेलके पीनेसे दशदिनमेंसंपूर्णरोगनष्टहोतेहैं॥इतिनागबलातैल६९७

जीवकर्षभकंकोलीरिष्यप्रोक्ताशतावरी । मधुकंमधुपर्णीचकाकोलीद्वयमेवच ॥ मुद्गमाषाख्यपर्णीचदशमूलंपुनर्न्नवा । बलामृताविदारीचसाश्वगन्धास्मभेदकौ ॥ कुर्य्यात कल्कंकषायञ्चताभ्यांतैलंघृतंपचेत् । लाभतश्चवसामज्जामांसंप्रतुदविष्किरात् ॥ चतुर्गुणेनपयसाततसिद्धंवातशोणितम् । सर्व्वदेहाश्रितान्हन्तिव्याधीन्घोरांश्चवातजान्॥ इतिजीवकाद्योमिश्रकः ॥ ६९८ ॥

जीवक ऋषभक कंकोलमिर्च किवांच सतावर मुलहठी गंभारी काकोली क्षीरकाकोली मुद्गपर्णी माषपर्णी पुनर्नवा दशमूल बरियारा गिलोय बिलारीकन्द असगन्ध तथा पाषाणभेद इन के कल्क तथा

काढ़ेकेसाथ तेल घी और प्रतुद तथा बिषकिर जीवोंकीचर्बी मज्जा तथा मांस यहजहांतक मिलसकें और चौगुनादूध इन सबको पकावे इसके सेवनसे बातरक्त और सब शरीरमें स्थित घोरबातरोगोंका नाशहोताहै ॥ इति जीवकादिमिश्रक ॥ ६९८ ॥

बलाकषायकल्काभ्यांतैलंक्षीरचतुर्गुणम् । शतपाकंभवेदेतद्वातासृग्वातपित्तनुत् ॥ धन्यंपुंसवनञ्चैवनराणांशुक्रवर्द्धनम् । रेतोयोनिविकारघ्नमेतद्वातविकारनुत् ॥ इति बलातैलंशतपाकम् ॥ ६९९ ॥

बरियाराके कल्क तथा काढ़ेकेसाथ चौगुने दूध सहित तेलको सौबार पाककरके सेवन करने से बातरक्त बातपित्त वीर्य्यदोष योनि के बिकार तथा बातरोगों का नाश होताहै और बीर्य्य की वृद्धि तथा पुत्रोत्पत्तिहोतीहै ॥ इति शतपाकबलातैल ॥ ६९९ ॥

मधुयष्ट्याःपलशतंकषायेपादशेषिते । तैलाढ़कंसमक्षीरंपचेत्कल्कैःपलोन्मितैः ॥ शतपुष्पावरीमूर्वापयस्यागुरुचन्दनैः । स्थिराहंसपदीमांसीद्विमेदामधुपर्णिभिः ॥ काकोलीक्षीरकाकोलीतामलक्यृद्धिपद्मकैः । जीवकर्षभजीवन्तीत्वक्पत्रनखबालकैः ॥ प्रपौण्डरीकमञ्जिष्ठासारिवेन्दुवितुन्नकैः । वातासृक्पित्तदाहार्त्तिज्वरघ्नंबलवर्णकृत् ॥ इतिमधुकाद्यंतैलम् ॥ ७०० ॥

४०० तोले मुलहठीकाकाढ़ा २५६ तोले तेल और इतनाहीदूध इनसबमें सौंफ सतावर मरोड़फली दूधी अगर चन्दन शालिपर्णी हंसपदी जटामांसी मेदा महामेदा गिलोय काकोली क्षीरकाकोली भुइँआमला ऋद्धि पद्माक जीवक ऋषभक जीवन्ती तज तेजपात नखी सुगन्धबाला कमल मजीठ सारिवा कपूर और धनियां इनसबके चारचार तोले कल्क डालकर विधिपूर्वक पाककरे इसतेलके सेवन से बातरक्त पित्त दाह की पीड़ा तथा ज्वरका नाश होताहै और बल तथा वर्ण की वृद्धि होती है ॥ इति मधुकादि तैल ॥ ७०० ॥

मधुयष्ट्याःपलंपिष्ट्वातैलंप्रस्थंचतुर्गुणे । क्षीरसाध्यंशतंवारान्तद्देवमधुकान्वितम् ॥ सिद्धंदेयंत्रिदोषेस्याद्वातास्रश्वासकासनुत् । धन्यंपुंसवनञ्चैवकामलादाहनाशनम् ॥ इतिमधुकतैलंशतपाकम् ॥ ७०१ ॥

४ तोले मुलहठी के द्वारा चौगुने दूध सहित तेलको सौबार पाककरके सेवन करने से त्रिदोष वातरक्त श्वास खांसी कामला तथा दाहका नाश होता है और पुत्रोत्पत्तिहोती है ॥ इति शतपाक मधुक तैल ॥ ७०१ ॥

बलाकषायकल्काभ्यांतैलंक्षीरंसमंपचेत् । सहस्रशतपाकंवावातासृग्वातरक्तनुत् ॥ रसायनमिदंश्रेष्ठमिन्द्रियाणांप्रसादनम् । जीवनंबृंहणंस्वर्य्यंशुक्रासृग्दोषनाशनम् ॥ इतिबलातैलम् ॥ ७०२ ॥

बरियारे के कषाय तथा कल्क के द्वारा दूध सहित तेल को हज़ारवार अथवा सौबार पाक करके सेवन करनेसे बातरक्त वीर्य दोष रक्तदोष तथा वात रोगोंका नाशहोता है और इन्द्रियों की प्रसन्नता धातुवृद्धिकर स्वरकी उत्तमता तथा आयुकी वृद्धि होती है और उत्तम रसायनहै॥ इति बलातैल७०२॥

पुनर्नवामूलशतंविशुद्धंरुवूकमूलञ्चतथाप्रयोज्य । दत्वापलंषोडशकञ्चशुण्ठ्याःस ङ्कुट्यसम्यग्विपचेद् घटेऽपाम् ॥ पलानिचाष्टावथकौशिकस्यतेनाष्टशेषेणपुनःपचेत्तु। ऐरण्डतैलंकुडवञ्चदद्याद्दत्वात्रिवृच्चूर्णपलानिपञ्च ॥ निकुंभचूर्णस्यपलंगुडूच्याःपलद्व यंचाद्धपलंपलंप्रति । फलत्रयत्र्यूषणचित्रकाणिसिन्धूत्थभल्लातविडङ्गकानि ॥ कर्षंतथा माक्षिकधातुचूर्णंपुनर्नवायाःपलमेवचूर्णम् । चूर्णानिदत्वाह्यवतार्य्यशीतेखादेन्नरःकर्षस मप्रमाणम् ॥ वातासृजंवृद्धिगदञ्चसप्तजयत्यवश्यंत्वथगृध्रसीञ्च । जङ्घोरुपृष्ठत्रिकव स्तिजञ्चतथामवातंप्रबलञ्चहन्ति ॥ इतिपुनर्नवागुग्गुलुः ॥ ७०३ ॥

पुनर्नवा तथा एरंड की जड़ चार २ सौ तोले सोंठ ६४ तोले इन सबको कूटकर १२४८ तोले जल में पाककरे फिर अष्टमांश बाकी रहजाने पर छानले और इस काढ़े में ३२ तोले गूगुल डाल कर फिर पाक करे इसके उपरान्त इसमें रेंडीका तेल १६ तोले निसोत का चूर्ण २० तो० दन्तीका चूर्ण ४ तो० गिलोय का चूर्ण ८ तो० त्रिफला त्रिकटु चीता सेंधानोन भिलावा तथा बायविडंग छः २ तोले सोनामक्खी का चूर्ण १ तो० और पुनर्नवा का चूर्ण ४ तो० इनसबको डालकर उतार ले फिर शीतल होजाने पर १ तोले नित्य खानेसे बातरक्त अंडवृद्धि गृध्रसी और जंघा पिंडलीपीठ त्रिक तथा बस्ति में हुई कठिन आमबात का नाश होता है ॥ इति पुनर्नवा गुग्गुल ॥ ७०३ ॥

यावशूकसुरदारुसैन्धवंमुस्तकत्रुटिवचायमानिकाः । व्योषदीप्यकनिशाफलत्रिकं जीरकद्वयविडङ्गचित्रकम् ॥ कार्षिकंसुमसृणंसुयोजितं संयुतंपुरपलैश्चपञ्चभिः। शर्क रांपुरसमांसुपेषयेत्तप्तसर्पिषिविनिक्षिपेत्ततः ॥ वातरक्तमुदरंभगन्दरंप्लीहयक्ष्मविषमज्वरं गरम् । श्वित्रकुष्ठमखिलव्रणानयंचित्तविभ्रममदांश्चदारुणान्॥ गृध्रसीञ्चगुदजाग्निमंद तांहन्तिकोष्ठजनितंमहागदम् । वज्रमिन्द्रस्यकरादिवच्युतम्गुप्तशैलकुलमुत्तमंद्रुतम् ॥ अन्नपानपरिहारवर्जितंसर्वकालसुखदन्निरत्ययम् । सेव्यमानमिदमश्विनिर्म्मितंगुग्गुलो र्हिवटिकारसायनम् ॥ चत्वारोमाषकाहीनेमध्यमेऽष्टौचमाषकाः । श्रेष्ठाद्वादशकाःप्रो क्ताःकोष्ठंविज्ञायपाययेत् ॥ स्रंसनत्वात्गुरुत्वाद्वागुग्गुलोःकरणक्रमः । इतिशर्करास मगुग्गुलुः ॥ ७०४ ॥

जवाखार देवदारु सेंधानोन मोथा छोटीइलायची बच अजवाइन त्रिकटु अजमोद हल्दी त्रिफला जीरा कालाजीरा बायविडंग तथा चीता इनसब औषधियों के एकएक तोले चूर्णको बीस तोले गूगुल में मिलाकर और गूगुलकी बराबर शक्कर मिलाकर गरमघी में मिलाले इसके सेवनसे बातरक्त उदर भगन्दर प्लीहा यक्ष्मा बिषमज्वर गरदोष श्वेतकुष्ठ सबप्रकारके घाव चित्तभ्रम मद गृध्रसी बवासीर मन्दाग्नि तथा कोष्ठजनित महारोगोंका नाश होताहै इसके सेवनमें अन्नपानका कोई निषेध नहीं है यह सबकालमें सुखदायी बिकाररहित और रसायन है इसकी हीनमात्रा चारमासे मध्यम मात्रा ८ मासे और श्रेष्ठ मात्रा बारहमासेकीहै यह कोष्ठको बिचारकर यथायोग्य देनी चाहिये ॥ इति शर्करासम गुग्गुल ॥ ७०४ ॥

प्रस्थमेकंगुडूच्याश्चअर्द्धप्रस्थञ्चगुग्गुलोः ॥ प्रत्येकंत्रिफलायास्तुतत्प्रमाणंविनिर्दि

शेत्।सर्वमेकत्रसंकुट्यक्काथयेन्नुल्वणेऽम्भसि ॥ पादशेषपरिस्राव्यकषायंग्राहयेद्भिषक्।पुनः पचेत्कषायन्तुयावत्सान्द्रत्वमागतम् ॥ दन्तीव्योषविडंगानिगुडूचीत्रिफलात्वचः। ततश्चार्द्धपलंचूर्णंगृहणीयाच्चप्रतिप्रति ॥ कर्षन्तुत्रिवृतायाश्चसर्वमेकत्रचूर्णयेत् ॥ तस्मिन् सुसिद्धंविज्ञायकवोष्णेप्रक्षिपेत्बुधः ॥ ततश्चाग्निबलंमत्वाखादेत्कर्षप्रमाणतः । वातरक्तंतथाकुष्ठंगुदजान्यग्निसादनम् ।' दुष्टव्रणंप्रमेहांश्चआमवातंभगन्दरम् । नाड्याढ्यवातंश्वयथुंसर्वानेतान्व्यपोहति ॥ इतिअमृतागुग्गुलुः ॥ ७०५

गिलोय ६४ तोले गूगुल ३२ तोले और त्रिफला बत्तिस २ तोले इनसबको एकसाथ कूटकर ६२४ तोले पानीमें काढा करके चौथाई बाकीरहनेपर छानले और इसी काढे को दूसरीबार पाककरके जबगाढा होजाय तब उतारले फिर कुछ गरम रहनेपर दन्ती सोंठ पीपल मिर्च बायविड़ंग गिलोय त्रिफला तथा तज इनसब औषधियोंका दोदो तोले चूर्ण और निसोतका १ तोले चूर्ण मिलावे इसके पीछे अग्निबलको देखकर १ तोलेभर रोज औषध खानेसे बात रक्त कुष्ठ बवासीर मंदाग्नि दुष्टघाव प्रमेह आमबात भगन्दर नाड़ीव्रण ऊरुस्तंभ तथा सूजनका नाश होताहै इति अमृतागुग्गुल ॥ ७०५ ॥

त्रिप्रस्थममृतायाश्चप्रस्थमेकन्तुगुग्गुलोः । प्रत्येकंत्रिफलाप्रस्थे वर्षाभूप्रस्थमेव च ॥सर्वमेकत्रसंकुट्यसाधयेन्नुल्वणेऽम्भसि। पुनःपचेनपादशेषंयावत्सान्द्रत्वमागतम्। दन्तीचित्रकमूलानांकणाविश्वफलत्रिकम् । गुडूचीत्वक्विड़ंगानांप्रत्येकार्द्धपलंमतम् ॥ त्रिवृताकर्षमेकन्तुसर्वमेकत्रचूर्णयेत् । सिद्धेउष्णेक्षिपेत्तत्र अमृतागुग्गुलुंपरम् ॥ अतो यथाबलंखादेदम्लपित्तौविशेषतः । वातरक्तंतथाकुष्ठंगुदजान्यग्निसादनम् ॥ दुष्टव्रणं प्रमेहांश्चआमवातंभगन्दरम् । नाड्याढ्यवातंश्वयथुंहन्यात्सर्वामयांस्तथा ॥ अश्विभ्यांनिर्म्मितश्चायममृताख्योहिगुग्गुलुः। इतिअमृतागुग्गुलुः ॥ ७०६ ॥

१९२ तोले गिलोय चौंसठ चौंसठ तो० गूगुल हड़ बहेड़ा आमला तथा पुनर्नवा इनसबको अच्छे प्रकार कूटकर ६२४ तोले जलमें पाककरे जब चौथाई बाकीरहै तब उतारले और छानकर उसी काढेको गाढाहोजाने तक पकावे फिर कुछ गरमी रहनेपर दन्ती चीता पीपल सोंठ त्रिफला गिलोय तज तथा बायविड़ंग दोदो तोले और निसोत १ तोले इनसबको चूर्ण करके मिलावे इसको बलके अनुसार सेवनकरनेसे अम्ल पित्त बात रक्त कुष्ठ बवासीर मन्दाग्नि दुष्टव्रण प्रमेह आमबात भगन्दर नाड़ीव्रण ऊरुस्तंभ सूजन और अन्य संपूर्ण रोगोंका नाश होताहै यह अमृतागूगुल अश्विनीकुमारने बनायाहै ॥ इति अमृतागुग्गुल ॥ ७०६ ॥

गुड़रामठशुण्ठीनांमांसकूष्माण्डयोरपि । गुडूच्यागुग्गुलोश्चैवप्रस्थःषोड़शभिःपलैः ॥ स्निग्धःकाञ्चनसङ्काशःपक्वजम्बूफलोपमः।नूतनोगुग्गुलुःप्रोक्तःसुगन्धिर्यस्तुपिच्छिलः॥ शुष्कोदुर्गन्धिकश्चैववर्णान्यत्वमुपागतः । पुराणःसतुविज्ञेयोनसदेयस्तुरोगिणे ॥ इति गग्गुलुःनवपुराणलक्षणम् ॥ ७०७ ॥

गुड़ हींग सोंठ मांस पेठा गिलोय और गूगुल इनसबका १ प्रस्थ ६४ तोलेका होताहै जो गूगुल

स्निग्ध सुवर्णके समान कान्ति युक्त अथवा पक्की जामुनके समान कान्तिवाला सुगंधित और सचिक्कन होय उसको नवीन गूगुल जानना चाहिये जो गूगुल सूखा दुर्गन्धित बिगड़ेवर्ण वालाहोय वह पुराना जानना चाहिये और यह रोगियोंको न देना चाहिये ॥ इति गुग्गुल नवपुराण लक्षण ॥ ७०७ ॥

क्रिमिरिपुदहनव्योषत्रिफलामरदारुचव्यभूनिम्बाः। मागधीमूलमुस्तंशटीवचाधातुमाक्षिकञ्चैव ॥ लवणक्षारनिशायुक्कुस्तुम्बुरुगजकणासहातिविषाः। कर्षांशिकान्येवसमानिकुर्यात्पलाष्टकञ्चाश्मजतुप्रदद्यात् ॥ निःपत्रशुद्धस्यपुरस्यधीमान्पलद्वयंलोहरजस्तथैव। सिताचतुष्कंपलमत्रवास्यात्निकुम्भकुम्भत्रिसुगन्धियुक्तम् ॥ पृथक्पलंचूर्णमथावपेच्चचन्द्रप्रभेयंगुटिकाविधेया। ज्वरातिसारग्रहणीविकाराञ्चार्शांसिनिर्नाशयतेषडैव ॥ भगन्दरान्कामलपाण्डुरोगान्निर्नष्टवह्नेःकुरुतेचदीप्तिम्। हन्त्यामयान्पित्तकफानिलोत्थान्नाडीगतेमर्मगतेव्रणेच ॥ क्षतक्षयेगृध्रसियक्ष्मरोगेमेहेगजाख्येप्रवलेप्रयोज्या। शुक्रक्षयेचाश्मरीमूत्रकृच्छ्रेशुक्रप्रवाहेऽप्युदरामयेच ॥ शम्भुंसमभ्यर्च्यकृतप्रसादंप्राप्तागुटीचन्द्रमसाप्रशस्ता। नपानभोज्येपरिहारवादोनशीतवातातपमैथुनेषु ॥ भक्तस्यपूर्वंसततंप्रयोज्यातक्रानुपानाप्यथमस्तुपाना। अजारसोजाङ्गलजोरसोवापयोऽथवाशीतजलानुपानम् ॥ शुक्रदोषान्निहन्त्यष्टौप्रमेहांश्चापिविंशतिम्। वलीपलितनिर्मुक्तोवृद्धोऽपितरुणायते ॥ गिरिजतुगुग्गुलुलौहान्येकीकृत्याथभावयेद्बहुशः। क्वाथैस्तद्व्याधिहरैस्तदनुचचूर्णीकृतंमिलितम् ॥ क्रिमिरिप्वादिकचूर्णैर्गिरिजतुसमधान्यपटोलयूषेण। इतिचन्द्रप्रभागुटिका ॥ ७०८ ॥

बायबिडंग चीता त्रिकटु त्रिफला देवदारु चव्य चिरायता पिपलामूल मोथा कचूर बच सोनामक्खी सेंधानोन जवाखार हल्दी दारुहल्दी धनियां गजपीपल तथा अतीस यहसब एक २ तोले शिलाजीत ३२ तोले शुद्धगूगुल तथा लोहचूर्ण आठ २ तोले शक्कर १६ तोले और दन्ती निसोत दालचीनी इलायची तथा तेजपात चार २ तोले इनसब औषधियों को पीस गोलीबनाकर सेवनकरने से ज्वर अतीसार ग्रहणी बवासीर भगन्दर कामला पांडु मंदाग्नि कफपित्त तथा बातजन्यरोग नाडी तथा मर्मोंके घाव क्षत क्षय गृध्रसी यक्ष्मा हस्तिप्रमेह वीर्य्यक्षय पथरी मूत्रकृच्छ्र बीर्य्य का बहना तथा उदर रोग यहसब नष्टहोते हैं चन्द्रमाने शिवजीका पूजनकरके प्रसन्नहुए शिवजीसे यहगोलीपाईथी इसके सेवनमें पान भोजन शीत वात धूप तथा मैथुनका कोई निषेध नहीं है भोजनसे पहले इस गोलीको खाकर मट्ठा दहीका तोड़ बकरे अथवा जंगलीजीवोंके मांसकारस दूध या शीतल जलका अनुपान करना चाहिये इसके द्वारा आठों बीर्य्य के दोष बीसों प्रमेह झुर्री तथा बालोंके पकनेसे रहितहोकर वृद्धभी तरुणसा होजाताहै ॥ इति चन्द्रप्रभागुटिका ॥ ७०८ ॥

वरंमहिषलोचनोदरसन्निभवर्णस्यगुग्गुलोःप्रस्थम्। प्रक्षिप्यतोयराशौत्रिफलाञ्चयथोक्तपरिमाणम् ॥ द्वात्रिंशच्छिन्नरुहापलानिदेयानियत्नेन। विपचेत्तद्प्रमत्तोदर्व्यासंघट्टमुहुर्यावत् ॥ अर्द्धक्षयितंतोयंजातंज्वलनस्यसम्पर्कात्। अवतार्यवस्त्रपूतंपुनरपिसंसाधयेद्दृढपात्रे ॥ सान्द्रीभूतेतस्मिन्नवतार्यहिमोपलस्पर्शे। त्रिफलाचूर्णार्द्धपलंत्रिकटे

इचूर्णंषड़क्षपरिमाणम् ॥ कृमिरिपुचूर्णार्द्धपलंकर्षंकर्षंत्रिवृद्दन्त्योः । पलमेकन्तुगुडूच्या दत्त्वासंचूर्णयेयत्नेन ॥ उपयुज्यचानुपानंयूषंक्षीरंसुगन्धिसलिलञ्च । इच्छाहारविहारीभे षजमुपयुज्यसर्वकालमिदम् ॥ तनुरोधिवातशोणितमेकद्वित्र्युल्वणंचिरोत्थमपि । भग्न स्रुतपरिशुष्कंस्फुटितंदीर्णमाजानुयच्चापि ॥ व्रणकाशकुष्ठगुल्मश्वयथुंगरपाण्डुमेहांश्च । मन्दाग्निञ्चविबन्धंप्रमेहपिड़कांश्चनाशयत्याशु ॥ सततंनिषेव्यमाणःकालवशाद्धन्ति सर्वगदान् । अभिभूयजरादोषंकरोतिकैशोरिकंरूपम् ॥ प्रत्येकंत्रिफलाप्रस्थोजलञ्चाढ़ कमाढ़कम् । गुड़वद्गुग्गुलोःपाकःसन्धेयस्तुविशेषतः॥इतिकैशोरिकगुग्गुलुः।७०९ ॥

श्रेष्ठ भैंसे के नेत्रके समान बर्णवाला गूगुल हड़ बहेड़ा तथा आमला चौंसठ २तोले और गिलोय १२८ तोले इन सबको कूटकर ६२४ तोले जलमें पाककरे और कलछीसे चलाता जाय इसमें औ- षध कढ़ाई में नीचे लगकर जलने न पावे आधा रह जाने पर छानके उसीकाढ़ेको लोहे के पात्रमें पाककरे जबगाढ़ाहोजाय तब उतारले और शीतल होजाने पर त्रिफला का चूर्ण दोतोले त्रिकटुका चूर्ण ६ तोले बायबिडंग २ तोले निसोत तथा दन्ती एक २ तोले और गिलोय चारतोले इन सब औषधियों के चूर्णको मिलाकर इसऔषधका सेवनकरे और यूष दूध अथवा सुगन्धित जलका अनु- पान करे और यथेष्ट आहार बिहार करे इसके द्वारा बहुत पुराना एक दोषज त्रिदोषज घुटने तक सूखाहुआ फटा हुआ अथवा बहताहुआ बात रक्त घाव खांसी कुष्ठ गुल्म सूजन गरदोष पांडु प्रमेह पिड़िका मन्दाग्नि तथा बिबन्ध इनसब रोगों का नाशहोताहै और निरन्तर इसका सेवन करने से कालबश सबप्रकार के रोगनष्ट होते हैं और वृद्धावस्थाके दोषों का नाशहोकर किशोर अवस्था का रूप होजाताहै सर्वत्र गुड़के समान गूगुलका पाककरनाचाहिये ॥ इतिकैशोरिक गुग्गुल ॥ ७०९ ॥

त्रिफलातिविषादारुदार्वीमुस्तापरूषकैः । खदिराशननक्ताह्वगुडूचीनृपपादपैः ॥ भू निम्बनिम्बकटुकाकालिङ्गकुलकैःसमैः।क्वाथंकृत्वाततःपूतंशृतमष्टगुणेऽम्भसि ॥ गुडूच्या स्तत्रसुकृतंचूर्णमर्द्धन्तुवारिणि । क्षिप्त्वासुनूतनेभाण्डेवासयेद्रजनीगतम् ॥ सोमोपेतेनपू तेनकौशिकंपरिभावयेत्।षड्गुणेनतुसप्ताहंशिलाजतुसमन्वितम्॥सुक्तस्यतुपलान्यष्टौस मावाप्यविचक्षणः । ताप्यचूर्णपलञ्चैकंद्वेपलेमधुसर्पिषोः ॥ एकीकृत्यसमंसर्वंलिह्यात्सु त्रिफलाम्बुना । तनूनामुद्गयूषेणजाङ्गलानांरसेनवा ॥ जीर्णेऽजीर्णेचभुञ्जीतपुराणंशालिष ाष्टिकम् । यथारोगंयथासात्म्यंरसैर्यूषैश्चसंस्कृतैः ॥ त्रिसप्ताहप्रयोगेणवातरक्तंसुदारुण म् । निहन्तिवीर्यतःक्षिप्रंकुष्ठरोगान्व्रणानपि ॥ भिन्नंभिन्नञ्चसन्धत्तेत्रिफलाख्योहिगुग्गु लुः ॥ इतित्रिफलागुग्गुलुः ॥ ७१० ॥

त्रिफलाअतीस देवदारु दारुहल्दी मोथा फालसा कत्था शालकाष्ठ हल्दी गिलोय अमलतास चिरा- यता नींबकुटकी इन्द्रजौ तथा पर्वल इन सब औषधियों को अठगुने जलमें पाककरके जबचौथाई रहै तबउतारले फिर उसकाढ़ेसे आधा गिलोयका चूर्ण इसमें मिलाकर नवीन बर्त्तन में एक रात्रि भर रखछोड़े इसके पीछे शिलाजीत तथा गूगुलको समभागलेकर इनके छःगुनेऊपर कहे हुए काढ़े में सातदिनतक भावनादेवे फिर सिरका ३२ तोले सोनामक्खीका चूर्ण ४ तोले और सहत तथा घी

आठ २ तोले इनसब को उसमें अच्छे प्रकार मिलाकर त्रिफले का जल पतला मूंगकायूष तथा जंगलीजीवोंके मांसकारस इनमेंसे किसी के साथ चाटे और रोग तथा सात्म्यको बिचार कर मांस रस तथायूष आदिके साथ पुराने शालि तथा साठीके चांवलोंकाभात खिलावे२१ दिनतक इसऔषधके सेवनसे अत्यन्त भयंकर बातरक्त कुष्ठ तथा घावका नाश होताहै औ कटेस्थान जुड़जातेहैं इति त्रिफलागुग्गुल ॥ ७१० ॥

पलत्रयंकषायस्यत्रिफलायाःसुचूर्णितम् । सौगन्धिकंपलञ्चैकंकौशिकस्यपलत्रयम् ॥ कुड़वंचित्रतैलस्यसर्वमादाययत्नतः । पाचयेत्पाकविद्वैद्यःपात्रेलोहमयेदृढे ॥ हन्तिवातं तथापित्तंश्लेष्माणंखञ्जपंगुताम् । श्वासंसुदुर्जयंहन्तिकासंपञ्चविधंतथा ॥ कुष्ठानिवातरक्तञ्चगुल्मंशूलोदराणिच । आमवातंजयत्येतदपिवैद्यविवर्जितम् ॥ सर्वदास्योपयोगे नजरापलितनाशनम् । सर्पिस्तैलरसोपेतमश्नीयाच्छालिषष्टिकम् ॥ सिंहनादइतिख्यातोरोगवारणदर्प्पहा । वह्निदीप्तिकरंपुंसाम्भाषितोदण्डपाणिना ॥ अत्राहुस्त्रिफलाक्काथं पृथक्त्रिपलसम्मितम् । किञ्चिन्निर्यातिचैरण्डस्नेहेपाकोऽधिकेखरः ॥ इतिसिंहनादगुगुलुः ॥ ७११ ॥

बारह २ तोले त्रिफले के काढ़े में ४ तोले गन्धक का चूर्ण ४ तोले गूगल और १६ तो० रेंडीका तेल मिलाकर लोहेके पात्रमें पाक करले मात्राके अनुसार इसके सेवनसे बात पित्त कफ खंजता पंगुता श्वास खांसी कुष्ठ बातरक्त गोला शूल उदर तथा आमबात का नाश होता है इसके निरंतर सेवन से झुर्री तथा बालों के पकनेका नाश होता है और अग्नि की दीप्ति होती है इसके सेवन में शालि तथा साठीके चांवलों का भात घी तेल तथा मांस के रसके साथ पथ्य करना चाहिये इस में पाक करने के समय जब रेंडीका तेल ऊपर आजाय तब पाकहुआ जानिये इससे अधिक रखने में पाक खरा हो जाता है इति सिंहनाद गुग्गुल ॥ ७११ ॥

अष्टौपलान्यत्रपलंकषायःप्रस्थोपृथक्शुद्धफलत्रयस्य।दत्त्वापचेत्द्रोणयुगेजलस्यपादावशेषंपुनरेववैद्यः ॥ दन्तीत्रिवृत्त्र्यूषणवारुणीनांविडंगमुस्तत्रिफलामृतानाम् । कन्दोग्रगन्धालुकमाणकानांसगन्धकाणाञ्चसपारदानाम् ॥ पलार्द्धमानंप्रमितंसचूर्णंदद्याद्विपक्वंपुनरेवतत्र । फलानिसंचूर्ण्यचकानकानिसहस्रसंख्याकलितानिपश्चात् ॥ खादेद्विमाषद्वितयंप्रतप्तंतोयादिकंदेयमतोऽनुपाने । आमानिलंसन्धिगतंसशूलंशिरोगतंजानुकटिस्थितञ्च ॥ अर्शोऽतिवृत्तिंविषमज्वरार्त्तिंप्रमेहकुष्ठानिभगन्दरञ्च । हन्यान्नराणामिति सिंहनादोमेदोमरुत्श्लेष्मगदान्पुरोऽयम् ॥दाहोत्यन्तप्रवृत्तिर्वाविकारोऽन्योनचेद्बहुः । ततकृतस्तुतदातत्रतक्रभक्तंहितंभवेत्॥उद्वर्त्तनंशीतजलस्नानञ्चशयनंतथा । विरेकातिशयंकुर्य्यात्सिंहनादोयतःसुधीः ॥ ज्ञात्वाबलंशरीरेतुदद्यादेवंनवाभिषक् । तोयारनालगोक्षीरैःक्रमात्पक्वंविशुध्यति ॥ फलंकनकसंज्ञन्तुकृत्वाचूर्णंततःक्षिपेत् । इतिद्वितीयः सिंहनादगुग्गुलुः ॥ ७१२ ॥

गूगल ३२ तोले त्रिफला एकसौअट्ठाईस२तोले इनको १२४८ तोले जलमेंपाककरके चौथाई

बाकीरहनेपरछानले फिर इसकाढ़ेमें दन्ती निसोथ त्रिकटु इन्द्रायण बायबिंडंग मोथा त्रिफला गिलोय ज़मीकन्द बच आलू मानकेचू पारा तथा गन्धक इनसबके दोदो तोले चूर्णकोमिलाकर पाककरे इस के उपरान्त १००० धतूरेके बीजोंको चूर्णकरके इसमें मिलावे फिर २ माशे इस औषधिको खाकर गरमजल आदिका अनुपानकरे इसके सेवनसे संधिगत शूलयुक्त शिरोगत घुटने तथा कमरमें स्थित आमबात नष्ट होतीहै और बवासीर बिषमज्वर प्रमेह कुष्ठ भगन्दर मेदजरोग तथा कफ बातज रोग नष्टहोतेहैं इसके सेवनसे जो बहुत दाहहोय अथवा बहुत दस्तआवें तोमट्ठेके साथ भातखिलावे और उबटन शीतल जलमें स्नान तथा शयनकरावे इसकेसेवनसे बहुत दस्तआतेहैं इसलियेरोगीके बल को देखकर यहऔषध देनीचाहिये धतूरेके फलोंको क्रमसेजल आरनाल तथा गौके दूधमें पाककरके शुद्धहोजानेपर चूर्णकरके इस औषधमेंडाले इति द्वितीयसिंहनादगुग्गुल ॥ ७१२ ॥

प्रस्थैकगुग्गुलोर्मानंकटुतैलेपलाष्टके । प्रत्येकंत्रिफलाप्रस्थंसार्द्धद्रोणेजलेपचेत् ॥ पादशेषंसुपूतञ्चपुनरग्नावधिश्रयेत् । त्रिकटुत्रिफलामुस्तविडंगामलकानिच ॥ गुडूच्यग्नित्रिवृद्दन्तीवचासूरणमानकम् । कस्तूरीरससूतांशंप्रत्येकंशुक्तिसम्मितम् ॥ सहस्रंकानकफलंसिद्धेसञ्चूर्ण्यनिःक्षिपेत् । ततोमाषद्वयंजग्ध्वापिबेत्तप्तजलादिकम् ॥ अग्निञ्चकुरुतेशीघ्रंबड़वानलसन्निभम् । धातुवृद्धिंवयोवृद्धिंबलंसुविपुलंतथा ॥ आमवातंशिरोवातंग्रन्थिवातंभगन्दरम् । जानुजङ्घाश्रितंवातंसकटीग्रहवेदनम् ॥ अश्मरी मूत्रकृच्छ्रेचभग्नेचतिमिरोदरे । अम्लपित्तंतथाकुष्ठंप्रमेहंगुदनिर्गमम् ॥ कासंपञ्चविधं श्वासंक्षयञ्चविषमज्वरम् । प्लीहानंश्लीपदंगुल्मान्पाण्डुरोगंसकामलम् ॥ शोथान्त्रवृद्धिशूलानिगुदजानिविनाशयेत् । मेदष्ककफामसञ्जातरोगवारणदर्पहा ॥ सिंहनादइतिख्यातोयोगोऽयममृतोपमः । भिषग्विवर्जितरोगेभाषितोदण्डपाणिना ॥ इति सिंहनाद गुग्गुलः ॥ ७१३ ॥

३२ तोले कड़ुए तेलसमेत ६४ तोले गूगल और चौंसठ चौसठ तोले त्रिफलाके ९३६ तोलेजल के द्वारा पाककरके चौथाई बचेहुएकाढ़ेको फिर अग्निपैचढ़ावे इसकेउपरान्त त्रिकटु त्रिफला मोथा वायबिंडंग आमला गिलोय चीता निसोथ दन्ती बच ज़मीकन्द मानकेचू शुद्धगन्धक तथा पारा यह सब दोदो तोले और १००० धतूरेके बीजोंका चूर्ण डालकर उतारले २ मासे इस औषधकोखाकर गरमजल आदिका अनुपानकरे इसकेद्वारा अग्नि धातु आयु तथा बलकी वृद्धिहोतीहै और आमबात शिरोबात ग्रन्थिबात भगन्दर घुटने या पिंडरियोंमें स्थित वात कटिग्रह पीड़ा पथरी मूत्रकृच्छ्र भगन अन्धकारसा दीखना उदर अम्लपित्त कुष्ठ प्रमेह कांच निकलना खांसी श्वास क्षय विषमज्वर प्लीहा श्लीपद गोला पांडु कामला सूजन अन्त्रवृद्धि शूल बवासीर मेद कफ तथा आमजनित रोग यह सब नष्टहोते हैं यह सिंहनाद गूगल वैद्यों से त्याग कियेहुए भी रोगोंको दूर करता है इति सिंह-नाद गुग्गुल ॥ ७१३ ॥

शतावरीनागबलावृद्धदारकमुच्चटा । पुनर्नवामृताकृष्णावाजिगन्धात्रिकण्टकम् ॥ पृथग्दशपलान्येषांश्लक्ष्णचूर्णानिकारयेत् । तदर्द्धशर्करायुक्तंचूर्णंसम्मर्दयेत्बुधः ॥ स्थापयेत्सुदृढेभाण्डेमध्वर्द्धाढ़कसंयुतम् । घृतप्रस्थेनमालोड्यात्रिसुगंधःपलेनच ॥ तंखादे

दिष्ठान्नोयथावह्निर्बलंनरः । वातरक्तंक्षयंकुष्ठंकार्श्यंपित्तास्रसम्भवम् ॥ वातपित्तकफो
त्थांश्चरोगानन्यांश्चतत्कृतान् । हत्वाकरोतिपुरुषंहत्वासर्व्वामयान्द्रुतम् ॥ बलीपलि
तनिर्म्मुक्तंमेधास्मृतिविभूषितम् । करोतिपुरुषंधन्यंपञ्चवर्षशतायुषम् ॥ योगसारामृतो
नामलक्ष्मीकीर्त्तिविवर्द्धनम् । इतियोगसारामृतः ॥ ७१४ ॥

सतावर गुलशकरी बिधारा गोंगची पुनर्नवा गिलोय पीपल असगन्ध तथा गोखरू इनसब औ-
षधियों को चालीस २ तोले लेकर महीन चूर्ण करे और सब औषधि की आधी शक्कर मिलाकर
१२८ तोले सहत ६४ तोले घी और चार २ तोले दालचीनी इलायची तथा तेजपात मिलाय के
किसी दृढपात्र में रखकर खूबमिलावे फिर अग्निबलके अनुसार इस औषध को खाकर योग्य आ-
हार बिहार करे इसके द्वारा बात रक्त क्षय कुष्ठ कृशता रक्तपित्त बातपित्त तथा कफसे हुए रोग
झुर्री तथा बालों का पकना आदि अनेक रोग नष्ट होते हैं और मेदा स्मृति लक्ष्मी तथा कीर्ति की
वृद्धि होती है और १०५ वर्षकी आयु होती है इति योगसारामृत ॥ ७१४ ॥

व्यायामंमैथुनंकोपमुष्णाम्ललवणंरसम् ।दिवास्वप्नमभिष्यन्दिगुरुचान्यद्विवर्जयेत् ॥
इतिवातरक्तनिदानचिकित्साधिकारः ॥ ७१५ ॥

इतिद्वितीयभागस्समाप्तः ॥

वातरक्त वाला मनुष्य व्यायाम मैथुन क्रोध उष्ण वस्त्र अम्ल तथा लवण वस्तु दिन में सोना
और अभिष्यन्दी तथा भारी वस्तु इन सबको त्यागकरदे इतिबातरक्तनिदानचिकित्साधिकार७१५॥

इति द्वितीय भाग ॥

शरीर, गर्भावक्रांति शारीर, गर्भव्याकरण शारीर, शरीर संख्या व्याकरण शारीर, प्रत्येक कर्म निर्देश शारीर, सिरावर्णन विभक्ति शारीर, सिराव्यधि विधि शारीर, धमनी व्याकरण शारीर, गर्भिणी व्याकरण शारीर का वर्णन, द्विव्रणीय, सद्योव्रण, भग्नरोग, वात व्याधि महावात-व्याधि, बवासीर, पथरी, भगंदर, कुष्ठ, महाकुष्ठ, प्रमेह, मधुप्रमेह, पेटरोग, मूढ़ गर्भ, विद्रधि, विसर्प, नाड़ी, स्तनरोग, ग्रन्थि, अपची, अर्बुद, गलगंडरोग, वृद्धि, उपदंश, फीलपांव, छोटे २ रोग, शूकरोग, मुखरोग, शोफरोग और नपुंसकता इनसब रोगोंकी उत्तमोत्तम चिकित्सा वर्णितहै और वमन और जुलाब किनरोगोंमें योग्यहै तिसका वर्णन, स्थावर और जंगम विषकी चिकित्सा, नेत्र, कर्ण, नासा, और शिरोरोगकी चिकित्सा, रेवतीग्रह पूतनाग्रह इत्यादि ग्रहों की चिकित्सा, ज्वर, अतीसार, राजरोग, वायुगोला, हृदयके रोग, पांडुरोग, रक्त पित्त, मूर्च्छा औरसम्पूर्ण मदों की चिकित्सा, प्यास, वमन, हिचकी, दमा, खांसी स्वरभेद, कृमिरोग, उदावर्त्त, हैजा. अरुचि, मूत्रदोष, मृगी रोग और उन्माद इत्यादि रोगोंकी चिकित्सा उत्तमोत्तम काढ़े चूर्ण गोली तेल और घी इत्यादिके द्वारा वर्णन की गई है जिसको जिलारोहतक मौजे बेरी ग्राम निवासि पण्डित रविदत्तवैद्यने मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के खर्चसे प्रत्यक्षरका भाषा में उल्था कियाहै और उन्नाम प्रदेशान्तर्गत तारगांव निवासि पण्डित रामविहारी सुकुल ने कठिन शब्दों का कोष और अकारादि सूचीपत्र और साधारण सूचीपत्र रचना कर विभूषित कियाहै यह पुस्तक अवश्य प्रत्येक मनुष्यके देखने के योग्यहै इससे सम्पूर्ण चिकित्साका कामहोसक्ता है ॥

निघण्टरत्नाकर भाषा

जिसमें सम्पूर्ण ज्वर, सम्पूर्ण अतीसार, संग्रहणी बवासीर, अजीर्ण, हैजा, अलस विलम्बिका, कृमिरोग, पांडुकामला, हलीमक, रक्तपित्त, राजरोग, शोषरोग, खांसीरोग, हिचकीरोग, श्वासरोग-स्वरभेद रोग, अरोचकरोग, छर्दिरोग, तृषा रोग, मूर्च्छा, मोह, भ्रम, तन्द्रा, निद्रा, संन्यास, मदात्ययरोग, दाहरोग, उन्मादरोग, भूतादिक के उन्मादका, तंत्रमंत्र डाकिनी साकिनी निवारणोपायप्रत्यक्ष हाजरायतयंत्र, मिरगी रोग, सम्पूर्ण बातव्याधि, अल्पकेशीकी चिकित्सा, ऊरुस्तम्भरोग, आमवात पित्तव्याधि, कफव्यधि, बातरक्तरोग, शूल रोग, उदावर्त्त, आनाह रोग, गुल्मरोग, यकृत्प्लीहरोग, हृद्रोग, मूत्रकृच्छ्ररोग, मूत्राघात, पथरी, प्रमेह, पेटकेरोग, दुर्बलता, सूजन, अंडवृद्धि, बदरोग, गलगंड, फीलपांव, विद्रधि, घाव, अग्निदग्ध, भग्नरोग, नसूर, भगंदर, आतशक, शूकरोग, कुष्ठ, अम्लपित्त, विस्फोटक अर्थात् शीतला, फिरंगरोग, छोटे २ रोग, शिर, नेत्र, कान और मुंहके रोग, स्थावर जंगम विषरोग, स्त्रियोंके प्रदर आदि सब रोग, बालकों के रोग और नपुंसकताकी उत्तमोत्तम काढ़े, चूर्ण, गोली, रस, तेल और घी इत्यादि के द्वारा वर्णन कीगई है इसका भी ज़िला रोहतक मौज़े बेरी ग्राम निवासि पण्डित रविदत्त वैद्यने मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के खर्च से अक्षर २ का भाषामें उल्था कियाहै यह पुस्तक भी अवश्य देखने योग्यहै क्योंकि इसी एक पुस्तकसे चिकित्सा का पूरा २ काम निकल सक्ताहै ॥

शार्ङ्गधरसंहिता भाषा टीका सहित ॥

जिसमें सुश्रुत चरक आदि वैद्यकीय सबग्रंथोंके मतसे ज्वर, अतीसार, संग्रहणी, बवासीर, अजीर्ण हैजा, कृमिरोग, पांडुरोग, रक्त पित्त, राजरोग खांसी, हिचकी, दमा, स्वरभेद, अरुचि, वमन, प्यास मूर्च्छा, दाहरोग, उन्मादरोग, मृगीरोग, वातव्याधि, शूलरोग, गुल्मरोग, हृदयकेरोग, मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात, पथरी, प्रमेह, पेटके रोग, सूजन, अंडवृद्धि, बदरोग, फीलपांव, गलगंड, व्रणरोग, अग्निदग्ध,

नासूर, भग्नरोग, भगंदर, आतशक, शूकरोग, कुष्ठरोग, शीतला, क्षुद्ररोग, शिर, नेत्र, कान, नाक और मुंहरोग सम्पूर्ण विषरोग स्त्रियों और बालकोंके सब रोग और धातुपुष्ट और नपुंसकताकी अत्युत्तम चिकित्सा काढ़े, चूर्ण, गोली, रस, तेल, घी इत्यादि के द्वारा वर्णित है इसके मूल श्लोकों को शार्ङ्गधरजी महाराज और भाषा टीका को जयपालजीने अत्यन्त परिश्रम से रचना कियाहै यह पुस्तक भी अवश्य दर्शनीयहै ॥

भैषज्यरत्नावलीभाषाटीका सहित ॥

जिसमें ज्वर चिकित्सा, ज्वरातीसार चिकित्सा, पिलही और यकृत् की चिकित्सा, पांडुरोग चिकित्सा, शोथरोग चिकित्सा, पेटके रोगों की चिकित्सा, क्षाम रोगकी चिकित्सा, मेद रोग की चिकित्सा, आमाशयरोग चिकित्सा, छर्दिरोग चिकित्सा, दाह चिकित्सा, तृषारोग चिकित्सा, रक्तपित्त चिकित्सा, अग्निमन्दकी चिकित्सा, अरुचि चिकित्सा, संग्रहणी चिकित्सा, अतीसार चिकित्सा, कृमिरोग चिकित्सा, अम्लपित्तरोग चिकित्सा, शूलरोग चिकित्सा, गुल्मरोग चिकित्सा, उदावर्तरोग चिकित्सा, आनाहरोग चिकित्सा, अंत्ररोग चिकित्सा, राजयक्ष्मा चिकित्सा, खांसीरोगकी चिकित्सा, हिचकी और श्वासरोग चिकित्सा, स्वरभेद चिकित्सा, हृद्रोग चिकित्सा, बातव्याधि चिकित्सा, आमवात चिकित्सा, मूत्रकृच्छ्ररोग चिकित्सा, मूत्राघातरोग चिकित्सा, पथरीरोग चिकित्सा, आतशक रोग चिकित्सा, शूकरोग चिकित्सा, प्रमेह चिकित्सा, बहुमूत्ररोग चिकित्सा, औपसर्गिक मेहरोग चिकित्सा, शुक्रमेह चिकित्सा, प्रमेह पिड़िका चिकित्सा, ध्वजभंग चिकित्सा, वृद्धिरोग चिकित्सा, फीलपांवकी चिकित्सा, गलगंड रोगादि चिकित्सा, शीतपित्त उदर्द और कोढ़रोगों की चिकित्सा, मसूरिकारोग चिकित्सा, बातरक्त चिकित्सा, कुष्ठरोग चिकित्सा, बवासीर की चिकित्सा, भगंदर चिकित्सा, विद्रधि चिकित्सा, ऊरुस्तंभ चिकित्सा, भग्नरोग चिकित्सा, व्रणशोथ शारीरव्रण चिकित्सा, सद्योव्रण चिकित्सा, नसूरकी चिकित्सा, शिररोग चिकित्सा, मूर्च्छा चिकित्सा, उन्मादरोग चिकित्सा, अपस्माररोग चिकित्सा, मदात्ययरोग चिकित्सा, नेत्ररोग, नासारोग और मुखरोग चिकित्सा, क्षुद्ररोग चिकित्सा, स्त्रीरोग चिकित्सा, बालरोग चिकित्सा, विषरोग चिकित्सा, वीर्यस्तम्भन विधि रसायन अधिकार, बाजीकरणाधिकार, और परिशिष्ट पर्य्यन्त विषयों के काढ़े, चूर्ण, रस, लेप, तेल घी, यन्त्र, मन्त्र और तंत्रादिकों से औषधें वर्णित हैं जिसमें कोई रोग ऐसा नहीं जिसकी परिपूर्ण औषध इसग्रन्थ से न होसके यह ग्रन्थ बहुतही उत्तम है इसअकेलेही ग्रन्थ से परिपूर्ण वैद्य होसकाहै जिसे मुन्शीजीने रोहतक प्रदेशांतर्गत बेरीनिवासि पण्डित रविदत्तजीसे तर्जुमा कराके उसी तर्जुमेको संस्कृतसे श्लोक २ के टीकेको ज़िला उन्नाव मौज़े तारगांवनिवासी पण्डित रामबिहारी सुकुल से शुद्धकराया है यह पुस्तक अवश्य देखनेके लायक़ है ॥

अमृतसागर जलीक़लम ॥

जिसको श्रीमन्महाराजाधिराज सवाई प्रतापसिंहजी वीरेश वैकुण्ठवासीने वैद्यकके चरक सुश्रुत वाग्भट आदि अनेक प्रमाणिक ग्रन्थोंसे सार २ बातें निकाल कर रचा जिसमें सम्पूर्ण रोगोंकी उत्पत्ति, लक्षण, यत्न, और यंत्र, मंत्र, तंत्र, धातुमारण, शोधन, गोली, अवलेह जो आज़माई हुई हैं और जिनका सामयिक रोगोंमें प्रचार है लिखेहैं परन्तु संसारके उपकारके निमित्त छापेखाने के मालिकने औरभी बिशेष बातें जो उचित और उपयोगिकथीं संयुक्तकराईं कि सोनाऔर सुगन्ध दोनोंहों और (यथानाम तथागुणः) यह दृष्टान्तभी प्रत्यक्ष फल दिखावे यह पुस्तक इस छापेखाने में असंख्यही छपकर बिकचुकी है और ग्राहकोंकी मांगें बराबर चलीआती हैं इसपर रजिस्टरी भी होगई है ॥